अथ

॥ शतकनामा पंचम कर्मग्रंथः प्रारभ्यते

॥ आर्या वृत्तम् ॥

ऐंद्रश्रीकरपीडन, विधिसिद्धं, ध्वस्तकर्मशत्रुजरं ॥ कल्याणसिद्धिकरणं, जैनं ज्योतिर्जयतु नित्यं ॥ १ ॥ नवशतमथनं शतशो, नत्वा शतमखनतांह्रिशतपत्रम् ॥ श्री वीरजिनं धीरं, लिखामि शतके टबार्थमहं ॥ २ ॥ ध्रुवबंधोदय सत्ता, नाशकृते कर्मणांशकृद्भगवान् ॥ त्रिपदीमदीदीशद्यां, सा मम मतिमांद्यमपहरतु ॥ ३ ॥

नमिअ जिणं धुवबंधो, दय सत्ता घाइ पुन्न परिअत्ता ॥
सेअर चउह विवागा, वुच्छं बंधविह सामीअ ॥ १ ॥

अर्थ-(नमिअजिणं के०) नमस्कार करीने जिन प्रत्यें (धुवबंध के०) एक ध्रुवबंधिनी प्रकृति, (उदय के०) बीजी ध्रुवोदयी प्रकृति, (सत्ता के०) त्रीजी ध्रुवसत्ता प्रकृति, (घाइ के०) चोथी घातिनी प्रकृति, (पुन्न के०) पांचमी पुण्यप्रकृति, (परिअत्ता के०) बही परावर्त्तमान प्रकृति, (सेअर के०) वली एना इतर ब भेद लेवा एवं बार द्वार थयां. (चउहविवागा के०) चार भेदें विपाकिनी प्रकृति, (वुच्छं के०) कहेशे. तथा (बंधविह के०) चार बंधविधि. (सामीअ के०) वली चार प्रकारें बंधना स्वामी कहेशे एवं चोवीश द्वार थयां. च एटले वली ॥इत्यक्षरार्थः॥१॥

तिहां ग्रंथकर्त्ता श्रीदेवेंद्रसूरि लघुशतकनामा ग्रथनें आरंभें प्रथम समुचितेष्ट देवता नमस्कार रूप भाव मंगल निर्विघ्न पणे ग्रंथसमाप्तिने हेतुयें करे बे. (नमिअ के०) नमस्कार करीने कोण प्रत्यें नमस्कार करीने ते कहेबे. जिण एटले राग द्वेषादिक अंतरंग वैरी जेणे जीत्या एवा जे श्रीजिन भगवंत तीर्थंकर ते प्रत्यें सर्व थकी अधिक गुणवंत जाणी तेने नमीने आटला द्वारें करी शतकनामा ग्रंथ कहे[illegible]

हवे ते ग्रंथना अभिधेयभूत बवीश द्वारनां नाम कहे बे. त्यां प्रथम जे [illegible] प्रकृति आपणा निजहेतु मल्यां अवश्य बंधाय पण तेहने स्थानकें [illegible] ति न बंधाय. ते प्रथम ध्रुवबंधिनी प्रकृति जाणवी अने बीजी जे [illegible] पणा बंधहेतु सामग्री छुंते बते पण केवारेंक बंधाय अने केवा[illegible] तेनी विरोधिनी बीजी प्रकृति बंधाय. ते अध्रुवबंधिनी प्रकृति[illegible]

प्रकृतिनो उदय विछेद काल पर्यंत निरंतर होय, पण तेनो उदय तेनो वि
छेद थया विना त्रूटे नहीं. ते त्रीजी ध्रुवोदयी प्रकृति जाणवी. चोथी जे प्रकृ
तिनो उदय केवारेंक होय वली केवारेंक न होय वली होय एम आंतरे उदय
होय ते चोथी अध्रुवोदयी प्रकृति जाणवी. पांचमी जे प्रकृतिनी सत्ता सर्वजी
वने एटले मिथ्यात्वीने पण सर्वदा पामियें परंतु नव प्रत्ययादिक कारणीक न
होय.ते पांचमी ध्रुव सत्ता प्रकृति जाणवी. तथा बही जे प्रकृतिनी सत्ता नवप्र
त्ययें तथा गुण प्रत्ययेंज होय पण अन्यथा न होय, ते बही अध्रुव सत्ता
प्रकृति जाणवी. सातमी जे प्रकृति आपणा ज्ञानादिक घातें करी आत्माना
गुणने आवरे, ते सातमी घातिनी प्रकृति जाणवी. आठमी जे प्रकृतिना उद
यथी आत्मानो कशो पण गुण अवराय नहीं. ते आठमी अघातिनी प्रकृति
जाणवी. नवमी जे प्रकृतिनो विशुद्ध परिणामें उत्कृष्ट मिठो रस बंधाय तथा
जेने उदयें जीव, अनुकूल पणे वेदे, ते नवमी पुण्यप्रकृति जाणवी. दशमी जे
प्रकृतिनो संक्लेश परिणामे उत्कृष्ट कटुक रस बंधाय, ते दशमी पाप प्रकृति
जाणवी. अगीआरमी जे कर्मप्रकृति आपणी विरोधिनी प्रकृतिनो बंध तथा
उदयने निवारीने, पोतानो बंध तथा उदय देखाडे, ते अगीआरमी परावर्त्तमा
न प्रकृति जाणवी. बारमी जे कर्मप्रकृतिनो बंध तथा उदय, अन्य प्रकृति साथें
विरोधिनी नहीं तेना कारण बते पण होय ते बारमी अपरावर्त्तमान अविरोधिनी
प्रकृति जाणवी. एम ए एक ध्रुवबंधिनी, बीजी ध्रुवोदयी, त्रीजी ध्रुवसत्ता, चोथी
घातीनी, पांचमी पुण्य, बही परावर्त्तमान, एथी इतर एटले उपरांठी एक अध्रुवबं
धिनी, बीजी अध्रुवोदयी त्रीजी अध्रुवसत्ता चोथी अघातिनी, पांचमी पाप, बही
अपरावर्त्तमान, एम ब नेद साथें मेलवतां बार द्वार थयां.

तथा चार विपाक एटले उदय कालनां ठाम, तेनां नाम कहे बे. एक क्षेत्रवि
पाकिनी, बीजी नवविपाकिनी, त्रीजी जीवविपाकिनी, चोथी पुज्ञलविपाकिनी,
एम जे जे कर्मप्रकृति, जे जे विपाकिनी होय, ते कहीशुं. एटले शोल द्वार कह्यां.

तथा चार बंधविधि, एटले बंधना प्रकार तेमां एक प्रकृतिबंध, बीजो स्थिति
ंध, त्रीजो रसबंध, चोथो प्रदेशबंध, ए चार प्रकारना बंधने उत्कृष्ट तथा जघन्य
थीनें कहीशुं. एवं वीश द्वार थयां.

...नूयस्कारबंध, बीजो अल्पतरबंध, त्रीजो अवस्थितबंध, चोथो
...स्वरूप तथा प्रकृति बंधादिक जे उत्कृष्ट जघन्यपणें तेना स्वामी

एटले अधिकारी ए चार वानां कहेशे. एम चोवीश द्वार, शतकनामा ग्रंथनां कह्यां. तथा गाथाने अंतें अकारछे ते चकारने अर्थेंछे तेचशब्द थकी उपशमश्रेणी, तथा बीजी क्षपकश्रेणी, ए बे श्रेणीनुं स्वरूप कहेशुं. एम छवीश द्वारनानाम शत कनामा कर्मग्रंथमां केवानां कह्यां ॥ १ ॥

तिहां प्रथम द्वारें सुडतालीश ध्रुवबंधिनी प्रकृति कहे छे.

वन्न चउ तेअ कम्मा, गुरु लहु निमिणो वघाय नय कुछा ॥
मिछ कसाया वरणा, विग्घं धुवबंधि सगचत्ता ॥ २ ॥

अर्थ—(वन्नचउ के०) वर्णचतुष्क, (तेअ के०) पांचमुं तैजस नाम, (कम्मा के०) छठुं कार्मणनामकर्म, (अगुरुलहु के०) सातमुं अगुरुलघुनामकर्म, (निमिणं के०) आठमुं निर्माणनामकर्म, (उवघाय के०) नवमुं उपघातनाम कर्म, (नय के०) दशमुं नयमोहनीय, (कुछा के०) अगीआरमुं जुगुप्सामोहनीय, (मिछ के०) बारमुं मिथ्यात्वमोहनीय, (कसाया के०) शोल कषाय. एवं अठावीश थइ तथा (वरणा के०) ज्ञानावर्ण पांच अने दर्शनावरण नव ए चौद प्रकृति. एवं सर्व मली बेंतालीश प्रकृति थइ तथा (विग्घं के०) अंतराय पांच. एवं (सगचत्ता के०) ए सुडतालीश ध्रुवबंधिनी प्रकृति जाणवी ॥ इत्यक्षरार्थः ॥२॥

वर्ण, गंध, रस अने स्पर्श, ए चार प्रकृतिनुं नाम वर्णचतुष्क कहीयें. एक तैजसशरीर, बीजुं कार्मणशरीर, त्रीजुं अगुरुलघुनामकर्म, चोथुं निर्माणनामकर्म, अने पांचमुं उपघात नामकर्म. ए पांच अने पूर्वोक्त वर्ण चतुष्क ए नव नामकर्मनी प्रकृति ध्रुवबंधिनी कहीयें. जे नणी चार गतिना जीवने तैजस कार्मण शरीर होय, तथा वर्ण, गंध, रस अने स्पर्श, ते औदारिक अने वैक्रियशरीरना बंधें होय, तथा निर्माणनामकर्म पण अंगोपांग आश्रयी होय, वली अगुरुलघु तथा उपघात नामकर्म पण, शरीरबंधें होय, तेथी स्व स्व गति प्रायोग्य ए नामकर्मनी नव प्रकृति आपणा अविरति कषायादिक हेतु छते बंधाय. तेथी ए नव प्रकृतिने ध्रुवबंधिनी प्रकृति कहीयें.

नयमोहनीय अने जुगुप्सामोहनीय, ए बे प्रकृतिनी बंधविरोधिनी प्रकृति नथी तेथी ध्रुवबंधिनी कहीयें. तथा मिथ्यात्वमोहनीय पण निज हेतु मिथ्यात्वे सद्भावें अवश्य बंधाय छे. ते नणी एने पण ध्रुवबंधिनी प्रकृति कहीयें, थइ. तथा अनतानुबंधिया कषायोदय हेतु सद्भावें अनंतानुबंधी क्रो

या अने लोन, ए चार, अवश्य बंधाय. तेमज अप्रत्याख्यानोदयसद्भावें अप्र ख्यानीया चार बंधाय अने प्रत्याख्यानोदयरूप निज हेतु बते चार प्रत्याख्यानी या बंधाय. संज्वलनकषायोदय रूप निज हेतु बतां संज्वलना चार कषाय बंधाय. एवं शोल कषाय बंधाय. ए सर्व मली उंगणीश प्रकृति मोहनीयनी थइ.

तथा ज्ञानावरणीयनी प्रकृति पांच अने दर्शनवरणीयनी प्रकृति नव, ए चौद आ वरण पण सर्व जीवने पोत पोताना बंध विच्छेद स्थानक लगें अवश्य बंधाय. तेने स्थानकें बीजी विरोधिनी प्रकृतिनो बंध न थाय. ते नणी ए पण ध्रुवबंधिनी प्रक ति जाणवी. एम अंतरायकर्मनी पांच प्रकृति पण दशमा गुणठाणा लगें सर्व जीवने अवश्य बंधाय. तेथी एने पण ध्रुवबंधिनी प्रकृति कहीयें. एवं ए सुडतालीश कर्म प्रकृति आपणा मिथ्यात्व, अविरति अने कषायादिक हेतुना सद्भावें सर्व जीवने अवश्य बंधाय. ते नणी एने ध्रुवबंधिनी कहीयें. तेमध्यें ज्ञानावरणीयनी पांच, द र्शनावरणीयनी नव, मोहनीयनी उंगणीश, नामकर्मनी नव अने अंतराय कर्मनी पांच, एम मूल पांच कर्मनी थइने उत्तर प्रकृति सुडतालीश थाय ॥

अने वेदनीय तथा गोत्र ए बे कर्मनी मूल प्रकृतिनी अपेक्षायें ध्रुवबंधिनी जा णवी. परंतु उत्तरप्रकृतिनी अपेक्षायें अध्रुवबंधिनी जाणवी ॥ २ ॥

हवे अध्रुवबंधिनी प्रकृति कहे बे.

॥ अथा ध्रुवबंधिन्यः ॥

तणु वंगा गिइ संघय, ण जाइ गइ खगई पुवि जिणुसा
सं ॥ उज्जो आयव परघा, तसवीसा गोअ वेयणियं ॥ ३ ॥

अर्थ–(तणुवंग के०) तनुत्रिक अने उपांगत्रिक, (आगिइ के०) आकृति ए टले संस्थान ब, (संघयण के०) संघयण ब, (जाइ के०) जाति पांच, (गइ के०) गतिचार, (खगई के०) विहायोगति बे, (पुवि के०) आनुपुर्वीचतुष्क, (जिणुसासं के०) जिननामकर्म अने उच्छ्वासनामकर्म, (उज्जोआयव के०) उ द्योतनाम तथा आतपनाम, (परघा के०) पराघातनाम, (तसवीसा के०) त्रस दशक अने स्थावरदशक, ए बे मलीने वीश प्रकृति जाणवी. (गोअ के०) गोत्र द्विक, (वेअणिअ के०) वेदनीयद्विक, एवं बाशठ प्रकृति थइ.

॥ तनु एटले शरीरनामकर्म, ते मध्यें तैजस अने कार्मण, ए बे शरीर तो पूर्वें अध्रुवंधी अने शेष औदारिक, वैक्रिय अने आहारक, ए त्रण शरीर तथा एज त्रण

शरीरनां अंगोपांग, ते मध्यें मनुष्य तथा तिर्यंचने औदारिक होय अने देव तथा नारकी प्रायोग्य वैक्रिय होय, ते अध्रुवबंधिनी प्रकृति कहीयें अनें आकृति एटले संस्थान ठ ठे, ते ठ मध्यें एक समयें एकज बंधाय. ते नणी एने पण अध्रुवबंधी कहीयें. तथा संघयण ठ पण मनुष्य, तिर्यंच प्रयोग्य बांधतां एक समयें एकज बंधाय अने देवता तथा नारकी प्रायोग्य बांधतां संघयणनो बंध न होय माटें अध्रुवबंधिनी कहीयें. तथा एकेंद्रिय, बेंद्रिय, तेंद्रिय, चौरिंद्रिय अने पंचेंद्रिय, ए पांच जातिमध्यें एकेंद्रियादिक स्वस्व प्रायोग्य एक जातिज बंधाय, ते माटें अध्रुवबंधिज कहीयें. तथा चार गतिमध्यें पण एक समयें एकज देवादिकनी गति बंधाय, ते माटें ए पण अध्रुवबंधिनी प्रकृति कहीयें. तथा शुनविहायोगति अने अशुनविहायोगति, ए बे प्रकृति पण बंधविरोधिनी ठे. तेथी शुनविहायोगति बंधाय, तेवारें अशुनविहायोगति न बंधाय, तेथी ध्रुवबंधिनी कहीयें. तथा देवानुपूर्वी, मनुष्यानुपूर्वी, तिर्यंचानुपूर्वी अने नरकानुपूर्वी, ए चार प्रकृति पण बंधविरोधिनी ठे माटें अध्रुवबंधिनी कहीयें. एवं ए तेत्रीश प्रकृति परावर्त्तमान नणी अध्रुवबंधिनी कहीयें.

जिननामकर्म सम्यक्त्व ठतां पण कोइ एकने बंधाय अने कोइ एकने न बंधाय, ते नणी अध्रुवबंधिनी कहीयें तथा उश्वासनामकर्म पण पर्याप्त प्रायोग्य बांधतां बंधाय. परंतु अपर्याप्त प्रायोग्य बांधतां न बंधाय, तेथी अध्रुवबंधिनी कहीयें तथा उद्योतनामकर्म पण तिर्यंचप्रायोग्य बांधतां कोइ एकने बंधाय अने बीजानें न बंधाय, तेथी अध्रुवबंधिनी कहीयें तथा आतपनामकर्म पण पृथवीकाय एकेंद्रिय प्रायोग्य बांधतां कोइ एकने बंधाय अनें कोइ एकने न बंधाय, तेथी अध्रुवबंधिनी कहियें तथा पराघातनामकर्म पण पर्याप्त प्रायोग्य बांधतां कोइ एकने केवारेंक बंधाय अने कोइ एकने अपर्याप्त प्रायोग्य बांधतां न बंधाय, तेथी अध्रुवबंधिनी कहीयें तथा त्रसदशक अने स्थावरदशक एटले त्रस, बादर, पर्याप्त अने प्रत्येंकादिक, तेमज स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त अने साधारणादिक प्रायोग्य बांधतां बंधाय, परंतु तेथी विपरीत बांधतां न बंधाय तेथी ए वीश प्रकृति पण अध्रुवबंधिनी कहीयें तथा उच्चैर्गोत्र बांधतां नीचैर्गोत्र न बंधाय. अने नीचैर्गोत्र बांधतां उच्चैर्गोत्र न बंधाय माटें ए बे प्रकृति, बंधविरोधिनी नणी एने अध्रुवबंधिनी कहियें तथा शाता, आशातावेदनीय पण परावर्त्तमान बंधाय पण बे सार्थे न बंधाय तेथी ए बे प्रकृति पण अध्रुवबंधिनी कहीयें. एवं उगणप्रकृति थइ. तथा तेत्रीश आगलनी मेलवतां बाशठ प्रकृति थई ॥ ३ ॥

हासाइ जुअल डुग वे,अ आउ तेउत्तरी अधुववंधो ॥
नंगा अणाइ साई, अणंतं संतुत्तरा चउरो ॥ ४ ॥

अर्थ-(हासाइजुअल के०) हास्य अने रति तथा शोक अने अरति, ए (डुग के०) बे युगल (वेअ के०) त्रण वेद, (आउ के०) चार आयु, (तेउत्तरी के०) ए तहोंत्तेर कर्मप्रकृति, (अधुववंधो के०) अध्रुववंधिनी जाणवी. एना (नंगा के०) चार नांगा, (अणाइसाईअणंतं के०) अनादि अने सादि ए बे पदने अनंत अने (संतुत्तराचउरो के०) सांत ए बे पद, प्रत्येकें आगल जोडतां चार नांगा होय एटले अनादि अनंत, अनादि सांत,सादि अनंत अने सादि सांत, ए बे जोडतां चार थाय ॥ इत्यक्षरार्थः ॥ ४ ॥

हास्य अने रति, ए युगल बांधतां शोक अने अरति, ए युगल न वंधाय अने शोक अने अरति बांधतां, हास्य अने रति न बंधाय. तेथी ए चार प्रकृतिनो बंध सांतरपणें बंधाय, तेथी ए अध्रुवबंधिनी उष्ठा गुणगणा लगें जाणवी अने तेथी आगले निरंतरपणे बंधाय माटें पछी ध्रुवबंधी कहेवाय. एमज अशाता वेदनीय पण जाणी लेवी तथा एमज नीचैर्गोत्र पण बीजा गुणगणा लगें अध्रुववंधी ने पछी ध्रुवबंधी जाणवो.

स्त्रीवेद, पुरुषवेद अने नपुंसकवेद, ए त्रण प्रकृतिमध्यें पण एक समयें एकज बंधाय. तेमां नपुंसकवेद मिथ्यात्व लगें अने स्त्रीवेद, सास्वादन लगें बंधाय, तेथी आगल निरंतर पुरुषवेद बंधाय तथा एक देवायु, बीजुं नरकायु, त्रीजुं तिर्यंचायु, अने चोथुं मनुष्यायु, ए चार आयुमांहेलो एक नवमां एकज वार एक गतिनुं आयु बंधाय माटें अध्रुवबंधिनी जाणवी. ए रीतें ए तहोंत्तेर प्रकृति अध्रुववंधिनी कहियें. केम के केवारेंक बंधाय, केवारेंक न वंधाय, केवारेंक तेने स्थानकें विरोधिनी बीजी प्रकृति बंधाय, तेथी एनो बंध, निश्चल न होय तेथी एने अध्रुववंधिनी कहियें.

अहींआं ध्रुवाध्रुवने विषे चार नांगा अवतारियें, अनादि ने सादि, ए बे पद आगल प्रत्येकें अनंत ने सांत, ए बे पद जोडियें, तेवारें एक अनादि अनंत, बीजो अनादि सांत, त्रीजो सादि अनंत अने चोथो सादि सांत, ए चार नंग थाय. जे कर्मप्रकृतिनी प्रवाहरूपें वंधनी आदि न पामीयें. एटले (१) जे ए आठ कर्मनी प्रकृति पूर्वें न हती अनें अमुक दिवसथी नवी थइ, एम कोइ वारें पण न कहेवाय, ते अनादि. (२) अने जे प्रकृतिनुं अबंधकपणुं थया पछी वली पहेलां बांधी

ते सादि. (३) जे प्रकृतिनो बंधविछेद न होय, त्या लगें अनंत. (४) तथा जेवारें बंधनो अंत करे, तेवारें सांत, ए जेम बंधमां नांगा कह्या, तेम उदय अने उदीरणायें पण सादि, अनादि, सांत अने अनंत, ए चार नांगा जाणवा ॥ ४ ॥

पढम विआ धुव उदइसु, धुवबंधिसु तइअ वज्ज नंगतिगं ॥
मिछम्मि तिन्नि नंगा, डुहावि अधुवा तुरिअ नंगा ॥ ५ ॥

अर्थ-(पढम के०) पहेलो अने (बिआ के०) बीजो ए बें नांगा, (धुवउदइसु के०) ध्रुवोदयी प्रकृतिने विषे होय अने (धुवबंधिसुतइअवज्जनंगतिगं के०) ध्रुवबंधी प्रकृतिने विषे त्रीजो नांगो वर्जीने शेष त्रण नांगा होय तथा (मिछम्मि तिन्निनंगा के०) मिथ्यात्वमोहनीयने विषे त्रण नांगा लाने. वली (डुहाविअधुवा के०) बे प्रकारनी अध्रुववंधी प्रकृति एटले एक अध्रुववंधिनी, बीजी अध्रुवोदयी, ए बेने विषे (तुरिअनंगा के०) एक सादि सांत नामें चोथो नांगो होय ॥५॥

तेमांहे पहेलो अनादि अनंत तथा बीजो अनादि सांत, ए बे नांगा एक मिथ्यात्व मोहनीय विना शेष छवीश ध्रुवोदयी प्रकृति आश्री लाने. जे नणी अनव्यने निर्माणादिक छवीश प्रकृतिना उदयनी आदि न पामीयें तेम आगला गुणगणाने अनावें उदय विछेद पण न पामीयें, तेथी अनंत एटले अनादिअनंत नांगो जाणवो, तथा नव्यनी अपेक्षायें ए छवीशनी आदि नथी पण बारमे, तेरमे अने चौदमे, गुणगणे उदयनो अंत थशे, तेथी सांत माटें अनादि सांत, ए बीजो नांगो पामीयें.

तथा ध्रुवबंधिनी वर्णचतुष्कादिक सुडतालीश प्रकृतिना बंधनी अपेक्षायें त्रण नांगा होय, ते आवी रीतें जे अनव्य जीव अनादिकालनो ए, ध्रुवबंधिनी प्रकृति सर्वदा बांधे छे. तेथी अनादि तथा आगलां गुणगणाने अनावें बंधव्यवछेद पण पामशे नहीं, तेथी अनंत. ए अनादि अनंतनामा प्रथम नांगो अनव्य आश्रयी कह्यो तथा नव्य जीव जे अनादि मिथ्यात्वी छे, तेने आनादि सांत नांगो जाणवो अने जे नव्य जीव अगीआरमे गुणगणे ए प्रकृतिनो अबंधक थइने वली तिहां थकी पडतो बंध आरंने, तिहां सादि, ते वली अवश्य अबंधक थशे, तेथी सांत, ए चोथो सादि सांतनामा नांगो कह्यो. ए रीतें त्रण नंग कह्या.

हवे मिथ्यात्व मोहनीयनो बंध तथा उदय त्रण नांगे लाने, तिहां अनव्यने मिथ्यात्वनो बंध तथा उदय अनादि अनंत नांगो तथा अनादि मिथ्यात्वी नव्य जीवने अनादि सांत नांगो जाणवो. केम के ते सम्यक्त्व पामशे तेवारें मिथ्यात्वनो

तथा जे सम्यक्त्व वमीने मिथ्यात्वें जाय ते सादि मिथ्यात्वी तेनी अपेक्षायें ए चोथो सादि सांत भंग जाणवो. अने त्रीजो आदिअध्रुव भांगो शून्य जाणवो. जे भणी सादि तो भव्यनेंज होय अने ते तो अवश्यमेव मुक्तियें जाय. तेवारें तिहां बंध तथा उदयनो अंत करे, तेथी सादि अध्रुव भांगो खोटो जाणवो.

अहींआं ध्रुवबंधिनी तथा ध्रुवोदयी प्रकृतिमध्यें मिथ्यात्वमोहनीय कह्युं छे प ण अहींआं ते बेहुथी जूडुं एटला वास्ते कह्युं छे के, जो पण ध्रुवबंधिनी अपेक्षायें त्रण भांगा कह्या, ते बंधें आवे पण उदयें त्रण भांगा न आवे अने मिथ्यात्व मोहनीयना तो उदयना पण त्रण भांगा छे ते विशेष जाणवाने अर्थें भिन्न कह्युं.

तथा जे प्रकृति बंधें अने उदयें पण अध्रुव ते अध्रुव पणा भणीज एक चोथे सादिसांत भांगे कहेवाय परंतु एने विषे शेष त्रण भांगा न होय ॥ ५ ॥

॥ अथ ध्रुवोदयिन्यः निरूप्यंते ॥ हवे सत्तावीश ध्रुवोदयी प्रकृति कहे छे.

निमिण थिर अथिर अगुरुअ, सुह असुहं तेअ कम्म
चउवन्ना ॥ नाणंतराय दंसण, मिछं धुव उदय सगवीसा ॥ ६ ॥

अर्थ-(निमिण के०) निर्माणनामकर्म, (थिर के०) स्थिरनामकर्म, (अथिर के०) अस्थिरनामकर्म, (अगुरुअ के०) अगुरुलघुनामकर्म, (सुहअसुहं के०) शुभ नामकर्म अने अशुभनामकर्म, (तेअ के०) तैजसनामकर्म, (कम्म के०) कार्मण नामकर्म, (चउवन्ना के०) वर्णादिक चार, (नाणंतराय के०) ज्ञानावरणीय पांच, तथा अंतराय पांच, (दंसण के०) दर्शनावरणीय चार, (मिछं के०) मिथ्यात्वमोहनीय, (धुवउदयसगवीसा के०) ए सत्तावीश कर्मप्रकृतिने ध्रुवोदयी कहीयें ॥ ६ ॥

एक निर्माण, बीजुं स्थिर, त्रीजुं अस्थिर, चोथुं अगुरुलघु, पांचमुं शुभ, छठुं अशुभ, सातमुं तैजस, आठमुं कार्मण तथा चार वर्ण, एवं बार नामकर्मनी ध्रुवोदयी प्रकृति. एनो उदय, चारे गतिना जीवने सर्वदा होय. एना उदयनो व्यवछेद काल, तेरमा गुणठाणाना प्रांतें छे. परंतु तिहां लगें तो सर्व जीवने विषे ए बार प्रकृतिनो उदय पामियें, ते भणी ध्रुवोदयी कहीयें. ए मांहे थिर, अथिर, तथा शुभ अने अशुभ, ए चार प्रकृति विरोधिनी कही छे. पण ते बंधनी अपेक्षायें विरोधिनी लेवी परंतु एनो उदय विरोधी नथी, जे भणी लोही लाल मूत्रादिक पुजलनो अस्थिर बंध अस्थिर कर्मोदयथी होय तथा हाड, दांतादिकनो स्थिर बंध कर्मना उदयथी स्थिर होय. एम चारे प्रकृति उदय अविरोधिनी छे तेमज शुभ

नामोदयें मस्तकादिक शुभ अंग होय अने अशुभ नामोदयें पादादिक अंग अशुभ होय. ए रीतें उदय अविरोधी ने ते माटें ध्रुवोदयी कही. एवं बार प्रकृति थइ.

पांच ज्ञानावरणनो उदय पण बारमा गुणगणा सुधी निरंतर सर्व जीवने होय, तेमज दानादिक पांच अंतरायनी प्रकृति तथा चक्षुरादिक चार, दर्शनावरणीयकर्मनी प्रकृति, एनो उदय पण बारमा गुणगणा लगें होय, तेथी ए चौद प्रकृति पण ध्रुवोदयी कही तथा मिथ्यात्वमोहनीयनो उदयविछेद प्रथम गुणगणे ने, ते नणी प्रथम गुणगणे वर्त्तता जीवने मिथ्यात्व मोहनीयनो उदय ध्रुव कहीयें अने जो पण सास्वादनादिक गुणगणे मिथ्यात्व मोहनीयनो उदय न लाने, तो पण ते अध्रुव न जाणवो. जे नणी ध्रुवोदयीनुं एज लक्षण ने जे आपणा उदय व्यवछेद स्थानक लगें निरंतर जेनो उदय लाने, ते ध्रुवोदयी कहेवाय. एम सत्तावीश प्रकृति कही ॥ ६ ॥

हवे एनी विपरीत अध्रुवोदयी प्रकृति कहे ने.

थिर सुन्न अर विणु अध्रुव, बंधी मिछ विणु मोह धुवबंधी ॥
निद्दोव घाय मीसं, सम्मं पण नवइ अधुवुदया ॥ ७ ॥

अर्थ-(थिर के०) स्थिरनामकर्म, (सुन्न के०) शुन्ननामकर्म, (इअर के०) एथी इतर ते अस्थिरनामकर्म अने अशुन्ननामकर्म, (विणु के०) ए चार प्रकृति विना शेष शरीर त्रण, उपांग त्रण, संस्थानबक, संघयणबक, जाति पांच, गति चार. एवं सत्तावीश तथा खगतिद्विक, आनुपूर्वीचतुष्क. एवं तेत्रीश प्रकृति तथा जिननाम, उच्छ्वास, उद्योत, आतप, पराघात, त्रसचतुष्क, शुंनगचतुष्क, एवं बेंतालीश. स्थावरचतुष्क, दौर्नाग्यचतुष्क, गोत्रद्विक, वेदनीयद्विक, हास्य अने रति तथा शोक अने अरति, त्रण वेद अने आयुश्चतुष्क. एं उगणोतेर प्रकृति बंधविरोधिनी नणी (अधुवबंधी के०) अध्रुवबंधिनी कहीयें. एने जेम अध्रुवबंधिनी कही, तेम उदयविरोधिनी नणी कोइक अध्रुवोदयी पण जाणवी, केम के जिननामथी पराघातपर्यंतिनी पांच प्रकृति ने तेनो उदय कोइएक जीवने होय ते नणी अध्रुवोदयी कहीयें. जो पण ए अविरोधिनी ने तो पण ए वात विचारीने अविरोधिनी न कहेवी.

तथा शोल कषाय, सत्तरमुं नय, अढारमी जुगुप्सा, ए अढार मोहनीयनी प्रकृति ने तें ध्रुवबंधिनी प्रकृतिमध्यें गणवी केमके ए मध्यें क्रोधादिकने उदयें मानादिकनो उदय न होय, तेथी ए उदयविरोधी ने पण बंधविरोधी नथी, तेणे

करी बंधमां तो ध्रुवबंधिनी कही पण उदयमां अध्रुवोदयी कहीयें. तथा नय अ ने जुगुप्सानो उदय सांतर ने केमके कोइने कोइ वारें होय, कोइने कोइ वारें न होय ते नणी ए पण अध्रुवोदयी कही. तथा (मिन्नविणुमोहध्रुवबंधी के०) मिथ्यात्व ध्रुवबंधी नतुं पण ध्रुवोदयीमध्यें गएयुं, तेथी ते वर्ज्युं. शेष अढार प्रकृति, अध्रुवोदयी जाणवी. एम सत्याशी प्रकृति अध्रुवोदयी जाणवी.

(निद्दोवघायमीसं के०) तथा दर्शनावरणीय कर्ममध्यें पांच निद्रानो उदय, केवारेंक होय अने केवारेंक न होय. तथा ए पांच निद्रा पण परस्परें उदयविरोधिनी ने. ते नणी एने पण अध्रुवोदयी कहीयें तथा उपघातनामनो पण कोइएक जीवने कोइएक वारें उदय होय तेथी अध्रुवोदयी कहीयें तथा मिश्रमोहनीयनुं उदय पण विरोधी ने. जे नणी मिथ्यात्व तथा सम्यक्त्व मोहनीयने उदयें एनो उदय न होय, तेम वली (सम्मं के०) सम्यक्त्व मोहनीयनो उदय पण वेदक सम्यक्दृष्टिने होय ते नणी अध्रुवबंधिनी कहीयें. एम ए जघन्य तो अंतर मुहूर्त्त अने उत्कृष्टथी तो नाशठ सागरोपम उपर त्रण पूर्वकोडी अधिक लगें होय पण तेथी वधारें न होय, ते नणी अध्रुवोदयी जाणवी. तथा जो पण सम्यक्त्वनी पेरें सादि सांत नांगे मिथ्यात्व पण ने, तो पण ते अध्रुवोदयी न जाणवुं, जे नणी मिथ्यात्वोदय नूमि प्रथम गुणगणुं ने तिहांतो अवश्य मिथ्यात्वनोज उदय होय ते नणी ए ध्रुवोदयी होय. जो तेनी पोतानी नूमिमध्यें पण केवारेंक एनो उदय न होय, तो अध्रुवोदयी कहेवाय. (पणनवइअध्रुवुदया के०) ए पच्चाणु प्रकृति, अध्रुवोदयी कही ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ७ ॥

॥ अथ ध्रुवसत्ताप्रकृतिराह ॥ हवे ध्रुव सत्ता प्रकृति कहे ने.

तस वन्न वीस सगते, अ कम्म ध्रुव बंधि सेस वेय तिगं ॥
आगिइ तिग वेअणिअं, ड जुअल सग उरल सास चऊ ॥ ८ ॥

अर्थ-(तस के०) त्रसदशक तथा थावरदशक, एवं वीश प्रकृति तथा (वन्नवीस के०) वर्णादिक वीश प्रकृतिनी सत्ता सर्व शरीरधारीने होय, ते नणी वर्णादिक वीश प्रकृति पण ध्रुवसत्ता कही तथा (सगतेअकम्म के०) तैजस सप्तक मध्यें तैजसशरीरनाम, कार्मणशरीरनाम, तैजससंघातन, कार्मणसंघातन, तैजसतैजसबंधन, कार्मणकार्मणबंधन, तैजसकार्मणबंधन, ए सात प्रकृतिनी सत्ता, सर्व जीवने होय केम के तैजस अने कार्मण शरीर पण सर्व जीवने होय ते

माटें तेनी ध्रुवसत्ता जाणवी अने (ध्रुवबंधिसेस के०) ए वर्णचतुष्क, तैजस तथा कार्मण, ए ब प्रकृतिने मूकी शेष ध्रुवबंधिनी एकतालीश प्रकृति रही तेनां नाम कहे ने. शोल कषाय, १७ नय, १८ जुगुप्सा, १९ मिथ्यात्व, पांच ज्ञानावरणीय, नव दर्शनावरणीय, पांच अंतराय, एवं आडत्रीश. ३९ निर्माण, ४० उपघात, ४१ अगुरुलघु, ए एकतालीश प्रकृति पण ध्रुवबंधिनी नणी ध्रुवसत्ता पणें होय एनो बंध, सर्वदा होय तो सत्ता केम न होय? एवं अडाशी प्रकृति ध्रुवसत्तायें कही.

(वेयतिगं के०) वेद त्रणनो बंध तथा उदय जो पण अध्रुव कह्यो ने, तो पण एनी सत्ता ध्रुव कही ने, जे नणी एकेक वेदमध्यें पण त्रण वेदना संक्रांत दल पामीयें, ते नणी ध्रुवसत्ता कहीयें. एवं एकाणु प्रकृति थइ. (आगिइतिग के०) आकृतित्रिक, एटले संस्थानथी त्रिक लेवुं. तिहां "तणुवंगागि" ए गाथानी मेले प्रथम ब संस्थान, ब संघयण अने जाति पांच. ए सत्तर प्रकृतिनी सत्ता पण पूर्वली पेरें ध्रुव जाणवी. एटले एकशो ने आठ थइ अनें (वेअणिअं के०) वेदनीयद्विकनी सत्ता पण परस्पर संक्रांतदलीकनी अपेक्षायें ध्रुवसत्तायें जाणवी. एवं एकशो दश प्रकृति थइ तथा (डुजुअल के०) बे युगल एटले हास्य अनें रति तथा शोक अने अरति, ए चार प्रकृतिनी सत्ता पण क्षपकश्रेणीयें नवमा गुणस्थानक लगें सर्व जीवने होय तथा (खगउरल के०) औदारिकसप्तक एटले औदारिकशरीर, औदारिक अंगोपांग, औदारिक संघातन, औदारिक औदारिक बंधन, औदारिकतैजसबंधन, औदारिक तैजसकार्मणबंधन अनें औदारिककार्मणबंधन, ए सात प्रकृतिनी सत्ता पण सर्वदा पामियें जे नणी मनुष्य तिर्यंचने ए उदयें होय ने तथा देवता अने नारकीने बंधें होय, ते माटें चारें गतिमांहे एनी सत्ता, ध्रुव होय. तथा (सासचउ के०) एक उश्वास, बीजुं उद्योत, त्रीजुं आतप, चोथुं पराघात, ए उश्वासचतुष्कनी सत्ता, सर्वदा होय ते नणी एने पण ध्रुव सत्ता कहीयें. एवं एकशो ने पच्चीश प्रकृति थइ ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ८ ॥

खगई तिरि डुग नीअं, धुवसत्ता (॥ अथाध्रुवसत्ता
निरूप्यंते ॥) सम्म मीस मणुअ डुगं ॥ विउव्विकार
जिणाउ, हारस गुच्चा अधुवसत्ता ॥ ए ॥

अर्थ-(खगई के०) शुनविहायोगति अने अशुनविहायोगति. ए बेहु प्रकृतिना सत्ता, जीवने सर्वदा होय. तेथी ध्रुवसत्ता जाणवी. (तिरिडुग के०) तिर्यंचनी

गति अने तिर्यंचानुपूर्वी ए बेहु नाम कर्मनी प्रकृतिनी सत्ता पण सर्व जीवने सर्वदा होय जे नणी जीवने घणी स्थिति तिर्यंचगतिमध्यें होय छे तथा बीजी गतिमध्यें प ण एनो बंध होय, 'ते नणी एनी ध्रुवसत्ता जाणवी. (निअं के०) नीचैर्गोत्रनी ध्रुव सत्ता, तिर्यंचगतिमध्यें नियमा निचैर्गोत्रनो उदय होय,तेथी ए एकशो ने त्रीश प्र कृतिनी सत्ता, मिथ्यात्वगुणस्थानकें वर्त्तता सर्व जीवने होय जो पण अनंतानु बंधियानी सत्ताजूमि. सातमा गुणगणा लगें छे अने तेमध्यें पण विसंयोजना कीधे सत्ता टले तो पण एनी मिथ्यात्वें ध्रुवसत्ता जाणवी. (ध्रुवसत्ता के०) सत्ता एटले ध्रुवसत्ता प्रकृति एकशो ने त्रीश कही शेष अठावीश प्रकृति रही,ते एथी विपरीत अध्रुवसत्तायें छे,ते कहे छे. जे प्रकृति उवेल्ये थके तथा अबंधें मिथ्यात्व गुणगणें पण कोइ एक जीवने केवारें एक सत्तायें न लाने अने कोइ एकने लाने एम नजनायें सत्ता होय, तेने अध्रुवसत्ता कहीयें. ते कहे छे.

(सम्म के०) एक सम्यक्त्वमोहनीय, बीजी (मीस के०) मिश्रमोहनीय, ए बे प्रकृतिनी सत्ता, अनादि मिथ्यात्वी जीवने होय तथा मिथ्यात्वगुणगणे सम्य क्त्व वमी आव्या होय तेने मिथ्यात्वप्रत्ययें ए बे पुंज उवेली छवीश प्रकृति स त्कर्मी होय तेने न होय बीजा जीवने होय तेथी अध्रुवसत्ता प्रकृति कहीयें.

तथा (मणुअडुगं के०) मनुष्यगति अने मनुष्यानुपूर्वी ए बे प्रकृति ते ते उकाय अने वाउकायमध्यें जे घणो काल रहे, तो ते उवेले तेने सत्तायें न होय, बीजानें होय. एम ए प्रकृति पण अध्रुव सत्ता वाली कहीयें.

तथा (विउविकार के०) एक वैक्रियशरीर, बीजुं वैक्रियअंगोपांग, त्रीजुं वैक्रियसंघातन, चोथुं वैक्रियबंधन, पांचमुं वैक्रियतैजस बंधन, छठुं वैक्रिय कार्मणबंधन, सातमुं वैक्रियतैजस कार्मणबंधन, आठमी देवगति, नवमी देवा नुपूर्वी, दशमी नरकगति, अगीआरमी नरकानुपूर्वी, ए अगीआर प्रकृतिनी सत्ता, अनादि निगोदिया जीवने न होय, बंधने अनावें न होय. तथा उवेले पण ट ले, तेथी ए अगीआर प्रकृतिनी अध्रुवसत्ता जाणवी.

(जिणाउ के०) जिननामकर्मनी सत्ता, जे सम्यक्त्वप्रत्ययें जिननामकर्म बां धी वली मिथ्यात्व पामे, तेने अंतरमुहूर्त्त लगें होय, बीजानें न होय, तेथी अध्रु वसत्ता कही. एमज मनुष्यायु, देवायु, तिर्यंचायु अने नरकायु, ए चार मध्यें को इ जीवने एकनी सत्ता, कोइ जीवने बेनी सत्ता, एम ए पण अध्रुवसत्ता कही.

(आहारसगुच्चाअध्रुवसत्ता के०) एक आहारकशरीर, बीजुं आहारकअंगो

पण, त्रीजुं आहारकसंघातन, चोथुं आहारकबंधन, पांचमुं आहारकतैजस बंधन, ब्रुं आहारककार्मणबंधन, सातमुं आहारककार्मण तैजसबंधन, ए आहारकसप्तक. एनी सत्ता जे अप्रमत्तगुणस्थानकें विशुद्ध चारित्रप्रत्ययें आहारक शरीर बांधी पढी संक्लेश विशेषें मिथ्यात्वें जाय. तेने सत्तायें होय, परंतु बीजानें न होय माटें अध्रुवसत्ता कहीयें. उच्चैर्गोत्रनी सत्ता पण अध्रुव जे नणी तेउ अने वाउमध्यें रहेतो जीव, उच्चैर्गोत्र उवेले, तेने उच्चैर्गोत्रनी सत्ता टले बीजानें होय. एम जे प्रकृति मिथ्यात्व गुणगणे वर्त्तता पण कोइ जीवने होय कोइ जीवने न होय, ते अध्रुवसत्तानी प्रकृति कहीयें. ए अठावीश प्रकृति कही एटले सम्यक्त्व, मिश्र, मनुष्यद्विक, वैक्रिय एकादशक, जिननाम, चार आयु, आहारक सप्तक अने उच्चैर्गोत्र, एवं अठावीश थइ ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ए ॥

हवे गुणगणानी अपेक्षायें प्रकृतिनी सत्तानुं ध्रुवाध्रुवपणुं विचारे ढे.

पढम तिगुणेसु मिठं, निअमा अजयाइ अठ गे नक्कं ॥
सासाणे खलु सम्मं, सत्तं मिछाइ दसगेवा ॥ १० ॥

अर्थ--(पढमतिगुणेसु के०) मिथ्यात्व, सास्वादन अने मिश्र, ए प्रथमनां त्रण गुणगणाने विषे (मिछंनिअमा के०) मिथ्यात्वमोहनीयनी सत्ता निश्चयपणे एटले ध्रुवपणे होय. जे नणी मिथ्यात्व मोहनीयना उदय विना प्रथम गुणगणुं नज होय. तो ज्यां उदय होय, त्यां सत्ता तो ध्रुव होय, अने मिश्रगुणगणें पण मोहनीयना चोवीश, सत्तावीश अने अठावीश, ए त्रण सत्तास्थानक होय, त्यां पण मिथ्यात्वनी सत्ता सघले स्थानकें होय तेणे ध्रुवसत्ता होय.

शेष (अजयाइअठगेनक्कं के०) अजय एटले अविरति सम्यक्दृष्टि गुणगणाथी मांमीने अगीआरमा उपशांत मोहगुणगणा सुधीना आठ गुणगणें नजनायें होय. जे नणी क्षायोपशमिक सम्यक्दृष्टिने मिथ्यात्व मोहनीय उवेले थके मोहनीयनी त्रेवीश तथा बावीश प्रकृतिनी सत्तायें वर्त्तताने मिथ्यात्वनी सत्ता न होय तथा क्षायिकने पण न होय अने जेणे मिथ्यात्व उपशमाव्युं होय तेने सत्ता होय, तेथी ए आठ गुणगणे मिथ्यात्वमोहनीयनी अध्रुवसत्ता होय.

तथा (सासाणेखलुसम्मं के०) सास्वादन गुणगणें वर्त्ततो नियमा मोहनीयनुं एकज अठावीश प्रकृतिनुं सत्तास्थानक होय, परंतु मोहनीयनां बे, त्रण, सत्तास्थानक न होय. जे नणी उपशमसम्यक्त्वें करी त्रिपुंज करी त्यांथी पडतो सा

स्वादनगुणठाणे आवे, त्यां सर्व मोहनीय प्रकृतिनी सत्ता होय तेथी सम्यक्त्व मोहनीयनी सास्वादनने ध्रुव (सत्तं के०) सत्ता जाणवी.

अने (मिछाइदसगेवा के०) शेष मिथ्यात्व, मिश्र, अविरति, देशविरति, प्रमत्त, अप्रमत्त, निवृत्ति, अनिवृत्ति, सूक्ष्मसंपराय अने उपशांतमोह, ए दश गुणठाणे सम्यक्त्वमोहनीयनी सत्तानी नजना जाणवी, जे नणी सम्यक्त्व पामी पढी मिथ्यात्वें आव्युं होय ते ज्यां सुधी सम्यक्त्वपुंज उवेले नहीं, त्यां लगें सम्यक्त्व मोहनीयनी सत्ता होय, अने सम्यक्त्वपुंज उवेल्या पढी तथा अनादि मिथ्यादृष्टि जीवने सम्यक्त्व मोहनीयनी सत्ता न होय तेमज त्रीजे मिश्रगुणठाणे पण जो सम्यक्त्व पुंज उवेली आव्यो होय तेने सम्यक्त्वमोहनीयनी सत्ता न होय बीजाने होय तथा अविरत्यादिक आठ गुणठाणे क्षायिक सम्यक्दृष्टिने सम्यक्त्व मोहनीय खपावी तेथी तेने सम्यक्त्व मोहनीयनी सत्ता न होय तथा क्षायोपशमिक अने औपशमिक सम्यक्दृष्टिने ध्रुवसत्ता होय. एम आठ गुणठाणे सम्यक्त्व मोहनीयनी अध्रुवसत्ता कही ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ १० ॥

सासण मीसेसु धुवं, मीसं मिछाइ नवसु नयणाए ॥
आइ डुग अण नियमा, नइआ मीसाइ नव गम्मि ॥ ११ ॥

अर्थ—(सासणमीसेसु के०) सास्वादन अने मिश्र, ए बे गुणठाणे (मीसं के०) मिश्रमोहनीयनी सत्ता, (धुवं के०) ध्रुव जाणवी. केम के सास्वादने सर्व अठावीशें मोहप्रकृतिनी सत्ता ध्रुव होय अने मिश्रमोहनीयना उदय विना मिश्रगुणठाणुं होयज नहीं, तेथी त्यां पण मिश्रनी सत्ता ध्रुव होय. एम ए बे गुणठाणे मिश्रमोहनीयनी ध्रुवसत्ता जाणवी.

अने मिश्र तथा सास्वादन, ए बे गुणठाणा विना शेष (मिछाइनवसुनयणाए के०) एक मिथ्यात्व, बीजुं अविरति, त्रीजुं देशविरति, चोथुं प्रमत्त, पांचमुं अप्रमत्त, छठुं निवृत्ति, सातमुं, अनिवृत्ति, आठमुं सूक्ष्मसंपराय, नवमुं उपशांतमोह, ए नव गुणठाणे मिश्रमोहनीयनी सत्तानी नजना जाणवी, एटले कोइएकने होय अने कोइएकने न होय, जे नणी मिश्रपुंज उवेल्या पढी मिथ्यात्वें मिश्र मोहनीयनी सत्ता न होय अने जेणे मिश्रपुंज उवेल्यो नथी तेने मिश्र मोहनीयनी सत्ता होय अथवा अनादि मिथ्यात्वीने तो नज होय.

तथा अविरत्यादिक आठ गुणठाणे क्षायिक सम्यक्दृष्टिने मिश्रमोहनीयनी

सत्ता न होय, जे नणी सात प्रकृति खपावीने क्षायिक सम्यक्त्वी थाय तेथी मिश्र मोहनीयनी सत्ता टले क्षायिक सम्यक्त्व होय तेमाटें. तथा बीजा क्षायोपशमिक तथा औपशमिक सम्यक्दृष्टिने मिश्रमोहनीयनी सत्ता होय तेथी नजना कही एटले कोइएकने केवारेंक होय अने कोइएकने केवारेंक न होय. एम नव गुणठाणे मिश्रमोहनीयनी अध्रुवसत्ता होय.

(आइडुगअणनियमा के०) आदिद्विक एटले पहेले तथा बीजे, ए बे गुणठाणे अनंतानुबंधिया क्रोधादिक चारे कषायनी सत्ता निश्चय होय जे नणी मिथ्यात्व तथा सास्वादन, ए बे गुणठाणे नियमा अनंतानुबंधीया बंधाय तेथी ध्रुवसत्ता जाणवी.

शेष (नइआमीसाइनवगम्मि के०) मिश्र गुणठाणाथी मांडीने उपशांतमो ह लगेंनां नव गुणठाणाने विषे अनंतानुबंधिया कषायनी सत्ता संबंधि नजना जाणवी, जे नणी जेणे अनंतानुबधिया विसंयोज्या तथा उवेल्या एटले खपा व्या तेने एनी सत्ता न होय अने बीजाने होय मार्टे नजना जाणवी. ए स्वमतें कह्युं तथा कर्मप्रकृति अने पंचसंग्रहादिकने मतें तो अनंतानुबंधियानी सत्ता टल्या विना श्रेणी आरंने नहीं तेथी ते कहे ढे. जे अनंतानुबंधियानी विसंयोजना करी ने, उपशमश्रेणी आरंने तेथी तेने सातमा गुणठाणाथी उपरले गुणठाणे अनंतानु बंधियानी सत्ता न होय तथा मिश्रादिक पांच गुणठाणे तो कोइएकने अनंतानु बंधियानी सत्ता होय, अने कोइएकने न होय एम नजना जाणवी मार्टे अध्रुवस त्ता जाणवी, अने मिथ्यात्व तथा सास्वादन ए बे गुणठाणे अनंतानुबंधियानी ध्रुव सत्ता होय. एम बेहु मतें अनंतानुबंधिया कषायनी गुणस्थानकनी अपेक्षायें ध्रुवा ध्रुव सत्ता कही ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ११ ॥

हवे आहारकसप्तकनी सत्ता कहे ढे.

आहार सत्तगं वा, सव गुणे बि ति गुणे विणा तिबं ॥
नो नय संते मिछो, अंत मुहुत्तं नवे तिबे ॥ १२ ॥

अर्थ-(आहारसत्तगंवासवगुणे के०) एक आहारक शरीर, बीजुं आहारक उपांग, त्रीजुं आहारकसंघातन, चोथुं आहारकआहारक बंधन, पांचमुं आहारकतै जसबंधन, ढठुं आहारककार्मणबंधन अने सातमुं आहारकतैजसकार्मणबंधन, ए सात प्रकृति जे जीवें तथाविध विशुद्धचारित्र प्रत्ययें अप्रमत्तगुणठाणे बांधीने तथाविध संक्लेश अध्यवसायें मिथ्यात्व गुणठाणा लगें आवे तथा कोइएक वि शुद्धाध्यवससायें केवलज्ञान पण पामे तेथी सर्व गुणठाणे एनी सत्ता होय अ

ने कोइ एक जीव, ए सात प्रकृति बांध्या विनाज सर्व गुणस्थानक स्पर्शे तेने ए सात प्रकृतिनी सत्ता सर्व गुणठाणे न होय. ए रीतें नजना जाणवी.

तथा जिननामकर्मनी पण ए रीतेंज नजना जाणवी. जे नणी चोथा गुणठाणाथी लइने अपूर्वकरणना छठा पाया लगें जिननामनी बंधनूमि छे त्यां विशुद्धाध्यवसायें जिननाम बांधि पछी संक्लेशें मिथ्यात्वें जाय तेथी मिथ्यात्वें पण एनी सत्ता होय पण (बितिगुणेविणातिबं के०) बीजे अने त्रीजे गुणठाणे तीर्थंकरनामकर्मनी सत्तावालो न आवे तेथी ए बे गुणठाणा विना शेष बार गुणठाणे जिननामनी सत्ता पामीयें उपरले गुणठाणे पण चढतां जिननामनी सत्ता होय अने जे जीव जिननाम बांध्या विना सर्व गुणठाणां स्पर्शे तेनी अपेक्षायें सर्व गुणठाणे जिननामनी सत्ता न होय एटले बीजे, त्रीजे गुणठाणे जिननामनी सत्ता नज होय अने बीजा गुणठाणाउने विषे नजना जाणवी.

(नोजयसंतेमिछो के०) तथा आहारकशरीरादिक सात प्रकृतिनी सत्ता छतां अने जिननामनी सत्ता छतां ए उजयनी सत्ता सार्थे छतां तेने मिथ्यात्व गुणठाणुं न होय जे नणी नामकर्मनुं एकशो त्रणनुं तथा त्र्याणुं प्रकृतिनुं सत्ता स्थानक मिथ्यात्व गुणठाणे न पामियें, माटें आहारक सप्तक तथा जिननाम, ए बेहुमांहेथी एकनी सत्ता छतां मिथ्यात्व होय तेमध्यें (अंतमुहुत्तंनवेतिछे के०) अंतर मुहूर्त्त लगें जिननामनी सत्ता मिथ्यात्वें लहीयें पण अधिक न पामीयें जे नणी कोइएक सम्यक्दृष्टि जीवें पूर्वें नरकायु बांध्युं छे अने ते जीव आयु बांध्या पछी क्षायोपशमिक सम्यक्त्व पामीने तथाविध अध्यवसायें जिननाम बांधे, ते मरण समयें सम्यक्त्व वमतो नरकें जाय त्यां वली अंतर्मुहूर्त्त पछी वली सम्यक्त्व पामे तो जिननामकर्मनी सत्ता होय, अने जो नरकें गया पछी पतित परिणामें रहे तो अंतर्मुहूर्त्त पछी जिननामकर्म उवेले तेथी जिननामकर्मनी सत्ता टली जाय. एटले एक ध्रुव सत्ता अने बीजुं अध्रुवसत्ता रूप एम पांचमुं अने छठुं ए बे द्वार सार्थे कह्या ॥ १२॥

हवे घातिनी प्रकृति रूप सातमुं द्वार तथा अघातिनी प्रकृति रूप आठमुं द्वार, ए बे द्वार सार्थे कहे छे. हवे सर्वघातिनी प्रकृति तथा अघातिनी प्रकृति कहे छे.

॥ अथ सर्व घातिन्यः प्रकृतयः ॥

केवल जुअला वरणा, पणनिद्दा बारसाइम कसाया ॥
मिच्छंति सव घाई, चउ नाण ति दंसणा वरणा ॥ १३ ॥

अर्थ– तिहां जे कर्मप्रकृति, आत्माना गुणने आवरे, ते घातिनीप्रकृति जाणवी. तेमां सर्व घातिनी प्रकृतिना रस स्पर्द्धक तो, त्रामपत्रनी पेरें निश्छिड, तथा स्फटिक ग्रहनी पेरें निर्मल, द्राक्षानी पेरें सूक्ष्म सार प्रदेशें बहुलरस होय, तेथी ते सर्वघातिनी प्रकृति प्रदेशें अल्प होय तो पण वीर्यें अधिक जाणवी. हवे तेनां नाम कहे छे. (केवलजुअलावरणा के०) केवलज्ञानावरणीय अने केवलदर्शनावरणीय, ए बे प्रकृति, पोतानो आचार जे ज्ञान, दर्शन, गुण, तेने सर्वांशें आवरे, जेम सूर्यप्रजा, मेघें करी सर्व आवरी कहेवाय तथापि कांइ एक प्रज्ञानो अंश आवस्था विनानो पण रहे छे तेथी करी रात्री दिवसनो विजाग जणाय छे तेम जीवनो पण ज्ञानादिक गुण सर्व घातिनी प्रकृतियें करी सर्व आवस्यो छे तो पण जेणे करी जड चैतन्यनो विजाग होय, एटलो चैतन्यांश उघाडो रह्योछे (पणनिद्दा के०) तेणे पांच निद्रायें करी पण जे केवलदर्शनावरणीयें अण आवस्यो एवो जे दर्शनांश ते पण सर्वांशें आवरियें, ए निद्रापंचक पण सर्व इंद्रियना अवबोधने आवरे माटें सर्वघाति कहीयें. अहींआं पण मेघदृष्टांत जाववो. जेमाटें जो निद्रा मांहे पण शब्दादिक सांजली जागे छे तथापि ए निद्रा पण सर्वघातिनी जाणवी, तथा केवलज्ञान अने केवल दर्शनना आवरण पण सर्वथा टाव्या विना केवल ज्ञान उपजे नहीं माटें सर्व घाति कहियें. एटले ए सात सर्व घातिनी प्रकृति कही.

(बारसाइमकसाया के०) एमज आदिना बार कषाय जाणवा. तेमां अनंतानुबंधीया क्रोध, मान, माया अने लोज, ए चार तो सम्यक्त्वगुणने सर्वथा आवरे छे तेथी सर्वघाती कह्या अने अप्रत्याख्यानावरण क्रोधादिक चार पण देशविरतिगुणने सर्वथा आवरे छे. तथा प्रत्याख्यानावरण क्रोधादिक चार सर्व विरति गुणने सर्वथा आवरे छे माटें सर्वघाति जाणवा. अहींआं पण मेघनो दृष्टांत जलाव्यो तेथी मिथ्यात्वीने पण कोइ एक तपश्चर्यादिकनी प्रतिपत्ति जिनवचनथी अविरुद्ध होय तथा अविरतिने पण मांसाहारादिकनी निवृत्ति होय तथा देशविरतिने पण जावचारित्र होय, एम ए बार कषायनी प्रकृति पण सर्वघातिनी छे.

(मिछंतिसवघाई के०) मिथ्यात्वमोहनीय पण श्रीजिनजापित जीवाजीवादिक अनंतधर्मात्मक तत्वश्रद्धान रूप सम्यक्त्व गुणने सर्वथी हणे, छे ते जणीए पण सर्वघाति प्रकृति कहीयें. जो पण एना केटला एक बेगणीआ तथा एक गणीआ रसस्पर्द्धक देशघातीआ छे, तो पण अहींआं शुनाशुन परिणामें वं

धनी अपेक्षायें नथी लीधा. एटले एक केवलज्ञानावरणीय, एक केवलदर्शना वरणीय, पांच निद्रा, बार कषाय अने एक मिथ्यात्वमोहनीय. एवं वीश प्रकृति सर्वघातिनी थई.

हवे पच्चीश प्रकृति देशघाति कहे ले. तिहां देशघातिनी प्रकृतिना रसस्पर्द्धक स्थूलछिद्र कडानी पेरें, मध्यमछिद्र कांबलानी पेरें अने सूक्ष्मछिद्र पटवस्त्रनी पेरें, स्थूल प्रदेश नीरस, असार, बहुप्रदेश अल्पवीर्य, (चउनाणतिदंसणावरणा के०) एक मतिज्ञानावरणीय, बीजुं श्रुतज्ञानावरणीय, त्रीजुं अवधिज्ञानाव रणीय. चोथुं मनःपर्यवज्ञानावरणीय, ए चार ज्ञानावरणीयनी प्रकृति तथा चक्षु, अचक्षु अने अवधि, ए त्रण दर्शनावरणीयनी प्रकृति, एवं सात प्रकृति देशघा तिनी जाणवी. जे नणी केवलज्ञानावरण, केवल दर्शनावरण ए बे प्रकृति यें अण आवरयुं एवुं जे ज्ञान अने दर्शननो अनंतमो अंश तेने देशथी हणे, ते नणी देशघातिनी कहीयें. जो पण अवधिज्ञानावरणीय अवधिदर्शनावरणीय अने मनःपर्यवज्ञानावरणीयना केटला एक रस स्पर्द्धक सर्वघातिया पण ले जेणे करी पोताना अवधिज्ञानादिकनो अंश मात्र नथी देखातो तो पण एनो रसोदय क्षयोपशम अविरोधि ले तेथी देशघातिनी कही ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ १३ ॥

संजलणनोकसाया, विग्घं इअ देस घाइअ (अथ घा
तिन्यः प्रकृतयः) अघाइ ॥ पत्तेअ तणुद्वाऊ, तस
वीसा गोअ डुग वन्ना ॥ १४ ॥

अर्थ-(संजलण के०) संज्वलनाक्रोधादिक चार कषाय देशघातिया ले जे नणी ए सर्व विरतिरूप जीवना गुणनें देशथकी हणे ले. केम के एना उदयथी साधुने सातिचार व्रत थाय. बीजा कषायना उदयथी मूलनंगें अतिचार होय माटें एने देशघाती कही ले. (नोकसाया के०) हास्यषट्क तथा त्रण वेद, ए नव नोकषायमो हनीय प्रकृति पण देशघातिनी ले जे नणी ए प्रकृति चारित्रने विषे पण अतिचार मात्र उपजावे, पण एकली अनाचार जनक न होय, माटें देश घातिनी कही.

(विग्घंइअदेसघाइअ के०) अंतरायकर्मनी पांच प्रकृति ए पण देशघातिनी होय जे नणी पुजलद्रव्यनो अनंतमो नाग दान, लान नोगादिकने विषे होय ले. जे नणी ग्रहण धारण योग्य जे पुजल ले ते पुजल,द्रव्यने अनंतमे नागे ले तेमां पण सर्वनुं दान, लान, नोग, अने उपनोगादिक, करी न शके, केम के अ

कर्म नोकर्मादिक तथा आहारादिकनुं दान, लाज जोगादिक सर्व जीवने होय ते थी देशघातिनी कही. सर्व जीवने एनो क्षयोपशम होयज. तथा वीर्यांतरायनो पण जो सर्वघाती रस होय तो जीवनुं सर्व वीर्य आवरे थके जीव काष्ठनी पेरें निश्चेष्टावंत थाय, तेथी आहारादिकने ग्रही परिणमावी पण न शके ? ते जणी ए प्रकृति पण देशघातिनी जाणवी, तेथी सर्व जीवने वीर्यांतराय क्षयोपशम तारत म्यें, वीर्यतारतम्य होयज छे. केवली जगवानने वीर्यांतरायनो क्षय होय तेथी तेने अनंत वीर्य होय. एम पच्चीश प्रकृति देशघातिनी कही.

अने जो उदयापेक्षायें लेखवीयें, तो मिश्रमोहनीय अने सम्यक्त्व मोहनी य, ए बे प्रकृति पण देशघातिनी गणतां सत्तावीश प्रकृति थाय. तेनी सार्थे पूर्वोक्त सर्वघातिनी वीश प्रकृति मेलवीयें तेवारें सुडतालीश प्रकृति घातिनी थाय. तेथी शेष र ही जे पच्चोत्तेर प्रकृति ते (अघाइ के०) अघातिनी कही छे. जे प्रकृति जीवना ज्ञानादिक गुणने तो कांइ पण हणे नहीं तथापि जेम चोरनी संगत करतां सा धु पण चोर कहेवाय, तेम ए प्रकृति पण घातिनी प्रकृति सार्थे वेदतां घातिनी केहेवाय, ते अघातीनी प्रकृतिनां नाम कहे छे.

(पत्तेअतणुघ्घ के०) एक पराघात, बीजी उब्बास, त्रीजी आतप, चोथी उ द्योत, पांचमी अगुरुलघु. उट्ठी जिननाम, सातमी निर्माण, अने आठमी उपघा त, ए आठ प्रत्येक प्रकृति अघातिनी जाणवी. ए प्रकृति कोइ आत्माना गुणने न हणे, तनुअष्टक एटले “तणुवंगागिइ” ए गाथाने अनुक्रमें एक औदारिक, बीजुं वैक्रिय, त्रीजुं आहारक, ए त्रण शरीर तथा ए त्रण शरीरना त्रण उपांग तथा एनी सा थें कार्मण अने तैजस मेलवीयें, तेवारें तनुअष्टक थाय तथा छ संस्थान, छ संघय ण, जाति पांच, गति चार, खगतिद्विक, आनुपूर्वी चार, एवं पांत्रीश प्रकृति लेवी तथा (आउ के०) आयुनी चार प्रकृति, एवं उंगणचालीश अने आठ पूर्वें प्र त्येक प्रकृति कही छे. एवं सुडतालीश प्रकृति अघातिनी थइ.

तथा (तसवीसा के०) त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक, स्थिर, शुज, सुजग, सु स्वर, आदेय, यशःकीर्त्ति, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारण, अथिर, अशुज, ङु र्जग, ङुःस्वर, अनादेय, अयश, ए वीश प्रकृतिने त्रसविंशति प्रकृति कहीयें. (गोअ ङुग के०) गोत्रद्विक अने वेदनीयद्विक, ए उजय द्विकनी चार प्रकृति तथा (वन्नाइ के०) वर्ण, गंध, रस अने स्पर्श, एवं सर्व मली पच्चोत्तेर प्रकृति, अघातिनी कही एटले घातिअघाति द्वार संपूर्ण थयुं ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ १४ ॥

हवे ए कर्म प्रकृतिनुं घाति, अघातिपणुं रसनी अपेक्षायें होय, ते रस, मिष्ट तथा कटुकना भेदें करी बे प्रकारें छे. तिहां जे प्रकृतिनो रस मीठो आनंददायक होय ते पुण्यप्रकृति जाणवी, अने जे प्रकृतिनुं रस मल्लनी पेरें नींबनी पेरें कडवुं दुःख दायक होय, ते पापप्रकृति जाणवी. त्यां प्रथम पुण्यप्रकृति, बेंतालीश कहे छे.

॥ अथ पुण्यप्रकृतयः ॥

सुर नर तिगुच्च सायं, तस दस तणु वंग वइर चउरंसं ॥
परघासग तिरि आऊ, वन्न चउ पणिंदि सुभखगइ ॥ १५ ॥

अर्थ—ते मध्यें प्रथम (सुरनरतिगुच्च के०) सुरत्रिक एटले देवगति, देवानुपूर्वी, अने देवायु, ए त्रण प्रकृति शुभभावें बंधाय, ते भणी तथा एमां बहुल घणीज शाता होय, ते भणी पुण्यप्रकृति कहीयें अने नर एटले मनुष्यगति, मनुष्यानुपूर्वी अने मनुष्यायु, ए मनुष्यत्रिक ए त्रण भेद पण शुभभावें करी बंधाय. तथा उच्चैर्गोत्र पण पूज्यभणी पूजनीय योग्यता भणी, ए पण पुण्यप्रकृति जाणवी. तथा (सायं के०) शातावेदनीय पण शुभअध्यवसायें करी बंधाय. अनुकूल पणे वेदे ते माटें ए पुण्यप्रकृति जाणवी. तथा (तसदस के०) त्रसदशक ए नामकर्मनी पुण्यप्रकृति शुभपरिणामें बंधाय छे. (तणुवंग के०) तणु एटले औदारिकादिक पांच शरीर तथा औदारिक, वैक्रिय अने आहारक, ए त्रण उपांग ए आठ प्रकृति पण शुभ जाणवी. (वइर के०) छ संघयणमध्यें एक वज्रऋषभनाराच संघयण ए पण शुभ जाणवुं. (चउरंसं के०) छ संस्थानमध्यें समचतुरस्रसंस्थान ए पण शुभ छे. (परघासग के०) पराघात, उच्छ्वास, आतप, उद्योत, अगुरुलघु, जिननाम अने निर्माण, ए पराघातसप्तक पण शुभ जाणवुं. (तिरिआउ के०) तिर्यंचनुं आयु, ते पण पुण्यप्रकृति छे. जे भणी तिर्यंच पण जीववुं वांछे छे. तथा(वन्नचउ के०) वर्णमध्यें श्वेत, पीत, अने रक्त तथा गंधमध्यें शुभगंध, रसमध्यें कषायल, आम्ल अने मिष्ट, तथा स्पर्शमध्यें लघु, कोमल, चीकट, अने उष्ण. ए रीतें वर्णादिचतुष्क शुभ लेवुं. (पणिंदि के०) जाति पांच मध्यें एक पांचेंद्रिय जाति, शुभ परिणामें बंधाय, ते पुण्यप्रकृति जाणवी. अने (सुभखगइ के०) विहायोगतिमध्यें गज तथा हंसनी पेरें जे चाले, ते शुभविहायोगति जाणवी. ए पण शुभ परिणामे बंधाय माटें पुण्यप्रकृति जाणवी. ए बेंतालीश पुण्यप्रकृति जाणवी ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ १५ ॥

॥ अथ पापप्रकृतयः ॥ हवे ब्याशी पापप्रकृति कहे छे.

बायाल पुन्न पगइ, अपढम संठाण खगइ संघयणा ॥
तिरिडुग असाय नीउ, वघाय इग विगल निरय तिगं ॥१६॥

अर्थ-(बायालपुन्नपगइ के०) बेंतालीश पुण्यप्रकृति कही. जे नणी बंधयोग्यस्थानकमध्यें ए शुनपरिणामें बंधाय तथा संक्लेश परिणामें मंदरस बंधाय अने विशुद्धपरिणामें तीव्ररस बंधाय ते नणी ए शुन उत्तमपुण्यप्रकृति जाणवी. हवे पुण्य थकी विरोधी पापप्रकृति ब्याशी कहे छे. ए पाप प्रकृतिनो संक्लेश परिणामें तीव्ररस बंधाय अने विशुद्धपरिणामें मंदरस बंधाय, ते नणी पापप्रकृति कहीयें.

(अपढमसंठाणखगइसंघयणा के०) प्रथम समचतुरस्रसंस्थान विना शेष पांच संस्थान तथा प्रथम शुनविहायोगति विना बीजी अशुनविहायोगति, अहींआं लेवी, तथा प्रथमसंघयण विना शेष पांच संघयण एमां लेवां. ए अगीआर प्रकृति, प्रथमनां बे गुणठाणां लगें बंधाय. त्यां संक्लेश परिणामें उत्कृष्ट रस बंधाय अने विशुद्धपरिणामें मंदरस बंधाय, ते नणी ए पापप्रकृति कहीयें.

(तिरिडुग के०) तिर्यंचनी गति, तथा तिर्यंचानुपूर्वी, ए बे प्रकृति अशुन छे. जे नणी ए गतिमध्यें अनंतो काल पण जीव रहे, ए अत्यंतमोहोदय थकी बंधाय, माटें पापप्रकृति जाणवी तथा (असाय के०) अशातावेदनीय पण उदय आवे, तेवारें जीवने प्रतिकूलपणुं देखाडे, ते नणी पापप्रकृति कहीयें तथा (नीउवघाय के०) नीचैर्गोत्रने उदयें पण नीच कुलप्रत्यें पामवे करी जीव हेलनीय होय तेथी ए पण अशुनपापप्रकृति जाणवी, उपघातनामनें उदयें पण पडजीनी, चोरदांतादिकें करी डुःख पामे, तेथी अशुन जाणवी. (इगविगल के०) एकेंड्रियजाति तथा विकल एटले जेने पूर्ण पंचेंड्रिय नहीं होय, ते विकलेंड्रिय, बेंड्रिय, तेंड्रिय अने चौरिंड्रियने कहीयें. ए जातिनाम पण मिथ्यात्वें संक्लेशें बंधाय, ते माटें अशुन जाणवी. (निरयतिगं के०) नरकगति, नरकानुपूर्वी अने नरकायु, ए त्रण प्रकृति पण मिथ्यात्व विना न बंधाय, ते नणी अशुन पापप्रकृति जाणवी. ए त्रेवीश पापप्रकृति कही ॥१६॥

थावर दस वन्न चउ, क घाय पणयाल सहिअ वासीइ ॥
पाव पयडित्ति दोसुवि, वन्ना इगहा सुहा असुहा ॥ १७॥

अर्थ-(थावरदस के०) स्थावरदशकने पण अशुनपरिणामें वर्त्ततो थको

जीव पामे, (वस्नुचउक्क के०) वर्णमध्यें नील अने कृष्ण तथा गंधमध्यें डुरभिगंध तथा रसमध्यें तीखो अने कडवो तथा स्पर्शमध्यें गुरु, खर, लूक्ष अने शीत, ए चारे अशुन लेवा. एने संक्लेशें बांधे, तेजणी पापप्रकृति कहीयें. एवं साडत्रीश थइ.

तथा (घायपणयाल के०) घाती पीस्तालीश प्रकृति एटले ज्ञानावरणीय पांच, दर्शनावरणीय नव अने मोहनीयनी बवीश तथा अंतरायनी पांच, ए पीस्तालीश घातिनी प्रकृति आत्माना शुद्ध गुणने हणे, प्रतिकूलपणुं करे. तेथी ए पीस्तालीस घातिनी पापप्रकृति तेने आगली साडत्रीश प्रकृतियें (सहिअ के०) सहित करीयें, तेवारें (बासीइ के०) ब्याशी (पावपयडित्ति के०) पापप्रकृति थाय. एना विपाक जीव प्रतिकूलपणे वेदे, संक्लेशनी वृद्धियें एना रसनी वृद्धि होय, ते जणी एने पापप्रकृति कहीयें. ए बंधनी अपेक्षायें लेवी. अन्यथा तो सम्यक्त्व मोहनीय तथा मिश्रमोहनीय पण लेवाय, परंतु ते एटला माटें न लीधी के, तेनो बंध नथी. अहींआं शिष्य प्रश्न करे बे के, हे जगवन्! आठ कर्मनी मली बंधापेक्षायें, एकशो ने वीश प्रकृति कही बे. अने अहींआं तो पुण्यप्रकृति बेंतालीश तथा पापप्रकृति ब्याशी, ए बेहु मेलवतां एकशो ने चोवीश प्रकृति थाय बे, ते केम घटे? अहींआं गुरु उत्तर कहे बे के, हे शिष्य! एकशो ने विंशोत्तर बंधप्रकृतिमध्यें सामान्य पणें वर्ण, गंध, रस अने स्पर्श, ए चार प्रकृति लेखवी बे अने अहींआं तो मूल चार प्रकृतिना शुजाशुज विजाग करतां श्वेतादिक शुज अगीआर पुण्यप्रकृतिमांहे गणी बे अने नीलादिक अशुन नव पापप्रकृतिमांहे गणी बे. एम (दोसुवि के०) बन्ने स्थानकें (वन्नाइगहासुहाअसुहा के०) वर्णादिक चार प्रकृतिने विशेषें शुज अने अशुज पणे जूदी जूदी ग्रहण करी बे तेमाटें एकशो चोवीश थाय बे अने सामान्यें शुजाशुजनने एक ठामे गणतां एकशो ने वीश बंध प्रकृति थाय. अहींआं कांइ दोष नथी. एम पुण्यप्रकृति तथा पापप्रकृतिनां द्वार कह्यां॥ इति पुण्यपापद्वार ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ १७ ॥

एम पुण्य अने पापने परिणामें करी बंधनुं विरुद्ध पणुं होय तेमाटें पुण्यप्रकृति तथा पापप्रकृति कहिने हवे बंधे तथा उदयें विरोधिनी प्रकृति कहे बे. तेमध्यें पण सूचीकटाह न्यायें अल्प संख्यांक प्रकृति जणी प्रथम अपरावर्त्तमान प्रकृतिनुं द्वार कहे बे.

॥ अथाऽपरावर्त्तमानाः प्रकृतयः ॥ हवे अपरावर्त्तमान प्रकृतियो कहे बे.

नाम धुव बंधि नवगं, दंसण पण नाण विग्घ परघायं ॥
भयं कुछ मिछ सासं, जिणगुण तीसा अपरियत्ता ॥ १८ ॥

अर्थ-एक वर्ण, बीजो गंध, त्रीजो रस, चोथो स्पर्श, पांचमो तैजस, उठो कार्मण, सातमो निर्माण, आठमो उपघात, नवमो अगुरुलघु, ए (नामधुवबंधिनवगं के०) नाम ध्रुवबंधिनुं नवक, ए नामध्रुवबंधिनी नव प्रकृति सर्वथा बंधाय. एना बंधने स्थानकें कोइ शुजाशुज परिणामविशेषें बीजी प्रकृति बंधाय नहीं. केवल एना रसबंधमांहे जावनी मंदता करे, ते जणी अपरावर्त्तमान कही. (दंसणपणनाणविग्घपरघायं के०) चक्षुदर्शनादिक चार दर्शनावरणीय तथा मतिज्ञानादिक पांच ज्ञानावरणीय ए नव प्रकृति पण ध्रुवबंधिनी जणी अपरावर्त्तमान जाणवी. तथा दानांतरायादिक पांच अंतरायनी प्रकृति पण ध्रुवबंधिनी जाणवी तथा पराघात नामकर्म पण, ध्रुवबंधी ठे. ए अन्य प्रकृतिनो बंध तथा उदय रुंध्या विना पोतानो बंधोदय दीपावे. एनी विजागनी प्रकृति नथी तेजणी अविरोधिनी ठे.

(जयकुछमिछसासं के०) जयमोहनीय तथा जुगुप्सामोहनीय पण पूर्वोक्त युक्तियें अपरावर्त्तमान प्रकृति ठे तथा मिथ्यात्वमोहनीय पण ध्रुवबंधि तथा ध्रुवोदयीपणे जणी बंध उदयें अपरावर्त्तमान होय. अने उश्वासनामकर्म पण बंधें तथा उदयें कोइ प्रकृति सार्थे विरोधी नथी, तेथी अपरावर्त्तमान. (जिणगुणतीसाअपरियत्ता के०) तीर्थंकरनामकर्म पण तेमज बंधें तथा उदयें अविरोधिनी ठे ते जणी अपरावर्त्तमान कहीयें. ए सर्व, उगणत्रीश प्रकृति बंधें तथा उदयें बीजी प्रकृति सार्थे विरोधिनी नथी, तेथी अपरावर्त्तमान प्रकृति कहीयें. अहींआं कोइ पूठे जे सम्यक्त्वमोहनीय तथा मिश्रमोहनीयने उदयें मिथ्यात्व मोहनीयनो उदय न होय, तेथी ए तो उदयविरोधिनी ठे तो अपरावर्त्तमानमांहे केम गणी? अहींआं उत्तर कहे ठे जे, मिथ्यात्वमोहनीयनी बंधोदय जूमि प्रथम गुणठाणुं ठे. तिहां सम्यक्त्वमोहनीय अने मिश्रमोहनीय नथी जो ए मिथ्यात्वनी पोतानी जूमिमांहे एनो बंध उदय रुंधीने पोतानो बंध उदय देखाडत तो विरोधिनी कहेवात, परंतु तेम विरोधिनी नथी मार्टें अपरावर्त्तमान जाणवी. ए प्रकृतिनो बंध उदय, अनेरी प्रकृतिनो बंध, उदय निवारे नहीं, मार्टें अपरावर्त्तमान जाणवी ॥ इति स० ॥ १७ ॥ हवे एहथी विपरीत जणी परावर्त्तमान प्रकृति कहे ठे.

॥ अथ परावर्त्तमानाः प्रकृतयोनिरूप्यंते ॥

तणु अठ वेअ डुजुअल, कसाय उद्योअ गोय डुगनिद्दा ॥
तस वीसाउ परित्ता, खित्तविवागा ऽणुपुव्वीउ ॥ १८ ॥

अर्थ– जे एकेकी प्रत्येक प्रत्येक प्रकृतिनो बंध तथा उदय कोइएक समयें हो य, जेम औदारिक, वैक्रिय अने आहारक ए त्रण शरीरमध्यें एकजनोज बंध एक वारें होय. एम उपांग, संघयण, संस्थान, जाति, गति, खगति अने आनुपूर्वी मध्यें पण जाणवुं, तेथी एने परावर्त्तमान प्रकृति कहीयें, ते कहे छे. (तणुअठ के०) तनुप्रमु ख आठनी, उत्तर प्रकृति तेत्रीश जाणवी. तेनां नाम कहे छे. तनुत्रिक, उपांगत्रि क, संस्थानछक, संघयणछक, जातिपांच, गतिचार, खगतिद्विक, आनुपूर्वी चार, ए तेत्रीश प्रकृति थइ. ते आठ पिंमप्रकृतिमध्यें छे (वेअ के०).वेदत्रिक, ए पण बंध तथा उदयें विरोधी छे ते नणी परावर्त्तमान कहीयें. तथा (डजुअल के०) हा स्य अने रति तथा शोक अने अरति, ए बे युगलमांहे पण एक समयें एक युग लनोज बंध तथा उदय एक जीवने होय, तेथी ए पण परावर्त्तमान प्रकृति कहीयें.

(कसाय के०) क्रोध, मान, माया अने लोन, ए चार कषायमध्यें एक जी वने एक समयें एकेकनो उदय होय. एटले जेवारें क्रोधनो उदय होय, तेवारें मा नादिक त्रणनो उदय न होय, एम ए कषायनी शोल प्रकृति पण उदयविरोधि नी छे. ते नणी परावर्त्तमान जाणवी. (उज्जोअ के०) उद्योतनामकर्म पण आत पनामकर्म सार्थे विरोधी छे. जेने जे समयें आतपनामकर्मनो बंध तथा उदय होय, तेने उद्योतनामकर्मनो बंध तथा उदय ते समयें न होय, तेथी परावर्त्तमान प्रकृ ति कहीयें. (गोयडुग के०) गोत्रद्विक तथा वेदनीयद्विक, ए बे द्विक पण बंधोद य विरोधी छे. शाताने बंधें तथा उदयें अशातानो बंध तथा उदय न होय. नीचैर्गोत्रने बंधें तथा उदयें उच्चैर्गोत्रनो बंध तथा उदय न होय, तेथी परावर्त्त मान कहीयें. (निदा के०) पांच निड़ा पण उदय विरोधिनी छे. जे नणी एक नि ड़ानें उदयें शेष चार निड़ानो उदय न होय माटें परावर्त्तमान कहीयें.

(तसवीसाउ के०) त्रसादिक दश प्रकृति तेनी साथें प्रत्येक अनुक्रमें स्थाव रादिक दश प्रकृतिबंधें तथा उदयें विरोधिनी छे केमके त्रसने बंधें तथा उदयें स्थावरनो बंध तथा उदय न होय, तेमज बादर साथें सूक्ष्मनुं विरोधिपणुं छे अ ने पर्याप्त साथें अपर्याप्तनुं विरोधिपणुं छे. एमज प्रत्येक साथें साधारणनुं विरो धिपणुं छे. एम सर्वत्र मेलववुं. माटें ए वीश प्रकृति पण परावर्त्तमान जाणवी तथा आयुःकर्मनी चार प्रकृति जे छे, ते चारे बंधें तथा उदयें विरोधी छे, जे न णी एक समयें एक आयुनो बंध तथा उदय होय तेथी एने पण (परित्ता के०) परावर्त्तमान कहीयें. ए रीतें तनुअष्टकनी तेत्रीश, वेद त्रण, बे युगल, शोल कषा

य, उद्योत, आतप, गोत्र बे, वेदनीय बे, पांच निद्रा, त्रस विंशति अने चार आयु, एवं एकाणु प्रकृतिमां कोइ बंधे कोइ उदयें. कोइ बिहुं ठामे परावर्त्ति एटले फेरसार होय ते नणी परावर्त्तमान एवुं नाम विरोधिनी पणें कहीयें. इति परावर्त्तमानाऽपरावर्त्तमान द्वारद्वयं संपूर्ण ॥ ए रीतें बार द्वार संपूर्ण वखाण्यां.

हवे तेरमुं द्वार विवरे छे. त्यां जे विपाकना रसोदय तेनां असाधारण कारण अथवा स्थानक, ते चार प्रकारें छे. एक क्षेत्र, बीजो जीव, त्रीजो नव अने चोथो पुजल, तेमध्यें प्रथम क्षेत्रविपाकीनी प्रकृति कहे छे. तिहां क्षेत्र एटले आकाश प्रदेश विशेष तेनी मुख्यता पामीने जेनो उदय होय, जो पण सर्वप्रकृतिनो उदय, इव्य, क्षेत्र, काल अने नावनी सापेक्षतायें होय छे. पण अहींआं एनीज मुख्यता लेवी. जे नणी जीवने द्विवक्र त्रिवक्र श्रेणीयें परनव जातां आनुपूर्वीने उदयें करी, जेम बलदने नाथ साही फेरवीयें, तेम आनुपूर्वी उदय उत्पत्ति सन्मुख करे. ते नणी (खित्तविवागाऽणुपुवीउ के०) क्षेत्रविपाकिनी प्रकृति चारे आनुपूर्वीने कहीयें. जो पण वक्रगति विना पण संक्रमण करणें देवगति, मनुष्यगति, तिर्यंचगति अने नरकगति, ए चारमध्यें पोत पोतानी आनुपूर्वी संक्रमावी उदय आणे छे पण अहींआं केवल आनुपूर्वीना उदयनी मुख्यतानी अपेक्षायें वक्रगतिज लीधी ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ १९ ॥

हवे सर्व प्रकृति पोतानो विपाक जीवने देखाडे छे. तो पण केटली एक क्षेत्र मुख्यतायें विपाक देखाडे, ते क्षेत्रविपाकिनी, नवनी मुख्यतायें विपाक देखाडे, ते नवविपाकिनी, जे बाह्य शरीर पुजलने विषे पोतानो विपाक देखाडे, ते पुजलविपाकीनी जाणवी. ए त्रण निरपेक्ष जे आत्माने विषे साक्षात् विपाक देखाडे, ते जीवविपाकीनी प्रकृति जाणवी. ते जीवविपाकिनी प्रकृति, हवे कहे छे.

घण घाइ डुगोअ जिणा, तसिअर तिग सुनग डुनग चउसासं ॥
जाइतिग जिअ विवागा, आऊ चउरो नवविवागा ॥ २० ॥

अर्थ-(घण के०) मेघ ते जेम सूर्यनी प्रनानो (घाइ के०) घात करे, आवरे, तेम जे आत्मानां ज्ञान, दर्शन, श्रद्धान, चारित्र, दानादिक लब्धि, इत्यादिकने आवरे, ते नणी घनघातिनी प्रकृति कहीयें. तेनां नाम कहे छे. ज्ञानावरणीयनी पांच, दर्शनावरणीयनी नव, मोहनीयनी अठावीश अने अंतरायनी पांच. ए सुडतालीश प्रकृति, शरीर पुजलादिक निरपेक्ष विपाक जीवने देखाडे. माटे ए

प्रकृति जीवविपाकिनी कहीयें. (डुगोअ के०) एक गोत्रद्विक अने बीजुं वेदनी द्विक, ए बे युगल पण पोतानो विपाक जीवने विषे दीपावे, एथी उच्च, नीच त था सुखी डुःखी, जीव कहेवाय, माटें जीवविपाकिनी कहीयें तथा (जिण के०) तीर्थंकर नाम कर्मने उदयें एक परमऐश्वर्य पूजातिशय, बीजो वचनातिशय, त्रीजो ज्ञानातिशय अने चोथो अपायापगमातिशय, ए चार अतिशय जीवने होय, जे थकी जीव, तीर्थंकर परमात्मा कहेवाय. ते नणी ए प्रकृति पण जीवविपाकीनी जाणवी.

(तसिअरतिग के०) एक त्रस, बीजो बादर अने त्रीजो पर्याप्त, ए त्रसत्रिक अने एथी इतर स्थावर, सूक्ष्म अने अपर्याप्त ए स्थावरत्रिक एनें उदयें जीव, त्र स, बादर अने पर्याप्त तथा स्थावर सूक्ष्म अने अपर्याप्त, पण कहेवाय. एम ए ना उदयथी जीवनो पर्याय फरे, ते नणी एने जीवविपाकिनी प्रकृति कहीयें. (सुजग के०) एक सौजाग्य, बीजुं सुस्वर, त्रीजुं आदेय, अने चोथुं यशःकीर्त्ति; ए चार प्रकृतिने उदयें जीव सौजागी, सुस्वरवान् आदेय वचनवालो तथा यश स्वी कहेवाय. ते नणी ए प्रकृति पण जीवविपाकीनी डे अने (डुजगचउसासं के०) एक दौर्जाग्य, बीजुं डुःस्वर. त्रीजुं अनादेयवचन, चोथुं अयशःकीर्त्ति, एने उदयें जीव डुर्जागी, डुःस्वरवान्, अनादेयवचन वालो तथा यशोहीन मागो कहे वाय तेनणी ए प्रकृति पण जीवविपाकीनी डे. अने श्वासोश्वासनामकर्म पण जी वविपाकीनी प्रकृतिडे जो पण ए श्वासोश्वासपुजलरूप डे, तोपण एनी लब्धि जी वने होय. माटें जीवविपाकी कहेवाय. एवं शडशठ प्रकृति थइ.

(जाइतिग के०) एकेंड्रियादिक जाति पांच, देवादिकनी गति चार, अने खगति बे, ए अगीआर प्रकृतिमां जाति नामकर्मने उदयें जीव, एकेंड्रिय, बेंड्रिय, तेंड्रिय, चौरिंड्रिय अने पंचेंड्रिय कहेवाय, गतिनामकर्मना उदयथी जीव देवता, मनुष्य, तिर्यंच अने नारकी कहेवाय. खगतिनामकर्मना उदयथी जीवनी सुचाल. कुचाल कहेवाय. ते नणी ए जीवविपाकीनी प्रकृति जाणवी. एवं अठोत्तेर प्रकृति (जी अविवागा के०) जीवविपाकीनी कही. जो पण सर्वे प्रकृति निश्चें नयथी जी वविपाकीनीज डे जेनणी अजीव घटादिक पदार्थने विषे कोइ प्रकृति पोतानी श क्ति देखाडती नथी तोपण व्यवहारनयें चिहुं प्रकारें विपाक विचारतां ए अठो त्तेर प्रकृति जीव विपाकीनी कही.

हवे (आउचउरोजवविवागा के०) देवतादिकनो जव पामीने ते जवना प्रथ म समयथी मांडीने चरम समय लगें निरंतर पणे जे कर्म प्रकृति जीवने विषे

स्वशक्ति देखावे, आत्माने हेडनी पेरें रोकी राखे, परजवें जावा न दीये अने जेवा रें ते प्रकृति खपावे, तेवारें परजवनुं आयु उदय आवे थके पर जवें जीव जाय, एटले बीजी गतिमां जाय, तेमाटें ए आयुं ते जवने विषेज उदय आवेछे ते कारणे जवनी मुख्यतायें करी देवायु, मनुष्यायु, तिर्यंचायु अने नरकायु, ए चार प्रकृति, जवविपाकीनी कहेवाय. जो पण चारे गति पण नामकर्म पणे पोत पोताने जवें मुख्यवृत्तियें उदय आवेज छे, तथापि ए प्रकृति जवविपाकिनी कहेवाय. कारण के चरमशरीरी जीव पूर्वबद्ध शेष त्रण गतिना दलीकने मनुष्यगतिना एक आयुमां संक्रमावी उदयावलीमां आणी वेदीने खपावें जे जणी प्रदेशथी कर्म वेद्या विना बूटे नहीं, अने आयुष्य संक्रमाव्या विना मोक्षें न जाय तेथी आयुं संक्रमाव्या पछी तेने कोइ प्रकारें परजवायुनो उदय न होय, स्वजवनोज उदय होय, तेथी ए चार प्रकृति जवविपाकीनी कहीयें ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ २० ॥

हवे पुजलविपाकीनी प्रकृति कहे छे. जे पोतानी शक्ति शरीरादिक पुजलने विषे देखाडे ए प्रकृतिउनो करेलो गुण तथा अवगुण, अनुग्रह, उपघात. शरीरादिक नोकर्मपुजलने विषे होय, तेथी ए पुजलविपाकीनी प्रकृति कहियें. जो पण अहीं कंटकादिक अशुज पुजल पामी अशाता वेदनीयज पोतानो विपाक देखाडे छे. तथा फूल. चंदन. कर्पूर, कस्तुरी प्रमुख शुज पुजल लइने शातावेदनीयज पोतानो विपाक देखाडे छे. तोपण ए शाता तथा अशातावेदनीयने पुजल विपाकीनी प्रकृति न कही. परंतु ए प्रकृतिनो कस्यो अनुग्रह, उपघात. जीवने होय. माटें ते कहीयें छैयें.

नाम धुवोदय चउ तणु, उघाय साहारणिय जोअतिगं ॥
पुग्गल विवागि बंधो, पयइ ठिइ रस पएसत्ति ॥ २१ ॥

अर्थ-(नामध्रुवोदय के०) एक निर्माण, बीजी स्थिर, त्रीजी अस्थिर, चोथी शुज, पांचमी अशुज, छठी तैजस, सातमी कार्मण, आठमी वर्ण, नवमी गंध, दशमी रस, अगीआरमी स्पर्श अने बारमी अगुरुलघु, ए बार प्रकृति नामध्रुवोदयी कहेवाय. ए बारने अनुक्रमें अंगोपांग नोकर्मपुजलनुं ठामनुं ठाम जोडवुं, हाड दांतनुं कर्मपुजलनो स्थिरबंध तथा लोही लालनो अस्थिर बंध, तेमज मस्तकादिकशुज, पगप्रमुख अशुज, शरीर पुजलनो वर्ण, गंध, रस, स्पर्शादिक पुजलने विषे होय, ते जणी ए बार प्रकृति पुजलविपाकीनी कही, अने (चउतणु के०) तनुचतुष्कनी अढार प्रकृति, तेनां नाम कहे छे. एकतो औदारिक, वैक्रिय

अने आहारक, ए त्रण शरीर तथा बीजा एज त्रण शरीरनां उपांग त्रण, त्रीजा संघयण ब अने चोथा संस्थान ब, एवं तनुचतुष्कनी अढार प्रकृति पण पुज्ञलविपाकीनी बे. जे नणी ए शरीरनामकर्मना उदयथकी औदारिकादिक शरीर पणे पुज्ञल परिणमे बे. तथा अंगोपांग पणे तथा आकार पणे तथा हाडसंधि पणे पुज्ञल परिणमे बे. ए कर्मपुज्ञलने विषे पोतानी शक्ति दीपावे बे. ते नणी पुज्ञलविपाकीनी प्रकृति कहीयें. एवं त्रीश प्रकृति कही.

(उवघाय के०) उपघात नामकर्मने उदयें जीवने अंगुली प्रमुख अधिक अंग होय ते पण पोतानी शक्ति पुज्ञलने विषे देखाडे बे ते नणी तथा (साहारणिय के०) साधारण नामकर्मनो उदय पण शरीर पर्याप्ति पूरी कस्या पढी उदय आवे तेथी घणा जीवनुं एक साधारण शरीर होय, तेथी ए पण पुज्ञलविपाकीनी प्रकृति बे तथा ए थकी इतर प्रत्येक नाम कर्म पण शरीराश्रित बे, ते माटें पुज्ञल विपाकिनी प्रकृति बे, अने (उजोअतिगं के०) उद्योत, आतप ने पराघात, ए उद्योतत्रिक पण शरीर पुज्ञलने विषे पोतानी शक्ति दीपावे, तेथी करी जीवनां शरीर, शीत प्रकाशवान् तथा उष्णप्रकाशवान् परने डुस्सहनीय होय. ते माटें ए पण पुज्ञल विपाकिनी प्रकृति जाणवी. एवं बत्रीश प्रकृति, (पुग्गलविवागि के०) पुज्ञल विपाकिनी कही. एम अनुक्रमें चार प्रकृति क्षेत्रविपाकिनी, अठोतेर जीवविपाकिनी, चार नवविपाकिनी अने बत्रीश पुज्ञलविपाकिनी, ए सर्व मली एकशो ने बावीश प्रकृति उदयनी अपेक्षायें होय जे नणी विपाकिनी कहेतां रसोदय कहीयें. एम चार विपाक द्वार कह्यां.

हवे (बंधो के०) चार बंधनां द्वार कहे बे. त्यां जे स्थिति, रस अने प्रदेश बंधनो समुदाय ते (पयइ के०) प्रकृतिबंध जाणवो, तथा योग प्रत्ययें गृह्यां एवां जे कर्मपुज्ञल, त्यां अध्यवसाय विशेषें कर्मपणे रहेवानी स्थितिनुं मान ते बीजो (ठिइ के०) स्थितिबंध जाणवो तथा शुजाशुज अध्यवसाय विशेषें करी जे मीठो रस ते अनुकूलपणे वेदीयें अने कडवो रस ते प्रतिकूल पणे वेदीयें तेमध्यें पण वली एकठाणीउं, बेठाणीउं, त्रिठाणीउं, चउठाणीउं तथा घातिउं, अघातिउं, एवा विपाकरसनुं बांधवुं, ते त्रीजो (रस के०) रसबंध जाणवो. अने जे योगनी उत्कटतायें घणां दल मले अने योगनी मंदतायें थोडां दल मले. एम योगनी तारतम्यें करी कर्मदलनुं तारतम्यपणुं होय ते चोथो (पएसत्ति के०) प्रदेशबंध जाणवो. इति एम विवक्षायें चार बंध ते एक बांधतां चारे बंधाय. अहींआं लाडवानो दृष्टांत पूर्वें कह्यो बे ते नाववो ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ११ ॥

ते मध्यें प्रथम प्रकृतिबंध विचारे ले. तिहां एक, बे, त्रण इत्यादिक संख्यायें प्रकृतिनुं बांधवुं, तेने प्रकृतिबंधस्थानक कहीयें. ते बंधस्थानक मूल प्रकृतिआश्री तथा उत्तर प्रकृतिआश्री, एम बे नेदें होय. ते मध्यें पण अल्पसंख्याथी घणी संख्याने बंधस्थानकें जाय. ते प्रथम नूयस्कार बंध जाणवो अने जे घणी संख्याथी थोडी संख्याने बंधस्थानकें आवे, ते बीजो अल्पतर बंध जाणवो. एकज संख्याने स्थानकें रहेतां त्रीजो अवस्थितबंध जाणवो अने अबंधक थइने फरी प्रथम एकादि प्रकृति बांधे, तिहां चोथो अवक्तव्य बंध जाणवो. एम प्रसंग पणे चार बंध कहेवाय. तिहां प्रथम मूल प्रकृतिना बंधस्थानक कहे थके नूयस्कारादिक सुखें कहेवाय. ते नणी ते मूल प्रकृतिनां बंधस्थानक, प्रथम कहीयें ठैयें. तेमज उत्तर प्रकृतिने विषे पण बंधस्थानक कहेवा पूर्वक नूयस्कारादिक चार बंध कहेशे.

मूल पयडीण अड स, त्त ठेग बंधेसु तिन्नि नूगारा ॥
अप्पतरा तिअ चउरो, अवठिआ नहु अवत्तवो ॥ २२ ॥

अर्थ—(मूलपयडीणअड के०) मूल प्रकृति ज्ञानावरणादिकथी मांमीने अंतराय कर्म पर्यंत ए आव कर्म, जे वारें जीव बांधे, तेवारें एक आठनुं बंधस्थानक कहेवाय, ते अंतरमुहूर्त्त सुधी रहे, जे नणी आयुःकर्मनो बंध आखा नव मध्यें एकज वार अंतर मुहूर्त्त सुधी होय. ए बंध प्रथम गुणगणाथी लइने सातमा गुणगणा सुधी पामीयें, तेमांहे पण मिश्रगुणगणे आयु न बंधाय, तेथी त्यां (सत्त के०) सात कर्मनुं बंधस्थानक होय. ए सात कर्मनुं बंधस्थानक पण प्रथम गुणगणाथी लेइने नवमा गुणगणा सुधी होय. एनो काल जघन्य तो अंतर मुहूर्त अने उत्कृष्टथीतो पूर्वकोडीने त्रीजे नागें अधिक ठ मास हीन तेत्रीश सागरोपम लगें जाणवो. केमके पूर्व कोडीने त्रीजे नागें देवायु बांधे, तेनी अपेक्षायें लेवो. ए आठनुं तथा सातनुं बे बंधस्थानक थयां.

(ठेगबंधेसुतिन्निनूगारा के०) दशमे गुणगणे आयु तथा मोहनीय ए बे कर्म हीन ठ कर्मनो बंध, ए पण अंतर मुहूर्त्त सुधी होय अने उपशांत मोहादिक त्रण गुणगणे एक वेदनीयनो बंध जाणवो. एनो काल जघन्य अंतर मुहूर्त्त उत्कृष्टो तो देशोन पूर्वकोडी प्रमाण केवलीनी अपेक्षायें जाणवो. ए चार बंधस्थानक कह्यां. तेने विषे त्रण नूयस्कारबंध कहे ले. तिहां एक बांधी पठी ठ कर्म बांधतां प्रथम समयें प्रथम नूयस्कार बंध. ए अगीआरमे गुणगणे उपशमश्रेणीथी पडतां होय, तथा दशमे गुणगणे ठ कर्म बांधी नवमे गुणगणे मोह सहित सात कर्म बांधतां प्रथम

समयें बीजो नूयस्कार बंध. तेने वली आयु सहित आठ कर्म बांधतां प्रथम स मयें त्रीजो नूयस्कार बंध एम त्रण नूयस्कारबंध कह्या. अहींआं कोइ पूछे जे उ पशम श्रेणीयें अगीआरमे गुणठाणे आयुक्षयें मरण पामीने, अनुत्तर विमानें दे वता पणे उपजे, ते प्रथम समयें चोथे गुणठाणे सात कर्म बांधें, तेने प्रथम समयें नूयस्कार होय, तो ए चोथो नूयस्कार केम न कह्यो ? तेनो उत्तर कहे छे के जो पण एकबंधथी सात कर्म बंध करे, तो पण बंधस्थानक सातनुं एकज छे, ते नणी जूदो न लेखव्यो. बंधस्थानकनो नेद होय तो जूदो नूयस्कार लेखवाय.

(अप्पत्तरातिअ के०) हवे अल्पतर बंध कहे छे. आयुर्बंध कस्या पछी सात कर्म बांधतां प्रथम समयें अल्पतर बंध पहेलो जाणवो तथा नवमा गुणठाणाने प्रांतें सात कर्म बंध करी दशमा गुणठाणाने प्रथम समयें मोहनीय हीन करी छ कर्म बांधतां, बीजो अल्पतर बंध जाणवो. तथा छ कर्मथी उपशांतमोहें तथा क्षीणमोहें एक कर्म बांधतां, त्रीजो अल्पतर बंध जाणवो.

एमज (चउरोअवछिआ के०) चार अवस्थित बंध कहे छे. जे नणी मूल प्रकृ तिनां बंधस्थानक चार, ते चार ठामें आव्या पछी बीजे समयें अवस्थितबंध कहेवाय. जेम आठ कर्मना बंधथी सातनो बंध करतां प्रथम समयें अल्पतर बंध पछी ज्यां सुधी तेज बंधस्थानकें जीव रहे, त्यां सुधी प्रथम अवस्थित बंध कहेवाय. एम सात पछी छ बांधतां प्रथम समयें अल्पतर बंध. अने पछी बीजो अवस्थित बंध जाणवो, अने छथी एक बांधतां प्रथम समयें अल्पतरबंध, पछी त्रीजो अवस्थित बंध जाणवो. सातथी आठनो बंध करतां प्रथम समयें नूयस्कार बंध. अने पछी चोथो अवस्थित बंध जाणवो. एम चार अवस्थित बंध कह्या.

(नहुअवत्तवो के०) मूल प्रकृतिनो अबंधक अयोगी गुणठाणे होय अने त्यांथी पडवुं नथी अने अव्यक्त बंध तो अबंधक थइने वली बांधे, तेने अव्यक्त बंध कहीयें अने अयोगी गुणठाणा पछी कर्मबंधपणुं नथी माटें मूल प्रकृतिनो अव्यक्तबंध नथी ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ २२ ॥

हवे नूयस्कारादिक बंधनां लक्षण कहे छे.

एगादहिगे नूउ, एगाई ऊण गम्मि अप्पतरो ॥
तम्मत्तो अवठियउ, पढमे समए अवत्तवो ॥ २३ ॥

अर्थ-(एगादहिगेनूउ के०) एक, बे, इत्यादिक पूर्वेला बंधथकी आगलें अ

धिकी प्रकृति बांधे. ते नूयस्कार बंध जाणवो, एटले पूर्वें थोडी प्रकृति बांधतो होय, अने पढी एकादि अधिक प्रकृति बांधे, ते नूयस्कारबंध प्रथम समय जाणवो, अ ने (एगाइकणगम्मिअप्पतरो के०) पूर्वबंधथी एकादि प्रकृति उंठी बांधे, एटले पूर्वें घ णी प्रकृति बांधतो होय अने पढी एकादि कणी प्रकृति बांधे, ते प्रथम समयें अल्पतरबंध जाणवो. (तम्मत्तोअवठियउ के०) प्रथमसमयें जेटलोज बंध हो य, एटले पूर्वें बांधतो होय तेटलीज प्रकृति ज्यां सुधी निरंतर बांधे, त्यां सुधी अ वस्थित बंध कहीयें. अने (पढमेसमएअवत्तवो के०) सर्वथा अबंधक थइने फरी पहेला बंध करे, तेवारें प्रथम समयने विषे अवक्तव्य बंध कहीयें. ए चार बंधनां लक्षण कह्यां ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ २२ ॥

हवे सामान्यें उत्तर प्रकृतिनां बंधस्थानक उंगणत्रीश ढे, तेनां नाम कहे ढे. एक, सत्तर, अढार, ओगणीश, वीश, एकवीश, बावीश, ढवीश, त्रेपन्न, चोपन्न, प ञ्चावन्न, ढप्पन्न, सत्तावन्न, अठावन्न, उंगणशाठ, शाठ, एकशठ, त्रेशठ, चोशठ, पांश ठ, ठाशठ, शडशठ, अडशठ, उंगणोत्तेर, सीत्तेर, एकोत्तेर, बहोंत्तेर, तहोंत्तेर, अने चम्मो तेर, ए उंगणत्रीश बंध स्थानक ढे, त्यां नूयस्कार बंध अठावीश होय, ते कहे ढे.

उपशांतमोहगुणठाणे एक वेदनीय बांधीने पडतो दशमे गुणठाणे ज्ञान पां च, दर्शन चार, अंतराय पांच. उच्चैर्गोत्र अने यशःकीर्त्ति साथें वेदनीय बांधतां सत्तर प्रकृतिने बंधें प्रथम समयें प्रथम नूयस्कार बंध. तिहांथी पडतो नवमे गुण ठाणे संज्वलना लोनसाथें अढार प्रकृति बांधतां बीजो नूयस्कार. ते मध्यें संज्वलनी माया साथें उंगणीश बांधतां त्रीजो नूयस्कार, तेमध्यें संज्वलनामान साथें वीश बांधतां चोथो नूयस्कार, ते संज्वलना क्रोध साथें एकवीश बांधतां पांच मो नूयस्कार, ते मध्यें पुरुषवेद साथें बावीशनो बंध बांधतां ढठो नूयस्कार, ते मध्यें हास्य, रति, नय अने जुगुप्सा, ए चार प्रकृतिनो अधिक बंध करतां अपू र्व करणने सातमे नागें ढवीशनो बंध करतां सातमो नूयस्कार, तेमध्यें आठमाने ढठे नागें देवप्रायोग्य नाम कर्मनी अठावीश प्रकृति बांधतां त्रेपननो बंध, अहींआं य शःकीर्त्ति पूर्वें ढवीश प्रकृति मध्यें आवी ढे. तेथी देवप्रायोग्य सत्तावीशने बंधें त्रेपन प्रकृति होय. ए आठमो नूयस्कार, तेमध्यें जिननाम बांधतां चोपन्नना बंधें नवमो नू यस्कार, ते त्रेपन आहारकद्विक साथें बांधतां पञ्चावन्नना बंधें दशमो नूयस्कार, ते पञ्चावन्न जिननाम सहित बांधतां ढप्पन्नना बंधें अगीआरमो नूयस्कार, अपू

वैकरणना प्रथम नागें उपन्नने जिननाम हीन तथा निद्रा, प्रचला सार्थे बांधतां सत्तावन्नना बंधें बारमो नूयस्कार, ते वली जिननाम सहित अठावनना बंधें तेरमो नूयस्कार, ते देवायु सार्थे अप्रमत्तें उंगणशाठ बांधतां चौदमो नूयस्कार, देशविरति गुणगाणे देवप्रायोग्यनी अठावीश प्रकृति बांधतां ज्ञान पांच, दर्शन छ, वेदनीय एक, मोहनीय तेर, देवायु एक, नामनी अठावीश, गोत्रनी एक, अंतरायनी पांच, एवं शाठ प्रकृति बांधतां पंदरमो नूयस्कार, ते जिननाम सहित एकशतने बंधें शोलमो नूयस्कार, अहींआं कोइ प्रकारें एक जीवने एक समयें बाशठ प्रकृतिनो बंध संनवे नहीं, तेथी तेनो नूयस्कार पण न कह्यो. चोथे गुणगाणे आयुअबंध कालें देव प्रायोग्य नामनी अठावीश प्रकृति बाधतां, ज्ञान पांच, दर्शन छ, वेदनीय एक, मोहनीय सत्तर, गोत्रनी एक, नामनी अठावीश, अंतरायनी पांच. ए त्रेशठ प्रकृति बांधतां सत्तरमो नूयस्कार, देवायुबंध सहित चोशठ प्रकृति बांधतां अढारमो नूयस्कार, जिननाम सहित पांशठ बांधतां उंगणीशमो नूयस्कार, चोथे गुणगाणे देवता होय, तेने मनुष्य प्रायोग्य त्रीश प्रकृति बांधतां बाशठना बंधें वीशमो नूयस्कार, मिथ्यात्वगुणगाणे ज्ञान पांच, दर्शन नव, वेदनीय एक, मोहनीय बावीश, आयुनी एक, नामनी त्रेवीश, गोत्रनी एक. अंतरायनी पांच, ए शडशठ प्रकृति बांधतां एकवीशमो नूयस्कार, त्यां नामकर्मनी पच्चीश अने आयु रहित अडशठ बांधतां. बावीशमो नूयस्कार, ते आयु सहित उंगणोत्तेर बांधतां त्रेवीशमो नूयस्कार, ते वली नामकर्मनी छवीश प्रकृति सार्थे सीत्तेर बांधतां चोवीशमो नूयस्कार, ते आयु रहित अने नामकर्मनी अठावीश सार्थे एकोत्तेर बांधतां पच्चीशमो नूयस्कार, ते उंगणत्रीश नामकर्मनी सार्थे बहोत्तेरना बंधें छवीशमो नूयस्कार, ते आयु सहित तहोत्तेर बांधतां सत्तावीशमो नूयस्कार, ते वली नामकर्मनी त्रीश बांधतां ज्ञान पांच, दर्शन नव, वेदनीय एक, मोहनीय बावीश, आयु एक, नामनी त्रीश, गोत्रनी एक, अंतरायनी पांच. एवं चम्मोत्तेर बांधतां अठावीशमो नूयस्कार, अहींआं प्रकारांतरें अनेक बंधस्थानक संनवे, ते आपणी बुद्धिसी विचारी लेवा. एम अठावीश अल्पत्तर बंध पण विपरीतपणे लेवा अने उंगणत्रीश बंधस्थानक नणी अवस्थित बंध पण उंगणत्रीश लेवा. अहींआं अवक्तव्यबंध न संनवीयें, जे नणी सर्वत्र उत्तरप्रकृतिनो अबंधक अयोगी गुणगाणे जीव होय, त्यांथी पडवुं नथी माटें अवक्तव्य बंध न होय॥ इति समुच्चयार्थः ॥२३॥

ए रीतें उत्तर प्रकृतिना बंध, सामान्यें कही, हवे विशेषें कहे छे.

नव छ चऊदंसे डुडु, ति डु मोहे डु इगवीस सत्तरस ॥
तेरस नव पण चउ ति डु, इक्को नव अठ दस डुन्नि ॥ २४ ॥

अर्थ— प्रथम ज्ञानावरणीय कर्मनुं एकज बंधस्थानक छे, ते जणी त्यां भूयस्कारादिक न संजवे. अने (नवछचऊदंसे के०) दर्शनावरणीयमांहे एक नवनो बंध बीजो छनो बंध, अने त्रीजो चारनो बंध, ए त्रण बंधस्थानक छे. तेमध्यें सर्व दर्शनावरणीयनी नवे प्रकृति बांधतां प्रथमनां बे गुणठाणे नव प्रकृतिनुं बंधस्थानक जाणवुं. एनी जघन्यस्थिति, अंतर मुहूर्त्तनी अने उत्कृष्ट तो अजव्यनी अपेक्षायें अनादि अनंत अने नव्यनी अपेक्षायें अनादि सांत, तथा सादि सांत, तेमांथी थीणछी, निद्रानिद्रा अने प्रचलाप्रचला, ए त्रण प्रकृतिनो बंध विछेद थये थके मिश्रादिक गुणठाणे छ प्रकृतिनो बंध जाणवो. ते पण जघन्यथी तो अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्टथी तो तेत्रीश सागरोपम पूर्वकोडी पृथक्त्वें फाजेरा जाणवा. तेमांथी निद्रा अने प्रचला ए बे प्रकृतिनो अपूर्वकरणना प्रथम जागें बंध विछेद थये थके आठमाना शेष नागें तथा नवमे अने दशमे गुणठाणे चार प्रकृतिनो बंध जाणवो. ते जघन्यतो एक समय श्रेणी मध्यें मरण पामे, तेनी अपेक्षायें जाणवो अने उत्कृष्ट पणे अंतर मुहूर्त्त प्रमाण होय, अहींआं नूयस्कार तथा अल्पतरना बंध, (डुडु के०) बे बे होय अने अवस्थितबंध, (ति के०) त्रण होय तथा अवक्तव्यबंध, (डु के०) बे होय, ते कही देखाडे छे. तिहां उपशमश्रेणीथी पडतां आठमा गुणठाणाना बीजा नागें आवतां सुधी दर्शनावरणीयनी चार प्रकृति बांधतो वली अहीं बंधविछेद कर्यो हतो ते फरी आवतां निद्रा अने प्रचला, ए बे प्रकृतिनो बंध करे, ते तेनी सार्थे मेलवतां छ प्रकृतिनो बंध करवाना प्रथम समयें नूयस्कार बंध पहेलो जाणवो. तथा नवनो बंध करतां बीजो नूयस्कार बंध जाणवो तथा नवनो बंध करी फरी छ नो बंध करतां प्रथम समयें प्रथम अल्पतर बंध, तथा अपूर्वकरण गुणठाणाना प्रथम नागें छ प्रकृतितो बंध करी वली निद्रा अने प्रचलानो बंध विछेदी चारनो बंध करतां, प्रथम समयें बीजो अल्पतर बंध जाणवो. ए त्रणे बंध स्थानकें बीजा समयथी मांमीने ते ते बंधस्थानकना चरम समय लगें त्रण अवस्थितबंध जाणवा तथा अगीआरमे गुणठाणे दर्शनावरणीयनो अबंधक होय अने तिहांथी पडतां दशमे गुणठाणे दर्शनावरणीयनी चार प्र

कृति बांधतां प्रथम समयें प्रथम अवक्तव्यबंध. तथा जे जीव उपशांतमोह गुणठाणे आयुःक्षयें मरण पामीने अनुत्तरविमानें देव थाय, तिहां ठ प्रकृति बांधे तेने प्रथम समयें बीजो अवक्तव्य बंध होय, एटले दर्शनावरणीयनां बंधस्थानकें, नूयस्कारबंध, अल्पतरबंध, अवस्थितबंध तथा अवक्तव्य बंध कह्या.

हवें मोहनीयनां दश बंधस्थानक ठे, ते कहे ठे.

(मोहे के०) मोहनीयनी अट्ठावीश प्रकृतिमध्यें सम्यक्त्वमोहनीय तथा मिश्रमोहनीय बांधे नहीं. बाकी ठवीश प्रकृति बंध योग्य तेमां पण त्रण वेदमध्यें एक समयें एकज वेद बांधे, तथा हास्य अने रति तथा शोक अने अरति, ए बे युगल मध्यें पण एकज युगल बंधाय. केमके ए प्रकृति बंधोदय विरोधिनी ठे ते नणी मिथ्यात्व गुणठाणे (डु के०) बावीश प्रकृतिनुं बंधस्थानक होय. एनी स्थिति अनव्यनी अपेक्षायें तो अनादि अनंत अने नव्यनी अपेक्षायें अनादि सांत तथा सादि सांत जाणवी. तेमध्यें पण सास्वादन गुणठाणे मिथ्यात्वमोहनीय न बंधाय, ते वारें (इगवीस के०) एकवीश प्रकृतिनुं बंध स्थानक होय. अहींआं डु तथा इग ए बे शब्दने वीश शब्द जोडवो, एनी स्थिति जघन्य एक समय अने उत्कृष्टथी तो ठ आवली प्रमाण जाणवी. तेमध्यें वली मिश्र अने अविरति, ए बे गुणठाणे चार अनंतानुबंधीया न बंधाय, तेवारें (सत्तरस के०) सत्तर प्रकृतिनुं बंधस्थानक होय. एनी स्थिति जघन्यतो अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्टतो तेत्रीश सागरोपम काल पूर्वकोडी पृथक्त्व अधिक होय, जे नणी अनुत्तरवासी देव चवीने ज्यां सुधी विरतिपणुं न लहे. त्यां सुधी तेने ए बंधस्थानक होय. ते मध्येंथी देशविरति गुणठाणे अप्रत्याख्यानीआ कषाय चार, न बंधाय तेथी (तेरस के०) तेर प्रकृतिनुं बंधस्थानक होय. ए पण जघन्यथी तो अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्टथी तो देशोन पूर्वकोडी प्रमाण जाणवी. तेमध्यें वली प्रमत्त अने अप्रमत्त गुणठाणे प्रत्याख्यानावरण चार कषाय न बंधाय. माटें त्यां (नव के०) नव प्रकृतिनो बंध होय. एनो काल जघन्य एक समय जे नणी कोइ एक जीव एक समयें मात्र सर्व विरतिपणु लइ ने बीजे समयें मरण पामे, तेनी अपेक्षायें जाणवुं अन्यथा जघन्य अंतर मुहूर्त्त अने उत्कृष्टो तो देशोन पूर्वकोडी प्रमाण जाणवो. तेमध्यें हास्य, रति, नय अने जुगुप्सा, ए चार प्रकृतिनो बंध विठेद थये थके नवमे गुणठाणे (पण के०) पांच प्रकृतिनुं बंधस्थानक होय तेमांहेथी वली पुरुषवेदनो बंधविठेद थये थके (चउ के०) चारनुं बंधस्थानक होय तेमांहेथी संज्वलना क्रोधनो बंध विठेद थये थके (तिके०)

त्रण प्रकृतिनुं बंधस्थानक होय. तेमांहेथी संज्वलनोमान विछेद थये थके (डु के०) बे प्रकृतिनुं बंधस्थानक होय, तेमध्येंथी संज्वलनी मायानो बंधविछेद थये थके (इक्को के०) एक प्रकृतिनुं बंधस्थानक होय. ए दश, बंधस्थानक कह्यां. ए श्रेणीमध्येंना बंधस्थानकनी जघन्य तो एक समयनी स्थिति अने उत्कृष्ट तो अंतरमुहूर्त्त स्थिति जाणवी. केमके, कोइ एक जीव तो श्रेणीमध्यें ए बंधस्थानक एक समयमात्र स्पर्शीने पण मरण पामे. तेनी अपेक्षायें समयमान जाणवुं. ए दश बंधस्थानकें (नव के०) नव नूयस्कारबंध, (अठ के०) आठ अल्पतरबंध, (दस के०) दश अवस्थितबंध अने (डुन्नि के०) बे अवक्तव्य बंध जाणवा, ते कहे छे.

ते मध्यें प्रथम नव नूयस्कारबंध नावियें छैयें. त्यां जे जीव, उपशम श्रेणीयें चढी, अगीआरमुं गुणठाणुं अंतरमुहूर्त्तनुं छे. तिहां अंतरमुहूर्त्त रहीने आगल चडवानुं स्थानक नथी. केमके मोहनीयनी प्रकृति उपशमावी छे. तेनी सत्ता टली नथी, ते सत्ता टल्या विना आगलां गुणठाणां प्राप्त थाय नहीं. ते नणी त्यांथी पडतां दशमे गुणठाणे आवे. तिहां पण मोहनीयनो अबंधक होय, तिहांथी पडतां नवमा गुणठाणाने पांचमे नागें एक संज्वलनालोजनो बंध करतां प्रथम समयें प्रथम अवक्तव्य बंध तथा आयुःक्षयें अगीआरमे गुणठाणे मरण पामीने अनुत्तर विमानें सुर थाय. ते प्रथम सत्तर प्रकृतिनो बंध करे, तेने प्रथमसमयें बीजो अवक्तव्य बंध. एम बे अवक्तव्य बंध कह्या. तथा नवमाना पांचमा नागथी पडतां चोथे नागें संज्वलनी माया साथें बे प्रकृतिनो बंध करतां तिहां प्रथम समयें प्रथम नूयस्कार, त्रीजे नागें संज्वलनी माया साथें त्रण प्रकृति बांधतां प्रथम समयें बीजो नूयस्कार, बीजे नागें संज्वलना क्रोध साथें चार प्रकृति बांधतां त्रीजो नूयस्कार, प्रथमनागें पुरुषवेद सहित पांच प्रकृति बांधतां, चोथो नूयस्कार, तिहांथी आठमाने छेहले नागें हास्य, रति, नय अने जुगुप्सा, सहित नव प्रकृति बांधतां पांचमो नूयस्कार, तिहांथी देशविरति गुणठाणे प्रत्याख्यानावरण कषाय चार सहित तेर प्रकृति बांधतां छठो नूयस्कार, तिहांथी चोथे गुणठाणे अप्रत्याख्यानावरण कषाय चार सहित सत्तर प्रकृति बांधतां सातमो नूयस्कार, ते वली अनंतानुबंधीया चार कषाय सहित एकवीश प्रकृति बांधतां आठमो नूयस्कार, ते वली मिथ्यात्व मोहनीय सहित बावीश प्रकृति मिथ्यात्वगुणठाणे बांधतां नवमो नूयस्कार. ए नव नूयस्कार कह्या. हवे आठ अल्पतर कहीयें छैयें.

तिहां मिथ्यात्व गुणठाणे बावीशनो बंध करी चोथे गुणठाणे सत्तर प्रकृतिनो

बंध करतां, प्रथम समयें प्रथम अल्पतर जाणवो. वली सत्तरथी तेरनो बंध करतां, बीजो अल्पतर. एम विपरीत पणे लेवा. पण एटलुं विशेष जे एकवीशना बंधनुं एक अल्पतर न होय, जे नणी मिथ्यात्वथी सास्वादनें न आवे, त्यां सास्वादन गुणगाणुं तो सम्यक्त्वथी पडतांज होय, ते मार्टे बावीशना बंधथी एकवीशना बंधें न आवे, एम आठ अल्पतर बंध होय अने दश बंध स्थानकें बीजा समयथी मांमीने चरम चरम समय लगें दश अवस्थित बंध होय. एम मोहनीय कर्मना नूयस्कारादिक बंधस्थानक कह्यां ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ २४ ॥

हवे नामकर्मने विषे नूयस्कारादिक कहेवाने अर्थें प्रथम बंधस्थानक कहे ठे.

तिपण ठ अठ नवहिया, वीसा तीसे गतीस इग नामे ॥
ठस्सग अठ तिबंधो, सेसेसु ठाण मिक्किकं ॥ २५ ॥

अर्थ—हवे नामकर्मनी जेटली प्रकृति एक समयें जे प्रायोग्य बंधाय, तेवा बंधस्थानक आठ ठे, ते कहे ठे. (तिपणठअठनवहियावीसा के०) त्रण, पांच, ठ, आठ, नव, अधिक वीश एटले वीश शब्द, प्रत्येकनी सार्थे जोडीयें, तेवारें एक त्रेवीशनो बंध, बीजो पचीशनो, त्रीजो ठवीशनो, चोथो अठावीशनो, पांचमो ठंगणत्रीशनो, (तीसेगतीसइगनामे के०) ठठो त्रीशनो, सातमो एकत्रीशनो, अने आठमो एकनो बंधस्थानक.

ए आठमध्यें मिथ्यात्वी जीव, मनुष्य, तिर्यंच, मिथ्यात्व गुणठाणे अपर्याप्ता एकेंद्रिय प्रायोग्य एक वर्ण, बीजो गंध, त्रीजो रस, चोथो स्पर्श, पांचमो तैजस, ठठो कार्मण, सातमो अगुरुलघु, आठमो निर्माण, नवमो उपघात, दशमी तिर्यंचगति, अगीआरमी तिर्यंचानुपूर्वी, बारमी एकेंद्रियजाति, तेरमुं औदारिक शरीर, चौदमुं हुंमसंस्थान, पंदरमुं स्थावरनाम, शोलमुं बादरनाम, अथवा सूक्ष्मनाम, सत्तरमुं अपर्याप्तनाम, अढारमुं प्रत्येकनाम, अथवा साधारणनाम, ठंगणीशमुं अस्थिरनाम, वीशमुं अशुननाम, एकवीशमुं दौर्नाग्यनाम, बावीशमुं अनादेयनाम, त्रेवीशमुं अयशनाम, ए त्रेवीशने बंधें अहींआं प्रत्येक साधारण सार्थे अने सूक्ष्मबादर सार्थे नांगा चार थाय, ए प्रथम नामकर्मनुं बंध स्थानक कह्युं.

तेमध्यें पराघात अने उच्वास, ए बे प्रकृति वधारीयें अने अपर्याप्ताने स्थानकें पर्याप्त नाम कर्म कहीयें, तेवारें पचीश प्रकृति, पर्याप्त एकेंद्रिय प्रायोग्य मिथ्यात्वी देव, मनुष्य तथा तिर्यंच बांधे. अहींआं नांगा वीश थाय ते सत्तरीना टबाथी जा

एवा. ए बीजुं स्थानक, ते पच्चीश प्रकृतिने आतप अथवा उद्योत सहित करीयें तेवारें बवीश प्रकृतिनो बंध, ए पण पर्याप्ता एकेंडिय प्रायोग्य त्रण गतिना मिथ्यात्वी जीव बांधे, अहींआं जांगा शोल थाय, ए त्रीजुं बंध स्थानक.

तथा देवद्विक, पंचेंडियजाति, वैक्रिय शरीर, वैक्रियांगोपाग, समचतुरस्रसंस्थान, पराघात, उद्द्वास, शुजखगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक, स्थिर अथवा अस्थिर, शुज अथवा अशुज, यश अथवा अयश, सुजग, सुस्वर, आदेय, वर्णचतुष्क, तैजस, कार्मण, अगुरुलघु, निर्माण, उपघात, ए अठावीश प्रकृति, देवगति प्रायोग्य मिथ्यात्वी तथा सम्यक्दृष्टि मनुष्य अने तिर्यंच बांधे. तिहां स्थिरास्थिरादिक साथें जांगा आठ थाय तथा तेमज नरकगति प्रायोग्य पण अठावीश प्रकृति बंधाय पण एटलुं. विशेष जे, देवद्विकने स्थानकें नरकद्विक तथा समचतुरस्रसंस्थान ने स्थानकें हुंमसंस्थान अने अपरावर्त्तमान प्रकृति अशुज लेवी. अहींआं अठावीशनो जांगो एकज लेवाय, ए अठावीश प्रकृतिनुं बंधस्थानक चोथुं.

तथा सम्यक्दृष्टि जीव, जिननाम सहित देवप्रायोग्य अठावीश बांधतां उगणत्रीश प्रकृतिनो बंध. अहीं जांगो एक जे जणी ए शुजज बंधाय. तथा मनुष्यद्विक, पंचेंडिय जाति, औदारिकद्विक, ठ संघयणमांहेलुं एक संघयण, ठ संस्थान मांहेलुं एक संस्थान, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक, स्थिर अथवा अस्थिर, शुज अथवा अशुज, सौजाग्य अथवा दौर्जाग्य, सुस्वर अथवा छुःस्वर, आदेय अथवा अनादेय, यश अथवा अयश, शुजखगति अथवा अशुजखगति, पराघात, उद्द्वास, वर्णचतुष्क, तैजस, कार्मण, अगुरुलघु, निर्माण, उपघात, ए मनुष्य प्रयोग्य उगणत्रीश प्रकृतिना बंधस्थानकना जांगा, ठेंतालीश शें ने आठ थाय, तेमज पंचेंडिय तिर्यंच प्रायोग्य उगणत्रीश बंध प्रकृतिना पण जांगा एटलाज जाणवा. ए पांचमुं बंधस्थानक. तथा देवगतिप्रायोग्य अठावीश प्रकृति ते आहारकशरीर तथा अहारक अंगोपांग सहित बांधतां त्रीश प्रकृतिनो बंध, अप्रमत्त साधुने होय. अहींआं जांगो एक थाय तथा मनुष्य प्रयोग्य उगणत्रीश बंध प्रकृतिने जिननाम सहित बांधतां सम्यक्दृष्टि देवताने त्रीशनो बंध. ए ठहुं बंधस्थानक. तथा जिननाम सहित देवप्रायोग्य त्रीश प्रकृति बांधतां, एकत्रीश प्रकृति अप्रमत्त अपूर्व करण गुणगणावाला साधु बांधे. अहींआं पण जांगो एक थाय, ए सातमुं बंधस्थानक.

तथा आठमा गुणगणाने ठठे जागें नामकर्मनी त्रीश प्रकृतिनो बंध विछेद करी आगले एक यशःकीर्त्ति बांधे, त्यां आठमुं नामकर्मनुं बंधस्थानक जाणवुं. एम

आठ बंधस्थानकें एकेंद्रिय, विकलेंद्रिय, देवता, मनुष्य, तिर्यंच, नारकी, प्रायोग्य बंधनेदें करी तेर हजार नवशें ने पीस्तालीश नांगा थाय. ते सत्तरीना टबा मांहे सविस्तर कहीशुं. तिहांथी जोइ लेवा.

ए आठ बंधस्थानने विषे नूयस्कारबंध (ठ के०) ठ ठे, तेजावें ठे. त्रेवीशनो बंध करी तथाविध विशुद्धें पच्चीश बांधतां प्रथम समयें प्रथम नूयस्कार मिथ्यात्वीने होय. ते पच्चीश आतप अथवा उद्योत सहित ठवीशने बंधें बीजो नूयस्कार. अथवा विशुद्धें तथा संक्लेशें देवप्रायोग्य अथवा नरक प्रायोग्य अठ्ठावीश बांधतां त्रीजो नूयस्कार. ते देवप्रायोग्य अठ्ठावीशने जिननाम सहित उंगणत्रीश बांधतां चोथो नूयस्कार, ते वली त्रीश प्रकृति मनुष्य प्रायोग्य अथवा देवप्रायोग्य बांधतां, पांचमो नूयस्कार. ते देवप्रायोग्य त्रीशने जिननाम सहित एक त्रीश बांधतां, ठठो नूयस्कार. एमज एक प्रकृति बांधी वली श्रेणीथी पडतो त्रीश तथा एक त्रीश बांधे खरो पण ते बंधस्थानकनुं नेद नहीं, तेथी तेनुं जूदो नूयस्कार न लेखववो. ए ठ नूयस्कार कह्या.

हवे (सत्तग के०) सात अल्पतर कहे ठे. अपूर्वकरणें देवगति प्रायोग्य अठ्ठावीश, उंगणत्रीश, त्रीश अने एकत्रीश, बांधीने श्रेणी चढतां जे बंधने व्युछेदी एक यशःकीर्त्तिज बांधे, ते प्रथम अल्पतर बंध, तथा कोइएक मनुष्य आहारकद्विक अने जिननाम सहित देवप्रायोग्य एकत्रीश प्रकृति बांधतो मरीने देवलोकें जाय, त्यां प्रथम समयें मनुष्यप्रायोग्य त्रीश प्रकृति बांधे. त्यां बीजो अल्पतर बंध, तेहज देवलोक थकी चवी मनुष्य थयो थको जिननाम सहित देवगतिप्रायोग्य उंगणत्रीश बांधे, तेने आद्यसमयें त्रीजो अल्पतर, अने जेवारें कोइ मनुष्य देवगति प्रायोग्य उंगणत्रीश बांधतो, विशुद्धपरिणामें देवगतिप्रायोग्य अठ्ठावीश बांधे. तेवारें आद्य समयें चोथो अल्पतर, ते अठ्ठवीश बांधतो संक्लिष्ट परिणामने वशें एकेंद्रियप्रायोग्य ठवीश बांधे, तिहां पांचमो अल्पतर. तेहिज ठवीश वालो पच्चीश बांधे, तेवारें ठठो अल्पतर, ते पच्चीश वालो त्रेवीश बांधे, तेवारें सातमो अल्पतर बंध जाणवो.

तथा आठे बधस्थानकें बीजा समयथी मांमीने चरम समय लगें (अठ के०) आठ अवस्थितबंध होय.

तथा (तिबंधो के०) त्रण अव्यक्त बंध कहे ठे. श्रेणीथी पडतां नामकर्मनो सर्वथा अबंधक थइने फरी यशःकीर्त्ति नामकर्म बांधे, तिहां प्रथमसमयें पहेलो अव्यक्त बंध, तथा उपशांतमोहगुणगणे मरण पामी काल करीने अनुत्तर विमानें देवता थाय, तिहां धुर समयथी मनुष्य प्रायोग्य उंगणत्रीश प्रकृति बांधे. ते

बीजो अव्यक्तबंध तथा तिहां कोइ एक जिननाम सहित त्रीश प्रकृति बांधे, ते वारें तेनी अपेक्षायें प्रथम समयें त्रीजो अव्यक्तबंध जाणवो. ए त्रण अव्यक्तबंध कह्या. एम नामकर्मनी उत्तर प्रकृतिनां बंधस्थानक, भूयस्कारबंध, अल्पतरबंध, अवस्थितबंध, अने अव्यक्तबंध ए चारे कह्या.

(सेसेसुठाणमिक्किकं के०) हवे शेष एक ज्ञानावरणीय, बीजुं वेदनीय, त्रीजुं आयु, चोथुं गोत्र, अने पांचमुं अंतराय, ए पांच कर्मनुं एक एक बंध स्थानक होय. केम के ज्ञानावरणीय अने अंतराय, ए बे कर्म ध्रुवबंधी छे. तेमाटें दशमा गुणठाणा सुधी एनी सर्व पांचे प्रकृति नेलीज बंधाय. त्यां भूयस्कार अने अल्पतर बंध न होय अने एक अवस्थित बंध सदाय होय. अने शेष वेदनीय, आयुने गोत्र ए त्रण कर्मनी प्रकृति बंधविरोधिनी छे तेथी ते एक समयें एकज बंधाय तेथी तेनुं बंधस्थानक पण एकज होय. अहींआं भूयस्कार तथा अल्पतरबंध न होय अने वेदनीय तो तेरमा गुणठाणा सुधी बंधाय छे, माटें ते विना शेष चार कर्मनो अव्यक्तबंध एक होय केम के अगीआरमे गुणठाणे अबंधक होइने फरी बांधतां प्रथम समयें अव्यक्त बंध अने तेवार पछी द्वितीयादिक समयें अवस्थित बंध जाणवो. एटले सविस्तर प्रकृति बंध कह्यो.

अहींआं मूलप्रकृतिनो तो जघन्य एक, उत्कृष्टो आठनो बंध छे अने उत्तर प्रकृतिनो जघन्य एक, उत्कृष्टो चम्मोतेरनो बंध छे, अहींआं अनादि, सादि, अनंत अने सांत, ए चार भांगा पोतानी मतियें विचारी कहेवा. तिहां मूल प्रकृतिना बंधस्थानकें, सर्वें सादि सांत भांगो होय. जे भणी भवभवने विषे एकज वार आयु बांधे, तिहां आठनो बंध अने शेष कालें सात प्रकृतिनुं बंधस्थानक होय. तथा उत्तर प्रकृतिमध्यें ज्ञानावरणीय तथा दर्शनावरणीयनुं एकेक बंधस्थानक, अने वेदनीयनो एकनो बंध, तथा मोहनीयनो बावीशनो बंध, गोत्रनो एकनो बंध, अंतरायनो पांचनो बंध, एटले बंधें अभव्यनी अपेक्षायें अनादि अनंत अने भव्यनी अपेक्षायें अनादि सांत तथा सादि सांत. ए त्रण भांगा होय, अने शेष बंधस्थानकें सादिसांत भांगो एकज होय. ए सादि सांतपणुं ते स्थिति मान जाणवुं. ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ २५ ॥

एम भूयस्कारादिक प्रकारें करी कर्मप्रकृतिनो बंध कह्यो. हवे मूल प्रकृति तथा उत्तर प्रकृतिनो स्थितिबंध स्वामित्व द्वारें करी सविस्तर पणे कहे छे.

वीसयर कोडि कोडी, नामे गोए य सत्तरी मोहे ॥
तीसयर चउसु उदही, निरय सुराउंमि तित्तीसा ॥ २६ ॥

अर्थ-(वीसयर के०) संख्याये वीश अने अयर एटले तरी शकाय नहीं, ते माटें ए अतर कहेतां सागर तेनी उपमायें करी मव्युं जे कालमान, तेने सागरोपम कहीयें, तिहां पल्यनी उपमायें पल्योपम कहीयें. ते योजन प्रमाणे कूवो असंख्यवालाग्रें नरी शो शो वर्षे एकेक केशखंम काहाडतां कूप निर्लेप थाय, तेनो काल, तेने अध्धापल्योपम कहीयें. तेवा दश कोडाकोडी कूपमान क्षेत्र ते सागरोपम तेने निर्लेपनो काल, तेने अध्धासागरोपम कहीयें. ते अध्धासागरोपमनी (कोडिकोडी के०) वीश कोडाकोडी (नामेगोएय के०) नामकर्म अने गोत्रकर्मनी उत्कृष्टी स्थिति होय, एटले बांधेलुं कर्मदल विणशे नहीं तो एटलो काल रहे तथा परिणाम विशेषें स्थितिघात करतो अपवर्त्तन करणें करी स्थिति घटावतां घटी पण जाय,तेम उद्वर्त्तनाकरणें करी स्थितिने वधारे पण खरी अने जो निकाचित्त बंध कस्यो होय, तो बंधें घटे नहीं. एनो अबाधाकाल, बे हजार वर्षनो जाणवो.

तथा (सत्तरीमोहे के०) मोहनीयकर्मनो उत्कृष्ट स्थितिबंध सीत्तेर कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण कह्यो छे. ए बंध उत्कृष्ट संक्लेशें मिथ्यात्व गुणठाणे होय अने अबाधा काल सात हजार वर्ष हीन कर्मदलनो निषेक कहेतां ए कर्मनो रसोदय काल जाणवो. एटले त्रण कर्म कह्यां अने एथकी इतर एटले अन्य जे चार कर्म, एटले एक ज्ञानावरणीय, बीजुं दर्शनावरणीय, त्रीजुं वेदनीय अने चोथुं अंतराय, (चउसु के०) ए चार कर्मनी उत्कृष्टी स्थिति (तीसयर के०) त्रीश कोडाकोडी सागरोपमनी उत्कृष्ट संक्लेशें मिथ्यात्व गुणठाणे होय. ए चार कर्मनो अबाधाकाल त्रण हजार वर्षनो, ते त्रण हजार वर्ष हीन त्रीश कोडा कोडी सागरोपम रसोदय काल जाणवो.

(उदही के०) समुद्र एटले परमार्थें सागरोपम जाणवुं. तेवा (तित्तीसा के०) तेत्रीश सागरोपम कालनी स्थिति आयुःकर्मनी (निरयसुराउंमि के०) नारकी अने देवायुनी अपेक्षायें कहीयें. एटले अत्यंत संक्लिष्ट परिणामें मिथ्यात्वीने नरकायुनो बंध तेत्रीश सागरोपमकाल प्रमाण होय अने अत्यंत विशुद्ध परिणामें प्रमत्त तथा अप्रमत्तने तेत्रीश सागरोपम सुरायुनो बंध होय. अहींआं अबाधाकाल उत्कृष्ट तो पूर्व कोडीनो त्रीजो नाग अने जघन्यथी तो अंतर मुहूर्त्तकाल होय. अहींआं उत्कृष्ट

आयु बंधें नियत उत्कृष्टो अबाधाकाल न होय, ते नणी निन्न लेखव्यो. एनो र सोदय काल, तेत्रीश सागरोपम जाणवो, परंतु पूर्वकोडीने त्रीजे नागें हीन न जा णवो. अहींआं आयुकर्मनी मूल प्रकृतिनो उत्कृष्ट स्थितिबंध कहेवाने अवसरें नर कायु तथा देवायु ए बे उत्तर प्रकृतिनो उत्कृष्ट स्थितिबंध काल कह्यो, ते ग्रंथगौरव टा लवा नणी कह्यो अथवा ए बन्नेनुं किंचित् अनेदपणुं जणाववाने अर्थें कह्यो ॥ २६ ॥

हवे मूलप्रकृतिनो जघन्य स्थितिबंध कहे छे.

मुत्तूअ कसाय ठिइ, बार मुहुत्ता जहन्न वेयणिए ॥
अठ ठ नाम गोए, सु सेसएसु मुहुत्तं तो ॥ २७ ॥

अर्थ- (मुत्तूअकसाय के०) अकषाय एटले कषायोदय रहित एवुं अगी आरमुं. बारमुं अने तेरमुं, ए त्रण गुणगणां मूकीने शेष सरागी गुणस्थानकें (वेयणिए के०) वेदनीय कर्मनो अत्यंत (जहन्न के०) जघन्य (ठिइ के०) स्थितिबंध, (बारमुहुत्ता के०) बारमुहूर्त्त प्रमाण होय, तथा ग्रंथांतरें एक मुहूर्त्तनुं पण कह्युं छे. अहींआं एटलुं विशेष जे कषायोदय रहित जे अगीआरमुं, बारमुं, अने तेरमुं गुणगणुं छे. तिहां कषायने अनावें स्थितिबंध, तथा रसबंध न हो य. परंतु केवल योग प्रत्ययिक प्रकृतिबंध तथा प्रदेश बंध होय, ते प्रथम समयें बांधे तथा बीजे समयें वेदे अने त्रीजे समयें विणशे पण कषाय प्रत्ययिक स्थि तिबंध न होय. ते नणी ते गुणगणां अहींआं वर्जित कर्यां छे. अहींआं जघ न्य वेदनीय स्थितिबंधें अबाधाकाल पण जघन्य अंतर मुहूर्त्तनो होय, तेथी हीन शेष रसोदय काल समजवो अने एक आयु विना शेष सात कर्मनो जघन्य स्थि तिबंधकालें अबाधाकाल पण जघन्य जाणवो.

(अठठनामगोएसु के०) अने नामकर्म तथा गोत्रकर्म, ए बे कर्मनो जघन्य स्थितिबंधकाल अत्यंत विशुद्धपणे सूक्ष्म संपरायने प्रांतें आठ मुहूर्त्त प्रमाण हो य. तिहां अबाधाकाल, अंतरमुहूर्त्तनो होय, ए त्रण कर्मनो स्थितिबंध कह्यो.

(सेसएसुमुहुत्तंतो के०) तेथी शेष रह्यां जे एक ज्ञानावरणीय, बीजुं दर्शना वरणीय अने त्रीजुं अंतराय, ए त्रण कर्मनो सूक्ष्मसंपराय नामा दशमा गुणगणाने प्रांतें अने एक मोहनीयकर्मनुं बादर संपरायनामा नवमा गुणगणाने प्रांते तथा आ युःकर्मनुं प्रथमनां बे गुणगणे अंतरमुहूर्त्त प्रमाण जघन्य स्थितिबंध होय ॥ २७ ॥

ए रीतें सामान्यप्रकारें मूलप्रकृतिनो उत्कृष्टस्थितिबंध तथा जघन्य स्थितिबंध

कहीने, हवे विशेष प्रकारें एकशो ने वीश उत्तर प्रकृतिनो उत्कृष्ट स्थितिबंध कहीयें ठैयें. तथा बांधेलुं कर्म ज्यां लगें पोतानो विपाक देखाडे नहीं, तेने अबाधा कहीयें. तथा अबाधा काल पठी कर्मने वेदवाने प्रथम समयें बहु अने ते थी वली द्वितीय समयें हीन, तृतीय समयें घणुं हीन एम कर्मदल वेदवा सन्मुख जे दलरचना विशेष तेने निषेक कहीयें. एनी स्थापना कहेशे.

विग्घा वरण असाए, तीसं अठार सुहुम विगल तिगे ॥
पढमा गिइ संघयणे, दस डुसु चरिमेसु डुग वुड्ढी ॥ २८ ॥

अर्थ--(विग्घा के०) एक दानांतराय, बीजो लाजांतराय, त्रीजो जोगांतराय, चोथो उपजोगातंराय, पांचमो वीर्यांतराय. ए पांच अंतराय कर्मनी प्रकृति तथा (वरण के०) एक मतिज्ञानावरणीय, बीजो श्रुतज्ञानावरणीय, त्रीजो अवधिज्ञानावरणीय, चोथो मनःपर्यवज्ञानावरणीय, पांचमो केवलज्ञानावरणीय, ए पांच ज्ञानावरणीय कर्मनी प्रकृति. तथा एक चक्षुदर्शनावरणीय, बीजुं अचक्षुदर्शनावरणीय, त्रीजुं अवधिदर्शनावरणीय, चोथुं केवलज्ञानावरणीय, अने पांच निड़ा. तथा (असाए के०) अशातावेदनीय, एवं वीश उत्तर प्रकृतिनुं (तीसं के०) त्रीश कोडाकोडी सागरोपमनो उत्कृष्ट स्थितिबंध, मिथ्यात्वीने होय तिहां अबाधा त्रण हजार वर्षनी जाणवी. त्रण हजार वर्ष हीन कर्मस्थितिनो रसोदयकाल जाणवो.

अने (अठारसुहुमविगलतिगे के०) अढार कोडाकोडी सागरोपमनो उत्कृष्ट स्थितिबंधकाल, एक सूक्ष्म, बीजो अपर्याप्त, त्रीजो साधारण, ए सूक्ष्मत्रिक तथा विकलत्रिक, एटले बेंड्रियजाति, तेंड्रिय जाति अने चौरिंड्रिय जाति. एवं ठ प्रकृतिनो अढार कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण उत्कृष्ट स्थितिकाल जाणवो. अहींआं अढारशें वर्षनो अबाधाकाल जाणवो. एवं ठवीश प्रकृति थइ.

तथा (पढमागिइसंघयणे के०) प्रथमाकृति एटले पहेलुं समचतुरस्रसंस्थान तथा प्रथम वज्रऋषभनाराचसंघयण, ए बे प्रकृतिनी उत्कृष्टस्थिति (दस के०) दश कोडाकोडी सागरोपमनी जाणवी. अहींआं एक हजार वर्ष अबाधा काल जाणवो. अने (डुसुचरिमेसुडुगवुड्ढि के०) आगला एकेक संस्थानें तथा एकेक संघयणे एम बे बे प्रकृतिने विषे अनुक्रमें बे बे कोडाकोडी सागरोपमनी स्थितिबंधमां वृद्धि करीयें, एटले ए जाव जे न्यग्रोधसंस्थानें तथा ऋषभनाराचसंघयणे बार कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति अने बारशें वर्ष अबाधा काल तथा सादि संस्थान अने नाराच सं

घयणे चौद कोडाकोडीनी स्थिति अने चौदशें वर्ष अबाधाकालें हीन निषेक काल जाणवो. तथा वामनसंस्थानें मतांतरें कुब्जसंस्थाने अने अर्द्ध नाराच संघयणे शोल कोडाकोडी सागरोपमस्थिति तथा शोलशें वर्ष अबाधाकालें हीन निषेककाल तथा कुब्ज संस्थानें मतांतरें वामन संस्थानें अने कीलिकासंघयणें अढार कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति अने अढारशें वर्षनी अबाधायें हीन निषेक काल तथा हुंडसंस्थान अने छेवट्ठे संघयणे वीश कोडाकोडी सागरोपमनी उत्कृष्ट स्थिति अने बे हजार वर्ष आबाधाकालें हीन वीश कोडाकोडी सागरोपम रसोदय काल जाणवो. एम छ संघयण तथा छ संस्थाननो उत्कृष्ट स्थितिकाल कह्यो. एवं आडत्रीश प्रकृतिनो स्थितिबंध कह्यो ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ २७ ॥

चालीस कसाएसु, मिउ लहु निद्धुण्ह सुरहि सिय महुरे ॥
दसदो सड्ढ समहिया, तेहालिद्दं बिलाईणं ॥ २ए ॥

अर्थ-(चालीसकसाएसु के०) अनंतानुबंधीआ चार, अप्रत्याख्यानावरण चार, प्रत्याख्यानावरण चार, संज्वलना चार, ए शोल कषायनो, बंध चालीश कोडाकोडी सागरोपमनी उत्कृष्ट स्थिति बंध उत्कृष्ट संक्लेशें मिथ्यात्व गुणठाणे संज्ञिआ मिथ्यात्वीने होय, अने चार हजार वर्ष अबाधाकालें हीन निषेककाल जाणवो. एटले चोपन्न प्रकृति कही तथा एक (मिउ के०) मृदु एटले सुकमाल स्पर्श, बीजो (लहु के०) लघुस्पर्श, त्रीजो (निद्धुण्ह के०) स्निग्ध एटले चीकटस्पर्श, अने चोथो उष्ण स्पर्श, पांचमो (सुरहि के०) सुरभिगंध, छठो (सिय के०) श्वेत एटले उज्ज्वल वर्ण, सातमो (महुरे के०) मधुर रस ए सात नाम कर्मनी प्रकृतिनी उत्कृष्ट स्थिति, (दस के०) दश कोडाकोडी सागरोपमनी जाणवी. तेनो अबाधाकाल एक हजार वर्ष एटले कालें हीन कर्मदल निषेक रसोदय काल जाणवो.

तेवार पछी नामकर्मनी प्रकृतिना एकेका वर्ण तथा एकेका रसें प्रत्येक (दो सड्ढसमहिया के०) अढी कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति वधारीयें. (तेहालिद्दं बिलाईणं के०) ते केम हालिद्रवर्ण अने आम्ल रस, ए बे नामकर्मनी प्रकृतिनी उत्कृष्ट स्थिति साडा बार कोडाकोडी सागरोपमनी ते साडा बारशें वर्ष अबाधा कालें हीणी स्थिति रसोदय काल जाणवो. तथा रक्तवर्ण अने कषायेलो रस ए बे नामकर्मनी प्रकृतिनी पंदर कोडाकोडी सागरोपम उत्कृष्ट स्थिति ते पंदरशें वर्ष अबाधाकालें हीणी कर्मदलनी स्थितिनो रसोदय काल जाणवो. तथा पीतवर्ण अने कटुक

रस, ए बे नामकर्मनी प्रकृतिनी साडासत्तर कोडाकोडी सागरोपमनी उत्कृष्ट स्थिति अने साडा सत्तरशें वर्ष अबाधा कालें हीन स्थिति कर्मदलिकनो निषेक काल जाणवो. श्यामवर्ण अने तीक्ष्ण रस ए बे नामकर्मनी प्रकृतिनो उत्कृष्ट स्थिति बंध, वीश कोडाकोडी सागरोपम बे हजार वर्ष अबाधाकालें हीन कर्म स्थितिकर्म निषेककाल जाणवो ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ २ए ॥

दस सुह विहगइ उच्चे, सुर डुग थिर छक्क पुरिस रइ हासे ॥
मिच्छे सत्तरि मणु डुग, इत्थी साएसु पन्नरस ॥ ३० ॥

अर्थ--(दस के०) दश कोडाकोडी सागरोपमनो उत्कृष्टस्थितिबंध, एटली प्रकृतिनो होय, तेनां नाम कहे छे. (सुहविहगइ के०) एक शुभविहायोगति, (उच्चे के०) बीजी उच्चैर्गोत्र अने (सुरडुग के०) त्रीजी देवगति, चोथी देवानुपूर्वी तथा (थिरछक्क के०) एक स्थिरनाम, बीजी शुभनाम, त्रीजी सौभाग्य नाम, चोथी सुस्वरनाम, पांचमी आदेयनाम, छठी यशःकीर्त्तिनाम. एवं दश प्रकृति थइ तथा अगीआरमी (पुरिस के०) पुरुषवेद मोहनीयनी प्रकृति, बारमी (रइ के०) रतिमोहनीय, तेरमी (हासे के०) हास्यमोहनीय, ए तेर प्रकृतिनी उत्कृष्टी स्थिति होय. तिहां अबाधाकाल एक हजार वर्षनो होय तेटला वर्षें हीन दश कोडाकोडी सागर ए तेर प्रकृतिनुं कर्मदल निषेक काल उद्वर्त्तना अपवर्त्तनाविना स्वाभाविक वेदनकाल जाणवो. तेमध्यें अपवर्त्तनायें घटे उद्वर्त्तनायें तथा संक्रमणादिकें करी अधिक स्थिति पण होय. एवं ब्याशी प्रकृतिनी स्थितिनुं कालमान कह्युं.

अने (मिच्छेसत्तरि के०) मिथ्यात्वमोहनीयनी उत्कृष्टी स्थिति सीत्तेर कोडाकोडी सागरोपम सात हजार वर्ष, अबाधाकालें हीन उत्कृष्टस्थिति कर्म निषेककाल जाणवो अने सम्यक्त्व मोहनीयनो स्थितिबंध नथी, तेथी स्थितिबंध तथा अबाधा काल न कह्यो. अने उदयकाल ६६ सागरोपम पूर्वकोडी पृथक्त्वें अधिक जाणवुं. तथा मिश्रमोहनीयनो निषेककाल अंतर मुहूर्त्तनो, एटले पच्चाशी प्रकृति थइ.

तथा (मणुडुग के०) मनुष्यगति, मनुष्यानुपूर्वी, (इत्थीसाएसु के०) स्त्रीवेद अने शातावेदनीय, ए चार प्रकृतिनी उत्कृष्टी स्थिति (पन्नरस के०) पंदर कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण पंदरशें वर्ष अबाधाकाल ते पंदरशें वर्ष हीन कर्मस्थिति कर्मनिषेक काल जाणवो. अहींआं जो पण मनुष्यानुपूर्वीनो उदय तो वक्रगतियें बे त्रण समय लगें होय, तो एटलो निषेक काल केम संभवीयें? तथापि एनो उदय मनु

न्यगतिमध्यें संक्रमण करयों करी संक्रमावी जोगवे, तेथी दलिक रचना विशेष नि षेककाल जाणवो. एवं नेव्याशी प्रकृति कही ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ३० ॥

नय कुछ अरइ सोए, विउवि तिरि उरल निरय डुगनीए ॥
तेअपण अथिर बक्के, तसचउ थावर इग पणिंदि ॥ ३१ ॥

अर्थ-(नय के०) नयमोहनीय, (कुछ के०) जुगुप्सा मोहनीय, (अरइसो ए के०) अरति मोहनीय. शोकमोहनीय, (विउवि के०) वैक्रियशरीर, वैक्रिय अंगोपांग तथा मतांतरें वैक्रियसंघातन वैक्रियवैक्रियबंधन, वैक्रियतैजसबंधन, वैक्रियकार्मणबंधन, वैक्रियतैजसकार्मण बंधन, ए वैक्रिय सप्तक कहीयें. जे न णी वैक्रिय शरीर बांधतां ए साते नेली बंधाय. एवं अगीआर थइ तथा बार मी (तिरि के०) तिर्यंचगति, तेरमी तिर्यंचानुपूर्वी, ए तिर्यंचद्विक (उरल के०) चौदमुं औदारिक शरीर, पंदरमुं औदारिक अंगोपांग, ए औदारिकद्विक तथा म तांतरें औदारिकसंघातन, औदारिकऔदारिकबंधन, औदारिकतैजसबंधन, औदा रिककार्मणबंधन, औदारिकतैजसकार्मणबंधन, ए औदारिक सप्तक लीजें केम के ए औदारिक शरीर बांधतां साते सार्थेबंधाय. एवं वीश प्रकृति थइ. (निरयडुग के०) नरकद्विक, (नीए के०) नीचैर्गोत्र (तेअपण के०) एक तैजस, बीजुं कार्मण, त्रीजुं अगुरुलघु, चोथुं निर्माण अने पांचमुं उपघात, ए तैजस पंचक, मतांतरें तैजस संघातन, कार्मणसंघातन, तैजसतैजसबंधन, कार्मणकार्मणबंधन, तैजसकार्म ण बंधन. ए नेलतां तैजस दशक थाय. एवं तेत्रीश प्रकृति थइ तथा (अथिरब क्के के०) अथिरनाम, अशुनजनाम, दौर्नाग्यनाम, डुःस्वरनाम, अनादेयनाम अ ने अयशअकीर्त्तिनाम, ए अथिरषट्क. एवं उंगणचालीश प्रकृति थइ. (तसचउ के०) त्रसनाम, बादरनाम, पर्याप्तनाम, अने प्रत्येकनाम ए त्रसचतुष्क. एवं त्रेंता लीश प्रकृति थइ. (थावर के०) स्थावरनाम, (इग के०) एकेंडियजाति, (प णिंदि के०) पंचेंडियजाति, ए बेंतालीश प्रकृति आ गाथामां कही ॥ इति ॥३१॥

नपु कुखगइ सासचउ, गुरु कक्कड रुक्क सीय डुग्गंधे ॥
वीसं कोडा कोडी, एवइआ बाह वास सया ॥ ३२ ॥

अर्थ-(नपु के०) नपुंसकवेद मोहनीय, (कुखगइ के०) अशुनविहायो गति, (सासचउ के०) उच्छ्वासनाम, उपघातनाम, आतपनाम अने पराघातना

म, ए उश्वासचतुष्क, (गुरु के०) गुरुस्पर्शनाम, (करकड के०) कठोर स्पर्शना म, (रुक्क के०) रूक्षस्पर्शनाम, (सीय के०) शीतस्पर्शनाम, (डुग्गंधे के०) उ गंधनाम. एवं अगीआर प्रकृति अने पूर्वली गाथामध्यें छेंतालीश प्रकृति कही छे. एम सर्व मली सत्तावन प्रकृतिनो उत्कृष्ट स्थितिबंध काल (वीसंकोडाकोडी के०) वीश कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण जाणवो. ए उत्कृष्ट संक्लेशें वर्त्ततो मिथ्यात्वी जीव, बांधे, तेमध्यें पांच प्रकृति मोहनीयनी एक गोत्रनी अने शेष एकावन प्र कृति नामकर्मनी जाणवी. तिहां अबाधाकाल बे हजार वर्षनो होय. त्यां लगें तेकर्म रसथी तथा प्रदेशथी उदय न आवे अने जो संक्रम करणे करी तुल्यप्र कृति समजातिय मध्यें संक्रमावी उदय आणे, तो एक बंधावलिका बीजी संक्रमा वलिका व्यतित थये थके उदय आवे. जेम अनंतानुबंधीआनी विसंयोजना क री उपशांत मोहथी अद्धाक्षये पडे तो कोइ एक प्रथम गुणठाणे आवे. त्यां मिथ्या त्व प्रत्ययें अनंतानुबंधीआ चार बांधे तेनी बंधावली गये थके अप्रत्याख्यानादिक जे पूर्वेंबांध्येछे तेमांहे संक्रमावी, वेदे तथा अपवर्त्तनादिक करणें करी, अल्पकालकरी पण वेदे, तथा अबाधा अतिक्रमे थके गायना पूछनी पेरें प्रथम बहु विस्तीर्णदल रचना, बीजे समयें विशेष हीन एम समय समय विशेष हीन हीन करतां ए रीतें अर्द्धमात्रस्थिति, प्रांतें अर्द्धदल होय. ए रीतें जे उदयावलिकानुं रचवुं, ते निषेक कहीयें. तेनो काल ते निषेक काल जाणवो. ते जे कर्मनी जेटली स्थिति, ते म ध्येंथी अबाधाकाल काढतां शेष रहे, ते निषेककाल कहीयें (एवइआबाहवासस या के०) जे कर्मनी जेटला कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति, एटला शइकडा व र्ष, ते कर्मनी अबाधा जाणवी. ते जघन्य अबाधाकालनी स्थिति अंतर मुहूर्त्तनी छे ति हां कंमक एटले अंगुलीनो असंख्यातमो जाग तेना जेटला आकाश प्रदेश तेटला समय प्रमाण जे कर्मस्थिति विशेष, तेटली स्थितिविशेष अतिक्रमे थके प्रथ म जे उत्कृष्ट अबाधाकालनुं स्थानक हतुं, ते अबाधा कालना स्थानक मांहेथी एक समय हीन आबाधा कालनुं बीजुं स्थानक थाय. एम वली पण कंमक मा त्र हीन कर्मस्थिति होय थके समय हीन अबाधा कालनुं त्रीजुं स्थानक थाय एम कंमक कंमक मात्र स्थितिनी हाणीयें समय समय हीन अबाधाकालनुं पण स्थानक थाय. एम अबधाकालनी उत्कृष्ट स्थिति थकी उतरतां जघन्य स्थिति पर्यंत कंमकसंख्या अनें अबाधा कालनां स्थानक यावत् तुल्य थाय

जे मूलप्रकृतिनी तथा उत्तर प्रकृतिनी जेटली कोडाकोडी सागरोपमनी

स्थिति होय ते प्रकृतिने तेटला शत वर्षनो अबाधाकाल होय. एटले बांध्या प छी पण एटला काल लगें ते कर्म उदय न आवे, तेने अबाधाकाल कहीयें. त था पोत पोताने अबाधाकालें हीन जे कर्मस्थिति, ते कर्मनो निषेक कहेतां जो ग्य काल होय. निषेक ते कर्म उदय कालें प्रथम बहु प्रदेशाग्र सामटो उदय आवे अने पछी समय समय हीन हीनतर थाय. यावत् कर्मनी स्थिति ते छेहले समयें अत्यंतम उदय होय. एने निषेक कहीयें ए सत्तावन प्रकृति तथा आगल नेव्याशी प्रकृतिनुं उत्कृष्ट स्थितिबंध कह्युं अने देवायु तथा नरकायु ए बे प्रकृति नुं उत्कृष्ट स्थितिबंध तेत्रीश सागरोपम प्रमाण मूल प्रकृति मध्यें कह्युंछे तेहीज आंहींपण लेवुं एम सर्वे मली एकशोने अडतालीश प्रकृतिनुं उत्कृष्ट स्थिति बंध कह्युं ॥ इति भावार्थः ॥ ३१ ॥

गुरु कोडि कोडि अंतो, तिछाहाराण भिन्नमुहु बाहा ॥
॥ अथ जघन्य स्थितिबंधः ॥ लहु ठिइ संख गुणूणा,नर
तिरियाणाउ पल्लतिगं ॥ ३२ ॥

अर्थ-(गुरुकोडिकोडिअंतो के०) उत्कृष्ट स्थितिबंध अतःकोडाकोडी सागरो पम कालनो (तिछाहाराण के०) तीर्थंकर नामकर्म तथा आहारकशरीर, आहा रकअंगोपांग, आहारकसंघातन, आहारक आहारकबंधन, आहारकतैजस बधन, आहारककार्मण बंधन अने आहारक तैजसकार्मण बंधन ए आहारक सप्तक. एवं नामकर्मनी आठ प्रकृतिनी उत्कृष्टी स्थिति कोडाकोडी सागरोपम मांहे होय. अहींआं शिष्य पूछे छे के, हे भगवन्! कोडाकोडी सागरोपम जिननामनो काल कह्यो एटलो काल तो, जीव तिर्यंचगतिमां गया विना न रहे. अने तिर्यंचगतिना जीवमध्यें तो जिननामनी सत्ता पण निषेधि छे, तो एटलो काल क्यां पूर्ण करे ? तथा तीर्थंकर नामकर्म तीर्थंकरभव थकी अर्वाक त्रीजे भवे बांधे छे एम पण क ह्युं छे, ते पण केम घटे ? अहींआं गुरु उत्तर कहे छे के " जं मिहनिकाइअ ति छं, निरय भवे तंनिसेहिअं संतं ॥ इयरंमि नछिदोसो, उवट्टणा वट्टणामझ्झ॥१॥ " ए गाथानो अर्थ कहे छे के, तिर्यंच मध्येंजे जिननामनी सत्ता निषेधि तथा त्रीजे भवें बंधाय, तेतो निकाचित जिननामनी अपेक्षायें जाणवो. तीर्थंकरभव पहेलो. त्री जा भवें निकाचे, ते कर्म सकल करणने असाध्य होय अने जे निकाचित न हो य, ते कर्मनी तो अपवर्त्तना कहेतां स्थितिरसनुं घटाववुं अने उद्वर्त्तना एटले

स्थितिरसनुं वधारवुं तथा संक्रम एटले पर प्रकृति मांहे संक्रमाववुं, प्रत्या ऋवे लवुं इत्यादिक करण साध्य होय. ते जिननाम घणा नव पहेलो पण बंधाय. तथा अंतःकोडा कोडी सागरोपम स्थिति पण अपवर्त्तनायें घटावे, तथा पर प्रकृति मांहे संक्रमावतां कांइ दूषण नथी तथा ए आठ कर्म प्रकृतिनो (निन्नमुहवाहा के०) अबाधाकाल अंतर मुहूर्त्त छे. ते नणी जिननाम जेणे बाध्युं होय, तेने अंतर मुहूर्त्त पछी जिनादिकनो प्रदेशोदय थाय, तेथी करी तेनो अन्यजीवनी अपेक्षायें महीमा विशेष होय. पूजा महत्वनी वृद्धि होय. एम एकशोने छपन्न प्रकृतिनी उत्कृष्ट स्थिति कही.

हवे ग्रंथगौरव टालवा नणी ए आठ प्रकृतिनी जघन्य स्थिति अंहींज कहे छे. जिननाम अने आहारक सप्तक, एवं आठ प्रकृतिनी (लहुठिइसंखगुणूणा के०) लघु एटले जघन्य स्थिति उत्कृष्ट स्थितिथकी संख्यात गुणी हीणी जाणवी जे नणी अंतर मुहूर्त्तनी पेरें अतःकोडाकोडीना पण असंख्याता नेद होय, जे नणी संज्ञीया पंचेंड्रिय पर्याप्तानी स्थितिबंधथी अधिक उत्कृष्टी स्थिति साधु बंध लगें जेटला स्थितिबंध, ते सर्व अंतःकोडा कोडी सागरोपम प्रमाण कहीयें,

हवे शेष बे आयुनो उत्कृष्ट स्थितिबंध कहे छे. (नरतिरियाणाउपल्लतिगं के०) एक मनुष्यनुं आयु अने बीजुं तिर्यंचनुं आयु, ए बेनो उत्कृष्ट स्थितिबंध, त्रण पल्योपम जाणवो. जे नणी प्रथम आरे तथा देवकुरु अने उत्तर कुरुना मनुष्यनुं त्रण पल्योपमायु छे. तेनो अबाधाकाल उत्कृष्टथी तो पूर्वकोडीना त्रीजा नाग प्रमाण. जे नणी संख्यातावर्षायुना मनुष्य विना अन्य गतिथी चवी युगलीयुं मनुष्य न थाय ते नणी तेत्रीशलाख, तेत्रीश हजार, त्रणशें ने तेत्रीश, पूर्व अने एक पूर्वनो त्रीजो नाग उपर एटलो उत्कृष्ट अबाधाकाल, ते त्रण पल्योपमथी अधिक अबाधाकाल जाणवो. ए एकशो अठावन प्रकृतिनो उत्कृष्ट स्थितिबंध कह्यो अने आठ प्रकृतिनो जघन्य स्थितिबंध काल कह्यो ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ३३ ॥

हवे लाघवें आयुबंध एकेंद्रियादिकनुं कहे छे.

इग विगल पुव कोडी, पलियाऽ संखंसआउ चउ अमणा ॥
निरुवक्कमण छमासो, अबाह सेसाण नवंतंसो ॥ ३४ ॥

अर्थ—(इगविगलपुवकोडी के०) एकेंद्रिय जीवने तथा विकलेंद्रिय कहेता बेंद्रिय, तेंद्रिय, चौरिंद्रिय, जीवने परनवायु उत्कृष्ट पूर्वकोडी प्रमाण बंधाय पण पल्योप

म सागरोपम मान आयु न बांधे, केमके एकेंद्रियादिक जीव जे छे, ते देव नारकी मध्यें तथा असंख्यातवर्षायु वाला मनुष्य तिर्यंचनी गति मध्ये पण अवतरें नहीं, तेथी तत्प्रायोग्य आयु न बांधे तथा (पलियाऽसंखंसआउचउअमणा के०) पल्योपमना असंख्यातमा भाग प्रमाण देवायु, तिर्यगायु, नरकायु अने मनुष्यायु, ए चार आयुष्य असंज्ञीआ पंचेंद्रिय तिर्यंच बांधे केमके असंज्ञीआ पंचेंद्रिय तिर्यंच चारे गति मांहें अवतरे तो खरा तथापि देवो मध्यें तो भुवनपति तथा व्यंतर मध्येंज जाय, परंतु ज्योतषी तथा वैमानिक मध्यें न जाय अने नरकगति मध्यें पण प्रथम नरकना त्रण पाथडा लगें जाय परंतु आगलें न जाय तेमाटें पल्योपमना असंख्यांशथी अधिक आयु न बांधे. तेथी तेने अबाधाकाल पूर्वकोडी त्रिभाग उत्कृष्टो जाणवो तेटलाकालें हीन पल्यासंख्यांश प्रमाण निषेककाल जाणवो.

तथा (निरुवक्कमण छ मासो के०) निरुपक्रमायुना धणी एवा देव, नारकी तथा युगलीया मनुष्य अने तिर्यंच जेनुं आयु अध्यवसाय प्रमुख आवलियें करी घटे नहीं तेवा आयुना धणी जे देवतादिक छे, ते परभवायुनो बंध निजभवायु छम्मास छते बांधे तेथी तेने परभवायुनो छ महीना अबाधाकाल जाणवो. तथा मतांतरें युगलिया पण पल्योपमनो असंख्यातमो भाग शेष निजभवायु थकें परभवायु बांधे तेथी तेने पल्यासंख्याश काल प्रमाण अबाधाकाल जाणवो तथा भगवतीनी वृत्तिमध्यें नारकी अंतरमुहूर्त्तायु शेष परभवायु बांधे. एम कह्युं छे. तेथी नारकीने जघन्य अबाधाल होय.

हवे निरुपक्रमायुना धणी मनुष्य अने तिर्यंच मुकीने ते विना (अबाहसेसाणभवंतंसो के०) शेष थाकतां जे सोपक्रमायुना धणी मनुष्य तथा तिर्यंच ते परभवायुबंध पोताना भवना आयुनो त्रीजो भाग शेष छुंतें तथा त्रीजा भागनो त्रीजो भाग शेषछुंते एटले स्वभवायुने नवमें भागें अथवा तेने पण त्रीजे भागें एटले सत्तावीशमें भागें अथवा तेने पण त्रीजे भागें एटले एक्याशीमे भागें परभवायु बांधे तेथी तेनी अबाधा पण तेटलीज होय. एम उत्कृष्ट अबाधा सहित उत्तरप्रकृतिनी उत्कृष्ठ स्थिति कही ॥ इति ॥ ३४ ॥

हवे उत्तर प्रकृतिनो जघन्यस्थितिबंध कहे छे.

लहु ठिइ बंधो संजलण, लोह पण विग्घ नाण दंसेसु ॥
भिन्न मुहुत्तं तेअ ठ, जसुच्चे बारसय साए ॥ ३५ ॥

अर्थ-(लहुठिइबंधो के०) लघु एटले जघन्य स्थितिबंध ते (संजलणलोह के०) एक संज्वलनलोजनुं नवमा गुणगणाने पांचमे जागें चरमबंधें होय, तथा (पणविग्घ के०) पांच अंतरायकर्मनी प्रकृति अने (नाण के०) पांचज्ञानावरणीयनी प्रकृति तथा (दंसेसु के०) चार दर्शनावरणीयनी प्रकृति एवं चौद प्रकृतिनुं जघन्य बंध सूक्ष्मसंपराय गुणगणाने प्रांत समयें होय. जे नणी ए पंदर प्रकृतिना बंधकमांहे एहिज अत्यंतविशुद्धि ठे अने ए पंदरनी अतिविशुद्धपणे जघन्यस्थिति बंधाय, तेजणी (जिन्नमुहुत्तंते के०) चरम बंध अंतर मुहूर्त्तनो होय. अने एनो अबाधाकाल पण अंतरमुहूर्त्तनो जाणवो जेनणी अंतर्मुहूर्त्त स्थितिबंध कालनो अंतरमुहूर्त्तथी संख्यातगुण हीन एवी अंतरमुहूर्त्तनुं अबाधाकाल होय (अठ के०) आठ अंतर मुहूर्त्त प्रमाण जघन्यस्थितिबंध ते (जसुच्चे के०) एक यशःकीर्त्तिनाम अने बीजो उच्चैर्गोत्र, ए बे प्रकृतिनो पण जघन्य स्थितिबंध आठ मुहूर्त्त प्रमाण ते सूक्ष्मसंपराय नामे दशमा गुणगणाने प्रांतें एनो चरमबंध होय एनो आबाधाकाल पण जघन्य जाणवो.

अने (बारसयसाए के०) सातवेदनीयनो जघन्यस्थितिबंध बार मुहूर्त्तनो तथा सिद्धांत मध्यें एक मुहूर्त्तनो पण कहेलो ठे. तथा अबाधाकाल अंतर मुहूर्त्तनो जाणवो अने ए सातानो तथा उच्चैर्गोत्रनो उदय चौदमा गुणगणालगें होय ॥३५॥

दो इग मासो पक्खो, संजलण तिगे पुमठ वरिसाणि ॥
सेसाणु क्कोसाउ, मिछत्त ठिइए जलद्धं ॥ ३६ ॥

अर्थ-(दोइगमासोपक्खो के०) बे मास, एक मास अने पक्षनो जघन्यस्थिति बंध, अनुक्रमें (संजलणतिगे के०) संज्वलनत्रिकनो जाणवो. एटले संज्वलना क्रोधनो जघन्य स्थितिबंध, नवमा गुणगणाने बीजे जागें चरम बंधें बेमास प्रमाण होय तथा संज्वलना माननो एक मासनो जघन्य बंध नवमा गुणगणाने त्रीजे जागें चरम बंधें होय. तथा संज्वलनी मायानो जघन्यस्थितिबंध, एक पखवाडानो नवमा गुणगणाने चोथें जागें चरम बंधें होय एने पोतपोताना बंधकमांहे एहिज अतिविशुद्धिनुं अध्यवसाय स्थानक ठे ते जणी. तथा एनी अबाधा पण अंतर मुहूर्त्त प्रमाण ठे ते अबाधायें हीन जघन्यस्थितिनो निषेक काल जाणवो. ए रीतें संज्वलना क्रोध मान, माया, ए त्रणनी जघन्यस्थिति अनुक्रमें कही.

अने (पुमदृवरिसाणि के०) पुरुषवेदनो जघन्य स्थितिबंध नवमा गुणगणा ने प्रथमनागें चरमबंध आठ वर्षनो होय, एना बंधकमांहे एहिज अतिविशुद्धि ठे. एनी जघन्य अबाधा अंतर मुहूर्त्तकाल प्रमाण ठे. ए बावीश प्रकृतिनो जघन्यस्थितिबंध कह्यो, तथा आयु चार, वैक्रिय षट्क, जिननाम, अने आहार कद्विक, ए तेर प्रकृतिनो जघन्य स्थितिबंध, स्वामीत्व प्रस्तावे जूदो कहेशे. एवं पांत्रीश प्रकृति विना शेष पच्चाशी प्रकृतिनो जघन्यस्थितिबंध कहेवानें करण कहेठे. पच्चाशी प्रकृतिनी जघन्य स्थिति एकेंद्रिय जीवने विषे प्राप्यमाणठे ते कहे ठे

(सेसाणुक्कोसाउ के०) शेष प्रकृतिउनो जे उत्कृष्ट स्थितिबंध ठेते (मिछत्तठिएज लद्धं के०) मिथ्यात्व मोहनीयनी उत्कृष्ट स्थिति साथें वेंचता जे लाने,ते जघन्य स्थिति कहेवी एटले ज्ञानावरणीयादिकनी उत्कृष्टी स्थिति त्रीश कोडाकोडी सागरोपमनीठे ते मिथ्यात्व मोहनीयनी उत्कृष्टी स्थिति सीतेर कोडाकोडी सागरोपमनीठे तेणे नाग देतां, पूर्ण सागरोपम नावें तेथी एक सागरोपमना सातनाग करीयें, तेवारें त्रीश कोडाकोडी सागरोपमना बशे ने दश सातीआ नाग थाय. ते शीतेर कोडाकोडी साथें वेंचतां त्रण नाग आवे अने वीश कोडाकोडीना सातीआ एकशो चालीश नाग थाय तेने सीतेर कोडाकोडी साथें वेंचता सातीआ बे नाग आवे एटले एकेंद्रिय ने ज्ञानावरण पांच, दर्शनावरण नव, अंतराय पांच,अने अशातावेदनीय एक एवं वीश प्रकृतिनो उत्कृष्ट स्थितिबंध, सागरोपमना सातइआ त्रण नाग जाणवा तथा शोल कषायना सातइआ चार नाग, अने मिथ्यात्व मोहनीयनो एक साग रोपम संपूर्ण जाणवो. एवं साडत्रीश प्रकृति थइ.

तथा त्रसचतुष्क, अस्थिर षट्क, औदारिकद्विक, तिर्यंचद्विक, एकेंद्रियजाति, पंचेंद्रियजाति, कुखगति, निर्माण, आतप, उद्योत, स्थावर, तैजस, कार्मण, अगुरुलघु, उपघात, उश्वास, हुंमसंस्थान, ठेवठुं संघयण, कृष्णवर्ण, तीक्ष्णरस, अशुनस्पर्श चतुष्क, डुर्गंध, अरति, शोक, नय, जुगुप्सा, पराघात, अने नपुंसकवेद ए एकतालीश प्रकृतिनी उत्कृष्ट स्थिति वीश कोडाकोडीनी ठे तेने मिथ्यात्वनी स्थिति साथें वेंचता सातइआ बे नागनो बंध होय. एवं अठोतेर प्रकृति थइ.

सूक्ष्मत्रिक तथा विकलजाति त्रिक, ए ठ प्रकृतिनी उत्कृष्ट स्थिति अढारकोडाकोडी सागरोपमनी ठे तेने मिथ्यात्व स्थिति साथें वेंचतां एक सागरोपमना पांत्रीश नाग करीयें. एवा नव नागनो बंध होय एवं चोराशी प्रकृतिथइ

स्त्रीवेद, मनुष्यद्विक, शातावेदनीय, ए चार प्रकृतिनो बंध एक सागरना चौद

नाग करीयें, एवा त्रण नाग अथवा सातइआे दोढ नाग एवं अठ्यासी प्रकृति थइ.

स्थिर, शुन, शुनग, पुंवेद, सुस्वर, आदेय, यशःकीर्त्ति, हास्य, रति, शुनखगति, प्रथम संघयण, प्रथमसंस्थान, सुगंध, शुक्लवर्ण, मिष्टरस, शुनस्पर्श चतुष्क, ए ओगणीश प्रकृतिनी दश कोडाकोडी सागरोपमनी स्थितिछे ते मिथ्यात्व मोहनीयें वेंचतां वंध सातइउे एकनाग होय पीतवर्ण, आम्लरस, ए बे प्रकृतिनो बंध, अठावीशीआ पांच नाग, तेवार पढी एकेका वर्णें अने एकेका रसें, अठावीशीउे एकेक नाग व धारतां जवुं. एटले रक्त वर्ण अने कषायला रसें अठावीशीआ ढ नाग एम शेष वर्ण तथा शेष रसनें विषे अनुक्रमें कहेवो एवं ११५.

तथा बीजे संघयणे अने बीजे संस्थाने पांत्रीशीआ ढ नाग, तथा त्रीजें संघयणे अने त्रीजे संस्थाने, पांत्रीशीआ सात नाग, तथा चोथे संघयणे अने चोथे संस्थाने, पांत्रीशीआ आठ नाग, तथा पांचमेसंघयणे अने पांचमे संस्थानें, पांत्रीशीआ नव नाग, ए एकेंद्रियने उत्तर प्रकृतिनो उत्कृष्टस्थितिबंध सामान्यें कह्यो. केम के एकेंद्रियने एकशोने नव प्रकृतिनो बंध, ढे तेमध्यें नरायु तथा तिर्यगायुनो उत्कृष्टस्थिति वंध, पूर्व कोडीनुं अने शेष एकशोने सात प्रकृतिनो उत्कृष्ट स्थितिबंध अहीं कह्यो. ए एकशोने सात प्रकृति मध्यें पण पूर्वें बावीश प्रकृतिनो जघन्य स्थितिबंध सामान्य पणें कह्युं ढे, अने शेष पच्चाशी प्रकृतिनो जघन्य स्थितिबंध कहे ढे. एवं एकशो ने त्रेवीश प्रकृति थइ.

अहींआं वर्णादिक सविस्तर वीश प्रकृतिनो बंध कह्यो, तेथी एकशो ने त्रेवीश प्रकृति थइ परंतु ए वर्णादिक सामान्यें चार लेतां एकशो ने सात प्रकृति थाय. तेमांहेली ज्ञानावरणीय पांच, दर्शनावरणीय चार, अंतराय पांच, संज्वलना चार, पुंवेद एक, शातावेदनीय, उच्चैर्गोत्र, अने यशःकीर्त्ति, ए बावीश प्रकृतिनो जघन्य स्थितिबंध, मूकीनें तेथी शेष रहीजे पच्चाशी प्रकृति तेनो जघन्यस्थितिबंध स्वामी एकेंद्रिय ढे. ते पच्चाशीप्रकृतिनो एकेंद्रियने विषे उत्कृष्ट स्थितिबंध जे कह्यो तेने अद्धापल्योपमने असंख्यातमें नागें हीन करतां, एकेंद्रियने विषे जघन्य स्थितिबंध थाय ते कहे ढे. निद्रापांच, तथा अशाता, वेदनीय ए ढ प्रकृतिनो जघन्यस्थितिबंध सातीआ बे नाग, पल्योपमने असंख्यातमें नागें हीणा जाणवा तथा मिथ्यात्वमोहनीयनो एक कोडाकोडी सागरोपम पल्योपमने असंख्यातमें नागें हीन जाणवो एम जे कर्म प्रकृतिनी वीश कोडाकोडी सागरोपमनी उत्कृष्टी स्थिति ढे, तेनी जघन्यस्थिति, सातीआ बे नाग जेनी दश कोडाकोडीनी उत्कृष्टी

स्थिति तेनी जघन्यस्थिति सातीआो एक जाग अने जेनी पंदर कोडाकोडी सागरोपमनी उत्कृष्ट स्थिति तेनी जघन्यस्थिति चौदीआ त्रण जाग ते सर्व पल्योपमने असंख्यातमें जागे ऊणा जाणवा तेमज जेनी अढार कोडाकोडी सागरोपमनी उत्कृष्टीस्थिति, तेने सागरोपमना पांत्रीशीआ नव जाग पल्योपमना असंख्यातमें जागें ऊणा जाणवा. ए रीतें पच्चाशी प्रकृतिनो एकेंद्रियने विषे जघन्यस्थितिबंध जाणवो ॥ इति ॥ ३६ ॥

अय मुक्कोसो गिंदिसु, पलियाऽ संखंस हीए लहु बंधो ॥
कमसो पणवीसाए, पन्ना सय सहस संगुणिउं ॥ ३७ ॥

अर्थ—(अयमुक्कोसोगिंदिसु के०) ए अनंतरोक्त एकेंद्रियने एकशो ने सात प्रकृतिनो उत्कृष्ट स्थितिबंध, ते (पलियाऽसंखंसहीएलहुबंधो के०) पल्योपमने असंख्यातमे जागें हीणो करतां एकेंद्रियने एकशो सात प्रकृतिनो जघन्यस्थितिबंध थाय. हवे प्रसंगागत एकेंद्रियना स्थितिबंध कह्या. पछी त्रण विकलेंद्रिय तथा असंज्ञिपंचेंद्रियने उत्कृष्ट तथा जघन्य स्थितिबंध, कहे छे. (कमसो के०) अनुक्रमें (पणवीसाए के०) पचवीश गुणो बेंद्रियने एटले एकेंद्रियने जे एकशोने सात प्रकृतिनो उत्कृष्ट स्थितिबंध कह्यो, तेथी पच्चीशगुणो बेंद्रियने उत्कृष्ट स्थितिबंध होय, एटले, ज्ञानावरणीयादिक वीश प्रकृतिनो सागरोपमना सातइआ पच्चोतेरजाग. एम दशसागरोपस्थितिवाला कर्मना सातइआ पचीश जाग, एम शोल कषायना सातइआ शो जाग, मिथ्यात्वमोहनीयनो बंध पच्चीश सागरोपम, एम जेनी उत्कृष्ट स्थिति वीश कोडाकोडी सागरोपमनी तेने सात सागरोपमने सातइउं एक जाग उपर, जेनी पंदर कोडाकोडी सागरोपमनी उत्कृष्टी स्थिति तेने सागरोपमना चौदिया पच्चोतेर जाग एटले पांच सागरोपमने चोदिआ पांच जाग उपर, जे कर्मनी अढार कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति तेना पांत्रीशीआ बशेने पच्चीश जाग एटले छ सागरोपमने पांत्रीशीआ पंदर जाग उपर जाणवा. ए रीतें बेंद्रियनें एकशो ने सात प्रकृतिनो उत्कृष्टस्थितिबंध जाणवो.

हवे तेंद्रियनो उत्कृष्ट स्थितिबंध कहे छे. जेटलो एकेंद्रियनें एकशो ने सात प्रकृतिनो उत्कृष्ट स्थितिबंध कह्यो, तेथी (पन्ना के०) पच्चाशगुणो अने बेंद्रियनास्थितिबंध थकी बमणो जाणवो एटले ज्ञानवरणादिक वीश प्रकृतिनो उत्कृष्ट स्थितिबंध एकवीशसागरोपमने सातइआ त्रण जाग उपर, तथा मिथ्यात्व मोहनीयनो पच्चाश सागरोपम एम सर्व प्रकृतिउने विषे तेंद्रियनो उत्कृष्टस्थितिबंध जाणवो.

हवे चौरिंद्रियनो उत्कृष्ट स्थितिबंध ते जेटलो एकेंद्रियने एकशोने सात प्रकृतिनो स्थितिबंध कह्यो ते थकी (सय के०) शो गुणो अने बेंद्रियना स्थितिबंध थकी चार गुणो तथा तेंद्रियना स्थितिबंध थकी बमणो जाणवो एटले मिथ्यात्वमोहनीयनो एकशो सागरोपम, तथा ज्ञानावरणादिक वीश प्रकृतिनो बेंतालीश सागरोपमने सातइआ ब नाग उपर, शोल कषायना सत्तावन सागरोपमने सातीइउ एक नाग, एम जे कर्मनी वीश कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति होय तेनुं अठावीश सागरोपमने सातइआ चार नाग उपर स्थितिबंध होय एम सर्वत्र लेवुं.

अने असन्नीआ पंचेंद्रियनो उत्कृष्ट स्थितिबंध एकेंद्रियना बंध थकी (सहस संगुणिउ के०) हजार गुणो जाणवो अने चौरिंद्रियना बंध थकी दशगुणो जाणवो एटले मिथ्यात्वमोहनीयना हजार सागरोपम, शोलकषायना सागरोपमना सातइआ चार हजार नाग एटले पांचशे एकोत्तेर सागरोपमने सातइआ त्रण नाग उपर, तथा ज्ञानावरणादिक वीश प्रकृतिना सातइआ त्रण हजार नाग तेना चार शें अठावीश सागरोपमने सातइआ चार नाग उपर, एम जे कर्मनी वीश कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति तेना बे हजार नाग एटले बशें पच्चाशी सागरोपमने सातइआ पांच नाग उपर जाणवा. जे प्रकृतिनी दश कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति तेना हजार नाग एटले एकशो बेंतालीश सागरोपमने सातइआ ब नाग उपर, तथा जे कर्मनी पंदर कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति तेना बशें चौद सागरोपमने सातइआ बे नाग उपर जाणवा. एम उत्कृष्टस्थिति असन्नीउ पंचेंद्रिय बांधे. वैक्रिय शरीर, वैक्रिय आंगोपांग, देवगति, देवानुपूर्वी, नरकगति, नरकानुपूर्वी. एवं ब प्रकृतिएनी जघन्यस्थितिबंधनो स्वामी पण असन्नीउ पंचेंद्रिय जाणवो. जेनणी एकेंद्रिय तथा विकलेंद्रियने एनो बंध नथी तेथी देवद्विकनो बंध मूल दश कोडाकोडी सागरोपमनो बे. ते मिथ्यात्वनी स्थितियें वेंचतां सातइउ एक नाग आवे, तेने हजार गुणो करतां सातइआ हजार नाग थाय. तेना एकशो बेंतालीश सागरोपम उपर सातइआ ब नाग आवे, तेमज वैक्रियद्विक अने नरकद्विकना सातइआ बे हजार नाग थाय तेना बशें पच्चाशी सागरोपमने सातइआ पांचनाग उपर स्थिति जाणवी तेवली पल्योपमने असंख्यातमें नागें उणी करीयें तेवारें ए ब प्रकृतिनो जघन्यस्थितिबंध होय अने चार आयुनो पल्योपमना असंख्यातमा नाग प्रमाण बंध जाणवो एटले एकशो ने शोल प्रकृतिनो जघन्य स्थितिबंध कह्यो. ॥ ३७ ॥

हवे विकलेंद्रिय तथा असंज्ञीआ पंचेंद्रियनो जघन्य स्थितिबंध कहे छे.

विगल असन्निसु जिठो, कणिठ्ठउ पल्लऽसंख नागुणो ॥
सुर निरयाउ समादस, सहस्स सेसाउ खुड्ड नवं ॥ ३८ ॥

अर्थ-(विगलअसन्निसुजिठो के०) विकलेंद्रिय अने असंज्ञी पंचेंद्रियनो जे उत्कृष्ट स्थितिबंध छे ते थकी (कणिठ्ठउ के०) जघन्य स्थितिबंध (पल्लऽसंखना गुणो के०) पल्योपमने असंख्यातमे नागें कणो एक आयु वर्जीने शेष प्रकृतिनो बंध जाणवो एटले बेंद्रियने ज्ञानावरणादिक वीश प्रकृतिना सातइआ पच्चोतेर नाग छे ते मांथी पल्योपमने असंख्यातमें नागे कणो जघन्य स्थितिबंध जाणवो तेंद्रियने साती आ दोढशो नागछे ते पल्योपमने असंख्यातमे नागे कणो करतां जघन्य स्थितिबंध थाय चौरिंद्रियने सातीआ त्रणशो नागछे तेमांथी पल्योपमने असंख्यातमें नागें उणो जघन्य स्थितिबंध जाणवो. एम जे प्रकृतिनो जेटलो उत्कृष्ट स्थितिबंध कह्योछे तेथी पल्योपमने असंख्यातमे नागें कणो जघन्य स्थितिबंध जाणवो.

हवे आयुनो जघन्य स्थितिबंध कहे छे तेमध्यें (सुरनिरयाउसमादससहस्स के०) देवायु तथा नरकायु, ए बे आयुनो जघन्य स्थितिबंध समान छे केमके देवता तथा नारकी दश हजार वर्ष पर्यंत मरण नपामें माटे दश हजारवर्ष जाणवुं तथा दशहजार वर्ष थकी समय समय अधिक करतां यावत् तेत्रीश सागरोपम एक समय हीन सुधीनाजे स्थितिनां स्थानक ते मध्यमायु जाणवो. ते मध्यें परमायु एकेका स्थिति स्थानकें असंख्यात देवायु होय, एम नारकीने विषे पण जाणवो परंतु एटलुं विशेष जे नेवुं हजार वर्षथी यावत् दश लाख वर्ष एटली स्थिति ते नरकायु नथी बीजा सर्व स्थानक वर्त्तां छे. ए बे आयुथी (सेसाउखुड्डनवं के०) शेष थाकतां रह्यां जे मनुष्यायु तथा तिर्यगायु, ए बे आयुनो जघन्य स्थितिबंध खुल्लकनव एटले सर्वेनी अपेक्षायें न्हानो नव ते बशेने उपन्न आवलिका प्रमाण होय. अहींआं आगम मध्यें मनुष्य तिर्यंचनुं जघन्यायु अंतरमुहूर्त्त प्रमाण कह्युं छे. पण जाणीयें छैयें जे ए अंतर मुहूर्त्त क्षुल्लक नव प्रमाण लेवो, जे नणी अंतर मुहूर्त्तना पण असंख्याता नेदछे. तेमाटे. ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ३८ ॥

हवे सर्व प्रकृतिना जघन्य स्थितिबंधें जघन्य अबाधाकाल कहे छे.

सवाणवि लहु बंधे, निन्न मुहु अबाह आउ जिठेवि ॥
केइ सुराउ समजिण, मंत मुहु बिंति आहारं ॥ ३९ ॥

अर्थ-(सव्वाणविलहुबंधे के०) स्वमतें सर्व बंधयोग्य एकशो ने वीश प्रकृति ना जघन्य स्थितिबंधने विषे (अबाह के०) जघन्य अबाधाकाल (भिन्नमुहु के०) अंतर मुहूर्त्तनो जाणवो, एटले जघन्य स्थितियें बांध्युं जे कर्म, ते अंतर मुहूर्त्त सुधी पोतानो विपाक देखाडे नहीं, ते अबाधाकालें हीन निषेक काल क हीयें. हवे अहींआं जे विशेष छे ते देखाडे छे.(आउजिट्ठेवि के०) उत्कृष्ट आउ नी स्थितिने विषे जघन्य अबाधा काल पण होय अने जघन्यस्थितिना आउ मां उत्कृष्ट अबाधाकाल पण होय. तथा उत्कृष्ट आयुखें उत्कृष्ट अबाधाकाल होय, तथा जघन्य आयुष्यें जघन्य अबाधाकाल होय. एम आयुःकर्मने वि षे अबाधाकालनी चउनंगी थाय, केम के अंतर मुहूर्त्त शेष आयुयें पण मनुष्य त था तिर्यंच परजवायु, तेत्रीश सागरोपमनुं बांधे छे. अने पूर्व कोडीना त्रीजानाग शेष आयुयें पण परनवायु जघन्य बांधे छे. तथा पूर्व कोटीनो त्रीजो नाग शेष रहे थके पण तेत्रीश सागरोपमायु बांधेछे तथा अंतरमुहूर्त्त शेषें खुलक नवायु प ण बांधे. एम स्वमतें सर्व प्रकृतिनो जघन्य स्थितिबंध कह्यो

हवे मतांतरें कहे छे. (केइसुराउसमजिण के०) कोइ एक आचार्य जिनना म कर्मनो जघन्य स्थितिबंध जघन्य देवायु जेटलो होय एम कहे छे. एटले दश हजार वर्षनो जघन्यस्थितिबंध आठमा गुणठाणाना छठा नागने प्रांतें चरमबंध ए टलो होय तथा दश हजार वर्ष नरकायु नोगवी पण जिन थाय, तेनी अपेक्षा यें पण ए जघन्यबंध माने छे. अहींआं तत्व केवलिगम्यछे तथा (मंतमुहुबिंति आहारं के०) आहारक शरीर अने आहारक अंगोपांग, ए बे प्रकृतिनो जघन्य स्थितिबंध आठमा गुणठाणाने प्रांतें चरमबंधें अंतरमुहुर्त्त प्रमाण होय. ए म माने छे. ते जाणीयें. छैयें के आगमिक मतें अप्रमत्त गुणठाणे अंतर मुहु र्त्तनो बंध पंचाशक मध्यें प्रायश्चित्तविधि पंचाशकनी बेतालीशमी गाथायें कह्युं छे, ते अपेक्षायें केता हशे, पण तेउने उत्कृष्ट बंधमान पण हशे॥ इति स० ॥३९॥

हवे क्षुल्लकनवनुं मान कहीयें छैयें.

सत्तरस समहिआ किर; इ गाणु पाणं मिहुंति खुड्डु नवा ॥
सगतीस सय तिहुत्तर, पाणू पुण इग्ग मुहुत्तंमि ॥ ४० ॥

अर्थ-(सत्तरससमहिआकिर के०) सत्तर नव जाजेरा तेरशें पंचाणु अंश, अढारमा नावना अधिक निश्चें (इगाणुपाणंमिहुंतिखुड्डुनवा के०) एक श्वासोश्वा

स मांहे होय क्षुल्लक नव एटले निगोदिआना न्हाना नव जाणवा एवा (सगतीससयतिहुत्तर के०) साडत्रीशशेने तहोंत्तेर (पाणू के०) श्वासोश्वास (पुण के०) वली (इगमुहुत्तंमि के०) एक मुहूर्त्तमां होय, जे नणी रोग रहित बलिष्ठ निश्चित एवा तरुण पुरुषना सात श्वासोश्वासें एक थोव थाय. एवा सात थोवें एक लव एटले ठगणपच्चाश श्वासोश्वासें एक लव थाय. एवा सत्तोतेर लवें एक मुहूर्त्त थायतेने ठगणपच्चाश गुणा करतां त्रण हजार सातशेने तहोंत्तर श्वासोश्वास अंतर मुहूर्त्तमां थाय. कोइक आचार्य नाडीना उलालाने पण श्वासोश्वास कहे ले. अने बशें ठपन्न आवली प्रमाण एक क्षुल्लक नव होय. एवा पांशठ हजार पांचशे ने ठत्रीश क्षुल्लकनवें एक अंतर मुहूर्त्त थाय, तेथी बशें ठपन्नने पांशठ हजार पांचशेने ठत्रीश साथें गुणतां एक क्रोड, शडशठलाख, सीत्तोतेर हजार, बशेंने शोल एटली आवली थाय, तेने साडत्रीशशें ने तहोंत्तेर श्वासोश्वासें वहेंचीयें, तेवारें चुम्मालीशशेंने ठेंतालीश आवली एक श्वासोश्वास मांहे होय अने शेष बे हजार चारशेने अठ्ठावन आवली रहे, तेने साडत्रीशशेंने तहोत्तेरनो नाग नावे, ते माटें एक आवलीना साडत्रीशशेंने तहोत्तेर नाग करीयें. तेवा चोवीशशेंने अठ्ठावन्न अंश चुम्मालीशशेंने सडतालीशमी आवलीना उपरलाने.

एटले एक श्वासोश्वासना क्षुल्लक नव सत्तर ते एकेका क्षुल्लक नवनी बशें ठपन्न आवलीने सत्तर गुणा करतां तेंतालीशशेंने बावन्न थाय. शेष चोराणुं आवली पूर्ण अने पच्चाणुमी आवलीना साडत्रीशशें तहोतेरीआ चोवीशशेने अठावंन नाग उपर एटलो अढारमा नवनो कालगये थके एकश्वास पूर्णथाय. ॥ ४० ॥

पण सठि सहस पण सय, ठत्तीसा इग मुहुत्त खुड्ड नवा ॥
आवलियाणंदोसय, ठप्पन्ना एग खुड्डनवे ॥ ४१ ॥

अर्थ—हवे (पणसठिसहसपणसयठत्तीसा के०) पांशठ हजार, पांचशें ने ठत्रीश, एटला (इगमुहुत्तखुड्डनवा के०) एक मुहूर्त्तना क्षुल्लक नव थाय, तेनें साडत्रीशशें ने तहोंतेर श्वासश्वासें वहेंचीयें, तेवारें एक श्वासोश्वासमां सत्तर नव पूर्ण अने उपर साडत्रीशशें तहोंतेरीआ तेरशेंने पच्चाणु नाग वधे, अने अढारमां नवमां (२३७३) नाग पूर्ण होय तेवारें नव पूर्ण थाय माटें शेष अढारमा नवमां (२३७०)आगला श्वासोश्वासना अंश मांहे आवे तेवारें नवपूरो थाय अने बे श्वासोश्वासमांहे चोत्रीश नव पूर्ण थाय. अने पांत्रीशमां नवना (२३७२)

तेरीआ (११००) अंश पांत्रीशमां नवना वधे तथा त्रण श्वासोश्वासमां बावन नव पूरा थाय, अने त्रेपनमां नवमां (३४४३) तेरीया चारशेने बार अंश पूराय अथवा बे श्वासोश्वासमां पांत्रीश नव गणीयें, तो शेष (९७३) अंश घटे एम स्वम तें विचारी कहेवा. एम निगोदिउ जीव एक श्वासोश्वासमांहे सत्तर नव जाजेरा करे.

तथाएक थोवमांहे एकशोने एकवीश क्षुल्लक नव अने एक नवना पांचशे ने ओगणचालीश अंश करीयें, एवा (३१७) अंश (१२१)मांनवना होय, तथा एक लव मध्यें आठशो एकावन क्षुल्लक नव पूर्ण होय अने उपर वली बावन मांनवना सत्तोतेरीआ नव नाग होय. एक लवनी आवली बे लाख, सत्तर ह जार, आठशें ने पच्चाशी. ते उपर वली एक आवलीना सत्तोतेरीआ एकोत्तेर ना ग. तथा एक थोव मांहे आवली एकत्रीश हजार, एकशो ने ढवीश उपर वली ए क लवना पांचशे उगणचालीश नाग करीयें, तेवा त्रणशेंने बे नाग आवे. ॥४१॥

हवे उत्तर प्रकृति आश्रयीने उत्कृष्ट स्थितिबंधना स्वामि कहे ढे.

अविरय सम्मो तिछं, आहार ङगा मराउ अपमत्तो ॥
मिच्छा दिठीबंधइ, जिठ ठिइ सेस पयडीणं ॥ ४२ ॥

अर्थ-(अविरयसम्मोतिछं के०) अविरति सम्यक्दृष्टि मनुष्य पूर्वें मिथ्यात्व प्र त्ययें नरकायु बांध्युं ढे जेणे एवो मनुष्य क्षायोपशमिक समकत्व लहीने, तेणे करी तीर्थंकरनामकर्म बांधी पढी ते नरकगतिमांहे जातो सम्यक्त्व वमतो ते सम्य क्त्ववमताने ढेहेले समयें जिननामनी उत्कृष्ट स्थिति बांधे. जे नणी ए जिननाम ना बंधक मांहे एहिज अतिसंक्लिष्टपणुं ढे अति संक्लेशें उत्कृष्ट स्थितिबंध थाय ढे तथा (आहारङगामराउअपमत्तो के०) आहारकद्विक अने अमरायु एटले देवा यु, ए त्रण प्रकृतिनी उत्कृष्ट स्थितिबंधनो स्वामी, अप्रमत्त साधु जाणवो. जे न णी आहारकशरीर तथा आहारक आंगोपांग, ए बे प्रकृतिनो उत्कृष्ट स्थितिबंध प्रमत्तगुणगणाने सन्मुख थयलो एवो अप्रमत्त यति ते अप्रमत्तगुणगणाने चरम बंधे बांधे एना बंधकमांहे एहिज अति संक्लिष्ट ढे तथा देवताना आयुनो उत्कृष्ट स्थि तिबंध स्वामी अप्रमत्तगुणस्थानक वर्त्तिसाधु जाणवो पण एटलुं विशेष जे प्रम त्त गुणस्थानकें आयुबंध आरंनीने अप्रमत्तें चढतो साधु बांधे, आयुबंध स्थानकमांहे एहिज अतिविशुद्धस्थानक ढे केमके शुनायुनोबंध उत्कृष्टविशुद्धियें करी होयढे.

ए चार प्रकृतियी (सेसपयडीणं के०) शेष थाकती जे एकशो ने शोल प्रकृ

ति तेनो (जिट्ठठिइ के०) उत्कृष्ट स्थितिबंधनो स्वामी (मिच्छादिट्ठीबंधइ के०) मिथ्यादृष्टी जीव जाणवो एटले संज्ञी पंचेंद्रिय सर्व पर्याप्तियें करी पर्याप्तो मिथ्या दृष्टि जीव बांधे जे नणी ए एकशोने शोळ प्रकृति मध्यें मनुष्यायु अने तिर्यगायु ए बे आयु विना शेष एकशोने चौद प्रकृतिनुं उत्कृष्ट स्थितिबंध उत्कृष्ट संक्लेश प परिणामे थाय तेनणी मिथ्यात्वथी अधिक कोइ अन्य संक्लेश स्थानक नथी. अहींआं पण असंख्याता अध्यवसाय स्थानक छे, पण तेमध्यें स्वस्व बंध प्रायोग्य संक्लेशस्थानक लेवा तथा तेमां पण मनुष्यायुतो विशुद्धियें उत्कष्ट स्थितिक बंधाय अ ने तेना बंधक मांहे अतिविशुद्धियें अविरति सम्यक्दृष्टि देवता होय, एटले स म्यक्दृष्टी देवता अतिविशुद्धियें मनुष्यगतिनो बंधक होय, पण ते देवता त्रण पल्योपमायु न बांधे केम के देव तथा नारकी मांहेथी आवेला जीव संख्याता व र्षायुवाला मनुष्य, तिर्यंच थाय पण असंख्याता वर्षायुवाळा मनुष्य तिर्यंच न थाय तथा मिथ्यात्वगुणठाणानी अपेक्षायें सास्वादन विशुद्ध छे, केम के जे जीवें सास्वादन गुणठाणुं स्पर्श्युं ते नियमा नव्य होय अने अर्द्धपुजलपरावर्तमांहे मोक्ष जाय तथापि सम्यक्त्ववमता सास्वादन होय, तेथी संक्लिष्ट जाणवो तेथी तिहां म नुष्यायु अने तिर्यंचायुनो बंधक संक्लिष्ट परिणामें जाणवुं ॥ इति समुच्चयार्थः ॥४२॥

एम गुणस्थानकें स्वामित्व कहीने, हवे जीवनेदें कहे छे.

विगल सुहुमाउग तिगं, तिरिमणुयासुर विउव्वि निरयडुगं ॥
एगिंदि थावरा यव, आईसाणा सुरु कोसं ॥ ४३ ॥

अर्थ–(विगलसुहुम के०) विकल जातित्रिक तथा सूक्ष्म, अपर्याप्त अने सा धारण, ए सूक्ष्मत्रिक तथा (आउगतिगं के०) नरकायु, तिर्यंचायु अने मनुष्यायु, ए त्रण त्रिकनी नव प्रकृति तथा (सुर के०) देवद्विक एटले देवगतिने देवानु पू र्वी तथा (विउव्वि के०) वैक्रियद्विक तथा (निरयडुगं के०) नरकद्विक एटले न रकगति अने नरकानुपूर्वी एवं पंदर प्रकृतिनुं उत्कृष्ट स्थिति बंधनास्वामी (तिरि मणुया के०) पूर्व कोडी मध्यवर्त्ति आयुष्यवाळा मिथ्यादृष्टि संज्ञीआं गर्भज मनु ष्य तथा तिर्यंच पंचेंद्रिय होय जे नणी ए पंदर मांहेथी मनुष्यायु तिर्यंचायुविना शेष तेर प्रकृतिनो बंध नव प्रत्ययें देवता नारकीने नथी तथा विकलत्रिक अने सू क्ष्मत्रिकनो बंध, एकेंद्रिय बेंद्रियादिकने होय पण तेने उत्कृष्ट स्थितियें न बंधाय तथा मनुष्यायु अने तिर्यंचायु पण देवता तथा नारकी बांधेछे तो पण ते त्रण

पल्योपमनी उत्कृष्टीस्थितिवालो आयु न बांधे केम के देवता तथा नारकी चवी ने पूर्वकोटी वर्षथी अधिक आयुष्यवाला मनुष्य तथा तिर्यंचमांहे जवप्रत्ययेंज अवतरे नहीं तेमाटें पूर्वकोटी आयुना धणीज मनुष्य तथा तिर्यंच पूर्व कोटीना त्रीजा जागना प्रथम समयें परजवायु पूर्वकोटी त्रिजागाधिक त्रण पल्योपमनुं उत्कृष्ट स्थितिक मनुष्यायु तथा तिर्यंचायु बांधें,तेथी ते मिथ्यात्वीज ए बे स्थितिना उत्कृष्ट बंधाधिकारी जाणवा अने सास्वादन गुणगणे पडतां जणी तेवी विशुद्धि न होय,तेथी ते सास्वादनी पण एनो बंधाधिकारी नथी अहींआं स्वस्वबंधयोग संक्लेश लेवो.

(एगिंदिथावरायव के०) एकेंद्रियजाति, स्थावरनाम, आतपनाम, ए त्रण प्रकृतिनो उत्कृष्ट स्थितिबंध, वीश कोडाकोडी सागरोपमरूप तेना बंधाधिकारी (आईसाणासुरुक्कोसं के०) जवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी ए त्रण तथा सौधर्म अने ईशान, ए आदिना बे देवलोक एटला स्थानकना मिथ्यात्वी देवता पृथवी अप् अने वनस्पति ए त्रण मांहे शुजस्थानमध्यें अवतरे, तेथी तेने तत्प्रायोग्य ए त्रण प्रकृतिनो उत्कृष्ट स्थितिबंध बंधाय अने मनुष्य तथा तिर्यंच ए बे तो संक्लेशें करी अढार कोडाकोडीनी स्थिति बांधें, तेथी ए एना अधिकारी न कह्या अने सनत्कुमारादिक देवलोकना उपरलावैमानिक देवताने पृथवीकायादिक मध्यें अवतरवुं नथी तेथी ते ए त्रण प्रकृति न बांधे. तथा एकेंद्रिय अने विकलेंद्रिय, ए त्रण प्रकृति बांधे खरा, परंतु तेउने उत्कृष्ट स्थितिबंध नथी अने असंख्यातावर्षायुवाला मनुष्य तथा तिर्यंच ए त्रण प्रकृति न बांधें जे जणी तेने देवता विना अन्य स्थानकें अवतरवुं नथी. ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ४३ ॥

तिरि उरल डुगुज्जोअं, बिवठ सुर निरय सेस चउग
इआ ॥ अथ जघन्य स्थितिबंध स्वामीनाह ॥ आहा
र जिणमपुव्वो, नियट्टि संजलण पुरिसलहू ॥ ४४ ॥

अर्थ—(तिरिउरलडुगुज्जोअं के०) तिर्यंचगति, तिर्यंचानु पूर्वी तथा औदारिक शरीर अने औदारिक अंगोपांग, पांचमुं उद्योतनाम अने बहुं (बिवठ के०) बेवहुं संघयण, ए ब प्रकृतिनो उत्कृष्ट स्थितिबंध, वीश कोडाकोडी सागरोपमबे तेना बंधाधिकारी स्वस्वप्रायोग्य अति संक्लेशें वर्त्तता (सुरनिरय के०) मिथ्यात्वी देवता तथा मिथ्यात्वी नारकी होय, केम के मनुष्य तथा तिर्यंच गर्भज पंचेंद्रिय ए ब प्रकृतिने संक्लेशें वर्त्ततां अढार कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति बांधे अने तेथी अति सं

क्लिष्ट होय तो नरक प्रायोग्य प्रकृतिनो बंध करे. अने देवता नारकीने तो नरक प्रायोग्य बांधवुंज नथी, ते माटें ते अति संक्लिष्टें ए ७ प्रकृतिनो उत्कृष्ट स्थितिबंध करे, ते मध्यें पण औदारिक अंगोपांग अने छेवठुं संघयण, ए बे प्रकृतिनो उत्कृष्ट स्थितिबंध चोथा, पांचमा, छठा, सातमा अने आठमा देवलोकना देवताने होय पण नीचला देवताने न होय जे भणी नीचेना देवता तो अतिसंक्लेशें एकेंद्रिय प्रायोग्य बांधे छे तेथी तेने ए बे प्रकृतिनो अढार कोडाकोडी सागरोपमनो बंध होय, एम चोवीश प्रकृतिना उत्कृष्टी स्थितिबंध स्वामी कह्या तथा आहारकद्विक अने देवायुनो उत्कृष्ट स्थितिबंधस्वामी अप्रमत्त साधु कह्यो अने जिननाम कर्मनो उत्कृष्टस्थितिबंध स्वामी नरकाभिमुख सम्यक्त्व वमतो मनुष्य कह्यो एम अठावीश प्रकृति थइ.

तेथी (सेसचउगइआ के०) शेष ज्ञानावरणीय पांच, दर्शनावरणीयनी नव, अंतरायनी पांच, शोल कषाय. एवं पांत्रीश तथा भय, जुगुप्सा, वर्णचतुष्क, तैजस, कार्मण. अगुरुलघु, उपघात, निर्माण, मिथ्यात्व. ए सुडतालीश प्रकृति ध्रुवबंधिनी तथा अशाता, अरति, शोक, नपुंसकवेद, पंचेंद्रियजाति, हुंमसंस्थान, पराघात, उश्वास, कुखगति, त्रसचतुष्क, अथिरछक, नीचैर्गोत्र, ए वीश अध्रुवबंधिनी प्रकृति, एवं शडशठ प्रकृतिना उत्कृष्ट स्थितिबंध स्वामी अतिशंक्लेशें वर्त्तता चतुर्गतिक मिथ्यात्वी जीव जाणवा. तथा शाता, हास्य, रति, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, नरकद्विक. आदिनां पांच संस्थान, तथा आद्य संघयणपंचक, शुभखगति, स्थिरषट्क, उच्चैर्गोत्र, ए पच्चीश प्रकृति अध्रुवबंधिनी तेना उत्कृष्ट स्थितिबंधक स्वस्वबंध प्रायोग्य अति संक्लेशें वर्त्तता एवा चातुर्गतिक मिथ्यात्वी जीव होय. ए रीतें बाणुं प्रकृतिना उत्कृष्ट स्थितिबंध स्वामी मिथ्यात्वी जीव कह्या.

हवे सर्व प्रकृतिना जघन्य स्थितिबंध स्वामी कहे छे. (आहार के०) आहारक शरीर, अने आहारक अंगोपांग, ए आहारकद्विकनी जघन्यस्थिति अंतःकोडाकोडी अथवा अंतर मुहूर्त्त प्रमाण अने (जिण के०) जिननाम कर्मनी जघन्य स्थिति अंतःकोटीकोटी अथवा दश सहस्र वर्ष प्रमाण तेना बंधक क्षपकश्रेणीयें चढतां (मपुव्वो के०) अपूर्वकरण नामा आठमुं गुणगाणुं तेना छठा भागने चरमबंधें वर्त्ततां एवा मनुष्य होय, जे भणी ए त्रण प्रकृतिना बंधकमांहे एहिज अतिविशुद्धता छे एथी अधिक विशुद्धि बीजे स्थानकें नथी अने लघु स्थिति पण त्रण आयु विना शेष एकशो सत्तर प्रकृतिनी मननी विशुद्धियेंज होय छे.

(नियट्टिसंजलणपुरिसलहू के०) अनिवृत्ति करणनामा नवमा गुणस्थानकें

क्षपकश्रेणीयें चढतां आप आपणा बंध व्यवछेदने चरम समयें पुरुषवेदनो आठ वर्षनो, संज्वलना क्रोधनो बे मासनो, संज्वलनमाननो एक मासनो, संज्वलन मायानो अर्द्धमासनो, संज्वलन लोजनो अंतर मुहूर्त्तनो, जघन्य स्थितिबंध अनुक्रमें पहेला, बीजा, त्रीजा, चोथा अने पांचमा जागने प्रांतें बांधे. ए पांच प्रकृतिना बंधस्थानकमांहे एहिज अति विशुद्धि छे जो पण उपशमश्रेणीयें नवमा गुणस्थानकें पांचमा जागने प्रांतें स्वस्वबंध व्यवछेद संजवे तथापि ते क्षपकथी अति विशुद्धि नहीं तेथी ते न लीधा. ए आठ प्रकृतिना जघन्य स्थितिबंध स्वामी कह्या ॥ ४४॥

साय जसु च्चा वरणा, विग्घं सुहुमो विउवि छ असन्नि ॥
सन्नीवि आउ बायर, पज्जे गिंदीउ सेसाणं ॥ ४५ ॥

अर्थ-(साय के०) शातावेदनीय, (जसुच्चावरणा के०) यशःकीर्त्तिनाम, उच्चैर्गोत्र, तथा आवरण एटले पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण, एवं बार तथा (विग्घं के०) पांच अंतराय, ए सत्तर प्रकृतिनो जघन्यस्थितिबंध स्वामी (सुहुमो के०) सूक्ष्मसंपरायनामा दशमा गुणस्थानकना चरम समयवर्त्ति जीव होय जे जणी ए सत्तर प्रकृतिना बंधमांहे एहिज विशुद्धि छे जो पण शातावेदनीयनो बंध एथी विशुद्ध बारमे गुणगणे छे पण ते एक सामायिक योगप्रत्ययीउ स्थितिबंधछे पण कषाय प्रत्ययीउ स्थितिबंध नथी, तेथी ते विवद्यो नथी. ए पच्चीश प्रकृति थइ.

(विउविछ के०) वैक्रिय शरीर, वैक्रिय अंगोपांग, देवगति, देवानुपूर्वी, नरकगति अने नरकानुपूर्वी, ए वैक्रियषट्क, ए छ प्रकृतिनो जघन्य स्थितिबंध स्वामी (असन्नि के०) असंज्ञी पंचेंद्रिय तिर्यंच होय. केम के एकेंद्रिय अने विकलेंद्रियने तो देव तथा नरकगति मांहे अवतरवुं नथी, तेथी तेने तत्प्रायोग्य ए छ प्रकृतिनो बंध न होय अने सन्निआने तो उत्कृष्ट स्थितिबंध वीश कोडाकोडी सागरोपमनो होय तेमज सन्नीआने ए छ प्रकृतिनो जघन्य स्थितिबंध पण अंतःकोडाकोडी सागरोपमनो होय, तेथी ते अहींआ न लीधा, केम के ए छ प्रकृति, नाम कर्मनी छे. ते जणी मिथ्यात्व साथें जाग देतां सागरोपमना सातइआ बे जाग आवे, तेनो हजार गुणो असन्निआ पंचेंद्रियनो बंध छे ते जणी वैक्रियद्विक, नरकद्विक, ए चार प्रकृतिनो बंध तो सातइआ बे हजार जागना बशें ने पच्चाशी सागरोपम अने उपर सातइआ पांच जाग जाणवा तथा देवद्विकना सातइआ हजार जागना एकशो बेंतालीश सागरोपम उपर सातइआ छ जाग ते वली पल्योपम

ने असंख्यातमे नागें हीन एटले ए प्रकृतिनो असन्निआ पंचेंद्रिय तिर्यंच सर्व पर्याप्तियें करी पर्याप्ताने जघन्य स्थितिबंध स्वामीत्वपणुं होय.

(सन्नीवि के०) संज्ञी पंचेंद्रिय गर्नज, तिर्यंच अने मनुष्यने तथा अपिश ब्दथकी असंज्ञी पण लेवा ते माटें संज्ञी अथवा असंज्ञी ए (आउ के०) चा रे प्रकारनुं जघन्य स्थितिक आयु बांधें. ते मध्यें एक मनुष्यायु, बीजुं तिर्यंचायु, ए बे आयुना जघन्य स्थितिबंध स्वामी एकेंद्रियादिकथी मांमीने पंचेंद्रिय पर्यंत सर्व जीव होय अने चारे आयुना जघन्य स्थितिबंध स्वामी सन्निआ अने अ सन्निआ ए बे होय. एवं पांत्रीश प्रकृति थइ.

(सेसाणं के०) तेथी शेष रही जे निज्ञपंचक, कषाय बार, स्त्रीवेद, नपुं सकवेद, हास्यषट्क, मिथ्यात्व मोहनीय, मनुष्यद्विक, तिर्यंचद्विक, जाति पंच क, औदारिकद्विक, तैजस, कार्मण, आतप, उद्योत, उपघात, अशातावेदनीय, अ गुरुलघु, निर्माण, संस्थानछक्क, संघयणछक, वर्णचतुष्क, त्रसनवक, स्थावरदश क, पराघात, उश्वास,खगतिद्विक,नीचैर्गोत्र, ए पच्चाशी प्रकृतिनो जघन्य स्थितिबंध स्वामी (बायरपज्जेगिंदीउ के०) लब्धिपर्याप्तो बादर एकेंद्रियपर्याप्तो स्वस्व प्रायोग्य विशुद्धिस्थानकें वर्त्ततो मिथ्यात्वी जीव होय, जे नणी दशमा तथा नवमा गुणस्थान क वर्त्ति साधु पण जघन्यबंधनो अधिकारी होयछे परंतु तेने ए पच्चाशी प्रकृतिनो बंध नथी तेथी ते बीजी प्रकृतिना अधिकारी छे तेथी असंख्यातगुणो बादर पर्या प्ता एकेंद्रियने जघन्य बंध स्वामीत्व जाणवो. ए तथाविध विशुद्धि माटें बांधे अने अनेरा एकेंद्रिय तो तेवी विशुद्धिथी रहित छे माटें अधिकी बांधे, अने विकलेंद्रि य तथा पंचेंद्रिय तो स्वन्नावेंज अधिकी बांधे ते माटें ते न लेवा. एथी बीजा स र्वबंध अधिक छे एम जघन्यस्थितिबंध स्वामी कह्या ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ४५ ॥

हवे उत्कृष्टादि स्थिति बंधने विषेज चार नांगा स्थितिबंधना कहे छे.

उक्कोस जह सीयर, नंगासाइ अणाइ धुव अधुवा ॥
चउहा सग अजहन्ना, सेसतिगे आउ चउसु डुहा ॥ ४६ ॥

अर्थ-(उक्कोसजहसीयरनंगा के०) एक उत्कृष्ट स्थितिबंध बीजो जघन्यस्थि तिबंध, ए बे थकी इतर एटले बीजा विरोधिनांगा बे कहे छे. एक अनुत्कृष्ट बीजो अजघन्य स्थितिबंध, एवं चार नंग थया. ए चार मांहें सर्व स्थितिबंध संग्रह्या ति हां जे सर्व प्रकृतिनो आपआपणा स्थितिबंधमांहे अधिक स्थितिबंध ते उत्कृष्ट

स्थितिबंध जाणवो. जेम ज्ञानावरणीय कर्मनो त्रीश कोडाकोडी सागरोपमनो संपूर्ण बंध, ते उत्कृष्टस्थितिबंध कहीयें अने ते थकी एक समय हीन, बे समय हीन करतां करतां यावत् अंतर मुहूर्त्त स्थितिलगें जेटला स्थितिबंधनां स्थानक बंधाय, ते सर्व अनुत्कृष्ट स्थितिबंधनां स्थानक जाणवां. ते स्थानक असंख्यातां होय एटले एक उत्कृष्ट थकी भिन्न ते सर्व अनुत्कृष्ट स्थितिबंधनां स्थानक जाणवां एम ए बे बंधमांहे सर्व स्थितिबंधनां स्थानक संग्रह्यां तथा जे स्थितिबंध स्थानकथी ऊंचुं बीजुं कोइ स्थितिबंधनुं स्थानक न होय ते जघन्य स्थितिबंध स्थानक जाणवुं अने तेथी समयाधिक समयाधिक स्थानक लेतां यावत् उत्कृष्ट स्थिति पर्यंत जे असंख्यातां स्थानक थाय. ते सर्व अजघन्य स्थितिबंधनां स्थानक जाणवां. एम ए बे बंधमांहे पण सर्व स्थिति बंधनां स्थानक संग्रह्यां, ए रीतें जेवारें उत्कृष्ट स्थिति भिन्न विवक्षीयें, तेवारें तेथी बीजां सर्व अनुत्कृष्ट बंध स्थानक होय अने जेवारें जघन्य स्थितिबंध एक भिन्न लेखवीयें तेवारें तेथी बीजा सर्व अजघन्य स्थितिबंधनां स्थानक होय. ए रीतें ए चार बंध कह्या.

हवे तिहां वली सादि अनादि प्रकारें चार भांगा कहे छे. जे बंधव्यवच्छेद थया पछी फरी बंधाय, ते प्रथम (साइ के०) सादिबंध अने जे बंधना प्रवाहनी आदि न पामीयें, ते बीजो (अणाइ के०) अनादि बंध अने जे बंधनो प्रवाह केवारें पण विछेद नहीं पामशे, ते त्रीजो (धुव के०) ध्रुवबंध एटले अनंत ए अभव्यनी अपेक्षायें जाणवो तथा जे प्रकृतिनो बंध प्रवाह विछेद पामशे ते (अधुवा के०) अध्रुव एटले सांत ते भव्यनी अपेक्षायें जाणवो. एम ए चार भांगा ते जघन्य अजघन्यादिक स्थितिबंधने विषे विचारे छे.

(चउहासगअजहन्ना के०) त्यां एक आयु विना बीजा सात कर्मना अजघन्य स्थितिबंध चार भांगे होय, ते कहे छे. एक मोहनीय कर्मनुं जघन्य नवमा गुणगणानें चरम समयें होय, तथा ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय, नाम कर्म, गोत्रकर्म, अने अंतराय, ए छ कर्मनो जघन्यबंध दशमा गुणगणाने छेहले समयें होय, माटें ते स्थानक जे जीवें लह्युं नथी तेने सघला अजघन्य स्थितिबंध जाणवा जे भणी तेणे जघन्यस्थितिबंध लह्यो नथी तेथी तेने अजघन्य अनादि भांगो पहेलो जाणवो. अने जे जीवें उपशम श्रेणीयें ते स्थानकें जघन्य स्थितिबंध करी अथवा अबंधक थइने पछी फरी अजघन्य स्थितिबंध करे ते सादि नामें बीजो भांगो जाणवो अने जे भव्य हशे ते अवश्य मोक्षें जाशे, तेवारें ते क्षपकश्रेणीयें

जघन्य बंध करशे, तिहां अजघन्य स्थितिबंधनुं सांतपणुं थशे ते सांत नामा त्रीजो नांगो जाणवो तथा अनव्य केवारें पण श्रेणी करशे नहीं ते माटें ते जघन्य स्थितिबंध करशेज नहीं तेथी तेने अजघन्य स्थितिबंध अनंत नामे चोथे नांगे जाणवो. एम सात कर्मनो अजघन्य स्थितिबंध, चार नेदें कह्यो.

तथा ए सात कर्मना अजघन्यबंधथी (सेसतिगे के०) शेष रह्या जे जघन्य. उत्कृष्ट अने अनुत्कृष्ट ए त्रण बंध तथा (आउचउसु के०) आयुःकर्मना चार बंध तिहां सादि अने सांत, ए (डुहा के०) बे बे नांगा होय, ते कहे ठे. ते मध्यें सात कर्मनो उत्कृष्ट बंध तो अति संक्लिष्ट मिथ्यादृष्टि संज्ञी पंचेंद्रिय पर्याप्तानें होय, ते उत्कृष्ट बंध सादि जाणवो. तथा ते उत्कृष्ट बंध तो बे समय लगें होय अने त्रीजे समयें ते उत्कृष्ट बंधथकी समयादिक हीन अनुत्कृष्ट बंध करे ते नणी उत्कृष्ट बंध सांत जाणवो अने वली अनुत्कृष्टबंधथकी समयादिक हीन बंध करतां अनुत्कृष्ट बंधनी सादि अने वली पण अनुत्कृष्ट बंध करे तथा अबंधक होय तेवारें अनुत्कृष्टबंधनुं सांतपणुं तथा जघन्यबंध एक समयमात्रनो ते नवमा, दशमा गुणगणाने प्रांत समयें होय, ते एक समय मात्र नणी सादि सांत जाणवो एम सात कर्मना त्रण स्थितिबंधें सादि अने सांत ए बे नांगा कह्या तथा आयुःकर्मनव मध्यें एकवार बंधाय, तेथी तेना उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य अने अजघन्य ए चारे स्थितिबंध सादि अने सांत, ए बे नांगे होय. केम के आयु बांधवा मांमे, तेवारें सादि अने अंतर मूहूर्त्तें बांधी रह्या पठी सांत ए बे नांगा होय ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ४६ ॥

एम मूल प्रकृतिना चार स्थितिबंधना सादि, बीजो अनादि, सांत अने अनंत ए चार नांगा विचारीने हवे ते चार नांगा उत्तर प्रकृतिने विषे विचारियें ठैयें.

चउ नेउ अजहन्नो, संजलणा वरण नवग विग्घाणं ॥
सेस तिगिसाइ अधुवो, तह चउहा सेस पयडीणं ॥ ४७ ॥

अर्थ— (संजलण के०) संज्वलनो क्रोध, संज्वलनो मान, संज्वलनी माया अने संज्वलनो लोन. ए चार कषायनो जघन्य स्थितिबंध, बे मास, एक मास, अर्द्धमास अने अंतरमुहूर्त्तरूप अनुक्रमें जाणवो. ते नवमा गुणगणे स्व स्वबंध विछेदने प्रथम समयें होय, तथा (आवरणनवगविग्घाणं के०) पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण, पांच अंतराय, ए चौद प्रकृतिनो जघन्यस्थितिबंध, अंतरमुहूर्त्त मान दशमा गुणगणाने. चरमबंधें होय ते विना बीजा सर्व स्थितिबंध अजघन्य जा

एवा. ए अढार प्रकृतिनो (चउन्नेअजहन्नो के०) अजघन्य स्थितिबंध चार नेदें होय, ते कहे बे. के जे जीवें नवमुं अने दशमुं गुणगणुं लह्युं नथी, तो तेणे जघन्य स्थितिबंध नथी कस्यो. तेने अजघन्य बंध अनादि जाणवो ए प्रथम नंग. तथा जेणे जघन्यबंध करी वली श्रेणीथी पडतां समयाधिक स्थितिबंध अजघन्य करे, तिहां सादि. ए बीजो नंग जाणवो. तथा जे नव्य हशे ते अवश्यश्रेणी करशे, तेवारें तेने अजघन्यस्थितिबंधनुं सांत पणुं थशे ए त्रीजो नंग जाणवो अने अनव्य जीव ए अढार प्रकृतिनो जघन्यस्थितिबंध केवारें पण नहीं करशे, तेथी तेने ए अढार प्रकृतिनो अजघन्य स्थितिबंध अनंत, ए चोथो नंग जाणवो. एम ए अढारं प्रकृतिनो अजघन्य स्थितिबंध चार नांगे होय.

(सेसतिगि के०) ए अढार प्रकृतिना शेष उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट अने जघन्य ए त्रण स्थितिबंध (साइअधुवो के०) सादि अने अध्रुव एटले सांत ए बे नांगे होय. जे नणी ए अढार प्रकृतिमां चार प्रकृतिनो उत्कृष्ट स्थितिबंध चालीश कोडाकोडी सागरोपमनो बे अने चौद प्रकृतिनो त्रीश कोडाकोडी सागरोपमनो उत्कृष्ट बंधबे. ए सर्व संक्लिष्ट पंचेंद्रिय पर्याप्तो जीव बांधे. ए एक समय बे समयलगें बांधे वलतो समयादिक हीन स्थिति बांधे, ते अनुत्कृष्ट जाणवो. वली अनुत्कृष्टथी उत्कृष्ट करे तेथी ए बे बंधें सादि अने सांत, ए बे नांगा जाणवा तथा जघन्यबंध पण एनो नवमे अने दशमे, गुणगणे एक समय मात्र होय ते नणी सादि सांत होय.

(तह के०) तेमज (सेसपयडीणं के०) ए अढार प्रकृतिथकी शेष रही जे एकशो ने बे प्रकृति तेना (चउहा के०) जघन्यादिक चार प्रकारना स्थितिबंध तेपण सादि अने सांत, ए बे नांगे चारे बंध होय तेमध्यें निद्रापंचक, प्रथम कषाय बार, मिथ्यात्व, नय, जुगुप्सा, तैजस, कार्मण, वर्णचतुष्क, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण, ए उगणत्रीश प्रकृतिनो जघन्यस्थितिबंध, स्वप्रायोग्यविशुद्धियें करी एकेंद्रिय पर्याप्तानें होय. ते वली कथंचित् हीनाध्यवसायें समयादिक अधिक अजघन्य बंध करे, वली विशुद्धियें जघन्य बंध करे तेथी जघन्य अने अजघन्यपणे बेहु स्वस्व प्रकृतिना स्थितिबंध सादि अने सांत पणे जाणवा.

तथा एहिज उगणत्रीश प्रकृतिना उत्कृष्ट बंध संज्ञी पंचेंद्रियपर्याप्ता मिथ्यात्वीने संक्लिष्ट परिणामें होय ते बे समय लगें होय तेवार पढी अध्यवसाय परावर्त्तियें समयादिक हीन अनुत्कृष्ट बंध करे, एम उत्कृष्ट अने अनुत्कृष्ट बंध संक्लेश तथा विशुद्धिनी परावर्त्तियें होय तेथी सादि अने सांत ए बे नांगा होय.

अने ए उंगणत्रीश प्रकृतिथी शेष रही जे तहोंतेर अध्रुवबंधिनी प्रकृति तेनो बंध केवारेंक होय, अने केवारेंक न होय तेथी तेना उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य अने अजघन्य ए चारे स्थितिबंधें सादि अने सांत, ए बे नांगा होय. केम के जे वारें बंध होय तेवारें सादि अने जेवारें बंध न होय तेवारें सांत. एम बे नांगा होय एम उत्तर प्रकृतिना चार स्थितिबंधने विषे सादि, अनाद्यादि नांगा विचास्या ॥४७॥

हवे गुणगणा आश्रयीने उत्कृष्ट तथा जघन्य स्थितिबंध विचारे ले.

साणाइ अपुवंतो, अयरंतो कोडि कोडिउ नहिगो ॥
बंधो नहु हीणो नय, मिछे नवियर सन्निंमि ॥ ४८ ॥

अर्थ– प्रथम निन्नग्रंथिने अंतःकोटाकोटी सागरोपमथी अधिको स्थितिबंध न होय, ते कहे ले. (साणाइअपुवंतो के०) सास्वादन गुणगणाथी मांमीने अपूर्व करणनामा आठमा गुणगणा सुधी (अयरंतोकोडिकोडिउ के०) अंतःकोडाकोडी सागरोपम प्रमाण स्थितिबंध संज्ञी पंचेंड्रिय पर्याप्ताने होय पण तेथकी (नहिगोबंधो के०) अधिक बंध न होय तेमज अंतःकोडाकोडी सागरोपमथी हीन एटले उंगे बंध पण (नहु के०) न होय. अहींआं कोइ पूछे जे सास्वादनथी आठमा गुणगणा सुधी जो बंधनुं हीनाधिकपणुं नथी, तो जिहां स्थितिबंधनुं अल्प बहुत्व कहेशे, तिहां साधुनी उत्कृष्ट स्थितिबंधथी देशविरतिनो जघन्य स्थितिबंध संख्यात गुणो होय ते थकी देश विरतिनो उत्कृष्ट स्थितिबंध संख्यात गुणो होय ते थकी अविरति सम्यक्दृष्टि पर्याप्ता अपर्याप्ताना जघन्य उत्कृष्ट स्थितिबंध असंख्यात गुणा होय. तो ए अल्प बहुत्वपणु हीनाधिकने अनावें केम घटे ? अहींआं गुरु उत्तर कहे ले के, जेम अंतर मुहूर्त्त नव समयथी मांमीने एक समय ऊण मुहूर्त्त पर्यंत होय ले, तेना असंख्याता नेद थाय. तेम साधुना उत्कृष्ट स्थितिबंधथी लइने अपर्याप्त संज्ञी पंचेंड्रियना उत्कृष्ट स्थितिबंध पर्यंत समयाधिक समयाधिक करतां वचलां असंख्यातां स्थितिबंध स्थानक जे होय, ते सर्वे अंतःकोडाकोडी प्रमाण स्थितिबंध कहीयें एने अंतःकोडाकोडी सागर एवी संज्ञा कहीयें. एम असंख्याता नेद अंतःकोडाकोडीमां होय, तेथी संख्यातगुणा तथा असंख्यातगुणा कहेतां थकां कांइ विघटे नहीं. एम ममरुक मणिन्यायें करी ले. (हिणोनयमिछे के०) तेमज हीनो बंध एटले अंतःकोडाकोडी सागरोपमथी उंगे बंध मिथ्यात्वीनें पण न होय.

तथा सिद्धांतने मतें जेणे ग्रंथिनेद कीधो होय अने ते वली सम्यक्त्व व

मीने मिथ्यात्वें जाय तोपण अंतःकोडाकोडी सागरोपमथी स्थितिबंध वोले नहीं तेथी तेने अपूर्व बंधक कहीयें अने कर्मग्रंथनें मतें ग्रंथिन्नेद कह्या पढी पण मिथ्यात्वें सीत्तेर कोडाकोडी सागरोपमनो उत्कृष्ट स्थितिबंध करे पण एटलुं विशेष जे ते स्थितिबंध, तीव्ररसें न बांधें ए (नवियरसन्निंमि के०) नव्य संज्ञी पंचेंडियनी अपेक्षायें लेवुं. बीजुं तो एकेंडियने मिथ्यात्वगुणगणे मिथ्यात्वमोहनीयनुं एक सागरोपम, बेंडियने पच्चीश सागरोपम, तेंडियने पच्चाश सागरोपम, चौरिंडियने शो सागरोपम, अने असंज्ञीया पंचेंडियने हजार सागरोपमनी स्थिति ठे, एम सास्वादने पण अपर्याप्ता एकेंडियादिकनो उत्कृष्टस्थितिबंध सरखो लेवो. ए नव्य, अनव्य, सन्निआ पंचेंडियने स्थितिबंध कह्यो ॥ ४७ ॥

हवे एकेंडियादिकने विषे हीनाधिक स्थितिबंधनुं अल्प बहुत्व कहे ठे.

जइ लहु बंधो बायर, पज्ज असंख गुण सुहुम पज्जहिगो ॥
एसि अपज्जाण लहू, सुहुमे अरअपज्ज पज्ज गुरु ॥ ४ए ॥

अर्थ-(जइ के०) (१) यति एटले साधुनो (जहुबंधो के०) सर्वथकी हीन स्थितिबंध सूक्ष्मसंपराय नामा दशमे गुणगणे वर्त्तता साधुनो होय, जे नणी ज्ञानावरणादिक ठ कर्मनो विशुद्धिपणे अंतर मुहूर्त्त प्रमाण जघन्य स्थितिबंध चरम समयें होय, तेथी हीणो स्थितिबंध कोइ जीवनें नथी. जो पण आगले गुणगणे एक समयिक बंध ठे, तो पण अकषायी नणी तिहां स्थितिबंध विवक्ष्यो नहीं.

(२) साधुनो जघन्य स्थितिबंध अंतर मुहूर्त्त प्रमाण अने बादर पर्याप्ता एकेंडियनो जघन्य स्थितिबंध, सागरोपमनो सातइत्त एक नाग पल्योपमने असंख्यातमे नागें होय ते मध्यें तो असंख्याता अंतर मुहूर्त्त थाय, तेथी साधुना जघन्य स्थितिबंधथी (बायरपज्जअसंखगुण के०) बादर एकेंडिय पर्याप्तानो जघन्य स्थितिबंध पण असंख्यात गुणो जाणवो.

(३) बादर पर्याप्ता एकेंडियथकी सूक्ष्म पर्याप्ता एकेंडियनां योगस्थानक मंद ठे, तेथी अध्यवसाय स्थानक पण थोडां होय. तेथी स्थिति स्थानक पण बादरनी अपेक्षायें थोडां होय तेणे जघन्यस्थिति बादरनी जघन्य स्थितिथकी उत्कृष्टी उंची होय तो स्थितिविशेष पण उंचा होय आतरुं थोडुं ते नणी बादर पर्याप्ता एकेंडियना जघन्य स्थितिबंध थकी (सुहुमपज्जहिगो के०) सूक्ष्म एकेंडिय पर्याप्ताना जघन्य स्थितिबंध विशेषाधिक कह्या. एटले कांइक जाजेरा जाणवा.

४ (एगिअपज्जाणलहू के०) तेथकी ए बन्ने अपर्याप्तानो लघु एटले जघन्य स्थितिबंध आवी रीतें होय, ते कहे छे. सूक्ष्म एकेंद्रिय पर्याप्ताना जघन्य योगथी बादर एकेंद्रिय अपर्याप्ताना योग स्थानक थोडां होय तेथी अध्यवसाय स्थानक तथा स्थितिस्थानक पण थोडां होय केम के जघन्य अने उत्कृष्ट स्थितिनी व चालें आंतरुं थोडुं तेथी सूक्ष्म एकेंद्रिय पर्याप्ताना, जघन्य स्थितिबंधथकी बादर एकेंद्रिय अपर्याप्तानो जघन्य स्थितिबंध विशेषाधिक जाणवो. (५) तेथकी सूक्ष्म एकेंद्रिय अपर्याप्तानो जघन्य स्थितिबंध विशेषाधिक होय जे नणी बादर अपर्याप्तानी स्थितिविशेषथी सूक्ष्म अपर्याप्तानी स्थिति विशेष थोडी छे. (६) (सुहुमेअरअपज्ज के०)सूक्ष्म अपर्याप्ताना जघन्य स्थितिबंधथकी उत्कृष्ट स्थितिबंध विशेषाधिक होय. (७) ते थकी इतर ते बादरअपर्याप्तानो उत्कृष्ट स्थितिबंध विशेषाधिक जाणवो. जेनणी बादर पर्याप्तानी जघन्य स्थिति सागरोपमनो सातइउ एक नाग पल्योपमने असंख्यातमे नागें ऊणो होय ते थकी समयाधिक समयाधिक पल्योपमना असंख्यातमा नागना असंख्य समय नाग प्रमाण स्थितिविशेष, ते सर्वस्तोक तेहने गर्भे सूक्ष्म अपर्याप्तानो स्थिति विशेष तेहने गर्भे बादर अपर्याप्तानो स्थिति विशेष तेने गर्भे सूक्ष्म पर्याप्तानो स्थिति विशेष तेसर्व स्तोक ते नणी सूक्ष्म अपर्याप्ताना उत्कृष्ट स्थितिबंधथकी बादर अपर्याप्तानोउत्कृष्ट स्थितिबंध विशेषाधिक. (८) तेथकी (पज्जगुरु के०) सूक्ष्म पर्याप्तानो उत्कृष्ट स्थितिबंध विशेषाधिक होय. (९) तेथकी बादर पर्याप्तानो उत्कृष्ट स्थितिबंध विशेषाधिक. ॥४९॥

लहु बिअ पज्ज अपज्जो, अपज्जि अर बिअ गुरु अहिगो एवं ॥
ति चउ असन्निसु नवरं, संखगुणा बिअ अमणपज्जे ॥ ५० ॥

अर्थ—(१०) बादर एकेंद्रिय पर्याप्ताने मिथ्यात्व मोहनीयनो उत्कृष्ट स्थितिबंध सागरोपम प्रमाण छे ते थकी (बिअ पज्ज के०) बेंद्रिय पर्याप्तानो (लहु के०) जघन्य स्थितिबंध पुरुष वेदादिकनो पण सातइआ पच्चीश नाग एटले त्रण सागरोपम उपर सातइआ चार नाग पल्योपमने असंख्यातमे नागें ऊणा होय ते माटें संख्यात गुणो जाणवो. जे नणी एकथी त्रिगुणो जाजेरो थयो.

(११) बेंद्रिय पर्याप्ताना जघन्य स्थितिबंध थकी (अपज्जो के०) बेंद्रिय अपर्याप्तानो जघन्य स्थितिबंध विशेषाधिक होय. जे नणी बेंद्रिय पर्याप्ताना जघन्य स्थितिबंध विशेष पल्योपमना संख्यातनागना समय जेटला असंख्याता स्थिति विशेष तेने

गर्ब्भ बेंड्रिय अपर्याप्ताना स्थिति विशेष स्तोक होय तेणे जघन्य स्थिति उत्कृष्ट स्थितिनो बंध आंतरुं स्तोक होय, एटले अगीआर स्थानक थयां.

१२ (अपज्जिबिअगुरुअहिगो के०) ते थकी बेंड्रिय अपर्याप्तानो उत्कृष्ट स्थितिबंध विशेषाधिक होय. १३ ते थकी (इयर के०) इतर एटले बीजा जे बेंड्रिय पर्याप्ता जीव छे तेनो उत्कृष्ट स्थितिबंध विशेषाधिक एटले कांइ एक जाजेरुं होय.

१४ (एवंतिचउअसन्निसु के०) एम तेंड्रिय, चौरिंड्रिय अने असंज्ञी पंचेंड्रिय ने विषे पण चार चार बोल कहेवा परंतु एमां (नवरं के०) एटलुं विशेष छे जे (बिअ के०) बेंड्रिय पर्याप्ताने विषे अने (अमणपज्जे के०) असंज्ञी पंचेंड्रिय पर्याप्ताने विषे पहेले बोलें (संखगुणो के०) संख्यातगुणो बंध कहेवो. एटले बेंड्रिय पर्याप्तानो उत्कृष्ट स्थितिबंध पच्चीश सागरोपम प्रमाण छे तेथकी तेंड्रिय पर्याप्तानो जघन्य स्थितिबंध विशेषाधिक होय जे जणी बेइंड्रियथी बमणो बंध तेंड्रियने छे अने जो त्रिगुणो होय तो संख्यात गुणोकहीयें. परंतु तेथी हीन छे, माटें विशेषाधिक कह्युं अहींआं जो पण तेंड्रियने पुरुष वेदादिकनो जघन्य स्थितिबंध सागरोपमना सातइआ पच्चाश जाग पल्योपमने असंख्यातमे जागें कणा छे ते बंध बेंड्रियना मिथ्यात्व मोहनीयना बंधथी हीन पण होय,तथापि ते अहींआं विवद्यो नहीं परंतु अहींआं तो स्वस्व प्रकृतिनी अपेक्षायें उत्कृष्टी तथा जघन्य स्थिति लेवी एटले प्रत्येक एकेकी प्रकृतिनी स्थितिमां एक बीजा जीवोना बंधने विषे उत्कृष्टी तथा जघन्य स्थिति लेवी तेणे करीने स्थिति बंधनुं अल्पबहुत्व जाणवुं. एवं चौद स्थानक कह्यां.

१५ तेंड्रिय पर्याप्ताना जघन्य स्थितिबंधथकी तेंड्रिय अपर्याप्तानो जघन्य स्थितिबंध विशेषाधिक होय जे जणी तेंड्रियना जघन्य उत्कृष्ट स्थिति विशेषने गर्ब्भ पर्याप्ताना सर्व स्थितिविशेष छे, १६ तेथकी तेंड्रिय अपर्याप्तानो उत्कृष्ट स्थितिबंध विशेपाधिक. १७ तेथकी वली तेंड्रिय पर्याप्तानो उत्कृष्टस्थितिबंध विशेषाधिक छे.

१८ ते थकी चौरिंड्रिय पर्याप्तानो जघन्यबंध विशेषाधिक बमणा छे. ते जणी. १९ ते थकी चौरिंड्रिय अपर्याप्तानो जघन्य स्थितिबंध कांइएक अधिक छे.

२० ते थकी चौरिंड्रिय अपर्याप्तानो उत्कृष्टबंध विशेषाधिक. २१ ते थकी चौरिंड्रिय पर्याप्तानो उत्कृष्ट स्थितिबंध विशेषाधिक. अहींआं विशेषाधिकने स्थानकें कोइ एक स्थलें संख्यात जागाधिक लेवा. कोइ एक स्थलें असंख्याता जागाधिक लेवा. २२ तेथकी चौरिंड्रिय पर्याप्तानो उत्कृष्ट स्थितिबंध एकशो सागरोपमनो विशेषाधिक छे. ते थकी (असन्नि के०) असन्निआ पंचेंड्रिय पर्याप्तानो जघन्य स्थितिबंध संख्यात गुणो

जे जणी चौरिंद्रियथी एनो दश गुणो बंध कह्यो बे तेमाटें. २३ ते थकी असन्नि
आ पंचेंद्रिय अपर्याप्तानो जघन्य स्थितिबंध, विशेषाधिक एटले संख्यात जाग अ
धिक बे जे जणी हजार सागरोपमनी स्थितिना पण संख्याता पल्योपम होय, ते
पण वली पल्योपमने संख्यातमे जागें कणो जघन्य बंध बे. तो पण संख्या
तमे जागें अधिक होय. २४ ते थकी वली असन्निआ अपर्याप्तानो उत्कृष्ट स्थि
तिबंध विशेषाधिक बे एटले संख्यात जागाधिक बे. २५ ते थकी असन्निआ पंचें
द्रिय पर्याप्तानो उत्कृष्ट स्थितिबंध संख्यात जागाधिक होय ॥ इति समुच्चयार्थः ॥५०॥

तो जइ जिठो बंधो, संखगुणो देस विरय हस्सिअरो ॥
सम्म चउ सन्नि चउरो, ठिइ बंधाऽणु कम संखगुणा ॥ ५१ ॥

अर्थ—२६ (तो के०) ते असन्नीआ पर्याप्ताना उत्कृष्ट स्थितिबंधथकी (जइ के०) यति एटले प्रमत्तसंयत एटले साधु स्वप्रायोग्य संक्लेश परिणामें वर्त्ततो तेनो (जिठोबंधो के०) उत्कृष्ट स्थितिबंध (संखगुणो के०) संख्यातगुणो जाणवो. जे जणी असन्नीआने ज्ञानावरणनो स्थितिबंध, चारशें अठावीश सागरोपम उ पर सातीआ चार जाग प्रमाण बे, अने प्रमत्तने अंतःकोडाकोडी सागरोपम प्र माण बे ते माटे संख्यातगुणो अधिको स्थितिबंध होय. २७ ते साधुना उत्कृष्ट स्थितिबंधथकी (देसविरय के०) देशविरतिनो (हस्स के०) ह्रस्व एटले जघन्य स्थितिबंध संख्यातगुणो जाणवो. २८ (इअरो के०) तेथकी इतर एटले देशविरतिनो उत्कृष्ट स्थितिबंध संख्यातगुणो जाणवो. देशविरति जीवने पर्याप्तावस्थायेंज बंध होय. पण अपर्याप्तावस्थायें देशविरतिपणुं न होय, तेमाटें अपर्याप्तावस्थानो बंध न कह्यो. २९ तेथकी (सम्म के०) अविरति सम्यक्दृष्टि पर्याप्तानो जघन्य स्थितिबंध, संख्यातगुणो. ३० तेथकी अविरति अपर्याप्तानो जघन्य स्थितिबंध सं ख्यातगुणो. ३१ तेथकी अविरति अपर्याप्तानो उत्कृष्ट स्थितिबंध संख्यातगुणो. ३२ तेथकी अविरति पर्याप्तानो उत्कृष्ट स्थितिबंध संख्यातगुणो केम के सम्यक्दृष्टिपणुं अपर्याप्तावस्थायें पण होय बे, तेथी एना (चउ के०) चार बंध कह्या. तेमज (सन्निचउरो के०) सन्नीआ पंचेंद्रिय मिथ्यात्वीना पण चार बंध जाणवा, एटले तेथकी ३३ सन्नीआ पंचेंद्रिय पर्याप्ता मिथ्यात्वीनो जघन्य स्थितिबंध संख्यातगुणो. ३४ तेथकी सन्नीआ पंचेंद्रिय अपर्याप्तानो जघन्य स्थितिबंध सख्यातगुणो. ३५ ते थकी सन्नीआ पंचेंद्रिय अपर्याप्तानो उत्कृष्टस्थितिबंध सख्यातगुणो. ३६ तेथकी स

न्निआ पंचेंद्रिय पर्याप्ता मिथ्यात्वीनो उत्कृष्टस्थितिबंध, संख्यातगुणो (ठिइबंधा ऽणुकमसंखगुणा के०) इहां साधुना उत्कृष्ट स्थितिबंध थकी लेइने नव बंधना स्थानकपर्यंत अनुक्रमे संख्यातगुणा करतां पण कोडाकोडी सागरोपममांहे होय. तेथी ए सर्व बंध अंतःकोडाकोडीना कहीयें. ए परिजापा जाणवी.

एक सन्निआ पर्याप्ता मिथ्यात्वीनो उत्कृष्ट स्थितिबंध अंतःकोडाकोडी सागरोपमथी अधिक होय. एम साधुना उत्कृष्ट स्थितिबंधथी लेइ सन्निआ पंचेंद्रिय पर्याप्ता मिथ्यात्वीना स्थितिबंध लगें सघला स्थितिबंध संख्यात गुणा लेवा. ए स्थितिबंधनां अल्पबहुत्व कहेवे करी उत्कृष्ट तथा जघन्य स्थितिबंधना स्वामी पण कह्या.॥५१॥

हवे कोइ एक कहेशे के स्थितिबंध अने रसबंध तो कषाय प्रत्ययिआ ढे, तेथी शुन्न प्रकृतिनो रस, कषायनी मंदतायें उत्कृष्ट होय अने कषायनी तीव्रतायें जघन्य होय तथा अशुन्न प्रकृतिनो रस कषायनी तीव्रतायें उत्कृष्ट होय अने कषायनी मंदतायें जघन्य होय, तेवीज रीतें शुन्न प्रकृतिनी स्थिति पण कषायनीमं दतायें उत्कृष्ट होय अने कषायनी तीव्रतायें मंद होय तथा अशुन्न प्रकृतिनी स्थिति पण कषायनी मंदतायें उत्कृष्टी होय अने कषायनी तीव्रतायें मंद होय. एम न कहेवुं जोइयें, माटें अहींआं जे विशेष फेर ढे, ते कहे ढे ॥

सवाणवि जिठठिइ, असुहा जं साइ संकिलेसेणं ॥
इअरा विसोहिउ पुण, मुत्तुं नर अमर तिरि आउ ॥ ५२ ॥

अर्थ-(सवाणविजिठठिइ के०) सर्व कर्मप्रकृतिनी उत्कृष्टी स्थिति स्वस्वबंध प्रायोग्य संक्लेश परिणामें बंधाय,ते नणी (असुहा के०) अशुन्न एटले मेलें परिणामें बंधाय. (जंसाइसंकिलेसेणं के०) जे कारणें उत्कृष्टस्थिति अतिसंक्लेशें तीव्रकषायोदयें बंधाय ढे तेमाटें शुन्न तथा अशुन्न प्रकृतिनी जे उत्कृष्टस्थिति बंधाय. ते सर्व अशुन्न जाणवी. जे नणी स्थितिबंध, सर्व प्रकृतिनो संक्लिशनी वृद्धियें बंधाय ढे अने जेम जेम विशुद्धि होय, तेम तेम स्थितिबंध हीन थातो जाय, पण रसबंधनी पेरें स्थितिबंध शुनाशुन्न न लेवो जे उत्कृष्ट स्थितिबंध ढे ते संक्लेशनुं कार्य ढे, ते माटें एकशो ने सत्तर प्रकृतिनो उत्कृष्ट स्थितिबंध, पोतपोताना बंधाध्यवसायस्थानकमध्यें मलीन अध्यवसाय स्थानकें बंधाय, तेथी ए एकशोने सत्तर प्रकृतिनो उत्कृष्ट स्थितिबंध, ते अशुन्न कहीयें अने ए उत्कृष्टी स्थितिथकी (इअरा के०) इतर एटले बीजो जे जघन्य स्थितिबंध ढे ते (विसोहिउ के०) विशुद्धिनुं

कार्य डे, एटले जेम जेम उज्ज्वल परिणामनी वृद्धि थाय, तेम तेम हीन हीन स्थिति बंधाय, तेथी पोताना बंधस्थानक मांहे जे अत्यंत विशुद्ध बंधाध्यवसायस्थानक होय. तिहां जघन्य स्थितिबंध होय तेथी एने शुज कहीयें. (पुण के०) वली (नर के०) मनुष्यायु तथा (अमर के०) देवायु अने (तिरिआउ के०) तिर्यंचायु, ए त्रण आयुने (मुत्तं के०) मूकीने शेष ए एकशो सत्तर प्रकृतिनी अपेक्षायें ए लेवुं.

हवे शेष त्रण आयुनी स्थितिबंधनो विशेष कहे डे. मनुष्यायु, देवायु अने तिर्यगायु, ए त्रण आयुनी उत्कृष्ट स्थिति आपणा बंधाध्यवसाय स्थानकमध्यें विशुद्धाध्यवसायें बंधाय अने मलीन परिणामें जघन्य स्थिति बंधाय ए विशेष जाणवुं ॥ ५२ ॥

हवे बंधनुं विषमतापणुं योगनी विषमतापणे थाय डे. तेथी योगस्थानक निरूपवाने योगनो अर्थ कहेवाने, अंतर गाथा लखीयें डैयें. " परिणामा लंबण गहु,ण साहणं तेण लद्धनामतिगं ॥ कडाइसान्नुन्नसा,प्पवे सवि समीकयपएसं ॥१॥ " हवे ए गाथानो अर्थ कहे डे. जे वीर्यविशेषें करी औदारिकादिक पुजल ग्रहण करे तथा तेने श्वासोब्वासादिकपणे परिणमावीने निःसर्गे एटले स्वाजाविक हेतुक शक्ति विशेषनी सिद्धिने अर्थें अवलंबे, जेम कोइ एक आजारी माणस, नगरमां जमवा निमित्तें लाकडी जालीने उठे पढी जेवारें सामर्थ्य थाय, तेवारें लाकडीने मूकी आपे. तेम जीव पण जाषादिक पुजल अवलंबी तज्जन्य करणवीर्य थये थकें तेने मूकी आपे तेथी परिणाम अवलंबन ग्रहण हेतु जे वीर्य, तेने योग कहीयें. ते योगना मन, वचन अने कायाने नेदें करी त्रण नाम होय डे. तिहां योग, बल, वीर्य, उत्साह, शक्ति, चेष्टा करण ए सर्व एना पर्याय नाम जाणवां, अने ते जीवने वीर्यांतरायने क्षयोपशमें करी सर्व प्रदेशें सरखुं डे पण जे प्रदेश, कार्यने ढूकडा होय तिहां घणुं वीर्य जणाय अने बीजा प्रदेशें थोडुं जणाय जेम हाथे करी घडो उपाडतां हाथ मात्रना प्रदेश ढूकडा डे तिहां घणुं चलाचलपणुं होय अने खंजाने प्रदेशें तेथी थोडुं होय अने पादादिकने प्रदेशें तो वली घणुंज थोडुं होय तेथी वीर्यनुं विषम पणुं होय. संसारी जीवने वीर्यांतराय देश घातीने विचित्र क्षयोपशमें करीने अनेक जातनुं क्षायोपशमिक वीर्य, बद्मस्थनुं होयडे तेमध्यें मन चिंतना पूर्वक आहार विहारादिक जे करण व्यापार ते अनिसंधिज वीर्य कहीयें अने जे मन चिंतना विना केवल वचन अने कायाना व्यापार एकेंद्रियादिकने डे तथा पंचेंद्रियने पण त्रुक्त आहारनुं धरवुं धातु मल पणे परिणमाववुं.

ते अनजिसंधिज वीर्य कहीयें.तथा क्षायिक जावें जे करणवीर्य केवलीनुं ते पण बे जेदें बे. एक सलेश्य वीर्यते सयोगीनुं ग्रहण परिणमन अवलंबन रूप ते त्रण योगना जेदें त्रिविधें बे तथा बीजुं अयोगीनुं अलेश्य वीर्य जाणवुं. तथा बद्मस्थ नुं शुजलेश्या वंतने विशुद्धियें वीर्य वधे अने अशुज लेश्यावंतने संक्लेशें वीर्य वधे अन्यथा मंदता होय, ए रीतें योगनी उत्कृष्ट मंदता होय.

तिहां जघन्यवीर्य जे जीवनो प्रदेश तेवली केवलीना तीक्ष्ण बुद्धिरूप शस्त्रें करी बेदतां जे वीर्यांश निरंश होय नहीं एटले जे वीर्यांशनो अंश केवली पण कल्पी न शके तेवीर्यविजाग तथा जावाणु पण तेने कहीयें. तेवा लोकाकाशथी असंख्या त गुणा जे वीर्याणु, तेणे करी सहित जे प्रदेश, तेनो समुदाय एटले जीव प्रदेश नी श्रेणी,ते प्रथमवर्गणा. तेथी एक वीर्य विजागें अधिक एवी जे जीव प्रदेशनी श्रेणी ते बीजी वर्गणा. बे वीर्यविजागें अधिक वीर्य एवी जे जीव प्रदेशनी श्रेणी, ते त्रीजी वर्गणा. एम एकेक वीर्य विजागें अधिक वीर्यवंत जे जीव प्रदेशनी श्रेणी, ते घनीकृत लोकनी एक प्रादेशिक सूची श्रेणीने असंख्यातमे जागें जेटला आका श प्रदेश होय, तेटली वर्गणायें एक स्पर्द्धक होय ते प्रथम स्पर्द्धकनी उत्कृष्ट वी र्यांश वर्गणाथी एटले बेल्ली वर्गणाथी एक,बे अथवा संख्याते वीर्यविजागें अधिका कोइ जीव प्रदेश नथी परंतु असंख्य लोकाकाश प्रमाण वीर्यांशें अधिक जे जीव प्रदेशनी श्रेणी,ते बीजा स्पर्द्धकनी प्रथम वर्गणा जाणवी. वली तेथी एक एक वी र्य विजागें चढता चढता जीव प्रदेशनी श्रेणीनी वर्गणायें करी बीजो स्पर्द्धक थाय, तेथी वली असंख्यलोकाकाश प्रदेश जाग प्रमाण वीर्यांशें अधिक वीर्यवंत जीव प्रदेशनी श्रेणी ते त्रीजा स्पर्द्धकनी प्रथम वर्गणा. एणी परें श्रेणी प्रदेश असंख्येय जाग प्रमाण स्पर्द्धकें पहेलुं जघन्य योगस्थानक होय,ते थकी अंगुलना असंख्या तमा जागना आकाशप्रदेश प्रमाण स्पर्द्धकें वधतुं बीजुं योगस्थानक होय, तेथी वली तेटलेज स्पर्द्धकें वधतुं वली त्रीजुं योगस्थानक होय. एम अंगुलने असंख्या त जाग प्रदेश प्रमाण स्पर्द्धक वधतां वधतां एवा घनीकृत लोकनी सूची श्रेणीना असंख्यात जाग प्रदेश प्रमाण योग स्थानक गये थके, बेल्लुं जे योग स्थानक आवे, तेवारें प्रथम योग स्थानकथी बमणा स्पर्द्धक होय, तेथी वली तेटला योगस्था नक गये थके तेथी वली बमणा स्पर्द्धक होय. एम बमणा बमणा स्पर्द्धक हो य ते पण योगस्थानक सूक्ष्म अद्धापल्योपमने असंख्यातमे जागें जेटला समय होय तेटला बमणा स्पर्द्धक वालां पण योग स्थानक होय. प्रथम योग स्थानक

घणा अल्पवीर्य प्रदेशें होय बीजुं योग स्थानक तेथी थोडे अल्पवीर्य प्रदेशें होय. एम स्पर्द्धक बंधें. कोइ एक आचार्य कहे छे. जघन्य योग जीवथी जे वीर्याधिक जीव तेनुं बीजुं योगस्थानक, एम वीर्य वधतां वधतां योग स्थानक नीपजे ते मध्यें जघन्य योग स्थानकें जीव,चार समय सुधी रहे, मध्यम योगस्थानकें जीव, आठ समय सुधी रहे अने उत्कृष्ट योगस्थानकें जीव, बे समय सुधी रहे, इत्यादिक जघन्य मध्यम प्ररूपणा सर्व कर्म प्रकृतिथी जाणवी॥ इति

हवे योगस्थानकना स्वामी कहे छे.

सुहुम निगोआइ खण, प्पजोग बायरप विगल अमण मणा॥
अपज्ज लहु पढम इ गुरु, पजहस्सि अरो असंख गुणो॥ ५३॥

अर्थ–योग ते वीर्यस्थान व्यापार पराक्रम कहीयें. वीर्यांतरायना व्यापारथी उपनुं जे कायादिकनुं परिस्पंद ते योग कहीयें. (सुहुमनिगोआइखणप्पजोग के०) १ सूक्ष्म निगोदिआ, लब्धि अपर्याप्ताने आदिक्षणे एटले जव प्रथम समयें अल्प जघन्य योगते स्तोक. २ तेथकी (बायरप के०) बादर निगोदिउ लब्धि अपर्याप्तो तेने जव प्रथम समयें जे योग ते असंख्यात गुणो जाणवो. (३) तेथकी (विगल के०) बेंड्रिय, तेंड्रिय, अने चौरिंड्रिय एटले अनुक्रमें बेंड्रिय अपर्याप्ताने जव प्रथम समयें योग असंख्यात गुणो जाणवो. (४) तेथकी तेंड्रिय अपर्याप्तानो जघन्य योग, असंख्यात गुणो जाणवो. (५) तेथकी लब्धि अपर्याप्ता चोरिंड्रिय जीवने जव प्रथम समयें जघन्ययोग असंख्यात गुणो. (६) तेथकी (अमण के०) जेने मन नथी एवा असन्नीआ पंचेंड्रिय लब्धि अपर्याप्ताने जव प्रथम समयें जघन्य योग, असंख्यात गुणो.(७) तेथकी (मणा के०) मनःपर्याप्तिना आरंजक एवा सन्नीआ पंचेंड्रिय लब्धि अपर्याप्ताने जव प्रथम समयें जघन्य योग असंख्यात गुणो, ए सात (अपज्ज के०) लब्धि अपर्याप्ताना जव प्रथम समयें (लहु के०) जघन्ययोग लेवा तेथकी (पढमडु के०) प्रथमना बे एटले अपर्याप्ता, सूक्ष्म अने बादर निगोदीआनो (गुरु के०) उत्कृष्ट योग कहेवो एटले (८) सूक्ष्मनिगोदीआ लब्धि अपर्याप्तानो उत्कृष्ट योग, असंख्यातगुणो. (९) तेथकी बादर निगोदीआ एकेंड्रिय लब्धि अपर्याप्तानो उत्कृष्टयोग, असंख्यात गुणो. (पजहस्सिअरो के०) तेथकी एज बे पर्याप्तानो ऱ्हस्व एटले जघन्य योग लेवो एटले (१०) तेथकी सूक्ष्मनिगोदीआ पर्याप्तानो जघन्य योग असंख्यात गुणो. (११) तेथकी बादर एकें

ड्रिय पर्यांप्तानो जघन्ययोग असंख्यात गुणो. तेथकी इतर एटले एज बे सूक्ष्म पर्याप्तानो उत्कृष्ट योग केवो एटले (१२) सूक्ष्मनिगोदीआ पर्याप्तानो उत्कृष्ट योग असंख्यात गुणो. (१३) तेथकी बादर पर्याप्ता एकेंड्रियनो उत्कृष्ट योग असंख्यातगुणो. एटले ए तेर योग स्थानक कह्यां. तेमध्यें एकेंड्रियना नेद चार ढे,ते जघन्य तथा उत्कृष्ट नेदें करी आठ नेद थया तथा विकलेंड्रियना त्रण अने असन्नीआ तथा सन्निआ अपर्याप्ता एवं पांचना जघन्य योग कह्या. एवं तेर योगस्थानकनुं अल्प बहुत्व अनुक्रमे (असंखगुणो के०) असंख्यातगुणुं जाणवुं. अहींआं सघले गुणाकार, सूक्ष्म क्षेत्र पल्योपमना असंख्यातमा नागें वर्त्तता समय प्रमाण जाणवो. एम आगले योगस्थानकें पण एहिज गुणाकार लेवो॥५३॥

असमत्त तसुक्कोसो, पक्क जहन्निअर एव ठिइ ठाणा ॥
अपजेयर संखगुणा, परमऽपज बिए असंख गुणा ॥ ५४ ॥

अर्थ—(असमत्ततसुक्कोसो के०) असमाप्त एटले अपर्याप्ता ते पांच त्रस लेवा एटले विकलेंड्रिय त्रण तथा असन्नीआ, सन्नीआ, ए पांच आर्याप्ता एटले जेणे आरंनी पर्याप्ती पूरी नथी करी, ते जीव अपर्याप्ता जाणवा. ते पांचेना उत्कृष्ट योग, अनुक्रमें असंख्यात गुणा ढे. ते कहे ढे. (१४) ते थकी बेंड्रिय अपर्याप्तानो उत्कृष्टयोग असंख्यातगुणो. (१५) तेथकी तेंड्रिय अपर्याप्तानो उत्कृष्ट योग असंख्यातगुणो. (१६) तेथकी चौरिंड्रिय अपर्याप्तानो उत्कृष्ट योग असंख्यातगुणो. (१७) तेथकी असन्नीया पंचेंड्रिय अपर्याप्तानो उत्कृष्टयोग असंख्यातगुणो. (१८) तेथकी सन्नीआ पंचेंड्रिय अपर्याप्तानो उत्कृष्ट योग असंख्यातगुणो. एम वली (पक्क के०) ए पांच पर्याप्तानो (जहन्निअर के०) जघन्य योग स्थानक अनुक्रमें लेवां. एटले (१९) तेथकी बेंड्रिय पर्याप्तानो जघन्य योग असंख्यात गुणो. (२०) तेथकी तेंड्रिय पर्याप्तानो जघन्य योग असंख्यातगुणो. (२१) तेथकी चौरिंड्रिय पर्याप्तानो जघन्य योग असंख्यातगुणो. (२२) तेथकी असन्नीआ पंचेंड्रिय पर्याप्तानो जघन्ययोग असंख्यातगुणो. (२३) तेथकी सन्नीआ पंचेंड्रिय पर्याप्तानो जघन्य योग असंख्यातगुणो हवे ए थकी (इअर के०) इतर एटले ए पांचे पर्याप्ताना उत्कृष्ट योग अनुक्रमें कहेवा. (२४) तेथकी बेंड्रिय पर्याप्तानो उत्कृष्ट योग असंख्यातगुणो. (२५) तेथकी तेंड्रिय पर्याप्तानो उत्कृष्ट योग असंख्यात गुणो. (२६) तेथी चौरिंड्रिय पर्याप्तानो उत्कृष्ट योग, असंख्यात गुणो. (२७) तेथकी असन्नी

आ पंचेंद्रिय पर्याप्तानो उत्कृष्ट योग, असंख्यातगुणो. (२८) तेथकी सन्नीआ पंचेंद्रिय पर्याप्तानो उत्कृष्टयोग असंख्यातगुणो. (२९) ते थकी अनुत्तरसुरनो उत्कृष्ट योग असंख्यातगुणो. (३०) तेथकी ग्रैवेयक सुरनो उत्कृष्टयोग असंख्यातगुणो. (३१) तेथकी जुगलियानो उत्कृष्टयोग असंख्यातगुणो. (३२) तेथकी आहारक शरीरनो उत्कृष्टयोग असंख्यातगुणो. तेथकी शेषदेव,नारक, तिर्यंच अने मनुष्यनो यथोत्तर उत्कृष्ट योग असंख्यातगुणो जाणवो. एम योगस्थानक कह्यां.

(एव के०) एमज ए सात पर्याप्ता अने अपर्याप्ताना भेदें करी चौद जातिना जीव, तेना कर्मबंधना जघन्य अने उत्कृष्ट स्थितिना वचमाना अंतरें जेटला समय तेटला (ठिइगणा के०) स्थितिबंधनां स्थानक, तेनुं अल्पबहुत्व कहे छे.

(अपजेयरसंखगुणा के०) (१) तिहां सूक्ष्म एकेंद्रिय अपर्याप्तानुं स्थितिस्थानक स्तोक. (२) ते थकी बादर एकेंद्रिय अपर्याप्तानां स्थितिस्थानक संख्यात गुणां. (३) ते थकी सूक्ष्म एकेंद्रिय पर्याप्तानां स्थितिस्थानक संख्यातगुणां. (४) तेथकी बादर एकेंद्रिय पर्याप्तानां स्थितिस्थानक संख्यातगुणां. (५) ते थकी बेंद्रिय अपर्याप्तानां स्थितिस्थानक असंख्यातगुणां. जे भणी बेंद्रियनी उत्कृष्ट स्थितिथी पल्योपमने संख्यातमे भागें ऊणी जघन्यस्थिति होय, तेथी पल्योपमना संख्यातमा भागना जेटला समय एटला बेंद्रिय अपर्याप्तानां स्थितिस्थानक होय अने चार एकेंद्रियनां स्थितिस्थानक पल्योपमना असंख्यातमा भागनां समयमात्र छे. असंख्या एटले पल्योपम असंख्यांशें एक पल्योपमना संख्यातांश होय ते माटें बादर एकेंद्रिय पर्याप्ताना उत्कृष्ट स्थितिस्थानकथी बेंद्रिय अपर्याप्तानां स्थितिस्थानक असंख्यात गुणां जाणवां. (६) ते थकी वली तेहीज बेंद्रिय पर्याप्तानां उत्कृष्ट स्थिति स्थानक संख्यात गुणां जाणवा. (७) ते थकी तेंद्रिय अपर्याप्ताना स्थिति स्थानक संख्यातगुणां (८) ते थकी तेंद्रिय पर्याप्ताना स्थितिस्थानक संख्यातगुणां. (९) ते थकी चौरिंद्रिय अपर्याप्तानां स्थितिस्थानक संख्यातगुणां. (१०) ते थकी चौरिंद्रिय पर्याप्तानां स्थितिस्थानक संख्यातगुणां. (११) ते थकी असन्नीआ अपर्याप्तानां स्थितिस्थानक संख्यात गुणां. (१२ ते थकी असन्नीआ पर्याप्तानां स्थिति स्थानक संख्यातगुणां, (१३) ते थकी सन्नीआ पंचेंद्रिय अपर्याप्ताना स्थितिस्थानक संख्यातगुणां (१४) ते थकी सन्नीआ पंचेंद्रिय पर्याप्तानां स्थितिस्थानक संख्यातगुणां. अहींआं सीत्तेर कोडाकोडी सागरोपममध्यें पण पल्योपमना संख्यातांश संख्याता होय, तेथी

संख्यातगुणा कहीयें. ए सर्व पदने विषे संख्यातगुणा कहेवा. किंवा कोइक पदने विषें विशेष ळे, ते कहे ळे. (परमपज्जबिएअसंखगुणा के०) परं केवल अपर्याप्त द्वींद्रिय पदने विषे असंख्यातगुणां स्थिति स्थानक कहेवा ॥ इति समुच्चयार्थः ५४

हवे जेटली अपर्याप्ता वस्थायें योग वृद्धि होय, ते कहे ळे.

पइखिण मसंखगुण विरि, य अपज्ज ठिइ असंख लोग समा ॥
अज्झवसाया अहिया, सत्तसु आउसु असंखगुणा ॥ ५५ ॥

अर्थ—(पइखिणं के०) प्रतिक्षण एटले समय समय प्रत्यें अपर्याप्तावस्थायें जे योगस्थानक होय, तेथी बीजे समयें (असंखगुणविरिय के०) असंख्यात गुण वृद्धि योगस्थानक होय, तेथी त्रीजे समय वली असंख्यात गुणवृद्धि योग स्थानक होय. एम (अपज्ज के०) अपर्याप्ताने चरमसमय लगें असंख्यातगुण वृद्धि योगस्थानकनी होय, अने पर्याप्ति पूर्ण कस्या पळी पर्याप्ताने संख्यातगुण वृद्धि, असंख्यातगुणवृद्धि, संख्यातगुण हीन, असंख्यातगुण हीन, कोइ तुल्य योग स्थानकें पण होय. एम अनियमें होय, तो कोइ जीव वधते, कोइ घटते, कोइ तुल्य योग स्थानकें पण वर्त्ते पण निर्द्धार न होय. “ सव्वो विअपज्जत्तो, पइखण मसंखगुणाए जोगवुड्डीए ” इति बृहच्छतकचूर्णौ. एम योगवृद्धियें करी कर्मना प्रदेशनी तथा (ठिइ के०) स्थितिनी वृद्धि होय.

हवे जीवने प्रत्येकें एकेक स्थितिस्थानक विशेषें अध्यवसायस्थानकें बंधाय, ते कहे ळे. स्थिति, स्थानक स्थानक प्रत्यें तीव्र, तीव्रतर. मंद, मंदतर. मंदतमादिक, असंख्याते अध्यवसाय स्थानकें बंधाय तिहां जघन्यस्थिति (असंखलोगसमा के०) असंख्यलोकाकाशप्रदेशप्रमाणे काषायिक अध्यवसाय स्थानकें बंधाय. ते थकी वलीसमयाधिक स्थिति बंधाय, ते वली विशेषाधिक अध्यवसाय स्थानकें बंधाय. एम द्विसमयाधिक. त्रिसमयाधिक स्थितिस्थानकें विशेषाधिक विशेषाधिक स्थितिस्थानक वधारतां, वधारतां एक पल्योपमनी असंख्यात भाग मात्र स्थिति स्थानक अतिक्रमे थके, जघन्य स्थितिना अध्यवसाय स्थानकथी बमणां अध्यवसायस्थानक थाय. एम वली पण तेटलांज स्थितिस्थानक अतिक्रमे थके, बमणां बमणां अध्यवसाय स्थानक थाय, ते पण एक पल्योपम मात्र स्थिति वृद्धियें असंख्याता द्विगुण वृद्धिनां स्थितिस्थानक पण थाय, एम एक आयुःकर्म विना शेष (सत्तसु के०) सात कर्मनां जघन्य स्थितिस्थानक थकी मांमीने (अ

श्रवसायाअहिया के०) विशेषाधिक,विशेषाधिक,अध्यवसाय स्थानक वधतां होय.
(आउसु के०) आयुःकर्मनी जघन्यस्थितियें जे सर्वस्तोक अध्यवसाय स्थानक होय तेथी द्वितीयस्थितियें (असंखगुणा के०) असंख्यातगुणां होय. तृतीयस्थिति असंख्यातगुणा अध्यवसाय स्थानकें होय. एम असंख्यात गुणां अध्यवसाय स्थानकें करीने समयाधिक समयाधिक स्थिति वधारतां उत्कृष्टस्थिति सुधी जइयें.

एम कषायोदयभेदें करी आत्मानो जे अशुद्ध स्वभावविशेष, ते अध्यवसायस्थानक जाणवां. ते अध्यवसायस्थानक, रस विशेषना हेतु जाणवां. द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव, प्रतिबंध, रस, विपाक, नियामक, ते सात कर्मनी जघन्य स्थितियें असंख्याता अध्यवसाय,ते थकी समयाधिक समयाधिकस्थितियें विशेषाधिक विशेषाधिक अध्यवसायस्थानक वधतां होय. ते उत्कृष्ट स्थिति पर्यंत विशेषाधिक, विशेषाधिक, वधतां लेवाय. अने आयुःकर्मनां स्थिति स्थानकें स्थानकें यद्यपि अध्यवसाय स्थानक असंख्यात गुणां वधे छे, तथापि ते सर्व कर्मथी थोडां जाणवां.

अने नामकर्म तथा गोत्रकर्मना संख्यातां तथा असंख्यातां पण स्थितिस्थानक होय, तोपण आयुःकर्मनी जघन्य स्थिति अल्प छे माटें अध्यवसाय स्थानक थोडां होय ते माटें आयुष्यना अध्यवसाय स्थानकथी नामकर्म अने गोत्रकर्मनां स्थितिबंधाध्यवसायस्थानक, असंख्यातगुणां जाणवां.

तेथकी ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय अने अंतराय, ए चार कर्मनां स्थितिबंधाध्यवसायस्थानक, असंख्यातगुणां जाणवां. जे भणी नामकर्म अने गोत्रकर्मथकी दश कोडा कोडी सागरोपमनी स्थिति एनी अधिक छे अने पल्योपमना असंख्यांश मात्र स्थिति वृद्धियें अध्यवसाय स्थानक, बमणां वधे अने दश कोडा कोडी सागरोपममध्यें तो असंख्याता पल्योपमना असंख्यांश होय, तेथी असंख्यातवामें अध्यवसायस्थानकनी द्विगुण वृद्धि करतां नामकर्म अने गोत्रकर्मथकी ए चार कर्मनां असंख्यातगुणां अध्यवसाय स्थानक होय. अने ए चारे कर्मना मांहोमांहे अरस परस अध्यवसायस्थानक तुल्य बराबर होय.

तेथकी वली चारित्र मोहनीयनी स्थितिनां अध्यवसाय स्थानक असंख्यात गुणां जाणवां, जे भणी ज्ञानावरणीयनी स्थितिथकी कषाय चारित्र मोहनीयनी स्थिति, दश कोडाकोडी सागरोपमनी वधती छे. तिहां असंख्यातां पल्यासंख्यांशें असंख्याती द्विगुण वृद्धि होय, ते माटें असंख्यात गुणां अध्यवसाय स्थानक जाणवां.

ते थकी दर्शन मोहनीयनां असंख्यात गुणां अध्यवसाय स्थानक, स्थितिबं

संख्यातगुणा कहीयें. ए सर्व पदने विषे संख्यातगुणा कहेवा. किंवा कोइक पदने विषें विशेष छे, ते कहे छे. (परमपजविएअसंखगुणा के०) परं केवलं अपर्याप्त द्वींद्रिय पदने विषे असंख्यातगुणां स्थिति स्थानक कहेवा ॥ इति समुच्चयार्थः ५४

हवे जेटली अपर्याप्ता वस्थायें योग वृद्धि होय, ते कहे छे.

पइखिण मसंखगुण विरि, य अपज्ज ठिइ असंख लोग समा ॥
अझवसाया अहिया, सत्तसु आउसु असंखगुणा ॥ ५५ ॥

अर्थ-(पइखिणं के०) प्रतिक्षण एटले समय समय प्रत्यें अपर्याप्तावस्थायें जे योगस्थानक होय, तेथी बीजे समयें (असंखगुणविरिय के०) असंख्यात गुण वृद्धि योगस्थानक होय, तेथी त्रीजे समय वली असंख्यात गुणवृद्धि योग स्थानक होय. एम (अपज्ज के०) अपर्याप्ताने चरमसमय लगें असंख्यातगुण वृद्धि योगस्थानकनी होय, अने पर्याप्ति पूर्ण कस्या पछी पर्याप्ताने संख्यातगुण वृद्धि, असंख्यातगुणवृद्धि, संख्यातगुण हीन, असंख्यातगुण हीन, कोइ तुल्य योग स्थानकें पण होय. एम अनियमें होय, तो कोइ जीव वधते, कोइ घटते, कोइ तुल्य योग स्थानकें पण वर्त्ते पण निर्द्धार न होय. " सव्वो विअपज्जत्तो, पइखण मसंखगुणाए जोगवुड्ढीए " इति बृहच्छतकचूर्णौ. एम योगवृद्धियें करी कर्मना प्रदेशनी तथा (ठिइ के०) स्थितिनी वृद्धि होय.

हवे जीवने प्रत्येकें एकेक स्थितिस्थानक विशेषें अध्यवसायस्थानकें बंधाय, ते कहे छे. स्थिति, स्थानक स्थानक प्रत्यें तीव्र, तीव्रतर. मंद, मंदतर. मंदतमादिक, असंख्याते अध्यवसाय स्थानकें बंधाय तिहां जघन्यस्थिति (असंखलोगसमा के०) असंख्यलोकाकाशप्रदेशप्रमाणे काषायिक अध्यवसाय स्थानकें बंधाय. ते थकी वली समयाधिक स्थिति बंधाय, ते वली विशेषाधिक अध्यवसाय स्थानकें बंधाय. एम. द्विसमयाधिक. त्रिसमयाधिक स्थितिस्थानकें विशेषाधिक विशेषाधिक स्थितिस्थानक वधारतां, वधारतां एक पल्योपमनी असंख्यात जाग मात्र स्थिति स्थानक अतिक्रमे थके, जघन्य स्थितिना अध्यवसाय स्थानकथी बमणां अध्यवसायस्थानक थाय. एम वली पण तेटलांज स्थितिस्थानक अतिक्रमे थके, बमणां बमणां अध्यवसाय स्थानक थाय, ते पण एक पल्योपम मात्र स्थिति वृद्धियें असंख्याता द्विगुण वृद्धिनां स्थितिस्थानक पण थाय, एम एक आयुःकर्म विना शेष (सत्तसु के०) सात कर्मनां जघन्य स्थितिस्थानक थकी मांमीने (अ

वसायाअहिया के०) विशेषाधिक,विशेषाधिक,अध्यवसाय स्थानक वधतां होय. (आउसु के०) आयुःकर्मनी जघन्यस्थितियें जे सर्वस्तोक अध्यवसाय स्थानक होय तेथी द्वितीयस्थितियें (असंखगुणा के०) असंख्यातगुणां होय. तृतीयस्थिति असंख्यातगुणा अध्यवसाय स्थानकें होय. एम असंख्यात गुणां अध्यवसाय स्थानकें करीने समयाधिक समयाधिक स्थिति वधारतां उत्कृष्टस्थिति सुधी जइयें.

एम कषायोदयनेदें करी आत्मानो जे अशुद्ध स्वनावविशेष, ते अध्यवसायस्थानक जाणवां. ते अध्यवसायस्थानक, रस विशेषना हेतु जाणवां. ड्व्य, क्षेत्र, काल, नाव, प्रतिबंध, रस, विपाक, नियामक, ते सात कर्मनी जघन्य स्थितियें असंख्याता अध्यवसाय,ते थकी समयाधिक समयाधिकस्थितियें विशेषाधिक विशेषाधिक अध्यवसायस्थानक वधतां होय. ते उत्कृष्ट स्थिति पर्यंत विशेषाधिक, विशेषाधिक, वधतां लेवाय. अने आयुःकर्मनां स्थिति स्थानकें स्थानकें यद्यपि अध्यवसाय स्थानक असंख्यात गुणां वधे बे, तथापि ते सर्वे कर्मथी थोडां जाणवां.

अने नामकर्म तथा गोत्रकर्मना संख्यातां तथा असंख्यातां पण स्थितिस्थानक होय, तोपण आयुःकर्मनी जघन्य स्थिति अल्प बे माटें अध्यवसाय स्थानक थोडां होय ते माटें आयुष्यना अध्यवसाय स्थानकथी, नामकर्म अने गोत्रकर्मनां स्थितिबंधाध्यवसायस्थानक, असंख्यातगुणां जाणवां.

तेथकी ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय अने अंतराय, ए चार कर्मनां स्थितिबंधाध्यवसायस्थानक, असंख्यातगुणां जाणवां. जे नणी नामकर्म अने गोत्रकर्मथकी दश कोडा कोडी सागरोपमनी स्थिति एनी अधिक बे अने पल्योपमना असंख्यांश मात्र स्थिति वृद्धियें अध्यवसाय स्थानक, बमणां वधे अने दश कोडा कोडी सागरोपममध्यें तो असंख्याता पल्योपमना असंख्यांश होय, तेथी असंख्यातवामें अध्यवसायस्थानकनी द्विगुण वृद्धि करतां नामकर्म अने गोत्रकर्मथकी ए चार कर्मनां असंख्यातगुणां अध्यवसाय स्थानक होय. अने ए चारे कर्मना, मांहोमांहे अरस परस अध्यवसायस्थानक तुल्य बराबर होय.

तेथकी वली चारित्र मोहनीयनी स्थितिनां अध्यवसाय स्थानक असंख्यात गुणां जाणवां, जे नणी ज्ञानावरणीयनी स्थितिथकी कषाय चारित्र मोहनीयनी स्थिति, दश कोडाकोडी सागरोपमनी वधती बे. तिहां असंख्यातां पल्यासंख्यांशें असंख्याती द्विगुण वृद्धि होय, ते माटें असंख्यात गुणां अध्यवसाय स्थानक जाणवां.

ते थकी दर्शन मोहनीयनां असंख्यात गुणां अध्यवसाय स्थानक, स्थितिबं

धना हेतु जाणवा. जे नणी चारित्र मोहनीयनी स्थितिथकी त्रीश कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति, दर्शनमोहनीयनी वधती छे. तेमाटें तेना पण पूर्वोक्त युक्तियें करी असंख्यातगुणां अध्यवसायस्थानक होय. ए रीतें आठ कर्मनां स्थितिना अध्यवसाय स्थानकनां अल्पबहुत्व पण प्रसंगें कह्यां.

तथा एकेक अध्यवसाय स्थानकें वर्त्तता त्रस जीव, जघन्यपदें एक, बे, त्रण अने उत्कृष्टा तो आवलीना असंख्यांश समय प्रमाण जाणवा अने स्थावर जीव अनंता जाणवा. तथा त्रसजीव युक्त निरंतरपणे जघन्यपदें बे अध्यवसाय स्थानक अने उत्कृष्टपदें आवलीना असंख्याता समय मात्र प्रमाण होय तेथी उपरांत अवश्य शून्य होय, उत्कृष्टपदें असंख्य लोकाकाश प्रदेश प्रमाण होय, अने स्थावर शून्य अध्यवसायस्थानक न होय, जे नणी अनंतानंतनिगोदीआ जीव, ते सहु स्थावर छे. एम अध्यवसायस्थानकें जीव प्ररूपणा कही.

तथा जघन्यस्थितिने जघन्य अध्यवसायस्थानकें अनंता रसविभाग जाणवा. ते थकी वली एज प्रथम स्थितिने उत्कृष्ट अध्यवसाय स्थानकें अनंतगुणा रस विभाग जाणवा, तेथकी वली द्वितीयस्थितिने जघन्य अध्यवसाय स्थानकें अनंतगुणो रस जाणवो. तेथकी तेज द्वितीयस्थितिना उत्कृष्ट अध्यवसाय स्थानकें वली अनंतगुणो रस जाणवो. एम स्थितिविशेषें जघन्य उत्कृष्ट अध्यवसाय स्थानकें अनंतगुणो अनंतगुणो रस वधारतां उत्कृष्टस्थितिना उत्कृष्ट अध्यवसाय स्थानक लगें कहेवुं. ए रीतें प्रसंगें अध्यवसायस्थानकें रस पण विचारवो ॥ इति स० ॥५५॥

हवे उत्तर प्रकृति न बंधाय, तो केटलो काल न बंधाय? तेनो अबाधाकाल कहे छे. तिहां सर्व प्रकृतिमां जघन्यथीतो एक समय अबाधाकाल होय अने उत्कृष्ट पणे मिथ्यात्व तथा सास्वादन गुणगणे बंधविछेद पामेली एकतालीश प्रकृतिनो पंचेंद्रियने विषे अबाधाकाल कहे छे. प्रथम ते एकतालीश प्रकृतिनां नाम कहे छे. नरकत्रिक, जातिचतुष्क, स्थावरचतुष्क हुंमसंस्थान, छेवठुं, संघयण, आतप, मिथ्यात्व, नपुंसक, ए शोल प्रकृति, मिथ्यात्व व्यवछिन्न बंध अने पच्चीश प्रकृति सास्वादन व्यवछिन्नबंध एवं एकतालीश प्रकृतिनो उत्कृष्ट बंधांतर कहे छे.

अथोत्कृष्ट स्थित्यंतरबंधमाह ॥ तिरि निरय ति जोयाणं,
नरभवजुअ सचउपल्ल तेसठं ॥ थावर चउ इगविगला,
यवेसु पणसीइ सयमयरा ॥ ५६ ॥

अर्थ-(तिरिनिरयति के०) तिर्यंचगति, तिर्यंचानुपूर्वी अने तिर्यंचायु, ए तिर्यंच त्रिक तथा नरकगति, नरकानुपूर्वी अने नरकायु, ए नरकत्रिक, सातमुं. (जोयाणं के०) उद्योतनामकर्म, ए सात प्रकृतिनो बंध पंचेंद्रिय जीवने जो न होय, तो केटला काल लगें न होय ? ते कहे ले. (नरजवजुअ के०) मनुष्यना पूर्व कोडी आयुना सात जव, (स के०) सहित (चउपल्ल के०) चार पल्योपम अने (तेसठं के०) एकशो त्रेशठ सागरोपम होय, एनी विशेष जावना कहे ले. कोइ एक त्रण पल्योपमायुवालो युगलीउ जवप्रांतें सम्यक्त्व लहीने एक पल्योपमायुवालो देव थाय. हवे तिहां युगलीआना जवप्रत्यें ए सात प्रकृतिनो बंध नथी. केम के, युगलीउ तो देवता योग्य नामकर्मनी प्रकृति बांधे. पण बीजी प्रकृति न बांधे अने देवता थया पठी ते देवताना जवें सम्यक्त्व प्रत्ययें तिर्यग् प्रायोग्य नामकर्मनी प्रकृति न बांधे. पठी ते देवता सम्यक्त्व सहितज संख्यात वर्षायुष्क मनुष्य थयो तिहां पण सम्यक्त्व प्रजावें ए सात प्रकृति न बांधी अने अंतें चारित्र लइ नवमे ग्रैवेयकें देव थयो. तिहां कदापि मिथ्यात्वी पण थयो तो पण जवप्रत्ययें एकत्रीश सागरोपम लगें ए सात प्रकृति न बांधे, जे जणी आठमा देवलोकथी उपरला देवलोकना देवता तिर्यंचमांहे न आवे, ते वली प्रांत समयें सम्यक्त्व लहीने संख्यातायुष्य वाला मनुष्यमां सम्यक्दृष्टिपणे आवी उपजे. वली ते मनुष्य चारित्र पाली तेत्रीश सागरोपमायु अनुत्तर विमाने विजयादिकने विषे देव थाय. वली मनुष्यजव पामीने वली बीजी वार तेत्रीश सागरोपमायु वालो सुर थाय. एम बे वार विजयादिक गमनें करी ठाशठ सागरोपम सम्यक्त्व काल पूरी, वली अंतर मुहूर्त्त मिश्र गुणठाणे जइ, फरी सम्यक्त्व लही, त्रण वेला बावीश सागरोपमायुष्क अच्युतदेवलोकमां गमन करी, बीजो वार पण ठाशठ सागरोपम सम्यक्त्व काल स्पर्शे. एम एकशो ने बत्रीश सागरोपम पूर्व कोटी सप्तक अधिक सम्यक्त्व अने मिश्र प्रत्ययें ए सात प्रकृति न बांधे, अने एकत्रीश सागरोपम ग्रैवेयकना तथा चार पल्योपम युगलीया तथा देवायुना मली एकशो त्रेशठ सागरोपम चार पल्पोपम अने पूर्व कोडी सप्तक सुधी, ए सात प्रकृतिनो पंचेंद्रियने विषे अबाधा काल होय.

(थावरचउ के०) स्थावर, सूक्ष्म. अपर्याप्त अने साधारण, ए स्थावर चतुष्क अने (इगविगल के०) एकेंद्रिय जाति तथा बेंद्रिय अने तेंद्रिय, चौरिंद्रिय, ए विकलजातित्रिक अने (आयवेसु के०) आतपनामकर्म, ए नव प्रकृतिना बंधने वि

पे पंचेंद्रियपणे छतां जो उत्कृष्ट बंध न होय तो (पणसीइसयं के०) एकशो ने पच्चाशी (अयरा के०) सागरोपम तथा चार पल्योपम अने पूर्व कोटी पृथक्त्वें अधिक बंधांतर होय. एनी विशेष जावना कहे छे.

कोइ एक जीव, छठी नरक पृथिवीयें बावीश सागरोपमायु जोगवी, तिहां नव प्रत्ययें ए नव प्रकृति न बांधे, तिहां अंतसमयें सम्यक्त्व सहित चवीने मनुष्य थयो. ते तिहां देशविरति लहीने त्रण पल्योपमायुयें युगलीक थइ तिहांथी एक पल्योपमायु वालो सुर थाय, तिहांथी पण सम्यक्त्व सहित चवी संख्याता वर्षायु मनुष्यमां उपजे, तिहांथी संयम लइ एकत्रीश सागरोपमायुयें ग्रैवेयकमां देवपणे उपजे. तिहां मिथ्यात्व लही, छेल्ले सम्यक्त्व पामी मनुष्य थइ वली विशेष संयम पाली विजयादिकं विमानें तेत्रीश सागरोपमायुयें देव थाय. वली मनुष्य जवने आंतरें बीजी वार विजयादिक विमानें अवतरी. ७३२ सागर सम्यत्वकाल पूरो करी, मिश्रें आवी पूर्वोक्त रीतें त्रण वार अच्युतें जाय. एम एकशो त्रेशठ सागरोपमाधिकमांहे बावीश सागर नरकायु जेलतां एकशो पच्चाशी सागरोपम चार पल्यने पूर्वकोडी पृथकत्व एटला काल सुधी ए नव प्रकृतिनी स्थितिनो अबंधकाल होय. किहांएक सम्यक्त्व प्रत्ययें, किहां एक जवप्रत्ययें, अबंधकाल होय, एटले बंधनुं आंतरुं होय ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ५६ ॥

अपढम संघयणा गिइ, खगई अण मिछ ऊहग थीणतिगं ॥
निअ नपु इहि उतीसं, पणिंदि सुअबंधठिइ परमा ॥ ५७ ॥

अर्थ—(अपढमसंघयणागिइ के०) पहेला संघयण विना शेष पांच संघयण अने आकृति एटले प्रथमसंस्थान विना शेष पांच संस्थान, एवं दश अने (खगई के०) अशुजविहायोगति (अण के०) अनंतानुबंधी क्रोधादिक चार, (मिछ के०) मिथ्यात्वमोहनीय, (ऊहग के०) दौर्जाग्य, ऊःस्वर, अनादेय, ए दौर्जाग्यत्रिक, (थीणतिगं के०) थीणद्धीत्रीक, (निअ के०) नीचैर्गोत्र, (नपु के०) नपुंसकवेद, (इहि के०) स्त्रीवेद, ए पच्चीश प्रकृतिनो अबंधकाल (उतीसं के०) एकशो ने बत्रीश सागरोपममनुष्यजव सप्तक सहित होय, तेनी जावना कहे छे. कोइएक जीव, क्षायोपशमिक सम्यक्त्व प्रत्ययें ए पच्चीश प्रकृति मध्यें हुंमसंस्थान, छेवठुं संघयण, मिथ्यात्वमोहनीय अने नपुंसकवेद, ए चार प्रकृति, मिथ्यात्वोदय विना न बंधाय अने शेष एकवीश प्रकृति अनंतानुबंधिया कषायोदय विना न बंधाय, अ

ने मिश्रादिक आगला गुणगणे ए बेनो रसोदय नथी, तेमाटें तिहां ए पच्चीश प्रकृति न बंधाय, ते आवी रीतें जे कोइ एक मनुष्य, पूर्वकोडी परमायु जोगवी, अच्युतदेवलोकें बावीश सागरोपमायुयें सम्यक्दृष्टि देवता थाय. वली तिहांथी सम्यक्त्व सहित चवीने मनुष्य थाय. तिहां पूर्वकोटी आयु जोगवी, वली अच्यु त देवलोकें बावीश सागरायु जोगवे. फरी पूर्व कोडी आयु वालो मनुष्य थइ सम्यक्त्व सहित मरण पामी, अच्युतें उत्कृष्टायु पामी, तिहांथी चवी मनुष्य था य. एम त्रण वार अच्युत देवलोकें बावीश सागरोपमायुना अने चार जव मनु ष्योना पूर्व कोडी आयुना जेलतां ढाशठ सागरोपम चार पूर्व कोडी अधिक, उ त्कृष्ट सम्यक्त्व काल स्पर्शी तिहांथी अंतर मुहूर्त्त सुधी मिश्र गुणगणुं स्पर्शी, वली बीजी वखत ढाशठ सागरोपमायु विजयादिक विमानें बे वखत जावे करी पूराय. ठेल्ले मनुष्य थइ छद्म चारित्र पामी मोक्षें जाय. अहीआं पांच देवताना जव अने सात मनुष्यना जव लगें मिथ्यात्व तथा सास्वादन गुणगणुं न स्पर्शें. तेथी ए पच्चीश प्रकृति पण न बंधाय. अहींआं अच्युत देवलोकें त्रण वखत जा वे करी, ढाशठ सागर अने विजयादिक विमानें बे वखत जावे करी, ढाशठ सा गर सम्यक्त्वकाल अंतर मुहूर्त्त मिश्रने आंतरें करी एकशो बत्रीश सागरोपम पू र्व कोडी पृथक्त्वें अधिक एटला काल लगें मिथ्यात्व तथा अनंतानुबंधीया क षायना उदयने अजावें ए पच्चीश प्रकृति न बांधें. अहींआं तत्वार्थजाष्यें वि चरमा अनुत्तर सुर कह्या. जे वली अनुत्तर सुर होय, ते चरम शरीरी होय, तेनी अपेक्षायें मुक्ति कही. अहींआं सम्यक्त्वथी मिश्रें आववुं कह्युं, ते पण स्वमतें क ह्युं. केम के सिद्धांतमतें तो सम्यक्त्वथकी मिथ्यात्वें आवे, पण मिश्रें न आवे. एवी व्याख्या ठे. (पणिंदिसुअबंधठिइपरमा के०) ए सन्नीआ पंचेंद्रिय जीवनी अपेक्षायें परम अबंधकालनी स्थिति लेवी, पण बीजा जीवजेदें ए न संजवे. य डुक्तं “ मिछत्तासंकंती, अविरुद्धा होइ सम्म मीसेसु ॥ मीसा उवा दोसु, सम्मा मिछंन उमीसंति ” ॥ १ ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ५७ ॥

हवे ए एकतालीश प्रकृतिनो अबंधकाल पूरवानो उपाय कहे ठे.

विजयाइसु गेविज्जे, तमाइ दहि सय डतीस तेसठं ॥ पण सीइ ॥ अथ त्रिसप्ततीनामध्रुवबंधिनीनामुत्कृष्टं संततबंधमा ह ॥ सयय बंधो, पल्लतिगं सुरविउवि डुगे ॥ ५८ ॥

अर्थ-(विजयाइसु के०) विजय, वैजयंत, जयंत अने अपराजित, ए चार, अनुत्तर विमानें बेवार ढाशठ सागरोपम मनुष्य नवें जाजेरो सम्यक्त्व काल पूरे. वली अंतर मुहूर्त्त मिश्रें रही त्रण वेला अच्युत देवलोकें बावीश सागरोपमायु नोगवतां ढाशठ सागरोपम मनुष्य नवें अधिक बीजी वेला सम्यक्त्व काल पूरतां, (सयछुतिस के०) एकशो बत्रीश सागरोपम अने (गेविज्जे के०) ग्रैवेयकना एकत्रीश सागरोपम नेलतां (तेसठं के०) एकशो ने त्रेशठ सागरोपम मनुष्य नवना पूर्व कोडी पृथक्त्वें अधिक जाणवा. तेमां वली (तमाइदहि के०) तमःप्रनानामा ढही नरक पृथ्वीना नारकीनुं बावीश सागरोपमायु नेलतां, (पणसीइ के०) एकशो ने पच्चाशी सागरोपम पूराय, अहींआं सघले स्थानकें वचला मनुष्य नवनुं आयु साधिक जाणवुं. अहीं केटलेक स्थानकें सम्यक्त्व प्रत्ययें ए प्रकृति न बंधाय, अने किहां एकतो नव प्रत्ययें न बंधाय. एम एकतालीश प्रकृतिनो उत्कृष्ट अबंधकाल, पंचेंद्रियमध्यें पामीयें, तेमां तिर्यंचत्रिक, नरकत्रिक अने उद्योतनाम, ए सात प्रकृतिनो एकशो त्रेशठ सागरोपम प्रमाण अबंधकाल अने स्थावर चतुष्क तथा जातिचतुष्क.अने आतप ए नव प्रकृतिनो एकशो पच्चाशी सागरोपम अबंध काल अने शेष पच्चीश प्रकृतिनो एकशो बत्रीश सागरोपम अबंधकाल ते सर्व पूर्व कोडी पृथक्त्वें अधिक लेवुं तथा बे ठेकाणे चार पल्योपम अधिक लेवुं. एम बंधांतर कह्युं.

हवे (सययबंधो के०) सतत एटले निरंतर पणे बंध लखीयें ढैयें. औदारिक द्विक, वैक्रियद्विक, आहारकद्विक, ढ संघयण, ढ संस्थान, पांच जाति, चार गति, चार आनुपूर्वी, जिननाम, श्वासोश्वास, उद्योत, आतप, पराघात, त्रसदशक, स्थावर दशक, वेदनीयद्विक, गोत्रद्विक, हास्यादिचतुष्क, वेद त्रण, खगतिद्विक, अने आयुचतुष्क, ए अध्रुवबंधिनी तहोंतेर प्रकृतिनो जघन्यपदें तथा उत्कृष्टपदें निरंतर पणे बांधवानो काल कहे ढे. ते मांहे जिननाम, आहारकद्विक अने आयुचतुष्क, ए सात प्रकृतिनो जघन्यपदें निरंतर पणे बांधवानो काल, अंतर मुहूर्त्त प्रमाण जाणवो. जे नणी उपशमश्रेणीथी पडतो अंतर मुहूर्त्त लगें, जिननाम तथा आहारकद्विक, ए त्रण प्रकृति बांधी, वली बीजी वार श्रेणी पडिवजतो अपूर्व करणने सातमे नागें एनो अबंधक थाय, ते अपेक्षायें लेवुं. तथा आयु चारनो तो निरंतरपणे अंतर मुहूर्त्त बंध होय, अने शेष ढाशठ प्रकृतिनो जघन्य तो

एक समयबंध पण होय. एम तहोंत्तेर प्रकृतिनो जघन्य सतत बंध कह्यो, हवे उत्कृष्टजागें निरंतर बंध कहे छे.

(पल्लतिगंसुरविउव्विडुगे के०) देवगति, देवानुपूर्वी तथा वैक्रियशरीर अने वैक्रिय अंगोपांग, ए चार प्रकृतिनो सतत बंध जघन्य एक समयनो होय जे नणी शुन्न परिणामें एक समय, ए चार प्रकृति देव प्रायोग्य बांधीने परिणामन्नेदें समयांतरें वली मनुष्यादिक प्रायोग्य बांधतां जाणवो अने एनो उत्कृष्टो निरंतर बंध त्रण पल्योपमायुना धणी युगलीयाने नव प्रथम समयथी देवप्रायोग्य नामकर्मनी अठावीश प्रकृति बांधतां जाणवो. केम के, तेने नवप्रत्ययें नरक, तिर्यंच अने मनुष्य, ए त्रण गति प्रायोग्य नामकर्मनो बंध नथी तेथी परिणाम न्नेदें पण अन्य एनी विरोधि प्रकृतिनो एने वंधें नथी, ते माटें नव प्रथम समथी लइने त्रण पल्योपमना चरम समय लगें ए चार प्रकृतिनो सतत बंध होय. एटले एक, बे, त्रण, संख्याता, असंख्याता समय लगें निरंतरपणे एचार प्रकृतिनो बंध होय ॥ इतिसमु०॥ ५८ ॥

समया दसंख कालं, तिरि डुग नीएसु आउ अंतमुहू ॥
उरलि असंख परट्टा, साय ठिइ पुव कोडूणा ॥ ५९ ॥

अर्थ-(तिरिडुग के०) तीर्यंचद्विक, (नीएसु के०) नीचैर्गोत्र, ए त्रण प्रकृतिनो तिर्यंच प्रायोग्य बंधाध्यवसायें समय मात्र रहीने वली तथाविध संक्लेश विशेषें नरक प्रायोग्य पण बांधे, अने विशुद्धि विशेषें देव, मनुष्य प्रायोग्य पण बांधे, तेनी अपेक्षायें जघन्यथी एक समय बंध होय, अने उत्कृष्ट पदें तो तेउ, वाउ मांहे असंख्यातो काल रहे तो थको तिहां ए त्रण प्रकृतिनी विरोधिनी बीजी प्रकृति न बांधे, केमके? तेउ अने वायु मांहेथी एक तिर्यंचगतिमांहेंज अवतरे पण बीजी त्रण गतिमां अवतरे नहीं तथा तिहां उच्चैर्गोत्र पण न बांधे, तेथी (समयादसंखकालं के०) असंख्याता लोकाकाश प्रदेश प्रमाण समय लगें ए त्रण प्रकृतिनो निरंतर बंध लान्ने, ए व्यवहार राशि जीवनी अपेक्षायें लेखववो. बीजा आश्रयी तो अनंत काल पण संनवे.

(आउअंतमुहू के०) चार आयुनो बंध जघन्य तथा उत्कृष्टथी अंतर्मुहूर्त्तनो होय. अहींआं परिणामन्नेदें पण एक समयिक बंध न होय, ते नणी आयुनो तो आखा नवमध्यें एकज वार बंध होय. अहींआं जघन्यथी उत्कृष्टोअधिक जाणवो

(उरलिअसंखपरट्टा के०) औदारिक शरीरनामकर्मनो निरंतर पणे बंध उ

कृष्टो तो आवलिना असंख्यातमा नागना समय प्रमाण असंख्याता पुजल पराव र्त्त जेटलुं जाणवुं, अनें जघन्यतो एक समयनो जाणवो. जे नणी एक समय औदारिक शरीर बांधी वली समयांतरें परिणामे नेदें तद्विरोधिनी वैक्रियादिकने बांधतो होय, अने उत्कृष्टथी तो व्यवहारराशियें आवेलो जीव, जो थावरकाय पणे रहेतो उत्कृष्टो आवलीने असंख्यातमे नागें जेटला समय थाय, तेटला पुजल परावर्त्त सूधी थावरपणुं नोगवे, तिहां निरंतरपणे औदारिकशरीर नामकर्मनो बंध करे, तेने वैक्रियादिक विरोधि प्रकृतिनो बंध नथी. ते नणी तिहां सततबंध कह्यो.

(सायठिइपुव्वकोडूणा के०) एक शातावेदनीयनो सतत बंध, जघन्यथी तो एक समय लगें होय. केम के वली समयांतरें परिणामनेदें अशाता पण बांधे, ते अपेक्षायें कहेवुं. तथा उत्कृष्टपणे निरंतर बंधतो आठ वर्षें ऊणी पूर्वकोडी जाणवी. केमके कोइक पूर्वकोडी आयुवालो जीव, आठ वर्ष उपरांत सर्व विरति पणुं लइने, क्षपकश्रेणी पडिवजे. केवलज्ञान पामे, तेने प्रमत्तगुणगणा उपरांत एनी विरोधिनी अशातावेदनीय प्रकृतिनो बंध नथी, तेथी तिहां निरंतर पणे एटला काल लगें एकज शातावेदनीय बांधे. ते अपेक्षायें जाणवुं. अन्यथा शाता अशातानो बंध तो अंतरमुहूर्त्त परावर्त्त होय ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ५९ ॥

जलहि सयं पणसीयं, परघुस्सासे पणिंदि तस चउगे ॥
बत्तीसं सुहु विहगइ, पुम सुनगतिगुच्चचउरंसे ॥ ६० ॥

अर्थ-(सयंपणसीयं के०) एम एकशोने पच्चाशी (जलहि के०) सागरोपम उपर चार पल्योपम पूर्वकोडी पृथक्त्वें अधिक, (परघुस्सासेपणिंदितसचउगे के०) पराघातनाम, उच्छ्वासनाम, पंचेंद्रियजाति, तथा त्रसनाम, बादरनाम, पर्याप्तनाम अने प्रत्येकनाम. ए त्रस चतुष्क. एवं सात प्रकृतिनो उत्कृष्ट निरंतर बंधकाल जाणवो. जे नणी जातिचतुष्क तथा स्थावरचतुष्क ए आठ एनी विरोधिनी प्रकृति छे ते एटला काल पर्यंत न बंधाय. ते वारें ए प्रकृति बंधाय, ते आवी रीतें के कोइ एक जीव छही नरक पृथवीना बावीश सागरोपमायु नोगवी, अंतें सम्यक्त्व लही, मनुष्य-नवें देशविरति लही, त्रण पल्योपम युगलीयानुं तथा तिहांथी एक पल्योपम देवायु नोगवी फरी, मनुष्यपणे संयम लइने ग्रैवेयकें मिथ्यात्वीपणे एकत्रीश सागरोपम देवायु नोगवी अंत समयें सम्यक्त्व लही, फरी मनुष्यनवें चारित्र लही, विजयादिक विमानें बे वखत तेत्रीश तेत्रीश सागरोप

मायु नोगवतां ठाशठ सागरोपम पर्यंत सम्यक्त्व स्पर्शी, पछी मिश्रनावें अंतर मुहूर्त्त रही वली बीजी वेला ठाशठ सागरोपम सम्यक्त्व काल, त्रण वखत बावीश सागरोपमायुयें अच्युत देवमांहे उपजवे करी पूर्ण करे. एम एकशो पच्चाशी सागरोपम, चार पल्योपम अने पूर्व कोडी पृथक्त्वें अधिक एटलो सात प्रकृतिनो सततबंध जाणवो. अहीं किहांएक तो नव प्रत्ययें किहांएक सम्यक्त्व प्रत्ययें ए सात प्रकृति बंधाय पण एनी विरोधिनी प्रकृति न बंधाय.

(बत्तीसं के०) एकशो ने बत्रीश सागरोपम उत्कृष्टो सततबंध, आटली प्रकृतिनो करे,तेनां नाम कहे छे.(सुहविहगइ के०) एक शुनविहायोगति, (पुम के०) पुरुषवेद, (सुनगतिग के०) सौनाग्य, सुस्वर अने आदेय, ए सौनाग्यत्रिक. (उच्चचउरंसे के०) उच्चैर्गोत्र, समचतुरस्रसंस्थान, ए सात प्रकृतिनो निरंतर बंध. जाणवो. जे नणी एनी विरोधिनी अशुनविहायोगति, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, दौर्नाग्यत्रिक, नीचैर्गोत्र, ए सात प्रकृतिनो मिश्रादिक गुणगणे बंध न होय, तेथी मिथ्यात्वनुं आंतरुं उत्कृष्टुं एकशो बत्रीश सागरोपमनुं होय. तेटलो काल. ए सात प्रकृतिनो बंध निरंतरपणे होय. तिहां प्रथम ठाशठ सागरोपम जाजेरां त्रण वेला अच्युत देवलोकना गमनें करी सम्यक्त्व काल पूर्ण करे. वली अंतर मुहूर्त्त मिश्र गुणठाणे रही, बीजी वेला ठाशठ सागरोपम तेत्रीश सागरोपमायुयें विजयादिक अनुत्तर विमानें बे वेला अवतरवे करी, सम्यक्त्व काल पूर्ण करे,एम एकशो बत्रीश सागरोपम अने मनुष्यायु पूर्व कोडी पृथक्त्वें अधिक काल लगें, मिथ्यात्व अने अनंतानुबंधीने अनावें एनी अशुन विहायोगत्यादिक विरोधिनी प्रकृतिना बंधने अनावें शुनविहायोगत्यादिक सात प्रकृतिनो सततबंध होय ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ६० ॥

असुहखगइ जाइ आगिइ, संघयणाहार निरयुजोय डुगं ॥
थिर सुन्न जस थावर दस, नपु इत्थी डुजुअल मसायं ॥ ६१ ॥

अर्थ-(असुहखगइ के०) एक अशुन विहायोगति अने (जाइ के०) अशुनजाति चार, एटले एकेंड्रिय, बेंड्रिय, तेंड्रिय अने चौरिंड्रिय ए पांच प्रकृति,मिथ्यात्व गुणठाणे अंतर मुहूर्त्तने आंतरे एनी सप्रतिपक्ष प्रकृति बंधाय, तेथी अंतर मुहूर्त्तनो सततबंध जाणवो, तेमज (आगिइ के०) न्यग्रोध, सादि, वामन, कुब्ज अने हुंम, ए पांच अशुन आकृति एटले संस्थान अने (संघयण के०) ऋषननाराच, नाराच, अर्द्धनाराच, कीलिका अने छेवढुं, ए पांच अशुन संघयण, (आहार के०)

कृष्टो तो आवलिना असंख्यातमा नागना समय प्रमाण असंख्याता पुजल परावर्त्त जेटलुं जाणवुं, अने जघन्यतो एक समयनो जाणवो. जे नणी एक समय औदारिक शरीर बांधी वली समयांतरें परिणामे नेदें तद्विरोधिनी वैक्रियादिकने बांधतो होय, अने उत्कृष्टथी तो व्यवहारराशियें आवेलो जीव, जो थावरकाय पणे रहेतो उत्कृष्टो आवलीने असंख्यातमे नागें जेटला समय थाय, तेटला पुजल परावर्त्त सूधी थावरपणुं नोगवे, तिहां निरंतरपणे औदारिकशरीर नामकर्मनो वंध करे, तेने वैक्रियादिक विरोधि प्रकृतिनो बंध नथी. ते नणी तिहां सततबंध कह्यो.

(सायठिइपुव्वकोडूणा के०) एक शातावेदनीयनो सतत बंध, जघन्यथी तो एक समय लगें होय. केम के वली समयांतरें परिणामनेदें अशाता पण बांधे, ते अपेक्षायें कहेवुं. तथा उत्कृष्टपणे निरंतर बंधतो आठ वर्षें ऊणी पूर्वकोडी जाणवी. केमके कोइक पूर्वकोडी आयुवालो जीव, आठ वर्ष उपरांत सर्व विरति पणुं लइने, क्षपकश्रेणी पडिवजे. केवलज्ञान पामे, तेने प्रमत्तगुणठाणा उपरांत एनी विरोधिनी अशातावेदनीय प्रकृतिनो बंध नथी, तेथी तिहां निरंतर पणे एटला काल लगें एकज शातावेदनीय बांधे. ते अपेक्षायें जाणवुं. अन्यथा शाता अशातानो बंध तो अंतरमुहूर्त्त परावर्त्त होय ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ५ए ॥

जलहि सयं पणसीयं, परघुस्सासे पणिंदि तस चउगे ॥
बत्तीसं सुहु विहगइ, पुम सुनगतिगुच्चचउरंसे ॥ ६० ॥

अर्थ—(सयंपणसीयं के०) एम उकशोने पच्चाशी (जलहि के०) सागरोपम उपर चार पल्योपम पूर्वकोडी पृथक्त्वें अधिक, (परघुस्सासेपणिंदितसचउगे के०) पराघातनाम, उश्वासनाम, पंचेंद्रियजाति, तथा त्रसनाम, बादरनाम, पर्यासनाम अने प्रत्येकनाम. ए त्रस चतुष्क. एवं सात प्रकृतिनो उत्कृष्ट निरंतर बंधकाल जाणवो. जे नणी जातिचतुष्क तथा स्थावरचतुष्क ए आठ एनी विरोधिनी प्रकृति बे ते एटला काल पर्यंत न बंधाय. ते वारें ए प्रकृति बंधाय, ते आवी रीतें के कोइ एक जीव बही नरक पृथवीना बावीश सागरोपमायु नोगवी, अंतें सम्यक्त्व लही, मनुष्य नवें देशविरति लही, त्रण पल्योपम युगलीयानुं तथा तिहांथी एक पल्योपम देवायु नोगवी फरी, मनुष्यपणे संयम लइने ग्रैवेयकें मिथ्यात्वीपणे एकत्रीश सागरोपम देवायु नोगवी अंत समयें सम्यक्त्व लही, फरी मनुष्यनवें चारित्र लही, विजयादिक विमानें बे वखत तेत्रीश तेत्रीश सागरोप

मायु जोगवतां छाशठ सागरोपम पर्यंत सम्यक्त्व स्पर्शी, पछी मिश्रनावें अंतर मुहूर्त्त रही वली बीजी वेला छाशठ सागरोपम सम्यक्त्व काल, त्रण वखत बावीश सागरोपमायुयें अच्युत देवमांहे उपजवे करी पूर्ण करे. एम एकशो पच्चाशी सागरोपम, चार पल्योपम अने पूर्व कोडी पृथक्त्वें अधिक एटलो सात प्रकृतिनो सततबंध जाणवो. अहीं किहांएक तो नव प्रत्ययें किहांएक सम्यक्त्व प्रत्ययें ए सात प्रकृति बंधाय पण एनी विरोधिनी प्रकृति न बंधाय.

(बत्तीसं के०) एकशो ने बत्रीश सागरोपम उत्कृष्टो सततबंध, आटली प्रकृतिनो करे,तेनां नाम कहे छे.(सुहविहगइ के०) एक शुजविहायोगति, (पुम के०) पुरुषवेद. (सुजगतिग के०) सौजाग्य, सुस्वर अने आदेय, ए सौजाग्यत्रिक. (उच्चचउरंसे के०) उच्चैर्गोत्र, समचतुरस्त्रसंस्थान, ए सात प्रकृतिनो निरंतर बंध. जाणवो. जे जणी एनी विरोधिनी अशुजविहायोगति, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, दौर्जाग्यत्रिक, नीचैर्गोत्र, ए सात प्रकृतिनो मिश्रादिक गुणगणे बंध न होय, तेथी मिथ्यात्वनुं आंतरुं उत्कृष्टुं एकशो बत्रीश सागरोपमनुं होय. तेटलो काल. ए सात प्रकृतिनो बंध निरंतरपणे होय. तिहां प्रथम छाशठ सागरोपम जाजेरां त्रण वेला अच्युत देवलोकना गमनें करी सम्यक्त्व काल पूर्ण करे. वली अंतर मुहूर्त्त मिश्र गुणगणे रही, बीजी वेला छाशठ सागरोपम तेत्रीश सागरोपमायुयें विजयादिक अनुत्तर विमानें बे वेला अवतरवे करी, सम्यक्त्व काल पूर्ण करे,एम एकशो बत्रीश सागरोपम अने मनुष्यायु पूर्व कोडी पृथक्त्वें अधिक काल लगें, मिथ्यात्व अने अनंतानुबंधीने अजावें एनी अशुज विहायोगत्यादिक विरोधिनी प्रकृतिना बंधने अजावें शुजविहायोगत्यादिक सात प्रकृतिनो सततबंध होय ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ६० ॥

असुहखगइ जाइ आगिइ, संघयणाहार निरयुजोय डुगं ॥
थिर सुज जस थावर दस, नपु इबी डुजुअल मसायं ॥ ६१ ॥

अर्थ-(असुहखगइ के०) एक अशुज विहायोगति अने (जाइ के०) अशुजजाति चार, एटले एकेंड्रिय, बेंड्रिय, तेंड्रिय अने चौरिंड्रिय ए पांच प्रकृति,मिथ्यात्व गुणगणे अंतर मुहूर्त्तने आंतरे एनी सप्रतिपक्ष प्रकृति बंधाय, तेथी अंतर मुहूर्त्तनो सततबंध जाणवो, तेमज (आगिइ के०) न्यग्रोध, सादि, वामन,कुब्ज अने हुंम, ए पांच अशुज आकृति एटले संस्थान अने (संघयण के०) रूपजनाराच, नाराच, अर्द्धनाराच, कीलिका अने छेवडुं, ए पांच अशुज संघयण, (आहार के०)

आहारक शरीर अने आहारकांगोपांग, ए आहारकद्विक. (निरयुजोयडुगं के०) नरकगति, नरकानुपूर्वी, ए नरकद्विक तथा उद्योतनाम अने आतपनाम ए उद्योत द्विक ए सर्व एकवीश प्रकृतिनो सततबंध, अंतर मुहूर्त्त लगें मिथ्यात्व अने सास्वाद न गुणठाणे होय. अहींआं आहारकद्विकनो बंध मिथ्यात्व तथा सास्वादन, ए वे गुण ठाणे न जाणवो तथा (थिर के०) एक स्थिर. बीजी (सुन्न के०) शुन्न, त्रीजी (जस के०) यशःकीर्त्ति, (थावरदस के०) स्थावर दशको, ए तेर प्रकृति पण सप्रतिपक्ष मिथ्यात्वें वंधाय, तेथी एनो अंतरमुहूर्त्त लगें उत्कृष्टो सततबंध जाणवो. तथा (नपुंइ त्थी के०) नपुंसकवेद अने स्त्रीवेद, ए वे मोहनीयनी प्रकृति पण अंतर मुहूर्त्त अं तर मुहूर्त्त परावर्त्ते मिथ्यात्वें वंधाय. एवं ठत्रीश प्रकृति थइ तथा (डुजुअल के०) हास्य अने रति तथा शोक अने अरति, ए वे युगलनी प्रकृति पण बंधविरोधिनी नणी ठठा गुणठाणा लगें परावर्त्ते अंतर मुहूर्त्त प्रमाण बांधे, जो पण सातमे अने आठमे गुणठाणे निःप्रतिपक्षपणे हास्य अने रति ए एक युगल वंधाय ठे. तो पण ए वे गुणठाणानो काल अंतर मुहूर्त्तनो होय. तथा (मसायं के०) अ शातावेदनीय पण शातावेदनीयने परावर्त्ते अंतर मुहूर्त्त प्रमाण, ठठा गुणठाणा सुधी वंधाय. ए एकतालीश प्रकृतिनो एक समयथी मांमीने उत्कृष्टो अंतर मुहू र्त्त लगें सततवंध होय. जे नणी ए अध्रुववंधिनी परावर्त्त मान प्रकृतिठे ते बीजी पोतानी विरोधिनी प्रकृतिना वंधसामग्रीने सद्भावें अंतर मुहूर्त्त परावर्त्ते वंधाय.

एमां स्थिर, शुन्न अने यश, ए त्रणनी विरोधिनी अस्थिर, अशुन्न अने अय श. ए त्रणनो वंध ठठा गुणठाणा सुधी होय. तिहां लगें परावर्त्ते अंतरमुहूर्त्त प र्यंत सततवंध जाणवो. आगले गुणठाणे जो पण ए विरोधिनी प्रकृतिनो वंध न थी, तो पण दशमा गुणठाणा लगें केवल यशःकीर्त्तिनो वंध ठे. ते पण अंतर मु हूर्त्त लगें जाणवो. तेथी सर्व गुणठाणे एकज अंतर मुहूर्त्त पर्यंत बंध होय ॥ ६१॥

समया दंत मुहुत्तं,मणु डुग जिण वइर उरलुवंगेसु ॥ तित्ती सय
रा परमो, अंत मुहूलहुवि आउ जिणा॥६२॥ इति स्थितिबंधः॥

अर्थ- ए पूर्वोक्त एकतालीश प्रकृतिनो (समयादंतमुहूत्तं के०) एक समयथी लइने अंतर मुहूर्त्त लगें सततबंध होय. तेमज (मणुडुग के०) मनुष्यद्विक, (जिण के०) जिननाम, (वइर के०) वज्रऋषननाराचसंघयण, (उरलुवंगेसु के०) औदारिकांगोपांग, ए पांच प्रकृतिनो (तित्तीसयरापरमो के०) तेत्रीश सागरोप

म उत्कृष्ट सततबंध होय, तथा (अंतमुहूत्तलहुवि के०) अंतर मुहूर्त्त प्रमाण जघन्यथी पण सततबंध (आउजिणा के०) चार आयुःकर्मनी प्रकृति अने पांच मुं जिननामकर्मनुं पण होय ॥ इत्यक्षरार्थः ॥ ६१ ॥

ए पूर्वोक्त, एकतालीश प्रकृतिनो एक समयथी मांमीने अंतर मुहूर्त्त लगें निरंतरबंध होय जे नणी अध्रुवबंधिनी ठे ते माटें ते पढी अवश्य परावर्त्त थाय.

मनुष्यगति, मनुष्यानुपूर्वी, जिननामकर्म, वज्रऋषननाराचसंघयण अने औदारिकांगोपांग, ए पांच प्रकृतिनो निरंतरपणे बंध होय तो उत्कृष्टथी तेत्रीश सागरोपम पर्यंत होय, जे नणी कोइ अनुत्तर सुरने मनुष्य प्रायोग्य प्रकृतिनो बंध ठे, तेथी ते सदा काल चोथे गुणगणे होय. ते नणी तेहने नव प्रथम समयथी मांमीने तेत्रीश सागरोपमना ठेल्ला समय लगें एनी विरोधिनी नरकद्विक, तिर्यंचद्विक, देवद्विक, वैक्रियद्विक, अने पांच अशुन, संघयणादिकनो नव प्रत्ययेंज बंध न होय तथा जिननामनी विरोधिनी प्रकृति कोइ नथी. तेथी ते पण सम्यक्प्रत्ययें करी, तेत्रीश सागरोपम लगें निरंतर पणे बंधाय. अहींआं पण एक जिननाम विना शेष चार प्रकृतिनो जघन्य बंध समय मात्र ठे. उपरांत परिणाम नेदें विरोधिनी प्रकृति बांधे, ते अपेक्षायें लेवो. तथा पूर्वें चार आयुनो निरंतर बंध कह्यो ठे. ते मतें चार आयुंनो तथा जिननामनो जघन्यपदे पण अंतर मुहूर्त्तमात्र सतत बंध होय, पण ते उत्कृष्टनी अपेक्षायें तो जघन्यबंध मुहूर्त्त विशेष हीन पणे जाणवो. जे नणी अंतर मुहूर्त्तना असंख्याता नेद ठे. माटे जिननामनो जघन्य सतत बंध अद्धाक्षयें उपशम श्रेणीथी पडतां आठमा गुणगणाने उपांत्य नागें आवतो जिननाम बंध करतो आठमुं, सातमुं गुणगणुं स्पर्शी वली श्रेणी चढतां आठमाने अंत्यनागें जिननामनो अबंधक थाय तेनी वचमानो अंतर मुहूर्त्त बंधक होय. ए रीतें उत्कृष्ट तथा जघन्यथी मूल प्रकृति तथा उत्तर प्रकृतिनो स्थितिबंध अने ए स्थितिबंधना स्वामी तथा सादि अनाद्यादिक चार नेद, चौद जीवनेदें स्थितिस्थानकनुं अल्पबहुत्व, योगस्थानकनुं अल्पबहुत्व, स्थितिबंधनुं जघन्य अने उत्कृष्ट आंतरुं तथा अध्रुवबंधिनी प्रकृतिना जघन्य उत्कृष्ट सततबंध कह्या ॥६१॥

हवे अनुनाग एटले रसबंध कहेवानो अवसर ठे, ते माटे तेनी व्याख्या करे ठे. तिहां प्रथम अनुनागनुं स्वरूप कहे ठे. तिहां सर्व जघन्य कर्म वर्गणाने विषे पण सर्व जीवथी अनंत गुणा परमाणु होय. वली एकेका परमाणुआने विषे पण जघन्य पदें सर्व जीवथी अनंत गुणा रसविनाग पलिछेद होय जे रसनो ना

ग केवलीनी बुद्धिरूप शस्त्रें करी पण थाय नहीं, एटले केवली पण जे रसनो विनाग कल्पी न शके, ते अविनाग पलीछेद एने नावाणु कहीयें. तिहां एक द्रव्य परमाणु सर्व जीवथी अनंत गुणा रसाविनागें युक्त तेना सरखाज जे बीजा परमाणु तेनो समुदाय ते समान जातिय माटें प्रथम एक वर्गणा कहीयें. ते थकी वली एक रसाविनागें अधिक परमाणुनो समुदाय तेनी बीजी वर्गणा जाणवी. एम एकेका रसाविनागें चढता चढता परमाणु तेना समुदाय समुदायनी एकेकी वर्गणा करता जइयें, ते अनव्य जीवथी अनंत गुणी अने सिद्धजीवना अनंतमा नाग परिमाण निरंतर वर्गणानो समुदाय ते प्रथमस्पर्द्धक होय. जे नणी प्रथम स्पर्द्धकनी उत्कृष्टी वर्गणायें जे रसाविनाग ठे. ते थकी एक बे त्रण संख्याता तथा असंख्याता अविनाग पलीछेद वधतां परमाणु न पामीयें. परंतु सर्व जीवथकी अनंतगुणे रसाविनागें वधता परमाणु तेनो समुदाय ते बीजा स्पर्द्धकनी प्रथम वर्गणा जाणवी. वली तेथी एक रसाविनागें वधती बीजी वर्गणा. एम वली एकेका रसाविनागें वधती वधती जेवारें अनव्य जीवथी अनंत गुणी वर्गणानो समुदाय थाय, तेवारें बीजो स्पर्द्धक होय. ते बीजा स्पर्द्धकनी उत्कृष्ट वर्गणाथी वली सर्व जीवथकी अनंतगुणा रसाविनागें वधता परमाणुनो समुदाय ते त्रीजा स्पर्द्धकनी प्रथम वर्गणा. ते थकी वली एक रसाविनागें वधता परमाणुना समुदायनी बीजी वर्गणा. एम वली पण अनव्य जीवथकी अनंत गुणी वर्गणानो समुदाय थाय, तेवारें त्रीजो स्पर्द्धक थाय, एवा अनव्य जीव थकी अनंतगुणा स्पर्द्धकें एक अनुनाग एटले रसनुं स्थानक होय. अहीं सघला स्पर्द्धकने आंतरे सर्वजीवथी अनंतगुणी शून्य वर्गणा ठे.

ते हवे सूक्ष्म अग्निकायना जीवथी तेनो कायस्थिति काल असंख्यातगुणो ठे. ते थकी पण असंख्यात गुणां अनुनाग स्थानक थाय. तिहां एक कंमक मात्र अनंतनाग वृद्धि स्थानक (१) पढी बीजो वली असंख्यात नाग वृद्धिस्थानक. (२) एम कंमक मात्र स्थानकने आंतरें, आंतरें, एकेक असंख्यात नाग वृद्धिस्थानक लेतां कंमक वर्ग प्रमाण स्थानकें संख्यात नाग वृद्धिस्थानक. (३) कंमक घन प्रमाण स्थानकें संख्यात गुणवृद्धिस्थानक. (४) कंमकवर्ग वर्ग प्रमाण स्थानकें असंख्यात गुणवृद्धिस्थानक. (५) कंमक घन घन प्रमाण स्थानकें अनंतगुण वृद्धि स्थानक. (६) तेवे कंमकें षट्स्थान वृद्धिपणे होय. अहींयां मूढमतिने समजाववा नणी कल्पनायें सर्व जीवथी अनंत गुणाने एकशो लेखवीयें, ते एकादि

कें वधती अनव्यथकी अनंत गुणाने पांच, लेखवीयें. एटले एकशो उपर एकादिथी पांच पर्यंत प्रथम स्पर्द्धक, पढी बशें उपर एकादिथी पांच पर्यंत बीजो स्पर्द्धक, त्रणशें उपर एकादिथी पांच पर्यंत त्रीजो स्पर्द्धक, चारशें उपर एकादिथी पांच पर्यंत चोथो स्पर्द्धक, एनी स्थापना सविस्तर कर्म पयडीथी जाणवी.

अहींआं रागादिकने वश थको जीव, सिद्धने अनंतमे नागें अने अनव्य थकी अनंतगुणा एटला परमाणुयें निष्पन्न कर्मस्कंधना दलिया जूदा जूदा समय, समय ग्रहण करे ढे. ते दलीयाने विषे परमाणु दीठ कषाय विशेषथकी सर्व जीवथकी अनंत गुणा अनुनाग एटले रस विनागना पलिब्बेद होय. तेनी सक्षेप व्याख्या करी. हवे आगल सूत्रें कहे ढे.

तिव्वो असुह सुहाणं, संकेस विसोहिउ विवज्जयउ ॥
मंदरसो गिरि महिरय, जलरेहा सरिस कसाएहिं ॥६३॥

अर्थ—(असुह के०) अशुन जे पाप प्रकृति तेनो माठो कडवो रस लींबडादिकनो रस जेम सहेजनो एक ठाणीउ ते कटुक रस होय, ते अग्नि उपरें काढतां शेरनो अर्द्धशेर रहे, ते कटुकतर वेठाणीउ रस जाणवो, अने शेरनो त्रीजो नाग रहे, ते त्रिठाणीउ रस, कटुकतम जाणवो अने शेरनो पाशेर रहे, ते (तिव्वो के०) तीव्ररस चोठाणीउ अति कटुकतम होय. तेमज (सुहाणं के०) शुन जे पुण्य प्रकृति तेनो रस, शेलडीनी पेरें मधुर. जेम शेलडीनो एकठाणीउ रस सहेजनो मिष्ट, बेठाणीउ मिष्टतर, त्रिठाणीउ मिष्टतम, चोठाणीउ अत्यंत मिष्टतम. वली तेहीज मीठा रस मांहे एक चलु पाणी घालतां मंद थाय. पशली नर पाणी घालतां मंदतर थाय. करवो, मोरीउ मात्र पाणी घालतां मंदतम थाय. घडो पाणी नेलतां अत्यंत मंदतम थाय. एम कडवामां पण कटुक पणुं मंद, मंदतर, मंदतम, तथा अत्यंत मद होय. एम अनेक नेद रसने बंधें तथा उदयें होय. ए रसनुं तरतम पणुं कषायने तारतम्यपणे होय जेनणी मंद कषायें पाप प्रकृति मंदरस पणे बांधी होय. तेने वली कषायनी तीव्रतायें, तीव्ररस पणे अशुन अध्यवसायें करी नोगवे. तेमज वली शुन अध्यवसायें करी नोगवे तो जे प्रकृति तीव्ररसपणे बांधी होय, तेने पण मंदरसें करी नोगवे, एटले ब्याशी पाप प्रकृतिनो उत्कृष्ट कटुकरस चोठाणीउ ते (संकेस के०) अत्यंत संक्लेशें तीव्र कषायोदयें करी अत्यंत कटुक चोठाणीउ रस बंधाय अने शुन बेंतालीश पुण्यप्रकृतिनो रस, कषायोदय मंदतारूप

(विसोहिउ के०) अतिविशुद्धाध्यवसायें करी चोगणीउ रस अति मीगे बंधाय, अने (विवज्जयउ के ०) एथी विपरीत पणे एटले संक्लेशनी मंदतायें अने विशुद्धि नी वृद्धियें ब्याशी पाप प्रकृतिनो (मंदरसो के०) मंद, मंदतर, मंदतम, अने अ तिमंदतमरस बंधाय अने विशुद्धाध्यवसायनी हाणीयें मलिनपरिणामनी वृद्धि यें बेंतालीश पुण्यप्रकृतिनो रस, मंद, मंदतर, मंदतम बंधाय. तथा तेमज शुन प्र कृतिनी उद्वर्त्तना पण विशुद्धाध्यवसायें होय अने अशुनप्रकृतिनी उद्वर्त्तना संक्ले शाध्यवसायें होय. तेम शुनप्रकृतिनी रसापवर्त्तना शुनपरिणामें होय अने अशुन प्रकृतिनी रसापवर्त्तना अशुनपरिणामें होय.

(गिरि के०) पर्वतनी राय सरखो अनंतानुबंधीउ क्रोध, तेम अनंतानुबंधी आ मानादिक पण लेवा. तेना उदयें अतिसंक्लिष्ट मलिन परिणामी जीव, पाप प्रकृतिनो अतिकटुक चोगणीउ रस बांधे तो पण बेंतालीश पुण्यप्रकृतिनो बेगणी उ रस बांधे. जे नणी शुन प्रकृतिनो एकगणीउ रस बंधाय नहीं, माटें बेगणी उ कह्यो, अने उदयमां एकगणीउ पण होय. ते वारें अतिसंक्लेशें करी बेगणीउ रस, तेने एकगणीउ करी उदीरे वेदे.

तथा (महि के०) तलावमध्यें पाणी शुकाणा पठी माटीनी राय ते सरी खो अप्रत्याखनीउ क्रोध जाणवो. तेमज अप्रत्याख्यानीआ मानादिक त्रण पण लेवा. तेना उदयें संक्लेशपरिणामें शुन तथा अशुन प्रकृतिनो रस त्रिगणीउ बंधा य पण एटलुं विशेष जे, चढते परिणामें शुन प्रकृतिनो रस बंधाय, अने पडते परिणामे अशुन प्रकृतिनो रस बंधाय. एक स्थानकमध्यें पण चढतां पडतां रसस्थानक असंख्यातां असंख्यातां ठे.

तथा (रय के०) रज एटले धूलमांहेली रेखा ते सरखो प्रत्याख्यानीउ क्रोध जाणवो. तेमज प्रत्याख्यानीआ मानादिक त्रण पण लेवा. तेना उदयथी पाप प्रकृतिनो बेगणीउ अने पुण्यप्रकृतिनो चोगणीउ रस बंधाय, तेमध्यें मंदरस बांधे.

तथा (जलरेहासरिस के०) पाणीनी रेखा सरखो संज्वलन क्रोध तेमज मा नादिक पण लेवा. एना उदयें पुण्यप्रकृतिनो तीव्र चोगणीउ रस बंधाय अने पा पप्रकृतिनो एकगणीउ रस बंधाय. ए रीतें अशुन प्रकृतिनुं अनंतानुबंधीये अप्र त्याख्यानीए, प्रत्याख्यानीए तथा संज्वलनें (कसाएहिं के०) कषायें करी अनुक्र में चोगणीउ, त्रिगणीउ, बेगणीउ, एकगणीउ, रसबंध थाय. तथा शुन प्रकृतिनो

संज्वलने प्रत्याख्यानीए, अप्रत्याख्यानीए. अनंतानुबंधीए, करी चोगणीआदिक अनुक्रमें रस बंधाय, ते कहे ले ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ६३ ॥

चउ ठाणाई असुहो, सुहन्नहा विग्घ देस आवरणा ॥
पुम संजलणिग ङ ति चउ, ठाण रसा सेस ङगमाई ॥ ६४ ॥

अर्थ-(चउठाणाईअसुहो के०) गिरिरेखा समान अनंतानुबंधीआ कषायें करीने अशुन प्रकृतिनो रस चोगणीउं बंधाय, पृथवीरेखा समान अप्रत्याख्यानीया कषायें करी अशुन प्रकृतिनो रस, त्रिगणीउं बंधाय, रजरेखा समान प्रत्याख्यानीया कषायें करी अशुन प्रकृतिनो रस बेगणीउं बंधाय, जलरेखा समान संज्वलन कषायें करीने अशुनप्रकृतिनो रस एक गणीउं बंधाय, अने (सुहन्नहा के०) शुन प्रकृतिनो रस, एथी अन्यथा कहेवो, एटले जलरेखा अने रजोरेखा समान संज्वलन तथा प्रत्याख्यानीआ कषायें करीने शुनप्रकृतिनो रस चोगणीउं बंधाय, पृथवीरेखा समान अप्रत्याख्यानीआ कषायें करीने शुन प्रकृतिनो रस त्रिगणीउं बंधाय, गिरिराय समान अनंतानुबंधीया कषायें करीने शुनप्रकृतिनो रस बेगणीउं बंधाय. अने एकगणीउं रसतो शुन प्रकृतिनो नज बंधाय. हवे जे प्रकृतिनो जेटले प्रकारें रस बंधाय, ते कहे ले.

(विग्घ के०) पांच अंतराय, (देसआवरणा के०) केवलद्विक वर्जीने शेष चार ज्ञानावरणीय तथा त्रण दर्शनावरणीय, एवं सात. (पुम के०) पुरुषवेद, (संजलण के०) चार संज्वलना कषाय, एवं सत्तर प्रकृतिनो रस (इग के०) एकगणीउं, (ङ के०) बेगणीउं, (ति के०) त्रिगणीउं, (चउठाणरसा के०) चार गणीउं रस पण बंधाय. एटले ए सत्तर प्रकृतिनो रस, चार प्रकारें बंधाय. तेमध्यें एनो एकगणीउं रस तो नवमा गुणठाणाना संख्याता नाग गया पठी बंधाय. अने तेथी नीचेना गुणठाणे बेगणीआ, त्रिगणीआ, अने चोगणीआ रस बंधाय अने ए सत्तर प्रकृतिथी (सेसङगमाई के०) शेष रही जे एकशो त्रण प्रकृति, तेनो बेगणीआदिक रस बंधाय पण एकगणीउं रस, न बंधाय. जे नणी तेमध्यें अशुन पाप प्रकृति पांशठ ले, ते तो नवमे गुणठाणे बंधातीज नथी, तेथी तेनो एकगणीउं रस न होय. एमांथी जो पण केवल ज्ञानावरणीय तथा केवल दर्शनावरणीय, ए बे प्रकृतिनो नवमे अने दशमे गुणठाणे बंध ले. तथापि ते बे प्रकृति, सर्व घातिनी ले तेनो रस, एकगणीउं न होय अने बेंतालीश पुण्य प्रकृतिनो रस तो एकगणीउं नज बंधाय. जे

नणी असंख्याता लोकाकाश प्रदेश प्रमाण संक्लेशनां स्थानक बे तेथकी कांइ एक जा जेरां विशुद्धिनां स्थानक बे. ए बे यद्यपि तुल्य बे तथापि तेमांहे विशुद्धि स्थानक कां इक अधिक बे जे माटें उपशमश्रेणीयें विशुद्धि स्थानकें चडे बे अने पडतो पण ते टलेज संक्लेश स्थानकें पाबो उतरे बे एटले तुल्य बे. चडवानां जेटलां विशुद्धि स्थान क, तेटलांज उतरतां संक्लेशस्थानक होय, जेम प्रासाद उपर चडवानां जेटलां पगथी आं तेटलांज उतरवानां पण पगथीआं होय पण क्षपकश्रेणीना जे विशुद्धिना अ ध्यवसाय स्थानकें चडे बे, ते पाबो उतरतो नथी. तेथी संक्लेशस्थानक तेटलां उंबां होय, अने विशुद्धिस्थानक अधिक बे तिहां अतिविशुद्धिस्थानकें शुन प्रकृ तिनो चोगणीउ रस बंधाय अने अत्यंत संक्लेशस्थानकें शुन प्रकृतिनो बंध न होय, अने नरकप्रायोग्य बांधतां अत्यंत संक्लेशें वैक्रिय, तैजस अने कार्मणादि क जे शुन प्रकृति बंधाय बे ते पण तथा स्वनावें बेगणीआरसें बंधाय, पण ए कगणीआ रसें न बंधाय, तथा पूर्वे संज्वलन कषायोदयें करी पाप प्रकृतिनो एकग णीउ रस बंधाय. एम कह्युं ते पण स्थूलनयें कह्युं. जे नणी संज्वलने उदयें पाप प्रकृतिनो बेगणीउ पण रसबंध होय. ए रीतें स्थानक, प्रत्यय, प्ररूपणा कही ॥ ए४॥

हवे शुनाशुन रसनुं स्वरूप कहे बे.

निबु इस्कुरसो सहजो, छ ति चउ नाग कढि इक्क नागं तो ॥
इग गणाई असुहो, असुहाण सुहो सुहाणं तु ॥ ए५ ॥

अर्थ-(निबुइस्कुरसोसहजो के०) लींबडानो रस सहेजें कडवो होय अने इक्षु एटले शेलडीनो रस, सहेजें स्वनावें मीगे होय तेम पापप्रकृतिनो रस सहेजें क डवो अति उद्वेगहेतु होय, ते एकगणीउ कहीयें अने बेंतालीश पुण्य प्रकृतिनो रस सहेजें इष्ट आनंदहेतु होय ते एकगणीउ कहियें. तिहां दृष्टांत कहे बे. (छतिचउनागकढिइक्कनागंतो के०) बे नागनो रस काढी उकालीने एक नागनो राखीयें तेने बे गणीउ कहीयें, त्रण नागनो काढी उकालीने एक नागनो राखी यें तेने त्रिगणीउ कहियें अने चार नागनो काढी उकालीने एकनागनो राखियें, तेने चोगणीउ कहीयें. एटले लींबडाना सहेजना एक शेर रसने अग्नि उपर का ढतां अर्धशेर रहे ते घणो कडवो होय. तेम ब्याशी पापप्रकृतिनो बे गणीउ रस कटुकतर अनिष्टतर होय, शेलडीनो रस काढतां एकगणीउ अर्द्धशेर मात्र रहे ते मिष्टतर इष्टतर,होय. ते बे गणीउ रस जाणवो तथा जे काढतां शेरनो त्रीजो

नाग मात्र रहे ते त्रिगणीउं रस होय ते ब्याशी पाप प्रकृतिनो रस कटुकतम, अनिष्टतम होय. बेंतालीश पुण्य प्रकृतिनो रस मिष्टतम इष्टतम चित्त प्रसन्नतानो हेतु होय. ते त्रिगणीउं रस जाणवो तथा जे रस काढतां थकां शेरनो पा शेर मात्र रहे ते चोगणीउंरस होय, ते पुण्य प्रकृतिनो तो शुन्न अत्यंत मिष्टतम, अत्यंत इष्टतम, आनंदहेतु होय. अने पाप प्रकृतिनो अत्यंत कटुकतम, अत्यंत अनिष्टतम, महाउद्वेग हेतु चोगणीआ रसनो उदय होय. ए मूढमतिने समजाववा हेतुयें दृष्टांत कह्या. अन्यथा कर्मदलने विषे तो अनंत रसन्नेद होय बे.

(इगहाणाईअसुहो के०) ए रीतें अशुन्न प्रकृतिनो रस, एकगणीआदिक ते (असुहाण के०) अशुन्न पणे वधतो लेवो अने (सुहोसुहाणंतु के०) शुन्न प्रकृतिनो रस, शुन्न नीगे वधतो जाय माटें शुन्नपणे वधतो लेवो. अहींआं तु शब्दें विशेषण कहे बे.

पुरुषवेदादिक सत्तर प्रकृतिना एकगणीआ रस स्पर्द्धक असंख्याता बे. तेमध्यें जघन्य रस स्पर्द्धक पण असंख्याता बे. तेह सहज जघन्यरस स्पर्द्धक ते लींबडाना रस समान जाणवा. तेथकी बीजो रस स्पर्द्धक अनंतगुण रसाविन्नागें अधिक जाणवो. एम अनंतगुण रसाविन्नागें वधतां वधतां असंख्याता रस स्पर्द्धक एकगणीआ रसना होय. ते थकी अनंतगुणवीर्य वाला बे गणीआ रसना असंख्याता स्पर्द्धक होय, तेथकी अनंतगुणवीर्यवाला त्रिगणीआ रसना असंख्याता रस स्पर्द्धक होय, तेथकी अनंतगुणवीर्यवाला चोगणीआ रसना असंख्याता रसस्पर्द्धक होय.

केवलज्ञानावरणीय प्रमुख सर्व घातिनी वीश प्रकृतिना रस स्पर्द्धक, एकगणीआ न होय अने देशघातिनी प्रकृतिना चउगणीआ तथा त्रिगणिआ रसवाला ते सर्वघातिआ रसस्पर्द्धक जाणवा. अने बेगणीआ रसवाला पण केटलाएक उत्कृष्ट रसवाला ते सर्व घातिआ जाणवा. तथा मंद रसवाला ते देशघातीआ रस स्पर्द्धक जाणवा तथा एकगणीआ रसवाला जे स्पर्द्धक होय, ते देशघाति ज जाणवा. ते स्पर्द्धक स्वरूपें कडानी पेरें स्थूल बिड्वंत होय अने कोइएक कंबलना विवरनी पेरें मध्य बिड्वंत होय अने कोइएक, सूक्ष्मवस्त्रनी पेरें बिड्वंत लूखा मलीन होय अने जे सर्वघातीआ रस स्पर्द्धक होय, ते त्रांबाना पत्रानी पेरें निश्बिड्वंत घृतनी पेरें चीकणा होय. ते अबरखनी परें निर्मल एवा जे ज्ञानादिक आत्माना गुण आवरवा योग्य बे. ते सर्व आवरे.

अने बेंतालीश पुण्यप्रकृतिनो रस जघन्य पणे एक गणीउं न होय माटें बे गणीउं सहेजें शेलडीना रस सरखो जघन्य रसस्पर्द्धक होय तेथी अनंतगुण वृ

द्धिगत रसें बीजो स्पर्द्धक एम अनंते अनंतगुणवृद्धियें बेगणीए रस स्पर्द्धकें असंख्यात स्थानक पूर्ण थाय. तेथकी वली अनंतगुणवीर्य वधतां वधतां असंख्याता रस स्पर्द्धक त्रिगणीआना जाणवा तेथकी अनंतगुण वीर्य वृद्धिगत चउगणीआ रसस्पर्द्धक, तेपण असंख्याता जाणवा. ए सौ अघातिआ जाणवा. एम घाति तथा अघाति ए एक स्थानकादिक रसनी अपेक्षायें होय ॥ इति ॥६५॥

॥ अथोत्कृष्टरसबंधस्वामिन आह ॥ हवे उत्कृष्ट रसबंधना स्वामी देखाडे ले.

तिव्व मिग थावरायव, सुर मिछा विगल सुहुम निरय तिगं ॥
तिरि मणु आउ तिरिनरा, तिरिछग लेवठ सुर निरया ॥ ६६ ॥

अर्थ-(मिगथावरायव के०) एकेंद्रियजाति, स्थावरनाम अने आतपनाम, ए त्रण प्रकृतिनो (तिव्व के०) तीव्र एटले चोगणीउं उत्कृष्ट रसबंध (सुरमिछा के०) ईशान देवलोक पर्यंतना मिथ्यात्वी देवताने होय, ते मध्यें आतपनामकर्म, पुण्य प्रकृति ले. अने तेनो बंध मिथ्यात्वेंज ले तथा तेनुं संक्लेशपणुं अने विशुद्धपणुं ए बेहु मिथ्यात्वेंज ले. जे नणी आतपनो तीव्ररस बंध, मिथ्यात्वी देवताने तत्प्रायोग्य विशुद्धियें लेवो. बीजी प्रकृतिना बंधक अति संक्लिष्ट लेवा, जे नणी एवा संक्लेशें वर्त्तता जो मनुष्य तथा तिर्यंच होय तो ते नरक प्रायोग्य बांधे, तेथी ते न लीधा तथा नारकी अने सनत्कुमारादिक देवलोकना देवता तो नव प्रत्ययेंज एकेंद्रिय प्रायोग्य ए प्रकृति नथी बांधता, तेथी ते पण एना अधिकारी नथी. अने सौधर्म, ईशानना सम्यक्दृष्टि देवता तो मनुष्य प्रायोग्य बांधे ले. तेथी ते पण एना बंधाधिकारी नहीं अने नवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी. सौधर्म अने ईशान देवलोकना मिथ्यात्वी देवता, आतपनी लघुस्थिति बांधतां एकेंद्रियजाति तथा स्थावरनाम कर्मनी उत्कृष्ट स्थिति बांधतां तीव्ररसें बांधे.

(विगल के०) विकलत्रिक, (सुहुम के०) सूक्ष्म, अपर्याप्त अने साधारण, ए सूक्ष्मत्रिक, (निरयतिगं के०) नरकत्रिक अने (तिरिमणुआउ के०) तिर्यंचायु अने मनुष्यायु, ए अगीआर प्रकृतिना उत्कृष्टरस बंधना अधिकारी सन्निआ पंचेंद्रिय पर्याप्ता मिथ्यादृष्टि संख्याता वर्षायुवाला तत्प्रायोग्य संक्लेशें वर्त्तता एवा (तिरिनरा के०) मनुष्य अने तिर्यंच होय. जे नणी ए मांहेली पहेली नव प्रकृतिनो बंध, देवता नारकीने तो नव प्रत्ययेंज नथी, अने मनुष्य तिर्यंचायुनो जो पण देवता नारकीने बंध ले, तो पण एनी उत्कृष्टी स्थिति, त्रण पल्योपम प्र

माण बांधतां उत्कृष्ट रस बंधाय. तेवो बंध तो देव तथा नारकीने युगलीआना आयुनो बंध नथी तेथी न बंधाय अने सास्वादन गुणठाणे पण घोलना परिणामे ए वडी स्थिति न बंधाय, तेथी ते सास्वादन विना मिथ्यात्वीज उत्कृष्ट रसना बंधाधिकारी लीधा. तथा युगलीआ पण उत्कृष्ट त्रण पल्योपम मनुष्यायु न बांधे, माटें ते पण न लीधा अने मिश्रादिक गुणठाणे मनुष्य तथा तिर्यंच संख्याता वर्षायु वालाने पण ए बे आयुनो बंध नथी ते माटें मिथ्यात्वीज लीधा तथा अति संक्लिष्ट आयुःकर्म न बांधे, तेथी तत्प्रायोग्य संक्लेशें वर्त्तताज ग्रहण कस्या एटले चौद प्रकृतिना उत्कृष्ट रस, बंधाधिकारी कह्या अहीं नरकद्विकनो उत्कृष्टरस सर्व संक्लिष्ट मनुष्य तिर्यंच मिथ्यात्वी बांधे, ते अति संक्लिष्टपणुं उत्कृष्ट बे समय लगें रहे, अने शेष ठ प्रकृतिना बंधक तत्प्रायोग्य संक्लिष्ट परिणामी लेवा,जे नणी अति संक्लिष्ट जीव, नरक प्रायोग्य बांधे ठे, तथा नरकायु पण अति संक्लेशें बंधाय ठे.

(तिरिडुग के०) तिर्यंचगति, तिर्यंचानुपूर्वी, ए तिर्यंचद्विक अने (ठेवठ के०) ठेवठुं संघयण, ए त्रण प्रकृतिनो उत्कृष्ट रसबंध तो अतिसंक्लिष्टें मिथ्यात्वी (सुर के०) देवताने होय, जे नणी एवा संक्लिष्ट परिणामें वर्त्तता मनुष्य, तिर्यंच तो नरक प्रायोग्य बांधे अने देवताने नव प्रत्ययें नरक प्रायोग्यनो बंध नथी, तेथी ते ठेकाणे ए तिर्यंच गति प्रायोग्य बांधे, तेथी मिथ्यात्वी देवता तथा मिथ्यात्वी (निरया के०) नारकी एना बंधाधिकारी लीधा. तेमध्यें पण ठेवठा संघयणना उत्कृष्ट रसबंधना स्वामी सनत्कुमारादिकथी मांमीने सहस्रारांत देवता होय जे नणी जुवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी अने सौधर्म, ईशान देवलोकना देवता, मिथ्यात्वें एवे संक्लिशें वर्त्तता एकेंद्रिय प्रायोग्य नामकर्मनी प्रकृति बांधे, परंतु ते ठेवठा संघयणना अनुत्कृष्ट रसबंधक होय, तेथी ते न लीधा. तथा सम्यक्दृष्टि देवने ए त्रण प्रकृतिनो बंध नथी, तेनणी ते पण न लीधा ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ६६ ॥

विउवि सुरा हारग डुग, सुख गइ वन्न चउ तेय जिण सायं ॥
सम चउ परघा तस दस, पणिंदि सासुच्च खव गाउ ॥ ६७ ॥

अर्थ—(विउवि के०) वैक्रियशरीर, वैक्रियअंगोपांग, ए वैक्रियद्विक तथा (सुराहारगडुग के०) देवगति, देवानुपूर्वी, ए सुरद्विक अने आहारकद्विक तथा (सुखगइ के०) शुनखगति, (वन्नचउ के०) शुन्न वर्ण चतुष्क, (तेय के०) तैजस, कार्मण, अगुरुलघु अने निर्माण, ए तैजसचतुष्क,(जिण के०) जिननामक

मी, (सायं के०) शातावेदनीय, (समचउ के०) समचतुरस्रसंस्थान, (परघा के०) पराघात, (तसदस के०) त्रसदशक, (पणिंदि के०) पंचेंद्रियजाति, (सासुच्च के०) श्वासोच्छ्वास, उच्चैर्गोत्र, ए बत्रीश पुण्यप्रकृतिनो उत्कृष्ट रस बंधक (खवगाउ के०) क्षपक एटले क्षपकश्रेणीयें चढतो मनुष्य तेने क्षपक कहीयें. जेम राज्य योग कुंवरने राजा कहीयें, तेम चारित्र मोहनीय क्षपणी क्षपकश्रेणी जेणे आ रंजी, तेने क्षपक कहीयें, ते मध्यें पण शातावेदनीय, उच्चैर्गोत्र अने त्रसद शक मांहेली यशःकीर्त्ति, ए त्रण प्रकृतिनो उत्कृष्ट रस बंधक सूक्ष्म संपरायने च रम जाग वर्त्ति क्षपक होय. जे जणी ए त्रण प्रकृतिना बंधकमांहे एहिज अति विशुद्धि छे अने पुण्यप्रकृतिनो उत्कृष्ट रस बंध अतिविशुद्धियें होय. जेवारें आ पणा रस बंधस्थानक अनंत गुणविशुद्धियें होय, तेवारें ए प्रकृति बंधाय तेजणी कही. तथा ए त्रण प्रकृतिविना शेष रही जे उंगणत्रीश पुण्यप्रकृति, तेना उत्कृष्ट रसबंध अपूर्व करणना सात जागमध्यें छठे जागें त्रीश प्रकृतिनो बंध विछेद थाय छे. तेमध्यें एक उपघात विना शेष उंगणत्रीश प्रकृतिने चरम बंधे क्षपकने अति विशुद्धि जणी चोगणिउ रस बंधाय ए उंगणत्रीश प्रकृतिना बंधक मांहे एहज अति विशुद्ध छे तेथी क्षपक मनुष्य, एना उत्कृष्ट रसबंधना स्वामी जाणवा. जे जणी देवता, नारकी तथा तिर्यंचने आठमुं गुणठाणुं न होय, तेथी ते एना अ धिकारी न कह्या. अने जो पण उपशमश्रेणीयें अपूर्वकरण तथा सूक्ष्मसंपराय, ए बे गुणठाणां होय छे अने तिहां ए प्रकृतिनो बंध विछेद पण संजवे तथापि क्षपकश्रेणीना अध्यवसायस्थानकथकी कषायनी सत्ता सहित उपशमश्रेणीना अ ध्यवसाय स्थानक विशुद्धिनी अपेक्षायें अनंतगुणांहीन होय अने शुज प्रकृति नो सर्वोत्कृष्ट रस बंधतो अतिविशुद्धियें बंधाय छे. तेथी क्षपकश्रेणीना मनुष्य ज एना उत्कृष्ट रसना बंधाधिकारी कह्या. एवं (४९) प्रकृतिना उत्कृष्ट रस बंधस्वामी कह्या ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ६७ ॥

तमतमगा उज्जोयं, सम्मसुरा मणुय उरल डुग वइरं॥
अपमत्तो अमराउ, चउ गइ मिछाउ सेसाणं ॥ ६८ ॥

अर्थ-(तमतमगा के०) तमतमा एवे गोत्रें अने माघवती नामें सातमी नर क पृथवी, तेना नारकी तथाविध अकाम निर्जरायें करी, कर्म खपावतां थकां विशुद्ध परिणामें करी सम्यक्त्व पामवाने अर्थे यथा प्रवृत्तिकरण करे तिहां अपूर्व

करणें करी अनंत गुणविशुद्धियें बहुल कर्म खपावतां ग्रंथिनेदे अने अनिवृत्तिक रणें करी मिथ्यात्वनी स्थितिना बे नाग करे, ते अंतर करणथी प्रथम स्थिति, ने चरम समयें जेथकी आगले समयें सम्यक्त्व लेशे ते मिथ्यात्व स्थितिने चरम स मयें (उज्जोयं के०) उद्योतनाम कर्मनो उत्कृष्ट रस बंध करे, तथा बीजा देव ता नारकी तो एवी विशुद्धियें वर्त्तता मनुष्य प्रायोग्य बांधे तथा तिर्यंचतो मनु ष्य अने देवता प्रायोग्य बांधे अने सातमी नरकना नारकीने तो नव प्रत्ययें देव तथा मनुष्य प्रायोग्यनो बंध नथी, ते स्थानकें ए उद्योतनामनी पुण्य प्रकृति ति र्यंचगति सहचारी बांधे. एना बंधकमांहे एहज अत्यंत विशुद्धि छे.

(सम्मसुरा के०) सम्यक्त्वदृष्टि देवता तो (मणुयउरलडुग के०) मनुष्यद्वि क तथा औदारिकद्विक अने (वइरं के०) वज्रऋषननाराच संघयण, ए पांच पुण्यप्रकृति मनुष्यगति प्रायोग्य अति विशुद्ध सम्यक्दृष्टि देवता, उत्कृष्टरसें बां धे, तेथी ते एना स्वामी जाणवा. जे नणी तिर्यंच तथा मनुष्य एवी विशुद्धियें वर्त्ततो देव प्रायोग्यज बांधे अने देवता एवी विशुद्धियें मनुष्य प्रायोग्यज बांधे. तेथी देवताज एना बंधाधिकारी लीधा अने मिथ्यात्वीने पण एवी विशुद्धि न हो य तेथी सम्यक्दृष्टि देवताने नंदीश्वरें चैत्यवंदन, जिन कल्याणक महोत्सवादिक, जिनव्याख्यान श्रवणादिक अनेक सम्यक्त्व उज्ज्वलतानां कारण होय अने नारकी सम्यक्दृष्टिने पण एवा कारणने अनावें ए पांच प्रकृतिनो उत्कृष्ट रस बंध न हो य, तेथी ते एना उत्कृष्टरसबंधाधिकारी न कह्या. परंतु देवताज कह्या.

(अपमत्तो के०) अप्रमत्त गुणस्थानकें वर्त्ततो साधु प्रमत्त गुणठाणाथी (अ मराउ के०) देवायु बंध करतो अप्रमत्तें चढे ते अतिविशुद्धियें देवायुनी उत्कृ ष्टस्थिति तेत्रीश सागरोपमनी बांधतो उत्कृष्टरस पणे बांधे देवायुनी उत्कृष्टी स्थिति अने उत्कृष्टरस ए बेहु अतिविशुद्धपणे बंधाय, देवायुना बंधकमांहे एहि ज अति विशुद्धबंधस्थानक छे एम बेंतालीश पुण्य प्रकृति अने चौद पाप प्रकृ ति मली छप्पन्न प्रकृतिना उत्कृष्ट रसबंधस्वामी कह्या.

(चउगइमिछाउसेसाणं के०) ते थकी शेष ज्ञानावरणीय पांच, दर्शनावरणी य नव, कषाय शोल, मिथ्यात्वमोहनीय, नोकषाय नव, प्रथम संघयण विना शे ष पांच संघयण, प्रथम संस्थान विना शेष पांच संस्थान, अशुनवर्णचतुष्क, अस्थिर षट्क, उपघात, कुखगति, नीचैर्गोत्र, पांच अंतराय. एवं अडशठ प्रकृ तिना उत्कृष्ट रसबंधस्वामी चार गतिना पंचेंद्रिय पर्याप्ता मिथ्यादृष्टि जीव जाण

वा, ते मांहे पण वचला संघयण चार अने वचला संस्थान चार, स्त्रीवेद, पुरुष वेद, हास्य, रति, ए बार प्रकृति विना शेष छप्पन्न प्रकृतिना उत्कृष्ट बंधाध्यवसाय स्थानकमांहे जे अत्यंत मलिन संक्लिष्ट अध्यवसायस्थानक होय, तिहां उत्कृष्ट रस बंध करे अने हास्य तथा रतिनो उत्कृष्टरस मध्यम संक्लेशें बंधाय जे नणी उत्कृष्टसंक्लेशें तो वेदमध्यें नपुंसकवेद अने हास्यादिकमध्यें शोक तथा अरति बांधे छे. संस्थानमध्यें हुंमसंस्थान अने संघयणमध्यें छेवढुं संघयण ए उत्कृष्टरसें बंधाय, तेथी ए बार प्रकृतिनो रसबंध मध्यम संक्लेशें होय तेथी ए बार प्रकृतिना उत्कृष्टरसबंधाधिकारी मध्यम संक्लेशी चतुर्गतिक जीव जाणवा. एम अडशठ प्रकृतिना उत्कृष्ट रस बंधाधिकारी कह्या अने छप्पन्न प्रकृतिना पूर्वें कह्या. एवं सर्वे मली एकशो ने चोवीश प्रकृति थइ. तेना उत्कृष्ट रस बंधाधिकारी कह्या. ते मध्यें बेंतालीश पुण्य प्रकृति अने ब्याशी पापप्रकृति जाणवी ॥ इति० ॥ ६८॥

हवे ए एकशो ने चोवीश प्रकृतिना जघन्यरस बंधाधिकारी कहे छे. जे नणी उत्कृष्टरस तथा जघन्य रस केवायकी वचलां सर्व मध्यम रसस्थानक सुखें जाण्यां जाय, ते नणी जघन्यरस बंधना स्वामी कहे छे ॥

थीण तिगं अण मिछं, मंद रसं संजमुम्मुहो मिछो ॥
बिय तिय कसाय अविरय, देस पमत्तो अरइ सोए ॥ ६ए ॥

अर्थ--(थीणतिगं के०) थीणद्धीत्रिक, (अण के०) अनंतानुबंधीआ क्रोधादिक चार, (मिछं के०) मिथ्यात्वमोहनीय, ए आठ प्रकृतिनो (मंदरसं के०) मंद एटले अत्यंत जघन्यरसना बंधाधिकारी (संजमुम्मुहो के०) जे मनुष्य चारित्रने सन्मुख थयलो एटले जे मनुष्य आगले समयें संयम सहित सम्यक्त्व पामशे एवो अनिवृत्ति करणना चरम समयवर्त्ति (मिछो के०) मिथ्यात्वी मनुष्य जाणवो. जे नणी ए आठ प्रकृतिना बंधकमांहे एवी विशुद्धि बीजा स्थानकें न पामियें, जो पण मिथ्यात्वीथी सास्वादननीना अध्यवसाय उज्ज्वल छे, तथापि सास्वादन गुणठाणुं तो पडतां होय छे. ते अपेक्षायें संक्लिष्ट कहीयें, तेणे थीणद्धीत्रिक अने अनंतानुबंधीआ चारनो बंध, सास्वादने मध्यमरसें बंधाय पण मंदरसें तिहां न बंधाय. ए आठ पाप प्रकृति छे. तेनणी एनो जघन्यरस विशुद्धियें बंधाय ते विशुद्धाध्यवसाय तो ग्रंथिनेद करतां होय तेमांहे पण वली चारित्र सहित सम्यक्त्व पडिवजनारने विशुद्धि अधिक होय छे. तेथी तेनेज लीधा अने सम्यक्त्व लह्या

पडी तो ए आव प्रकृतिनो बंध नज होय, तेमाटें सम्यक्त्व प्राप्तिथी पूर्वलो सम य कह्यो तथा चारित्र सहित सम्यक्त्व अंगीकार करवाना अधिकारी मनुष्यज होय, तेथी मनुष्यज लीधा पण देवादिक न लीधा.

(बिय के०) बीजा अप्रत्याख्यानावरण कषायमोहनीयनी चोकडीना ज घन्यरस बंधाधिकारी जे आगले समयें संयम पडिवजशे, एवा (अविरय के०) अविरति गुणस्थानकनें चरम समयवर्त्ति मनुष्य जाणवा. एना बंधकमांहे ए थ की अधिक विशुद्धिस्थानक बीजुं कोइ नथी. अहींआं कोइ एक देशविरति संय मने सन्मुख थयेलो जीव पण कहे ले. तथापि देशविरति संयमने सन्मुखनी वि शुद्धिथकी सर्व विरति संयमने सन्मुखनी विशुद्धि अधिकी होय. एम बहुश्रुतें विचारवुं, तत्व केवलीगम्य. एनो मंदरस, अतिविशुद्धियें बंधाय ले.

तथा (तियकसाय के०) त्रीजा कषायनी चोकडी एटले प्रत्याख्यानावरण चा र कषाय मोहनीयनो मंदरसबंध, संयमने सन्मुख थयेलो जे आगलें समयें चारित्र अवश्य पामशे, एवो (देसे के०) देशविरति मनुष्य जाणवो जे नणी ए ना बंधक मांहे एहिज अत्यंत विशुद्धि ले अहींआं संयम सन्मुख कह्यो माटें ति र्यंच न होय, तथा प्रमत्तादिक गुणगणे प्रत्याख्यानीआनो बंध नथी, ते नणी देशविरति कह्यो तथा अप्रत्याख्यानीआनो बंध अविरतिने होय, ते नणी ते न लीधा संयमसन्मुख अविरति सम्यक्दृष्टिथी पण संयमसन्मुख देशविरति स म्यक्दृष्टिनी अनंतगुण विशुद्धि होय, ते माटें अप्रत्याख्यानीआना मंदरसथी प्र त्याख्यानीआनो मंदरस हीन होय.

(पमत्तो के०) प्रमत्त गुणस्थानक वर्त्ति साधु जे आगले समयें अप्रमत्त था शे एवो साधु, प्रमत्त गुणगणाना चरम समयें एक (अरइ के०) अरतिमोह नीय, बीजी (सोए के०) शोकमोहनीय, ए बे प्रकृतिनो जघन्यरस बंधाधिकारी होय जे नणी ए बे प्रकृतिना बंधक मांहे एहिज अति विशुद्धि होय. एवी बीजे स्थानकें विशुद्धि न होय, अप्रमत्तादिकने विषे ए बे प्रकृतिनो बंध नथी, माटें प्र मत्तज कह्यो. एवं अढार प्रकृति थइ ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ६ए ॥

अपमाइ हारग डुगं, डुनिद्द असुवन्न हासरइ कुछा ॥
नयमुवघाय मपुवो, अनियट्टी पुरिस संजलणे ॥ ७० ॥

अर्थ-(अपमाइ के०) अप्रमादि साधु अप्रमत्त गुणगणा थकी प्रमत्तें आव

तो होय, एटले आगले समयें प्रमत्त अवश्य थशे एवो अप्रमत्त साधु, संक्लिष्ट थको (हारगडुगं के०) आहारक शरीर अने आहारकांगोपांग, ए बे नामकर्मनी प्रकृतिनो जघन्यरसबंध करे. जे नणी ए बे पुण्य प्रकृति छे, माटे एनो मंदरस संक्लेशें बंधाय. आहारकना बंधकमांहे एवो संक्लेश बीजे कोइ स्थानकें नथी, ते माटें. तथा मिथ्यात्वादिक प्रमत्तांत गुणठाणे तो ए आहारक द्विकनो बंधज नथी, अने सातमे तथा आठमे गुणठाणे एनो बंध छे ते गुणठाणां तो एथी विशुद्ध छे. केमके प्रमत्तथी अप्रमत्तें चढतो पण विशुद्ध छे. एवं वीश प्रकृति थइ.

(डुनिद्द के०) एक निद्रा, बीजी प्रचला, ए निद्राद्विक. (असुवन्न के०) अशुभ वर्ण, अशुभगंध, अशुभरस अने अशुभस्पर्श, (हासरइकुच्छा के०) हास्य, रति अने जुगुप्सा तथा (नयमुवघाय के०) जय मोहनीय अने उपघात, ए अगीआर प्रकृति थइ. तेमां नव प्रकृतिनो मंदरस तो (मपुवो के०) अपूर्वकरणनामा आठमुं गुणठाणुं तेना सात नाग छे, ते मांहेला छठा नागने प्रांतें चरम समयें जघन्यरस बांधे अने निद्रा तथा प्रचला ए बे निद्रानो जघन्यरस अपूर्वकरणना प्रथमनागें आपणा बंधना प्रबंधव्यवछेदथी प्रथम समयेंज जघन्यरस बांधे. ए अगीआर पाप प्रकृति छे. ते नणी अति विशुद्धें मंदरसें बंधाय. एना बंधकमां एहिज अति विशुद्धि छे केम के एथी अतिविशुद्धि आगले गुणठाणे छे खरी, पण तिहांतो ए अगीआर प्रकृतिनो बंधज नथी तथा अहींआं पाठमां कह्यो नथी तथापि ए अपूर्वकरण क्षपकश्रेणीनो लेवो केम के उपशम श्रेणीना अपूर्वकरण थकी क्षपक श्रेणीनुं अपूर्वकरण अनंतगुणुं विशुद्ध छे अहींआं कोइएक कहे छे के, एम कहेशो तो एना अजघन्य बंधने सादिसांत पणुं न संनवे? केम के क्षपक श्रेणीथी पडवुं नथी अने ते तो जघन्य बंधथी पडतो जेवारें अजघन्य रस बांधे, तेवारें अजघन्यनी सादि होय अने क्षपक श्रेणीयें तो जघन्यरस बांधीने वलतो अबंधक थाय ते नणी ए वात विचारवा योग्य छे. एवं एकत्रीश प्रकृति थइ.

(अनियट्टीपुरिससंजलणे के०) अनिवृत्तिकरण एवे नामे नवमुं गुणठाणुं छे. जीव चारित्र मोहनीय खपाववाने पण त्रण करण करे. तिहां अप्रमत्त गुणठाणुं यथाप्रवृत्तिकरण अने आठमुं गुणठाणुं अपूर्वकरण तथा नवमुं गुणठाणुं अनिवृत्तिकरण, ते नवमा गुणठाणाना पांच नाग करीयें, तिहां एकेका नागें अनुक्रमें पुरुषवेद, संज्वलन क्रोध, संज्वलनमान, संज्वलनी माया अने संज्वलनो लोन, ए पांच मोहनीयनी प्रकृतिनो बंध व्यवछेद करे, तिहां पोतपोताना बंधने छेहले बंधें, मं

दरस बंध होय. ए पांच पाप प्रकृतिनो विशुद्धियें मंदरस बंधाय छे. ए पांचना बंधक मांहे एहिज अतिविशुद्धता छे. एवं बत्रीश प्रकृति थइ॥ इति समुच्चयार्थः ॥७०॥

विग्घावरणे सुहुमो, मणुतिरिआ सुहुम विगल तिगआउ ॥
वेउवि छक्क ममरा, निरया उज्जोय उरल दुगं ॥ ७१ ॥

अर्थ-(विग्घावरणे के०) दानांतरायादिक पांच अंतरायनी प्रकृति, तथा आवरण एटले पांच ज्ञानावरणीय अने चार दर्शनावरणीय, ए चौद प्रकृतिनो जघन्य रसबंध स्वामी, (सुहुमो के०) सूक्ष्मसंपराय गुणस्थानकवर्त्ति क्षपकश्रेणीवालो पोताना बंधने चरम बंधें होय ए चौद प्रकृतिना जघन्यरस बंधमांहे एथी अधिक विशुद्धि, बीजे कोइ स्थानकें नथी. ए पापप्रकृति छे, माटें विशुद्धियें मंदरस बांधे.

(सुहुम के०) सूक्ष्म, अपर्याप्त अने साधारण, ए सूक्ष्मत्रिक तथा (विगलतिग के०) विकलजातित्रिक, (आउ के०) चार गतिनां आयु, एवं दश प्रकृति तथा (वेउविछक्क के०) वैक्रियशरीर, वैक्रिय अंगोपांग, देवगति, देवानुपूर्वी, नरकगति, नरकानुपूर्वी, ए वैक्रिय षट्क कहीयें. ए शोल प्रकृतिना मंदरस बंध स्वामी (मणुतिरिआ के०) मनुष्य अने तिर्यंच होय. ए शोल प्रकृतिमां देवत्रिक, वैक्रियद्विक, मनुष्यायु अने तिर्यगायु, ए सात पुण्यप्रकृति छे, ते भणी एनो मंदरस पोताना बंधाध्यवसायस्थानकमांहे जे मलीनाध्यवसाय स्थानक छे तेणे करी पोताना बंधकमांहे जे अतिसंक्लिष्ट होय ते बांधे अने नरकत्रिक, सूक्ष्मत्रिक तथा विकलजातित्रिक, ए नव पाप प्रकृति छे ते भणी एना मंदरस बंधस्वामी पोताना बंधाध्यवसाय स्थानक मध्यें जेने घणुं विशुद्धिपणुं होय ते एनो जघन्यरस बंध स्वामी होय, ए शोले प्रकृतिना मंदरस बंधाधिकारी मनुष्य अने तिर्यंच तत्प्रायोग्य विशुद्धि तथा संक्लेशें वर्त्तता होय जे भणी ए शोल प्रकृतिमध्यें मनुष्यायु अने तिर्यगायु, ए बे आयु विना शेष चौद प्रकृतिनो बंध तो भव प्रत्ययेंज देवता तथा नारकीने न होय, तेथी ते, एना बंधाधिकारी नथी, तथा मनुष्यायु अने तिर्यगायुनो पण जघन्य स्थितिबंध करतां मंदरस बंधाय ते जघन्यस्थिति तो क्षुल्लकभवरूप छे तेनो बंध देवता तथा नारकीने न होय, तेथी तेने मंदरस न बंधाय.

(उज्जोय के०) उद्योतनामकर्म अने (उरलदुगं के०) औदारिक शरीर अने औदारिक अंगोपांग, ए त्रण प्रकृतिना जघन्यरस बंधाधिकारी (ममरा के०) मिथ्यात्वी देवता तथा (निरया के०) नारकी होय. जे भणी एना बंधाध्यवसायस्था

नक मध्यें संक्लेश स्थानकें वर्त्तता तिर्यग्गति प्रायोग्य बांधता थका एवा जीव होय, तेमांहे पण औदारिक अंगोपांगना मंदरस बंधक त्रीजा देवलोकथी मांडीने सह स्रारांत लगेंना देवता होय, जे नणी नवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी, सौधर्म अने ईशान, देवलोकना देवता तो एवे संक्लेशें वर्त्तता एकेंद्रियप्रायोग्य बांधे, ते मध्यें औदारिक अंगोपांगनो तो जघन्यरसबंध नथी, ते नणी ते एना अधिकारी नहीं जाणवा. तथा पर्याप्ता पंचेंद्रिय, मनुष्य, तिर्यंच पण एवे संक्लेशें वर्त्तता नरकप्रायोग्य नामकर्म बांधे, ते मध्यें ए त्रण प्रकृतिनो बंध नथी, तेथी ते पण एना अधिकारी न कह्या, अने मिथ्यात्वी देव अधिकारी कह्या एवं (६५) थइ ॥७१॥

तिरि ड्ग नियं तमतमा, जिण मविरय निरय विणिगथा

वरयं॥ आसुहु मायव सम्मो, वसायथिर सुह जसा सियरा॥७२॥

अर्थ—(तिरिडुग के०) तिर्यंचगति अने तिर्यंचानुपूर्वी, ए तिर्यंचद्विक. (नियं के०) नीचैर्गोत्र, ए त्रण प्रकृतिना जघन्यरसबंध स्वामी, (तमतमा के०) सातमी नरक पृथवीना नारकी सम्यक्त्वाभिमुख एवा मिथ्यात्वने चरम समयें वर्त्तता होय, जे नणी एवी विशुद्धियें वर्त्तता बीजा देवता तथा नारकी होय तो ते मनुष्य प्रायोग्य बांधे. अने सातमी नरकना नारकीने तो मिथ्यात्व थकां नवप्रत्ययेंज मनुष्य प्रायोग्यनो तथा उच्चैर्गोत्रनो बंध नथी तो ते स्थानकें ए त्रण प्रकृतिनो बंध करे, ए त्रणे पापप्रकृति छे. ते नणी विशुद्धियें मंदरस बंधाय. एना बंधकमांहे एहिज अति विशुद्धि छे, ते नणी ए एना अधिकारी कह्या.

(जिणमविरय के०) जिननामकर्मना जघन्य रसबंधना स्वामी अविरति सम्यक्दृष्टि मनुष्य, जेणे नरकायु बांध्या पछी क्षायोपशमिक सम्यक्त्व पामी, कथंचित् वली नरकें जातो सम्यक्त्व वमे ते सम्यक्त्व वमतां छेल्ले समयें जिननाम कर्मनो मंदरस बांधे. एना बंधक पणामांहे एहिज अति संक्लिष्ट होय.

(निरयविण के०) एक नरकगति विना शेष त्रण गतिना जीव, मिथ्यात्वी मध्यमपरिणामें वर्त्तता त्रस बांधी स्थावर बांधतां पंचेंद्रियजाति बांधीने (इग थावरयं के०) एकेंद्रियजाति नामकर्म बांधतां तथा थावरनाम बांधतां घोलना परिणामी होय. जे नणी अवस्थित परिणामें रहेतां तेवी विशुद्धि न होय, ते नणी परावर्त्तमान लीधा, तथा नारकी तो नव प्रत्ययेंज एकेंद्रियजाति अने स्था

वरनामकर्मनो बंध नथी करता, तेथी ते एना अधिकारी नथी. ए बे प्रकृति, मि थ्यात्व प्रत्ययिकी बे, ते जणी नारकी विना शेष त्रण गतिना मिथ्यात्वी जीव, ए केंद्रियजाति तथा स्थावरनाम कर्मना जघन्यरस बंधाधिकारी कह्या.

(आसुहुम के०) आ एटले मर्यादायें एटले सौधर्म लगेंना देवता जाणवा. अहींआं समश्रेणीयें बेहु देवलोक बे. ते जणी ईशान देवलोक पण लेवो एटले जवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी, सौधर्म अने ईशानना देव देवी मिथ्यादृष्टि अति सं क्लिष्ट थका एकेंद्रिय प्रायोग्य बांधतां (आयव के०) आतप नामकर्मनो मंदर स बांधे, जे जणी मनुष्य तथा तिर्यंच, एवे संक्लेशें वर्त्तता नरक प्रायोग्य बांधे. तेथी ते एना अधिकारी नहीं अने सनत्कुमारादिक देवोने तो एकेंद्रिय प्रायो ग्यनो बंधज नथी, तेथी ते पण न लीधा.

(सम्मोव के०) सम्यक्दृष्टि अथवा मिथ्यादृष्टि पंचेंद्रिय जीव, अंतरमुहूर्त्त अंतर मुहूर्त्तने फेरसारें (साय के०) शातावेदनीय, (थिर के०) स्थिर, (सुह के०) शुज, (जसा के०) यश, ए चार प्रकृतिने (सइयरा के०) इतर सहित क रीयें एटले अशाता, अस्थिर, अशुज अने अयश एम ए चारे एनी विरोधिनी परावर्त्तमान प्रकृतियें सहित करीयें तेवारें आठ प्रकृति थाय. ते अंतरमुहूर्त्त शा ता, अंतर मुहूर्त्त अशाता, ए रीतें घोलना परिणामें बांधतो ए आठ प्रकृतिनो मं दरस बांधे, ते प्रमत्त गुणठाणा लगें बांधे, अने उपरले गुणठाणे अध्यवसाय स्था नकें अवस्थित पणे रहेतो एक शाताज बंधाय, तेथी मिथ्यात्वादिक ब गुणठा णां लगें ए आठ प्रकृतिना जघन्य रस बंध स्वामी होय. एवं चोराशी प्रकृति थइ.

अहींआं जावना कहे बे. जीवने मिथ्यात्वें अतिसंक्लेशें अशातानी त्रीश कोडा कोडी सागरोपम अने अस्थिर, अशुज तथा अयशःकीर्त्तिनी वीश कोडाकोडी साग रोपमनी उत्कृष्टी स्थिति अवस्थित पणे बंधाय, तिहां एनी विरोधिनी चार प्रकृ तिनो बंध नथी, तेथी एकादिक समयनी स्थिति हीन करतां यावत् पंदर कोडाकोडी तथा त्रण प्रकृतिनी दश कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण स्थितिबंधना हेतु अध्यव सायस्थानक लगें तो ए चार पाप प्रकृतिनो निरंतरपणे बंध पडे, ते माटें ति हां मंदरस न होय तथा जेवारें पंदर कोडाकोडी सागरोपम वेदनीयनो अने द श कोडाकोडी सागरोपम नामकर्मनो जे अध्यवसाय स्थानकें बंध पडे, तेवारें ति हांथी पढी शाता अशातानो तथा स्थिर अस्थिरनो तथा शुज, अशुजनो अने यश अयशनो परावर्त्तें अंतरमुहूर्त्त अंतरमुहूर्त्त लगें फेरसारें बंध करे, एमज प्र

त्तम गुणठाणे अंतःकोडाकोडी प्रमाण स्थिति लगें पण घोलना परिणामे अंतर मुहूर्त्तने आंतरे ए आठ प्रकृतिनो बंध करतो मंदरस बांधे, जे नणी अप्रमत्तादिक आगला गुणठाणे विशुद्धि नणी शातादिक चार प्रकृति अविरोधिनी पणेज बांधे. तथा एकेंड्रियादिक एनी लघुस्थिति बांधे पण मंदरस न बांधे ॥७२॥

तस वन्न तेअ चउ मणु,खगइ डुग पणिंदि सास परघुच्चं ॥
संघयणा गिइ नपु थी, सुनगि अरति मिछचउ गइआ ॥ ७३ ॥

अर्थ—(तस के०) त्रस अने बादर, पर्याप्त अने प्रत्येक, ए त्रसचतुष्क. (वन्न के०) शुनवर्ण, शुनगंध, शुनरस अने शुनस्पर्श, ए वर्णचतुष्क. (तेअचउ के०) तैजस, कार्मण, अगुरुलघु अने निर्माण, ए तैजसचतुष्क, ए त्रण चतुष्क. (मणु के०) मनुष्यद्विक, (खगइडुग के०) खगतिद्विक, (पणिंदि के०) पंचेंड्रिय जाति, (सास के०) उच्छ्वासनाम, (परघुच्चं के०) पराघातनाम, उच्चैर्गोत्र, (संघयणागिइ के०) ठ संघयण तथा ठ संस्थान, (नपु के०) नपुंसकवेद, (थी के०) स्त्रीवेद, (सुनगिअरति के०) सुनग, सुस्वर अने आदेय, ए शुनगत्रिक तथा एना इतर डुर्नाग्य, डुःस्वर, अनादेय, ए दौर्नाग्यत्रिक ए चालीश प्रकृतिनो मंदरस, (मिछचउगइआ के०) चारे गतिना मिथ्यात्वी जीव, बांधे. तिहां त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक, शुनवर्ण, गंध, रस, स्पर्श, तैजस, कार्मण, अगुरुलघु, निर्माण, पंचेंड्रियजाति, पराघात, उच्छ्वास, ए पंदर प्रकृतिना तिर्यंचमनुष्य, मिथ्यात्वी तत्प्रायोग्य संक्लेशें नरक प्रायोग्य नामकर्मनी अठावीश प्रकृति बांधतां, मंदरस बांधे. एना बंधकमांहे संक्लिष्टपणुं होय, ए पुण्य प्रकृति ठे, एनो संक्लिष्टें मंदरस बांधे, तथा नारकी अने सनत्कुमारादिकथी सहस्रारांत लगेंना मिथ्यात्वी देवता संक्लेशें तिर्यंचगति प्रायोग्य नाम कर्मनी उंगणत्रीश प्रकृति बांधतां, पण ए पंदर प्रकृतिना मंदरस स्वामी होय, तथा ए पंदर मांहेथी पंचेंड्रियजाति अने त्रसनाम विना शेष तेर प्रकृतिना मंदरस स्वामी, नवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी, सौधर्म अने ईशानना, देवदेवी, मिथ्यात्वी, एकेंड्रिय प्रायोग्य बांधता एनो मंदरस बांधे तथा त्रस नाम अने पंचेंड्रिय जाति, ए बे प्रकृति तो कांइ एक तेथी पण विशुद्धाध्यवसायें पंचेंड्रिय प्रायोग्य बांधतां, मंदरसें बांधे एम पंदर प्रकृतिना मंदरस स्वामी, चतुर्गतिक मिथ्यात्वी जीव कह्या. तथा स्त्रीवेद अने नपुंसकवेद, ए बे मोह

नीचनी प्रकृतिना मंदरस बंध स्वामी चतुर्गतिक जीव मिथ्यात्वी विशुद्ध थका स म्यक्त्वाभिमुख थका होय. ए बे पाप प्रकृतिनणी विशुद्धियें मंदरस बांधे.

मनुष्यगति, मनुष्यानुपूर्वी, शुभखगति, अशुभखगति, ब संघयण, ब संस्थान, सुभग, सुस्वर, आदेय, दौर्भाग्य, दुःस्वर, अनादेय अने उच्चैर्गोत्र, ए त्रेवीश प्रकृतिना मंदरस स्वामी मिथ्यात्वी जीव घोलना परिणामी परावर्त्त एनी विरोधिनी प्रकृति बांधतो एवा चतुर्गतिक जीव जाणवा. जे नणी सम्यक्दृष्टि देवता तथा नार की तो मनुष्य प्रायोग्य बांधतां तिर्यंचगत्यादिक प्रायोग्य विरोधिनी प्रकृति बांधे न हीं तथा ऋषजनाराचादिक संघयण पण न बांधे तथा सम्यक्दृष्टि मनुष्य तिर्यंच तो देवता प्रायोग्य बांधता समचतुरस्र संस्थान बांधे शेष पांच संस्थान न बांधे, तें माटें सम्यक्दृष्टिने विरोधिनी प्रकृति साथें परावर्त्त बंध नथी तेथी ते मंदरस बंधना अधिकारी नथी तथा मिथ्यात्वी पण अतिसंक्लिष्ट वीश कोडाकोडी सागरोपम प्र माण स्थितिबंधाध्यवसाय स्थानकें वर्त्तता तिर्यगृद्धिक, नरकद्धिक, हुंमसंस्थान, बेवर्छु संघयण, अशुभखगति, अने नपुंसकवेदादिक प्रकृतिनो निरंतर पणे उत्कृष्ट र स बांधे. तिहांथी वली अढार कोडाकोडी सागरोपमस्थिति बंधाध्यवसाय स्थानकें होय, तेवारें कुब्जसंस्थान, कीलिकासंघयण, परावर्त्त हुंम संस्थान, अने बेवठा सं घयणनो बंध करे, तिहां मंदरस बांधे अने पंदर कोडाकोडी सागरोपम स्थितिबं धाध्यवसायस्थानकथी तिर्यगृद्धिकनो मनुष्यद्धिक साथें परावर्त्ति बंध करे, तेम नपुंसकवेदनो स्त्रीवेद साथें परावर्त्ति बंध करे, अने दश कोडाकोडी सागरोपम स्थितिबंधाध्यवसाय स्थानक पढी दौर्भाग्यत्रिकनो सौभाग्यत्रिकसाथें परावर्त्ति बंध करे. तिहांथी कोडाकोडी सागरोपम किंचिन्न्यून लगें परावर्त्ति बंधाय, तेथी हीन स्थि तिबंध अध्यवसाय स्थानकें केवल मनुष्यद्धिक, वज्रऋषभनाराच संघयण, समच तुरस्रसंस्थान, शुभविहायोगति, सौभाग्यत्रिक, पुरुषवेद, ए प्रकृति निरंतर पणे बांधे, परंतु तिहां मंदरस न बांधे जे नणी विरोधिनी प्रकृति साथें परावर्त्त बांध तांज मंदरस बांधे. एम एकशोने चोवीश प्रकृतिना जघन्य रसबंध स्वामी कह्या ॥७२॥

हवे जघन्य, अजघन्य, उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, ए चार प्रकारना रस बंधने विषे सादि, अनादि, सांत अने अनंत, ए चार नांगा विचारे बे.

जे थकी हीन कोइ रसबंध न पामीयें, ते जघन्य रसबंध जाणवो अने ते वि ना बीजा सर्व अजघन्य रसबंध जाणवा. ए रीतें ए बेहु नेदमां सर्व रसबंध ग्रह ण कस्या तथा उत्कृष्टनी अपेक्षायें लेतां जे थकी अधिक तीव्र रसबंध बीजो को

इ नथी ते उत्कृष्ट रसबंध जाणवो अने ते थकी एकादि रसाविनागें हीन एवा स र्व रसबंध ते अनुत्कृष्ट रस बंध कहीयें. एम पण ए बे नेद मांहे सर्व रसबंध ग्रह ण कस्या तिहां मूल प्रकृति आठ अने उत्तर प्रकृति एकशोने चोवीश ए बेहुना एना चारे रसबंधे सादि अनाद्यादिक नांगा ग्रंथ लाघव करवाने सार्थेज कहे ठे.

चउ तेअ वन्न वेअणि, अनाम णुक्कोस सेस धुवबंधी॥
घाईणं अजहन्नो, गोएडविहो इमो चउहा॥ ७४॥

अर्थ–(चउतेअ के०) तैजस, कार्मण, अगुरुलघु अने निर्माण, ए तैजसचतुष्क. (वन्न के०) शुनवर्णादिक चार, ए आठ नामकर्मनी उत्तर प्रकृतिना अनुत्कृष्ट रसबं धें, सादि, अनादिसांत अने अनंत, ए चारे नांगा होय, जे नणी ए आठ प्रकृतिनो उत्कृष्ट रसबंध, अपूर्वकरणनामा आठमा गुणगणाना ठठा नागने प्रांतें पोताना च रम बंधें एक उत्कृष्ट रस स्थानक होय अने ते विना सर्व अनुत्कृष्ट रस स्थानक जा णवां. जे नणी ए स्थानक, जेणे पाम्युं नथी. तेने सदा अनुत्कृष्ट रसबंध स्थानक जाणवां, ते अनादि जाणवां. तथा जे जीव, उपशमश्रेणीयें उत्कृष्ट रस बांधी, फ री तिहांथी पडतो हीन रस बांधे, तिहां अनुत्कृष्ट रस बंधनी सादि जाणवी, तथा अनव्यने ते स्थानक पामवुंज नथी अने उत्कृष्ट रस बांधवोज नथी, तेथी तेने अनुत्कृष्ट रसबंध अनंत नागें जाणवो. अने नव्य जीव हशे. ते श्रेणी पामी उत्कृ ष्टरस बांधशे तिहां अनुत्कृष्ट रसनुं सांतपणुं जाणवुं. एम ए आठ उत्तर प्रकृति नो चार नेदें अनुत्कृष्ट रसबंध कह्यो.

तथा (वेअणिअनामणुक्कोस के०) वेदनीयकर्म अने नामकर्म, ए बे मूल प्रकृतिना अनुत्कृष्ट रसबंधने विषे चार नंग कहे ठे. ए बे कर्ममांहेली एक शाता, बीजी यशःकीर्त्ति, ए बे शुनप्रकृतिनो तो उत्कृष्ट रस बंध क्षपकने दशमा गुणगणाना अंत समयें पामीयें. माटें ते स्थानक जे नथी पाम्या तेने अनुत्कृष्टनी अनादि. तथा जे ए स्थानक पामीने पाठा पड्या तेने फरी बांधती वखतें सादि तथा अनव्यने अ नंत अने नव्यने उत्कृष्टरस बंध करशे, माटें अनुत्कृष्ट रसबंधनुं सांत पणुं जाणवुं.

तथा ए आठ प्रकृतिना जघन्य, अजघन्य अने उत्कृष्ट, ए त्रण बंधने विषे सा दि अने सांत ए बे नांगा होय. तिहां ए आठ प्रकृतिनो उत्कृष्ट रस बंध क्षपक ने अपूर्व करणें होय. ते प्रथम बांधवा मांड्यो ते माटें सादि, ते बंध, एक स मयेंज होय. पण आगल न होय, माटें सांत बीजो नांगो तथा ए आठ शुन

प्रकृति छे माटें एनो जघन्यरस सर्वोत्कृष्ट संक्लेशें वर्त्ततो मिथ्यात्वी जीव, संज्ञी पर्याप्तो बांधे. ते एक समय तथा बे समय लगें बांधे, ते पछी अजघन्यबंध बांधे, ते वार पछी वळी कालांतरें सर्वोत्कृष्ट संक्लेश पामीने जघन्य रस बांधे, एम जघन्य, अजघन्यने विषे फरता जीवने सादि अने सांत, ए बे नांगा होय.

हवे तैजसचतुष्क विना (सेस के०) शेष रही जे ज्ञानावरणीय पांच, दर्शनावरणीय नव, कषाय शोल, एक मिथ्यात्वमोहनीय, पांच अंतराय, नय, जुगुप्सा, उपघात अने अशुनवर्णचतुष्क, ए तेंतालीश प्रकृति (ध्रुवबंधी के०) ध्रुवबंधिनी छे तेनो अजघन्य रसबंध सादि, अनादि, सांत अने अनंत एम चार नेदें होय, जे नणी ए अशुन्न प्रकृतिनो जघन्यरस, विशुद्धियें करी पोताना चरमबंधें होय, अने ते स्थानक जे नथी पाम्या, तेने अजघन्यरस बंधनी अनादि अने जे श्रेणीथी पडी फरी बंध करे, तेने सादि तथा अनव्य जघन्यरस नहींज बांधे, तेथी तेने अजघन्यरसबंध अनंत अने नव्य जीव सम्यक्त्व पामशे, तेवारें ते स्थानक लइ जघन्य रस बंध करशे, तिहां अजघन्य रस बंधनुं सांतपणुं जाणवुं. एम चार नांगा कह्या.

(घाईणंअजहन्नो के०) ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय अने अंतराय, ए चार मूल प्रकृति, घातिनी छे. एना अजघन्यरस बंधने विषे चार नांगा होय, केम के ए चार पापप्रकृति नणी विशुद्धियें मोहनीयनो नवमा गुणठाणाने प्रांतें अने शेष त्रण कर्मनो दशमा गुणठाणाने प्रांतें जघन्य रस बंधाय, शेष सर्वस्थानकें अजघन्य रस बंधाय, तेने विषे पण चार नंग जाणवा. ते आवी रीतें के जेणे जघन्यरसबंध नथी लह्यो, तेने अजघन्य रसबंध अनादि, जे जघन्यरस बांधी वळी श्रेणीथी पडतां अजघन्य रस बांधे तिहां सादि, अनव्यने अजघन्य रसबंध अनंत जाणवो, अने नव्यने अजघन्यरसबंध सांतपणे जाणवो. ए चार कर्मना अजघन्यबंध विना शेष त्रण बंधने विषे सादि अने सांत, ए बे नांगा लान्ने.

(गोएडविहो के०) गोत्रकर्मनो अनुत्कृष्ट तथा अजघन्य ए बे रसबंधने विषे (इमोचउद्दा के०) एमज चार नंग होय. ते कहे छे. तेमध्यें नीचैर्गोत्रनो जघन्य रसबंध सातमी नरक पृथवीना नारकी ग्रंथिन्नेद करी मिथ्यात्वने छेहले समयें बांधे, ते स्थानक जे नथी पाम्या तेने अनादिनो अजघन्य रस बंधछे, अने जेणे एक समयमां जघन्यरस बंध करी फरी अजघन्य रस बांधे तेने सादि, अनव्य जीव ते स्थानक क्यारें पण नहींज पामशे, तेथी तेने अनंत, तथा नव्य जीव जघन्य रस बंध करशे. तथा रस बंध विछेद पण करशे तेथी तेने सांत. तेमज उच्चैर्गोत्रनो

विशुद्धियें उत्कृष्ट रसबंध, दशमा गुणगणाने प्रांतें होय. ते विना बीजा सर्वे अनुत्कृष्ट रसबंध जाणवा. तिहां जेणे श्रेणी नथी करी, तेणे उत्कृष्ट रस बंध नथी कस्यो. तेने अनुत्कृष्ट रसबंध अनादि अने श्रेणीथी पडतां उत्कृष्ट रस बांधी फरी अनुत्कृष्ट रस बांधे. तिहां सादि, अजव्यने अनुत्कृष्टरसबंध अनंत अने जव्यने अनुत्कृष्टनो सांत, एम चार जेद जाणवा अने शेष जघन्य तथा उत्कृष्ट ए बे, एक समयना माटें एने विषे सादि अने सांत ए बे जांगा होय. एम सुडतालीश ध्रुवबंधिनी प्रकृति तेम वर्णादिक चार शुजाशुज गणतां एकावन्न उत्तर प्रकृतिनो जघन्य, अजघन्य, उत्कृष्ट अने अनुत्कृष्ट, एम चार प्रकारना बंधना सादि, अनादि, सांत अने अनंत. एमांना जांगा जिहां जे संजवे, तिहां ते कह्या ॥ ७४ ॥

सेसंमि डुहा॥ अनुजागबंधो सम्मतो ॥ अथ प्रदेशबंधे आदावौदारिकादिवर्गणामाह ॥ इग डुग, णुगाइ जा अजवणंत गुणिआणू ॥ खंधा उरलो चि अव, ग्गणाउ तह अगहणं तिरिया ॥७५॥

अर्थ-(सेसंमिडुहा के०) एथी शेष रही जे औदारिक, वैक्रिय अने आहारक, ए त्रण शरीर तथा एज त्रण शरीरनां अंगोपांग त्रण, संस्थान ठक्क, संघयण ठक्क, पांच जाति, गति चार, खगतिद्विक, आनुपूर्वी चतुष्क, जिननाम, उञ्चास, उद्योत, आतप, पराघात, त्रसदशक, तथा स्थावरदशक, ए नामकर्मनी प्रकृति अठावन तथा वेदनीयद्विक, गोत्रद्विक, त्रण वेद, हास्यादि युगलद्विक अने आयु चार, एवं तहोंत्तेर अध्रुवबंधिनी प्रकृतिना उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य, अजघन्य, ए चारे बंध सादि अने सांत, ए बे जांगें होय केम के, ए प्रकृतिउनो बंध केवारेंक होय अने केवारेंक न होय, जेवारें होय तेवारें सादि, अने न होय, तेवारें सांत.

एम सविस्तरपणे रसबंध वखाण्यो. हवे अनुक्रमागत प्रदेश बंध कहेवाने अवसरें उपोद्घात संगतें करी प्रथम औदारिकादिक वर्गणानुं स्वरूप निरूपण कर्म वर्गणा आणवा निमित्तें कहे ठे.

१ जेम कुचीकर्ण शेठने गाय मेलववानुं व्यसन, तेथी तेणे घणी गायो मेलवी. एकठी कीधी पठी तेनी गणती आणवाने अर्थें वर्णादिकें सरखी एवी गायोनां टोलां बांध्यां तेवी रीतें अनंता पुजलस्कंधने जूदा लेखवी, तेना जेद पाडवाने अर्थें ज्ञानीयें परमाणुसंख्यायें सरखा सरखा पुजलस्कंधनां टोलां बांध्यां. तेनुं नामवर्गणा कहीयें. जेम जगत्मांहे जे एकला बूटा परमाणुआ ठे. तेनुं टोलुं

ते प्रथम वर्गणा, तेमज बे परमाणुआ एकठा मलवा थकी जे स्कंध होय. तेने द्व्यणुक कहीयें. तेनुं टोलुं. ते बीजी वर्गणा तथा त्रण परमाणुयें निष्पन्न जे स्कंध, तेने त्र्यणुक कहीयें. तेनुं टोलुं ते त्रीजी वर्गणा. एम एकेक परमाणुयें वधता वधता स्कंधनां सरखां सरखां टोलां तेनी वर्गणा वधती वधती जाय. (२) एम वधती वधती अनव्य जीवथी अनंत गुणा अने सिद्धना जीवने अनंतमा नाग प्रमाण परमाणुयें करी निष्पन्न जे स्कंध ते स्कंध औदारिक शरीर निपजाववा योग्य होय तेथी ते स्कंध औदारिक शरीरने ग्रहण करवा योग्य होय ते माटे ते औदारिक, ग्रहण योग्य जघन्यवर्गणा होय. ए थकी एक परमाणुयें हीन स्कंधवर्गणा लगें सर्व अग्रहण योग्यवर्गणा कहीयें जे नणी तेहवे स्कंधें शरीर नीपजे नहीं, हवे ते जघन्य औदारिक शरीर आरंनकस्कंध वर्गणा तेथी एकेक परमाणुयें वधता स्कंधनी एत्री बीजी, त्रीजी, चोथी, पांचमी, एम वधती वधती अनंतवर्गणा औदारिक शरीर ग्रहण योग्य पणे होय. ते औदारिक शरीर ग्रहण योग्य जघन्य वर्गणा थकी अनंतमे नागें वधती औदारिक शरीर ग्रहण योग्य उत्कृष्टी वर्गणा होय, ते अनंतमो नाग पण अनंता परमाणुरूप जाणवो ते माटें औदारिक शरीरने ग्रहणयोग्य पण अनंती वर्गणा जाणवी.

३ ते औदारिक शरीरनी उत्कृष्ट वर्गणा थकी एकेक परमाणुयें अधिकी स्कंधनी वर्गणा ते औदारिकनी अपेक्षायें बहु प्रदेशोपचित तथा सूक्ष्मपरिणाम परिणत तेथी औदारिकने अग्रहण योग्य अने वैक्रिय शरीर आरंनकस्कंधनी अपेक्षायें अल्पप्रदेशोपचित तथा बादर परिणत ते माटें वैक्रिय शरीरने पण अग्रहणयोग्य एम एकेक प्रदेशें वधता स्कंध अनंतनी अनव्यथी अनंतगुणी अने सिद्धना अनंतमा नाग प्रमाण एटली वर्गणा ते वैक्रिय शरीरने अग्रहण योग्य वर्गणा जाणवी. (४) ते थकी एक प्रदेशें अधिका स्कंधनी वर्गणा ते वैक्रिय शरीर आरंन करतां जघन्य ग्रहण योग्य वर्गणा जाणवी. एम वली एकेक प्रदेशें वधता स्कंधनी अनंती वर्गणा वैक्रिय शरीर निष्पादक होय ते पण जघन्य वैक्रिय ग्रहण योग्य वर्गणाथी पोताना अनंतमा नाग प्रमाण वधती वैक्रिय शरीरने ग्रहण योग्य उत्कृष्ट वर्गणा होय, तेथी ते पण अनंती वर्गणा जाणवी.

५ ते वैक्रिय ग्रहणयोग्य उत्कृष्ट वर्गणा थकी एक प्रदेशें अधिक स्कंधनी वर्गणा ते वैक्रियदलनी अपेक्षायें बहु प्रदेश निष्पन्न तथा सूक्ष्मपरिणत होय. अने आहारक शरीर प्रायोग्य दलनी अपेक्षायें अल्पप्रदेशिक तथा बादर, परिणत होय. ते

माटें वैक्रिय तथा आहारक, ए बेहु शरीरने काममां न आवे, ते नणी ते अग्रहण योग्यवर्गणा जाणवी. ते पण एकेक प्रदेशें वधता वधता स्कंधनी अनव्यथी अनंत गुणी अने सिद्धना जीवोना अनंतमा नाग प्रमाण अनंती वर्गणा जाणवी. ए अनंती अग्रहण योग्य प्रदेश वर्गणा होय. (६) पढी तेथकी एक प्रदेश अधिक स्कंधनी वर्गणा तेणे करी ते आहारक शरीर नीपजे, तेथी ते आहारक प्रायोग्य जघन्यवर्गणा होय, ते वली एकादि प्रदेशें वधता अनंता स्कंधनी अनंती वर्गणा थाय, ते जघन्य वर्गणाना अनंतमा नाग प्रदेश प्रमाण प्रदेशें वधती एवी उत्कृष्टी आहारकशरीरने ग्रहण करवा योग्य वर्गणा अनंती होय.

७ ते आहारक ग्रहणयोग उत्कृष्ट वर्गणा थकी एक प्रदेशें वधता स्कंधनी वर्गणा ते आहारकनी अपेक्षायें बहु प्रदेशिक तथा सूक्ष्म अने तैजसनी अपेक्षायें अल्पप्रदेशिक बादर परिणत ते नणी बेहु शरीरने अग्रहणयोग्य एवी जघन्य वर्गणा तेथकी एकादिक प्रदेशें वधती यावत् अनव्यथी अनंतगुणी वर्गणा, ए बे शरीरने अग्रहण योग्य होय. माटें ते अग्रहण योग्यवर्गणा. (८) ते उत्कृष्ट अग्रहणयोग्य वर्गणादलथकी, एक प्रदेशें अधिक स्कंधनी वर्गणा ते तैजस शरीर प्रायोग्य जघन्य वर्गणा जाणवी. पढी ते थकी एकेक प्रदेशें वधता वधता स्कंधनी एवी यावत् जघन्य तैजस शरीर वर्गणाने अनंतनागें जे अनंता परमाणु तेणे करी अधिकी एवी उत्कृष्ट तैजस शरीरने ग्रहण योग्य वर्गणा अनंती जाणवी.

ए ते तैजस शरीर ग्रहण योग्य उत्कृष्ट वर्गणाना स्कंधथी एक प्रदेशें अधिक स्कंध ते तैजसनी अपेक्षायें बहु प्रदेशिक सूक्ष्म अने नाषादलनी अपेक्षायें अल्प प्रदेशिक बादर होय, तेथी ए बेहु शरीरने काम न आवे, माटें ग्रहण करवाने अयोग्य एवी जघन्य वर्गणा जाणवी. एम एकेक प्रदेश वधता स्कंधनी अनव्यथी अनंतगुणी अने सिद्धना अनंतमा नाग प्रमाण एटली वर्गणा अग्रहण योग्य होय. (१०) ते उत्कृष्ट अग्रहणयोग्य वर्गणाथकी एक प्रदेशें अधिक स्कंध ते नाषाना दलने काम आवे, ते नणी ते जघन्य नाषा ग्रहण योग्यवर्गणा होय, ते थकी वली एकादिक प्रदेशें वधती वधती यावत् जघन्यनाषा वर्गणाने अनंतमे नागें जे अनंता परमाणु, तिहां लगें वधता स्कंधनी एवी अनंती वर्गणा नाषाने ग्रहणयोग्य होय.

११ ते नाषाने ग्रहणयोग्य उत्कृष्ट वर्गणाथी एकादिक प्रदेशें वधता वधता यावत् अनव्यथी अनंतगुण प्रदेश पर्यंत वधतानी अनंती वर्गणा ते सर्व नाषा शरीरनी अपेक्षायें बहुप्रदेशिक सूक्ष्म अने श्वासोश्वासनी अपेक्षायें बादर

अल्पप्रदेशिक स्कंध. ते नणी ते वर्गणा ए बेहु शरीरने अग्रहण योग्य एवी वर्गणा अनंती जाणवी. (१२) वली ते थकी एक प्रदेशें अधिक स्कंधनी वर्गणा, तेणे करी श्वासोछ्वास नीप,जेतेथी तेवा स्कंधनो समुदाय, ते श्वासोछ्वास ग्रहण योग्य जघन्य वर्गणा जाणवी. ए थकी एकादिक प्रदेशें वधता वधता यावत् जघन्य वर्गणाना अनंतमा नागमां जेटला प्रदेश तत्प्रमाण तेटला प्रदेशें वधती जे वर्गणा ते श्वासोछ्वास ग्रहणयोग्य उत्कृष्टी वर्गणा जाणवी.

१३ ते थकी एक प्रदेशें अधिक स्कंधनी अग्रहण योग्य वर्गणा पूर्वली पेरें श्वासोछ्वासने तथा मनने पण अग्रहण योग्य, तेवी एकादिक प्रदेशें वधती वधती यावत् अनव्यथी अनंतगुणी वर्गणा अग्रहण योग्य जाणवी. (१४) ए रीतें वली ते वर्गणाथकी एकादिक प्रदेशें वधता स्कंध तेणे करी इव्य, मन, नीपजे, ते नणी ते जघन्य मनोइव्यग्रहण योग्यवर्गणा जाणवी. तेथी एकादिक प्रदेशें वधता वधता स्कंध ते यावत् निज जघन्य वर्गणा स्कंधने अनंतमे नागें जे प्रदेश होय, तेटले प्रदेशें वधती उत्कृष्टी मनोग्रहण प्रायोग्य वर्गणा होय.

१५ ते थकी एक प्रदेशाधिक पुजल स्कंधनी वर्गणा ते मनोइव्यनी अपेक्षायें बहु प्रदेशिक सूक्ष्म जाणवी, अने कर्मदलनी अपेक्षायें अल्पप्रदेशिक बादर जाणवी. ते नणी बेहु शरीरने अग्रहणयोग्य एवी अनव्यथी अनंतगुणी वर्गणाजाणवी. (१६) वली ते थकी एक प्रदेशें वधता पुजलस्कंधनी वर्गणा ते कर्मदल ग्रहणयोग्य होय, ते नणी ते कर्म प्रायोग्य जघन्य वर्गणा जाणवी ते थकी वली एकादिक प्रदेशें वधता वधता यावत् आपणी जघन्य वर्गणाना अनंतमा नाग प्रदेश प्रमाण प्रदेशें वधती ते उत्कृष्टी कर्म ग्रहण योग्य पुजलनी वर्गणा जाणवी. तेणे करी कर्मदलें कर्म प्रकृति बंधाय. एक कर्मनी जघन्य अने उत्कृष्टनी वचालें अनंती वर्गणा होय, तेवा दलें करी कर्मप्रकृति बंधाय, ते नणी ए कर्म ग्रहण योग्य वर्गणा कहीयें. ए शोलमी वर्गणा थइ. ए स्वमतें कह्युं, तथा बृहच्छतक वृत्तिमध्यें अग्रहण योग्य वर्गणा नथी कही, तेने मतें तो आठज वर्गणा कही छे,

एहवी वर्गणा ते जीवने ग्रहवा योग्य पुजल होय, जीवाश्रित होय, तेथी उपचारें एने सचित्तवर्गणा कहीयें. अने ए थकी एकादिक प्रदेशें अधिक पुजलस्कंध जे जीवने ग्रहण योग्य नहीं, तेथी तेने अचित्त वर्गणा कहीयें. ते अचित्त वर्गणा पण सर्व जीवथी अनंत गुणी छे. ए वर्गणानुं स्वरूप मूढमतिने समजाववा अने चित्तमां आणवाने अर्थें बिंड कल्पनायें करी देखाडयुं छे. जेम एकादिकथी मां

मी दश पर्यंत परमाणु निष्पन्न अग्रहण योग्य वर्गणा जाणवी. ते थकी अगी आर, बार अने तेर, परमाणु निष्पन्न ते औदारिक ग्रहणयोग्य वर्गणा जाणवी. तेथकी वली चौद,पंदर, शोल, सत्तर, अढार, ओगणीश अने वीश. पिंडरूप अग्रह णयोग्य वर्गणा जाणवी. ते पढी एकवीश, बावीश अने त्रेवीश, पिंडरूप वर्गणा, ते वैक्रिय शरीरने ग्रहणयोग्य वर्गणा जाणवी. एम आठ वर्गणा ग्रहण योग्य जा णवी अने आंतरे आंतरे आठ वर्गणा अग्रहण योग्य छे, बेहु मलीने शोल व र्गणा थइ. ए शोल वर्गणा सचित्त जाणवी. जे नणी एमां आठ वर्गणाना पुजल जीवने ग्रहण योग्य होय, तेथी ते उपचारें जीवाश्रित कहेवाय तेमाटें एने स चित्त कहीयें अने अंतरालनी आठ वर्गणाना पुजल जीवने अग्रहणयोग्य ठे,तो प ण ते वर्गणा ग्रहणयोग्य वर्गणाने आंतरे ठे, ते नणी एने सचित्त वर्गणाज कहीयें.

१ ए पूर्वोक्त उत्कृष्ट कर्मवर्गणा थकी एकादिक प्रदेशें वधता वधता स्कंधनी सर्व जीवथी अनंती वर्गणा, ते निरंतर पणे सदाकाल पामीयें. पण तेहवा स्कंधनी वर्गणा जीवने ग्रहवा योग्य न होय, ते नणी तेने ध्रुवाचित्त जघन्य वर्गणा कहीयें. ते जघन्य वर्गणाथकी उत्कृष्ट वर्गणाना प्रदेश अनंत गुणा होय तेने उत्कृष्ट ध्रुवा चित्त वर्गणा कहीयें. (२) ते थकी वली एकादिक प्रदेशें अधिक स्कंधनी वर्गणा अनंती सर्व जीव थकी अनंत गुणी. एवा पुजल स्कंध, केवारेंक निरंतर पणे होय अने केवा रेंक सांतर पणे पण होय, ते नणी अध्रुवाचित्त वर्गणा कहीयें.(३) ते थकी एकादिक प्रदेशें वधता पुजल स्कंधनी वर्गणा न पामीयें, पण आगली वर्गणा स्कंधनुं मह त्वपणुं देखाडवाने अर्थें प्ररूपीयें, तेवी पण अनंती शून्य वर्गणा होय. ते जघन्य वर्गणाना प्रदेशने क्षेत्र पल्योपमना असंख्यातमा नाग प्रमाण प्रदेशनी राशियें करी गुणाकार करीयें,तेवारें उत्कृष्ट वर्गणा होय.(४) तेथकी एक प्रदेशाधिकस्कंध,ते साधा रण नहीं पण प्रत्येक जीवना औदारिकादिक पांच शरीरना प्रदेश, ते माहेलो एक प्रदेश सर्व जीवथी अनंतगुणे विश्रसा परिणत सूक्ष्मपुजल स्कंध आश्रित ते स्कंधनुं नाम, प्रत्येक वर्गणा कहीयें. तेपण जघन्य वर्गणा थकी उत्कृष्ट वर्गणा क्षेत्र पल्योप मना असंख्यातमा नाग रूप असंख्याता प्रदेशें गुणाकार करतां थाय, ते पण अनंती वर्गणा जाणवी. (५) तेथकी वली अनंती शून्य वर्गणा प्रदेशोत्तर कल्पीयें, तेपण जघन्य वर्गणा थकी मांमीने उत्कृष्टवर्गणा पर्यंत अनंती वर्गणा जाणवी.(६) तेथकी वली एकादिक प्रदेशें वधता पुजलनी वर्गणा ते बादर निगोदीआ जीवना त्रण शरीर प्रदेशने आश्रित अनंता पुजलस्कंध विश्रसा होय तेनी पण एकादिक प्रदे

शें वधती अनंती वर्गणा जाणवी. ते पण जघन्य वर्गणा थकी उत्कृष्टी वर्गणा प्रदेशसंख्यायें असंख्यात गुणी होय. (७) ते थकी वली असत्कल्पनायें अनंती शून्य वर्गणा पूर्वलीपेरें जाणवी. (८) तेथकी प्रदेशाधिक स्कंधनी वर्गणा ते सूक्ष्म निगोद शरीर प्रदेशाश्रित अनंत पुजलस्कंध विश्रसा परिणत तेनी अनंती वर्गणा जाणवी, ते पण जघन्य वर्गणाथकी आवलीना असंख्यातमा जाग प्रमाण समयनी राशियें जघन्य वर्गणाने गुणतां उत्कृष्टी वर्गणा थाय. (ए) ते थकी वली एकादिक प्रदेशें वधती एवी असत्कल्पनायें अनंती शून्य वर्गणा होय. (१०) तेथकी वली प्रदेशाधिक मिश्रस्कंध जेनुं सूक्ष्मपणा थकी बादर पणुं पामवाने अजिमुख ते मिश्रस्कंधनी वर्गणा अनंती जाणवी.(११) तेथकी अचित्त महास्कंध जे पर्वत कूटादिकने विश्रसा परिणामें आश्रित अनंत प्रदेशात्मक पुजलस्कंध जे विश्रसा परिणामें १ दंफ, २ कपाट, ३ मंथ, अंतर पूर्णादिक करतो केवल समुद्घातनी पेरें आठ समयनो अजीव समुद्घात होय. तिहां चोथे समयें सर्वलोक प्रमाण स्कंध होय, अजितादिक जिनने वारें त्रस जीव घणा होय, तेवारें ते स्कंध थोडा होय अने जेवारें त्रस जीव थोडा होय तेवारें ते स्कंध घणा होय. ए लोकस्थिति तेनी वर्गणा पण अनंती जाणवी. (१२) एथी पण अधिक प्रदेशस्कंध श्री पन्नवणामध्यें कह्या ठे ए अठावीश वर्गणा कम्मपयडीने अनुसारें वखाणी, परंतु अहींआं कर्मवर्गणा कहेवानो अवसर ठे. अने बीजी औदारिक वर्गणा कर्मदलनी प्रदेश संख्या तथा सूक्ष्मावगाढ क्षेत्र जाणवाने अर्थें उपोद्घातसंगतें कही देखाडी तथा आगली बीजी वर्गणाउ प्रसंग संगतें कही देखाडी. तिहां औदारिक वर्गणा अनुक्रमें एकथी बीजा प्रदेशें वधती वधती जाय अने अवगाहनायें हीन हीन थती जाय, औदारिक वर्गणाने अवगाहनानुं क्षेत्र अंगुलनो असंख्यातमो जाग जाणवो. ते थकी वली अग्रहण योग्य वर्गणानुं क्षेत्र, असंख्यांश हीन जाणवुं. तेथकी वली वैक्रिय वर्गणा क्षेत्र असंख्यांश हीन जाणवुं. एम सघले असंख्यांश हीन अवगाहनाक्षेत्र थतुं जाय. हवे गाथानो अक्षरार्थ लखीयें ठैयें.

(इगडुगणुगाइ के०) एक, द्विक, अणुकादिक, अहीं अणुशब्दने प्रत्येकें संबंध ठे. अणु एटले परमाणु जाणवो. तिहां एकाणुकादिक, द्व्यणुकादिक. एटले एक आद्यमां ठे, तिहां एकाणुकादिक कहेवुं. बे आद्यमां ठे, माटें द्व्यणुकादिक कहेवुं. अर्थात् एक परमाणुनी द्वि परमाणुनी वर्गणा आदि शब्दथकी त्रण परमाणुनी, चार परमाणुनी, पांच परमाणुनी, एम वधतां वधतां (जा के०) यावत्

क्यां सुधी कहेवुं, ते कहे छे. (अन्नवणंतगुणिआणूखंधा के०) अन्नव्यथी अनंत गुणा परमाणुयें वधती उपलक्षणथकी सिद्धना जीवने अनंतमे नागें परमाणुयें वधता स्कंधनी (वग्गणाउ के०) वर्गणा ते प्रथम (उरल के०) औदारिक शरीरने ग्रहण करवाने (उचिअ के०) उचित एटले योग्य होय. एवी अनंती वर्गणा जाणवी. (तह के०) तेथकी एकादि परमाणुयें वधती एवी अनंती वर्गणा ते (अगहणंतरिया के०) औदारिक शरीरने, अग्रहण प्रायोग्य होय, अग्रहणां तरिता एटले अग्रहण वर्गणा वर्गणांतरित होय ॥ इत्यक्षरार्थः ॥ ७५ ॥

एमेव विउव्वाहा, र तेअ नासाणु पाण मण कम्मे ॥
सुहुमा कमावगाहो, ऊणूणंगुल असंखंसो ॥ ७६ ॥

अर्थ–(एमेव के०) एणी पेरें बीजी (विउव्व के०) वैक्रिय शरीरने ग्रहण योग्य वर्गणा, त्रीजी (आहार के०) आहारक ग्रहणयोग्य वर्गणा, चोथी (तेअ के०) तैजसग्रहण योग्य वर्गणा, पांचमी (नासाणुपाण के०) नाषा प्रायोग्य वर्गणा, छठी श्वासोश्वास ग्रहणयोग्य वर्गणा, सातमी (मण के०) मनोग्रहणयोग्य वर्गणा, आठमी (कम्मे के०) कार्मण ग्रहणयोग्य वर्गणा, ए आठ वर्गणा जाणवी. ए आठे वर्गणानुं (कमावगाहो के०) अनुक्रमे अवकाश क्षेत्र ते एकेकथकी (सुहुमा के०) सूक्ष्म, सूक्ष्म होय एटले हीन हीन होय. एटले औदारिक ग्रहणयोग्य वर्गणाना अवगाहनाक्षेत्रथकी, औदारिक अग्रहणयोग्य, वर्गणानुं अवगाहना क्षेत्र, सूक्ष्म ते थकी वली वैक्रियग्रहणयोग्य वर्गणानुं अवगाहना क्षेत्र सूक्ष्म एम सर्व वर्गणानुं अवगाहनाक्षेत्र, अनुक्रमें एकेकथकी (ऊणूण के०) ऊणुं ऊणुं होय,

अने (अंगुलअसंखंसो के०) ए आठेनुं अवगाहना क्षेत्र, अंगुलने असंख्यातमे नागें होय, अने अनुक्रमें एकेकथी एकेकनी अवगाहना ऊणी ऊणी एटले न्हानी न्हानी होय. केम के पुजल ऽव्यने विषे जेम घणां पुजल परिमाणुनो समुदाय मले, तेम सूक्ष्म परिणाम थाय. ते माटें औदारिक ग्रहणयोग्य वर्गणानो अवगाहना क्षेत्र अंगुलने असंख्यातमे नागें होय, ते थकी तेनी अग्रहणयोग्य वर्गणानी अवगाहना न्हानी होय, ते थकी वली वैक्रियग्रहणयोग्य अवगाहना न्हानी होय. एम अनुक्रमें सर्व वर्गणानी अवगाहना, एकेकथकी न्हानी कहेवी. अने ते वर्गणाना परमाणु, एकेक थकी अधिक होय ॥ इत्यक्षरार्थः॥७६॥

इक्किक्क हिया सिद्धा, णंतंसो अंतरेसु अग्गहणा ॥
सवब्ब जहन्नुचिया, नियणंतंसाहिआ जिघ्घा ॥ ७७ ॥

अर्थ-(इक्किक्कहिया के०) एकेक परमाणुयें अधिक अग्रहण योग्य वर्गणा होय ते केटली होय? तोके (सिद्धाणंतंसो के०) सिद्धोनो अनंतो अंश एटले सिद्धना अनंतमा नाग प्रमाण ग्रहणयोग्य वर्गणाने (अंतरेसु के०) आंतरे (अग्गहणा के०) अग्रहणयोग्यवर्गणा अनंती होय तथा (सवब्बजहन्नुचिया के०) सघले गमें ग्रहण योग्य जघन्य वर्गणा थकी (निय के०) स्वकीय जघन्य वर्गणाना (अणंतंसा के०) अनंतांश एटले अनंतमे नागें (अहिया के०) अधिक (जिघ्घा के०) ज्येष्ट एटले उत्कृष्ट ग्रहणयोग्यवर्गणा होय ॥ इत्यक्षरार्थः ॥ ७७ ॥

एक परमाणुथी मांमीने एकेक पमाणुयें वधते स्कंधें वर्गणा अनंती होय तिहां प्रथम अग्रहण योग्य जघन्य वर्गणाथकी अग्रहण योग्य उत्कृष्टी वर्गणा अनंतगुणी होय, जे नणी जघन्य अग्रहण योग्य वर्गणा एक परमाणुनी बे, ते थी उत्कृष्ट अग्रहण योग्य वर्गणा सिद्धना जीवने अनंतमे नागें अने उपलक्षण थी अनव्यानंतगुण निष्पन्न स्कंधनी वर्गणा होय, ते नणी प्रदेशें अनंतगुणी होय. ते थकी वली औदारिक ग्रहण योग्य जघन्य वर्गणा स्कंध रूपाधिक होय ते थकी औदारिक ग्रहण योग्य उत्कृष्ट वर्गणास्कंध अनंतनागाधिक जाणवी. तेथकी वली ते औदारिक अने वैक्रिय वर्गणाना अंतरने विषे अग्रहणयोग्य जघन्य वर्गणास्कंध रूपाधिक होय तेथकी वली अग्रहण योग्य उत्कृष्ट वर्गणा स्कंध विशेषाधिक जाणवो. जे नणी एनी जघन्य वर्गणा स्कंध सिद्धानंतनागाधिक अनव्यानंत गुण परमाणुआ मात्र बे. तेमांहे वली अनव्यानंत गुण सिद्धानंतनाग मात्र परमाणुआ नेलीयें, तेवारें अनंतनाग न्यूनथी घणा परमाणुआ थाय माटें अनंतनागाधिक कह्ी. तेथकी रूपाधिक वैक्रिय ग्रहण योग्य जघन्य वर्गणास्कंध प्रदेश जाणवा. तेथकी वैक्रिय ग्रहण योग्य वर्गणाना उत्कृष्टस्कंध प्रदेश अनंतनागाधिक जाणवा. एम कार्मण वर्गणा पर्यंत समस्त ग्रहण योग्य वर्गणायें पोताना जघन्य वर्गणास्कंधथकी पोत पोताना उत्कृष्ट वर्गणा स्कंध अनंतनागाधिक लेवा अने अग्रहणयोग्य जघन्य वर्गणास्कंधथकी उत्कृष्ट वर्गणास्कंध विशेषाधिक लेवा.

तथा ध्रुवाचित्तवर्गणायें जघन्य वर्गणास्कंधथी उत्कृष्ट वर्गणास्कंध, अनंत गुणा लेवा तथा एनी शून्यवर्गणाथकी आगली वर्गणायें पोत पोतानी जघन्य व

गैणा स्कंधथी उत्कृष्ट वर्गणास्कंध प्रदेश संख्यायें असंख्यातगुणा लेवा. अने सर्व वर्गणाने अवगाढ क्षेत्रनी अपेक्षायें औदारिक वर्गणास्कंधना अवगाढ क्षेत्र थकी असंख्यांश हीन वैक्रिय वर्गणानुं अवगाहना क्षेत्र जाणवुं. तेथकी आहारक वर्गणानुं अवगाढक्षेत्र असंख्यांश हीन जाणवुं. एम आगली सर्व वर्गणायें असंख्यांश हीन हीन अवगाहनाक्षेत्र होय. पुज्ञल इव्यनो एहज स्वनाव ढे. के जेम जेम प्रदेश वधता जाय. तेम तेम सूक्ष्म थाय, जेम कपासना थोडा प्रदेश तेम घणुं ठाम रोके अने पाराना घणा दलिक होय ते थोडुं ठाम रोके, तथा पाली मध्यें तूराना कण थोडा समाय अने राइना कण घणा समाय. एम ढवीश तथा अठावीश, पुज्ञलस्कंधनी वर्गणा कही. तेमध्यें शोल वर्गणा ग्रंथकारें कही ढे. माटें सूत्रोक्त जे नणी अहीआं ते मांहेली एक कर्मवर्गणा दल कहेवानो प्रदेश बंधाधिकारें प्रयोजन ढे. तेनी प्रदेश संख्या जाणवाने अर्थे शेष पूर्वोक्त पंदर वर्गणा कही॥७७॥

अथ यादृशं कर्मदलिकं जीवोगृह्णाति तदाह ॥ हवे जेवा कर्मदलिक जीव ग्रहण करे ढे, ते कहे ढे.

अंतिम चउ फास डुगंध पंच वन्नरस कम्म खंध दलं ॥
सव्व जियणंत गुण रस, अणुजुत्त मणंतय पएसं ॥ ७८ ॥

अर्थ– कर्मदल ते अगुरुलघु इव्य ढे, ते नणी अरूपी इव्य तथा पांच वर्ण, बे गंध, पांच रस अने चार स्पर्श, एम शोल गुणवंत पुज्ञल ते पण अगुरुलघु कहीयें. हवे अहींआं कोइ केशे के कर्मदल मूर्त्तिमंत ढे अने जीवतो अरूपी ढे, तो ते जीवने कर्मदलनो करेलो अनुग्रह, उपघात, केम होय? तेनो उत्तर कहे ढे के, जेम मूर्त्तिमंत मदिरापान ढे. तेणे करी अमूर्त्तिमंत ज्ञाननो उपघात थाय ढे. तथा मूर्त्तिमंत सारस्वत चूर्णादिकें करी अमूर्त्तिवंत ज्ञाननो गुण प्राप्त थाय ढे. तथा अमूर्त्त क्रियानो मूर्त्त इव्य साथें संबंध थाय ढे. तथा घटादिक मूर्त्तिमंत इव्यनो अमूर्त्त इव्य जे आकाशादिक तेनी साथें संबंध थायढे तेम अगुरुलघु पुज्ञल इव्य कर्मदलनो अगुरुलघु आत्मइव्य साथें संबंध होय ढे तथा तेणे करी आत्मइव्यना ज्ञानादिक गुणने उपघात थाय ढे तथा जिननाम कर्मादिकें करी पूजा महत्व ऐश्वर्यादिक अनुग्रह पण होय ढे ते नणी कर्मने अगुरुलघुइव्य थापवा निमित्तें वर्ण, गंध, रस अने स्पर्शनी संख्या कहे ढे. तिहां औदारिक वर्गणा, वैक्रियवर्गणा, आहारकवर्गणा, ए त्रण वर्गणाना पुज्ञलस्कं

ध पांच वर्ण, बे गंध, पांच रस अने आठ स्पर्श, ए वीश गुणवंत होय तेथी ते गुरुलघु द्रव्य कहीयें तथा तैजसदल पण सिद्धांतने मतें वीश गुणवंत होय तेथी ते पण गुरुलघु द्रव्य कहीयें. अने नाषाद्रव्य, श्वासोश्वासद्रव्य, मनोद्रव्य अने कर्मवर्गणाद्रव्य, ए चार वर्गणाना दल शोल गुणवंत होय तेथी एने अगुरु लघुद्रव्य कहीयें, ते शोल गुण,गाथाना अर्थें करी विवरीने केहीयें बैयें. "फासा गुरुलहुमिउ खरा सीउण्हसिणिद्ध" ए गाथानें अनुसारें.

(अंतिमचउफास के०) बेहेला चार स्पर्श तेनां नाम कहे बे. एक शीत, बीजो उष्ण, त्रीजो रूक्ष अने चोथो स्निग्ध, ए चार स्पर्श अगुरुलघु द्रव्यें होय. जे नणी एक परमाणुयें एक वर्ण, एक गंध, एक रस अने बे स्पर्श. एवं पांच गुण होय केमके रूक्ष अने स्निग्ध परमाणुयें परस्परें बंध होय, तेथी सर्व परमाणुयें ए बे मांहेलो एक स्पर्श, अवश्य होय तथा शीत अने उष्ण ए बे मांहेलो पण एक स्पर्श होय. एम बे स्पर्श, एक परमाणुयें अवश्य होय अने अनंत प्रदेशी ए सूक्ष्म परिणत स्कंधें कोइ परमाणु स्निग्ध शीत, कोइ स्निग्ध उष्ण, कोइ रूक्ष शीत अने कोइ रूक्ष उष्ण, एम चार जातिना परमाणुआ मली आवे, तेवारें नाषाद्रव्य, श्वासोश्वासद्रव्य, मनोद्रव्य अने कार्मणदल, ए चारे दलें ए चार स्पर्श लाने. ए स्वमतें कह्युं. तथा कम्मपयडीने मतें पण एज चार स्पर्श कह्या अने बृहत्शतकने मतें तो ए चारे वर्गणास्कंधने विषे मृडु तथा लघु स्पर्श अवश्य होय अने रूक्ष तथा स्निग्ध मांहेलो एक स्पर्श होय, तथा शीत अने उष्ण, ए बे मांहेलो पण एक स्पर्श होय. एवं चार स्पर्श होय अने ए सूक्ष्मद्रव्य नणी गुरु तथा कर्कश ए बे स्पर्श न होय.

तथा (डुगंध के०) एक सुगंध बीजो डुर्गंध ए बे गंध अने (पंचवन्नरस के०) कृष्ण, नील, रक्त, पीत, अने शुक्ल, ए पांच वर्ण तथा तीखो, कटुक, कषायल, आम्ल अने मधुर, ए पांच रस. एवं शोल गुण सहित (कम्मखंधदलं के०) कार्मणस्कंधनुं दल पुजल होय. तेमज तैजस, नाषा, श्वासोश्वास अने मनोद्रव्य, ए चार वर्गणाना स्कंध पण शोल गुणवाला होय, तथा औदारिक, वैक्रिय अने आहारक, ए त्रण शरीर द्रव्य ए नोकर्म पुजलद्रव्य, पांच वर्ण, बे गंध, पांच रस अने आठ स्पर्श एम वीश गुणवंत पुजलद्रव्य होय, तथा सिद्धांतने मतें तैजस द्रव्य पण वीश गुणवंत होय, तेथी एने गुरुलघु द्रव्य कहीयें,

(सव्वजियणंतगुणरसअणु के०) अहीं सर्व जीव जे अनंते बे. तेणे करी गुण्या जे

रसाणु एटले केवलीनी बुद्धिरूप शस्त्रें करी कल्प्या जे रसना निरंश अंश, ते जा वाणु कहीयें. अहींआं रसाणु कहेतां जीवने कापायिक अध्यवसाय जनित आ नंद विषाद हेतु शुनाशुन कर्मनो विपाक इष्ट अनिष्टपणे करी मिष्ट अने कटुक रस एवो व्यवहार करीयें. ते रस जाणवो. पण अहींआं पांच रस मांहेला कोइ रसनी विवक्षा न करवी. अहींआं ए नाव रस लेवा, एवा सर्व जीवथी अनंत गु णा रसाविनागें युक्त जे जीव कर्मना दल ग्रहतो जेम गाय, तृणखलां चरती थ की तृणादिकने विषे डुग्धादिक मिष्ट रस उपजावती ग्रहण करे. तथा सर्प, डुग्धा दिकनुं पान करतो थको पण दूधने विषे गरलरूप कटुकरस उपजावतो ग्रहण करे तेम कर्मदलने विषे (मणंतयपएसं के०) अनंत प्रदेशीआ स्कंध तेना प्र देश प्रदेश प्रत्यें अनंता रसाणुयें (जुत्त के०) युक्तने कर्मपणे जीव ग्रहण करे. अहीं रस शब्दें अनुनाग कहीयें तेना अणुआ एटले अंश जाणवा एटले सर्व जीवानंत गुण रसाणुआ तेणें करी युक्त. अत्र हार्द एम छे के सर्व जघन्यरसें यु क्त जे पुजल तेनो रस केवलीनी प्रज्ञायें छेद्यमान सर्व जीवथी अनंतगुणा रसावि नागोनें आपे छे ते नाग अति सूक्ष्मतायें करी परनागना अनावथी निरंश अंश अणु कहीयें. रसाणुया रसाविनागा रसपलिछेदा नाव परमाणुया ए सर्व एना पर्याय जाणवा ते रसाणुया प्रतिस्कंध सर्व परमाणुने विषे सर्व जीवोथी अनंत गुणा वर्त्ते छे. एवा रसाणुयें युक्त परिगत कर्मस्कंध दलिक प्रत्यें जीव ग्रहे छे. जेम निंब इक्षुरसादिकने अधिश्रयणें करी तंडुलोने विषे प्रत्येकें यथा रस विशेष तत्त डूप प्रत्यें जणे छे तथा अनुनाग बंधाध्यवसायें करी सर्व स्कंधोने विषे अनव्यानें तगुण प्रदेश निष्पन्नने विषे प्रति परमाणुयें सर्व जीवोथी अनंतगुण रसाविनाग पलिछेदो प्रत्यें जीव जणे छे तथा अणंतपएसंत्ति एटले अनव्यानंतगुण सिद्ध अ नंत नाग प्रमाण परमाणु निष्पन्न एकेक कर्मस्कंध प्रत्यें जीव ग्रहे छे तेवा स्कं ध पण प्रति समयें अनव्यथी अनंतगुणा सिद्धानंत नाग वर्त्ति प्रत्यें ग्रहे छे ॥७८॥

हवे कर्मदलनुं अवगाहना क्षेत्र कहे छे.

एग पएसा गाढं, निअ सव पएसउ गहेइ जिउ ॥
थोवो आउ तदंसो, नामे गोए समो अहिउ ॥ ७९ ॥

अर्थ—(एगपएसागाढं के०) एक एटले अनिन्न पणे जे आकाश प्रदेश जीवें, अवगाह्यो छे. तेहीज आकाश प्रदेशें अवगाह्यां जे कर्मदल, तेने एक प्रदेशावगा

ढ कहीयें, पण एकज आकाश प्रदेशें अवगाह्यां एम अर्थ न करवो, जे नणी कर्मस्कंध पण असंख्यात प्रदेशावगाढ अंगुल असंख्यांश प्रमाण क्षेत्र अवगाढ लीये ठे. पण एक प्रदेशावगाढ दल न लीये, तेम जे आकाश प्रदेशने विषे जीव अवगाढ ठे ते आकाश प्रदेशने विषे कर्म पुजलद्रव्य अवगाढ ठे ते रागादिक स्नेह गुणयोगथी आत्मप्रदेशने विषे लागे ठे पण अनंतर परंपर प्रदेशस्थ कर्म पुजल द्रव्यने गृह्यमाण नथी. हवे जेम तीव्र अग्निने संयोगें पाणी उकालीयें तेवारें तला नुं पाणी उपर आवे अने उपरलुं पाणी तलीये जाय, तेम रागादिक स्नेह गुण योगें करी आत्माना असंख्याता प्रदेश एटले आठ मध्य प्रदेश विना बीजा सर्व प्रदेश ए पूर्वोक्त पाणीनी रीतें आवर्त्त लीयें तिहां आत्म प्रदेशें काषायिक अध्य वसाय रूप चीकणता ठे. ते चीकणतायें करी कर्मरूप रज सहित क्षेत्रने विषेज आवर्त्त करतां जेम चीकणें शरीरें लोटतां शरीरने विषे रज वलगी जाय बंधाइ जाय, तेम (निअसवपएसठगहेइजिउ के०) पोताना आत्माना सर्व प्रदेश ते अ नंतानंत कर्मदलें बंधाय पण एक प्रदेशें अथवा बे प्रदेशें करी ग्रहे बंधाय न हीं केमके, जीव प्रदेश सर्वने शृंखलावयवनी पेठें परस्पर संबंध विशेषनो नाव ठे माटें आत्मानो एक प्रदेश कर्मदल ग्रहण करवाने व्यापारतां सर्व प्रदेश व्या पारे. जेम हस्तादिकें करी घटादिक उपाडतां सर्व शरीरें जोर पहोंचे जेम कोइए क वस्तु लेवाने अर्थें अंगुलि प्रवर्त्ते तेवारें करतल, मणिबंध, नुजा, खनो, ए सर्व परंपरायें बल करे पण एटलो विशेष के जे अवयव, कार्यने ढुकडा होय ते अवयवोने विषे घणुं जोर पहोंचे, अने जे अवयव कार्यने वेगला वेगला हो य, तेने जोर हीन हीनतर पहोचे, तेम कर्म दल ग्रहतां आत्म प्रदेशने विषे प ण हीनाधिक वीर्य जाणवुं.

हवे ए आठ कर्मना दलनी नागविजजना कहे ठे. जेवारें जीव आयुःकर्म बां धे, तेवारें अंतरमुहूर्त्त पर्यंत समय समय जे कर्मदल ग्रहण करे, तेना आठ ना ग करी आठ कर्मने वहेंची दीये, अने जेवारें आयुःकर्म न बांधे तेवारें जे कर्मद ल ग्रहण करे, ते आयु विना शेष सात कर्म बांधतो होय, तेने वहेंची आपे अने जेवारें दशमे गुणगणे एक आयु अने बीजुं मोहनीय, ए बे कर्म न बांधे, अने शेष ठ कर्म बांधतो होय, तेवारें ठ नागें वहेंची आपे अने जेवारें जीव एकज कर्मनो बंधक होय तेवारें तेने नाग पण एकज होय.

तेमध्यें (थोवोआउतदंसो के०) आयुःकर्मना नागनो अंश थोडो जाणवो.

जे नणी बीजा कर्मनी अपेक्षायें आयुःकर्मनी स्थिति थोडी छे. तेथी तेनां दल प ण थोडां होय, थोडे कालें नोगवी खपावे. ते माटें. अने तेथकी वली (नामे गोएसमोअहिउ के०) नामकर्म अने गोत्रकर्म. ए बे कर्मनो नाग विशेषाधिक जाणवो. जो पण आयुःकर्मनी तेत्रीश सागरोपम स्थिति थकी नाम अने गोत्र. ए बे कर्मनी स्थिति वीश कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण छे ते आयुःकर्मनी स्थिति थकी संख्यातगुणी छे ते अपेक्षायें संख्यातगुणो नाग लाने छे तथा मनुष्य तिर्यंचना जघ न्य अंतरमुहूर्त्तादिकायुनी अपेक्षायें असंख्यातगुणो नाग लाने छे, पण आयुःकर्म आखा नव मध्यें एकज वार बंधाय, ते अंतर मुहूर्त्त पर्यंत बांधे अने बीजा कर्म तो जीव सर्वदा निरंतर पणे बांधे छे. ते माटें थोडा कालमां आयुनां दल घणा मे लववां पडे, ते कारणथी नाम अने गोत्रकर्मनो नाग विशेषाधिक कह्यो अने ए बेहुनो नाग, परस्पर तुल्य स्थिति नणी समो एटले सरखो जाणवो ॥ इति०॥७ए॥

विग्घावरणे मोहे, सवोवरि वेअणीइ जेणप्पे ॥
तस्स फुडत्तं न हवइ, ठिई विसेसेण सेसाणं ॥ ८० ॥

अर्थ- नामकर्म अने गोत्रकर्मना दलथकी (विग्घ के०) अंतराय कर्म. अ ने (आवरणे के०) ज्ञानावरणीयकर्म अने दर्शनावरणीय कर्म, ए त्रण कर्मनी उत्कृष्टी स्थिति त्रीश कोडाकोडी सागरोपमनी छे. ते नणी वीश कोडाकोडी थ की विशेषाधिक होय, माटें ए त्रणनो नाग, विशेषाधिक जाणवो अने ए त्र णने मांहो मांहे तुल्यस्थिति नणी तुल्य नाग एटले सरखे नागें आवे तथा ए त्रण कर्मथकी वली (मोह के०) मोहनीय कर्मनो नाग विशेषाधिक जाणवो. जे नणी मोहनीयनी स्थिति त्रीश कोडाकोडी सागरोपमथी बमणी जाजेरी छे अ ने त्रिगुणीथी हीन छे माटें संख्यातगुणो कहीयें. ए मध्ये पण दर्शनमोहनीयनी सीत्ते र कोडाकोडीनी स्थितिछे अने चारित्रमोहनीयनी चालीश कोडाकोडी सागरोपम नी स्थिति छे, तेणे स्थिति विशेषें करी दलनागनुं पण विशेषाधिकपणुं लेवुं. ए उक्तमात्रछे परमार्थथीतो श्रीजिनवचन प्रमाण करवुं तथा एक समय एक अध्यवसायें ग्रहीत पुजल आवे कर्म पणे परिणमे छे अहीं जीवनी शक्ति अचिंत्यछे अने पुजलनो परिणाम विचित्र छे ते माटें एमां आश्चर्य न समजवुं.

(सवोवरिवेअणीइ के०) सर्वोपरि सर्व थकी अधिक वेदनीयकर्मनो नाग हो य, एटले मोहनीयना नागथकी पण वेदनीय कर्मनो नाग विशेषाधिक होय, जे

नणी जो पण मोहनीयनी स्थितिथकी ए कर्मनी स्थिति विशेष हीन बे, तो पण मोहनीयना दल उत्कृष्टरसें बे, अने वेदनीयना दलनो रस अघातीउ बे. ते नणी मंदरस होय, जेम घेंश. राब प्रमुखनो रस ड्व्य घणो होय, तोज क्षुधा उपशमे अने दूध. दहीं, शिखरणी. खांम तथा घृतादिक अल्पड्व्यें पण क्षुधा उपशमे, तथा पाषाणादिक घणे ड्व्य संबंधे मरण नीपजे, अने विषादिक अल्प ड्व्य संबंधें पण मरणादिक कार्य नीपजे तेम मोहनीयादिक कर्मना तीव्र रस दल बे ते थोडा होय, तो पण पोतानुं कार्य आत्मगुण घातवा रूप करे, अने वेदनीयकर्मनां दल मंदरस नणी घणां मले, तोज ते पोतानुं कार्य पौजलिक सुख डुःखानुनव रूप प्रकट करी शके पण थोडे दलें स्वकार्य प्रगट करी न शके.

(जेणप्पे के०) जेमाटें वेदनीयनो नाग अल्प होय तो (तस्सफुडत्तंनहवइ के०) ते वेदनीयनुं स्फूटपणुं एटले सुख डुःखादिकनो अनुनव स्पष्ट न होय. ए स्वनावेंज वेदनीयना पुजल घणा मले, तेवारें स्वकार्य करवाने समर्थ थाय पण थोडे दलें वेदनीय प्रगट न होय. तेमाटें वेदनीयनी थोडी स्थिति बतां पण दलनो नाग महोटो जाणवो, अने (ठिईविसेसेणसेसाणं के०) शेष बीजा सात कर्मना प्रदेशना नागनुं हीनाधिकपणुं स्थितिविशेषें होय एटले स्थितिनी अपेक्षायें होय, जे कर्मनी स्थिति अधिक ते कर्मनो प्रदेश नाग पण अधिक अने जे कर्मनी स्थिति हीन ते कर्मनो प्रदेश नाग पण हीन होय ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ८० ॥

एम मूलप्रकृति नाग रचना कही. हवे उत्तर प्रकृतिनेविषे नाग रचना कहे बे.

निअ जाइ लद्ध दलिआ, णंतंसो होइ सवघाईणं ॥
वश्ंतीण विनज्जइ, सेसं सेसाण पइ समयं ॥ ८१ ॥

अर्थ–तिहां घातिनी प्रकृति मध्यें (निअजाइ के०) पोतपोतानी जातिनी प्रकृति मध्यें जे नाग (लद्ध के०) लाधो, ते (दलिअ के०) दलमांहेलो रसदलनो (अणंतसोहोइसवघाईणं के०) अनंतमो नाग सर्वघातीनी प्रकृतिने आपी अने शेष रसदल नाग जे रहे, ते ते समय (बश्ंतीणविनज्जइ के०) बंधाती एवी जे देशघातिनी प्रकृति तेने वहेंची आपीयें, ते रीत देखाडे बे.

प्रथम ज्ञानावरणीय कर्मनो मूलनाग लाधो, तेनो अनंतमो नाग केवलज्ञानावरणपणे परिणमे, जे नणी कर्म दल मध्यें अत्यंत सरस स्निग्ध दल थोडा होय, ते दल सर्व घातिनी प्रकृति लहे, अने शेष दल जे रहे, ते मतिज्ञानावरणा

दिक चार प्रकृति देशघातिनी छे. तेने परिणमे तथा दर्शनावरणीयनो जे मूल ना ग लाधो, तेनो अनंतमो नाग अत्यंत सरसदल पांच निद्रा तथा छठुं केवलदर्शनावरणीय, ए छ प्रकृति सर्वघातिनी छे तेने छ नागें वहेंची आपीयें अने शेष रह्यो जे नीरस नाग, ते चक्षुदर्शनावरणादिक त्रण प्रकृति जे देशघातिनी छे, तेनें वहेंची आपीयें. तथा शाता अशाता, ए बे प्रकृति बंध विरोधिनी छे. ते नणी एक समयें एकज प्रकृति बंधाय, तेथी एने नाग वहेंचवो नथी.

तथा मोहनीयनो मूलनाग जे लाधो, तेनो अनंतमो सरस दल नाग, ते बे नागें वहेंचीयें तेमध्यें एक दर्शन मोहनीयनें अने एक चारित्र मोहनीयनें आपीयें, वलता चारित्र मोहनीयना वली बार नाग करीयें ते बंधाता अनंतानुबंधीया चार तथा अप्रत्याख्यानीआ चार अने प्रत्याख्यानीआ चार, एवं बार प्रकृतिने वहेंची आपीयें अने शेष रह्या जे देशघातीआ रसवंत दल तेना बे नाग करी, कषाय तथा नोकषाय मोहनीयनें वहेंची आपीयें तेमध्यें कषायनो नाग संज्वलना चारे प्रकृतिने आपीयें, अने नोकषायनो नाग एक वेद, एक युगल, नय अने जुगुप्सा, ए पांच प्रकृतिने वहेंची आपीयें, तथा आयुःकर्म एकज गतिआश्रयी बंधाय, तेथी एनो नाग न वहेंचाय.

नामकर्मनो मूलनाग जे आवे, ते उगणत्रीश नागें वहेंचीयें, तेनां नाम कहे छे. १ गति, २ जाति, ३ तनुं ४ उपांग, ५ बंधन, ६ संघयण, ७ संस्थान, ८ आनु पूर्वी, १२ वर्ण चतुष्क, १३ अगुरुलघु, १४ उपघात, १५ उच्छ्वास, १६ निर्माण, १७ जिननाम, १८ आतप, १९ शुनाशुन विहायोगति. २९ त्रस दशक, अथवा स्थावरदशक, ए उगणत्रीश मध्यें जेटली बंधाती होय, तेटले नागें वहेंचीयें, तेमध्यें पण तनु एटले शरीर नामकर्मनी प्रकृतिना त्रण अथवा चार नाग करीयें. तिहां वैक्रिय, आहारक, तैजस अने कार्मण बांधतां चार नाग करीयें तथा औदारिक, तैजस अने कार्मण अथवा वैक्रिय, तैजस अने कार्मण बांधतां त्रण त्रण नाग करीयें तथा बंधनना सात नाग तथा अगीआर नाग करीयें, तिहां मनुष्य अने तिर्यंच प्रायोग्य बांधतां, औदारिकना बंधन चार. अने तैजस कार्मणना बंधन त्रण एवं सात बंधाय, तेवारें सात नागें वहेंचीयें तथा देवप्रायोग्य नामकर्मनी एकत्रीश प्रकृति बांधतां वैक्रियना बंधन चार, तथा आहारकना बंधन चार, अने तैजस कार्मणना बंधन त्रण, एवं अगीआर बंधाय तेवारें अगीआरनागें वहेंचीयें तथा वर्ण नामना पांच नाग, गंधनामना बे नाग,

रसनामना पांच नाग, स्पर्शनामना आठ नाग, एवं वीश नाग थाय अने शेष प्रकृतिना नाग अत्र कोइ थाय नहीं, जे नणी ते प्रकृतिबंध विरोधिनी छे, एक बांधतां बीजी न बंधाय, जेम एकगति बांधतां शेष त्रण गति न बंधाय, एमज जाति, संघयण तथा संस्थानादिक पण एकज बंधाय तथा त्रसादिक दशक बांधतां स्थावरादिक दशकनी विरोधिनी प्रकृति न बंधाय. गोत्रकर्मनो पण नागीउ कोइ नथी. एक समयें उंच, नीच, ए बे मांहेलुं एकज गोत्र बंधाय, तथा अंतरायकर्मनो मूलनाग जे आवे, ते तेनी उत्तर प्रकृति पांचने नागें वहेंचीयें एम उत्तर प्रकृतिनी दलविनंजना कही.

(बधंतीणविनवइ के०) जे प्रकृति बंधाती होय, ते पोत पोतानो प्रदेशदलिक नाग पामे अने बंध विछेदे तेनो नाग जे बीजी सजातीय प्रकृति बंधाती होय ते पामे अने सजातीय न बंधाती होय तो विजातीयने पण नाग आवे, जेम थीणद्धीत्रिकने बंधविछेदें तेनो नाग निद्रा अने प्रचलाने आवे अने निद्रा प्रचलाने बंधविछेदें चक्षुदर्शनावरणादिकने आवे, तथा दर्शनावरणने बंध विछेदें तेनो नाग विजातीय प्रकृति वेदनी छे, तेज तिहां ते गुणठाणे बंधाय छे. माटें तेनें लाने तथा मिथ्यात्व मोहनीयने बंध विछेदें एनी सजातीय दर्शन मोहनीयनी प्रकृतिनो पण बंध नथी, ते नणी विजातीय चारित्र मोहनीयनी प्रकृतिने एनो नाग आवे, तेमध्यें पण सरस दल सर्वघाती प्रकृतिने योग्य छे. ते नणी सर्वघातीआबार कषाय प्रकृतिने ए नाग दल आवे, ए उत्तर प्रकृतिनुं उत्कृष्ट पदें तथा जघन्यपदें एकेकथी प्रदेशना अल्पबहुत्व पणानो विचार जाणवाने अर्थें नीचें यंत्र स्थापना करी छे. एम कर्म प्रकृतिनी टीकाथकी सर्व उत्तर प्रकृतिना प्रदेशनो उत्कृष्टपदें अल्प बहुत्व विचार समजी, गुरु मुखथी निर्णय करी सविस्तर पणे वखाणवो.

॥ अथ यंत्रस्थापना ॥

॥ तत्र उत्तर प्रकृतिषु उत्कृष्टपदे कर्मदलिकनागाल्पबहुत्वमुच्यते ॥

॥ अथ ज्ञानावरणीयेषु प्रदेशाल्प ॥ ॥ बहुत्वं ॥	२ ततो मनःपर्यवज्ञानावरणस्य अनंतगुणः ॥
१ केवल ज्ञानावरणस्य उत्कृष्टपदे सर्वस्तोकः कर्मदलिकनागः ॥	३ ततोऽवधिज्ञानावरणस्य विशेषा०॥ ४ ततःश्रुतज्ञानावरणस्यविशेषाधिकः

५ ततोमतिज्ञानावरणस्यविशेषाधि०	१४ ततो जुगुप्साया अनंत गुणः ॥
॥ अथ दर्शनावरणीयेषु ॥ ॥ प्रदेशाल्पबहुत्वं ॥	१५ ततो नयस्य विशेषाधिकः ॥
१ दर्शनावरणे प्रचलायाः सर्वस्तोकः॥	१७ ततोहास्यशोकयोरपि विशेषाधिकः परस्परं स्वस्थाने तुल्यः ॥
२ ततोनिद्राया विशेषाधिकः ॥	१ए ततोरत्यरत्योर्विशेषाधिकः परस्परं स्वस्थाने तुल्यः ॥
३ ततःप्रचलाप्रचलायाविशेषाधिकः॥	२१ ततो स्त्रीनपुंसकवेदयोर्विशेषाधिकः परस्परं स्वस्थाने तुल्यः ॥
४ ततो निद्रा निद्रायाविशेषाधिकः॥	२२ ततः संज्वलन क्रोधस्य विशेषा०॥
५ ततो स्त्यानर्द्धीविशेषाधिकः ॥	२३ ततः संज्वलनमानस्य विशेषा० ॥
६ ततोकेवलदर्शनावरणस्यविशे० ॥	२४ ततःपुंवेदस्य विशेषाधिकः ॥
७ ततोऽवधिदर्शनावरणस्याऽनं० ॥	२५ ततःसंज्वलनमायाया विशेषा० ॥
७ ततोऽचक्षुदर्शनावरणस्यविशे०॥	२६ ततःसंज्वलनलोनस्य संख्यातगुणः
ए ततोचक्षुदर्शनावरणस्य विशे० ॥	४ चतुर्णामायुषामपि स्वस्थाने तुल्यंः
॥ अथ वेदनीयेषु प्रदे ॥ ॥ शाल्प बहुत्वं ॥	॥ अथ नामोत्तरप्रकृतेः प्रदेशा ॥ ॥ ल्पबहुत्वं ॥
१ वेदनीयेऽशातस्य नागः सर्वस्तोकः॥	१ नामकर्मणि देवनरकगत्योःसर्वस्तोकः परस्परं स्वस्थाने तुल्यः ॥
२ ततोवेदनीयशातस्य विशेषाधिकः॥	३ ततोमनुष्यगतेर्विशेषाधिकः ॥
॥ अथ मोहनीयेषु प्रदेशा ॥ ॥ ल्प बहुत्वं ॥	४ ततो तिर्यग्गतेर्विशेषाधिकः ॥
१ अप्रत्याख्यानमानस्य सर्वस्तोकः॥	॥ जातिपंचकेषु स्वल्पबहुत्वं ॥
२ ततोऽप्रत्याख्यानक्रोधस्य विशे० ॥	४ जातिषुद्वींद्रियादिजातिचतुष्के सर्वस्तोकः स्वस्थाने समः ॥
३ ततोऽप्रत्याख्यानमायायाविशे० ॥	५ तत एकेंद्रिय जातिविशेषाधिकः॥
४ ततोऽप्रत्याख्यानलोनस्यविशे० ॥	॥ शरीरनामकर्मणि अ ॥ ॥ ल्पबहुत्वं ॥
७ एवं प्रत्याख्यानावरणचतुष्कस्यापि यथोत्तरं विशेषाधिकः ॥	१ शरीरेषु आहारकस्य सर्वस्तोकः॥
१२ एवं अनंतानुबंधिचतुष्कस्यापि यथोत्तरं विशेषाधिकः ॥	
१३ ततो मिथ्यात्वस्य विशेषाधिकः ॥	

२ ततोवैक्रिय शरीरस्य विशेषा०॥
३ ततऔदारिकशरीरस्य विशे० ॥
४ ततो तैजस शरीरस्य विशेषाधिकः॥
५ ततःकार्मण शरीरस्य विशेषा० ॥

५ एवं संघातन पंचकस्यापि.

॥ उपांगेषु स्वल्पबहुत्वं ॥

१ उपांगेषु आहारकोपांगस्य स्तोकः॥
२ ततो वैक्रियोपांगस्य विशेषाधिकः॥
३ तत औदारिकोपांगस्यविशेषा० ॥

॥ बंधनेषु स्वल्पबहुत्वं ॥

१ आहारकाहारकबंधनस्य सर्वस्तो०॥
२ तत आहारक तैजस बंधनस्य विशेषाधिकः ॥
३ ततआहारककार्मणबंधनस्य वि०॥
४ तत आहारक तैजसकार्मणबंधनस्य विशेषाधिकः ॥
५ ततो वैक्रिय वैक्रिय बंधनस्य वि० ॥
६ ततो वैक्रिय तैजस बंधनस्य वि० ॥
७ ततो वैक्रिय कार्मणबंधनस्य वि०॥
८ ततो वैक्रिय तैजस कार्मण बंधनस्य विशेषाधिकः ॥
९ तत औदारिक औदारिक बंधनस्य विशेषाधिकः ॥
१० तत औदारिक तैजस बंधनस्य विशेषाधिकः ॥
११ तत औदारिककार्मणबंधनस्य विशेषाधिकः ॥
१२ तत औदारिक तैजस कार्मण बंधनस्य विशेषाधिकः ॥
१३ ततस्तैजस तैजसबंधनस्य वि०॥
१४ ततस्तैजसकार्मण बंधनस्य वि०॥
१५ ततःकार्मणकार्मणबंधनस्य वि०॥

॥ संस्थानेषु स्वल्पबहुत्वं ॥

४ संस्थानेषु मध्यसंस्थानचतुष्के सर्वे स्तोकःपरस्परं स्वस्थाने तुल्यः ॥
५ ततःसमचतुरस्रस्य विशेषाधिकः ॥
६ ततो हुंडकस्य विशेषाधिकः ॥

॥ संघयणेषु स्वल्प बहुत्वं ॥

५ संहननेषु आद्यपंचकस्य तुल्यःस्तो०
६ ततः सेवार्त्तस्य विशेषाधिकः ॥

॥ वर्णेषु स्वल्प बहुत्वं ॥

१ वर्णेषु कृष्णस्य सर्वस्तोकः ॥
२ ततो नीलस्य विशेषाधिकः ॥
३ ततो लोहितस्य विशेषाधिकः ॥
४ ततो हारिद्रस्य विशेषाधिकः ॥
५ ततःशुक्लस्य विशेषाधिकः ॥

॥ गंधेषु स्वल्पबहुत्वं ॥

१ गंधयोर्मध्ये सुरभेः सर्वस्तोकः ॥
२ ततो डुरभिगंधस्य विशेषाधिकः ॥

॥ रसेषु स्वल्पबहुत्वं ॥

१ रसेषु तिक्तरसस्य सर्वस्तोक भागः ॥
२ ततः कटुकस्य विशेषाधिकः ॥

३ ततः कषायस्य विशेषाधिकः ॥
४ तत आम्लस्यनागो विशेषाधिकः ॥
५ ततोमधुरस्य नागो विशेषाधिकः ॥

॥ स्पर्शेषु स्वल्प बहुत्वं ॥

२ स्पर्शेषु कर्कशगुरुस्पर्शयोःसर्वस्तो०
४ ततो मृडुलघुस्पर्शयोर्विशेषाधिकः॥
६ ततो रूक्षशीतयोर्विशेषाधिकः ॥
८ ततः स्निग्धोष्णयोर्विशेषाधिकः अ
त्र सर्वत्र युग्मेषु परस्परस्तुल्यः॥

॥ आनुपूर्वीषु स्वल्पबहुत्वं ॥

२ आनुपूर्वीषुदेवनारक्यानुपूर्वीषु सर्व
स्तोकः परस्परं तुल्यः ॥
३ ततो मनुष्यानुपूर्वेर्विशेषाधिकः ॥
४ ततो तिर्यगानु पूर्वेर्विशेषा० ॥
१ खगति६ये प्रशस्त खगतेः स्तोकः ॥
२ ततोऽप्रस्यखगतेर्विशेषाधिकः ॥

॥ त्रसविंशतिकेषु स्वल्पबहुत्वं ॥

१ त्रसविंशतितोत्रसनाम्नः सर्वस्तोकः॥
२ ततः स्थावरनागोविशेषाधिकः ॥
३ एवं बादरस्य नागः स्तोकः ॥
४ ततःसूक्ष्मस्य विशेषाधिकः ॥
६ एवं पर्याप्तादप्यपर्याप्तो विशे० ॥
२० एवं प्रत्येकेपि ६यो र्६यो आतपद्योत
योः समं समं वाच्यः परस्परं तुल्यः॥
६ निर्माणो १ श्वास २ पराघातो ३
पघात ४ अगुरुलघु ५ जिननाम ६
अल्पबहुत्वं नास्ति परस्परं सजा
तीय प्रतिपक्षापेक्षानावात् ॥

॥ गोत्रकर्मणि स्वल्प बहुत्वं ॥

१ गोत्रयोर्नीचैर्गोत्रस्यनागः सर्वस्तो०
२ तत उच्चैर्गोत्रस्यनागो विशेषाधि०॥

॥ अंतरायकर्मणि स्वल्पबहुत्वं ॥

१ अंतरायेषु दानांतरायस्य सर्वस्तोकः॥
२ ततो लाभांतरायस्य विशेषाधिकः॥
३ ततो नोगांतरायस्य विशेषाधिकः॥
४ ततोपनोगांतरायस्य विशेषाधिकः॥
५ ततोवीर्यांतरायस्य नागोविशे० ॥
॥ इति उत्तरप्रकृतिषूत्कृष्टपदे कर्म
दलिकनागाल्प बहुत्व यंत्रकं ज्ञेयं ॥

॥ अथ जघन्यपदे उत्तर प्रकृतिषु॥
॥ कर्मदलिकनागाल्पबहुत्वमुच्यते ॥

१ तत्र केवलज्ञानावरणस्य. जघन्य
पदे कर्मदलिक नागः सर्वस्तोकः ॥
२ ततोमनःपर्यवज्ञानावरणस्यानंत ०
३ ततोऽवधिज्ञानावरणस्य वि०॥
४ ततःश्रुतज्ञानावरणस्य विशेषा० ॥
५ ततो मतिज्ञानावरणस्य वि० ॥

॥ दर्शनावरणेषु स्वल्पबहुत्वं ॥

१ दर्शनावरणे निद्रायाः सर्वस्तोकः॥
२ ततःप्रचलायानागोविशेषाधिकः ॥
३ ततो निद्रानिद्रायाः नागोविशे० ॥
४ ततः प्रचला प्रचलाया विशेषा० ॥
५ ततः स्त्यानर्द्धेर्विशेषाधिकः ॥

६ ततःकेवल दर्शनावरणस्य विशे०॥
७ ततोऽवधिदर्शनावरणस्य अनंत० ॥
८ तत अचक्षुदर्शनावरणस्य विशे०॥
९ ततश्चक्षुदर्शनावरणस्य विशे० ॥

॥ वेदनीयेषु स्वल्प बहुत्वं ॥

१ वेदनीयेऽशातस्य नागः स्तोकः ॥
२ ततःशातस्य नागोविशेषाधिकः ॥

॥ मोहनीयेषु स्वल्पबहुत्वं ॥

१ अप्रत्याख्यान मानस्य सर्वस्तोकः॥
२ ततोऽप्रत्याख्यानक्रोधस्य विशे०॥
३ ततोऽप्रत्याख्यानमायायाविशे० ॥
४ ततोऽप्रत्याख्यान लोजस्य वि० ॥
१२ एवं क्रमेण प्रत्याख्यानावरणाऽनंतानुबंधि चतुष्कयोरपि विशे० ॥
१३ ततोमिथ्यात्वस्य जघन्य नागो वि०
१४ ततो जुगुप्साया नागोऽनंतगुणः ॥
१५ ततो नयस्य विशेषाधिकः ॥
१७ ततोहास्यशोकयोर्विशेषाधिकः स्वस्थाने परस्परं तुल्यः ॥
१९ ततो रत्यरत्योर्विशेषाधिकः परस्परं स्वस्थाने तुल्यः ॥
२२ त्र्यन्यतरस्य वेदस्य नागो विशे० ॥
२६ ततः क्रोधादिचतुर्णां संज्वलनानां यथोक्तं विशेषाधिकत्वं ॥

॥ आयुषि स्वल्प बहुत्वं ॥

२ आयुषि तिर्यग्नरायुषोःसर्वस्तोकः॥
४ ततो देवनरकायुषोऽसंख्येयगुणः॥

॥ नामकर्मणि स्वल्प बहुत्वं ॥

१ ततस्तिर्यग्गतेः सर्वस्तोकः ॥
२ ततो मनुष्यगतेर्विशेषाधिकः ॥
३ ततो देवगतेरसंख्येयगुणः ॥
४ ततो नरकगतेरसंख्येयगुणः ॥

॥ जातिषु स्वल्प बहुत्वं ॥

४ जातिषु द्वींद्रियादिजातिचतुष्के सर्वस्तोकः परस्परं तुल्यः ॥
५ तत एकेंद्रियजातेर्विशेषाधिकः ॥

॥ शरीरेषु स्वल्प बहुत्वं ॥

१ शरीरेषु औदारिक शरीरे सर्वस्तोकः॥
२ ततस्तैजसशरीरस्य विशेषाधिकः ॥
३ ततःकार्मण शरीरस्य विशेषाधिकः॥
४ ततोवैक्रियशरीरस्यासंख्येयगु० ॥
५ ततोऽऽहारकस्यासंख्येयगुणः ॥

१० एवं संघातनेषु बंधनेषु स्वपि वाच्यं.

॥ अंगोपांगेषु स्वल्प बहुत्वं ॥

१ अंगोपांगेषुस्वौदारिकोपांगस्यस्तोकः
२ ततोवैक्रियोपांगस्य असंख्येय० ॥
३ ततोऽऽहारकोपांगस्यासंख्येयगु० ॥

॥ आनुपूर्वीषु स्वल्प बहुत्वं ॥

२ आनुपूर्वीषु नरकदेवगत्यानुपूर्व्योः सर्वस्तोकःपरस्परं स्वस्थाने तुल्यः ॥
३ ततो मनुष्यानुपूर्व्या विशेषाधिकः ॥
४ ततस्तिर्यग्गत्यानुपूर्व्या विशेषा० ॥

॥ त्रसविंशतिषु स्वल्प बहुत्वं ॥	
१	त्रस विंशतस्त्रसनाम्नः सर्वस्तोकः॥
२	ततः स्थावरनाम्नः विशेषाधिकः॥
२०	एवं बादर सूक्ष्मयोः पर्याप्ताऽपर्याप्त प्रत्येक साधारणयोश्च स्तोकः॥
४२	अवशिष्ट द्विचत्वारिंशत प्रकृतीनां जघन्याल्पबहुत्वं उत्कृष्टवत् ज्ञेयं

॥ गोत्रेषु स्वल्प बहुत्वं ॥	
१	गोत्रेषु नीचैर्गोत्रस्य भागःस्तोकः॥
२	तत उच्चैर्गोत्रस्य विशेषाधिकः॥

॥ अंतरायेषु स्वल्प बहुत्वं ॥	
१	अंतरायेषु दानांतरायस्य सर्वस्तोकः
२	ततो लाभांतरायस्य विशेषाधिकः॥
३	ततो भोगांतरायस्य विशेषाधिकः॥
४	तत उपभोगांतरायस्य विशेषा० ॥
५	ततो वीर्यांतरायस्य विशेषाधिकः॥

हवे कर्मना प्रदेश वेद्या विना अवश्य निर्जरा न थाय यद्यपि स्थिति तथा रस ए बे तो वेद्या विना पण शुभ अध्यवसायें करी तथा तप संयमें करी स्थितिघात तथा रसघात करी कर्म निर्जरे, पण प्रदेश सर्व वेदे, तेवारेंज तेनी निर्जरा थाय माटें ते प्रदेश वेदवाने जीव, सम्यक्त्वादिकगुणें करी थोडे कालें घणा प्रदेश निर्जरवाने अर्थें वेद्यमान दलने विषे उपरना दल समय समय असंख्यात गुणाकारें संक्रमावे, ते भणी एने गुणश्रेणी कहीयें. ते गुण श्रेणी अगीआर छे, ते कहे छे.

॥ अथ भागलब्धं दलिकगुणश्रेणी रचनयैव क्षिप्यते ॥

सम्म देस सव्व विरई, उअण विसंजोअ दंस खवगेअ ॥
मोहसम संत खवगे, खीण सजोगीअर गुण सेढी ॥ ८२ ॥

अर्थ- एक (सम्म के०) सम्यक्त्व प्रत्ययिकी, बीजी (देस के०) देशविरति प्रत्ययिकी, त्रीजी (सवविरईउ के०) सर्वविरतिप्रत्ययिकी, चोथी (अणविसंजोअ के०) अनंतानुबंधिनी विसंयोजनार्थें गुणश्रेणी करे पांचमी (दंसखवगेअ के०) दर्शनमोहनीय खपावतां गुणश्रेणी करे, छठी (मोहसम के०) चारित्र मोहनीय उपशमावतां गुणश्रेणी करे, सातमी (संत के०) उपशांत मोहनीय गुणश्रेणी, आठमी (खवगे के०) क्षपक श्रेणीयें गुणश्रेणी करे, नवमी (खीण के०) क्षीणमोह गुणश्रेणी, दशमी (सजोगीअर के०) सयोगी केवली गुणश्रेणी अने अगीआरमी ते थकी इतर अयोगी केवलीनी गुणश्रेणी, ए अगीआर (गुणसेढी के०) गुणश्रेणी जाणवी ॥ इत्यक्षरार्थः ॥ ८२ ॥

१ प्रथम सम्यकत्व निमित्तें ग्रंथिनेद करतां तथा बीजो अपूर्वकरण करतां स्थिति घात, रसघात, गुणश्रेणी अपूर्वबंधन, ए चार वानां करतां, प्रति समयें असंख्यात गुणी निर्जरा वधारतो जाय, तेम अपूर्वनिवृत्तिकरणें पण जाणवो. अने सम्यक्त्व पाम्या पढी पण सम्यक्त्व प्रत्ययें करी अंतरमुहूर्त प्रमाण शेष कर्मदल खपाववाने गोपुञ्चाकारें दल रचना करे, ते प्रथम सम्यक्त्व गुणश्रेणी जाणवी. ए अन्य श्रेणीनी अपेक्षायें सम्यक्त्व प्रत्ययिकी मंदविशुद्धिपणी दीर्घ अंतरमुहूर्त्ते वेदवा योग्य अने अल्प प्रदेशिक एवी गुणश्रेणी करे.

२ ते थकी देशविरति निमित्त अपूर्व करण करतो पहेली गुणश्रेणीना अंतरमुहूर्त्तथी संख्यात गुण हीन एवा अंतरमुहूर्तें वेदवा योग्य अने पूर्वली श्रेणीथी असंख्यात गुण वृद्धि प्रदेशिक दलरचनायें, देशविरति गुण प्रत्ययिकी श्रेणी, ते प्रथम गुणश्रेणिनी निर्जराथकी असंख्यातगुणी निर्जरावंत एवी बीजी गुणश्रेणी करे.

३ ते देशविरति गुणथकी अनंतगुण विशुद्धि बांधतो सर्वविरति लब्धि निमित्त अपूर्व करण करतो सर्वविरति गुणप्रत्ययिकी देशविरति गुणश्रेणीना अंतरमुहूर्त्तथी संख्यातगुणहीन एवी अंतरमुहूर्त्तें वेदवा योग्य असंख्यातगुण वृद्धि प्रदेशात्मक असंख्यातगुण निर्जराहेतु एवी सर्वविरति रूप त्रीजी गुणश्रेणी करे.

४ ते थकी अनंतगुणविशुद्धियें अनंतानुबंधीया कषाय विसंयोजतो थको सर्वविरति गुणश्रेणीना अंतर मुहूर्त्तथकी संख्यातगुणहीन अंतरमुहूर्त्तें वेदवा योग्य असंख्यातगुण वृद्ध दलिक एवी चोथी गुणश्रेणी करे.

५ तेथकी पण अत्यंत विशुद्ध परिणामें पूर्वली गुणश्रेणीना अंतर मुहूर्त्त थकी संख्यातगुण हीन अंतरमुहूर्त्तें वेदवा योग्य असंख्यातगुण वृद्धदलिक त्रण दर्शनमोहनीयने खपाववा निमित्त, गुणश्रेणी करे ते क्षायिक सम्यक्त्व प्रत्ययिकी असंख्यातगुण निर्जरारूप पांचमी गुणश्रेणी जाणवी.

६ तेथकी पण संख्यातगुणहीन एवी अंतर मुहूर्तें वेदवा योग्य असंख्यात गुणवृद्ध दलिक असंख्यातगुणी निर्जराहेतु चारित्रमोहनीय उपशमावतो अपूर्व करण अनिवृत्तिकरण गुणठाणे गुणश्रेणी करे, ते बही गुणश्रेणी जाणवी.

७ तेथकी अनंतगुणविशुद्धियें उपशांतमोह प्रत्ययिकी संख्यातगुण हीन मुहूर्त्तें वेदवा योग्य असंख्यातगुण वृद्धि दलिक उपशांतमोह गुणश्रेणी सातमी.

८ तेथकी अनंतगुणविशुद्धियें संख्यातगुण हीन मुहूर्त्तें वेदवा योग्य असंख्यात गुणवृद्धि दलिक असंख्यातगुण निर्जरायें वधती चारित्र मोहनीय खपावतां

आठमे, नवमे अने दशमे गुणठाणे दलिक रचना करे. ते आठमी गुणश्रेणी.

ए तेथकी अत्यंतविशुद्ध संख्यातगुणहीन अंतरमुहूर्त्तें वेदवा योग्य असंख्यातगुणवृद्धिदलिक क्षीणमोह गुणठाणा प्रत्ययिकी गुणश्रेणी नवमी जाणवी.

१० तेथकी संख्यातगुणहीन अंतरमुहूर्त्तें वेदवा योग्य असंख्यातगुणवृद्धि दलिक सयोगी केवलीने असंख्यातगुणी निर्जराहेतु दलिक रचना करे, ते दशमी.

११ ते थकी इतर अयोगी गुणठाणें कर्म खपाववा निमित्त, सयोगी गुणश्रेणीना अंतरमुहूर्त्त थकी संख्यात गुणहीन अंतमुहूर्त्तें वेदवा योग्य असंख्यातगुण वृद्ध दलिक कर्मदल रचना करे, ते अगीआरमी अयोगीकेवली गुणश्रेणी होय. एम अगिआरगुणश्रेणीनी रचनायें करी बहुकाल वेदवा योग्य कर्म ते अल्प कालें निर्जरे ॥ इत्यर्थः ॥ ८२ ॥

हवे गुणश्रेणीनुं स्वरूप कहे छे.

गुणसेढी दल रयणा, णुसमय मुदया दसंख गुणणाए ॥
एअगुणा पुण कमसो, असंख गुण निज्जरा जीवा ॥ ८३ ॥

अर्थ—(गुणसेढी के०) गुणश्रेणी ते (दलरयणा के०) कर्मदलनी जोगवी वेदीने निर्जरा निमित्त, रचना स्थापना. (अणुसमयमुदयादसंखगुणणाए के०) उदय समयथी मांमीने समय समयें असंख्यातगुणाकारें वधता दलनुं संक्रमाववुं (एअगुणापुणकमसो के०) ए गुणश्रेणीना वली अनुक्रमें एकेकथी चढता (असंखगुणनिज्जराजीवा के०) असंख्यातगुण निर्जरावंत जीव होय. पहेली गुणश्रेणीथी बीजीना, बीजी गुणश्रेणीथी त्रीजी गुणश्रेणीना जीव चढतां चढतां वधती वधती निर्जरावंत होय. एम सर्वत्र समजवुं ॥ इत्यक्षरार्थः ॥ ८३ ॥

गुणाकारें कर्मदल वेदीने निर्जरा निमित्त कर्मदलनुं व्यवस्थायें स्थापवुं उपरली स्थितिथकी उतारी उतारी उदयावलिनी स्थितिना समय समय स्थितिने विषे असंख्यातगुण वधतुं संक्रमावतां जे दलश्रेणी, ते गुणश्रेणी कहीयें. एम थोडे कालें घणां कर्मदल निर्जरे, तेना सुखाववोध निमित्त थापना करी देखाडीछे.

तिहां प्रथम गुणश्रेणीनो काल अपूर्वकरण अने अनिवृत्ति करण कालथकी किंचिदधिक अंतर मुहूर्त्तमान जाणवो. ते वेद्यमान अंतर मुहूर्त्तथी उपरली स्थितिना दलिक उतारी, उतारी, वेद्यमान स्थितिना उदयथी प्रतिसमयें असंख्यातगुणो असंख्यातगुणो वधतो चरम समय लगें संक्रमावे, एटले उपरली स्थितिनुं उतार्युं जे

दल, ते मध्यें प्रथम समयें स्तोक संक्रमावे. तेथी बीजे समयें असंख्यातगुणो संक्रमावे. तेथी वली त्रीजे समयें असंख्यातगुणो संक्रमावे. एम समयें, समयें, असंख्यात गुणाकारें वधारतो, वधारतो अंतर मुहूर्त्तने चरम समयें सर्वोत्कृष्ट संक्रमावी, जोगवीने खपावे पण गुणश्रेणिनो काल वधारे नहीं. ए रीतें सर्व गुणश्रेणीनुं स्वरूप जाणवुं. पण एकेकथी श्रेणीनुं अंतर मुहूर्त्त संख्यात गुणहीन हीनकाल पूर्वली श्रेणीनी अपेक्षायें होय, अने कर्मदल असंख्यातगुणां वधतां होय.

तिहां देशविरति अने सर्वविरतिपणुं पामतो बे करण करे, पण त्रीजुं अनिवृत्तिकरण न करे, तथा देशविरति अने सर्वविरतिथी आजोगें पड्यो अने वली जे देशविरत्यादिक पडीवजे, तेवारें पण ते बे करण करे, अने जे अनाजोगें पड्यो ते करण कस्या विना चढे, ए बे करण करी देशविरति सर्वविरत्यादिक गुण लहे तो जीव अवश्य वधते परिणामें होय. तिहां वधते परिणामें केवारें एक असंख्यात जागाधिक अने केवारें एक संख्यातजागाधिक, केवारेंएक संख्यातगुणाधिक अने केवारें एक असंख्यातगुणाधिक दलिक रचना करे. तिहां हीयमानपरिणामें ए चारे हीयमान दलिक रचना करे, अने तुल्यपरिणामें तुल्य दलिक रचना करे, पण पोत पोतानी गुणश्रेणीनुं अंतरमुहूर्त्त सरखुंज होय तथा अनंतानुबंधीयानी विसंयोजना देवता, मनुष्य अने नारकी पर्याप्ता अविरति सम्यक्दृष्टि देशविरति अने सर्वविरति, ए सर्व त्रण करणें करी करे. तिहां अपूर्वकरण अनिवृत्तिकरण कालें गुणश्रेणी करे. ए मध्यें प्रथम त्रण गुणश्रेणी सम्यक्त्व देशविरति अने सर्वविरतिथी सहसात्कारें पडतां केटलोएक काल मिथ्यात्व गुणगणे पामीयें. ए गुणश्रेणीनी सविस्तर वक्तव्यता कर्मप्रकृति तथा पंचसंग्रहनी वृद्धटीका थकी जाणवी.

तथा ए अगीआर गुणश्रेणीना जीव अनुक्रमें एकेकथी असंख्यातगुणी निर्जरावंत होय एटले मिथ्यात्वथकी सम्यक्त्व गुणश्रेणीयें अनंतगुण निर्जरा होय, जेम कोइएक वृद्ध दुर्बल रोगाक्रांत चित्तचिंतातुर पुरुष होय ते जेनी धारा न होय एवा बूंठा काटें जरेला कूहाडायें करी बावलीआ तथा खेरनां काष्ट वेढां ने कापतो घणो दुःखी थाय तोपण घणे काले थोडांक कापी शके, अने कोइ एक तरुण नीरोगी निश्चिंत दृढ संघयणी पुरुष, तीक्ष्ण एवा सार लोह फरशीयें करी, सूकी एरंड तथा आकडानी लाकडी थोडाकालमां पण घणी कापी नाखे तेम मिथ्यात्वी जीव वीर्यें हीन थको पोताना अत्यंत चीकणां कर्म तेने अज्ञानोपहत एवा बालतपश्चरणादिक बूंठा शस्त्रे प्रायें करी घणा कालें पण अल्प कर्म निर्जरे, अने सम्यक्

दृष्टि जीव ज्ञानादिक गुणें बलिष्ट होय माटे तेहना शुभपरिणाम वृद्धियें रसघात स्थितिघातें करी नीरस निःसार एरंम जेवा थयला कर्मोंने ते अपूर्वकरणादिक तीक्ष्ण शस्त्रें करी अल्प कालें पण घणा छेदी नाखे, तेमाटें गुणश्रेणी गुणश्रेणी प्रत्यें यथोत्तर वीर्य वृद्धियें कर्म निःसार होय. तेने गुणनिर्मलतारूप शस्त्रें करी असंख्यगुणी असंख्यगुणी निर्जरा वधे, तिहां सर्वोत्कृष्ट कर्म निर्जरा अयोगी केवलीने होय॥८३॥

एम गुण विशुद्धियें निर्जरा वधे ते जणी गुणठाणानो अंतरकाल कहे छे.

पलिआ संखंसमुहू, सासण इअर गुण अंतरं हस्सं ॥
गुरु मिछि बे छसठी, इयरगुणे पुग्गलद्धंतो ॥ ८४ ॥

अर्थ-(सासण के०) सास्वादन गुणठाणानुं (पलिआसंखंस के०) पल्योपमनो असंख्यातमो जाग जघन्यथी आंतरुं जाणवुं, जे जणी सास्वादन गुणठाणुं एकवार स्पर्शी, वली बीजी वेलायें स्पर्शे. एने वचमानो काल तेने सास्वादननुं आंतरुं कहीयें, ते जघन्यथी तो पल्योपमासंख्येय जाग प्रमाण होय, जे जणी कोइ एक जीव मोहनीयनी छवीश प्रकृतिनी सत्तायेंथको औपशमिक सम्यक्त्व लही, त्रिपुंज करी अष्टाविंशति सत्कर्मा थाय, तेवारें पडतां सास्वादनपणुं पामे. तिहांथी वली मिथ्यात्वें जाय, तिहां मिथ्यात्वप्रत्ययें सम्यक्त्वमोहनीय मिश्रमोहनीयने समय समय उवेलतां, उवेलतां, पल्योपमासंख्येय जाग काल प्रमाण ते मोहनीयनी बे प्रकृतिने उवेली रहे ते वारें मिश्र तथा सम्यक्त्वनी सत्ता रहित थयो थको. छवीश सत्कर्मा थाय वली पण कोइ एक जीव औपशमिक सम्यक्त्व पामी, तिहांथी सास्वादनपणुं पामे तेणे एथी हीन आंतरुं न कह्युं तथा जे जीव, उपशम श्रेणीथी पडतो सास्वादन पणुं पामी वली अंतरमुहूर्त्तने आंतरें बीजी वेला उपशमश्रेणी पडिवजे, ते वली तिहांथी पडतो सास्वादन गुणठाणे आवे. ए अपेक्षायें अंतर मुहूर्त्तनुं पण आंतरुं होय, अंतर मुहूर्त्तना असंख्याता जेद छे, तथा ए गुणठाणानो काल पण अंतर मुहूर्त्तनो छे अने सर्व गुणठाणां पण अंतर मुहूर्त्तमांहे स्पर्शे, अहींआं विरोध कोइ नथी. ए रीतें अंतर मुहूर्त्तनुं आंतरुं पण सास्वादननुं लाजे, परंतु ते मनुष्यमध्येंज कोइ एकने होय पण देवादिकने न होय ते माटें अल्प जणी अहींआं विवक्ष्युं नहीं, तथा बीजे कशे कारणे विवक्ष्युं नहीं.

तथा ए सास्वादन थकी (इअरगुण के०) इतर एटले बीजा मिथ्यात्वादिकथी उपशांत मोह पर्यंतना दश गुणठाणानुं (अंतरंहस्सं के०) जघन्यथकी आं

तरुं (मुहू के०) अंतरमुहूर्त्त अंतर मुहूर्त्तनुं जाणवुं. जे नणी कोइ एक जीव, उपशमश्रेणीथी पडतो मिथ्यात्व गुणगणे आवी वली बीजी वखत चडतो सर्वे गुणगणां स्पर्शे, तेवारें अंतरमुहूर्त्तनुं आंतरुं नावबुं. तथा बीजे प्रकारें पण जे मतें एक नवें एकज श्रेणी करे, तिहां चडतां तथा पडतां पण एज आंतरुं नावबुं.

अने क्षीणमोह, सयोगी तथा अयोगी, ए त्रण गुणगणाथी पडवुं नथी, ए गुणगणां एकज वार आवे, मार्टे एनुं जघन्य तथा उत्कृष्ट आंतरुं नथी.

हवे ए गुणगणानुं (गुरु के०) उत्कृष्ट आंतरुं कहे ढे. तिहां (मिछि के०) मिथ्यात्वगुणगणानुं (बेढसही के०) बे वखत ढाशठ सागरोपम पूर्वकोटी पृथक्त्वें अधिक एटलुं उत्कृष्ट आंतरुं जाणवुं, जे नणी कोइ एक पूर्व कोटयायु मनुष्य शुद्ध संयम पाली विजय विमानें तेत्रीश सागरोपमायु नोगवी सम्यक्त्व सहित मनुष्यनव पामी वली मनुष्य नवथी विजय विमानें जाय. एम ढाशठ सागरोपम सम्यक्त्वें रही वली अंतर मुहूर्त्त मिश्रे आवी फरी सम्यक्त्व लही त्रण वेला अच्युतगमनें मनुष्य नवांतरें ढाशठ सागरोपम पूरे, एम एकशोने बत्रीश सागरोपम पूर्व कोटी पृथक्त्वें अधिक मिथ्यात्व गुणगणानुं आंतरुं उत्कृष्टुं जाणवुं.

अने ए मिथ्यात्व विना (इयरगुणे के०) इतर जे बीजा सास्वादनथी उपशांतमोह पर्यंत दश गुणगणां ढे, तेनुं उत्कृष्ट आंतरुं (पुग्गलद्धंतो के०) सूक्ष्म क्षेत्र पुजल परावर्त्तनुं अर्द्ध कांइ एक ऊणेरुं होय, जे नणी उत्कृष्टो किंचिंदून अर्द्ध पुजल परावर्त्त प्रमाण शेष संसार बुते थके जीव, ग्रंथिनेद करे, तेवार पढी ए दश गुणगणां स्पर्शे, तेणे उत्सूत्र नाषणादिक अत्यंत अशातनायें करी अनंत संसार वधारे तो पण जेणे सम्यक्त्व लह्युं ते जीव अर्द्धपुजल परावर्त्त मांहे सीजे, तेवारें वली सर्व गुणगणां स्पर्शे, ए अपेक्षायें नावबुं उपरांत संसारमां न रहे॥ ८४॥

हवे पुजल परावर्त्तनुं कालमान समजाववाने प्रथम कालमानना नेद कहे ढे. तिहां त्रीश मुहूर्त्तें एक अहोरात्रि अने त्रीश अहोरात्रें एक मास, बे मासें एकऋतु, त्रण ऋतुयें एक अयन, बे अयने १ एकवर्ष, चोराशी लाख वर्षें एक पूर्वांग, चोराशी लाख पूर्वांगें २ एक पूर्व, चोराशीलक्ष पूर्वें ४ एक त्रुटितांग, चोराशी लक्ष त्रुटितांगें ५ एक त्रुटित, चोराशी लक्ष त्रुटितें ६ एक अटटांग, चोराशी लक्ष अटटांगें ७ एक अटट, चोराशी लक्ष अटटें ८ एक अववांग, चोराशी लक्ष अववांगें ९ एक अवव, चोराशी लक्षअववें १० एक हूहूअांग, चोराशी लक्ष हूहूअांगें ११ एक हूहूअ, चोराशी लक्ष हूहूएं १२ एक उत्पलांग, चोराशी लक्ष उ

त्पलांगें १३ एक उत्पल, चोराशी लक्ष उत्पलें १४ एक पद्मांग, चोराशी लक्ष प द्मांगें १५ एक पद्म, चोराशी लक्ष पद्में १६ एक नलिनांग, चोराशीलक्ष नलिनां गें १७ एक नलिन, चोराशी लक्ष नलिनें १८ एक अक्षिनिकुरांग, चोराशीलक्ष अक्षिनिकुरांगें १९ एक अक्षिनिकुर, चोराशी लक्ष अक्षिनिकुरें २० एक अयुतांग ग, चोराशी लक्ष अयुतांगें २१ एक अयुत चोराशी लक्ष अयुतें २२ एक नयुतां ग, चोराशीलक्ष नयुतांगें २३ एक नयुत, चोराशी लक्ष नयुतें २४ एक प्रयुतांग, चोराशी लक्ष प्रयुतांगें २५ एक प्रयुत, चोराशी लक्ष प्रयुतें २६ एक चूलिकांग, चोराशी लक्ष चूलिकांगें २७ एक चूलिका, चोराशी लक्ष चूलिकायें २८ एक शी र्षप्रहेलिकांग, चोराशी लक्ष शीर्षप्रहेलिकांगें २९ एक शीर्षप्रहेलिका, अंहीं सुधी संख्यातो काल गण्यो आवे. ए शीर्ष प्रहेलिकायें आटला आंक आवे ते अंक मांमीयें डैयें. (७५८२६३२५३०७३१०२४११५७९७३५६९९७५६९६४०६२१८९६६८४८०८०१८३२९६२) ए चोपन आंक आगल एकशोने चालीश शून्य मांमीयें तेवारें, एकशोने चोराणुं अंक थाय. त्यां सुधी संख्याता वर्ष जाणवा. उपरांत गणतां नावे ते माटें पाला तथा समुद्रादिकनी उपमायें करी समजाव्युं जाय पण गणतां पार न आवे, तेने असंख्याता कहीयें ते असंख्याता वर्ष प्रमाण पल्योपम सागरोपम जाणवुं तेनुं स्वरूप समजाववाने गाथा कहे छे ॥ ८४ ॥

॥ अथ पल्योपमस्वरूपमाह ॥

उद्धार अद्ध खित्तं, पलिय तिहा समय वाससय समए ॥
केसव हारो दीवो, दहि आउ तसाय परिमाणं ॥ ८५ ॥

अर्थ—धान्य पल्यवत् पल्योपम, तथा वली सागरवत् सागरोपम जाणवुं. तेना प्रत्येकें त्रण त्रण जेद छे. तत्र वालाग्र अथवा वालाग्र खंमोनो प्रति समयें (उद्धार के०) उद्धरण करवो, तेछे प्राधान्य जिहां तेने प्रथम उद्धार पल्योपम कहीयें. अने (अद्ध के०) अद्धा एटले काल ते प्रस्तावथकी वालाग्रोने अथवा वाला ग्रोना खंमोने अपहारें प्रत्येकें वर्ष शत लक्षण प्राधान्य छे जिहां ते बीजो अद्धा पल्योपम कहीयें तथा (खित्तं के०) क्षेत्र जे आकाश प्रदेशरूप तेनुं प्राधान्य छे जिहां ते त्रीजो क्षेत्र पल्योपम कहीयें. ए (तिहा के०) त्रणे प्रकारना (पलिय के०) पल्योपम तेने प्रत्येकें सूक्ष्म अने बादर एम बे बे जेदें करतां छ जेद थाय.

तेनुं मान कांइ एक विस्तारथी लखीयें डैयें. अनंत परमाणुयें एक व्यावहारि

क परमाणुउं थाय, तेवा आठ परमाणुयें एक त्रसरेणु थाय, तेवा आठ त्रसरेणुयें एक ऊर्ध्वरेणु थाय, आठ ऊर्ध्वरेणुयें एक रथरेणु थाय, आठ रथरेणुयें एक उत्तरकुरु युगलीआनो वालाग्र थाय. तेवा आठ वालाग्रें महाहिमवंत युगलिआनो वालाग्र थाय, तेवा आठ वालाग्रें हिमवंत युगलिआनो एक वालाग्र थाय, तेवा आठ वालाग्रें महाविदेह नरनो वालाग्र थाय, तेवा आठ वालाग्रें भरतनरनो एक वालाग्र थाय, तेवा आठ वालाग्रें एक लीख थाय, आठ लीखें एक जू थाय, आठ जूयें एक यवमध्य थाय, आठ यवमध्यें एक अंगुल थाय, एम प्रत्येकें आठ आठ गुणुं करतां एक उत्सेधांगुल थाय, तेवी चोवीश अंगुलें एक हाथ थाय, तेवा चार हाथें एक धनुष्य थाय, तेवा बे हजार धनुष्यें एक कोश थाय, तेवा चार कोशनो योजन थाय, एवा योजन प्रमाण लांबो पहोलो, ऊंडो, अने त्रण योजन तथा एक योजनना ठ भाग करीयें तेवो एक भाग उपर एटली परिधिवालो एवो कूपाकार पालो कल्पीयें, ते मध्यें देवकुरु तथा उतरकुरुना युगलिया एक दिवसना जन्मेला बे दिवसना जन्मेला यावत् सात दिवसना जन्मेला तेना मस्तकना वालाग्र खंमने सात वखत आठ आठ खंम करतां एक केशना वीश लाख, सत्ताणुं हजार, एकशो ने बावन खंम थाय. तेवा खंमें ठांशीने ते पल्य भरीयें, ते एवी रीतें ठांशी भरीयें, के तेना उपर चक्रवर्त्तिनुं कटक चाल्युं जाय, तो पण धसके नहीं तथा गंगा नदीनो प्रवाह तेने भेदी शके नहीं, तथा अग्नियें करी बले नहीं, वायरे करी एक वालाग्र खंम पण उडे नहीं. एवो ठांशीने भरीयें.

ते मांहेंथी (समय के०) एकेक समयें (केसवहारो के०) एकेक केश खंम काहाडतां थकां जेटले कालें ते पालो खाली थाय, तेटलो बादर उद्धार पल्योपमनो संख्याता समय प्रमाण काल होय, जे भणी ते खंम संख्याताज होय माटें संख्यातो काल कह्यो, ए बादर उद्धार पल्योपम जे कह्युं ते सूक्ष्म उद्धारपल्योपम सुखें चित्त आणवाने अर्थें कह्युं परंतु एनुं बीजुं कांई पण कार्य नथी. जे भणी ए अंतर मुहूर्त्त संख्यात समय प्रमाण होय ते भणी सूक्ष्म उद्धार पल्योपम उपयोगी होय.

पूर्वें जे वालाग्रखंमें पल्य भर्यो ठे. ते बादर एकेक खंमना असंख्याता सूक्ष्म खंम कल्पीयें, ते एवा कल्पीयें, के जे एक खंमनो वली बीजो खंम केवली केवलज्ञानें करी पण कल्पी न शके, सतेजवंत नेत्रनो धणी जे जालीमांहेंथी सूक्ष्म पुज्जल सूर्यना तेजें करी देखे, तेनो असंख्यातमो भाग अथवा बादर पर्याप्त पृथिवी कायिआ जीवनुं जेवुं सूक्ष्म शरीर होय, तेवडे खंमें करी पूर्वोक्त कूवो भ

रीयें, ते एकेको खंम समय समय कहाडतां असंख्याता समय लागे, अर्थात् संख्याता वर्षनी कोटीयें करी ते कूप खाली थाय तेने सूक्ष्म उद्धार पल्योपम कहीयें. तेवा दश कोडाकोडी पल्योपमें एक सूक्ष्म उद्धार सागरोपम थाय तेवा अढी सागरोपमना समय प्रमाण (दीवोदहि के०) असंख्याता द्वीप समुद्र ठे. ए सूक्ष्म उद्धार पल्योपम कह्युं.

तथा तेहीज योजन प्रमाण पल्य बादर वालाग्रें नखो, तेमध्येंथी (वाससय के०) शो शो वर्षे एकेक केशखंम काहाडतां, ते पल्य संख्याता वर्षनी कोडी प्रमाण कालें निर्लेप थाय, तेवारें बादर अद्धा पल्योपम संख्याता वर्ष प्रमाण थाय.

वली तेहिज खंमना पूर्वोक्त रीतें असंख्याता खंम कल्पी ते कल्पना खंम शो शो वर्षे एकेक कहाडतां जेवारें ते पल्य निर्लेप थाय तेवारें सूक्ष्म अद्धापल्योपम असंख्याता वर्षनी कोडी प्रमाण थाय. तेवा दश कोडाकोडी सूक्ष्म अद्धा पल्योपमें एक सूक्ष्म अद्धा सागरोपम थाय तेवा वली दश कोडाकोडी सागरोपमें एक अवसर्प्पिणी काल थाय वली तेवा दश कोडाकोडी सागरोपमें एक उत्सर्पिणी काल थाय ए अवसर्प्पिणी तथा उत्सर्पिणीना बेहु काल मली वीश कोडाकोडी सागरोपमें एक कालचक्र थाय, ए सूक्ष्म अद्धापल्योपम अने सागरोपमें करी देवता, नारकी, मनुष्य अने तिर्यंचनुं (आउ के०) आयुनुं मान तथा कर्मस्थितिमान तथा कायस्थितिमान तथा नवस्थितिनुं कालमानादिक मवीयें, ए चोथुं सूक्ष्म अद्धापल्योपम कह्युं, एटले ए सूक्ष्म अद्धासागरोपमना अनंता पुज्ञलपरावर्त्त अतीत अद्धा तथा अनंता पुज्ञलपरावर्त्त अनागत अद्धा एटले अनागत अद्धानी अनंतता ठे अने अतीत अद्धानी आदि नथी, तेथी बेहुने समानपणुं ठे. अन्य आचार्य वली एम कहे ठे, के अतीत अद्धाथकी अनागत अद्धा अनंत गुणा ठे. तेनी नावना एम ठे के जो पण समयादिकें करी अनागत अद्धा हीयमान ठे, तो पण अनागत अद्धानो क्षय नथी थतो ते माटें अतीत अद्धा थकी अनागत अद्धा अनंत गुणी ठे.

सांप्रत बे प्रकारना क्षेत्र पल्योपमनुं निरूपण करीयें ठैयें. ते पूर्वोक्त वालाग्र खंमें करी नखो जे पल्य ते मध्यें कल्पना करेला वालाग्रें स्पर्श्या जे आकाश प्रदेश ते मांहेथी एकेक आकाश प्रदेश (समए के०) समय समय काहाडतां जेवारें सर्व वालाग्र स्पष्ट आकाश निर्लेप थाय, तेवारें असंख्याती उत्सर्पिणी अने अवसर्प्पिणी कालप्रमाण एक बादर क्षेत्र पल्योपम थाय.

ते पल्यना सूक्ष्म, एकेकावालाग्रने स्पर्श्या आकाश प्रदेश तथा अणस्पर्श्या एवा समस्त आकाश प्रदेशने समय समय काढाडतां जे वारें ते पल्य निर्लेप थाय, तेवारें पूर्वोक्त बादरक्षेत्र पल्योपमना कालमानथकी असंख्यातगुणो असंख्याती उत्सर्प्पिणी अने अवसर्प्पिणी प्रमाण सूक्ष्मक्षेत्र पल्योपमनुं कालमान थाय तेवा दश कोडाकोडी सूक्ष्म क्षेत्र पल्योपमें एक सूक्ष्म क्षेत्र सागरोपम थाय, एणे करी (तसायपरिमाणं के०) त्रसादिक जीवनुं परिमाण करवुं, एटले दृष्टिवादने विषे द्रव्य प्रमाण चिंतवीयें तथा पृथिव्यादिक एकेंद्रिय त्रसांत जीवनुं परिमाण करीयें तेने विषे एनुं प्रयोजन ठे. अहीं शिष्य पूठे ठे के, जो स्पष्ट, अस्पष्ट, नन्नःप्रदेश अहीं सूक्ष्मक्षेत्र पल्योपमें करीने ग्रहण करीयें ठैयें, तो वालाग्रोनुं शुं प्रयोजन ठे ? यथोक्त पल्यांतरगत नन्नःप्रदेशापहारमात्रथीज सामान्य पणे कहेवुं उचित ठे. तत्र गुरु कहे ठे. के ए सत्य ठे. किंतु सूक्ष्मक्षेत्र पल्योपमें करी दृष्टिवादने विषे द्रव्य मवीयें ठैयें ते केटला एक यथोक्त वालाग्र स्पष्ट नन्नःप्रदेशें करी मवीयें ठैयें, अने केटला एक अस्पष्ट नन्नःप्रदेशें करी मवीयें ठैयें, माटें दृष्टिवादोक्त द्रव्यमानोपयोगीपणा थकी वालाग्र प्ररूपणा प्रयोजनवाली ठे.

एम त्रण सूक्ष्म पल्योपम शास्त्रने विषे उपयोगी होय अने त्रण बादर पल्योपम कह्या ते सूक्ष्मपल्योपमना सुखावबोध थवा माटें कह्या. अहींआं प्रायें घणुंतो सूक्ष्म अद्धापल्योपमनुं प्रयोजन ठे, ते अद्धापल्योपमें करी वीश कोडाकोडी सागरोपमनुं काल चक्र थाय, तेवा अनंतें कालचक्रें एक पुजलपरावर्त्त थाय, एवा अनंत पुजलपरावर्त्त अतीत अद्धा अतिक्रम्या ते नणी एनेविषे पुजल परावर्त्त एवी संज्ञा करीयें जो पण पुजल परावर्त्त एवी संज्ञा मुख्य पणे द्रव्य परावर्त्तने विषे होय. केम के औदारिकादिक पुजलनी परावर्त्त एवी संज्ञा होय, ठे ते मुख्य कहेवाय तथापि आकाश प्रदेश समय अने अध्यवसाय परावर्त्तें क्षेत्र, काल अने नाव परावर्त्तादिकने विषे पण जे पुजल परावर्त्त एवी संज्ञा करवी. ते गौणपणे जाणवी. तथा आशांबरमतें नवपरावर्त्त पण मान्युं ठे. पण ते अहींयां न लीधुं ॥ ७५ ॥

हवे पुजलपरावर्त्तना आठ नेदनुं स्वरूप त्रण गाथायें करी कहे ठे.

दव्वे खित्ते काले, नावे चउह दुह बायरो सुहुमो ॥
होइ अणंतुस्सप्पिणि, परिमाणो पुग्गल परट्टो ॥ ७६ ॥

अर्थ-(दव्वे के०) द्रव्य पुजल परावर्त्त, (खित्ते के०) क्षेत्र पुजल परावर्त्त, (का

ले के०) कालपुज्जलपरावर्त्त, (जावे के०) जाव पुज्जल परावर्त्त, एम (चउह के०) चार जेदें पुज्जल परावर्त्त ढे ते वली एकेको (बायरो के०) बादर अने (सुहुमो के०) सूक्ष्मना जेदें करी (इह के०) बे बे प्रकारें (होइ के०) होय. (अणंतुस्सप्पिणि परिमाणो के०) अनंती उत्सर्प्पिणी अने अवसर्प्पिणीकाल प्रमाण (पुग्गल परट्टो के०) पुज्जल परावर्त्तनुं कालमान जाणवुं ॥ इत्यक्षरार्थः ॥ ८६ ॥

एक बादर इव्यपुज्जलपरावर्त्त, बीजो सूक्ष्म इव्य पुज्जलपरावर्त्त, त्रीजो बादर क्षेत्रपुज्जलपरावर्त्त, चोथो सूक्ष्म क्षेत्र पुज्जलपरावर्त्त, पांचमो बादर काल पुज्जलपरावर्त्त, ढठो सूक्ष्म कालपुज्जल परावर्त्त, सातमो बादर जावपुज्जलपरावर्त्त, आठमो सूक्ष्म जाव पुज्जलपरावर्त्त. अहिंयां कोइएक जवपुज्जलपरावर्त्त सूक्ष्म तथा बादर एम पण माने ढे. ते मतें दश जेद कहे ढे. पण स्वमतें तो आठ जेदज कह्या ढे.

तिहां पूर्णगलन स्वजाव तेने पुज्जल कहीयें, ते अणुने मलवे तथा विघटवे करी जे स्कंधनो जेद ते पुज्जलस्कंध कहीयें ते सर्व जीवथकी अनंतगुणा ढे. सर्व लोकाकाश प्रदेश अनंतानंत पुज्जलस्कंधें जर्यो ढे. ते जेटले कालें जीव, सर्व अणुस्कंध औदारिकादिक शरीर पणे ग्रहीने मूके, तेटले कालें बादरइव्य पुज्जलपरावर्त्त एवी सामान्य संज्ञा होय. ए आठ जातिना पुज्जल परावर्त्त कह्या ढे. ते मध्यें पण चार जातिना बादर पुज्जल परावर्त्त जे कह्या ढे ते सूक्ष्मपुज्जलपरावर्त्तना सुखावबोधने अर्थें कह्या ढे. जे मूढमति, सूक्ष्म पुज्जलपरावर्त्तनुं स्वरूप न समजे, तेने बादरनुं स्वरूप समजावीयें, ते बादरना स्वरूपनी समजणमां मति जेदाय तो पढी सूक्ष्मपुज्जलपरावर्त्तनुं स्वरूप पण सुखें समजी जाय, ते जणी बादर कह्या ढे. बीजुं जिहां पुज्जल परावर्त्त काल शास्त्रें कह्यो ढे. तिहांतो सर्व सूक्ष्मपुज्जलपरावर्त्त लेवा, केमके तेहिज शास्त्रमां उपयोगी ढे. जे सम्यक्त्व पाम्या पढी किंचिन्न्यून अर्द्ध पुज्जलपरावर्त्त मात्र संसार मध्यें रहे, एम कह्युं ढे, ते पण सूक्ष्म क्षेत्रपुज्जलपरावर्त्तनुं अर्द्ध जाणवुं ते चारे जातिना सूक्ष्म पुज्जल परावर्त्त मांहेलो एकेक केटले कालें होय, तेनुं मान कहे ढे.

उत्सर्पिणी कहेतां जिहां जरत ऐरवतना मनुष्यने चढतुं शरीरमान, आयु तथा सुख वधतुं जाय. तेने उत्सर्पिणी काल जाणवो. तिहां प्रथम इःखमां इःखमा आरो एकवीश हजार वर्षनो, बीजो इःखमा आरो एकवीश हजार वर्षनो त्रीजो इःखमा सुखमा आरो एक कोडाकोडीसागरोपम बेंतालीश हजार वर्षे न्यूननो, चोथो सुखमा इःखमां आरो बे कोडाकोडीसागरोपमनो, पांचमो सुखमां आरो त्रण कोडाकोडी सागरोपमनो अने ढठो सुखमा सुखमा आरो चार कोडा

कोडी सागरोपमनो. एम जिहां चढतो चढतो काल ते उत्सर्पिणीकाल कहीयें, अने जिहां प्रथम सुखमासुखमा आरो होय, अने बहो दुःखमादुःखमा आरो होय, ते अवसर्पिणी पडतो काल जाणवो. तेहवी अनंती उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी एटले अनंता कालचक्र प्रमाण एकेक पुजलपरावर्त्त ते अनंतानंतनेदें छे. तेथी ए म ध्यें पण कालनुं अल्पबहुत्व कह्युं छे. ते विरुद्ध नथी, जे नणी द्रव्य पुजल परावर्त्तकालस्तोक, तेथी अनंतगुणो क्षेत्र पुजलपरावर्त्तकाल जाणवो, तेथी काल पुजलपरावर्त्तनो काल अनंतगुणो जाणवो, तेथकी नावपुजल परावर्त्तनो काल अ नंत गुणो जाणवो. ए जीवने अतीतकालें नाव पुजलपरावर्त्त अनंतां थयां, तेथी अ नंतगुणां कालपुजल परावर्त्त थयां, तेथी अनंतगुणां क्षेत्र पुजलपरावर्त्त थयां, तेथी अनंतगुणां द्रव्यपुजल परावर्त्त थयां ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ८६ ॥

हवे प्रथम द्रव्यथी बादर तथा सूक्ष्म पुजलपरावर्त्तनुं स्वरूप कहे छे.

उरलाइ सत्त गेणं, एग जिउ मुअइ फुसिय सव्व अणू ॥
जित्तिअ कालि स थूलो, दव्वे सुहुमो सगऽन्नयरा ॥ ८७ ॥

अर्थ-(उरलाइसत्तगेणं के०) औदारिकादिक वर्गणाना पुजल सात प्रकारें करीने (एगजिउ के०) एक जीव, (फुसिअ के०) स्पर्शीने (मुअइ के०) मूके, (सव्वअणू के०) लोकमांहेला सर्व परमाणुआने (जित्तिअकालि के०) जेटले कालें स्पर्शीने मूके, (स के०) ते कालनुं मान, (थूलो के०) स्थूल एटले बादर, (दव्वे के०) द्रव्यथकी पुजलपरावर्त्त जाणवुं, अने द्रव्यथकी (सुहुमोसगऽन्नयरा के०) सूक्ष्म पुजलपरावर्त्त एथी अन्यतरें करीने थाय ॥ इत्यक्षरार्थः ॥ ८७ ॥

औदारिक, वैक्रिय, तैजस, नाषा, श्वासोश्वास, मन अने कार्मण, ए सात प्रकारें सर्व लोकमांहेला परमाणुनेद संघातें तथा बादर सूक्ष्म परिणमने क री स्वस्व वर्गणा योग्य परिणतस्कंध औदारिकादिक नोकर्म पणे तथा कार्मण पणे जेटले कालें एक जीव अनंत नव नमण करतो परिणमावी ग्रही स्पर्शी मूके, तेने बादर द्रव्य पुजलपरावर्त्त कहीयें. तिहां जे एक वेला ग्रह्या, एवा जे पुजल तेने फरी बीजी वेला ग्रहण करे, ते ग्रहीतग्रहणाद्वार तथा पूर्वें केइ ग्रहण कस्या केइ अग्रहण कस्या एवा पुजलने ग्रहे, ते मिश्रग्रहणाद्वार, तथा जे पूर्वें अ ग्रहण करेला ग्रहे, ते अग्रहीत ग्रहणाद्वार, तिहां गृहीत ग्रहणाद्वार तथा मिश्र ग्रहणाद्वार अतिक्रमीने जे अगृहीत ग्रहणाद्वारें पुजल ग्रहण करे, ते लेखे लेखववा

एटले लेखामां गणवा. एम एक औदारिक पणे बीजो वैक्रियपणे. त्रीजो तैजस पणे, चोथो जाषा पणे, पांचमो श्वासोश्वासपणे बठो मनपणे, अने सातमो कार्मण पणे, ए सात परिणाम, एकेक अणुना थाय. एम सर्वलोक वर्त्ति पुजल इव्यना सात परिणामन एक जीव पूर्ण करे, तेवारें बादर इव्यपुजल परावर्त्त पूर्ण थाय. अहींआं आहारक शरीर तो संसारमांहे वसतो जीव, चार वेला करे, तेवारें तेणे करी सर्व पुजलनी परावर्त्ति न होय, तेथी ते न लीधो.

तथा जेवारें सर्वलोक वर्त्ति अणुने औदारिकादिक पणे परिणमावे, पण एटलुं विशेष जे औदारिकपणे परिणमावतां वचले जवें जे जे वैक्रियादिक पुजल ग्रहण करें, तें कोइ लेखामां नावे. एम अनंते जवें करी सर्वलोकना अणु औदारिकपणे परिणमावी ग्रही स्पर्शी मूके, तेवारें प्रथम औदारिक सूक्ष्म इव्य पुजल परावर्त्त थाय. वलतुं एज रीतें सर्वाणु वैक्रियपणे परिणमावी ग्रहीने मूके, तेवारें बीजुं वैक्रिय पुजल परावर्त्त थाय. एमज तैजस शरीर पणे परिणमावी ग्रहीने मूके, तेवारें त्रीजुं तैजस पुजलपरावर्त्त थाय. एमज जाषादल पणे सर्वाणु परिणमावी ग्रहीने मूके, तेवारें चोथुं जाषापुजलपरावर्त्त थाय. एमज पांचमुं श्वासोश्वास, बठुं मन अने सातमुं कार्मण पुजलपरावर्त्त पण जाणवुं. तिहां सर्व थकी कार्मणपुजलपरावर्त्तकाल अनंतो बे परंतु बीजानी अपेक्षायें स्तोक. तेथकी तैजस पुजलपरावर्त्तकाल अनंतगुणो, तेथकी औदारिक पुजलपरावर्त्तकाल अनंतगुणो, तेथकी श्वासोश्वास पुजलपरावर्त्त काल अनंतगुणो, तेथकी मनःपुजलपरावर्त्त काल अनंतगुणो, तेथकी जाषापुजलपरावर्त्तकाल अनंतगुणो, तेथकी वैक्रियपुजलपरावर्त्त काल अनंतगुणो जाणवो. कार्मण पुजलपरावर्त्त सर्व जवें ग्रहण करे, तेथी तरत पूराय अने ते कार्मणदलथकी तैजस अनंतगुणो हीन पुजल बे, ते जणी अनंत गुण कालें पूराय, एम पोतानी मतियें विचारीने कहेवुं. अतीतकालें एक जीवने अनंता वैक्रिय पुजल परावर्त्त थयां, तेथकी अनंतगुणां जाषा पुजलपरावर्त्त थयां, तेथकी अनंतगुणां मनःपुजलपरावर्त्त थयां, तेथकी अनंतगुणां श्वासोश्वास पुजल परावर्त्त थयां, तेथकी अनंतगुणां औदारिक पुजल परावर्त्त थयां, तेथकी अनंतगुणां तैजसपुजल परावर्त्त थयां, तेथकी अनंतगुणां कार्मण पुजल परावर्त्त थयां. एम अतीतकालें अतिक्रम्या. अहींआं कोइएक आचार्य एम कहे बे के औदारिक वैक्रिय, तैजस अने कार्मण, ए चार शरीरपणे सर्वलोकवर्त्ति परमाणु जे ग्रहे, ते तेना लेखामांहे गणाय. एम करी सर्व परमाणु चार शरीरपणे परिणमावी ग्रही

ने मूके, ते बादर द्रव्य पुजल परावर्त्त अने अनुक्रमें एक शरीर पणे परिणमावे ते लेखामांहे गणाय. एवी रीतें सर्वाणु एक शरीरपणे जेवारें परिणमावी रहे, तेवार पछी वली बीजा शरीरपणे परिणमावे, पण औदारिक परावर्त्तमध्यें वैक्रियादिक पुजल लीये, ते लेखामांहे गणाय नहीं, एम अनुक्रमें चारे प्रकारें सर्वाणु परिणमावतां सूक्ष्मपुजल परावर्त्त थाय ॥ इत्यर्थः ॥ ८७ ॥

हवे बादर तथा सूक्ष्म क्षेत्रादिक त्रण पुजल परावर्त्तनुं स्वरूप कहे छे.

लोग पएसो सप्पिणि, समया अणु नाग बंध ठाणाय ॥
जह तह कम मरणेणं, पुठा खित्ताइ थूलियरा ॥ ८८ ॥

अर्थ—(लोगपएसो के०) चौदराज लोकना आकाश प्रदेश (सप्पिणिसमया के०) उत्सर्प्पिणी अने अवसर्प्पिणीना समय अने (अणुनागबंधठाणाय के०) अनुनाग बंधनां स्थानक, ते रसबंधना हेतु असंख्यातां अध्यवसाय स्थानक जाणवां. ए त्रणे (जहतह के०) जेम तेम आघा पाछा (मरणेणं के०) क्रमोत्क्रम मरणें करीने (पुठा के०) फरसी रहे, तेवारें (कम के०) अनुक्रमें (खित्ताइ के०) क्षेत्रादिक एटले क्षेत्रथी, कालथी अने नावथी (थूल के०) स्थूल एटले बादर पुजल परावर्त्त थाय अने (इयरा के०) ए थकी इतर एटले ए त्रणे अनुक्रमें ज मरण वेलायें फरसे, तेवारें ए त्रणे सूक्ष्म पुजल परावर्त्त थाय ॥ इत्यक्ष० ॥ ८८ ॥

सर्वलोकना आकाशप्रदेश एटले जे अंगुलघन आकाश खंमना प्रदेशापहार समय समय प्रत्यें करतां पण असंख्यातां कालचक्र व्यतिक्रमी जाय, एवा सूक्ष्म ननःप्रदेश छे. ते सर्व लोकना आकाश प्रदेशने जेवारें एक जीव, अनेक नवें करी स्पर्शे, एटले सर्व आकाशप्रदेशें मरण पामे, तेमांहे जे आकाश प्रदेशें एक वेला मरण पाम्यो, तेज आकाश प्रदेशें वली बीजी वेला मरण पामे, ते लेखामां न गणाय, परंतु जे अस्पर्श्या प्रदेशने स्पर्शी मरण पामे ते प्रदेश, तेना लेखामां गणाय. एम करतां सर्वलोकाकाश प्रदेशने मरणें करी स्पर्शे. अहींयां जो पण जीव असंख्याता आकाश प्रदेश अवगाहीने रह्यो छे तो पण मरणवेलायें एक प्रदेशनी मुख्यता लेवी. एने बादर क्षेत्र पुजलपरावर्त्त कहीयें.

अने जेवारें अनुक्रमें एटले जे आकाशप्रदेशें जीव एकवार मरण पाम्यो, तेज आकाश प्रदेशनी श्रेणीयें जेवारें वली तेनी जोडना बीजा प्रदेशें बीजी वेला मरण पामे, ते लेखामां गणाय, परंतु बीजे स्थानकें बीजे नवें तेनी वचमां अ

संख्य लोकाकाश प्रदेशें असंख्य वेला मरण पामे, ते वचला मरणना प्रदेश ले खामांहे नावे. एम अनुक्रमें श्रेणीबद्ध प्रतर बद्ध प्रदेश मरणें करी स्पर्शतो थ को सर्व लोकाकाश प्रदेश स्पर्शे, तेवारें सूक्ष्म क्षेत्र पुद्गल परावर्त्त थाय तेमध्यें अनं ता कालचक्र प्रमाण बादर पुद्गलपरावर्त्तथकी अनंतगुणो काल नीपजे.

हवे कालथकी पुद्गल परावर्त्तनुं मान कहे छे. वीश कोडाकोडी सागरोपम प्रमा ण कालचक्र छे. तेना सर्व समय, मरणें करी जीव स्पर्शें, एटले पहेला समय थकी मांमीने छेहला समय सुधी सर्व समयें मरण करे, परंतु जे समयें एक का लचक्रमांहे मरण पाम्यो, तेहीज समयें बीजा घणा कालचक्रमांहे मरण पामे. ते समय लेखामांहे गणाय नहीं. पण अनेरे समयें मरण पामे, ते लेखामां गणा य. एम कालचक्रना सर्व समय मरण वेलायें करी जेवारें एक जीव स्पर्शी रहे, ते वारें कालथकी बादरपुद्गलपरावर्त्त थाय.

अने जेवारें ए कालचक्रने पहेले धुरले समयें मरण लही वली जेवारें केवा रेंक कोइ कालचक्रने बीजे समयें मरण पामे, ते लेखामां गणाय. तेमज कोइ कालचक्रने त्रीजे समयें जीव मरण पामे, ते लेखामां गणाय. परंतु वचला आगल पाछलना समयें अनेक मरण करे, ते लेखामां गणाय नहीं. एम वली जेवारें कोइ ए क कालचक्रने चोथे समय मरण लहे, पांचमे समय मरण लहे, यावत् कालचक्रना छेहला समय पर्यंत अनुक्रमें सर्व समय मरणें करी स्पर्शें. अहींआ कोइक कालच क्र दीठ एक समय लेखामां आवे अने वचालें संख्याता.असंख्याता, यावत् अनंत कालचक्रनां मरण पण लेखामां न आवे, परंतु जेवारें आगल जे समयें मरण पाम्यो होय, तेने आगले समयेंज जेवारें मरण पामे, तेवारें तेज लेखामां आवे. एम असंख्याते मरणें पण अनंतां कालचक्र व्यतीत थइ जाय. तावत् कालप्र माण सूक्ष्म काल पुद्गलपरावर्त्त थाय.

हवे नावथी सूक्ष्मबादरपुद्गलपरावर्त्त कहे छे. रसबंध हेतु काषायिक अध्य वसायस्थानक मंद, मंदतर, मंदतमना नेदें असंख्यात लोकाकाश प्रमाण छे जे न णी सीत्तेर कोडाकोडी सागरोपमना समय प्रमाण स्थितिस्थानकें असंख्याता र सबंधहेतु अध्यवसाय स्थानक छे. ते सर्व अध्यवसाय स्थानक मरणें करी अनु क्रमें स्पर्शें एटले ते रसबंधनां स्थानक केवारेंक मंद, मंदतम, मंदतर, तीव्र, तीव्र तम, तीव्रतर, एवे स्थानकें मरण पामतो जेवारें एक जीव, सर्व स्थानक फरसी रहे तेवारें नावथकी बादरपुद्गलपरावर्त्त थाय.

अने जेवारें प्रथम जघन्य अध्यवसायें मरण पामीने वली जेवारें कोइएक कालां तरें तेथकी चढते बीजे अध्यवसायस्थानकें मरण पामे ते लेखामांहे गणाय, तेवार पढी वली कोइक कालांतरें तेथकी चढते त्रीजे अध्यवसायस्थानकें वर्त्ततो मरण पामे ते लेखामांहे गणाय, परंतु बीजा आघा पाछा अध्यवसायें मरण पामे ते लेखामां न गणाय, एम अनुक्रमें निरंतर पणे जघन्यथी उत्कृष्ट अध्यवसाय स्थानक पर्यंत सर्व कर्मना असंख्याता रसबंधनां अध्यवसाय स्थानक छे. ते अ नुक्रमें मरणें करी स्पर्शे तेनी वचालें जे तेज अध्यवसायें तथा सांतर अध्यवसा य स्थानकें अनंता मरण करे, ते पण लेखामां न आवे परंतु जे पूर्वलो अध्यव साय होय, तेथकी चढते अध्यवसायें मरण पामे तोज ते लेखामां आवे, एम अनुक्रमें सर्व अनुभाग बंधस्थानक, जन्म अथवा मरणें करी स्पर्शे, तेवारें भाव थी सूक्ष्मपुजलपरावर्त्त थाय. ए रीतें आठ पुजल परावर्त्त कह्यां.

तथा ग्रंथांतरें भवपरावर्त्त कह्युं छे. ते कोइएक जीव नरकादिकगतिने विषे दश सहस्रवर्ष जघन्यायुथी समयाधिक समयाधिक स्थिति वधारतां नेवुं हजार वर्षनी स्थिति पर्यंत तथा दश लक्ष वर्ष स्थितिथकी समयाधिक समयाधिक तेत्रीश सा गरोपम स्थितिने आउखे सर्व नरकायु स्थितिना स्थानकें नारकीना भवें करी तथा देवगति मध्यें दश हजार वर्षायुथी लइ समयाधिक समयाधिक एकत्रीश सागरोपम लगें सर्वदेवायुस्थितिनां स्थानकें देवभवें करी तेमज मनुष्य तिर्यंचगति मध्यें जघन्य क्षुल्लक भवथी लेइने समयाधिक समयाधिक मनुष्य तिर्यंचनी यावत् त्र ण पल्योपमायुस्थिति लगेंनां स्थानकें मनुष्य तिर्यंचना भवें करी एम सर्वायुस्थानकें अनुक्रमें स्पर्शतो बादरभव पुजल परावर्त्त थाय, अने समयाधिक समयाधिक स्थिति अनुक्रमें एकेक गतिना क्रमें क्रमें करी आयुनां सर्वस्थानक स्पर्शतो चारे गतिना सर्वायुस्थानक जीव स्पर्शे, तेवारें सूक्ष्म भव पुजल परावर्त्त थाय,ए आशांबर मतें मान्यो छे, ते अंहीं प्रसंगें जाणवा निमित्त लख्युं छे, ए रीतें उपोद्घात संग तें तथा प्रसंगसंगतें पल्योपम,सागरोपम तथा पुजल परावर्तादिकनां स्वरूप कह्यां.

प्रकारांतरें वली पांच वर्ण, बे गंध, पांच रस, आठ स्पर्श, अने अगुरुलघु, ए बावीश भेदें करीने सर्वलोकवर्त्ति पुजल परमाणुआ फरशी मूके, तेवारें भाव थी बादर पुजल परावर्त्त थाय, अने ए बावीशमांहेथी एकेका पणे अनुक्रमें सर्व पुजल फरशीने रहे, तेवारें भावथी सूक्ष्म पुजलपरावर्त्त थाय ॥इति समुच्चयार्थः॥ ८५॥

हवे जे प्रदेश बंधनो अधिकार कहेतां थकां ते मध्यें जे प्रकारें जीव, उत्कृष्ट

प्रदेश बंध करे, अने जेह्वो थको जे प्रकारें जीव, जघन्य प्रदेश बंध करे, ते प्रकार कहे ठे. जे नणी प्रदेशबंधतो योग प्रत्ययियो ठे तेथी योगवृद्धियें प्रदेश वृद्धि होय अने सर्व जीवनेद मध्यें सन्नीआ पंचेंड्रिय पर्याप्तानुं उत्कृष्ट योगस्थानक होय, बीजा जीवनेद सर्व एथी हीनयोगी ठे. ए स्वरूप जणाववाने गाथा कहे ठे.

॥ अथोत्कृष्टजघन्यप्रदेशबंधस्वरूप माह ॥

अप्पयर पयडि बंधी, उक्कड जोगीअ सन्नि पज्जत्तो ॥
कुणइ पए सुक्कोसं, जहन्नयं तस्स वच्चासे ॥ ८ए ॥

अर्थ—(अप्पयरपयडिबंधी के०) अल्पतर एटले घणी थोडी प्रकृति बांधतो होय एटले प्रकृति थोडी बंधाती होय तिहां अबंधाती सजातीय प्रकृतिना दलनाग, ते बंधाती प्रकृतिनें नागें घणा लाने, तेथी तेने प्रदेशनी वृद्धि होय, तथा ते पण (उक्कडजोगीअ के०) उत्कृष्टयोगी एटले उत्कृष्ट योगस्थानकें वर्त्ततो उत्कृष्ट जीवव्यापारें करी घणा कर्मप्रदेशनुं ग्रहण करें, जेम जोरावर पुरुष, तृणादिक संग्रह करतो बीजा निर्बल पुरुषनी अपेक्षायें घणा तृणादिकनो संग्रह करी शके, तेम मंद योगी जीवनी अपेक्षायें उत्कृष्ट योगी जीव, घणां कर्मदल ग्रहण करे, तेथी ते लीधो. ते पण (सन्नि के०) संज्ञी पंचेंड्रिय जीव होय, जे नणी जे जीव, मन सहित होय ते मन लगावीने जे कार्य करे, ते कार्य करतां बीजुं अनानोगें जे कार्य करे, तेनी अपेक्षायें आनोगें जे कार्य करे, तेनी उत्कृष्ट चेष्टा होय. अने तिहां प्रदेशबंध अधिक होय ते मध्यें पण वली (पज्जत्तो के०) पर्याप्तियें करी पूर्ण होय, तेवारें तेने योग प्रबलतायें प्रदेश पण घणा लेवराय एने अपर्याप्तावस्थायें पण अंतरमुहूर्त्त सुधी समय समय प्रत्यें असंख्यातगुणवृद्धें योग वधे, एटले संज्ञीउ पंचेंड्रिय पर्याप्तो, उत्कृष्ट योगस्थानकें वर्त्ततो पोताना बंधयोग्य स्थानकमांहे अल्पसंख्यायें प्रकृति बंधस्थानकें वर्त्ततो एवो जीव (कुणइपएसुक्कोसं के०) उत्कृष्टप्रदेशबंध करे.

अने (जहन्नयं के०) जघन्य प्रदेशबंधतो (तस्स के०) ते उत्कृष्ट प्रदेशबंध स्वामिनी प्रदेशबंध सामग्रीने (वच्चासे के०) विपर्यासें विपरीतपणे एटले सन्नीआथी विपरीत असन्नीओ लेवो तथा पर्याप्ताने स्थानकें अपर्याप्तो लेवो अने उत्कृष्ट योगीने स्थानकें मंदयोगी लेवो, एटले असन्नीओ लेवो, तेमांहे पण अपर्याप्तो लेवो, ते पण वली प्रथम समयें घणो मंदयोगी होय, तेथी योग मंद

तायें करी तथा मनोयोगने अनावें करी कर्मदल थोडां ग्रहण करे, तेपण पोताना बंधस्थानक मध्यें बहु संख्येय प्रकृति बंध स्थानकें वर्त्ततो होय ते लेवो. एटले घणी प्रकृति बांधतां थोडुं दल घणी प्रकृतिना नागें वहेंचतां अल्प दल नाग आवे, तेथी ते जीव, जघन्य प्रदेशबंध करे ॥ इति समुच्चयार्थः॥ ७ए ॥

एम सामान्यपणे कर्मप्रकृतिनो उत्कृष्ट प्रदेशबंध तथा जघन्य प्रदेशबंधनो उपाय कह्यो, हवे मूलोत्तर प्रकृतिनो उत्कृष्ट प्रदेशबंध, जे गुणगणे जीवने होय ते कहे ठे. तेमध्यें पण मूलप्रकृति आठ अने उत्तर प्रकृति एकशोने वीशना उत्कृष्ट प्रदेशबंध स्वामी कहेवाने अवसरें सूची कटाह न्यायें अल्प वक्तव्यता नणी प्रथम आयुःकर्मनी मूलोत्तर प्रकृतिना बांधनार गुण स्थानकनी अपेक्षायें कहे ठे, एटले कया कया गुणगणे आयुःकर्मना उत्कृष्ट प्रदेशबंध स्वामी होय? ते कहे ठे. तेमध्यें मिश्रगुणगणे तो आयुनो बंध न होय. अने सास्वादने पडतां घोलना योगीने होय खरो, तो पण तेणें तिहां उत्कृष्ट योगने अनावें तथा अल्प काल नावी पणे अथवा बीजे कोइ कारणें ग्रंथकारें उत्कृष्ट प्रदेशबंध निषेध्यो ठे जे नणी कोइएक आचार्यने मतें सास्वादनगुणगणे पण उत्कृष्ट प्रदेश बंध मान्यो ठे. ते मत अहीं उवेखवो मिश्र तथा सास्वादन, ए बे गुणगणां मूकीने शेष गुणगणें आयुःकर्मना उत्कृष्ट प्रदेशबंधक, गाथायें करी कहे ठे.

॥ अथ मूलोत्तरप्रकृतीनामुत्कृष्टप्रदेशबंधस्वामीनाह ॥

मिछ अजय चउ आउ, बि ति गुण विणु मोहि सत्त मिछाइ॥
ठण्हं सतरस सुहुमो, अजया देसा बि ति कसाए ॥ ए० ॥

अर्थ—(मिछ के०) एक मिथ्यात्वगुणगणुं अने बीजा (अजयचउ के०) अविरत्यादिक चार गुणगणां, एटले बीजुं अविरति, त्रीजुं देशविरति, चोथुं प्रमत्त अने पांचमुं अप्रमत्त, ए पांच गुणगणें वर्त्ततो संज्ञी पंचेंड्रिय जीव, उत्कृष्टयोगस्थानकें वर्त्ततो (आउ के०) आयुःकर्मनो उत्कृष्ट प्रदेशबंध करे, जे नणी अपूर्वकरणादिक सात गुणगणां तथा मिश्रगुणगणुं, ए आठ गुणगणे आयुनो बंधज नथी अने सास्वादने उत्कृष्टयोगने अनावें उत्कृष्ट प्रदेश बंध न होय, तथा (बितिगुणविणु के०) बीजुं सास्वादन, त्रीजुं मिश्र, ए बे गुणगणा विना शेष (मिछाइ के०) १ मिथ्यात्व, २ अविरति, ३ देशविरति, ४ प्रमत्त, ५ अप्रमत्त, ६ निवृत्ति, ७ अनिवृत्ति, ए (सत्त के०) सात गुणगणे सात कर्म बांधतो एवो सं

ज्ञी पंचेंद्रिय जीव सर्व पर्याप्तियें करी पर्याप्तो, (मोहि के०) मोहनीय कर्मनो उत्कृष्टप्रदेश बंध करे, अहींआं सास्वादन तथा मिश्रगुणगणे उत्कृष्ट योग न लाने, तेथी उत्कृष्टदल संचय करी न शके ते नणी निषेध्या; जे नणी मोहनीय नी सत्तर प्रकृति मिश्रें तथा अविरति गुणगणे बंधाय ठे, अने जो मिश्रें उत्कृष्ट योगस्थानक होत तो चोथानी पेरें त्रीजे गुणगणे पण अप्रत्याख्यानीआ कषाय नो उत्कृष्ट प्रदेशबंध कहेत पण ते न कह्यो, तेथी जाणीयें ठैयें. जे मिश्रगुण गणे उत्कृष्टयोग नथी तथा आयु अने मोह विना शेष (ठण्हं के०) ठ मूल कर्मप्रकृतिनो उत्कृष्ट योगी एवो संज्ञी पंचेंद्रिय पर्याप्तो जीव, उत्कृष्ट प्रदेशबंध करे,

एम मूलप्रकृतिना उत्कृष्टप्रदेश बंध स्वामी कही, हवे उत्तर प्रकृतिना उत्कृष्ट प्रदेशबंध स्वामी कहे ठे. ज्ञानावरणीय पांच, दर्शनावरणीय चार, अंतराय पांच, एक शातावेदनीय, एक उच्चैर्गोत्र अने एक यशःकीर्त्ति, ए (सतरस के०) सत्तर प्रकृतिनो उत्कृष्ट प्रदेश बंध स्वामी (सुहुमो के०) सूक्ष्मसंपराय गुणस्थानकवर्त्ति मनुष्य उत्कृष्ट योगी होय, जे नणी आयु अने मोहनीयना दलनो नाग पण ठ कर्मने आवे, तथा पांच निद्रानो नाग चार दर्शनावरणीयने आवे तथा नामकर्मनी सर्व प्रकृतिनो नाग, एक यशःकीर्त्तिने आवे, तेथी प्रदेशबहुलता थाय.

(अजया के०) अविरति सम्यक्दृष्टि गुणगणे वर्त्ततो उत्कृष्टयोगी पर्याप्तो संज्ञी पंचेंद्रिय जीव, (बि के०) बीजी अप्रत्याख्यानावरणीय कषायनी चोकडीनो उत्कृष्ट प्रदेशबंध करे जेनणी एना बंधकमांहे एहिज अल्पप्रकृति बंधक पणुं ठे तेथी अनंतानुबंधीआ चार अने मिथ्यात्व मोहनीय, ए पांचना प्रदेश एने अधिक आवे,

तथा (देसा के०) देशविरतिगुणगणे वर्त्ततो मनुष्य, तिर्यंच उत्कृष्टयोगी सात मूल प्रकृति बांधतो (तिकसाए के०) त्रीजी प्रत्याख्यानावरण कषायनी चोकडीनो उत्कृष्ट बंधक होय, एना बंधकमांहे एहिज अल्प प्रकृति बंधकपणुं ठे तेथी शेष आठ कषायना दल नाग एने आवे तथा आयु अने मिथ्यात्वनो पण अंश अधिक आवे ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ए० ॥

पण अनिअट्टी सुख गइ, नराउ सुर सुनग तिग वि उ
वि दुगं ॥ सम चउरंस मसायं, वइरं मिछोव सम्मोवा ॥ ए१ ॥

अर्थ– पुरुषवेद अने संज्वलना कषायनी चोकडी, ए (पण के०) पांच मोहनीय कर्मनी उत्तर प्रकृतिनो (अनिअट्टी के०) अनिवृत्तिनामा नवमा गुणगणाना पांचे

भागें अनुक्रमें उत्कृष्टप्रदेश बंध होय, तेमध्यें अनिवृत्तिना प्रथमभागें हास्यादिक चार प्रकृतिनो अधिक भाग लाभे, तेथी पुरुष वेंदनो उत्कृष्टप्रदेश बंध होय अने वीजे भागें पुंवेदबंध विछेद थये थके बार कषायना दलिकना भाग आवे, तेमां क्रोध कषायनो भाग क्रोधने लाभे, तेणे उत्कृष्ट प्रदेश बंध होय, त्रीजे भागें संज्वलनक्रोधनो भाग वली अधिक लाभे, तेथी माननो उत्कृष्ट प्रदेशबंधक होय. चोथे भागें वली संज्वलना माननो बंध पण संज्वलनी मायाने आवे, तेथी तेनो उत्कृष्ट प्रदेश बंधक होय. पांचमे भागें समस्त मोहप्रकृतिनो भाग संज्वलना लोभने आवे, तेथी तेनो उत्कृष्टप्रदेश बंध होय. एम त्रीश प्रकृतिनो उत्कृष्ट प्रदेशबंध कह्यो.

(सुखगइ के०) शुभविहायोगति, (नराउ के०) मनुष्यायु, (सुरसुभगतिग के०) सुरत्रिक अने सौभाग्यत्रिक, (विउव्विदुगं के०) वैक्रियद्विक, (समचउरंस के०) समचतुरस्रसंस्थान, (मसायं के०) अशातावेदनीय, (वइरं के०) वज्रऋषभनाराच संघयण, ए तेर प्रकृतिनो उत्कृष्ट प्रदेश बंधक (मिछोवसम्मोवा के०) मिथ्यात्वी अथवा सम्यक्दृष्टि उत्कृष्ट योगी जीव होय. तेमध्यें देवायु तथा नरायु ए वे प्रकृतिना स्वामी अष्टविध बंधक अने शेष अगीआर प्रकृतिना उत्कृष्ट प्रदेशबंध स्वामी सप्तविध बंधक जाणवा. अहींआं आयुःकर्मना दल भाग अधिक लाभे, तेमाटें. तथा ते मध्यें पण १ देवगति, २ देवानुपूर्वी, ३ वैक्रियशरीर, ४ वैक्रियअंगोपांग, ५ समचतुरस्रसंस्थान, ६ शुभखगति, ७ सुभग, ८ सुस्वर, ९ आदेय, ए नव प्रकृतिनो उत्कृष्ट प्रदेशबंध स्वामी तो देव प्रायोग्य नामकर्मनी अठावीश प्रकृति बांधतो होय, तेमां नव प्रकृति तो एहिज बांधे. ते जीव होय जे भणी त्रेवीश अने पच्चीशादिक प्रकृतिना बंधस्थानकें ए नव प्रकृतिनो बंध नथी अने देव प्रायोग्य ओगणत्रीश, त्रीश तथा एकत्रीशादिक प्रकृतिना बंध स्थानकें ए नव प्रकृतिनो बंध छे खरो, परंतु तिहां घणी प्रकृतिने बंधें घणे भागें वहेंचतां अल्प प्रदेश भाग आवे तेथीं ते बंधक न लीधा. तथा वज्रऋषभनाराच संघयणनो उत्कृष्ट प्रदेशबंध स्वामी मनुष्य, प्रायोग्य ओगणत्रीश प्रकृति बांधतो एवो सम्यक्दृष्टि तथा मिथ्यादृष्टि जीव होय, तथा तिर्यंच प्रायोग्य ओगणत्रीश बांधतो मिथ्यादृष्टिज होय. तिहां मनुष्य प्रायोग्य ओगणत्रीशनां नाम कहे छे. २ मनुष्यद्विक, ४ ओदारिकद्विक, ५ पंचेंद्रियजाति, ६ तैजस, ७ कार्मण, ८ वज्रऋषभनाराचसंघयण, ९ समचतुरस्रसंस्थान, १० वर्ण, ११ गंध, १२ रस, १३ स्पर्श, १४ अगुरुलघु, १५ उपघात, १६ पराघात, १७ उच्छ्वास,

१७ शुभखगति, १८ त्रस, २० बादर, २१ पर्याप्त, २२ प्रत्येक, २३ निर्म्माण, २४ सौभाग्य.२५ सुस्वर, २६ आदेय, २७ स्थिर अथवा अस्थिर, २८ शुभ अथवा अशुभ, २९ यशःकीर्त्ति अथवा अयशःकीर्त्ति, ए मनुष्य प्रायोग्य बांधतो सम्यक्दृष्टि तथा मिथ्यादृष्टि जीव होय तथा तिर्यंच प्रायोग्य ओगणत्रीश बांधतो तिहां मनुष्य द्विकने स्थानकें तिर्यंचद्विक कहेवुं तथा मनुष्य प्रायोग्य बांधतां मिथ्यादृष्टि जीव पण लेवो अने सास्वादने उत्कृष्ट योग न होय, तेभणी ते न लीधो तथा त्रेवीश, पच्चीशादिकना बंधस्थानकें प्रथम संघयणनो बंध नथी अने त्रीश, एकत्रीशना बंधस्थानकें प्रकृति भाग घणो होय, तेथी उत्कृष्ट प्रदेशबंध न होय. तथा शाता वेदनीयनो उत्कृष्ट प्रदेश बंधक सम्यक्दृष्टि तथा मिथ्यात्वी सात कर्मनो बंधक होय, जोपण दशमे गुणठाणे उत्कृष्ट योग छे तो पण तिहां उत्कृष्टस्थिति बंध न होय तेथी प्रदेशबंध पण विवक्ष्यो नहीं. एम तेंतालीश प्रकृतिना उत्कृष्ट प्रदेशबंध स्वामी कह्या ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ९१ ॥

निद्दा पयला डु जुअल, भयकुछातिछ संमगो सुजई॥
आहार डुगं सेसा, उक्कोस पएसगा मिछो॥ ९२ ॥

अर्थ–(निद्दापयला के०) निद्रा अने प्रचला, (डुजुअल के०) हास्य अने रति तथा शोक अने अरति, ए बे युगल एवं छ प्रकृति (भयकुछा के०) सातमी भय, आठमी जुगुप्सा, (तिछ के०) नवमुं तीर्थंकर नामकर्म, ए नव प्रकृतिनो उत्कृष्ट प्रदेशबंधस्वामी (संमगो के०) सम्यक्दृष्ट्यादिक अपूर्वकरणांत पांच गुणस्थानकवर्त्ती जीव सात कर्मबांधतो आयु दलनो भाग अधिको लाभे, तेभणी. तथा निद्रा प्रचलाने चोथे गुणठाणे थीणद्धीत्रिकना दलनो भाग अधिक होय, तथा मिश्रगुणठाणे पण थीणद्धीत्रिकनो बंध नथी पण ते उत्कृष्ट योगी न होय, तेभणी ते न कह्यो. तथा हास्यादिक बे युगल, भय अने जुगुप्सा, ए छ प्रकृतिनो पण मोहनीयनी तेर प्रकृतिने बंधें तथा नव प्रकृतिने बंधें अल्पप्रकृति भणी भाग घणो आवे, तेभणी लेवो तथा जिननामकर्मनो उत्कृष्ट प्रदेश बंधस्वामी सम्यक्दृष्टि मनुष्य देवगति प्रायोग्य जिननाम सहित ओगणत्रीश प्रकृति बांधतो होय ते लेवो, जे भणी त्रेवीशादिक प्रकृतिनां बंध स्थानकें तो जिननाम कर्मनो बंधज नथी, अने त्रीश प्रकृति मनुष्य प्रायोग्य बांधतां तथा एकत्रीश देवगति प्रायोग्य बांधतां प्रकृति घणी होय, तेथी भागें दल स्तोक आवे तेथी ते न लीधा.

(सुजई के०) सुयति सुसाधु एटले प्रमाद रहित साधु अप्रमत्त अने अपूर्व करण, ए बे गुणठाणे वर्त्ततो उत्कृष्ट योगी देव प्रायोग्य त्रीश प्रकृति (आहार डुगं के०) आहारकद्विक सहित बांधतो बे समय सुधी उत्कृष्ट प्रदेश बंध करे, शेष गुणठाणे आहारकद्विकनो बंध नथी, तेथी ते न लीधा तथा उत्कृष्ट योग स्थानकें जीव बे समय पर्यंतज रहे. पठी योगस्थानक फरे, तेथी सर्वत्र उत्कृष्ट योगी बे समय सुधीज होय तथा एकत्रीश प्रकृतिना बंधस्थानकें प्रकृतिनागनी बहुलतायें अल्पदल लाने, एम चोपन्न प्रकृतिना उत्कृष्ट प्रदेश बंध स्वामी कह्या.

तेथकी (सेसा के०) शेष रही जे ढाशठ प्रकृति तेना (उक्कोसपएसगा के०) उत्कृष्ट प्रदेश बंध स्वामी (मिछो के०) मिथ्यात्वी जीव पंचेंद्रिय पर्याप्तो उत्कृष्ट योगी सात कर्म बांधतो बे समय लगें होय जेनणी ३ नरकत्रिक, ७ जाति चार, ११ स्थावरचतुष्क, १२ हुंडसंस्थान, १३ ठेवठुं संघयण, १४ आतप, १५ नपुंसक वेद, १६ मिथ्यात्व, २० अनंतानुबंधीआ कषाय चार, २४ मध्यसंघयण चार, २८ मध्यसंस्थान चार, ३१ दौर्जाग्यत्रिक, ३४ थीणद्धीत्रिक, ३७ तिर्यंचत्रिक, ३८ स्त्रीवेद, ३९ उद्योत, ४० कुखगति, ४१ नीचैर्गोत्र. ए एकतालीश प्रकृति मध्यें शोल प्रकृतिनो बंध मिथ्यात्व प्रत्ययिक अने पच्चीश प्रकृतिनो बंध अनंतानुबंधी प्रत्ययिक ठे, ते मिश्रादिक गुणठाणे न बंधाय अने सास्वादन गुणठाणे उत्कृष्ट यो गने अनावें उत्कृष्ट प्रदेश बंध न होय, तेनणी एनो स्वामी मिथ्यात्वीज कह्यो.

तथा शेष पच्चीश प्रकृतिनो बंध, जोपण सम्यक्त्वादिक गुणठाणे ठे. तो पण १ औदारिक, २ तैजस, ३ कार्मण, ७ वर्णचतुष्क, ८ अगुरुलघु, ९ उपघात, १० बादर, ११ प्रत्येक, १२ अस्थिर, १३ अशुन, १४ अयश, १५ निर्माण, ए पंद र प्रकृतिनो उत्कृष्ट प्रदेशबंध अपर्याप्ता एकेंद्रिय प्रायोग्य नामकर्मनी त्रेवीश प्र कृति बांधतो थको मिथ्यात्वी जीव करे, जे नणी ४ स्थावरचतुष्क, ५ एकेंद्रिय जाति, ६ हुंड संस्थान, ८ तिर्यंचद्विक अने पूर्वली पंदर, एवं त्रेवीश बांधता हो य, ते करे तथा पच्चीशादिकने बंधें नाग बाहुल्य आवे माटें अल्प दल लाने.

तथा मनुष्यद्विक, पंचेंद्रियजाति, औदारिक उपांग, पराघात, उच्छ्वास, त्रस, अप र्याप्त, स्थिर अने शुन, ए दश प्रकृतिनो मिथ्यात्वें पच्चीश नामकर्मनी प्रकृति अपर्याप्त त्रस प्रायोग्य बांधतो उत्कृष्ट प्रदेश बंध करे, तेथी ए ढाशठ प्रकृतिना उत्कृष्ट प्र देशबंध स्वामी मिथ्यात्वी कह्या. एम उत्कृष्ट प्रदेशबंध स्वामी कह्या ॥ इति० ॥९२॥

हवे जघन्य प्रदेशबंध स्वामी कह्या थकी वचला सर्व मध्यम प्रदेशबंध स्वामी

सुखें समजाय ते नणी एकशोने वीश प्रकृतिना जघन्य प्रदेशबंध स्वामी कहे ले.

॥ अथ जघन्य प्रदेशबंधस्वामीनाह ॥

सुमुणी डुन्नि असन्नी, नरय तिग सुराउ सुर विउवि डुगं ॥
सम्मो जिणो जहन्नं, सुहुम निगो आइखणि सेसा ॥ ९३ ॥

अर्थ-तिहां असन्नीउ अपर्याप्तो आपणी प्रकृतिना बंधक मांहे घणी प्रकृति बांधतो जघन्य योगें वर्त्ततो चार समय लगें रहे एटले जघन्य योगें उत्कृष्टो तो चार समय पर्यंत जीव रहे ते नणी सामान्यपणे ए जघन्य प्रदेश बंध स्वामी कह्यो ले (सुमुणी के०) अप्रमत्त साधु घोलना योगी देवगति प्रायोग्य एकत्रीश प्रकृति बांधतो आहारक शरीर तथा आहारकोपांग, ए (डुन्नि के०) बे प्रकृतिनो जघन्यप्रदेश बंध करे, जे नणी एना बंधकमांहे एज जघन्य प्रकृतिनो बंधक होय (नरयतिग के०) नरकगति, नरकानुपूर्वी अने नरकायु, ए नरकत्रिक तथा चोथुं (सुराउ के०) देवायु, ए चार प्रकृतिनो जघन्य प्रदेशबंध स्वामी (असन्नी के०) असन्नीउ पंचेंद्रिय पर्याप्तो जीव, आठ कर्म बांधतो घोलना योगी जे एक योग थकी बीजे योगें संचार करतो होय ते घोलना योगी कहीयें. ते जघन्यथी तो एक समय लगें अने उत्कृष्ट तो चार समय लगें जघन्य प्रदेशबंध स्वामी होय, जे नणी जघन्य योगें जीव, चार समय उपरांत न रहे अने सन्नीआना जघन्य योग थकी असन्नीआनो उत्कृष्ट योग पण असंख्यातगुण हीन होय, तो वली जघन्य योग घणोज हीन होय, एमां शुं कहेवानुं ले? ते नणी असन्नीउ लीधो तथा असन्नीआ अपर्याप्ताने तो ए प्रकृतिनो बंधज नथी ते नणी अपर्याप्तो न लीधो, अने एकेंद्रियादिकने पण ए प्रकृतिनो बंध नथी तेनणी पंचेंद्रियज लीधो तथा आठ कर्म बांधती वखतें घणा नागें कर्म दल थोडुं आवे, तेमाटें आठ कर्मनो बंधक लीधो.

(सुर के०) देवगति अने देवानुपूर्वी, ए देवद्विक तथा (विउविडुगं के०) वैक्रिय शरीर अने वैक्रिय अंगोपांग, ए वैक्रियद्विक अने (जिणो के०) जिननाम कर्म, ए पांच प्रकृतिनो (जहन्नं के०) जघन्य प्रदेश बंध स्वामी (सम्मो के०) सम्यक्दृष्टि जीव नव प्रथम समय वर्त्ततो होय, तेमध्यें पण अनुत्तर विमानवासी देव पोताना नव प्रथम समयें स्वप्रायोग्य जघन्य वीर्यवंत थको जिननाम सहित मनुष्य प्रायोग्य ओगणत्रीश प्रकृति बांधतो जिननामसहित त्रीश बांधे, ते वारें जिननामनो जघन्य प्रदेशबंधस्वामी होय, जे नणी मनुष्य तो देव प्रायोग्य

अठावीश, ओगणत्रीश बांधे ले पण जिननाम सहित त्रीश न बांधे, वली तिहां प्रकृति अल्प होय ते नणी मनुष्य न कह्यो, अने नारकी तो अनुत्तर देवथकी उत्कृष्ट योगी होय, तेथी ते घणा प्रदेश बांधे माटें ते पण न लीधो तथा चारित्रियाने आहारकद्विक सहित अने जिननाम सहित देव प्रायोग्य एकत्रीशनो बंध होय तिहां जो पण प्रकृतिनी बहुलता होय, तोपण ते नव प्रथम समयना एवा अपर्याप्ता अनुत्तर सुरथकी उत्कृष्ट योगी होय, तेथी ते पण न लीधो. तेमाटें सम्यक्दृष्टि अपर्याप्ता अनुत्तरसुर जिननामनो जघन्य प्रदेशबंध करे, तथा शेष वैक्रियद्विक अने देवद्विक, ए चार प्रकृतिनो जघन्य प्रदेश बंध, सम्यक्दृष्टि मनुष्यनव प्रथम समयें वर्त्ततो करे, जे नणी शेष त्रण गतिना जीवने ए ओगणत्रीश प्रकृतिनुं बंध स्थानक होय परंतु त्रीश अने एकत्रीश प्रकृतिनो बंध तो पर्याप्तावस्थायें होय तिहां जघन्य योग न होय, तेथी अल्प प्रदेश बंध न करी शके, तेथी ए अपर्याप्तावस्थायें मनुष्यज एना स्वामी कह्या.

तथा (सुहुमनिगोआइखणिसेसा के०) एथी शेष रहि जे एकशो ने नव प्रकृति तेनो जघन्य प्रदेशबंध स्वामी सूक्ष्म निगोदियो लब्धि अपर्याप्तो जीव आदि क्षणें एटले नव प्रथम समयें वर्त्ततो होय, जे नणी पूर्वे अगीआर प्रकृति जे कही, तेनो बंध निगोदिआने नथी, तेथी तेना स्वामी निन्न कह्या. अने (१०९) प्रकृतिनो बंध एने ले तेथी एनो जघन्य बंधक स्वामी निगोदीओ कह्यो, केम के एथी अधिक जघन्य योग कोइ बीजा जीवने नथी ते मध्यें पण नव प्रथम समयें वर्त्ततो घणोज जघन्ययोगी होय, तेणे करी अल्प प्रदेश बंध करे तथा तेमां पण मनुष्यायु अने तिर्यंचायु, ए बे प्रकृतिना अल्प प्रदेशबंधस्वामी नव प्रथम समयवर्त्ति जीव न होय जे नणी त्रण पर्याप्ति पूर्ण कस्या विना कोइ परनवायु बांधेज नहीं, तेमाटें ए बे प्रकृतिना जघन्य बंधकमध्यें अपर्याप्तो मात्र लेवो पण नव प्रथमसमय वर्त्ति न लेवो. एम सर्व प्रकृतिना जघन्य प्रदेश बंध स्वामि कह्या ॥ ए३ ॥

हवे प्रदेश बंधने विषे सादि अनाद्यादिक नांगा विचारे ले.

दंसण लग नय कुह्रा, बि ति तुरिअ कसाय विग्घ नाणा
णं ॥ मूल लगेऽणुक्कोसो, चउह डुहा सेसि सवहं ॥ ए४ ॥

अर्थ—चक्षुदर्शनावरणादिक चार, दर्शनावरण तथा निद्रा अने प्रचला, ए (दंसणलग के०) दर्शनावरणषट्क, (नयकुह्रा के०) नय अने जुगुप्सा, तथा (बि

तितुरिअकसाय के०) बीजा अप्रत्याख्यानावरण क्रोधादिक चार, त्रीजा प्रत्याख्या नावरण क्रोधादिक चार, चोथा संज्वलना क्रोधादिक चार, (विग्घ के०) पांच अंतराय, (नाणाणं के०) पांच ज्ञानावरणीय, एवं त्रीश उत्तर प्रकृतिनो तथा (मूलठगे के०) एक ज्ञानावरणीय, बीजी दर्शनावरणीय, त्रीजी वेदनीय, चोथी नाम, पांचमी गोत्र अने उही अंतराय, ए ठ मूलप्रकृतिनो (अणुक्कोसो के०) अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध (चउह के०) चार नांगे होय. तिहां ठ मूल प्रकृतिनो तथा पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण अने पांच अंतराय, एवं चौद उत्तर प्रकृतिनो उत्कृष्ट प्रदेशबंध सूक्ष्म संपरायगुणठाणे होय तथा संज्वलना चार कषायनो उत्कृष्ट प्रदेशबंध, नवमे गुणठाणे होय तथा निद्रा अने प्रचला, ए बे प्रकृतिनो उत्कृष्ट प्रदेशबंध आठमा गुणठाणाने प्रथम नागें होय, तथा नय अने जुगुप्सा मोहनीयनो उत्कृष्ट प्रदेशबंध, आठमा गुणठाणाने सातमें नागें होय तथा प्रत्याख्यानावरण कषाय चारना उत्कृष्ट प्रदेशबंध, पांचमे गुणठाणे होय तथा अप्रत्याख्यानावरण कषाय चारनो उत्कृष्ट प्रदेशबंध, चोथे गुणठाणे होय माटें जे अनादि मिथ्यात्वी जीव ते उत्कृष्ट प्रदेशबंधनां स्थानक एवां गुणठाणां नथी पाम्यो, तेने सर्वदा ए त्रीश प्रकृतिनो अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध अनादि जाणवो. जे नणी ते जीव, केवारें पण अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध थकी उत्कृष्ट प्रदेशबंधें नथी आव्या, तेथी तेने अनुत्कृष्टनी अनादि ठे ए प्रथम नंग जाणवो. अने जेणे ग्रंथिनेद करी सम्यक्त्व पामी ए प्रकृतिना उत्कृष्ट प्रदेशबंध स्थानकें बे समय लगें उत्कृष्ट योगस्थानकें रहि तिहां उत्कृष्ट प्रदेश बंध करी वली योगस्थान परावर्त्त तथा अध्यवसाय पडतां अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करे, तिहां सादि नामें बीजो नांगो जाणवो, तथा जिन अने नव्यने सांत नांगे होय, जे नणी ते जीव गुणठाणे चडतो उत्कृष्ट प्रदेश बंध करशे, तथा ते उत्कृष्ट प्रदेश बंधनो अंत पण करशे ते नणी तिहां अनुत्कृष्ट प्रदेश बंधनुं सांतपणुं जाणवुं. ए त्रीजो नांगो कह्यो. तथा अनव्य जीवने उपरला गुणठाणां पामवांज नथी तेथी तेने उत्कृष्ट प्रदेश बंध पण करवो नथी तथा बंधांत पण करवो नथी तेने अनुत्कृष्ट प्रदेशबंधनो अनंत नामे चोथो नांगो जाणवो. एम ए त्रीश उत्तरप्रकृतिनो-तथा मूल ठ प्रकृतिनो अनुत्कृष्ट प्रदेश बंध चार नांगे कह्यो.

अने (सेसिसवहिं के०) शेष सर्व त्रणे प्रकारना बंध, ते (डुहा के०) बे नांगे होय. तिहां उत्कृष्ट प्रदेशबंध बे समय लगें होय, तेथी सादि अने सांत ए

बे भांगा होय तथा जघन्य योग चार समय लगें रहे, तिहां जघन्य प्रदेशबंध मिथ्यात्वें पामीयें. फरी अजघन्य बंध करे तिहां सादि अने सांत, ए बे भांगा बेहु बंधने विषे होय. एम ए त्रण बंध बे भागें होय, ए पूर्वोक्त त्रीश प्रकृति विना शेष नेवुं प्रकृति रही. तेमध्यें तहोंत्तेर प्रकृति अध्रुव बंधिनी छे. ते केवारेंक बंधाय अने कवारेंक न बंधाय, ते भणी एने विषे सादिसांत भांगो होय तथा एक मिथ्यात्व, थीणद्धीत्रिक, अनंतानुबधीचतुष्क, ए आठ प्रकृतिनो उत्कृष्ट प्रदेशबंध सात कर्म बांधतां संज्ञी मिथ्यात्वीने उत्कृष्ट योगें बे समय लगें होय, तेमाटें सादिसांत भांगा जाणवा तथा सूक्ष्म निगोदियाने भव प्रथम समयें जघन्य प्रदेश बंध होय अने बीजा जीवने अजघन्य प्रदेश बंध होय, एम ए चारे बंध आठ प्रकृतिना मिथ्यात्वगुणठाणे पामीयें माटें सादि, सांत, ए बे भांगा जाणवा.

तथा नाम ध्रुवबंधिनी नव प्रकृतिनो अपर्याप्त एकेंद्रिय प्रायोग्य त्रेवीश प्रकृतिने बंधें उत्कृष्ट प्रदेशबंध, मिथ्यात्वीने होय अने जघन्य प्रदेशबंध सूक्ष्म निगोदिआने भव प्रथम समयें होय, तेणे सादि, सांत, ए बे भांगा जाणवा, एम उत्कृष्ट अनुत्कृष्ट अने जघन्य प्रदेशबंधें सादि अने सांत, ए बे भांगा कह्या. ते प्रायें व्यवहारीया जीवने संभवियें छैयें. अन्यथा उत्कृष्ट प्रदेशबंध सन्निआ जीवने होय अने अनादि निगोदिआ जीवें तो संज्ञीपणुं पाम्युंज नथी, तो तेउत्कृष्ट प्रदेशबंध क्यां करे? तेथी तेने अनुत्कृष्ट प्रदेश बंध पण चार भांगे संभवे, ते अहींआं न कह्यो.

एम योगवृद्धियें प्रदेश वृद्धि होय ते भणी हवे योगस्थानकनुं स्वरूप कहे छे.

अथ योगस्थानान्याह हवे योगस्थानकनी संख्या कहे छे.

सेढि असंखिज्जंसे, जोगठाणाणि पयडि ठिइ भेआ ॥
ठिइ बंधज्झवसाया, अणुभाग ठाण असंख गुणा ॥ ७४ ॥

अर्थ—(सेढिअसंखिज्जंसे के०) श्रेणीने असंख्यातमें भागें जेटला आकाश प्रदेश होय, ते घनीकृतलोकनी एक प्रदेशिक श्रेणी तेने सूची श्रेणी सातराज प्रमाणनी कहीयें तेने असंख्यातमे भागें जेटला आकाश प्रदेश छे तेटला (जोगठाणाणि के०) योग स्थानक होय, ते भावीयें छैयें. सर्वथी अल्पवीर्यवान् भव प्रथम समयें वर्त्ततो एवो सूक्ष्मनिगोदिउ लब्धि अपर्याप्तो जीव, तेना असंख्याता जीव प्रदेश छे तेमध्यें पण जे सर्व जघन्य वीर्य प्रदेश एटले जे प्रदेशमां सर्वथी जघन्य वीर्य होय, तेना वीर्यना अंश केवलीनी प्रज्ञारूप शस्त्रें करी छेदतां एटले केवलीयें क

ल्प्यो जे वीर्यविभाग अर्थात् जे वीर्यांशनो अंश केवली पण कल्पी न शके तेने भावाणु पण कहीयें. तेह्वा लोकने असंख्यातमे भागें वर्त्तता जे असंख्याता प्रतर, तेना प्रदेश प्रमाण वीर्यांशें करी सहित ते पण असंख्याता थया, परंतु ते असंख्याताने असत्कल्पनायें दश कल्पीयें तेवा दश वीर्यांश सहित एवा जे जीवना प्रदेश असंख्येय प्रतर प्रमाणनो समुदाय परंतु असत्कल्पनायें तेने त्रण मांमीयें तेनी प्रथम जघन्य वर्गणा जाणवी, तेथकी वली एक वीर्यांशें अधिक वीर्यवंत जीव प्रदेशनो समुदाय तेनी बीजी वर्गणा जाणवी, तेथकी वली एक वीर्यांशें अधिक जीव प्रदेशना समुदायनी त्रीजी वर्गणा जाणवी. एम एकेक वीर्यांशें अधिक अधिक जीव प्रदेशनी समान जातिरूप वर्गणा तेवी घनीकृत लोकनी एक प्रदेशिक श्रेणी तेना असंख्यभाग प्रदेश प्रमाण वर्गणा जेवारें थाय, तेवारें असत्कल्पनायें तेने छ वर्गणा थापीयें तेने प्रथम स्पर्द्धक कहीयें जे भणी एकोत्तर वीर्यविभाग वृद्धियें करीने परस्परें स्पर्द्धा करे एवी वर्गणाने स्पर्द्धक कहीयें ए प्रथम स्पर्द्धकनी चरम उत्कृष्ट वर्गणाने विषे जेटला वीर्य विभाग छे. ते थकी एक, बे यावत् संख्याते वीर्यांशें अधिक वीर्यवंत जीव प्रदेश न पामीयें परंतु तेथकी असंख्य लोकाकाश प्रदेश प्रमाण वीर्यांशें अधिक वीर्यवंत जीव प्रदेश पामीयें तेवा समान वीर्य विभागें युक्त जीव प्रदेशना समुदायनी वर्गणा ते बीजा स्पर्द्धकनी प्रथम वर्गणा जाणवी. तेथकी वली एक वीर्यांशें अधिक वीर्यवंत जीव प्रदेशनो समुदाय तेनी बीजी वर्गणा जाणवी. एम एकेक वीर्यांशें वधते जीव प्रदेशना समुदायनी वर्गणा, ते जेवारें लोकाकाशनी श्रेणीना असंख्येय भाग वर्त्ति प्रदेश राशि प्रमाण वर्गणानो समुदाय थाय, तेवारें बीजो स्पर्द्धक थाय, ते पछी बीजा स्पर्द्धकनी चरम वर्गणाथकी वली असंख्यलोकाकाश प्रदेश तुल्य वीर्यविभागें अधिक वीर्यविभागवाला प्रदेशोनो राशि ते त्रीजा स्पर्द्धकनी प्रथम वर्गणा जाणवी. तेमज वली तेवाज अनुक्रमें त्रीजो स्पर्द्धक करवो फरी एवाज अनुक्रमें चोथो स्पर्द्धक, एम पांचमो स्पर्द्धक, ए रीतें लोकाकाश प्रदेशनी श्रेणिना असंख्येय भाग प्रदेश राशि प्रमाण स्पर्द्धकना समुदायें एक योग्य स्थानक थाय. तेथकी अन्य किंचित् अधिक वीर्यवंत जंतुनुं पण एवाज अनुक्रमे बीजुं योगस्थानक उपजे, तेथकी अन्य जीवनुं वली तेवाज अनुक्रमें त्रीजुं योगस्थानक उपजे, तेथकी अन्य जीवनुं वली तेवाज अनुक्रमें चोथुं योगस्थानक उपजे, ए प्रकारें करीने नाना जीवोना अथवा कालभेदें करीने एक जीवना लोकाकाशनी श्रेणीने असंख्येय भाग प्र

र्ति नजः प्रदेश राशि प्रमाण योगस्थानक होय. हवे ते पूर्वोक्त जघन्य एक योग स्थानकें वर्त्तता एवा त्रस जीव असंख्याता तथा स्थावर जीवतो अनंता पामी यें. तथा अपर्याप्ता सूक्ष्म निगोदीआ जीव, नव प्रथम समयें सघला एकज योगस्थानकें रहे अने बीजे समयें असंख्यात गुण वृद्धि वाला योगस्थानकें जाय अने पर्याप्ता जीव जघन्य योगस्थानकें चार समय पर्यंत रहे, तथा मध्यम योग स्थानकें वर्त्ततो चार, पांच, ब. सात, आव, सात, ब, पांच, चार, त्रण समय मात्र रहे. तथा उत्कृष्ट योगस्थानकें बे समय पर्यंत रहे. एम असंख्यात योग स्थानक बे, पण संक्षेपें मनना चार, वचनना चार अनें कायाना सात, रूप सहकार कारण नेदविवक्षायें पंदर योग कह्या.

ते योगस्थानकना नेद थकी वली (पयडि के०) ज्ञानावरणादिक मूल कर्म प्रकृति तथा उत्तर प्रकृतिना नेद, असंख्यात गुणा बे. जे नणी एकेक योगस्थानकें वर्त्तता, अनेक जीव बे तथा कालनेदें एक जीव, सर्व प्रकृति बांधे बे, तथा क्षेत्रादि संबंधें करीने ज्ञानावरणादिकना क्षयोपशम विचित्रें करीने बंधना विचित्र पणाथकी एटले मूल प्रकृति आव बे अने उत्तर प्रकृति एकशोने अट्ठावन्न बे, ते क्षेत्रना तारतम्यें क्षयोपशमनेदें करी बंधने विचित्र पणे करी तथा उदयनुं तारतम्य विचित्रपणुं असंख्य नेदें होय, तेथी प्रकृतिनेद पण असंख्याता जाणवा.

ते प्रकृतिनेद थकी वली (ठिइनेआ के०) स्थितिबंधना नेद असंख्यातगुणा होय, जेनणी जघन्यस्थिति थकी एक समयाधिक, द्विसमयाधिक, त्रिसमयाधिक करतां, करतां एम उत्कृष्ट स्थितिस्थानक पर्यंत एकेकी प्रकृति असंख्यात नेदें बंधाय, तेनणी प्रकृति नेदथकी स्थिति नेद, असंख्यात गुणा बे.

ते स्थितिनेद थकी (ठिइबंधअवसाया के०) स्थितिबंधना अध्यवसायना नेद असंख्यातगुणा बे, जे नणी एकेको स्थितिबंध असंख्याते अध्यवसाय स्थानकें तीव्र, तीव्रतर, मंद, मंदतर, एणी पेरें कषायोदय कृत जीवनो अशुद्ध परिणतिनेद ते अध्यवसाय कहीयें. ते अध्यवसाय स्थानक कोइ पण कर्मना एक मुहूर्त्तमात्र स्थितिबंधना हेतुनूत रहे, ते माटें स्थितिनेद थकी असंख्यात गुणा अध्यवसाय होय. जे नणी जघन्य स्थितिबंध पण असंख्य लोकाकाश प्रदेश प्रमाण अध्यवसाय स्थानकें होय बे. तेथकी वली समयाधिक समयाधिक स्थिति तो विशेषाधिक विशेषाधिक अध्यवसाय स्थानकें होय, एम पल्योपमना असंख्यातमा नाग मात्र स्थितिनेद अतिक्रम्या पबी जे स्थितिनेद होय, तिहां सुधी बम

णां अध्यवसायस्थानक थाय. एम द्विगुणवृद्धि स्थानक पण असंख्यातां होय, तेमाटें स्थितिनेदथकी असंख्यातगुणां अध्यवसायनां स्थानक होय. अहींआं क र्मनुं जे अवस्थान एटले रहेवुं, तेने स्थिति कहीयें, तेनो जे बंध, तेने स्थितिबंध कहीयें तथा कषायजनित जीव परिणामने अध्यवसाय कहीयें. ते अध्यवसायने विषे जीव वसे, तेने स्थान कहीयें. ते अध्यवसाय जीवने वसवानां स्थान बे, माटें एउनें अध्यवसायस्थान कहीयें. तिहां स्थितिबंधनां कारणनूत जे अध्यवसा य स्थानक, तेने स्थितिबंधाध्यवसाय स्थानक कहीयें.

तेथकी (अणुनागठाणअसंखगुणा के०) अनुनाग एटले रसबंध, हेतुनां अ ध्यवसायस्थानक, असंख्यातगुणां बे. तिहां अनु एटले पश्चात् बंधोत्तर कालें अ नुनवीयें ते अनुनाग शब्दें रस कहीयें ते असंख्याता बे. जे नणी अंतरमौहूर्त्तिक स्थितिबंधाध्यवसायस्थानक होय ते नगर सरखा तथा ते मध्यें एक, बे, त्रण, चार, पांच, ब, सात अने उत्कृष्ट जे आठ सामयिक रसबंधाध्यवसाय स्थानक होय, ते घर सरखा नाना जीवनी अपेक्षायें असंख्याता होय तथा एक जीवनी अपेक्षायें तो दे श, काल, क्षेत्र, नाव नेदें जघन्य स्थितिबंध पण असंख्यातलोकाकाशप्रदेश प्रमाण रसबंधाध्यवसायस्थानकें पामीयें, ते थकी समयाधिक स्थितिविशेषें वली अधिक अधिकतर रसबंधनां अध्यवसाय स्थानक पामीयें, एम सर्व स्थितिबंधाध्यवसाय स्थानने विषे रसबंधाध्यवसायस्थानकनी नावना करवी. ए कारणथी सर्वस्थिति बंधाध्यवसायथी रसबंधाध्यवसाय स्थान, असंख्यगुणां जाणवां ॥ इति समु०॥ ए५॥

तत्तो कम्म पएसा, अणंत गुणिया तउ सरछेया ॥
जोगा पयडि पएसं, ठिइ अणु नाग कसायाउ ॥ ए६ ॥

अर्थ—(तत्तो के०) ते कर्मना रसबंधहेतु अध्यवसाय थकी (कम्मपएसा के०) कर्मना प्रदेश एटले दल (अणंतगुणिया के०) अनंतगुणा जाणवा. जे नणी रसबंधहेतु अध्यवसाय स्थानक तो असंख्याता बे. अने कर्मवर्गणा ते पण अनं ती बे. ते वली एकेक वर्गणायें अनंता परमाणुआ बे. तेवी अनंती वर्गणा मिथ्या त्वादिकहेतुयें एक समयने विषे जीव, ग्रहण करे बे. अने रसबंधनां अध्यवसा य स्थानक तो एक उत्कृष्ट आठ समय पर्यंत रहे बे, तेमाटें अनंता जाणवा.

(तउसरछेया के०) खीर नींब रसाना अधिश्रयण समान अनुनाग बंध अ ध्यवसाय स्थानकें करी तंदूल समान कर्मपुजलोने विषे रस जणीयें बैयें. माटें ते

कर्मदलथकी कर्मदलना रसाविभाग अनंतगुणा जाणवा. जे भणी सर्व जघन्य रसाणुने विषे पण सर्व जीवथी अनंतगुणा रसाविभाग रसाणु होय, जे रसना भाग कल्पतां, कल्पतां केवलीनी प्रज्ञारूप शस्त्रें करी छेदतां, छेदतां जे निरंश अंश रहे, एटले केवली पण जे अंशनो बीजो अंश कल्पी न शके, ते रसाणुनुं नाम, अविभाग पलीछेद कहीयें. ते एकेक कर्म्माणुने विषे पण सर्व जीवथी अनंतगुणा रसाणु जघन्य पदें होय, तेवारें उत्कृष्टपदनुं तो कहेवुंज शुं ? अने कर्म्माणुतो अभव्यथी अनंतगुणा अने सिद्धने अनंतमे भागें होय ते अभव्यथी सिद्ध अनंत गुणा छे, ते सिद्ध थकी वली सर्व जीव अनंतगुणा छे तेथकी पण कर्मदलना रसाणु अनंतगुणा छे माटें. एम सविस्तरपणे प्रदेश बंध कह्यो.

हवे ए प्रकृत्यादिक चार बंधने विषे विशेषहेतु कहे छे. तिहां (जोगा के०) मन, वचन अने कायानी चेष्टायें करीने (पयडि के०) एक तो ज्ञानावरणादिकस्वभाव, एटले ज्ञानादिकने आवरवानो छे स्वभाव जेने विषे एवो प्रकृतिबंध करे अने बीजो (पएसं के०) प्रदेश बंध एटले कर्मनो दल संचय, ए बे बंध करे, केम के करणवीर्य जे मनो वचन कायादिकनो योग, तेनी उत्कटतायें जो घणुं वीर्य होय, तो तेथी घणां दल मेलवे अने मध्यमयोगें मध्यमदल मेलवे, तथा योगनी मंदतायें अल्प दल मेलवे, केम के मिथ्यात्वादिक हेतु विना पण केवल योगें करीज बारमे अने तेरमे गुणठाणे शातावेदनीयनो प्रकृतिबंध तथा प्रदेशबंध करे, अने योगने अभावें चौदमे गुणठाणे प्रकृतिबंध तथा प्रदेशबंध न करे, तेणे अन्वय व्यतिरेकें करी प्रकृतिबंध तथा प्रदेश बंधना हेतु योग कहीयें.

तथा (ठिइ के०) एक स्थितिबंध अने बीजो (अणुभागकसायाउ के०) अनुभागबंध ए बे बंध, कषायने तारतम्यपणे होय. केमके उत्कृष्ट कषाय संक्लेपें स्थिति पण उत्कृष्टी बंधाय तथा अशुभ प्रकृतिनो रस, उत्कृष्ट बंधाय अने शुभ प्रकृतिनो रस मंद बंधाय, तेमज मध्यम संक्लेषें मध्यम रस बंधाय. एम कषायनी अनुवृत्तियें बंध होय तथा कषाय पण दशमा गुणठाणा पर्यंत होय अने कर्म प्रकृतिनो स्थितिबंध पण तिहां लगेंज होय, तेमाटें ए बे बंधनुं असाधारण कारण कषाय जाणवो. एम चार बंधना स्वामी तथा हेतु, ए उत्कृष्ट जघन्य पणे विस्तार सहित कह्या ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ए६ ॥

हवे योगस्थानादिकने विषे लोकाकाशनी श्रेणीनुं असंख्यातभागादिक मान क

छुं, ते जो श्रेणीनुं मान जाणीयें, तो सुखें समजी शकीयें, ते माटें श्रेणी प्रतर घनादिकनुं मान कहे छे. अथ श्रेणीप्रतरस्वरूपमाह.

चउदस रज्जू लोगो, बुद्धिकउ सत्त रज्जु माण घणो ॥
तद्दीहेग पएसा, सेढी पयरो अ तव्वग्गो ॥ ९७ ॥

अर्थ—सुप्रतिष्ठित संस्थानें सर्व लोक छे. जेम एक शरावलुं अधोमुख राखीयें, ते उपर वली एक शरावलुं समुं राखीयें, ते उपर वली एक शरावलुं अधोमुख राखीयें, ए रीतें नीचो सातमी नरकें सातराज लांबो पहोलो छे अने त्रिगुणी जाजेरी परिधि छे. तिहां थकी एकेक प्रदेशें हीन करतां करतां रत्नप्रभा पृथवीयें एक राज्य लांबो पहोलो होय. तिहांथी वली एकेक प्रदेश वृद्धि होती होती पांचमे देवलोकें पांच राज्य पहोलो होय. तिहांथी वली एकेक प्रदेशें हीन करतां, करतां लोकाग्र एक राज्य पहोलो होय. ए आकारें (चउदसरज्जू लोगो के०) चौदराज्य लोक छे. तेमध्यें एक राज्य लांबी, पहोली अने चउद राज्य उंची त्रसनाडी छे ते त्रस जीवें करी सद्दवर्त्तमान छे. उपरांत स्थावरजीवो छे ते लोकनो (बुद्धिकउसत्तरज्जुमाणघणो के०) बुद्धियें कल्पनायें करी घन करतां सात राज्य लांबो, पहोलो अने सात राज्य उंचो चउरस घन कल्पीयें, ते कल्पनानो प्रकार देखाडे छे.

जे आकारें अधोलोक छे, तेनो एक पाशानो खंम, ते जिहां सातमीना तलने भागें त्रण राज्य पहोलो छे तिहांथी एकेक प्रदेश हीण थातो जिहां एक प्रदेश मात्र रहे, ते प्रदेशनुं पाछुं जिहां सातमी नरकनो चार राजनो खंम बाकी रह्यो छे. ते दिशायें राखीयें अने त्रण राज्य पहोलुं पाछुं ते एक राज्य जिहां रत्नप्रभा पृथ्वी पहोली छे ते दिशायें राखीयें, तेवारें चार राज्य पहोलपणे अने दीर्घपणे थाय अने सात राज्य जाजेरुं उंचपणे एवो लोकनो अर्द्धखंम थाय अथवा त्रसनाडी थकी दक्षणदिशिना अधोलोकनो खंम, ते नीचें त्रण राज्य पहोलो छे अने पछी प्रदेशें प्रदेशें घटतो उपरें एक प्रदेश सांकडो छे. अने उंचो सात राज्य जाजेरो छे. तेने उपाडीने त्रस नाडीने उत्तर दिशियें विपरीतपणे जोडीयें, एटले हेठलनुं पहोल पणुं ते उपर आणीयें अने उपर सांकडो छे, ते नीचें लावी मूकीयें, एटले अधोलोक सात राज्य जाजेरो उंचो अने चार राज्य पहोल पणे सर्वत्र सरखो थाय.

हवे ऊर्ध्वलोक ऊर्ध्व मामलने आकारें छे. तिहां त्रसनाडिथी बाहेरनुं एक

पाशानुं अर्द्ध, वच्चेंथी छेदीने जे पाशायें मध्य त्रण राज्य पहोलुं छे, ते पाशें एक प्रादेशिक तिर्छी नाग उंचा, नीचा जोडीयें, तेवारें त्रण राज्य लांबो, पहोलो अने किंचिन्न्यून सात राज उंचो एवो ऊर्ध्वलोकनो घन थाय, एटले ऊर्ध्वलोकें त्रस नाडी थकी दक्षणदिशिनो खंम बे राज्य पहोलो अने किंचिन्न्यून सात राज उंचो तेमांहे ब्रह्म देवलोकना मध्यथकी हेठलो अने उपरलो खंम करीने त्रस नाडीने उत्तर पासें विपरीत पणे थापीयें एटले पहोलपणुं हेठल करीयें, अने सांकडापणुं वच्चें ब्रह्म देवलोकें आणीने थापीयें. एम जेवारे नीचें उपर थापीयें, तेवारें ऊर्ध्वलोक त्रण राज्य पहोलो अने किंचिन्न्यून सात राज्य उंचो, सर्वत्र थाय. एवो ऊर्द्ध्वलोकनो घन थाय. ते किहां एक थोडुं अधिकुं उंबुं होय, तेने पोतानी बुद्धियें अधिकुं उंबुं मांहे नेलीने सरखुं करीयें.

तेवार पछी लोकनुं उपरखुं अर्द्ध उपाडीने अधोलोकने संवर्त्तिने दक्षणपाशें जोडीयें एटले सात राज पहोलो, सात राज लांबो अने सात राज उंचो, एम समचतुरस्र घन लोक थाय. अंहींआं अधोलोकना सातराज जाजेरा छे. तेम ऊर्द्ध्वलोकना सात राज माठेरा छे, ते मेलवत्तां पूर्ण थाय.

एना एकराज्य लांबा, पहोला, तथा एक राज्य उंचा, एवा खांमुआ करीयें, तेवारें त्रणशें ने तेंतालीश खंमुक थाय. ए सर्व स्थूल व्यवहारनयें कह्युं, जे नणी लोकतो वृताकारें छे अने ए घन तो समचतुरस्र थयुं माटें एने वृताकारें करवाने अर्थें त्रणशें तेंतालीश खंमुकने ओगणीशगुणा करीने बावीश नागें हरीयें, तेवारें वृताकारें लांबो, पहोलो थाय, पण ए नय कांइएक ऊणाने पण पूर्ण कहे छे, तेमाटें व्यवहार थकी सर्व ठेकाणे सात राजनोज घन कह्यो छे, तेथी खांमुआ न थाय तो पण न गणवो. अहीं एक राज्य ते स्वयंभूरमण समुद्रनी पूर्व दिशिनी वेदिका थकी पश्चिमदिशिनी वेदिका पर्यंत तथा उत्तरदिशिनी वेदिका थकी दक्षिणदिशिनी वेदिका पर्यंत असंख्याता कोडाकोडी योजन प्रमाण जाणवुं. ए घनवृत लोकना घनवृत चतुरस्र खंमुक (३०७) थाय.

(तद्दीहेगपएसा के०) ते घनीकृत सात राज लोकनी एक प्रादेशिक श्रेणी मोतीनी लडनी पेरें (००००००) सात राज लांबी एकेका आकाश प्रदेशनी पंक्ति तेने (सेढी कें०) श्रेणी कहीयें, एटले श्रेणी असंख्यांश जे ठेकाणे कह्युं होय, तिहां ए श्रेणीनुं असंख्यांश लेवुं अने (पयरोअतवग्गो के०) ते श्रेणीनो वर्ग करीयें, एटले ते श्रेणीमांहे जेटला प्रदेश होय, तेने तेटला सायें गुणीयें तेने

प्रतर कहीयें. एटले सात राज लांबो, पहोलो, एक प्रदेशदलें मांमानी पेरें चतुरस्र, ते प्रतर कहीयें माटें जिहां प्रतर कह्युं होय, तिहां एक श्रेणीना वर्ग प्रमाण प्रदेश लेवा तथा ते प्रतरना प्रदेश ते वली श्रेणीना प्रदेश सार्थे गुणीयें, तेने घन कहीयें यथा असत्कल्पनायें श्रेणीना पांच प्रदेश बे, ते सूची कहीयें. अने तेने पांच गुणा करतां पच्चीश थाय, तेने प्रतर कहीयें, तेने वली तेहीज श्रेणीना पांच प्रदेशें गणीयें, तेवारें एकशो पच्चीश थाय. तेने घन कहीयें. अहीं सात राज लांबो, सातराज पोहोलो अने जाड पणे एक प्रदेशनो प्रतर जाणवो. एम सप्रसंग सविस्तर प्रदेशबंध कह्यो ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ए७ ॥ इति पएसबंधो सम्मत्तो ॥

हवे चशब्दें संसूचित उपशमश्रेणी तथा क्षपकश्रेणीनुं स्वरूप कहे बे. तेमध्यें पण प्रथम अनंतानुबंधियाना उपशमनो विधि कहे बे.

अथोपशमश्रेणीमाह. हवे उपशमश्रेणीनुं स्वरूप, अनुक्रमें कहे बे.

अण दंस नपुंसि ब्री, वेअ ठक्कं च पुरिस वेअं च ॥
दोदो एगं तिरिए, सरिसे सरिसं उवसमेइ ॥ ए८ ॥

अर्थ- तिहां एक अविरति सम्यक्दृष्टि, बीजुं देशविरति, त्रीजुं प्रमत्त, चोथुं अप्रमत्त, ए चार गुणठाणे वर्त्ततो जीव ज्ञानोपयोगी ठ लेश्या मांहेली शुज त्रण लेश्याना परिणामें शुजाध्यवसायें करी पुण्यप्रकृतिना बेठाणीआ रसने स्थानकें चोठाणीआ रसने निपजावतो अने अशुज प्रकृतिना चोठाणीआ रसने स्थानकें बेठाणीउ रस करतो तिहां बंधविरोधिनी प्रकृतिमध्यें त्रसादिक शुज प्रकृतिनो बंध करतो अंतर मुहूर्त्त, यथाप्रवृत्तिकरणें वर्त्ततो पूर्वला पूर्वला स्थितिबंध थकी आगलो आगलो स्थितिबंध पल्योपमासंख्येय जागें हीन करतो अंतर मुहूर्त्त यथाप्रवृत्तिकरणे रही पढी अपूर्वकरणे अनंतगुण विशुद्धियें वधतो चडे, तिहां धुरथी स्थितिघात, रसघात, गुणश्रेणी. गुणसंक्रम अने अपूर्वबंध, ए पांच वानां प्रवर्त्ते. तिहां सर्व कर्मनी जेटली स्थिति शेष रही बे तेना उपरला जागथी सागरोपम पृथक्त्व प्रमाण स्थिति खंमी जघन्यतो पल्योपमा संख्येयजाग प्रमाण स्थिति खंमीने तेना दलीया उदयकालनी स्थितिथी उपरली उपरली स्थितिने विषे यथोक्त असंख्यात गुणाकारें वधता दलिक संक्रमावतो जाय. एम अंतःस्थिति सर्वोत्कृष्ट दल संक्रमावे तथा एकेक अंतर मुहूर्त्तें स्थिति खंम करतो अनेक सहस्र खंम करे तेथी प्रथम जे रस हतो, तेनो अनंतमो जाग रस शेष रह्यो बीजो सर्व

खपाव्यो एम हीन रस थया. एवां कर्मदल तें जीर्ण काष्ठने जेम अग्नि सुखें बाली शके. तेम एना कर्म पण सुखें निर्ज्जराय तेणे असंख्यातगुणी निर्ज्जरा वधे. ए गुणश्रेणी अपूर्वकरणें चढतां जीव विशुद्धि स्थानक विचित्र पणे सत्रिकोण क्षेत्र रुंधे. तथा त्रीजुं अनिवृत्तिकरण मोतीनी लडनी पेरें छे एने विषे सर्व जीव एकज विशुद्धियें चढे, जे भणी तिहां पण स्थितिघात, रसघात, गुणश्रेणी, गुणसंक्रम, ए चार वानां अपूर्वकरणनी पेरें प्रवर्त्ते, पण एटलुं विशेष जे अनिवृत्तिकरणने संख्यातमे भागें गये थके एक प्रथम स्थिति, बीजो अंतर करण, ए बेहु नवी बंधस्थितिने अंतरमुहूर्त्त प्रमाण नीपजावे. तिहां अंतर करणें अंतरस्थितिनां दल लेइ लेइने केटलाएक प्रथम स्थितिमध्यें अने केटलाएक उपरली स्थितिमध्यें संक्रमावे, एम संक्रमावतां बे आवली शेष प्रथमस्थिति रहे, तेवारें गुणश्रेणी निवर्त्ते तथा बीजी स्थितिना दलनी उदीरणा ते आगलें कहीयें, तेपण निवर्त्ते अने एकावलिका शेष प्रथम स्थिति रहे, तेवारें रसघात, स्थितिघात अने उदीरणा, ए त्रण निवर्त्ते. ए प्रथम सम्यक्त्व उपजावे तिहां उपशमविधि कह्यो. अहींआं अनिवृत्तिकरणें गुण संक्रमे अनंतानुबंधीआनुं दलिक लही प्रत्याख्यानीआ कषायादिक पणे संक्रमावतो चरम समयें सर्व संक्रम करे. एम (अण के०) अनंतानुबंधीआ उपशमावे.

तेवार पछी मिथ्यात्व मोहनीय, मिश्रमोहनीय अने सम्यक्त्वमोहनीय, ए त्रण (दंस के०) दर्शन मोहनीयने पण साथें उपशमावे तेवारें उपशम सम्यक्दृष्टि थाय. अहींआं जोपण वेदक सम्यक्दृष्टिने अनंतानुबंधीआ कषाय चार तथा मिथ्यात्व मोहनीयादिकनो रसोदय नथी तोपण प्रदेशोदयनो विधि जाणवो.

ते पछी जेणे स्त्रीवेदें उपशमश्रेणी आरंभी होय, तो (नपुंस के०) प्रथम नपुंसकवेद खपावे पछी (पुरिसवेअंच के०) पुरुषवेद खपावे अने पछी (छक्कं के०) हास्यादिक षट्क, ते पछी (इछिवेअ के०) स्त्रीवेद उपशमावे अने जो पुरुषवेदें श्रेणी आरंभी होय तो प्रथम नपुंसकवेद पछी स्त्रीवेद, पछी हास्यादि षट्क अने पछी पुरुषवेद उपशमावे. तथा नपुंसकवेदें श्रेणी आरंभी होय तो प्रथम स्त्रीवेद, पछी पुरुषवेद, पछी हास्यादिषट्क अने पछी नपुंसकवेद उपशमावे.

ते पछी (दोदोएगंतिरिएसरिसेसरिसंजवसमेइ के०) अप्रत्याख्यानावरण क्रोध अने प्रत्याख्यानावरण क्रोध, ए बेहु उपशमावे, ते पछी संज्वलन क्रोध उपशमावे, ते पछी अप्रत्याख्यानावरणमान अने प्रत्याख्यानावरणमान, ए बेहु उपशमावे, ते पछी संज्वलनमान उपशमावे, ते पछी अप्रत्याख्यानावरणमाया अने प्रत्याख्यानावरण माया,

प्रतर कहीयें. एटले सात राज लांबो, पहोलो, एक प्रदेशदलें मांमाना पेरें चतुरस्र, ते प्रतर कहीयें माटें जिहां प्रतर कह्युं होय, तिहां एक श्रेणीना वर्ग प्रमाण प्रदेश लेवा तथा ते प्रतरना प्रदेश ते वली श्रेणीना प्रदेश सार्थे गुणीयें, तेने घन कहीयें यथा असत्कल्पनायें श्रेणीना पांच प्रदेश छे, ते सूची कहीयें. अने तेने पांच गुणा करतां पच्चीश थाय, तेने प्रतर कहीयें, तेने वली तेहीज श्रेणीना पांच प्रदेशें गणीयें, तेवारें एकशो पच्चीश थाय. तेने घन कहीयें. अहीं सात राज लांबो, सातराज पोहोलो अने जाड पणे एक प्रदेशनो प्रतर जाणवो. एम सप्रसंग सविस्तर प्रदेशबंध कह्यो ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ए७ ॥ इति पएसबंधो सम्मत्तो ॥

हवे चशब्दें संसूचित उपशमश्रेणी तथा क्षपकश्रेणीनुं स्वरूप कहे छे. तेमध्यें पण प्रथम अनंतानुबंधियाना उपशमनो विधि कहे छे.

अथोपशमश्रेणीमाह. हवे उपशमश्रेणीनुं स्वरूप, अनुक्रमें कहे छे.

अण दंस नपुंसि त्थी, वेअ छक्कं च पुरिस वेअं च ॥
दोदो एगं तरिए, सरिसे सरिसं उवसमेइ ॥ ए८ ॥

अर्थ- तिहां एक अविरति सम्यक्दृष्टि, बीजुं देशविरति, त्रीजुं प्रमत्त, चोथुं अप्रमत्त, ए चार गुणठाणे वर्त्ततो जीव ज्ञानोपयोगी छ लेश्या मांहेली शुभ त्रण लेश्याना परिणामें शुभाध्यवसायें करी पुण्यप्रकृतिना बेठाणीआ रसने स्थानकें चोठाणीआ रसने निपजावतो अने अशुभ प्रकृतिना चोठाणीआ रसने स्थानकें बेठाणीउ रस करतो तिहां बंधविरोधिनी प्रकृतिमध्यें त्रसादिक शुभ प्रकृतिनो बंध करतो अंतर मुहूर्त्त, यथाप्रवृत्तिकरणें वर्त्ततो पूर्वला पूर्वला स्थितिबंध थकी आगलो आगलो स्थितिबंध पल्योपमासंख्येय भागें हीन करतो अंतर मुहूर्त्त यथा प्रवृत्तिकरणे रही पछी अपूर्वकरणे अनंतगुण विशुद्धियें वधतो चडे, तिहां धुर थी स्थितिघात, रसघात, गुणश्रेणी. गुणसंक्रम अने अपूर्वबंध, ए पांच वानां प्रवर्त्ते. तिहां सर्व कर्मनी जेटली स्थिति शेष रही छे तेना उपरला भागथी सागरोपम पृथक्त्व प्रमाण स्थिति खंमी जघन्यतो पल्योपमा संख्येयभाग प्रमाण स्थिति खंमीने तेना दलीया उदयकालनी स्थितिथी उपरली उपरली स्थितिने विषे यथोक्त असंख्यात गुणाकारें वधता दलिक संक्रमावतो जाय. एम अंतःस्थिति सर्वोत्कृष्ट दल संक्रमावे तथा एकेक अंतर मुहूर्त्तें स्थिति खंम करतो अनेक सहस्र खंम करे तेथी प्रथम जे रस हतो, तेनो अनंतमो भाग रस शेष रह्यो बीजो सर्व

खपाव्यो एम हीन रस थया. एवां कर्मदल तें जीर्ण काष्ठने जेम अग्नि सुखें बाळी शके. तेम एना कर्म पण सुखें निर्झराय तेणे असंख्यातगुणी निर्झरा वधे. ए गुणश्रेणी अपूर्वकरणें चढतां जीव विशुद्धि स्थानक विचित्र पणे लत्रिकोण क्षेत्र रुंधे.

तथा त्रीजुं अनिवृत्तिकरण मोतीनी लडनी पेरें ठे एने विषे सर्व जीव एकज विशुद्धियें चढे, जे नणी तिहां पण स्थितिघात, रसघात, गुणश्रेणी, गुणसंक्रम, ए चार वानां अपूर्वकरणनी पेरें प्रवर्त्ते, पण एटलुं विशेष जे अनिवृत्तिकरणने संख्यातमे नागें गये थके एक प्रथम स्थिति, बीजो अंतर करण, ए बेहु नवी बंधस्थितिने अंतरमुहूर्त्त प्रमाण नीपजावे. तिहां अंतर करणें अंतरस्थितिनां दल लेइ लेइने केटलाएक प्रथम स्थितिमध्यें अने केटलाएक उपरली स्थितिमध्यें संक्रमावे, एम संक्रमावतां बे आवली शेष प्रथमस्थिति रहे, तेवारें गुणश्रेणी निवर्त्ते तथा बीजी स्थितिना दलनी उदीरणा ते आगलें कहीयें, तेपण निवर्त्ते अने एकावलिका शेष प्रथम स्थिति रहे, तेवारें रसघात, स्थितिघात अने उदीरणा, ए त्रण निवर्त्ते. ए प्रथम सम्यक्त्व उपजावे तिहां उपशमविधि कह्यो. अहींआं अनिवृत्तिकरणें गुण संक्रमे अनंतानुबंधीआनुं दलिक लही प्रत्याख्यानीआ कषायादिक पणे संक्रमावतो चरम समयें सर्व संक्रम करे. एम (अण के०) अनंतानुबंधीआ उपशमावे.

तेवार पठी मिथ्यात्व मोहनीय, मिश्रमोहनीय अने सम्यक्त्वमोहनीय, ए त्रण (दंस के०) दर्शन मोहनीयने पण साथें उपशमावे तेवारें उपशम सम्यक् दृष्टि थाय. अहींआं जोपण वेदक सम्यक्दृष्टिने अनंतानुबंधीआ कषाय चार तथा मिथ्यात्व मोहनीयादिकनो रसोदय नथी तोपण प्रदेशोदयनो विधि जाणवो.

ते पठी जेणे स्त्रीवेदें उपशमश्रेणी आरंजी होय, तो (नपुंस के०) प्रथम नपुंसकवेद खपावे पठी (पुरिसवेअंच के०) पुरुषवेद खपावे अने पठी (ठक्कं के०) हास्यादिक षट्क, ते पठी (इडिवेअ के०) स्त्रीवेद उपशमावे अने जो पुरुषवेदें श्रेणी आरंजी होय तो प्रथम नपुंसकवेद पठी स्त्रीवेद, पठी हास्यादि षट्क अने पठी पुरुषवेद उपशमावे. तथा नपुंसकवेदेंश्रेणी आरंजी होय तो प्रथम स्त्रीवेद, पठी पुरुषवेद, पठी हास्यादिषट्क अने पठी नपुंसकवेद उपशमावे.

ते पठी (दोदोएगंतिरिएसरिसेसरिसंउवसमेइ के०) अप्रत्याख्यानावरण क्रोध अने प्रत्याख्यानावरण क्रोध, ए बेहु उपशमावे, ते पठी संज्वलन क्रोध उपशमावे, ते पठी अप्रत्याख्यानावरणमान अने प्रत्याख्यानावरणमान, ए बेहु उपशमावे, ते पठी संज्वलनमान उपशमावे, ते पठी अप्रत्याख्यानावरणमाया अने प्रत्याख्यानावरण माया,

ए वेहु उपशमावे, ते पढी संज्वलनमाया उपशमावे, ते पढी अप्रत्याख्यानावरणलो न अने प्रत्याख्यानावरणलोन उपशमावे, एटले बादर संपरायनामा नवमुं गुण स्थानक पूर्ण थाय. पढी दशमा सूक्ष्म संपरायनामा गुणस्थानकें रह्यो, सूक्ष्म संज्वलन लोनने स्तिबुक संक्रम प्रकारें उपशमावीने उपशांतमोही थाय, तिहांथी न वक्षयें पडतो अनुत्तर सुर थाय, जे नणी अबद्धायु तथा बद्ध सुरायु वालो उपशमश्रेणी करे ढे. तेमध्यें अबद्धायुवालो तो मरण पामे नहीं, अने बद्धायु वालो जो मरे, तो अनुत्तर देव थाय, तिहां अगीआरमाथी चोथे गुणगणे आवे, तिहां सर्व करण समकालें प्रवर्त्तावे अने कालक्षयें पडे तो जिहां चढतां जे बंधादिक नो विछेद कीधो हतो, तिहां तिहां वली ते बंधादिक प्रगट करतो जाय तथा क्षपकश्रेणीथी उपशमश्रेणीनी मंद विशुद्धि ढे ते नणी अपूर्व बंध बमणो बमणो करे, सूक्ष्म संपरायना चरम समयें नाम तथा गोत्र कर्मना शोल मुहूर्त्तनो बंध करे, वेदनीयनो चोवीश मुहूर्त्तनो बंध करे, अने ज्ञानावरणादिकनो बे बे मुहूर्त्त नो बंध करे. एम चढतां तथा उतरतां सर्व स्थानें बमणो बमणो बंध करे. एम उपशमनाविधि तथा विसंयोजनाविधि, सर्व सत्तरीनामा ढठा कर्मग्रंथना बालावबोध थकी जाणवो तथा कर्मप्रकृतिनी टीकाथी सविस्तर जाणवो ॥ इति स० ॥ ए८ ॥

॥ अथ क्षपकश्रेणीमाह ॥ हवे क्षपकश्रेणीनो विधि कहे ढे.

अणमिछ मीस सम्मं, तिआउ इग विगल थीण तिगुजोअं ॥
तिरि निरय थावर डुगं, साहारायव अड नपुंसि छी ॥ एए ॥

अर्थ- तिहां क्षपकश्रेणीनुं प्रारंनक संख्यातावर्षायुवालो कर्म नूमिजात मनुष्य प्रथम संघयणी अत्यंत विशुद्धमान परिणामी, अविरति, देशविरति, प्रमत्त अने अप्रमत्तादिक गुणगणे वर्त्ततो जो पूर्वधर होय, तो शुक्लध्यानें वर्त्ततो होय अने बीजो होय तो विशुद्ध धर्मध्यानें वर्त्ततो प्रथम (अण के०) चार अनंतानुबंधीआ कषायनी क्षपणा आरंने, तेने त्रण करणें करी खपावतां, खपावतां, जे वारें अनंतमो नाग शेष रहे, तेवारें ते नाग (मिछ कें०) मिथ्यात्वमोहनीय मांहे घालीने खपावे जेम अग्नियें अर्द्ध बलेलो इंधण त्रीजुं इंधण पामी बेहु बले. एम क्षपण-पण तीव्र परिणामें करी ते दल अल्प प्रकृतिमांहे संक्रमावी, बेहुने खपावे. वली मिथ्यात्वनुं शेष दल रहे ते (मीस के०) मिश्रमोहनीयमां घाली खपावे अने मिश्रमोहनीयनुं शेष दल रहे, ते सम्यक्त्व मोहनीयमां घाली खपावे. (सम्मं

के०) सम्यक्त्वमोहनीयनो छेल्लो खंम उकेरीने क्षपककृत करणाद्धायें वर्त्ततो जो पूर्वबद्धायु तिहां मरण पामे, तो अपतित परिणामें देवगति पामे अने पतितपरिणामें चारे गतिमांहे अवतरे. तिहां ते गतिमध्यें सम्यक्त्वमोहनीय खपावी तेना चरमग्रासें एक समय वेदक सम्यक्त्व लहीने, सर्व सम्यक्त्व मोहनीयने खपावी क्षायिक सम्यक्त्व लहे. एम दर्शनमोहनीय क्षपणानो आरंजक मनुष्य, क्षपणानी पूर्णता तो चारे गतिमध्यें करे, ते माटें क्षायिकसम्यक्त्वनो लाज, चारे गतिमध्यें संजवे तथा बद्धायु वालाने ए सात प्रकृति खपावी रह्या पछी जो आयु शेष रहे, तो तिहां चारित्र मोहनीयने क्षपणा करनारी श्रेणी न करे अने अबद्धायु तो चारित्रमोहनीयनी संपूर्ण क्षपणा करीने केवलज्ञान पामे. चारित्र मोहनीयनी क्षपणा मांमतो प्रथम (तिआउ के०) नरकायु, तिर्यगायु अने देवायु, ए त्रण आयु खपावे. अहींआं जो पण त्रण आयुनी सत्ता नथी, तो पण संजव सत्तानी अपेक्षायें क्षपणा कही. जे जणी जेणे पोत पोताना चरम जवने प्रांतें आपआप णुं आयु खपावी, मनुष्यजव लही दर्शन मोहनीयनी क्षपणा करी, शेष त्रण जवना आयुनी बंध योग्यता मटाडी छे, तेहीज चारित्र मोहनीयनी क्षपणा आरंजे. ते अपेक्षायें क्षपणा कही, शेष एक मनुष्यायुज उदय तथा सत्तायें वर्त्ते छे.

तेवार पछी अपूर्वकरणनामा आठमुं गुणठाणुं क्षपणाने अर्थें करी नवमा अनिवृत्ति गुणठाणाना नव जाग करी तेने बीजे जागें (इग के०) एकेंडियजाति, (विगल के०) विकलेंडियजाति त्रण, एवं जाति चार तथा (थीणतिग के०) थीणद्धीत्रिक, (उजोअं के०) उद्योतनाम कर्म, (तिरिनिरयथावरडुगं के०) तिर्यंचद्विक, नरकद्विक, थावर अने सूक्ष्म, ए स्थावरद्विक, (साहारायव के०) साधारणनाम, आतपनाम, ए शोल प्रकृति खपावे. कोइ एक आचार्य कहे छे के ए शोल प्रकृति खपावतो वच्चें (अड के०) अप्रत्याख्यानीय तथा प्रत्याख्यानीय आठ कषाय खपावीने पछी ए शोल प्रकृति खपावे अने कोइ एक आचार्य कहे छे के ए शोल प्रकृति खपाव्या पछी त्रीजे जागें आठ प्रकृति खपावे ते पछी (नपुंसित्थी के०) नपुंसकवेद क्षय करे, ते पछी स्त्रीवेद क्षय करे ॥ ९९ ॥

छग पुम संजलणा दो, निद्दा विग्घावरण खए नाणी ॥
देविंद सूरी लिहिअं, सयगमिणं आय सरणठा ॥ १०० ॥

अर्थ—पछी (छग के०) हास्यादिक छ प्रकृति खपावे पछी (पुम के०) पुरु

पवेद खपावे, तिहां जो स्त्रीवेदें क्षपकश्रेणी आरंभे तो प्रथम नपुंसकवेद खपावे, पढी पुरुषवेद खपावे, पढी हास्यादिक ढ प्रकृति खपावे अने ते पढी स्त्रीवेद खपावे, अने जो नपुंसक वेदें श्रेणी आरंभे तो पहेलुं अनुदीरण पण स्त्रीवेद खपावे, पढी पुरुषवेद खपावे, पढी हास्यादिक ढ प्रकृति खपावे, ते पढी नपुंसकवेद खपावे अने जो पुरुषवेदें श्रेणी आरंभे, तो प्रथम नपुंसक वेद खपावे, पढी स्त्रीवेद खपावे, पढी हास्यादिक ढ प्रकृति खपावे, ते पढी पुरुषवेद खपावे.

हमणां जे पुरुषवेदें श्रेणी आरंभे, ते स्त्रीवेदक्षय सार्थे पुरुष वेद तथा हास्यादिक ढ प्रकृतिनो बंध व्यवछेद करे, तिहां नोकषायनां दल बे आवली शेष छुंते वेद पतद्ग्रह न थाय तेथी संज्वलनक्रोध मांहे संक्रमावे, एम जे अंतर मुहूर्त्तें हास्यादि षट्क क्षीण थाय, ते समयें पुंवेदनो बंध, उदय अने उदीरणा विछेद थाय, अहींआं बे आवली बांध्युं जे पुरुषवेददल, ते विना बीजुं सर्व क्षीण थयुं ढे.

हवे अवेदक थको क्रोध वेदतो स्थिति अद्धाना त्रण नाग करे, एक अश्वकरणाद्धा, बीजो कीटीकरणाद्धा, त्रीजो वेदनोद्धा तिहां प्रथमाद्धायें वर्त्ततो पुरुष वेद पण समयोन बे आवलिकालें गुण संक्रमे, संक्रमावतो, संक्रमावतो, ढेहले समयें सर्व संक्रमे, संक्रमावे. अहींआं पुंवेद क्षीण थयो अने अश्वकरणाद्धा पूर्ण थयो. ते पढी बीजा कीटीकरणाद्धायें प्रवेश करे, तिहां एकेका कषायनी अनंती कीटी एटले खंम करे ते अनंती पण असत्कल्पनायें चार कल्पीयें, तोपण (संजलणा के०) संज्वलना चार कषाय मध्यें जो क्रोधोदयें पडिवजतां शोल अने मानोदयें पडिवजतां बार तथा मायोदयें पडिवजतां आठ अने लोनोदयें पडिवजतां चार कीटी होय, ते मांहेलुं एकेक कीटीनुं दल गुण संक्रमे संक्रमावतो एक चरमकीटी रहे तिहां संज्वलनक्रोधनो बंध उदय अने उदीरणा विछेद थाय, परंतु सत्तायें ढेहेलुं बांधेलुं बे आवली मात्र रह्युं ढे तेने पण माननी प्रथम स्थिति कीटी दलमां क्रोधना दलने आकर्षीने तिहां गुण संक्रमे, संक्रमावे, चरम समयें सर्व संक्रमें संक्रमावे तेवारें तिहां क्रोध क्षीण थयो. ए रीतें संज्वलना माननी कीटी पण उपरली स्थिति मांहेथी नीची स्थिति मांहे उतारी वेदतो गुण संक्रमे संक्रमावतो, संक्रमावतो, जेवारें चरम एटले ढेहली कीटी रहे, तेवारें तेने मायामांहे संक्रमावी खपावे. तेम मायानी पण चरम कीटी, संज्वलना लोजनी प्रथम कीटीमांहे संक्रमावी खपावे संज्वलन कीटीनुं दल प्रथम स्थितिगत करी वेदे, ते वेदतो आगली कीटीनुं दल तेनी सूक्ष्मसूक्ष्म कीटी करे, तेपण त्यां लगें करे के, ज्यां लगें संज्वलन लोजनी बीजी कीटी समया

धिक आवलि मात्र रहे, तिहां संज्वलन लोजनो बंध व्यवछेद थाय अने तथा बादर कषायनो उदय अने उदीरणा पण व्यवछेद थाय अनिवृत्तिगुणस्थानकनो काल पण व्यवछेद थाय. ए त्रण साथें व्यवछेद थाय.

ते पछी सूक्ष्मसंपराय कीटीदल प्रथम स्थितिगत करी वेदे तेथी तेने सूक्ष्म संपराय गुणठाणुं कहीयें. तेना संख्याता नाग जाय, तिहां लगें मोहनीयमांहे स्थितिघातादिक पांच पदार्थ प्रवर्त्ते. जेवारें एक नाग शेष रहे, तेवारें स्थितिघातादिक पांच पदार्थ विरमे. शेष ज्ञानावरणादिक कर्मना स्थितिघातादिक रहे तिहां अपवर्त्तना करणें करी सूक्ष्मसंपरायअद्धा जेटलो लोज करे ते संज्वलनो लोज आवलीमात्र रहे, तेवारें उदीरणा टले, बेहली आवलीयें उदय करी वेदी खपावे. एम सूक्ष्म संपपरायना चरम समयें सर्व मोहनीयने क्षीण करी क्षीणमोही थयो.

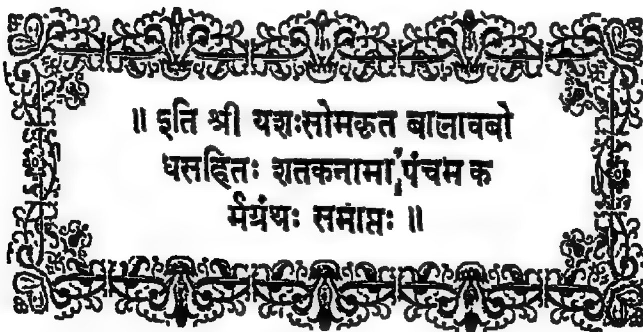
तिहां जेम कोइएक तारु पुरुष, महोटो समुड तरतो थको वचमां द्वीप पामी विश्राम लेइ वली आगल तरवा मांमे तथा कोइएक योद्धो पुरुष, महासंग्राम करतो शत्रुने हणतो हणतो थाके, तेवारें वली विश्राम लेइ समूलगो शेष शत्रु जींतवाने सज्ज थाय. तेम ए जीव पण सबल डुर्जय शत्रु जे महामोह तेने जींपतो संग्राम करतो करतो थाको तेमाटें ते यथाख्यात चारित्ररूप विश्राम स्थानक पामी वली शुक्लध्यानना बीजा पादें प्रवर्द्धमान वीर्यवंत थयो थको अंतरमुहूर्त्तना बेहला बे समय मध्यें प्रथम समयें (निद्दा के०) निड्रा अने प्रचला, ए बे प्रकृति खपावे अने बेहले समयें (विग्घावरणखए के०) पांच अंतराय, पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण, ए चौद प्रकृति खपावी, निश्चय नयें बारमा गुणठाणाने बेहले समयें (नाणी के०) केवलज्ञानी थाय अने व्यवहार नयने मतें तेरमा गुणठाणाने प्रथम समयें केवलज्ञानी थाय. एम त्रेशठ प्रकृतिनो क्षपणाविधि कह्यो. ए क्षपकश्रेणीने संक्षेपें कही एनो विस्तार छठा कर्मग्रंथना बालावबोधमां लख्यो छे तेमाटें अहींआं थोडा बोलें घणुं जाणवुं.

ए लघुशतक एवे नामें पांचमो कर्मग्रंथ जे जणी महोटो शतक श्री शिवशर्म्म सूरिकृत जोइने तथा पंच संग्रह, कम्मप्रकृति प्रमुख शास्त्र तथा चूर्णिका प्रमुख घणा ग्रंथ जोइने परमगुरु गछाधिराज तपाबिरुद प्रवर्त्तक, महावैरागिकशिरोमणि, जट्टारक श्री जगच्चंड्सूरीश्वर चरणकमलयोरालंबायमान सवांगमिकचक्रवर्त्ति बिरुदधारक अनेक विद्यानंद धर्म्मकीर्त्ति प्रमुख बहुश्रुत परिवार परिवृता श्राद्धदिनकृत्य सूत्रवृत्ति चैत्यवंदनादि जाष्यत्रितय संघाचारादि तद्वृत्ति लघुउप

मिति नवप्रपंचाद्यनेक ग्रंथ सूत्रेण सूत्रधारायमान तपागछाधिराज नट्टारक श्री (देविंदसूरिलिहिअं के०) देवेंद्रसूरीश्वरें लख्यो. (सयगमिणं के०) शतक एवे नामें ग्रंथ ,ते (आयसरणट्ठा के०) पोताना आत्माने संनारवा निमित्तें लख्यो. ते सर्व संघने सुखदायक थाजो ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ १०० ॥

॥ अथ प्रशस्तिः ॥

॥ श्रीवीरपट्टेश्वरमौलिमौलिः, कलालयोऽज्ञानतमोविनाशी ॥ अनूत्तपाख्यातिसुकौमुदीनूत् सूरिर्जगच्चंद्र इति प्रसिद्धः ॥ १ ॥ तत्पट्टपुष्करविनासनराजहंसो, हद्योऽनवद्यवचनस्थितराजहंसः ॥ देवेंद्रसूरिरजनवक्रवतापनेदी, वेदीव दीव्यतिपरानुनवस्य यज्ञैः ॥ २ ॥ यद्ज्ञानादिविग्रुक्तेषु, प्रियमेलकतामगात् ॥ श्रीमद्देवेंद्रसूरीणां, वचस्तीर्थं पुनातु वः ॥३॥ श्रीमद्देवेंद्रगुरो,र्मलयगिरिगुरोर्गिरां गुरुत्वमहो ॥ आप्तान्नुन्नयति शिवः, स्वन्नमनाप्तांस्तु पातयति ॥ ४ ॥ सुवर्णा तत्पदन्या, सालंकारा सुरेंद्रगौः ॥ श्रवतेऽर्थपयोधारां, मंददोषाऽपि नोदिता ॥५॥ इति शतकटबार्थं प्रार्थनां प्राप्य किंचि, दलिखमिहमदोषामग्रजस्यार्थसारं ॥ दि शशि घन मितेऽब्दे निर्दिशे निर्दिशेयं, यदिह नवति डुष्टं तद्बुधाः शोधयंतु ॥६ ॥ विबुधगुरुवर्णितयश, स्तोमयशस्सोमगुरुशिष्याणुः ॥ जयसोमोऽलिखदेनां, नाषामात्मस्मृतौ शतके ॥ ७ ॥ इति प्रशस्तिः ॥



॥ इति श्री यशःसोमकृत बालावबोधसहितः शतकनामा, पंचम कर्मग्रंथः समाप्तः ॥

॥ अथ ॥

॥ श्रीचंद्रमहत्तराचार्यप्रणीत सप्ततिका नामा षष्ठः कर्मग्रंथः समारभ्यते ॥

॥ तत्र प्रथमं ॥

॥ बालावबोधकारकृत मंगलाचरणम् ॥

॥ आर्यावृत्तम् ॥

॥ प्रणिपत्य पार्श्वदेवं, स्मृत्वा स्वगुरुं गिरं च जागवतीं ॥ सप्ततिकायाव्याख्यां कुर्वेऽहं बालबोधार्थम् ॥ १ ॥ मत्तोपि मंदमतयो, न जानते येहि चूर्णिटीकोक्तीः ॥ तद्बोधानुग्रहधी, विषयोयन्नः श्रुत्नोर्यतत् ॥ २ ॥ केचित्परात्मसंवि, त्किकला विकलाः कलौ खलायंते ॥ तेभ्योन कापि जीतिः, संतः संतोषजाजश्चेत् ॥ ३ ॥ श्रीहर्षसोमविबुधान्, सुयशः सोमाभिधानकविश्रेष्ठान् ॥ नत्वा सप्ततिकाया, लिखामि जनजाषया व्याख्याम् ॥४॥ अर्थ—प्रथम श्रीपार्श्वनाथ परमेश्वरने नमस्कार करीने पोताना दीक्षागुरु अने विद्यागुरु, तेनां पद कमलने नमीने, महारा थकी जे तुच्छबुद्धिना धणी जेने टीका अने चूर्णीयें करी अर्थ समजवामां न आवे, तेवा पुरुषोना हितने अर्थें सत्तरी नामा छठा कर्मग्रंथनो बालावबोध लखुं छुं.

॥ मूल गाथा ॥

सिद्ध पएहिं महत्थं, बंधोदय संत पयडि ठाणाणं ॥
वुच्छं सुण संखेवं, नीसंदं दिठ्ठि वायस्स ॥ १ ॥

अर्थ—(सिद्ध के०) अचल एटले कोइथी खोटा करी न शकाय, एवा (पएहिं के०) पद छे जेने विषे, एवा कर्मपाहुडा कर्मप्रकृति, अने कम्मपयडी प्रमुख जे ग्रंथ जे जणी तेनां पद सर्वज्ञ जाषित छे ते कोइथी पण खंमी शकाय नहीं त्यां (महत्थं के०) महोटा अर्थ एटले घणा अर्थ छे जेने विषे तिहांथी (बंधोदयसंतपयडिठाणाणं के०) बंध, उदय अने सत्तापणे परिणमी जे कर्मनी प्रकृति, तेना स्थानकनो (संखेवं के०) संक्षेपें एटले थोडे अक्षरें घणो अर्थ समजाय अथवा विस्तारवंत अर्थ साथें थोडा मांहे आणीने एवी रीतें वचन रचना प्रकारें करी (वुच्छं के०) कहीशुं, तेजणी हे शिष्य ! तुं (सुण के०) सावधान थइने सांजल, पण ते संक्षेप केहवो छे ? तोके (दिठ्ठिवायस्स के०) दृष्टिवाद एटले समस्त जिनागमरूप समूह, तेनुं (नीसंदं के०) जरणुं छे जे जणी बारमुं अंग दृष्टिवाद छे तेना एक परिकर्म,

बीजुं सूत्र, त्रीजो पूर्वानुयोग, चोथो पूर्वगत, अने पांचमी चूलिका, ए पांच अधिकार छे. तेमांहे चोथो पूर्वगतनामा अधिकार छे तेने विषे चौद पूर्व छे. तेमांहेलुं बीजुं अग्रायणी नामा पूर्व, तेमध्ये चौद वस्तुपरिमाण छे ते मांहेलां पांचमा वस्तुपरिमाणमां वीश पाहुडा छे. पाहुडा एटले अधिकार विशेष जाणवो. ते वीश पाहुडा मांहेलो चोथो कर्मप्रकृतिनामा जे पाहुडो छे, ते चोवीश अनुयोगद्वार सहित छे, ते पाहुडा थकी बंधोदयसत्ता पणे परणमी जे कर्मनी प्रकृति, तेनां स्थानकनो संवेध एटले विचार ते संक्षेपथकी हुं कहीश, एटले ए शास्त्रपरंपरायें सर्वज्ञ भाषित छे तेनणी सहुने प्रमाण होय.

अथवा बीजे अर्थे (सिद्ध के०) स्वसमय प्रसिद्ध जे (पद के०) चौद जीवस्थानक, चौद गुणठाणां इत्यादिक पद ते आश्रयी बंध, उदय अने सत्तायें प्रकृतिस्थानक सद्भाव आश्री संक्षेप बोलीश तथा संवेध एटले विचार अथवा संवेध एटले परस्परें बंध, उदय, सत्तानुं जोडवुं, (दृष्टिवाद के०) द्वादशांगीनुं रहस्य अथवा दृष्टिवादनी अपेक्षायें ए सत्तरी प्रकरण बिंदुआ समान छे, ते हेशिष्य ! तुं. सांभळ.

तिहां आत्मप्रदेशने कर्म परमाणुनी साथें अग्निलोहनी परें सर्वांशें मळवुं, तेने बंध कहीयें. ते कर्म परमाणुना शुभाशुभ रसनुं भोगववुं तेने उदय कहीयें. तेहवा बांध्या तथा संक्रम्या जे परमाणु, ते जिहां लगें निर्जरे नहीं, तिहां लगें तेनो जे सद्भाव, तेने सत्ता कहीयें, अने प्रकृति स्थानक एटले समुदाय जेम के बे, त्रण, चार, पांच, इत्यादिक प्रकृतिना थोकडा ते ज्यां लगें जेटला होय, त्यां लगें तेटला प्रकृतिना स्थानक जाणवां ए सर्वनो विचार, तेनो संक्षेप एटले थोडे अक्षरें घणो अर्थ समजाय तेवी रीतें कहीशुं, पण ते संक्षेप केहवो छे तोके (महत्थ के०) घणा अर्थ छे जेमां एवो छे. अहींआं बंधोदय सत्ताप्रकृतिस्थान कहेशुं ते अभिधेय जाणवुं, अने अभिधायक शास्त्र तेने वाच्यवाचक भाव, ए संबंध जाणवो. तथा ए ग्रंथें अधिकारी कर्मनी बंधोदय प्रकृति स्थाननी विवेचनाथी महा अधिकारी मोक्षार्थी जीव जाणवा अने ते कर्मविचारनुं जे समजवुं ते अवांतर प्रयोजन जाणवुं तथा महा प्रयोजन अथवा परंपराप्रयोजन तो मोक्ष जाणवुं. एम अभिधेय, संबंध, अधिकारी अने प्रयोजन, ए चार वानां ग्रंथने आरंभें कहेवां ॥ १ ॥

कइ बंधंतो वेअइ, कइ कइ वा संत पयडि ठाणाणि ॥
मूलुत्तर पगईसु, भंग विगप्पा मुणेअव्वा ॥ २ ॥

अर्थ- एवुं आचार्यें कहे थके, हवे शिष्य पूछे छे के हे नगवन् ! (कइवंधंतोवेअइ के०) केटली प्रकृति बांधतो थको जीव केटली प्रकृति वेदे, एटले अनुनवे (वा के०) अथवा (कइकइ के०) केटली केटली प्रकृति बांधतां तथा केटली प्रकृति वेदतां थकां (संतपयडिगणाणि के०) केटली केटली प्रकृतिनुं सत्तास्थानक होय. एवो शिष्यें प्रश्न कीधे थके मूलोत्तर प्रकृतिने विषे प्रत्येक बंधोदय सत्तानो संवेध कहेवो, ते आश्रयी डुक्कर जाणीने हवे आचार्य सामान्यें प्रत्युत्तर कहे छे. (मूलुत्तर पगईसु के०) मूलप्रकृति ज्ञानावरणीयादिक आठ अने उत्तर प्रकृति एकशोने अ ठावन्न, तिहां बंधोदय सत्तायें प्रकृतिनो संवेध विचारतां (नंगविगप्पा के०) नांगाना विकल्प अनेक उपजे छे, ते आ प्रकरणने विषे लेशथी आगल देखाडशे. तिहांथी (मुणेअव्वा के०) जाणवा. तेमध्यें प्रथम मूलप्रकृति आठ बी जो बंधोदयसत्तायें प्रकृति स्थानकनी संख्या, त्रीजो तेनो परस्पर संवेध, ए त्रण अ धिकार चौद जीवस्थानक तथा चौद गुणगणे विवरीने कहेवाः तिहां प्रथम ठयें मूलप्रकृति आठनां नाम, व्युत्पत्ति, तथा स्वरूप टीकाकार देखाडे छे.

प्रथम ज्ञानावरणीय कर्म कहे छे. जे थकी घटादिक अर्थ जाणीयें, तेने ज्ञान क हीयें, अथवा जे जाणवुं, ते ज्ञान कहीयें तथा सामान्य विशेषात्मक उनयरूप एक वस्तु छे ते मांहे विशेषांश ग्रहणात्मक जे अवबोधक प्रकाश, ते ज्ञान कहीयें. तेना आवरण आछादक जे कर्मवर्गणाना पुजल मांहे ज्ञान आवरवानो स्वनाव छे. केनी पेरें ? तोके जेम लोचनने तेजनुं आवरण वस्त्रादिक छे ते जेम जेम सघ न होय, तेम तेम आंखनुं तेज मंद, मंदतर थाय. तेवी रीतें जेम जेम ज्ञानावरणनी सघनता होय, तेम तेम आत्मप्रकाश ढंकाय, ते प्रथम ज्ञानावरणीय कर्म जाणवुं.

बीजुं दर्शनावरणीयकर्म, ते शुं कहीयें ? तोके देखीयें जेणे करी अथवा देखवुं तेने दर्शन कहीयें. सामान्यविशेषोनयात्मक वस्तु विषइउ जे जाति गुण क्रिया दिक संयोजना हीन केवल धर्म मात्र ग्राहक जे सामान्यांशावबोध, ते दर्शन कहीयें, तेने आवरवानो स्वनाव जे कर्मपुजलनो छे, तेने दर्शनावरणीयकर्म क हीयें. जेम पोलीउ दूर थाय तो राजानुं दर्शनमात्र थाय तथा जे राजानुं दर्श न अनिलाषतो पुरुष पण ज्यां सुधी पोलीआने अनिप्रेत न होय तो तेने बलें रा जाने मलवानी इछा छतां पण राजाने मलवा न दीये, तेम पोलीआ समान जे दर्शनावरणीय अने ज्ञानावरणीय कर्म तेणे करी खरडया एवा जे घटादि पदार्थ तेनुं दर्शन जीव रूप राजाने न होय. अहींआं ग्रंथनी साख लखीयें छैयें. " दंसणसी

ले जीवे, दंसणघाय करेइ जे कम्मं ॥ तं पडिहारसमाणं, दंसणावरणं नवे बीयं ॥ १ ॥ जह रन्नो पडिहारो, अणनिप्पेअस्स सोउ लोगस्स ॥ रन्नोतह दरिसावं, न देइ दठुंपि कामस्स ॥२॥ जह रायाणा जीवो, पडिहारसमं तु दंसणावरणं ॥ ते णहिव बंधगेणं, न पिन्नए सो घडाइअं ॥ ३ ॥

त्रीजुं वेदनीयकर्म ते शुं कहीयें? जेने प्रथम आल्हाद तथा विषादरूपें अनुनवीयें, जेम मधुयें खरडी तरवारनी धारनुं चाटवुं ते प्रथम चाटतां आल्हाद थाय अने पछी जीन छेदाय तेवारें विषाद थाय तेम शातावेदनीयने प्रांतें अशाता वेदनीय होय एवो जे कर्म पुजलनो स्वनाव ते त्रीजुं वेदनीयकर्म जाणवुं.

चोथुं मोहनीयकर्म ते शुं कहीयें ? जे मोहें मुंजाय तेथी हिताहित न जाणे जेमके आटलुं नूंडूं, आटलुं रूडुं, एम नजाणे इत्यादिक विवेक रहित आत्माने करे जेम मदिराइव्यें करी जीवने घेला पणुं प्राप्त थाय तेथी हिताहित विचार शून्य करे एवो जे कर्मपुजलनो स्वनाव, ते चोथुं मोहनीयकर्म जाणवुं.

पांचमुं आयुःकर्म ते शुं कहीयें? तोके जे हेडनी पेरें प्रकृति बंध थाय, देवादिकनी गति बांधी त्यां जावा वांठतो होय तो पण त्यां लगे इह नवायु नोगववुं होय, त्यां लगें न जइ शके. एवो जे कर्म पुजलनो स्वनाव ठे, तेने पांचमुं आयुःकर्म कहीयें.

ठठुं नामकर्म, ते शुं कहीयें? के जे परमात्म रूपी जीवने पण देव नरकादिक तथा एकेंडिय, बेंडिय, तेंडियादिक जातिपणे हीन विशेष करी बोलावीयें, नमावियें. जेम चितारो अनेक वानें करी हाथी, घोडा, माणस इत्यादिकना रूप आलेखे तेम नामकर्म पण निन्न निन्न प्रकारें देव, नारकादिक स्वरूपें जीवना पर्याय करावे, एवो जे कर्मपुजलनो स्वनाव ठे, तेने ठठुं नामकर्म कहीयें.

सातमुं गोत्रकर्म ते शुं कहीयें? तोके जे थकी जातिकुलादिक उच्चतायें करी गुणनुं स्थानक होय पूजा पामे अने जातिकुलादिक हीनतायें करी लोक मांहे निंदा पामे, पूजा न पामे, एवो जे कर्म पुजलनो स्वनाव ठे, ते सातमुं गोत्रकर्म जाणवुं. जेम कुंनकार नला घडा करे, तो लोकमांहे तंदूल, फूल, कुंकुमें करी पूजा पामे अने मदिरानां स्थानक नूंनला, घडा, करे तो ते लोक मध्यें निंदा पामे. तेम जीव उच्चैर्गोत्रने उदयें उत्तम जातिकुलने प्रनावें रूप बुध्यादिकें हीन थको पण मान महत्व पामे अने हीन जात्यादिक अवगुणें करी जोपण स्वरूप सुबुद्धिमान् होय तो पण लोकमांहे हेलनीय होय.

आठमुं अंतराय कर्म, ते शुं कहीयें ? के जेणे करी जीवें दान, लान, नोग,

उपजोग, वीर्यादिकनी लब्धि हणीयें निवारीयें, जेम राजा, धन, धान्यनो धणी उतो पण जंमारीना दीधा विना वस्तुनां दान, लाज, जोग करी न शके, तेम जीव रूप राजा पण जंमारी रूप अंतरायकर्मना विवर लह्या विना दानादिक लब्धि न पामे, ते जणी जे, कर्मपुजलनी दानादिक लब्धि ने हणवानो स्वजाव बे, तेने आठमुं अंतराय कर्म कहीयें. एटले आठ कर्मना मूलनाम तथा स्वरूप अने लक्षण कह्यां.

हवे बंध, उदय अने सत्तायें प्रकृतिनां स्थानक कहे बे. तिहां मूल आठ प्रकृतिना बंधनी अपेक्षायें आठ, सात, ब अने एक, एवं चार प्रकृतिस्थानक होय. अने उदयापेक्षायें आठ, सात अने चार, ए त्रण प्रकृति स्थानक होय अने सत्तानी अपेक्षायें पण आठ, सात अने चार, ए त्रणज प्रकृतिस्थानक होय.

तिहां जेवारें जीव, सर्व कर्म बांधे, तेवारें आठ प्रकृतिनुं बंधस्थानक होय, ते जघन्य तथा उत्कृष्ट अंतर मुहूर्त्त रहे, केम के आयु बांधतां थकां जीवने ए बंधस्थानक होय अने आयुनो बंधकाल तो निरंतर पणे जघन्य तथा उत्कृष्टो अंतर मुहूर्त्तज होय, तेथी ए बंधस्थानकनो काल पण अंतर मुहूर्त्तनो जाणवो.

हवे ते मांहेथी जेवारें जीव, आयु न बांधे, तेवारें सात प्रकृतिना बंधस्थानकें होय, तेनुं कालमान पण जघन्यथकी तो अंतर मुहूर्त्त प्रमाण जाणवुं. कारण के कोइएक अंतर मुहूर्त्तायुंवालो जीव, पोताना आयुष्यनो त्रीजो जाग थाकतो रहे, तेवारें परजवायुनो बंध करे, माटें तिहां आठ प्रकृतिनो बंध करी वली सात प्रकृतिना बंध स्थानकें आव्यो, तिहां वली कांइएक न्यून अंतर मुहूर्त्तना त्रीजा जाग पर्यंत सात प्रकृतिनो बंध करतो, सात प्रकृतिना बंधस्थानकें रही, वली मरण पामी अंतर मुहूर्त्तायु पणे अवतस्यो, तिहां पण ते आयुना बे जाग पर्यंत सात प्रकृतिनो बंध करे, पढी त्रीजा जागने धुरें आयु बांधे, तेवारें आठ प्रकृतिना बंधस्थानकें आवे. एम अंतर मुहूर्त्तनो जघन्य काल कह्यो अने उत्कृष्टो तो तेत्रीश सागरोपम बम्मासे ऊणा ते वली अंतरमुहूर्त्तोंन पूर्वकोटी वर्षना त्रीजा जागें अधिक एटलो काल होय, ते आवी रीतें— कोइएक जीव, पूर्वकोटी आयुवालो पोताना आयुष्यनो त्रीजो जाग थाकते अंतर मुहूर्त्त पर्यंत तेत्रीश सागरोपम देवायुनो बंध करे. तिहां आठ प्रकृतिना बंधस्थानें रही, वलतो पूर्वकोडीनो त्रीजो जाग, अंतर मुहूर्त्तें ऊणो रहे, त्यां लगे सात प्रकृतिना बंधस्थानकें रही, तिहांथी चवी, देवता थाय. तिहां पण तेत्रीश सागरोपम बम्मासें ऊणा एटला काल पर्यंत तो सात प्रकृतिनो बंध करे. शेष बम्मास आयु विशेष रहे, तेवारें वली परजवायु बांधे.

तिहां आठ प्रकृतिना बंधस्थानकें आवे, ते नणी उत्कृष्टथी एटलो काल संनवे बे.

अने जेवारें मोहनीय अने आयुं विना बाकी ब प्रकृतिनो बंध सूक्ष्मसंपराय नामा दशमे गुणगाणे करे, तेवारें ते बंध जघन्यतो एक समय लगें होय. ते केम के कोइएक जीव, उपशमश्रेणी करी दशमुं गुणगाणुं एक समय लगें स्पर्शी, तिहां नवक्षयें दशमे गुणगाणेज मरण पामीने अनुत्तर देव थाय, तिहां वली अविरति सम्यक्दृष्टिपणे सात प्रकृतिनो बंधक होय, ते अपेक्षायें जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट तो अंतरमुहूर्त्त काल प्रमाण होय, ते केमके दशमा गुणगाणानुं उत्कृष्ट एटलुंज कालमान बे. तिहां ब प्रकृतिनोज बंध होय, ते अपेक्षायें लेवुं.

तथा एक वेदनीयकर्मनो बंध, अगीआरमे, बारमे अने तेरमे गुणगाणे होय, अहींआं पण जघन्य तो पूर्वली परें एक समय लगें होय. अहीं अगीआरमुं गुणगाणुं एक समयलगें स्पर्शी, नवक्षयें मरण पामे. तेनी अपेक्षायें एक समय लेवुं. अने उत्कृष्टुं तो देशें ऊणी पूर्वकोटी वर्ष प्रमाण, एक वेदनीयनो बंध होय, केमके कोइ एक जीव पूर्वकोटी आयुष्यनो धणी सात महीना माताना उदर मांहे रहीने शीघ्र जन्मे; जन्मथकी आठ वर्षने अंतें चारित्र लेइ, क्षपकश्रेणीयें चढी, केवलज्ञान पामे. तिहां एकज वेदनीय कर्मनी प्रकृतिना बंधस्थानकें देशें ऊणी पूर्वकोटी वर्ष पर्यंत रहे ते अपेक्षायें लेवुं.

हवे कयुं कयुं कर्म बांधतां कयां कयां बंधस्थानक होय ? ते कहे बे. अहींआं नाष्यनी गाथा लखीयें बैयें " आठमि ठ माहे ठ, सत्त एक सग थवा तइए ॥ ब बतयंमि बधंति, सेसएसु ब सत्त ठ ॥१॥" आयुःकर्म बांधतां एक आठ कर्मनुं बंधस्थानक होय अने मोहनीय कर्म बांधतां एक आठनुं, बीजुं सातनुं, ए बे बंधस्थानक होय. त्रीजुं वेदनीय कर्म बांधतां आठ, सात, ब अने एक, ए चार बंधस्थानक होय. शेष ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, नाम, गोत्र अने अंतराय, ए पांच कर्मना बंधें आठ, सात अने ब, ए त्रण बंधस्थानक होय.

हवे उदयस्थानक त्रण कहे बे. आठ, सात अने चार, ए त्रण उदय स्थानक बे. तिहां सर्व आठे कर्मने उदयें पहेलुं आठनुं उदय स्थानक होय. ए अनव्यनी अपेक्षायें अनादिअनंत नांगें लेवुं अने नव्यनी अपेक्षायें अनादि सांत नांगे लेवुं. तथा कोइएक जीव, उपशमश्रेणीयें चढी तिहां मोहनीय विना सात कर्मनुं उदयस्थानक स्पर्शी, वली तिहांथी पडतो आठनुं उदयस्थानक स्पर्शे. तेनी अपेक्षायें सादि सांत नांगे लेवुं. ए जघन्य तो अंतर मुहूर्त्त काल प्रमाण जाणवो.

केम के कोइ एक जीव, वली मुहूर्त्तांतरें श्रेणी पडिवजे. तेनी अपेक्षायें लेवुं. तथा उत्कृष्टो तो देशें ऊणो अर्द्ध पुजलपरावर्त्त काल जाणवो, जे नणी उत्कृष्टथी फरी उपशमश्रेणी पडिवजवानुं एटलुंज अंतर ठे केम के सम्यक्त्व पाम्या पठी संसारमांहे रहेवानो उत्कृष्टो काल एटलोज होय, तेटला काल पर्यंत आठनो उदय होय तथा मोह विना सात कर्मनुं बीजुं उदय स्थानक, ते अगीआरमे गुणठाणेंज होय. ते जघन्यथी तो एक समय लगें होय, जे नणी कोइएक जीव, एक समय मात्र अगीआरमुं गुणठाणुं स्पर्शीने, मरण पामे. तेनी अपेक्षायें जाणवुं. अने उत्कृष्ट तो अंतरमुहूर्त्त पर्यंत रहे. केमके अगीआरमा अने बारमा गुणठाणानो काल एटलोज ठे अने तिहांज ए सात प्रकृतिनुं उदय स्थानक पण होय. तथा चार घातीयां कर्म क्षय कस्या पठी नाम, गोत्र, आयु अने वेदनीय ए चार नवोपग्राही कर्मनो उदय, तेरमे, चौदमे, गुणठाणे होय, तिहां जघन्य तो अंतरमुहूर्त्त पर्यंत रहे अने उत्कृष्टथी तो देशें ऊणी पूर्वकोडीवर्ष पूर्वली परें नाववां.

हवे कइ प्रकृतिने उदयें केटलां उदय स्थानक लाने? ते कहे ठे. मोहनीय कर्मने उदयें एकज आठ प्रकृतिनुं उदयस्थानक लाने तथा ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय अने अंतराय, ए त्रण कर्मने उदयें तो आठनुं अने सातनुं, ए बे उदयस्थानक लाने, अने बाकीना चार कर्मने उदयें तो दशमा गुणठाणा लगें आठनुं उदय स्थानक होय, तथा अगीआरमे अने बारमे गुणठाणे सातनुं उदयस्थानक होय, अने तेरमे तथा चौदमे गुणठाणे चार कर्मनुं उदयस्थानक होय. एवं त्रण उदयस्थानक चार कर्मने उदयें होय.

हवे आठ, सात ने चार, ए त्रण सत्ता स्थानक कहे ठे. तिहां आठ कर्मनी सत्तानुं स्थानक, अगीआरमा गुणठाणा लगें होय, ए अनव्यनी अपेक्षायें अनादि, अनंत अने नव्यनी अपेक्षायें अनादि सांत नागें होय. तथा मोहनीय क्षय कस्या पठी सात कर्मनुं सत्तास्थानक, बारमे गुणठाणे अंतर मुहूर्त्त लगें होय. तथा चार घातीयां कर्मने क्षयें चार कर्मनुं सत्तास्थानक, तेरमे तथा चौदमे गुणठाणे होय. ते जघन्यथी तो अंतर मुहूर्त्त पर्यंत अंतगड केवलीनी अपेक्षायें जाणवो अने उत्कृष्टथी तो देशें ऊणी पूर्व कोटी वर्ष प्रमाण जाणवो.

हवे कइ कइ प्रकृतिनी सत्तायें कयां कयां सत्तास्थानक होय? ते कहे ठे. एक मोहनीयनी सत्तायें आठ कर्मनुं सत्तास्थानक होय, मोहनीयविना बीजां घातीआं

त्रण कर्मनी सत्तायें आठनुं तथा सातनुं, ए बे सत्ता स्थानक होय अने चार अ घातीआंनी सत्तायें. आठ, सात अने चार, ए त्रणे सत्तास्थानक होय ॥इति॥ १॥

हवे मूल आठ कर्मनो बंध, उदय, सत्ता स्थानकनो परस्पर संवेध कहे छे.

अठ विह सत्त छब्बं, धएसु अठे व उदय संतंसा ॥
एग विहे ति विगप्पा, एग विगप्पा अबंधंमि ॥ ३ ॥

अर्थ-(अठविहसत्तछब्बंधएसु के०) अष्टविध बंधक, सप्तविध बंधक अने षड्विध बंधक, ए त्रण बधकने विषे प्रत्येकें (अठेवउदयसंतंसा के०) आठे कर्म प्रकृति उदय अने सत्तायें पामीयें. अहीं त्रण जंग थया. ते देखाडे छे. प्रथम आठनो बंध, आठनो उदय, अने आठनी सत्ता, ए जांगो आयुर्बंध कालें अंतरमुहूर्त्त प्रमाण मिथ्यात्वथी मांमीने अप्रमत्तगुणठाणा लगें जाणवो. तथा सातनो बंध, आठनो उदय अने आठनी सत्ता, ए बीजो जांगो, आयुर्बंधने अजावें जघन्य अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्टो छमासें ऊणो तेत्रीश सागरोपम पूर्वकोडी त्रिजागें अधिक काल प्रमाण मिथ्यात्वथी मांमीने नवमा गुणठाणा लगें जाणवो. तथा षड्विध बंध आठनो उदय अने आठनी सत्ता, ए त्रीजो जांगो, सूक्ष्म संपरायगुणठाणे जघन्य एक समय अने उत्कृष्टो अंतर मुहूर्त्त प्रमाण जाणवो. तिहां मोहनीयनो बंध नथी, ते माटें कह्यो. तथा(एगविहेतिविगप्पा के०)एकविध बंधकें वेदनीय बांधे, तिहां त्रण जांगा होय, ते कहे छे. एकनो बंध, सातनो उदय अने आठनी सत्ता, ए जांगो उपशांतमोह गुणठाणे जघन्य एक समय अने उत्कृष्टो अंतरमुहूर्त्त लगें पामीयें, केम के अहीं मोहनो उदय नथी, परंतु सत्ता छे. तेमाटें. तथा एकनो बंध, सातनो उदय अने सातनी सत्ता, ए बीजो जांगो क्षीणमोह गुणठाणे अंतर मुहूर्त्त लगें पामीयें, केम के तिहां मोहनीयनी सत्ता पण नथी ते माटें. तथा एकनो बंध, चारनो उदय अने चारनी सत्ता, ए त्रीजो जांगो सयोगी केवलीने विषे पामीयें. ते घाती कर्मना अजावथी जघन्य अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्टो देशूणी पूर्वकोडी वर्ष लगें होय.

तथा (एगविगप्पाअबंधंमि के०) बंधकपणाने अजावें चारनो उदय अने चारनी सत्ता, ए एक जांगो अयोगी गुणठाणे पामीयें, अहींआं योगने अजावें बंध न होय माटें अबंधक कह्या. एवं सर्व मलीने मूल प्रकृतिना सात जंग थया ॥३॥

हवे ए सात नंग, चौद जीव स्थानकें कही देखाडे छे.

सत्तठ बंध अठुदय, संत तेरस सुजीव ठाणेसु ॥
एगंमि पंच नंगा, दो नंगा हुंति केवलिणो ॥ ४ ॥

अर्थ-(तेरससुजीवगणेसु के०) एक संज्ञी पंचेंद्रिय पर्याप्ता जीव वर्जीने शेष तेर जीव स्थानकने विषे बे नांगा होय, ते देखाडे छे. (सत्तठबंधअठुदयसंत के०) सातनो बंध आठनो उदय अने आठनी सत्ता, ए प्रथम नांगो आयुबंध काल विना सदा होय, तथा अष्टविध बंध, आठनो उदय अने आठनी सत्ता, ए बीजो नांगो आयुर्बंध कालें अंतर मुहूर्त्त लगें होय. अने (एगंमि के०) एक संज्ञी पंचेंद्रिय पर्याप्ताना जीवस्थानकें (पंचनंगा के०) धुरला पांच नांगा होय, तिहां बे नांगा तो पहेलानी पेरें जाणवा. एटले एक आयुर्बंधकालें आठनो बंध, आठनो उदय अने आठनी सत्ता बीजो आयुर्बंधकाल विना सातनो बंध, आठनो उदय अने आठनी सत्ता, त्रीजो दशमे गुणठाणे मोह अने आयु विना छनो बंध, आठनो उदय अने आठनी सत्ता, चोथो अगीआरमे गुणठाणे एकवेदनीयनो बंध अने मोह विना सातनो उदय अने आठनी सत्ता होय. पांचमो बारमे गुणठाणे एकनो बंध सातनो उदय अने सातनी सत्ता, ए पांच नांगा संज्ञी पंचेंद्रिय पर्याप्ताने गुणठाणाने नेदें होय. तथा (दोनंगाहुंतिकेवलिणो के०) बे नांगा केवलीने होय, ते केम के तेरमे गुणठाणे एक वेदनीयनो बंध, चारनो उदय अने चारनी सत्ता, सयोगी केवलीने होय. ए प्रथम नंग तथा चौदमे गुणठाणे अयोगी केवलीने बंधशून्य होय अने चारनो उदय तथा चारनी सत्ता होय, ए बीजो नंग जाणवो. ए बे नंग केवलीने होय. अहींआं ए नाव जे मनना अनावथी केवलीने सन्नीआ पंचेंद्रियथी निन्न कह्या, एटले केवलीने द्रव्यमन होय पण नावमन न होय, माटें संज्ञी पण नहीं, असंज्ञी पण नहीं परंतु संज्ञासंज्ञी कहीयें, तेथी एना नांगा पण जूदा कह्या. एवं सात नांगा चौद जीव स्थानकें कह्या ॥ ४ ॥

हवे एहिज चौद नांगा गुणठाणे विवरीने कहे छे.

अठसु एग विगप्पो, छस्सु विगुण सन्निएसु छ विगप्पा ॥
पत्तेयं पत्तेयं, बंधोदय संत कम्माणं ॥ ५ ॥

अर्थ- एक मिश्रगुणठाणुं अने आठमाथी मांमीने चौदमा सुधीना सात गुणठाणां, एवं (अठसु के०) आठ गुणठाणाने विषे (एगविगप्पो के०) एकेक

नांगो होय. ते केम ? तोके त्रीजुं तथा आठमुं अने नवमुं, ए त्रण गुणठाणे आयु न बांधे, माटें सातनो बंध आठनो उदय अने आठनी सत्ता, ए एकेक नांगो होय, जे नणी ए त्रण गुणठाणे आयुर्बंध योग्य अध्यवसाय स्थानक नथी तेथी आठनो बंध न होय तथा सूक्ष्मसंपराय गुणठाणे आयु अने मोह विना ठनो बंध, आठनो उदय अने आठनी सत्ता, ए एकज नांगो होय. अगीआरमे गुणठाणे एकनो बंध, मोह विना सातनो उदय अने आठनी सत्ता ए एकजांगो होय तथा बारमे गुणठाणे एकनो बंध सातनो उदय, अने सातनी सत्ता, ए एकज नांगो होय. तेरमे गुणठाणे एकनो बंध, चारनो उदय, अने चारनी सत्ता, ए एकज नांगो होय. चौदमे गुणठाणे बंध शून्य माटें चारनो उदय अने चारनी सत्ता, ए एकज नांगो होय. एवं आठ गुणठाणे एकेक नांगो होय.

तथा (ठस्सुविगुणसन्निएसु के०) मिथ्यात्व, सास्वादन, अविरति, देशविरति, प्रमत्त अने अप्रमत्त, ए ठ गुणठाणाने विषे एवी संज्ञा (डुविगप्पा के०) तेने विषे बे बे विकल्प पामीयें केम के ए ठ गुणठाणे आयुर्बंध योग्य अध्यवसाय स्थानक ठे तेथी आयुर्बंध कालें आठनो बंध, आठनो उदय, अने आठनी सत्ता ए नांगो होय अने आयुर्बंध विना सातनो बंध, आठनो उदय अने आठनी सत्ता, ए बीजो नांगो होय. एम ए ठ गुणठाणे बे बे नांगा होय. एम (पत्तेयंपत्तेयं के०) प्रत्येकें प्रत्येकें, (बंधोदयसंतकम्माणं के०) बंध, उदय अने सत्ताना नांगा अनुक्रमें गुणठाणे होय, एटले मूल प्रकृति आश्रयी बंधोदय सत्ता संवेध स्वामी कह्या ॥५॥

हवे उत्तर प्रकृति आश्रयी बंध, उदय अने सत्ताप्रकृति स्थानक, संवेध कहीयें ठैयें. तिहां प्रथम आठ कर्ममांहे जे कर्मनी जेटली उत्तर प्रकृति ठे, ते कहे ठे.

॥ अथोत्तर प्रकृतिराश्रित्य संवेधस्वामित्वं चाह ॥

पंच नव डुन्नि अघ, वीसा चउरो तहेव बायाला ॥
डुन्निय पंच य नणिया, पयडीउ आणुपुवीए ॥ ६ ॥

अर्थ— ज्ञानावरणीयनी उत्तर प्रकृति, (पंच के०) पांच, दर्शनावरणीयनी उत्तर प्रकृति, (नव के०) नव, वेदनीयनी उत्तर प्रकृति, (डुन्नि के०) बे, मोहनीयनी उत्तर प्रकृति, (अघावीसा के०) अघावीश, आयुनी उत्तर प्रकृति, (चउरो के०) चार, (तहेव के०) तथा वली तेमज नामनी उत्तर प्रकृति, (बायाला के०) बेंतालीश, गोत्रनी उत्तर प्रकृति, (डुन्निय के०) बे अने अंतरायनी उत्तर प्रकृ

तिना (पंचय के०) पांच नेद, (नणिया के०) कह्या बे. (पयडीउंआणुपुव्वीए के०) ए रीतें आठ मूल प्रकृतिना उत्तर नेद, अनुक्रमें जाणवा. तिहां नामकर्मनी बेंता लीश प्रकृतिमध्यें चौद पिंम प्रकृतिना नेद करतां पांशठ थाय. तेमध्यें त्रसदशक, स्थावरदशक तथा आठ प्रत्येक प्रकृति मेलवतां त्र्याणुं थाय. ते आश्रयी विशेष विवरो पहेला कर्मग्रंथना बालावबोधथी जाणवो. ए उत्तर प्रकृति कही ॥ ६ ॥

हवे उत्तर प्रकृतिनो बंध उदय अने सत्तानोसंवेध कहे बे.

बंधोदय संतंसा, नाणावरणं तराइए पंच ॥
बंधो चरमे वि उदय, संतंसा हुंति पंचेव ॥ ७ ॥

अर्थ- (बंधोदयसंतंसा के०) बंध, उदय अने सत्ताना अंश ते (नाणावरणंत राइएपंच के०) ज्ञानावरणीय अने अंतराय, ए बे कर्मना पांच पांच प्रकृतिरूप स रखा बे, ते नणी बंधादिक स्थानकनी प्ररूपणा पण बेनी साथेंज करे बे. ज्ञानाव रणीयें तथा अंतरायें प्रत्येकें बंध, उदयअने सत्तारूप अंश सम नागें पांच प्रकृति होय, एटले ज्ञानावरणीयनुं पांच प्रकृतिनुं एकज बंध स्थानक होय, ए पांचे ध्रु वबंधिनी प्रकृति बे, मार्टे पांचेनो ध्रुवबंध जाणवो. तथा उदय पण पांचनो ध्रुव जाणवो अने सत्तास्थानक पण पांचनुं ध्रुव जाणवुं. एमज अंतरायनी पांच प्रकृ ति पण ध्रुवबंधिनी ध्रुवोदयिनी तथा ध्रुवसत्तायें कही बे. हवे ए बे कर्मे संवेध कहे बे. ज्ञानावरणीय बंध कालें पांचनो बंध पांचनो उदय अने पांचनी सत्ता ए एक नांगो, एमज अंतरायनो पण ए एकज नांगो ते दशमा गुणठाणा लगें हो य. तथा (बंधोचरमेवि कें०) आगल ज्ञानावरणीय अने अंतरायना बंधने अ नावें पण (उदयसंतंसाहुंतिपंचेव के०) पांचनो उदय अने पांचनी सत्ता रूप बीजो नांगो अगीआरमे अने बारमे गुणठाणे जाणवो ॥ ७ ॥

हवे दर्शनावरणीय कर्मने विषे उत्तर प्रकृति आश्रयी बंधादिक स्थानकनी प्ररूपवाने कहे बे. अथोत्तर प्रकृतिराश्रित्य बंधस्थान प्ररूपणार्थमाह ॥

बंधस्सय संतस्सय, पगइठाणाइ तिन्नि तुल्लाइं ॥
उदय ठाणाइ डुवे, चउ पणग दंसणावरणे ॥ ८ ॥

अर्थ—दर्शनावरणीय कर्मने विषे (बंधस्सयसंतस्सयपगइठाणाइ के०) बंध प्र कृतिनां स्थानक तथा सत्ताप्रकृतिनां स्थानक पण (तिन्नि के०) त्रण त्रण (तुल्ला

ई के०) तुल्य छे,एटले बंधनां स्थानक पण त्रण छे अने सत्तानां स्थानक पण त्रण छे माटें तुल्य छे ते कहे छे. एक नव प्रकृतिनुं स्थानक बीजुं थीणद्धीत्रिक हीन करतां छ प्रकृतिनुं स्थानक,त्रीजुं निद्रा अने प्रचला हीन करतां चार प्रकृतिनुं स्थानक, ए रीतें त्रण स्थानक जाणवां. तिहां नव प्रकृतिनुं बंध स्थानक पहेले तथा बीजे गुणठाणे लाजे,ते अन्नव्यने पहेले गुणठाणे अनादि अनंत होय अने नव्यने अनादि सांत होय तथा सम्यक्त्वीजीव मिथ्यात्वें जाय तेनी अपेक्षायें सादि सांत पण होय ते जघन्यतो अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्टो तो देशोन अर्द्ध पुज्जलपरावर्त्त काल पर्यंत जाणवो. तथा बीजुं छ प्रकृतिनुं बंध स्थानक, मिश्रगुणठाणाथी अ पूर्वकरणना प्रथम जाग लगें होय ते जघन्य तो अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्टोतो ए कशो बत्रीश सागरोपम जाजेरा लगें रहे, जे जणी सम्यक्त्वें छाशठ सागरोपम र ही पछी अंतर मुहूर्त्त मिश्रगुणठाणे आवी वली छाशठ सागरोपम सम्यक्त्वें रही, ते पछी कोइएक जीव मिथ्यात्व पडीवजे, तेवारें नवने बंध स्थानकें जाय अथवा क्षपकश्रेणी पडिवजे, तो ते चारने बंध स्थानकें जाय तथा चार प्रकृतिनुं बंध स्थानक निद्रा प्रचलानो बंधविच्छेद करी आठमा गुणठाणाना बीजा जागथी मां मी दशमा गुणठाणा लगें होय ते जघन्यथी तो एकसमय होय जे जणी कोइ एक जीव आठमा गुणठाणाने बीजे जागें चार प्रकृतिनो बंध करी मरण पामी देवता थाय. तिहां छ प्रकृतिनो बंध करे. ए अपेक्षायें लेवुं तथा उत्कृष्टो तो अंत र मुहूर्त्त काल जाणवो. एम त्रण बंधस्थानक कह्यां.

हवे त्रण सत्तास्थानक कहे छे. तिहां नवनुं सत्तास्थानक, अन्नव्यनी अपेक्षायें अनादि अनंत अने नव्यनी अपेक्षायें अनादि सांत, ए स्थानक उपशमश्रेणीनी अपेक्षायें पहेला गुणठाणाथी मांमी अगीआरमा गुणठाणा लगें होय अने क्षपक श्रेणीनी अपेक्षायें तोप्रथम गुणठाणाथी मांमी नवमा गुणठाणाना नव जागमांहेला प्रथम जाग लगें होय. तिहां वली थीणद्धीत्रिकनो क्षय करे तेथी तेनी सत्ता टल्या पछी छ प्रकृतिनी सत्ता नवमा गुणठाणाना बीजा जागथी बारमा गुणठाणानाद्वि चरम समय लगें होय. एनो काल अंतरमुहूर्त्तनो जाणवो तथा बारमा गुणठा णाने छेहले समयें निद्रा प्रचलाने क्षयें चारना सत्ता स्थानक एक समय लगें होय.

तथा (उदयछाणाइ के०) उदय स्थानक (चउपणग के०) चारनुं तथा पां चनुं ए (डुवे के०) बे, (दंसणावरणे के०) दर्शनावरणीय कर्मने विषे होय ति हां चक्षु, अचक्षु, अवधि अने केवलदर्शनावरणीय, ए चार प्रकृति ध्रुवोदयी छे.

ते नणी ए चारनो उदय, सदा होय, माटें एक चारनुं उदयस्थानक मिथ्यात्वथी मांमीने क्षीणमोहना छेहडा लगें होय अने ए चार साथें जेवारें पांचमी एक निद्रानो उदय होय, तेवारें पांचनुं उदयस्थानक बीजुं जाणवुं. जे नणी पांच निद्रा अध्रुवोदयी छे ते माटें उदय विरोधी छे, तेथी ए पांच निद्रामांथी एक कालें एक निद्राने उदयें बीजी निद्रानो उदय न होय, तेमाटें जेवारें निद्रानो उदय न होय तेवारें चक्षुदर्शनावरणादिक चारनोज उदय होय अने जेवारें निद्रानो उदय होय तेवारें पांचेनो उदय सायें होय, माटें पांचनुं अने चारनुं, ए बे उदयस्थानक कह्यां. एम बीजा दर्शनावरणीयकर्मना बंधोदयसत्तास्थानक कह्यां ॥ इति ॥ ८ ॥

हवे ए दर्शनावरणीयना बंधस्थानकादिकनो संवेध, गुणठाणे कहे छे.

बीयावरणे नव बं, धएसु चउ पंच उदय नव संता ॥
छच्चउ बंधे चेवं , चउ बंधुदए छ लंसाय ॥ ए ॥

अर्थ—(बीयावरणे के०) बीजा दर्शनावरणीयने विषे (नवबंधएसु के०) नवनुं बंधस्थानक, मिथ्यात्व अने सास्वादन, ए बे गुणठाणाने विषे होय. तिहां (चउपंचउदय के०) चारनुं अने पांचनुं, ए बे उदयनां स्थानक होय, तेमांहे चक्षुदर्शनावरणादिक चारने उदयें चारनुं उदय स्थानक होय अने पांच निद्रामांहेली एककालें एक निद्राने उदयें पांच प्रकृतिनुं उदय स्थानक होय अने ए बेहु नांगे (नवसंता के०) सत्तानुं स्थानक तो नव प्रकृतिनुंज होय, एटले नवनो बंध, चारनो उदय अने नवनी सत्ता, ए एक नांगो तथा नवनो बंध, पांचनो उदय अने नवनी सत्ता, ए बीजो नांगो. ए बे नांगा पहेले तथा बीजे गुणठाणे लाने. ए बीजा नांगामां एककालें पांच निद्रामांहेली एकेकी निद्रानो उदय होय ते एकेकी निद्रानुं नाम लइने कहीयें, तेवारें एक नांगामां पांच नांगा थाय.

एमज (छच्चउबंधेचेवं के०) निश्चेंथी छने बंधें तथा चारने बंधें पण बे बे नांगा होय, ते कहे छे. तिहां छनो बंध, चारनो उदय अने नवनी सत्ता ए प्रथमनांगो, तथा छनो बंध, पांचनो उदय अने नवनी सत्ता, ए बीजो नांगो. एवं बे नांगा त्रीजो, चोथो, पांचमो, छठो, सातमो अने आठमा गुणठाणाना प्रथम नाग लगें होय, जे नणी त्रीजा गुणठाणा थकी थीणद्धित्रिक टालीने बाकी छ प्रकृतिनो बंध होय तथा उदय तो चारनो ध्रुव होय अथवा जेवारें निद्रानो उदय होय, तेवारें पांच प्रकृतिनो उदय पूर्वेली पेरें होय अने सत्ता तो नवनीज होय. क्षपक साधुने आठमाना

प्रथम नागें छनो बंध, चारनो उदय अने छनी सत्ता, ए एकज नांगो पामीयें,जे नणी ते ने अतिविशुद्ध पणे करी कोइपण निडानो उदय न होय. यडुक्तं सत्कर्मग्रंथे " निद्दाडुगस्स उदउ, खीणखवगे परिवक्षए " ए वचनथी पांचनो उदय न होय त था कोइएक आचार्य, बारमा गुणठाणा लगें निडानो उदय मानीने क्षपकने पण निडानो उदय कहे छे. पण ते कम्मपयडीनी साथें विरुद्ध छे तेथी अंहीं विवक्ष्यो नथी.

एमज चारने बंधें पण बे नांगा जाणवा, एटले पांच निडा विना चारनो बंध, चारनो उदय अने नवनी सत्ता तथा जेवारें निडा अथवा प्रचला, ए बे मांहेली एकनो उदय होय तेवारें चारनो बंध,पांचनो उदय अने नवनी सत्ता, ए बे नांगा आठमाना बीजा नागथी मांमीने अगीआरमा गुणठाणां लगें उपशमश्रेणीयें होय अने क्षपकने तो निडाना अनाव नणी पूर्वली पेरें एक नांगोज जाणवो.

तथा (चउबंधुदएछलंसाय के०) चारने बंधें नवमा गुणठाणाना बीजा नाग थी थीणद्धित्रिक नवमाना प्रथम नागें क्षपवे तेवारें छनी सत्ता होय, अहींआं अंश शब्दें सत्ता कहीयें. " अंसइति संतकम्मं नन्नइ " एम चूर्णीवचनथी जाण वुं. तेवारें चारनो बंध, चारनो उदय अने छनी सत्ता होय, ए नांगो दशमा गु णठाणाना छेल्ला समय लगें क्षपकने होय. एम चारने बंधें त्रण नांगा थया ॥९॥

उवरय बंधे चउपण, नवंस चउरुदय छ चउसंता ॥
वेयणियाउ अ गोए, विनज्ज मोहं परं वुछं ॥ १० ॥

अर्थ–हवे (उवरयबंधे के०) बंध विरमे थके अगीआरमे गुणठाणे (चउप णनवंस के०) चारनो उदय अने नवनी सत्ता तथा पांचनो उदय अने नवनी सत्ता,ए बे नांगा पामीयें जे नणी उपशांतमोहने निडानो उदय संनवे छे; तेथी पांचनो उदय पण लाने. अहींआं पण नवंस शब्दें नवनी सत्ता जाणवी. तथा बारमे गुणठाणे छेहला समयना आगला समय लगें (चउरुदयछचउसंता के०) चारनो उदय अने छनी सत्ता, ए नांगो होय अने छेहले समयें तो चारनो उद य तथा चारनी सत्ता, ए नांगो होय. केमके द्विचरमसमयें निडा अने प्रचलानो क्षय करे तेथी चारनी सत्ता होय. एम अगीआर नांगा दर्शनावरणीय कर्मना होय अने क्षपक क्षीणमोहने विषे जे निडानो उदय माने छे, तेने मतें चारनो बं ध, पांचनो उदय अने छनी सत्ता ए नांगो नवमे अने दशमे गुणठाणे क्षपकने होय अने बंधने अनावें पांचनो उदय, छनी सत्ता, ए नांगो क्षीणमोहें द्विचरम

समय लगें होय. एम ए बे नांगा वधे तेवारें तेर नांगा होय. ते वली जिहां जेटली निड़ा होय तिहां तेटली निड़ानुं पृथक्नाम लइ कहीयें तेवारें पच्चीश नांगा थाय.

हवे वेदनीय, आयु अने गोत्र, ए त्रण कर्मने विषे संवेध देखाडे छे. (वेयणि याउअगोए के०) वेदनीय, आयु अने गोत्र ए त्रण कर्मने विषे यथागम एटले जेम शास्त्र नाषादिकें कह्युं छे, तेम बंधादिक स्थानक संवेध (विजज्ञ के०) वहें चीयें तिहां वेदनीयकर्में शाता अथवा अशाता ए बे मांहेली एकनोज बंध थाय जे नणी ए बे प्रकृति बंधें तथा उदयें विरोधिनी छे ते मार्टे एक बंधातां बी जीनो बंध न होय मार्टे बंधें एक स्थानक होय. तेम उदय स्थानक पण शाता अथवा अशाता, ए बे मांहेथी एकनुंज होय अने सत्तास्थानक बेनुं तथा एकनुं एवं बेहु होय. हवे एना नांगा कहीयें छैयें. अशातानो बंध, अशातानो उदय अने शाता, अशाता बेहुनी सत्ता, ए एक नांगो, तथा अशातानो बंध, शातानो उदय अने शाता अशाता ए बेनी सत्ता, ए बीजो नांगो. ए बे नांगा मिथ्यात्व गुणठाणा थी मांमीने प्रमत्तगुणठाणा लगें होय तेवार पछी अशातानो बंध छेदाय मार्टे एक शातानो बंध. अशातानो उदय अने शाता, अशाता ए बेनी सत्ता ए प्रथम नांगो तथा बीजो शातानो बंध, शातानो उदय अने शाता, अशाता ए बेनी सत्ता ए बे नांगा, मिथ्यात्वथी मांमीने सयोगी केवली लगें होय, तेवार पछी बंधने अनावें शातानो उदय अने बेहुनी सत्ता तथा अशातानो उदय अने बेहुनी सत्ता, ए बे नांगा, अयोगीने द्विचरम समय लगें होय तेवार पछी बहोंत्तेर प्रकृतिमध्यें जेणे अशातानो क्षय कस्यो तेने शातानो उदय अने शातानी सत्ता ए नांगो अयोगी गुणठाणाने छेहले समयें होय अने जेणे शातानो क्षय कस्यो, तेने आशातानो उदय अने आशातानी सत्ता, ए नांगो अयोगीने छेहले समयें होय. ए बे नांगा एकेक समयना जाणवा. ए सर्व मलीने वेदनीय कर्मना आठ नांगा कह्या.

हवे आयुःकर्मना नांगा कहे छे. आयुने विषे सामान्यें एक बंधस्थानक होय. केम के चारे गतिना आयुबंधें तथा उदयें विरोधी छे तेमार्टें एक वेलायें बे आयुनो बंध तथा उदय न होय अने सत्तास्थानक एक तथा बे होय ते केवी रीतें ? तो के जिहां लगें परनवनुं आयुं बाध्युं न होय तिहां लगें एकज आयु वर्त्ते छे तेनी ज सत्ता जाणवी अने परनवायु बंधकालें तथा बांध्या पछी मरण समय पर्यंत बे आयुनी सत्ता होय, तेवारें एक तो जे गतिमां वर्त्ते छे तेनो उदय छे तेनी सत्ता होय अने बीजो परनवायु बांधे तेनी सत्ता होय ए बे सत्तास्थानक जाणवां.

प्रथम नागें छनो बंध, चारनो उदय अने छनी सत्ता, ए एकज नांगो पामीयें,जे नणी ते ने अतिविशुद्ध पणे करी कोइपण निद्रानो उदय न होय. यडुक्तं सत्कर्मग्रंथे " निद्दाडुगस्स उदर्ड, खीणखवगे परिवज्जए " ए वचनथी पांचनो उदय न होय त था कोइएक आचार्य, बारमा गुणगणा लगें निद्रानो उदय मानीने क्षपकने पण निद्रानो उदय कहे ने.पण ते कम्मपयडीनी साथें विरुद्ध ने तेथी अहीं विवक्ष्यो नथी.

एमज चारने बंधें पण बे नांगा जाणवा, एटले पांच निद्रा विना चारनो बंध, चारनो उदय अने नवनी सत्ता तथा जेवारें निद्रा अथवा प्रचला, ए बे मांहेली एकनो उदय होय तेवारें चारनो बंध,पांचनो उदय अने नवनी सत्ता, ए बे नांगा आठमाना बीजा नागथी मांमीने अगीआरमा गुणगणां लगें उपशमश्रेणीयें होय अने क्षपकने तो निद्राना अनाव नणी पूर्वली पेरें एक नांगोज जाणवो.

तथा (चउबंधुदएछलंसाय के०) चारने बंधें नवमा गुणगणाना बीजा नाग थी थीणद्धित्रिक नवमाना प्रथम नागें क्षपवे तेवारें छनी सत्ता होय, अहींआं अंश शब्दें सत्ता कहीयें. " अंसइति संतकम्मं नन्नइ " एम चूर्णीवचनथी जाण वुं. तेवारें चारनो बंध, चारनो उदय अने छनी सत्ता होय, ए नांगो दशमा गु णगणाना बेल्ला समय लगें क्षपकने होय. एम चारने बंधें त्रण नांगा थया ॥ए॥

उवरय बंधे चउपण, नवंस चउरुदय ब चजसंत्ता ॥
वेयणियाउ अ गोए, विनज्ज मोहं परं वुछं ॥ १० ॥

अर्थ–हवे (उवरयबंधे के०) बंध विरमे थके अगीआरमे गुणगणे (चउप णनवंस के०) चारनो उदय अने नवनी सत्ता तथा पांचनो उदय अने नवनी सत्ता,ए बे नांगा पामीयें जे नणी उपशांतमोहने निद्रानो उदय संनवे ने; तेथी पांचनो उदय पण लाने. अहींआं पण नवंस शब्दें नवनी सत्ता जाणवी. तथा बारमे गुणगणे बेहला समयना आगला समय लगें (चउरुदयछचउसंता के०) चारनो उदय अने छनी सत्ता, ए नांगो होय अने बेहले समयें तो चारनो उद य तथा चारनी सत्ता, ए नांगो होय. केमके द्विचरमसमयें निद्रा अने प्रचलानो क्षय करे तेथी चारनी सत्ता होय. एम अगीआर नांगा दर्शनावरणीय कर्मना होय अने क्षपक क्षीणमोहने विषे जे निद्रानो उदय माने ने, तेने मतें चारनो बं ध, पांचनो उदय अने छनी सत्ता ए नांगो नवमे अने दशमे गुणगणे क्षपकने होय अने बंधने अनावें पांचनो उदय, छनी सत्ता, ए नांगो क्षीणमोहें द्विचरम

समय लगें होय. एम ए बे भांगा वधे तेवारें तेर भांगा होय. ते वली जिहां जेटली निद्रा होय तिहां तेटली निद्रानुं पृथक्नाम लइ कहीयें तेवारें पच्चीश भांगा थाय.

हवे वेदनीय, आयु अने गोत्र, ए त्रण कर्मने विषे संवेध देखाडे छे. (वेयणि याउअगोए के०) वेदनीय, आयु अने गोत्र ए त्रण कर्मने विषे यथागम एटले जेम शास्त्र भाष्यादिकें कह्युं छे, तेम बंधादिक स्थानक संवेध (विनज्ज के०) वहें चीयें तिहां वेदनीयकर्में शाता अथवा अशाता ए बे मांहेली एकनोज बंध थाय जे भणी ए बे प्रकृति बंधें तथा उदयें विरोधिनी छे ते माटें एक बंधातां बी जीनो बंध न होय माटें बंधें एक स्थानक होय. तेम उदय स्थानक पण शाता अथवा अशाता, ए बे मांहेथी एकनुंज होय अने सत्तास्थानक बेनुं तथा एकनुं एवं बेडु होय. हवे एना भांगा कहीयें छैयें. अशातानो बंध, अशातानो उदय अने शाता, अशाता बेहुनी सत्ता, ए एक भांगो, तथा अशातानो बंध, शातानो उदय अने शाता अशाता ए बेनी सत्ता, ए बीजो भांगो. ए बे भांगा मिथ्यात्व गुणठाणा थी मांमीने प्रमत्तगुणठाणा लगें होय तेवार पछी अशातानो बंध छेदाय माटें ए क शातानो बंध. अशातानो उदय अने शाता, अशाता ए बेनी सत्ता ए प्रथम भां गो तथा बीजो शातानो बंध, शातानो उदय अने शाता, अशाता ए बेनी सत्ता ए बे भांगा, मिथ्यात्वथी मांमीने सयोगी केवली लगें होय, तेवार पछी बंधने अ भावें शातानो उदय अने बेहुनी सत्ता तथा अशातानो उदय अने बेहुनी सत्ता, ए बे भांगा, अयोगीने द्विचरम समय लगें होय तेवार पछी बहोंतेर प्रकृतिमध्यें जेणे अशातानो क्षय कस्यो तेने शातानो उदय अने शातानी सत्ता ए भांगो अ योगी गुणठाणाने छेहले समयें होय अने जेणे शातानो क्षय कस्यो, तेने आशा तानो उदय अने आशातानी सत्ता, ए भांगो अयोगीने छेहले समयें होय. ए बे भांगा एकेक समयना जाणवा. ए सर्व मलीने वेदनीय कर्मना आठ भांगा कह्या.

हवे आयुःकर्मना भांगा कहे छे. आयुने विषे सामान्यें एक बंधस्थानक होय. केम के चारे गतिना आयुबंधें तथा उदयें विरोधी छे तेमाटें एक वेलायें बे आयुनो बंध तथा उदय न होय अने सत्तास्थानक एक तथा बे होय ते केवी रीतें ? तो के जिहां लगें परभवनुं आयु बाध्युं न होय तिहां लगें एकज आयु वर्त्ते छे तेनी ज सत्ता जाणवी अने परभवायु बंधकालें तथा बांध्या पछी मरण समय पर्यंत बे आयुनी सत्ता होय, तेवारें एक तो जे गतिमां वर्त्ते छे तेनो उदय छे तेनी सत्ता होय अने बीजो परभवायु बांधे तेनी सत्ता होय ए बे सत्तास्थानक जाणवां.

हवे संवेध कहीयें बैयें.तिहां प्रथम आउखानी त्रण अवस्था कहीयें बैयें. पहेली परनवायुबंधना समयथी जे प्रथम ते पूर्वावस्था, बीजी परनवायुबंधकालें बंधावस्था,त्रीजी परनवायु बांध्या पबीनी परावस्था,तिहां नरकायुनो उदय, नरकायुनी सत्ता, ए नांगो नारकीने परनवना आयुबंधकालथकी पहेली अवस्थायें बंधने अनावें प्रथमना चार गुणठाणे होय तथा जे वर्त्तमाने नारकी बे अने आगले नवें तिर्यंच थाशे तेने परनवायुबंधकालें तिर्यंचायुनो बंध, नरकायुनो उदय अने तिर्यगायु तथा नरकायु, ए बेनी सत्ता ए नांगो मिथ्यात्व तथा सास्वादन, ए बे गुणठाणे होय, तेमज जे नारकी, आगले नवें मनुष्य थाशे तेनें आयुबंधकालावस्थायें मनुष्यायुनो बंध, नरकायुनो उदय तथा मनुष्यायु अने नरकायु ए बेनी सत्ता, ए नांगो पहेले,बीजे अने चोथे,ए त्रण गुणठाणे होय. एम ए नारकीने ए बे आयुनोज बंध बे पण देवता अने नारकीना आयुनो बंध नथी यडुक्तं "देवनारगेसु न उववक्षंति" ए वचनथी जाणवुं. तथा परनवायु बांध्या पबी उत्तरावस्थायें बंधशून्य बे नांगा होय,ते कहे बे. एक नरकायुनो उदय अने नरक तथा तिर्यगायुनी सत्ता, बीजो नरकायुनो उदय अने नरक तथा मनुष्यायुनी सत्ता,एम बे नांगा चारे गुणठाणे होय. ए रीतें नरकगति मध्यें आयुःकर्मना पांच नांगा लाने, तेमज देवगतिने विषे पण एज पांच नांगा कहेवा पण एटलुं विशेष जे नरकायुने ठामें देवायु कहेवुं. एवं नरक तथा देव ए बे गतिना दश नांगा थया.

हवे तिर्यंच तथा मनुष्यगतिने विषे आयु आश्री प्रत्येकें नव नव नांगा उपजे, ते लखीयें बैयें. तिहां पण त्रण अवस्था पूर्वली पेरें जाणवी,तेमध्यें तिर्यंचने विषे परनवायु बंधथकी पूर्वें बंधने अनावें तिर्यगायुनो उदय अने तिर्यगायुनी सत्ता, ए नांगो पांच गुणठाणां पर्यंत लाने अने मनुष्यने मनुष्यायुनो उदय अने मनुष्यायुनी सत्ता, ए नांगो चौदे गुणठाणे लाने, अने परनवायुबंधकालावस्थायें तिर्यंच तथा मनुष्यने प्रत्येकें चार चार नांगा उपजे,ते कहीयें बैयें. जे तिर्यंच मरीने तिर्यंच थाशे तेने तिर्यगायुनो बंध,तिर्यगायुनो उदय तथा बे तिर्यगायुनी सत्ता होय केमके एक तिर्यगायु बांधे बे अने बीजो नोगवे बे माटें बेनी सत्ता कही, ए नांगो प्रथमना बे गुणठाणा लगें होय,जे नणी आगला गुणठाणे तिर्यगायुनो बंधज नथी, ते नणी बे गुणठाणां कह्या अने जे तिर्यंच मरी मनुष्य थाशे, तेने मनुष्यायुनो बंध तिर्यगायुनो उदय अने मनुष्यायु तथा तिर्यगायु ए बेनी सत्ता जाणवी. ए नांगो पण पहेले अने बीजे ए बे गुणठाणे पामीयें तथा जे तिर्यंच मरी

देव थाशे, तेने देवायुनो बंध, तिर्यगायुनो उदय अने देवायु तथा तिर्यगायु ए बे नी सत्ता ए नांगो एक. मिश्रगुणठाणा विना देशविरति गुणठाणा लगें चार गुणठाणे पामीयें. तथा जे तिर्यंच मरीने नरकें जाशे तेने नरकायुनो बंध, तिर्यगायुनो उदय अने तिर्यगायु तथा नरकायु ए बे नी सता, ए नांगो मिथ्यात्वीने होय. ए चार नांगा आयुर्बंधकालावस्थायें तिर्यंचने होय. हवे आयुबंध करी रह्या पठी पाठली उत्तरावस्थायें बंधशून्य चार नांगा होय,ते देखाडे ठे. एक तिर्यगायुनो उदय अने बे तिर्यगायुनी सत्ता, बीजो तिर्यगायुनो उदय अने तिर्यगायु तथा मनुष्यायु ए बेनी सत्ता, त्रीजो तिर्यगायुनो उदय अने तिर्यगायु,देवायु ए बेनी सत्ता,चोथो तिर्यगायुनो उदय अने तिर्यगायु,नरकायु, ए बेनी सत्ता, ए चार नांगा होय, तेम ध्यें जेणे आयुर्बंधकालावस्थायें जे गतिनुं आयु बांध्युं होय, तेने उत्तरावस्थायें बंधशून्य नांगो जाणवो. एटले नव नांगा तिर्यंचनी गतिथी उपजे.

तेम मनुष्यने पण नव नांगा जाणवा, परंतु एटलुं विशेष जे परान्नवायुबंधावस्थाकालें जे मनुष्य मनुष्यायु बांधे, तेने मनुष्यायुबंध, मनुष्यायूदय अने बे मनुष्यायुनी सत्ता तेमां एक मनुष्यायु तो नोगवे ठे ते अने बीजो बांधे ते, एम बेहुनी सत्ता होय तथा जे मनुष्य तिर्यगायु बांधे तेने तिर्यगायुनो बंध मनुष्यायुनो उदय अने तिर्यंचायु तथा मनुष्यायु, ए बेहुनी सत्ता ए नांगो होय. ए बे नांगा मिथ्यात्व तथा सास्वादन ए बे गुणठाणे लान्ने जे नणी मनुष्य तथा तिर्यंच सम्यक्त्वी थका देवायु बांधे पण बीजुं आयु न बांधे तेमाटें चोथे गुणठाणे ए नांगा न होय. तथा जे मनुष्य देवायु बांधे,तेने देवायुनो बंध मनुष्यायुनो उदय अने मनुष्य तथा देवायु ए बेनी सत्ता ए नांगो एक मिश्रगुणठाणा विना अप्रमत्त गुणठाणां लगे ठ गुणठाणे पामीयें,तथा जे मनुष्य, नरकायु बांधे तेने नरकायुनो बंध मनुष्यायुनो उदय तथा मनुष्य अने नरकायु ए बेनी सत्ता,ए नांगो मिथ्यात्व गुणठाणे लान्ने. ए चार आयुर्बंध कालावस्थाना नांगा जाणवा. हवे आयुर्बंध काल पठी आगले यथानुक्रमें उत्तरावस्थायें ए चार नांगा बंधशून्य कहेवा, ते कहे ठे. एक मनुष्यायुनो उदय, तथा बे मनुष्यायुनी सत्ता,बीजो मनुष्यायुनो उदय अने मनुष्य तिर्यगायुनी सत्ता,त्रीजो मनुष्यायुनो उदय अने मनुष्यायु तथा नरकायुनी सत्ता, ए त्रण नांगा मिथ्यात्वथी अप्रमत्तगुणठाणा पर्यंत लान्ने. चोथो मनुष्यायुनो उदय अने देव तथा मनुष्यायुनी सत्ता, ए नांगो अगीआरमा गुणठाणा पर्यंत लान्ने. केमके देवायु बांध्या पठी वली श्रेणी पण आरंन्नी होय पण बीजा त्रण आयु बांध्या पठी श्रेणी आरंन्ने

नहीं तेमाटें बीजा त्रण नांगा, अप्रमत्तगुणठाणा लगें कह्या तथा मनुष्यने विषे परनवायु बंधथकी पूर्वें मनुष्यायुनो उदय अने मनुष्यायुनी सत्ता, ए नांगो प्रथम तिर्यंचना नांगानी साथें कहेलो बे. एवं नव नांगा मनुष्यगतिने विषे आयुना कह्या, शरवाले अष्टावीश नांगा आयुःकर्मने संवेधें थाय.

हवे गोत्रकर्म्मने विषे सामान्यें एकनो बंध तथा एकनो उदय होय, जे नणी उच्चैर्गोत्र तथा नीचैर्गोत्र, ए बेहु प्रकृति उदय तथा बंधें विरोधिनी बे. तेजणी बेहुनो उदय तथा बंध साथें न होय एकेकीनो जूदो जूदो बंध तथा उदय होय, तेथी एकज प्रकृतिनुं बंधस्थानक तथा एकज प्रकृतिनुं उदयस्थानक होय अने सत्तास्थानक तो एक प्रकृतिनुं तथा बे प्रकृतिनुं एवं बेहु होय, ते कहे बे. जेवारें तेउ अने वाउकायमांहे रहेतो थको जीव उच्चैर्गोत्र उवेलीने सत्ताथी टाले, तेवारें तेउ वाउ मध्यें तथा तिहांथी मरी बीजा अवतारमां आवीने जिहां लगें फरी उच्चैर्गोत्र न बांधे, तिहां लगें एक नीचैर्गोत्रनी सत्ता जाणवी तथा बीजुं अयोगीगुणठाणाना चरमसमयें एक उच्चैर्गोत्रनुं सत्तास्थानक होय एम बे प्रकारनुं एकेक प्रकृतिनुं सत्तास्थानक पहेलुं जाणवुं. अने बीजुं तो बे प्रकृतिनी सत्तारूप सत्तास्थानक जाणवुं.

हवे गोत्रकर्मने विषे संवेध कहीयें बैयें. एक नीचैर्गोत्रनो बंध, नीचैर्गोत्रनो उदय अने नीचैर्गोत्रनी सत्ता, ए नांगो तेउकाय अने वायुकाय मध्यें उच्चैर्गोत्र उवेल्या पढी होय. तथा नीचैर्गोत्रनो बंध नीचैर्गोत्रनो उदय अने उच्च तथा नीचगोत्रनी सत्ता, ए एक नंग तथा नीचैर्गोत्रनो बंध उच्चैर्गोत्रनो उदय अने उच्च तथा नीच ए बेहुनी सत्ता, ए बे नांगा मिथ्यात्व तथा सास्वादन ए बे गुणठाणे होय, केमके आगले गुणठाणे नीचैर्गोत्रनो बंध नथी तेजणी तिहां न होय, तथा उच्चैर्गोत्रनो बंध नीचैर्गोत्रनो उदय अने बेहु गोत्रनी सत्ता, ए नांगो मिथ्यात्वथी मांमीने देशविरति गुणठाणा लगें होय केमके आगले गुणठाणे नीचैर्गोत्रनो उदय नथी तेजणी न होय तथा उच्चनो बंध उच्चैर्गोत्रनो उदय अने बेहुनी सत्ता ए नांगो दशमा गुणठाणा लगें होय. आगले गुणठाणे गोत्रबंधना अनावथी ए नांगो न होय तथा उच्चैर्गोत्रनो उदय अने उच्चैर्गोत्र तथा नीचैर्गोत्र ए बेहुनी सत्तानो नांगो अगीआरमा गुणठाणाथी मांमीने चौदमा गुणठाणाना द्विचरम समय लगें होय तथा उच्चैर्गोत्रनो उदय अने उच्चैर्गोत्रनी सत्ता, ए नांगो अयोगी गुणठाणाना बेहला समयने विषे होय, एम सात नांगा गोत्र कर्मना संवेधें होय. ए रीतें वेदनीय, आ

यु अने गोत्रकर्मने विषे संवेध कहीने पढी (मोहंपरंवुठं के०) मोहनीयकर्मना बंधादिक स्थानक आगले कहीशुं ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ १० ॥

हवे ए त्रण कर्मना जांगा गाथायें करी कहे ठे.

गोअम्मि सत्त जंगा, अठय जंगा हवंति वेयणिए ॥
पण नव नव पण जंगा, आउ चउक्केवि कमसोउ ॥ ११ ॥

अर्थ—(गोअम्मिसत्तजंगा के०) गोत्रकर्मने विषे सात जांगा जाणवा. अने (वेयणिए के०) वेदनीयकर्मने विषे (अठयजंगाहवंति के०) आठ जांगा होय तथा (पण के०) पांच, (नव के०) नव, वली (नव के०) नव,(पण के०) पांच, ए चार प्रकारें मलीने अठावीश (जंगा के०) जांगा ते (आउचउक्केवि के०) नरकादिचारआयुखाने विषे (कमसोउ के०) अनुक्रमें होय ॥ ११ ॥

हवे मोहनीयकर्मना बंधादिक स्थानक कहे ठे.

बावीस इक्कवीसा, सत्तरसं तेरसे व नव पंच ॥
चउ तिग डुगचं इक्कं, बंधठाणाणि मोहस्स ॥ १२ ॥

अर्थ—एक बावीशनुं बंधस्थानक, बीजुं एकवीशनुं बंधस्थानक, त्रीजुं सत्तरनुं बंधस्थानक, चोथुं तेरनुं बंधस्थानक, पांचमुं नवनुं बंधस्थानक, ठठुं पांचनुं बंध स्थानक, सातमुं चारनुं बंधस्थानक, आठमुं त्रणनुं बंधस्थानक,नवमुं बे प्रकृतिनुं बंधस्थानक अने दशमुं (इक्कं के०) एक प्रकृतिनुं बंधस्थानक, ए (बंधठाणाणि मोहस्स के०) प्रकृतिबंधरूपदश बंधनां स्थानक मोहनीयकर्मनां जाणवां.

तिहां प्रथम बावीश प्रकृतिनुं बंधस्थानक केम होय? ते कहीयें ठैयें. मोहनीयनी अठावीश प्रकृति ठे, तेमांहे सम्यक्त्व अने मिश्र, ए बे मोहनीय बंध योग्य नथी तेमाटें बाकी ठवीश बंधयोग्य रही. तेमांथी पण त्रण वेद मध्यें एक समयें एकज वेदनो बंध होय ए विरोधिनी प्रकृति जणी बीजा बे वेदनो बंध न होय तेमाटें बाकी चोवीश रही तेमांथी पण हास्य अने रतिनो जेवारें बंध होय, ते वारें एनी विरोधिनी शोक अने अरतिनो बंध न होय अने जेवारें शोक अने अरति बंधाय तेवारें हास्य अने रति, ए बे प्रकृति न बंधाय तेथी ए चार प्रकृतिमध्यें एक समयें बेज बंधाय बाकीनी बे बीजी न बंधाय तेमाटें ए बे कहाडतां शेष मोहनीयनी एक समयें उत्कृष्टी तो बावीश प्रकृति बंधाय पण अधि

क न बंधाय ए बावीश प्रकृतिना बंधनुं स्थानक, मिथ्यात्व गुणठाणे होय, ते अन्नव्यनी अपेक्षायें अनादिअनंत नांगे होय तथा नव्यनी अपेक्षायें अनादि सांत तथा सादि सांत ए बे नांगे होय. तथा ए बावीश प्रकृतिमांहेथी जेवारें मिथ्यात्व मोहनीय न बंधाय तेवारें बीजुं एकवीश प्रकृतिनुं बंधस्थानक सास्वादन गुणठाणे जघन्यतो एक समय अने उत्कृष्टथी तो ठ आवलिका प्रमाण होय. अहींआं यद्यपि नपुंसकवेदनो पण बंध नथी तथापि ते स्थानकें स्त्रीवेद अथवा पुरुषवेदनो बंध ठे तेथी वेदशून्य न होय.

तथा ते बावीश प्रकृति मांहेथी अनंतानुबंधीआ क्रोधादिक चार तथा मिथ्यात्व मोहनीय ए पांच प्रकृति जेवारें न बंधाय, तेवारें मिश्र तथा अविरति गुणठाणे सत्तर प्रकृतिनुं बंधस्थानक जघन्य अंतर मुहूर्त्त अने उत्कृष्टथी तेत्रीश सागरोपम जाजेरा लगें होय जे नणी अनुत्तर सुर चवीने देशविरति अथवा सर्वविरति पणुं ज्यां लगें न पडिवजे, तिहां लगें तेने सत्तर प्रकृतिनोज बंध होय.

ते सत्तर मांहेथी जेवारें अप्रत्याख्यानावरण चार न बांधे, तेवारें देशविरति गुणठाणे तेर प्रकृतिनुं बंधस्थानक जाणवुं. तेमांहेथकी वली प्रत्याख्यानावरणीय चार न बांधे तेवारें प्रमत्त, अप्रमत्त अने अपूर्वकरण गुणठाणा लगें नव प्रकृतिनुं बंध स्थानक जाणवुं. अहींआं जोपण सातमे तथा आठमे गुणठाणे शोक अने अरतिनो बंध नथी तोपण ते स्थानकें हास्य अने रतिनो बंध ठे. ते नणी संज्वलन चार, हास्य, रति, नय, जुगुप्सा अने पुरुषवेद, ए नव प्रकृतिनुं बंधस्थानक होय. तेरनुं तथा नवनुं, ए बे बंधस्थानक जघन्यतो अंतरमुहूर्त्त पर्यंत होय अने उत्कृष्टांतो देशे ऊणी पूर्वकोडी लगें होय तेमांहेथी हास्य, रति, नय अने जुगुप्सा, ए चार प्रकृतिनो अपूर्वकरणना ठेहले नागें बंध विछेद थया पठी अनिवृत्ति गुणठाणाना पांच नाग मध्यें पहेले नागें पांच प्रकृतिनुं बंधस्थानक होय. तेमांहेथी पुरुषवेदनो बंधछेद करी बीजे नागें चारनुं बंधस्थानक होय तेमांहेथी संज्वलनक्रोधनो बंध छेदे तेवारें त्रीजे नागें त्रणनुं बंधस्थानक होय. तेमांथी संज्वलन माननो बंध छेदे तेवारें चोथे नागें बेनुं बंधस्थानक रहे, तेमांथी संज्वलनमायानो बंध छेदे तेवारें पांचमे नागें एक संज्वलना लोननुं बंधस्थानक होय. अहींआं ए गुणठाणे पांच बंधस्थानक थाय तेनो काल जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट तो अंतरमुहूर्त्त प्रमाण जाणवो. ए मोहनीय कर्मनां दश बंधस्थानक कह्यां ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ १२ ॥

हवे मोहनीयकर्मनां नव, उदयस्थानक कहे छे.

एगं च दोव चउरो, एत्तो एगाहिआ दसुक्कोसा ॥
उहेण मोहणिज्जे, उदए ठाणाणि नव हुंति ॥ १३ ॥

अर्थ— (उहेणमोहणिज्जे के०) उघें एटले सामान्यें मोहनीय कर्मने विषे (उद एठाणाणिनवहुंति के०) उदयनां स्थानक नव होय, ते कहे छे. (एगंच के०) एक प्रकृतिनुं उदयस्थानक, (दोव के०) बे प्रकृतिनुं उदयस्थानक, (चउरो के०) चार प्रकृतिनुं उदयस्थानक, (एत्तोएगाहिआदसुक्कोसा के०) अहींआंथी आगल एकेक प्रकृति अधिक उत्कृष्टा दश लगें करीयें एटले पांचनुं उदयस्थानक, छनुं उदयस्थानक, सातनुं उदयस्थानक, आठनुं उदयस्थानक, नवनुं उदयस्थानक, अने दशनुं उदयस्थानक, ए नव उदयस्थानक, पश्चानुपूर्वीयें देखाडीयें छैयें.

तिहां संज्वलननी चोकडीमध्यें एकने उदयें प्रथम एकनुं उदयस्थानक, एक पुरुषवेद अने चार संज्वलन कषायमांहेलो कोइएक कषाय, ए बे प्रकृतिने उदयें बीजुं बेनुं उदयस्थानक, पुंवेद अने संज्वलनो एक कषाय तथा हास्य अने रति, ए चार प्रकृतिने उदयें त्रीजुं चारनुं उदयस्थानक. ए चारनी साथें नयमो हनीय लेतां पांच प्रकृतिने उदयें चोथुं, पांचनुं उदयस्थानक, ते मध्यें जुगुप्सानो उदय वधारीयें, तेवारें छ प्रकृतिने उदयें पांचमुं छनुं उदयस्थानक, तेमांहे वली चार प्रत्याख्यानीआ कषाय मांहेलो गमे ते एक कषाय क्षेपवीयें, तेवारें सात प्र कृतिने उदयें छठुं सातनुं उदय स्थानक, तेमांहे वली अप्रत्याख्यानीआ क्रोधादि चार मांहेथी एकनो उदय क्षेपवीयें, तेवारें आठ प्रकृतिने उदयें सातमुं आठनुं उदयस्थानक. तेमांहे वली अनंतानुबंधीआ चार कषायमांहेलो एक कषाय क्षेपवी वीयें, तेवारें नव प्रकृतिने उदयें आठमुं नवनुं उदयस्थानक, तेमांहे वली मिथ्यात्व मोहनीयनो उदय वधारीयें, तेवारें दश प्रकृतिने उदयें नवमुं दशनुं उदयस्थानक जाणवुं. एटले सामान्य पणे उदय स्थानकनुं विवेचन कह्युं, विशेषथी सूत्रकार पो तेंज आगल कहेशे, तेथी अहींआं विशेष लख्युं नथी ॥ इति समुच्चयार्थः ॥१३॥

हवे मोहनीय कर्मना पंदर, सत्तानां स्थानक कहे छे.

अठय सत्तय छ चउ, तिग दुग एगाहिआ नवे वीसा ॥
तेरस बारिक्कारस, इत्तो पंचाइ एगूणा ॥ १४ ॥

अर्थ— आठ, सात, छ, चार, त्रण, बे अने एक, ए सर्वने (एहिआजवेवीसा के०) वीशें अधिक करवा, तेवारें अठावीश, सत्तावीश, छवीश, चोवीश, त्रेवीश, बावीश, एकवीश, अने (तेरसबारिक्कारस के०) तेर, बार, अगीआर, (इत्तोपंचा इएगूणा के०) अहींयांथी आगले पांच मांमीने तेमांथी एकेक कणो करीयें एट ले पांच, चार, त्रण, बे अने एक, ए रीतें मोहनीयकर्मने विषे सर्व मली पंदर सत्तास्थानक होय. ते विवरीने लखीयें छैयें.

सर्व मोहनीय प्रकृतिनी सत्तायें अठावीशनुं सत्तास्थानक, ते सम्यक्त्व पामी ने पछ्या होय, तेने होय, तेमांहेथी सम्यक्त्व मोहनीय उवेल्या पछी सत्तावीशनुं सत्तास्थानक, ते मांहेथी वली मिश्रमोहनीय उवेले छवीशनुं सत्तास्थानक, तथा अनादि मिथ्यात्वीने पण एज स्थानक होय. वली ते पूर्वोक्त अठावीशनी सत्तावालो जेवारें चार अनंतानुबंधीआ खपावे, तेवारें तेने चोवीश प्रकृतिनुं सत्तास्थानक होय, ते मांहेथी मिथ्यात्व खपावे, तेवारें त्रेवीशनुं सत्तास्थानक, तेमांथी मिश्रमो हनीय खपावे, तेवारें बावीशनुं सत्तास्थानक, ते मांहेथी सम्यक्त्वमोहनीय खपावे, तेवारें एकवीशनुं सत्तास्थानक, ए एकवीशनुं स्थानक क्षायिक सम्यक्दृष्टिने होय. हवे ए आगलां स्थानक क्षपकने होय, ते कहे छे. तेमांहेथी अप्रत्याख्यानीआ चार अने प्रत्याख्यानीआ चार, एवं आठ प्रकृति खपावे थके अनिवृत्तिकरण गुण ठाणाने त्रीजे नागें तेर प्रकृतिनुं सत्तास्थानक होय, तेमांहेथी नपुंसकवेदने क्षयें चोथे नागें बारनुं सत्तास्थानक, तेमाथी स्त्रीवेदने क्षयें पांचमें नागें अगीआरनुं सत्तास्थानक, तेमांथी हास्यादिक छ प्रकृतिने क्षयें छठे नागें पांचनुं सत्तास्थानक होय. तेमांथी पुरुषवेदने क्षयें सातमे नागें चारनुं सत्तास्थानक, तेमांथी संज्वल न क्रोधने क्षयें आठमे नागें त्रणनुं सत्तास्थानक, तेमांथी संज्वलनना मानने क्षयें नवमे नागें बेनुं सत्तास्थानक, तेमांथी संज्वलनी मायाने क्षयें सूक्ष्म संपरायें एक संज्वलन लोजनुं सत्तास्थानक जाणवुं॥ इति समुच्चयार्थः ॥ १४ ॥

संतस्स पयडिठाणा, णि ताणि मोहस्स हुंति पन्नरस॥
बंधोदय संते पुण, नंग विगप्पे बहू जाण ॥ १५॥

अर्थ—(संतस्सपयडिठाणाणिताणि के०) ए सत्तानी प्रकृतिनां स्थानक ते (मोहस्स के०) मोहनीयकर्मनी प्रकृतिनां (हुंतिपन्नरस के०) पंदर होय. (पुण के०) वली (बंधोदयसंते के०) ए बंध, उदय अने सत्ता स्थानकने विषे प्रत्येकें

संवेधें करीने (भंगविगप्पेबहूजाण के०) मोहनीयकर्मना भांगाना भेद घणा निपजे, ते घणा भांगा हुं कहुं बुं. ते मने केतां थकां तुं सम्यक् प्रकारें जाण. एम शिष्य प्रत्यें आमंत्रण करीने गुरु कहे ढे के हे शिष्य! तुं सांजल ॥इति॥ १५ ॥

अथ मोहनीयबंधस्थानेषु यथासंभवत्वेन भंगानाह ॥ तिहां हवे प्रथम मोहनीयकर्मना बंधस्थानकने विषे यथासंभवपणे भांगा उपजे, ते कहे ढे.

ढ ब्बावीसे चउ इग, वीसे सत्तरस तेरसे दोदो ॥
नवबंधगे वि डणिउ, इक्किक्क अउ परं भंगा ॥ १६ ॥

अर्थ-(ब्बावीसे के०) बावीश प्रकृतिने बंधें ढ भांगा उपजे,ते आवी रीतें के एक मिथ्यात्व, शोल कषाय, त्रण वेद मांहेलो एक वेद, हास्य अने रति अथवा शोक अने अरति ए बे युगल मांहेलुं एक युगल तथा भय अने जुगुप्सा, ए बावीशने बंधें ढ भांगा थाय, ते देखाडे ढे. एक हास्य अने रति बांधतां बावीशनो बंध करे, ए प्रथम भांगो, बीजो तेमज हास्य अने रतिने स्थानकें शोक अने अरति बांधे, तेवारें बीजो भांगो. ए बे भांगा थया. ते बे भांगा पुरुषवेद बंध साथें गणवा. वली तेमज स्त्रीवेदबंध साथें पण बे भांगा तेज लेवाय तथा तेमज नपुंसकवेद बंध साथें पण एज बे भांगा लइयें. एम त्रण वेदने बे बे गुणा करतां ढ भांगा थाय.

तथा (चउइगवीसे के०) एकवीश प्रकृतिने बंधें चार भांगा होय, ते कहे ढे. ते पूर्वोक्त बावीशना बंधमांहेथी एक मिथ्यात्वनो बंध हीन करीयें, तेवारें एकवीशनो बंध थाय पण एटलुं विशेष जे अहींयां नपुंसकवेद टालीने बाकीना बे वेद मांहेलो एकेक वेदनो बंध कहेवो. ए एकवीशनो बंध, बीजे गुणठाणे होय. तिहां पुरुषवेदें हास्य रति साथें एक भांगो तथा शोक अरति साथें बीजो भांगो, वली तेहीज बे भांगा स्त्रीवेदें पण बांधें माटें सर्व मली चार भांगा थाय. अहीं मिथ्यात्वने अभावें नपुंसकवेदनो बंध नथी तेथी तेना बे भांगा न होय.

(सत्तरसतेरसेदोदो के०) सत्तर अने तेर प्रकृतिना बंधे बे बे भांगा होय, ते कहे ढे. पूर्वोक्त एकवीशमांथी अनंतानुबंधीआ चार कषायना बंधविछेदें सत्तरनो बंध त्रीजे अने चोथे गुणठाणे होय. तेमांथी पण अप्रत्याख्यानिआ चारनो बंधविछेदे, तेवारें देशविरति गुणठाणे तेरनो बंध होय. तिहां प्रत्येकें बे बे भांगा होय,केमके मिश्रगुणठाणाथी मांमीने आगले गुणठाणे स्त्रीवेदनो पण बंध नथी जेजणी अनं

तानुबंधिआ कषायना उदयने अनावें स्त्रीवेद न बंधाय तेमाटें स्त्रीवेदना बंधथी उपना जे बे नांगा ते पण टले बाकी मात्र पुरुषवेदें बांधवाना वे बे नांगा होय.

तथा (नवबंधगेविछुणिउ के०) नव प्रकृतिने बंधस्थानकें पण वे नांगा होय. तिहां संज्वलनना कषाय चार, हास्य अने रति, नय, जुगुप्सा अने पुरुषवेदें एक नांगो अथवा हास्य रतिने स्थानकें शोक अने अरति ए युगल लइयें, तेवारें बीजो नांगो ए वें नांगा प्रमत्त गुणठाणे होय एथी आगल शोक अने अरति, ए युगल नो बंध नथी परंतु हास्य अने रतिनोज बंध छे तेमाटें अप्रमत्त तथा अपूर्वकरण ए बे गुणठाणे नव प्रकृतिने बंधे एकज नांगो होय परंतु बीजो नांगो न होय.

तथा (इक्किकअउपरंनंगा के०) एथी उपर पंचादिक पांच बंधस्थानकने विषे पण अपूर्व करणनी पेरें एकेको नांगो होय. ए सर्व मली मोहनीय कर्मना दश बंध स्थानकें थइनें एकवीश नांगा थाय ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ १६ ॥

अथैषामेव बंधस्थानानां मध्ये कियंत्युदयस्थानानीत्याह ॥ हवे एज बंध स्थानकमां कयां कयां बंधस्थानकें केटलां केटलां उदयस्थानक होय, ते कहे छे.

दस बावीसे नव इग, वीसे सत्ताइ उदय कम्मंसा ॥
छाइच्च नव सत्तरसे, तेरं पंचाइ अठेव ॥ १७ ॥

अर्थ—(दसबावीसेसत्ताइउदयकम्मंसा के०) द्वाविंशतिबंधके सप्तादीनि दशपर्यंतानि चत्वारि उदयस्थानानि नवंति'' बावीश प्रकृतिने बंधें सातथी मांमीने दश पर्यंत एटले सात, आठ, नव अने दश, ए चार उदय स्थानक होय. तिहां प्रथम सातनुं उदय स्थानक देखाडे छे. एक मिथ्यात्व, बीजो हास्य, त्रीजो रति, अथवा ए वेने स्थानकें शोक अने अरति पण होय. चोथो त्रणवेद मांहेलो एक वेद, पांचमो एक अप्रत्याख्यानीउ कषाय, छठो एक प्रत्याख्यानीउ कषाय, सातमो एक संज्वलनकषाय,ए सात प्रकृतिनो उदय बावीशना बंधक मिथ्यादृष्टिने निश्चें होय. तिहां नांगा चोवीश थाय,ते देखाडे छे. क्रोध,मान,माया अने लोन, ए चारे उदय विरोधी छे, ते नणी क्रोधादिकने उदयें मानादिकनो उदय न होय परंतु क्रोधने उदयें तेना हेठला सघला क्रोधनोज उदय होय. तिहां अनंतानुबंधीआना एक क्रोधने उदयें बीजा अप्रत्याख्यानादिक चारे जातिना क्रोधनो उदय साथेंज होय अने अप्रत्याख्यानीआना क्रोधने उदयें बीजा प्रत्याख्यानादिक त्रणे जातिना क्रोधनो उदय साथेंज होय तथा प्रत्याख्यानीया क्रोधने उदयें बे जातिना क्रोधनो उ

दय होय अने संज्वलन क्रोधने उदयें एकनोज उदय होय, तेमाटें अहींआं अप्रत्याख्यानीआ क्रोधने उदयें त्रणे क्रोधनो उदय होय. तेम मानने उदयें पण त्रणे माननो उदय होय अने मायाने उदयें पण त्रणे मायानो उदय होय अने लोजने उदयें पण त्रणे लोजनो उदय जाणवो. ए क्रोध, मान, माया, अने लोजना चार जांगा स्त्रीवेदना उदय सार्थे गणवा. वली स्त्रीवेदने स्थानकें पुरुषवेदनो उदय होय, तेवारें ए चार जांगा पुरुष वेदने विषे पण पामीयें अने ए चार जांगा नपुंसक वेदने उदयें पण पामीयें. एम सर्व मली बार जांगा हास्य अने रतिने उदयें जाणवा. तेमज वली हास्य अने रतिने स्थानकें शोक अने अरतिने उदयें पण बार जांगा गणीयें. तेवारें चोवीश जांगा थाय.

अथवा एक मिथ्यात्व सातने उदयें लहीयें तथा हास्यादिक एक युगल सार्थे पुरुषवेदें एक जांगो तथा शोकादि युगल सार्थे एक जांगो, एम बे जांगा पुरुषवेदें थाय. तेमज स्त्रीवेद सार्थे पण बे जांगा थाय अने नपुंसकवेद सार्थे पण बे जांगा थाय. एवं ठ जांगा क्रोधें थया अने क्रोधने स्थानकें मान लहीयें, तेवारें पण ठ जांगा थाय. तेमज माया सार्थे ठ जांगा तथा लोज सार्थे ठ जांगा, एम ठ चोक चोवीश जांगा थाय. ए सातने उदयें मिथ्यात्व लहीयें, तेवारें जांगानी चोवीशी थइ.

तथा ए सातना उदय मध्यें जय, जुगुप्सा अथवा अनंतानुबंधीआ चार कषाय मांहेलो एक कषाय, ए त्रण प्रकृतिमांहेथी एकेक प्रकृतिनो उदय क्षेपीयें, तेवारें आठ प्रकृतिनो उदय थाय. अहीं त्रण चोवीशी जांगानी थाय. ते केम के ए सातना उदय मांहे जयनो उदय क्षेपी आठना उदय सहित गुणीयें तेवारें जांगानी एक चोवीशी थाय तथा ते सातना उदय मध्यें जुगुप्सानो उदय क्षेपी आठना उदय सहित गुणीयें, तेवारें जांगांनी बीजी चोवीशी थाय अने ते सातना उदयमांहे अनंतानुबंधीआनो उदय वधारीयें, तेवारें आठनो उदय थाय. तिहां पण पूर्वली पेरें जांगानी त्रीजी चोवीशी थाय.

तथा मिथ्यात्वें अनंतानुबंधीआनो उदय तो अवश्य होय, तो सातनो उदय तथा जय, जुगुप्सा अनें अनंतानुबंधीआ सहित आठनो उदय शा कारणे कह्यो ? तेने उत्तर. जे कोइएक जीव, सम्यक्दृष्टि ठतां अनंतानुबंधीआ चारने विसंयोज्या एटले खपाव्या, ते खपाव्या ठतां पण कालांतरें कोइएक बीजजूत मिथ्यात्वनी सत्तायें करी वली पण बंधाय तेने विसंयोज्या कहीयें अने जे खपाव्या कह्या होय, ते तो फरी बंधायज नहीं ए विसंयोज्या अने खपव्यानुं विशेष जाणवुं. हवे तेवी सामग्रीने अजावें कोइ

एक जीवें मिथ्यात्वादिकने खपाव्यानो उद्यम न कस्यो ते जीव, कालांतरें मिथ्यात्वें गयो तिहां मिथ्यात्व प्रत्ययिआ नणी मिथ्यात्वें करी वली अनंतानुबंधीआ चार कषाय बांधे, तेवारें बंधावलिका लगें ते अनंतानुबंधीआनो उदय न होय. अहींआं कोइ कहेशे के बंधकालनी आवलिका पठीज ते प्रकृतिनो उदय होय,ते केम घटे, जे नणी ए अनंतानुबंधीआनो अबाधाकाल जघन्य तो अंतर मुहूर्त्तनो अने उत्कृष्टो तो चार हजार वर्षनो कह्यो ठे, तोअबाधाकाल नोगव्या विना केम बंधावलिका पठी एनो उदय होय ? तेनो उत्तर कहे ठे. जे बंधसमयथी पण अनंतानुबंधीआनी सत्ता लेखवाय. बंधसत्ता जेवारें होय, तेवारें अनंतानुबंधीआ पतग्रह थाय पतग्रह एटले ते बंधाती प्रकृति मध्यें बीजी सजातीय प्रकृतिनां दल तथा रसनो संक्रम, तेनुं ठाम जाणवुं. एटले जे प्रकृति, बंधन परिणामें परिणम्यो जीव, ते प्रकृतिमध्यें बीजी सजातीय प्रकृतिनां दलीयां क्षेपवीने बांधी प्रकृतिरूप पणे तेने परिणमाववुं, तेने संक्रम कहीयें. तेनुं स्थानक तेने पतग्रह कहीयें. ते माटें बंधाता अनंतानुबंधीआ मध्यें पण अणबंधाता एवा जे अप्रत्याख्यानावरणादिक बीजा कषाय, तेना दलीया संक्रमे, ते अनंतानुबंधीआपणे परिणमे एटले जेमांहे संक्रमे तेपणे परिणमें तेनो उदय, संक्रमावलिका थया पठी उदयावलिकायें आवे तेमाटें अनंतानुबंधीनो बंधावलिका पठी उदय कहीयें. अहींआं कांइ विरुद्ध नथी. ए वातआश्री विशेष कम्मपयडीथकी जाणवुं तेमाटें मिथ्यात्व गुणगणे पण बंधसंक्रमावलिका लगें तो अप्रत्याख्यानादिक त्रण कषायनोज उदय होय, केमके एक वेदातें जेटलानो जे गुणगणे उदय होय तेटला सर्व समान जातीय माटें तिहां वेदाताज कहीयें. जेमाटें क्रोधादिक चार, परस्परें विरुद्ध ठे माटें ते मांहेलो एकनोज समकालें उदय होय परंतु तिहां एक अनंतानुबंधीक्रोध वेदतां सजातीयपणा माटें अप्रत्याख्यानादिक बीजा त्रणे क्रोध समकालें साथेंज वेदाय परंतु तेनी साथें ते समयें बीजा मानादिक न वेदाय तेमाटें पूर्वोक्त प्रकारें मिथ्यात्वें पण बंधसंक्रमावलिका पठी अनंतानुबंधिआनो उदय होय.

हवे ए सात प्रकृतिना उदय मध्यें नय अने जुगुप्सा, ए बे प्रकृतिनो उदय वधारीयें, तेवारें नवनो उदय थाय. अहीं पण पूर्वली पेरें नांगानी एक चोवीशी थाय तथा ते सातमध्यें नय अने अनंतानुबंधीआनो उदय मेलवीयें, तेवारें पण नवनो उदय थाय. अहींआं नांगानी बीजी चोवीशी थाय तथा ते सातमध्यें जुगुप्सा अने अनंतानुबंधी, ए बे प्रकृति मेलवतां पण नवनो उदय थाय. तिहां

नांगानी त्रीजी चोवीशी थाय. एम नवने उदयें सर्व मली नांगानी त्रण चोवीशी थाय.
तथा एक मिथ्यात्व, बीजुं नय, त्रीजी जुगुप्सा, चोथुं हास्य, पांचमुं रति, अथवा एने स्थानकें शोक अने अरति पण लइयें. उठो त्रण वेदमांहेलो एक वेद,तथा अनंतानुबंधीआदिक चारे कषाय, एवं दशनुं उदयस्थानक जेवारें होय, तेवारें पण पूर्वली पेरें नांगानी एक चोवीशी थाय. एम बावीशना बंधें सातनुं, आठनुं, नवनुं, दशनुं,ए चार उदय स्थानकें सर्व संख्यायें आठ चोवीशी नांगानी थाय.
तथा (नवइगवीसेसत्ताइ के०) "एकविंशतिबंधे सप्तादीनि नव पर्यंतानि त्रीणि उदयस्थानानि नवंति." एटले एकवीश प्रकृतिने बंधें सात आदें देइने नव लगें त्रण उदय स्थानक होय. तिहां प्रथम एक युगल, त्रण वेद मांहेलो एक वेद,चार कषाय मांहेला क्रोधादिक एक कषायना चार नेद, एम सात प्रकृतिने उदयें पूर्वली पेरें नांगानी एक चोवीशी थाय. ए सातना उदयने नयना उदय सहित करतां आठनो उदय थाय. तिहां पण नांगानी एक चोवीशी थाय तथा जुगुप्सानो उदय मेलवतां पण आठनो उदय थाय. तिहां पण नांगानी एक चोवीशी थाय. तथा नय अने जुगुप्सा, ए बे प्रकृतिनो उदय सामटो मेलवतां नवनो उदय थाय. तिहां पण पूर्वली पेरें नांगानी एक चोवीशी थाय. एम एकवीश प्रकृतिने बंधें सास्वादन गुणठाणाने विषे त्रण उदय स्थानकें थइ नांगानी चोवीशी चार थाय.
अहीं सास्वादनना बे नेद छे. एक उपशम श्रेणिगत,बीजो अश्रेणीगत,तिहां अश्रेणीगतने विषे तो ए त्रण उदयस्थानक होय अने श्रेणीगतने विषे बे आचार्यना आदेश जाणवा,ते कहे छे. एक जे अनंतानुबंधीआने उपशमावीने श्रेणी करे अने श्रेणीथी पडतो सास्वादन गुणठाणुं स्पर्शे, तेने मतें तो ए पूर्वें कह्यां तेहीज त्रण उदयस्थानक जाणवां. अने जे आचार्य अनंतानुबंधीआ चारनी विसंयोजनायें श्रेणीनो प्रारंन माने छे, तेने मतें श्रेणीथी पडतां अनंतानुबंधीआनी सत्ताने अनावें अनंतानुबंधीआना उदय रहित सास्वादन पणुं न घटे जे नणी "अस्स सासणनावोन नवइ,, एम चूर्णिकारनुं वचन छे माटे. अने जो सम्यक्त्वथी पडयो ते ज्यां सुधी मिथ्यात्व नूमीने विषे नथी पहोतो तेना वचला कालमां अनंतानुबंधीआना उदय विना पण सास्वादन गुणठाणुं पामीयें, एम कहियें तो तिहां छ प्रकृतिनो उदय मान्यो जोइयें,तेवारें एकवीशने बंधें छथी मांमीने नव लगेंना चार उदयस्थानक मान्यां जोइयें, तेवारें तो तिहां नांगानी चोवीशी पण आठमानवी,

जोइयें' ते अहीं सूत्रकारें कोइ कारणे मानी नथी ते नणी एने मतें श्रेणीथी प डतां सास्वादन न होय, एमज कहेवुं.

हवे (ठाइअनवसत्तरसे केंं०) "सप्तदशबंधस्थानके षडादीनि नव पर्यंतानि च त्वारि उदयस्थानानि नवंति" एटले सत्तर प्रकृतिने बंधे ठ आदें देइने नव लगें चार उदयनां स्थानक होय. अहींआं सत्तरनो बंध त्रीजे तथा चोथे गुणठाणे होय, तिहां जे मिश्र गुणठाणे सत्तरनो बंध होय,तेने विषे सात,आठ अने नव, ए त्रण उदय स्थानक होय एटले एक मिश्रमोहनीय,बे युगल मांहेलुं एक युगल,त्रण वेद मांहेलो एक वेद अने अनंतानुबंधीआ विना शेष त्रण कषायनो एकेको नेद,ए सात प्रकृतिनो उदय, मिश्रगुणठाणे होय. इहां पूर्वली पेरें नांगानी चोवीशी एक थाय तथा ए साततनी सार्थे नय मेलवतां आठने उदयें पण नांगानी चोवीशी एक थाय तथा नयने स्थानकें जुगुप्सा मेलवीयें, तेवारें पण आठने उदयें नांगानी एक चोवीशी थाय तथा नय अने जुगुप्सा बे सामटी मेलवतां नवने उदयें पण नांगानी चोवीशी एक थाय. एवं मिश्रगुणठाणे सत्तर बंधें नांगानी चार चोवीशी थाय.

तथा चोथे गुणठाणे सत्तरना बंधें ठ, सात, आठ अने नव, ए चार उदयनां स्थानक,क्षायिक सम्यक्दृष्टिने होय. तिहां मिश्रने जे सातनो उदय कह्यो,तेमध्यें थी मिश्रमोहनीय विना चोथे गुणठाणे ठनो उदय लेखवतां नांगानी चोवीशी एक थाय, ते ठ प्रकृतिना उदय मध्यें नय, जुगुप्सा तथा सम्यक्त्व मोहनीय ए एकेकनो उदय मेलवतां त्रण प्रकारें सातनो उदय थाय. तिहां एकेका नेदें एकेकी नांगानी चोवीशी थाय, तेवारें सातने उदयें त्रण चोवीशी नांगानी थाय.

तथा ते ठना उदयमांहे नय अने जुगुप्सा अथवा नय अने वेदकसम्यक्त्व मोहनीय अथवा जुगुप्सा अने वेदक सम्यक्त्वमोहनीय ए रीतें बे बे प्रकृति सामटी नेलीयें, तेवारें त्रण प्रकारें आठनुं उदय स्थानक थाय तिहां पण प्रत्येकें नांगानी एकेकी चोवीशी गणतां त्रण चोवीशी नांगानी थाय. अहीं सम्यक्त्वमोहनीयना जे नांगा, ते वेदकसम्यक्दृष्टिने जाणवा अने क्षायिक तथा उपशमसम्यक्दृष्टिने सम्यक्त्वमोहनीयनो उदय नथी, तेनणी तेने न जाणवा. तथा ते ठना उदय मध्यें नय, जुगुप्सा अने वेदकसम्यक्त्वमोहनीय, ए त्रणे प्रकृतिनो उदय सामटो मेलवीयें, तेवारें नव प्रकृतिनो उदय थाय.तिहां पण एक चोवीशी नांगानी थाय.एम सर्व मली चोथे गुणठाणे आठ चोवीशी नांगानी थाय. ते मध्यें चार क्षायिक तथा उपशमसम्यक्दृष्टिने लेवी तथा चार क्षायोपशमिक सम्यक्दृष्टिने मिश्रनी पेरें लेवी.

तथा ए आठ चोवीशी साथें मिश्रगुणठाणानी चार चोवीशी मेलवतां सत्तरने बंध स्थानकें बार चोवीशी नांगानी होय. यद्यपि त्रीजे अने चोथे गुणठाणे उदय स्थानक तो तेहीज ठे पण तिहां प्रकृति जूदी ठे माटें वेवार लीधा ठे.

तथा (तेरंपंचाइअठेव के०)“त्रयोदश बंधस्थानके पंचादीनामष्टपर्यंतानि चत्वारि उदयस्थानानि स्युः” एटले तेर प्रकृतिने बंधें पांच आदें देइ आठ लगें चार उदयनां स्थानक होय एटले पांच, ठ, सात अने आठ, ए चार उदय स्थानक होय तिहां एक प्रत्याख्यानी क्रोध, बीजो संज्वलनक्रोध,त्रीजो पुरुषवेद,एक युगल,एवं पांचनो उदय होय. अहीं क्रोधने स्थानकें मान,माया अने लोज साथें परावर्त्त करतां चार नांगा पुरुषवेद साथें थाय अने जेवारें पुरुषवेदने स्थानकें स्त्रीवेद लइयें, तेवारें पण चार नांगा थाय अने नपुंसक वेद साथें पण चार नांगा थाय. एवं बार नांगा थया. पठी हास्य अने रति, ए युगलने स्थानकें शोक अने अरति ए युगल लेइयें, तो तेनी साथें वली बीजा बार नांगा थाय. एम नांगानी एक चोवीशी पांचने उदयें थाय. तेमध्यें वली नय अथवा जुगुप्सा अथवा सम्यक्त्वमोहनीय ए त्रण प्रकृति मांहेली एकेक मेलवतां ठनो उदय त्रण नेदें थाय. तिहां एकेके नेदें एकेक चोवीशी करतां त्रण नेदें ठना उदयें त्रण चोवीशी नांगानी थाय, तथा ते पांचना उदयमांहे नय, जुगुप्सा अथवा नय,अने सम्यक्त्व मोहनीय अथवा जुगुप्सा अने सम्यक्त्वमोहनीय ए, वे वे प्रकृतिनो उदय सामटो मेलवतां सात प्रकृतिनां उदयस्थानक त्रण थाय. तिहां पण नांगानी चोवीशी त्रण थाय तथा ते पांचना उदयमांहे नय, जुगुप्सा अने सम्यक्त्वमोहनीय ए त्रण प्रकृतिनो उदय साथें मेलवीने आठ प्रकृतिनुं उदय स्थानक करतां तिहां नांगानी चोवीशी एक थाय. एम तेरने बंधें चार उदय स्थानकें देशविरति गुणठाणे सर्व मली नांगानी चोवीशी आठ थाय, तेमध्यें क्षायिक तथा उपशम सम्यक्दृष्टिने चार चोवीशी अने बाकीनी चार चोवीशी वेदक सम्यक्दृष्टिने थाय ॥ १७ ॥

हवे नव प्रकृतिने बंधें नांगा कहे ठे.

चत्तारि आइ नव बं, ध एसु उक्कोस सत्त मुदयंसा ॥
पंच विह बंधगे पुण, उदठ ङुएहं मुणेअवो ॥ १८ ॥

अर्थ- (चत्तारिआइनवबंधएसुउक्कोससत्तमुदयंसा के०) चत्वारीत्यादि नवबंधकेषु प्रमत्तादिषु चतुरादीनि सप्तपर्यंतानि चत्वारि उदयस्थानानि नवंति ” एटले

प्रमत्त, अप्रमत्त अने अपूर्वकरण, ए त्रण गुणठाणे नव प्रकृतिना बंधस्थानकें चारनो उदय आदें देइने उत्कृष्टतो सातनुं उदयस्थानक होय. ए नाव. तिहां संज्वलना क्रोधादिक मांहेलो एक कषाय, त्रण वेद मांहेलो एक वेद, हास्ययुगल अथवा शोकयुगल, एवं चारनो उदय क्षायिक तथा उपशम सम्यक्दृष्टिने ध्रुव होय ते माटें अहींयां नांगानी चोवीशी एक थाय. ते चार मध्यें नय, जुगुप्सा तथा सम्यक्त्वमोहनीय, ए त्रण प्रकृति मांहेली एकेक नेलतां त्रण प्रकारें पांचनो उदय थाय. तिहां नांगानी चोवीशी त्रण थाय. ते चार मध्यें नय अने जुगुप्सा ए बे, अथवा नय अने सम्यक्त्वमोहनीय ए बे, अथवा जुगुप्सा अने सम्यक्त्वमोहनीय ए बे, एम बे बें प्रकृतिनो उदय मेलवीयें, तेवारें त्रण प्रकारें ढनो उदय थाय. तिहां पण नांगानी चोवीशी त्रण थाय तथा ते चार मांहे नय, जुगुप्सा अने सम्यक्त्वमोहनीय, ए त्रणे प्रकृतिनो उदय सामटो मेलवीयें, तेवारें सात प्रकृतिनुं उदयस्थानक थाय, तिहां नांगानी चोवीशी एक थाय. एवं नवने बंधें चार उदय स्थानकें थइने आठ चोवीशी नांगानी थइ, तेमांहेली चार चोवीशी क्षायिक अने औपशमिक सम्यक्दृष्टिने होय तथा चार चोवीशी वेदक सम्यक्दृष्टिनें होय. ए ढठे सातमे अने आठमे गुणठाणे होय.

तथा (पंचविहबंधगेपुण के०) वली पांच प्रकृतिना बंधने विषे (उदउदुगहंमुणेअवो के०) बे प्रकृतिनुं एकज उदयस्थानक जाणवुं. ते आवी रीतें के चार संज्वलनमांहेलो एक क्रोध अथवा मान अथवा माया अथवा लोन होय; अने त्रण वेद मांहेलो एक वेद, ए रीतें बे प्रकृतिनुं उदयस्थानक होय. अहींआं नांगा बार थाय जे नणी अहींआं हास्यादिकनो उदय नथी माटें नांगानी चोवीशी न थाय. मात्र चार कषायने त्रण वेद साथें गणतां बार नांगा थाय. ए बार नांगा नवमा गुणठाणाना पांच नाग मांहेला पहेले नागें होय॥१७॥

हवे आगले बंधस्थानकें उदय स्थानक कहे ढे.

इत्तो चउ बंधाइ, इक्किकुदया हवंति सवेवि ॥
बंधो चरमेवि तहा, उदया नावे विवा हुज्जा ॥ १९ ॥

अर्थ– (इत्तो के०) अहींआं पांचना बंधस्थानकथकी आगल हवे (चउबंधाइ के०) चतुर्बंधादिक एटले चारनो बंध, त्रणनो बंध, बेनो बंध अने एकनो बंध, ए चार बंधस्थानकें (इक्किकुदयाहवंतिसवेवि के०) एकेक प्रकृतिनुंज उदय

स्थानक सर्व बंधस्थानकने विषे होय. ते केमके पुरुष वेदनो बंध टले पढी चार संज्वलननोज बंध होय पुरुष वेदना बंध साथें उदय पण टले तेमाटें तिहां चतुर्विध बंधें एकोदयें चार नांगा होय जे नणी चार संज्वलनाकषाय मांहेलो कोइएकने संज्वलनाक्रोधनोज उदय होय. कोइएकने संज्वलना माननोज उदय होय, कोइएकने संज्वलनी मायानोज उदय होय अने कोइएकने संज्वलना लोननोज उदय होय. एम चार नांगा, उदयना अनिवृत्तिकरणने बीजे नागें होय. अहींआं कोइएक आचार्य, चतुर्विध बंधने संक्रम कालें त्रण वेद मांहेला एक वेदनो उदय माने ढे तेवारें तेने मतें चतुर्विधबंधने पण प्रथम कालें चार संज्वलनाने त्रण वेद सायें गुणतां बार नांगा द्विकोदयना अहींआं पण थाय तथा पंचविध बंधें पण द्विकोदयना बार नांगा थाय. एम द्विकोदयना चोवीश नांगा प्रथम कालें होय. ते पढी चतुर्विध बंधे एकोदयना चार नांगा होय.

तेवार पढी संज्वलना क्रोधने उच्छेदें अनिवृत्तिने त्रीजे नागें त्रिविध बंध होय. तिहां एकनो उदय होय, तेना नांगा त्रण उपजे, तेवार पढी चोथे नागे बेने बंधें संज्वलन माया तथा लोन, ए बे मांहेला एकने उदयें बे नांगा होय तथा एक संज्वलन लोनने एक बंधस्थानकें एक संज्वलन लोननो उदय होय तेनो एक नांगो नवमा गुणगणाना पांचमा नागें होय.

हवे बंध विना मात्र उदयनोज एक नांगो थाय,ते कहे ढे. (बंधोचरमेवितहा के०) मोहनीयना बंधने अनावें पण सूक्ष्म संपरायगुणगणे एक संज्वलनालोननुं उदयस्थानक होय. तिहां एक नांगो जाणवो. एम चारने बंधस्थानकें नांगा चार, त्रणने बंधस्थानकें नांगा त्रण, बेने बंधस्थानकें नांगा बे, एकने बंधस्थानकें नांगो एक, तथा बंध शून्य करतां नांगो एक, एवं अगीआर नांगा एकने उदयें थया. अहींआं जोपण संज्वलना क्रोधादिकना उदयमांहे विशेष नथी तो पण बंधस्थानकें विशेषें करी विशेष जाणवुं.

पढी (उदयानावेविवाहुज्जा के०) उदयने अनावें पण उपशांतमोहें उपशांत कषायनी अपेक्षायें मोहनीयनी सत्ता होय. ते पण एक नांगो प्रसंगें कह्यो परंतु अहींआं बंध अने उदयना संवेध मांहे सत्तानो नांगो कहेवो. ते निष्कारण ढे तेथी न कह्यो अने क्षीणमोहें तो सत्ता पण न होय ॥ इति ॥ १ए ॥

अथ दशादिषूदयस्थानेषु यावंतोनंगाः स्युस्तानाह. हवे दशादिक पश्चानुपूर्वीयें एक पर्यंत उदय स्थानकने विषे जेटला नांगा होय, ते कहे ढे.

इक्कग बक्किक्कारस, दस सत्त चउक्क इक्कगंचेव ॥ एए चउ
वीस गया, बार डुगिक्कम्मि इक्कारा ॥ तथा मतांतरे,
चउवीस डुगिक्कमिक्कारा ॥ २० ॥

अर्थ-अहींआं उदयने स्थानकें यथाक्रमें संख्या जोडवी. तिहां दशने उदयें (इक्कग के०) एक चोवीशी, नवने उदयें (बक्क के०) ब चोवीशी, आठने उदयें (इक्कारस के०) अगीआर चोवीशी, सातने उदयें (दस के०) दश चोवीशी, बने उदयें (सत्त के०) सात चोवीशी, पांचने उदयें (चउक्क के०) चार चोवीशी, चारने उदयें (इक्कगंचेव के०) निश्चें एक चोवीशी नांगा होय. (एएचउवीसगया के०) ए सर्व मलीने चालीश चोवीशी नांगा थाय. ए नांगा उपजाववानी नावना पूर्वें कही बे, तेम जाणवी तथा (बारडुग के०) बेने उदयें बार नांगा होय अने (इक्कम्मिइक्कारा के०) एकने उदयें अगीआर नांगा होय, ते केम? जे चारने बंधें चार, त्रणने बंधें त्रण, बेने बंधें बे अने एकने बंधे एक, तथा अबंधें एक, एवं अगीआर नांगा थाय. तथा अन्य आचार्यने मतें (चउवीसडुग के०) बेने उदयें एक चोवीशी नांगा उपजे एटले बार नांगा पांचने बंधें अने बेने उदयें तथा बार नांगा चारने बंधे अने बेंने उदयें, एम चोवीश नांगा उपजे अने (इक्कमिक्कारा के०) एकने बंधें अगीआर नांगा उपजे, ए मतांतर कह्युं. २०

एतेषामेव नंगानां विशिष्टसंख्यां पदसंख्यां च स्वमतेन आह ॥ हवे एज नांगानी विशिष्टपणे संख्या अने तेना पदनी संख्या पोताने मतें कहे बे.

नव तेसीइ सएहिं, उदय विगप्पेहि मोहिआ जीवा ॥ अउणुत्तरि
सीआला,पयविंद सएहिं विन्नेआ ॥२१॥ अथवा मतांतरेण नंग
संख्या पदसंख्यामाह ॥ नव पंचाण बसए, उदय विगप्पेहि मोहि
आ जीवा ॥ अउणत्तरि एगुत्तरि,पयविंद सएहिं विन्नेआ ॥ २२ ॥

अर्थ-अहींआं दश, नव, आठ, सात, ब, पांच अने चार, ए सात उदयस्थानकें थइने चालीश चोवीशी नांगानी लाधी, ते चालीशने चोवीश गुणा करीयें, तेवारें (९६०) थाय. तेमध्यें द्विकोदयना बार अने एकोदयना अगीआर, एवं त्रेवीश नांगा मेलवीयें, तेवारें (नवतेसीइसएहिं के०) नवशेंने त्र्याशी नांगा थाय. ए मोहनीय

कर्मना (उदयविगप्पेहिंमोहिआजीवा के०) उदयने विषे नव विकल्पें करीने स्व मतें (९८३) नांगा थया, तेने विषे सर्व संसारी जीव मोह्या मुंझाणा पड्या छे.

हवे पदसंख्यांक कहे छे. ए (९८३) नांगाने विषे (अउणुत्तरिसीआलापयविंदसएहिंविन्नेआ के०) (६९४७) एटला पदना वृंद एटले समूह जाणवा. एटले एकेकी प्रकृतिनुं नाम ते एकेकुं पद कहीयें. ते दश प्रकृतिने उदयें एकेका नांगामांहे दश दश पद होय, नवने उदयें एकेका नांगा मांहे नव नव पद होय. एम यावत् एकने उदयें एकेका नांगा मांहे एकज पद होय तेमाटें दशोदयना नांगा दश गुणा करीयें अने नवोदयना नांगा नव गुणा करीयें. एम सर्वने गुणाकार करी तेनुं ऐक्य कीधे थके (६९४७) पद, स्वमतें कह्या एटले जिहां बे प्रकृतिनें उदयें बार नांगा कह्या छे, ते स्वमतें जाणवा.

अने मतांतरें बेने उदयें चोवीश नांगा कह्या छे. तेने मतें एकतालीश चोवीशीना (९८४) तथा एक प्रकृतिना उदयना अगीआर नांगा मेलवतां (९९५) थाय. एटला मोहनीयकर्मना विकल्पें करीने सर्व संसारी जीव संसारने विषे मुंझाइ रह्या छे. हवे एना (६९७१) पदवृंद प्रकृतिसंख्या थाय, ते करी देखाडे छे.

दशने उदयें एक चोवीशी नांगानी छे, तेने दश गुणा करतां दश चोवीशी थाय, तथा नवने उदयें छ चोवीशीनी चोपन थाय, तथा आठने उदयें अगीआर चोवीशीनी अठाशी थाय, तथा सातने उदयें दश चोवीशीनी सीत्तेर थाय, तथा छने उदयें सात चोवीशीनी बेंतालीश थाय,तथा पांचने उदयें चार चोवीशीनी वीश थाय, तथा चारने उदयें एक चोवशीनी चार थाय,तथा बेने उदयें एक चोवीशीनी बे थाय, एम (२९०) चोवीशी सरवाले नांगानी थाय तेने चोवीश गुणा करतां (६९६०) थाय. तेमध्यें एकोदयना अगीआर नेलीयें, तेवारें (६९७१) पदवृंद संख्या थाय. तेने विषे सर्व संसारी जीव मोह्या मुंझाणा छे.

ए सर्व उदयने नांगे जघन्यथी तो एक समय काल अने उत्कृष्टो तो अंतर मुहूर्त्त प्रमाण काल होय, जे नणी वेद तथा हास्य युगलमांहेलो एक अंतर मुहूर्त्त पछी फरे, ते पंचसंग्रहनां मूल तथा टीकामांहे कह्यो छे, माटें अंतरमुहूर्त्त उपरांत नांगो अवश्य फरे अने एक समयतो बंधस्थानक फरवानी तथा स्वरूपें उदयांतर करवानी अपेक्षायें जाणवो एटले बंधस्थानकना नेदथी अथवा गुणठाणाना नेदथी अथवा स्वरूपथकी अवश्य अन्य उदयें अन्य नांगांतरें जीव जाय. ॥ इतिगाथाद्वयार्थः ॥ २१ ॥ २२ ॥ एम बंधस्थानकें उदय स्थानकनो संवेध कह्यो.

॥ अथ सत्तास्थानैः सह संवेधमाह ॥ हवे सत्ता स्थानक साथें संवेध कहे छे.

तिन्नेवय बावीसे, इगवीसे अध्ववीस सत्तरसे ॥
छच्चेव तेर नव बं, धएसु पंचेव ठाणाणि ॥ ३३ ॥

अर्थ- (तिन्नेवयबावीसे के०) बावीशने बंधे अघावीश, सत्तावीश अने छवीश, ए त्रण सत्तास्थानक होय. जे नणी बावीश प्रकृतिनो बंध, मिथ्यात्वीने होय तिहां ७-८-९-१०-ए चार उदय स्थानक होय तेमध्यें सातने उदयें तो एकज अघावीशनुं सत्तास्थानक होय, जे नणी सातनो उदय तो अनंतानुबंधीआने अनावें होय अने ते तो जेणे सम्यक्दृष्टि छतां अनंतानुबंधिआ उवेल्या होय ते जे वारें मिथ्यात्वें जाय, तेवारें वली मिथ्यात्वप्रत्ययिक अनंतानुबंधिआ चार बांधवा मांमे, ते मिथ्यात्वीने बंधावलिका तथा संक्रमावलिका लगें अनंतानुबंधिआना उदय रहित सातनो उदय पामीयें, तिहांतो तेने निश्चें अघावीशनीज सत्ता होय.

तथा आठ प्रकृतिना उदयस्थानकें अघावीश, सत्तावीश अने छवीश, ए त्रण सत्तास्थानक होय. तिहां जे अनंतानुबंधीआ रहित आठनो उदय होय तिहां तो पूर्वोक्त युक्तियें एक अघावीशनुं सत्तास्थानक होय अने अनंतानुबंधीआ सहित जे आठनो उदय होय तेने विषे त्रण सत्तास्थानक होय तेमध्यें जिहां लगें सम्यक्त्व मोहनीय उवेल्युं नथी तिहां लगें अघावीशनुं सत्तास्थानक जाणवुं अने सम्यक्त्व उवेल्या पछी सत्तावीशनुं सत्तास्थानक तथा मिश्रमोहनीय उवेल्या पछी छवीशनुं सत्तास्थानक अथवा अनादि मिथ्यात्वीने पण छवीशनुं सत्तास्थानक होय. एमज नवने उदयें पण एहिज त्रण सत्तास्थानक कहेवां अने दशनो उदय तो अनंतानुबंधीआ सहितज होय तो तिहां पण ए त्रण सत्तास्थानक कहेवां.

(इगवीसेअध्ववीस के०) एकवीशने बंधें सात, आठ अने नव, ए त्रण उदय स्थानकें पण एकज अघावीशनुं सत्तास्थानक होय जे नणी ए एकवीश प्रकृतिनो बंध सास्वादन गुणगणे होय अने सास्वादनपणुं तो औपशमिक सम्यक्त्व वमतां होय तेणे उपशम सम्यक्त्वें करी मिथ्यात्वना दलिकनो एक सम्यक्त्व, बीजो मिश्र अने त्रीजो मिथ्यात्व, एवा त्रण पुंज कस्या तेमाटें त्रणे दर्शन मोहनीयनी सत्ता, सास्वादने पामीयें तेथी अघावीशनुं एकज सत्तास्थानक एकवीशने बंधें होय.

(सत्तरसेछच्चेव के०) सत्तरने बंधें छ सत्तानां स्थानक होय. ते अघावीश, सत्तावीश, चोवीश, त्रेवीश, बावीश अने एकवीश, ए छ सत्तास्थानक होय. तिहां ए

सत्तर प्रकृतिनुं बंधस्थानक त्रीजे अने चोथें गुणगाणे होय तिहां ढ, सात, आठ, अने नव, ए चार उदय स्थानक सम्यक्दृष्टिने होय तिहां ढनुं उदय स्थानक क्षायिक तथा औपशमिक सम्यक्दृष्टिने होय. तिहां क्षायिक सम्यक्दृष्टिने एकवीश प्रकृतिनुं सत्तास्थानक होय जे नणी अनंतानुबंधी चार तथा दर्शन मोहनीय त्रण, ए सात प्रकृतिने क्षयें क्षायिक सम्यक्त्व होय ढे तेमाटें. तथा औपशमिक सम्यक् दृष्टिने प्रथम ग्रंथि नेदी औपशमिक पामतां तथा उपशमश्रेणियें पण जेणे अनंतानुबंधीआ उपशमाव्या होय तेने अठावीशनुं सत्तास्थानक होय अने जे अनंतानुबंधीआ विसंयोजीने श्रेणि आरंने तेने चोवीश प्रकृतिनुं सत्तास्थानक होय. एम बे सत्तानां स्थानक, उपशमसम्यक्दृष्टिने होय. एटले सत्तरने बंधें अने ढ ने उदयें सर्व मली २८–२४–२१ ए त्रण सत्तास्थानक थयां.

मिश्रदृष्टिने सात, आठ अने नव ए त्रण उदयें अठावीश, सत्तावीश, अने चोवीश, ए त्रण सत्तास्थानक होय. तिहां जे अठावीशनी सत्तावालो मिश्रगुणठाणुं पडिवजे तेने अठावीशनी सत्ता होय अने जेणे मिथ्यात्वी थकां सम्यक्त्व उवेल्युं अने मिश्रपणुं हजी उवेजवा मांड्युं नथी ते सम्यक्त्वज उवेलीने मिथ्यात्वथी निवर्त्तिने फरी परिणामवशें मिश्रें आवे. तेने सत्तावीशनुं सत्तास्थानक होय, तथा जे सम्यक्दृष्टि ढतां अनंतानुबंधीआ विसंयोजीने तथाविध परिणामने वशें मिश्रें आवे, तेने चोवीशनी सत्ता होय. ए चोवीशनी सत्ता, चारे गतिने विषे पामीयें,जे माटें चारे गतिना सम्यक्दृष्टि अनंतानुबंधिआनी विसंयोजना करे,ए विषे कम्मपयडिमध्यें एम कह्युं ढे, के "चउगइआ पज्जत्ता, तिन्नि विसंजोयणा विसंयोजंति ॥ करणेहिं तिहि सहिआ, एंतरकरणं उवसमोवइति" चार गतिना पर्याप्ता जीव, एक सम्यक्दृष्टि, बीजा देशविरति, त्रीजा सर्वविरति, ए त्रणे अनंतानुबंधिआनी विसंयोजना करें ते वली परिणामने वशें मिश्रें पण आवे, तेथी ए नांगो चारे गति मध्यें पामीयें.

तथा चोथे गुणगाणे सत्तरने बंधें सातने उदयें अठावीश, चोवीश, त्रेवीश, बावीश अने एकवीश, ए पांच सत्तानां स्थानक होय. तिहां अठावीशनुं औपशमिक तथा वेदक सम्यक्दृष्टिने होय अने अनंतानुबंधिआ विसंयोज्या पढी चोवीशनुं सत्तास्थानक पण ए बेहुने होय, तथा मिथ्यात्वने क्षयें त्रेवीशनुं सत्तास्थानक अने मिथ्यात्व तथा मिश्र, ए बेना क्षयें बावीश प्रकृतिनुं सत्तास्थानक, ए बे, वेदकसम्यक्दृष्टिनेज होय, ते केमके? अनंतानुबंधी चार तथा मिथ्यात्व अने मिश्र, ए ढ प्रकृति खपावीने सम्यक्त्व मोहनीय खपावतो तेने चरम ग्रासें वर्त्त

तो कोइएक पूर्वबद्धायु जीव तिहां मरीने चारे गति मांहेली जावे, ते एक गति मांहे जइ उपजे, तेवारें बावीशनी सत्ता, चारे गति मध्यें पामीयें अने एकवीशनी सत्ता तो क्षायिक सम्यक्दृष्टिनेज होय.

तथा आठने उदयें तो मिश्रगुणठाणे सातना उदयनी पेरें अठावीश, सत्तावीश अने चोवीश, ए त्रण सत्तास्थानक होय, अने अविरतिसम्यक्दृष्टिने तो जेम सातने उदयें पांच सत्तास्थानक कह्यां, तेप्रकारेंज पांच सत्तास्थानक आठने उदयें पण कहेवां तेमज नवनो उदय पण अविरति वेदक सम्यक्दृष्टिने होय. ते क्षायोपशमिक सम्यक्दृष्टि माटें एकवीश अने सत्तावीश, ए बे सत्तास्थानक विना शेष २८-२४-२३-२२ ए चार सत्तास्थानक होय. ते पूर्वली पेरें जाणवां.

तथा (तेरनवबंधएसु के०) तेरने बंधें अने नवने बंधें प्रत्येकें प्रत्येकें (पंचेवठाणाणि के०) पांच पांच सत्तानां स्थानक होय, अठावीश, चोवीश, त्रेवीश, बावीश अने एकवीश, ए पांच सत्तानां स्थानक होय. तेमांहे तेरना बंधक देशविरति होय, ते बे भेदें छे. एक तिर्यंच, बीजा मनुष्य, तेमध्यें तिर्यंचने पांच, छ, सात अने आठ, ए चार उदय स्थानकें अठावीश अने चोवीश, ए बे सत्तानां स्थानक होय. तिहां पांच, छ अने सातने उदयें औपशमिक सम्यक्दृष्टिने अठावीशनी सत्ता होय ते कोइएक ग्रंथि भेदीने सम्यक्त्व सहित देशविरति पणुं पडिवजे तेनी अपेक्षायें लेवी जे भणी शतकचूर्णि मध्यें एम कह्युं छे के, " उवसमसम्मदिट्ठि, अंतरकरणेवि ठकोइ देसविरइ कोइपमत्तापमत्त भावंपिगछइ सासायणोपुण किमविलहइ" तथा क्षायोपशमिक सम्यक्दृष्टि तिर्यंचने छ, सात अने आठ, ए त्रण उदयें चोवीशनी सत्ता होय ते अनंतानुबंधीआ चारनी विसंयोजना पूर्वें चार गति मध्यें कही छे, ते अपेक्षायें लेवा अने बीजां त्रेवीश, बावीश अने एकवीश, ए सत्तास्थानक देशविरति तिर्यंचने न होय, जे भणी बावीश अने त्रेवीश, ए बे सत्तास्थानकतो क्षायिक सम्यक्त्व उपजती वेलायें होय ते तो तिर्यंचने न उपजे अने क्षायिक सम्यक्त्वनो धणी जेणे पूर्वें तिर्यंचायु बांध्युं होय तेथी ते तिर्यंच थाय तो पण ते असंख्याता वर्षायु वाला तिर्यंच मध्यें अवतरे, तेने तो देशविरतिपणुं होयज नहीं तथा संख्यातवर्षनुं तिर्यंचायु बांध्या पछी तो ते भवें क्षायिक सम्यक्त्व पामेज नहीं तेथी तिर्यंच देशविरतिने तेरने बंधें एकवीशनुं सत्तास्थानक न होय. यडुक्तं चूर्णौ " एग वीसातिरित्तेसु संज

यासंजयेसु न संजवइ ॥ कहं जस्रइ संखिद्य वासाउएसु तिरिरकेसु खायगसम्म दिठि नउववकइ असंखिद्य वासाउएसु उववकइ तस्स देसविरइनछित्ति.”

तथा देशविरति मनुष्यने पांचने उदयें एकवीश, चोवीश अने अठावीश, ए त्रण सत्तास्थानक होय तथा ठने अने सातने उदयें पांच सत्तास्थानक होय अने आठने उदयें एकवीशनां सत्तास्थानक विना बाकीनां चार सत्तास्थानक होय, जे नणी आठनो उदय, सम्यक्त्वमोहनीय साथें होय तेमाटें तिहां एकवीश प्रकृतिनुं सत्तास्थानक न होय बाकीनां चार होय ते वेदक सम्यक्त्वी मनुष्यने देशविरति गुणगणे होय. एमज नवने बंधें प्रमत्त तथा अप्रमत्त गुणगणे चारने उदयें अठावीश, चोवीश अने एकवीश, ए त्रण सत्तास्थानक होय तथा पांचने उदयें अने ठने उदयें तो जे देशविरतियें कह्यां तेहिज पांच सत्तास्थानक होय अने सातने उदयें एक एकवीशना सत्तास्थानक विना बाकीनां चार सत्तास्थानक होय. अहींआं पण पूर्वोक्त युक्ति करवी ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ २३ ॥

पंचविह चउविहेसु, ठ ठक्क सेसेसु जाए पंचेव ॥
पत्तेअं पत्तेअं, चत्तारि अ बंधु वुछेए ॥ २४ ॥

अर्थ–तथा (पंचविहचउविहेसुठठक्क के०) पंचविध बंधकने विषे तथा चतुर्विध बंधकनें विषे प्रत्येकें ठ ठ सत्तास्थानक होय, तिहां पांचने बंधें अठावीश, चोवीश, एकवीश, तेर, बार अने अगीआर, ए ठ सत्तानां स्थानक होय तेमांहेला अठावीश अने चोवीश, ए बे सत्तास्थानक तो उपशमश्रेणीयें औपशमिक सम्यक्दृष्टिने होय. तिहां जेणे नवमा गुणगणाने प्रथमजागें चार अनंतानुबंधीआ विसंयोज्या तेने चोवीशनुं सत्तास्थानक होय अने एकवीशनुं सत्तास्थानक तो क्षायिकसम्यक्दृष्टिने उपशमश्रेणीयें तथा क्षपकश्रेणीयें पण ज्यां लगें अप्रत्याख्यानीआ तथा प्रत्याख्यानीआ ए आठ कषायनो क्षय न थयो होय, तिहां लगें एकवीशनुं सत्तास्थानक होय, अने आठ कषाय खपाव्या पछी तेहिज बंधें तेरनुं सत्तास्थानक होय. तेमांहेथी पण नपुंसकवेद खपावे थके बारनुं सत्तास्थानक होय तेमांहेथी पण स्त्रीवेद खपावे थके अगीआरनुं सत्तास्थानक होय. पुरुषवेद बांधतां हास्यादिक ठ प्रकृतिनो क्षय न थाय तेमाटें तिहां पंचादिक प्रकृतिनुं सत्तास्थानक न होय.

तथा चारने बंधें अठावीश, चोवीश अने एकवीश, ए त्रण सत्तास्थानक तो उपशम श्रेणीयें पूर्वली पेरें जाणवां. बाकीनां त्रण सत्तास्थानक क्षपकश्रेणीयें हो

थ तेनुं विशेष कहे छे. तेमध्यें कोइएक जीवें नपुंसक वेदोदयें वर्त्तता क्षपकश्रेणी मांमी ते स्त्री अने नपुंसक ए बे वेद, साथें सम कालें खपावे, ते वेलायेंज पुरुष वेदनो बंध विछेदे, तेवार पछी पुरुषवेद अने हास्यादिक छ, ए साते प्रकृति साथें खपावे तथा जे स्त्रीवेदें श्रेणी मांमे, ते प्रथम नपुंसकवेद खपावी अंतरमुहूर्त्त पछी स्त्रीवेद खपावे, तेनी साथेंज पुरुषवेदनो बंध विछेदे अने पुरुषवेदबंध छेद्या पछी पुरुष वेद तथा हास्यादिक छनो समकालें क्षय करे. ते ज्यां लगें क्षय न थाय, तिहां लगें ए बे ठामें चारने बंधें वेदोदय रहित एकोदय वर्त्तताने अगीआर प्रकृतिनुं सत्तास्थानक पामीयें अने ते पुरुषवेद तथा हास्यादिकषट्क एम सात प्रकृतिनो समकालें क्षय थये थके चार प्रकृतिनुं सत्तास्थानक होय एम पांच सत्तानां स्थानक, स्त्रीवेदें अने नपुंसकवेदें श्रेणी मांमे तेने होय अने जे पुरुषवेदें क्षपकश्रेणी मांमे, तेने हास्यादिक छना क्षयनी साथें पुरुषवेदनो बंध टले ते नणी तेने चतुर्विधबंधकालें अगीआरनुं सत्तास्थानक न होय पुरुषवेद विना हास्यादिकषट्क टालियें, तेवारें पांच प्रकृतिनुं सत्तास्थानक होय ते बे समयोन बे आवलिका लगें होय तेवार पछी पुरुषवेदनो क्षय थये थके चारनुं सत्तास्थानक रहे, ते पण अंतर मुहूर्त्त पर्यंत रहे तेथी एने पण अगीआरनुं सत्तास्थानक टाली बाकी पांच सत्तास्थानक होय. एम चतुर्विध बंधकने विषे २८–२४–२१–११–५–४ ए छ सत्तानां स्थानक होय.

तथा (सेसेसुजाणपंचेवपत्तेअंपत्तेअं के०) शेष त्रिविध, द्विविध अने एकविध, ए त्रण बंधस्थानकने विषे प्रत्येकें प्रत्येकें पांच पांच सत्तानां स्थानक होय. तिहां त्रणने बंधें अछावीश, चोवीश, एकवीश, चार अने त्रण, ए पांच सत्तानां स्थानक होय. तिहां प्रथमनां त्रण सत्तास्थानक तो, उपशमश्रेणीयें होय. बाकी चार अने त्रण, ए बे सत्तानां स्थानक क्षपकश्रेणीयें होय, ते कही देखाडे छे. संज्वलना क्रोधनी अंतरकरण प्रथमस्थिति एक आवलिका मात्र शेष छते तेनो बंध, उदय अने उदीरणा समकालें व्युछेद थाय, तेवार पछी मानादिक त्रणनो बंध होय तेवारें संज्वलनाक्रोधनुं प्रथम स्थितिगत आवलिकामात्र अने बे समयोन बे आवलिबंध वर्त्ता मूकीने अन्य सर्व क्षये गयुं अने ते क्रोधनी सत्ता पण बे समय ऊणी बे आवलिका मात्र कालें क्षय पामशे ते ज्यां लगें क्षय न जाय त्यां लगें त्रिविध बंधें चार प्रकृतिनी सत्ता होय अने ते संज्वलनो क्रोध क्षयें गये थके त्रण प्रकृतिनुं सत्तास्थानक होय, ते अंतरमुहूर्त्त लगें जाणवुं. हवे द्विविधबंधें

२८–२४–२१–३–२ ए पांच सत्तास्थानक होय. ए मांहेलां त्रण तो पूर्वली पेरें उपशमश्रेणीयें नाववां अने बे सत्तास्थानक, क्षपकश्रेणीयें नाववां. ते पूर्वोक्त क्रोधनी पेरें मानने पण आवलिकामात्र प्रथम स्थितिगत करे छते संज्वलना मानना पण बंध, उदय अने उदीरणा साथेंज टले, तेवारें द्विविध बंध होय. तिहां बे समयोन बे आवलिका लगें संज्वल माननी सत्ता होय तेवारें त्रण प्रकृतिनुं सत्ता स्थानक जाणवुं अने पढी मानने क्षयें अंतरमुहूर्त्त पर्यंत बे प्रकृतिनुं सत्तास्थानक जाणवुं. तथा एकने बंधस्थानकें पण पांच सत्तास्थानक जाणवां. तेमध्यें त्रण तो पूर्वली पेरें उपशमश्रेणीयें नाववां अने बे क्षपकश्रेणीयें नाववां, ते कहे छे. जेवारें संज्वलनी मायानी प्रथमस्थिति आवलिकामात्र रहे, तेवारें संज्वलनी मायानो बंध, उदय अने उदीरणा साथें टले, तेवारें एकनुं बंधस्थानक होय अने बे समयोन बे आवलिकालगें मायानी सत्ता छे. तेनणी बेनी सत्ता होय. तेवार पढी अंतरमुहूर्त्त पर्यंत एक लोजनी सत्ता होय. ए सर्व नवमे गुणठाणे वर्त्तता जाणवी.

(चत्तारिअबंधुवुछेए के०) तथा बंधने व्युछेदें एटले बंधने अनावें सूक्ष्मसंपराय गुणठाणे २८–२४–२१–१ ए चार सत्तानां स्थानक होय, तेमध्यें त्रण तो पूर्वली पेरें उपशमश्रेणीयें कहेवां अने एक संज्वलनालोजनी सत्तानुं स्थानक क्षपकश्रेणीयें होय अने बंध तथा उदयने अनावें पण उपशांतमोहनामा अगीआरमे गुणठाणे २८–२४–२१ ए त्रण सत्तानां स्थानक होय, एनी नावना पूर्ववत् जाणवी. एम उपशमश्रेणीयें अने क्षपकश्रेणीयें सत्तानो संवेध कह्यो ॥इति॥२४॥

दस नव पन्नर साई, बंधोदय संत पयडि ठाणाणि ॥
नणिआणि मोहणिज्जे, इत्तोनामं परं वुछं ॥ २५ ॥

अर्थ–(दसनवपन्नरसाई के०) दश, नव अने पंदर, (बंधोदयसंत के०) बंध, उदय अने सत्तानां स्थानक अनुक्रमें एटले दश बंधनां स्थानक, नव उदयनां स्थानक अने पंदर सत्तानां स्थानक, तेना प्रत्येकें नांगा अने ते बंधोदय सत्ताने संवेधें (पयडिठाणाणि के०) प्रकृतिनां स्थानक ते सर्व (मोहणिज्जे के०) मोहनीयकर्मने विषे (नणिआणि के०) कह्यां. (इत्तो के०) हवे अहींथकी आगल (नामंपरंवुछं के०) अपर एटले नामकर्मना बंध, उदय अने सत्ता प्रकृतिनां स्थानक तेहना संवेधें नांगा कहेशे ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ २५ ॥

अथ नामकर्म्मणि आदौ बंधस्थानान्याह ॥ तिहां प्रथम नामकर्म नां बंधस्थान कहे छे.

तेवीस पन्नवीसा, छवीसा अठ्ठवीस गुणतीसा ॥
तीसेगतीस मेगं, बंधठाणाणि नामस्स ॥ २६ ॥

अर्थ–पहेलुं त्रेवीशनुं बंधस्थानक, बीजुं पच्चीशनुं बंधस्थानक, त्रीजुं छवीशनुं बंधस्थानक, चोथुं अठावीशनुं बंधस्थानक, पांचमुं ओगणत्रीशनुं बंधस्थानक, (तीसेगतीस के०) छठुं त्रीशनुं बंधस्थानक, सातमुं एकत्रीशनुं बंधस्थानक अने आठमुं (मेगं के०) एक प्रकृतिनुं बंधस्थानक, ए आठ, (बंधठाणाणिनामस्स के०) नामकर्मनां बंधनां स्थानक होय. ए आठ बंधस्थानक, ते तिर्यंच अने मनुष्यादिगति प्रायोग्यपणे करीने अनेक प्रकारनां छे. तेमाटें तेमज देखाडे छे.

तिहां तिर्यंचगति प्रायोग्य बांधताने सामान्यपणे २३–२५–२६–२९–३०–ए पांच बंधस्थानक होय. तेमध्यें प्रथम एकेंद्रिय तिर्यंचगति प्रायोग्य २३–२५–२६–ए त्रण बंधस्थानक होय, ते कहे छे. तिहां १ तिर्यंचगति, २ तिर्यंचानुपूर्वी, ३ एकेंद्रियजाति, ४ औदारिक, ५ तैजस अने ६ कार्मण, ए त्रण शरीर, ७ हुंडसंस्थान, ८ वर्ण, ९ गंध, १० रस, ११ स्पर्श, १२ अगुरुलघु, १३ उपघात, १४ स्थावर, १५ सूक्ष्म अथवा बादर, १६ अपर्याप्त, १७ प्रत्येक अथवा साधारण, १८ अस्थिर, १९ अशुन, २० दौर्नाग्य, २१ अनादेय, २२ अयशःकीर्त्ति, २३ निर्माण, एवं त्रेवीश प्रकृतिना समुदायनुं पहेलुं बंधस्थानक, ए अपर्याप्ता एकेंद्रियप्रायोग्य बांधतां तिर्यंच तथा मनुष्य मिथ्यादृष्टिने जाणवुं. अहींआं नांगा चार उपजे, ते कहे छे. एक सूक्ष्मपणुं साधारण सहित त्रेवीश बांधे, बीजुं सूक्ष्मपणुं प्रत्येक सहित त्रेवीश बांधे, त्रीजुं बादरपणुं साधारण सहित त्रेवीश बांधे, चोथुं बादर पणुं प्रत्येकें सहित त्रेवीश बांधे, एवं चार नांगा थाय.

तथा ए त्रेवीश प्रकृतिमांहे पराघात अने उश्वास, नेळे थके पच्चीश प्रकृतिनुं बीजुं बंधस्थानक पर्याप्त एकेंद्रिय प्रायोग्य, मिथ्यादृष्टि तिर्यंच तथा मनुष्य अने देवता जे एकेंद्रियमांहे जवा वाळा होय ते बांधे, अहींआं अपर्याप्ताने स्थानकें पर्याप्तनाम कहेवुं अने स्थिर अस्थिरमांहेथी एक तथा शुनाशुनमांहेथी एक तथा यशअयश मांहेथी एक बांधे. अहींआं नांगा वीश उपजे, ते कहे छे. बादर, पर्याप्त अने प्रत्येक ने स्थिर साथें पच्चीश बांधताने एक नांगो तेमज अस्थिर साथें पच्चीश बांधतां बीजो नां

गो थाय. ते वली शुभाशुभनें चार थाय, ते यश अयशें आठ थाय. एमज वली बादर पर्याप्त साधारणपणुं बांधतां स्थिर अने अस्थिरें बे नांगा थाय अने शुना शुनें चार नांगा थाय. तिहां साधारण साथें यशःकीर्त्ति न बांधे केमके तिहां अय शनोज बंध होय तेमाटें. तथा एमज वली सूक्ष्म पर्याप्त प्रत्येकना चार नांगा थाय त था वली सूक्ष्म पर्याप्त साधारण साथें चार नांगा थाय. एम सर्व संख्यायें पच्चीश ने बंधें वीश नांगा उपजे, ए वीश मांहेला एकेंद्रिय प्रायोग्य देवता जेवारें बांधे, तेवारें तिहां बादर पर्याप्त अने प्रत्येकना आठ नांगा उपजे.

हवे ए पच्चीशमांहे आतपनाम अथवा उद्योतनाम, ए बे मांहेलो एक नेली यें, तेवारें उवीश प्रकृतिनुं बंधस्थानक थाय. अहींआं बादर अथवा सूक्ष्मने स्था नकें एक बादरज लेवो, तथा साधारणने ठामें प्रत्येकज लेवो. ए बंधस्थानक प र्याप्ता बादर प्रत्येक एकेंद्रिय प्रायोग्य मिथ्यादृष्टि तिर्यंच, मनुष्य अने देवता ए केंद्रियमांहे जनार होय, ते बांधे. अहींआं आतप उद्योत साथें स्थिर, अ स्थिर, शुन, अशुन, यश अने अयश, ए प्रकृतिने परावर्त्तें शोल नांगा जा णवा. अहींआं आतप, उद्योत, ते सूक्ष्म साधारण अने अपर्याप्त साथें न होय तेमाटें ते साथें नांगा न कहेवा. तथा यशःकीर्त्ति पण सूक्ष्म साधारण अने अपर्या प्त साथें न बांधे. अहींआं एक आतप, स्थिर, शुन अने यश. बीजो आतप, स्थि र, शुन, अने अयश. त्रीजो आतप, स्थिर, अशुन अने यश. चोथो आतप, स्थि र, अशुन अने अयश. पांचमो आतप, अस्थिर, शुन अने यश. उठो आतप, अ स्थिर, शुन ने अयश. सातमो आतप, अस्थिर, अशुन अने यश. आठमो आ तप, अस्थिर, अशुन, ने अयश, ए आठ नांगें एकेंद्रिय पर्याप्त प्रायोग्य आ तप साथें उवीश प्रकृति बांधे, तेमज आठ नांगे उद्योतसाथें पण उवीश प्र कृति बांधे, एवं शोल नांगा थया. एम एकेंद्रिय प्रायोग्य बांधतां त्रणे बंध स्थानकें थइने चालीश नांगा थाय.

हवे बेंद्रिय प्रायोग्य बांधताने २५–२९–३० ए त्रण बंधस्थानक होय. तिहां २ तिर्यंचद्विक, ३ बेंद्रियजाति, ५ औदारिकद्विक, ६ तैजस, ७ कार्मण, ८ हुं मसंस्थान, ९ छेवठुंसंघयण, १० वर्ण, ११ गंध, १२ रस, १३ स्पर्श, १४ अ गुरुलघु, १५ उपघात, १६ त्रस, १७ बादर, १८ अपर्याप्त, १९ प्रत्येक, २० अ स्थिर, २१ अशुन, २२ दौर्नाग्य, २३ अनादेय, २४ अयशःकीर्त्ति, २५ निर्मा ण, ए पच्चीश प्रकृतिना समुदाय रूप बंधस्थान अपर्याप्त बेंद्रिय प्रायोग्य मिथ्यादृष्टि

मनुष्य तथा तिर्यंच बांधे. अहींआं अपर्याप्त नामनी साथें शुनाशुनादिक परावर्त्त मान प्रकृति मांहेली अशुनज बंधाय पण शुन न बंधाय, तेथी अहींआं बीजो नांगो कोइ उपजे नहीं. मात्र एकज नांगो थाय.

हवे ए पूर्वोक्त पच्चीश प्रकृतिने १ पराघात, २ उत्स्वास, ३ अप्रशस्तविहायो गति, ४ पर्याप्त, ५ दुःस्वर, ए पांच प्रकृति सहित करीयें अने अपर्याप्त रहित करीयें, तेवारें उंगणत्रीश प्रकृतिना समुदायरूप बंधस्थानक थाय, ते पर्याप्ता बेंड्रिय प्रायोग्य मिथ्यादृष्टि जीव बांधे. अहींआं थिर, अथिर, शुन अने अशुन, यशने अयश, ए प्रकृति पर्याप्ता सहित छे तेथी तेना परावर्त्त एक शुन साथें तथा एक अशुन साथें एवं बे नंग स्थिरना अने बे अस्थिरना, एवं चार थया. ते चार अयशःकीर्त्ति साथें तथा चार यशःकीर्त्ति साथें बांधे, तेवारें आठ नांगा थाय.

ते उंगणत्रीश प्रकृतिने उद्योत सहित बांधतां त्रीशनुं बंधस्थानक ए पण पर्याप्त बेंड्रिय प्रायोग्य मिथ्यात्वीने होय. तिहां पण पूर्वोक्त रीतें नांगा आठ उपजे. ए सर्व मली बेंड्रिय प्रायोग्य त्रण बंधस्थानकें थइने नांगा सत्तर थया.

तेमज तेंड्रिय प्रायोग्य पण एज त्रण बंधस्थानकें थइने सत्तर नांगा कहेवा पण तिहां एटलुं विशेष जे बेंड्रियजातिने स्थानकें तेंड्रियजाति कहेवी. तेमज चौरिंड्रिय प्रायोग्य पण एज त्रण बंधस्थानकें नांगा सत्तर कहेवा अने तेंड्रियजातिने स्थानकें चौरिंड्रिय जाति कहेवी. एम शरवाले विकलेंड्रियने विषे एकावन नांगा थाय.

हवे पंचेंड्रियतिर्यंच प्रायोग्य बांधतां पच्चीश, ओगणत्रीश अने त्रीश, ए त्रण बंधस्थानक होय. तिहां पच्चीश प्रकृतिनुं बंधस्थानक अपर्याप्त पंचेंड्रिय तिर्यंच प्रायोग्य मिथ्यात्वी तिर्यंच अने मनुष्य बांधे, ते प्रकृतिनां नाम अपर्याप्त बेंड्रिय प्रायोग्यनी पेरें कहेवां. पण एटलुं विशेष जे बेंड्रियजातिने स्थानकें पंचेंड्रियजातिनाम कहेवुं. अहींआं नांगो एकज पूर्वली पेरें अशुननो जाणवो.

तथा २ तिर्यंचद्विक, ३ पंचेंड्रियजाति, ५ औदारिकद्विक, ६ तैजस, ७ कार्मण, ८ छ संघयण मांहेलुं एक संघयण, ९ छ संस्थान मांहेलुं एक संस्थान, १३ वर्णचतुष्क, १४ अगुरुलघु, १५ उपघात, १६ पराघात, १७ उत्स्वास, १८ खगति बे मांहेली एक खगति, १९ त्रस, २० बादर, २१ पर्याप्त, २२ प्रत्येक, २३ स्थिर, अस्थिरमांहेली एक, २४ शुन अने अशुन मांहेली एक, २५ सौनाग्य, दौर्नाग्य मांहेली एक, २६ सुस्वर, दुःस्वर मांहेली एक, २७ आदेय अने अनादेय मांहेली एक, २८ यशःकीर्त्ति, अयशःकीर्त्ति मांहेली एक अने २९

निर्माण. ए ओगणत्रीश प्रकृतिनुं बंधस्थानक पर्याप्त पंचेंद्रिय तिर्यंच प्रायोग्य मिथ्यात्वी अने सास्वादनी चारे गतिना जीव बांधे. अहींआं एटलुं विशेष जे सास्वादनीने संघयण तथा संस्थान पांच पांच मांहेलुं एकेक कहेवुं. केमके हुंमसंस्थान तथा छेवठ्ठ संघयणनो बंध, सास्वादन गुणठाणे नथी माटें. ए बंधस्थानकें (४६०८) नांगा उपजे, ते देखाडे छे. छ संघयण मांहेथी एक संघयणना बंध साथें ओगणत्रीश प्रकृति बांधतां एक नांगो थाय, तेवा छ संघयणें छ नांगा थाय. तेवली एकेका संस्थानना बंध साथें छ छ नांगा लेतां छ संस्थानना छत्रीश नांगा थाय. ते छत्रीश नांगा शुनखगति साथें थया. तेमज अशुनखगतिना छत्रीश मेलवतां ७२ नंग थाय. तेवली स्थिर अने अस्थिर साथें (१४४) थाय. ते वली शुन अशुन साथें बमणा करतां (२८८) थाय. ते वली सुस्वर तथा छुःस्वर साथें बमणा करतां (५७६) थाय. ते सौनाग्य तथा दौर्नाग्य साथें बमणा करतां (११५२) थाय. ते आदेय अनादेय साथें बमणा करतां (२३०४) थाय. ए (२३०४) यश साथें तथा (२३०४) अयश साथें बांधतां थाय. बेहु मलीने (४६०८) थायः ए नांगा सन्निपंचेंद्रिय तिर्यंचगति प्रायोग्य ओगणत्रीश प्रकृतिने बंधें थाय. तिहां विशेष आश्रयीने सास्वादन आश्रयी बांधतो विचारियें, तेवारें ते सास्वादनी हुंमसंस्थान अने छेवठ्ठुं संघयण न बांधे, माटें पांच संघयणने पांच संस्थान साथें गुणतां २५ थाय. पछी सात वार पूर्वेली पेरें बमणा करीयें, तेवारें (३२००) नांगा थाय. पण ए नांगा तेहीज (४६०८) मांहेला जाणवा, तेमाटें जूदा गणवा नहीं.

ते ओगणत्रीश प्रकृतिने उद्योत नामकर्म सहित बांधतां त्रीश प्रकृतिनुं बंधस्थानक थाय. अहींआं पण ओगणत्रीश प्रकृतिने बंधें जे (४६०८) नांगा उपना तेटलाज उद्योतने साथें नेलीने गणतां थाय. एम पंचेंद्रिय तिर्यंच प्रायोग्य त्रण बंधस्थानकें थइने (९२१७) नांगा थाय.

हवे मनुष्यगति प्रायोग्य बांधतां पच्चीश, उंगणत्रीश अने त्रीश, ए त्रण बंधस्थानक होय. तिहां नांगा कहे छे. तिहां पच्चीशनुं बंधस्थानक, अपर्याप्त मनुष्य प्रायोग्य बांधे, तिहां नांगो एक, तिर्यंचना पच्चीश, प्रकृतिना बंधनी पेरें लेवो. पण एटलुं विशेष जे तिर्यंचद्विकने ठामे मनुष्यद्विक कहेवुं. तथा बीजुं उंगणत्रीश प्रकृतिनुं बंधस्थानक मिथ्यात्वी, सास्वादनी, मिश्रदृष्टि तथा अविरति सम्यक्दृष्टि, ए चार बांधे तिहां मिथ्यात्वी तथा सास्वादनी चारे गतिना जीव बाधें. अने मिश्र तथा अविरति सम्यक्दृष्टि तो देवता, नारकीज बांधे, एने विषे पण जेम पंचेंद्रिय तिर्यंच

प्रायोग्य ओगणत्रीश प्रकृतिना बंधस्थानकने विषे नांगा (४६०८) कह्या, तेमज कहेवा. पण एटलुं विशेष जे ए मांहेलाज सास्वादनीने (३२००) नांगा कहेवा. तथा मिश्रदृष्टि अने सम्यक्दृष्टि देव, नारकी बांधे, ते नव नामकर्मनी ध्रुवबंधि प्रकृति १० मनुष्यगति, ११ मनुष्यानुपूर्वी, १२ पंचेंद्रियजाति. १४ औदारिकद्विक, १५ समचतुरस्रसंस्थान, १६ वज्रऋषननाराचसंघयण, १७ पराघात, १८ उत्स्वास १९ शुनखगति, २० त्रस, २१ बादर, २२ पर्याप्त, २३ प्रत्येक, २४ स्थिर, अस्थिरमांहेली एक, २५ शुन, अशुन मांहेली एक, २६ सुनग, २७ सुस्वर, २८ आदेय, २९ यश अने अयशमांहेली एक, ए ओगणत्रीशने बंधें नांगा आठ उपजे, केमके अहीं प्रथम संघयण, प्रथम संस्थान विना बीजा पांच संघयण तथा पांच संस्थाननो बंध नथी तथा अशुनखगति, दौर्नाग्य, दुःस्वर अने अनादेयनो बंध नथी, तेथी तेना विकल्पें नांगा न उपजे. बाकी शुन अशुन साथें एकेक तेवली स्थिर तथा अस्थिर साथें बे बे अने यश अयश साथें चार चार, एवं आठ आठ नांगा एकेक गुणगणे थाय पण ते सर्व पूर्वला (४६०८) मांहेलाज जाणवा.

ते ओगणत्रीश प्रकृतिमध्यें तीर्थंकरनामकर्म नेलीयें, तेवारें त्रीश प्रकृतिनुं बंधस्थानक थाय. ते मनुष्य प्रायोग्य देवता तथा नारकी जे सम्यक्दृष्टि होय, ते बांधे. तिहां पण नांगा आठ थाय, जेनणी तीर्थंकरनामकर्मनो बंध, मिथ्यात्वादिक त्रण गुणगणे न होय, तेथी त्रीश प्रकृतिने बंधें अधिक नांगा न थाय. एम मनुष्यगति प्रायोग्य त्रण बंधस्थानकें थइने (४६१७) नांगा थाय.

हवे देवगतिप्रायोग्य बांधतां अठावीश, ओगणत्रीश, त्रीश अने एकत्रीश, ए चार बंधस्थानक होय. ते पंचेंद्रिय तिर्यंच तथा मनुष्य बांधें. तिहां २ देवद्विक, ३ पंचेंद्रियजाति, ५ वैक्रियद्विक, १४ ध्रुवबंधिनी नव प्रकृति, १५ समचतुस्रसंस्थान, १६ शुनखगति. २० त्रसचतुष्क, २१ पराघात, २२ उत्स्वास, २३ स्थिर अथवा अस्थिर, २४ शुन अथवा अशुन, २५ सुनग, २६ सुस्वर, २७ आदेय, २८ यशःकीर्त्ति अथवा अयशःकीर्त्ति, ए अठावीश प्रकृतिना समुदायें बांधतां अठावीशनुं बंधस्थानक कहीयें. ए बंधस्थानक मिथ्यात्वथी मांमीने देशविरति गुणगणा लगेंना मनुष्य, तिर्यंच बांधे अने ते पछी छठा गुणगणे एकला मनुष्य पण बांधे. अहींआं स्थिर अथवा अस्थिर, शुन अथवा अशुन यश अने अयशने परावर्त्ते आठ नांगा थाय तथा अप्रमत्त अने अपूर्वकरण गुणगणावाला मनुष्यपण बांधे परंतु तिहां स्थिर, शुन अने यशज बांधे. अहींआं सर्व शुनज बंधाय

मार्टें एकज नांगो उपजे, ते पण ए आठ मांहेलोज ठे मार्टें पृथक् गणवो नहीं.

ते अठावीशमांहे जिननाम नेलतां ओगणत्रीश प्रकृतिनुं बंधस्थानक देव प्रायोग्य, ते अविरति सम्यक्दृष्टि, देशविरति तथा प्रमत्त मनुष्यज बांधे. तिहां पण स्थिर, अस्थिर, शुन, अशुन, यश अने अयशने परावर्त्तें आठ नांगा थाय. वली ए ओगणत्रीशनुं बंधस्थानक एकली स्थिरादिक शुन प्रकृतियें सहित अप्रमत्त अने अपूर्वकरणवालो मनुष्य पण बांधे. तिहां एकज नांगो थाय, ते तदंतरनूत जाणवो.

तथा ते अठावीशमांहे आहारद्विक नेलीयें अने जिननाम नेलीयें नहीं, तेवारें त्रीश प्रकृतिनुं बंधस्थानक देवगति प्रायोग्य अप्रमत्त तथा अपूर्वकरण गुणठाणा वालो मनुष्यज बांधे. तेपण स्थिर, शुन अने यशज बांधे. पण अस्थिर, अशुन अने अयश न बांधे तेमार्टें तिहां पण एकज नांगो थाय.

तथा ते त्रीशमांहे वली जिननाम नेलीयें, तेवारें एकत्रीश प्रकृतिनुं बंधस्थानक देव प्रायोग्य अप्रमत्त अने अपूर्वकरणवालो मनुष्यज बांधे. अहींआं पण शुन प्रकृतिनोज बंध ठे, तेमार्टें एकज नांगो होय. एम सर्व मलीने देवगति प्रायोग्य चारे बंधस्थानकें थइने अढार नांगा थाय. हवे नरकगतिप्रायोग्य नांगा कहे ठे.

हवे नरकगति प्रायोग्य बांधताने एकज अठावीश प्रकृतिनुं बंधस्थानक होय. २ नरकद्विक, ३ पंचेंद्रियजाति, ५ वैक्रियद्विक, ६ हुंमसंस्थान, ७ पराघात, ८ उच्छ्वास, ए अशुनविहायोगति, १० त्रस, ११ बादर, १२ पर्याप्त, १३ प्रत्येक, १४ अस्थिर, १५ अशुन, १६ दौर्नाग्य, १७ डुःस्वर, १८ अनादेय, १ए अयशःकीर्त्ति, २८ नामध्रुवबंधिनी नव प्रकृति, ए अठावीश प्रकृतिनुं बंधस्थानक पंचेंद्रिय तिर्यंच तथा मनुष्य मिथ्यात्व गुणठाणावाला बांधे. अहींआं सर्व परावर्त्तमान मांहेली अशुनप्रकृतिज बांधे मार्टें विकल्प नहीं तेथी नांगो पण एकज होय.

हवे देवगति प्रायोग्य बंध व्युछेद पामे थके पण अपूर्वकरणना सातमा नागथी मांमीने सूक्ष्मसंपराय गुणठाणाना अंत पर्यंत पण एकज यशःकीर्त्ति नामकर्मनी प्रकृतिने एकला मनुष्य बांधे. तिहां एकनुं बंधस्थानक लेवुं इतिसमुच्चयार्थः॥ २६ ॥

अथैकस्मिन् बंधस्थाने कति नंगाः सर्वसंख्यायाः स्युरित्याह ॥

हवे कया बंधस्थानकें केटला नांगा, सर्व संख्यायें होय, ते कहे ठे.

चउ पणवीसा सोलस, नव बाणउई सयाय अडयाला ॥
एयालुत्तर ठाया, लसया इक्किक्कि बंध विही ॥ २७ ॥

अर्थः—अपर्याप्ता एकेंद्रिय प्रायोग्य त्रेवीश प्रकृतिने बंधे (चउ के०) चार नांगा होय, तथा पच्चीशने बंधे एकेंद्रिय प्रायोग्य वीश, बेंद्रिय प्रायोग्य एक, तेंद्रिय प्रायोग्य एक, चौरिंद्रिय प्रायोग्य एक, पंचेंद्रियतिर्यंच प्रायोग्य एक, अने मनुष्य प्रायोग्य एक, एवं पच्चीशने बंधे (पणवीसा के०) पच्चीश नांगा होय तथा एकेंद्रियप्रायोग्य बव्वीशने बंधे (सोलस के०) शोल नांगा होय, तथा देव प्रायोग्य अठावीशने बंधे आठ नांगा अने नरकप्रायोग्य अठावीशने बंधे एक नांगो, एवं अठावीशने बंधे (नव के०) नव नांगा होय. तथा बेंद्रियप्रायोग्य आठ, तेंद्रियप्रायोग्य आठ, चौरिंद्रिय प्रायोग्य आठ, पंचेंद्रियतिर्यंच प्रायोग्य बेंतालीशशेंने आठ, पंचेंद्रिय मनुष्य प्रायोग्य बेंतालीशशेंने आठ अने देव प्रायोग्य आठ, एवं सर्व मली ओगणत्रीश प्रकृतिना बंधस्थानकें (बाणउईसयायअडयाला के०) बाणुशें ने अडतालीश नांगा होय तथा बेंद्रिय प्रायोग्य आठ, तेंद्रिय प्रायोग्य आठ, चौरिंद्रिय प्रायोग्य आठ, पंचेंद्रियतिर्यंच प्रायोग्य बेंतालीशशें ने आठ, मनुष्य प्रायोग्य आठ अने देवप्रायोग्य एक, एवं सर्व मलीने त्रीश प्रकृतिने बंधस्थानकें (एयालुत्तरबायालसया के०) बेंतालीशशें ने एकतालीश नांगा थाय अने एकत्रीश प्रकृतिने बंधस्थानकें देवप्रायोग्य, (इक्किक्किबंधविही के०) एकविध बंधनो एकज नांगो होय. ए सर्व मली आठे बंधस्थानकें थइने नामकर्मना (१३९४५) तेर हजार, नवशें ने पिस्तालीश नांगा थाय. ए नामकर्मना बंधस्थानकना नांगा कह्या ॥ इति ॥ २७ ॥

॥ अथ उदयस्थानान्याह ॥ हवे नामकर्मनां बार उदयस्थानक कहे छे.

वीसिगवीसा चउवी, स गाउ एगाहि याय इगतीसा ॥
उदयठाणाणि नवे, नव अठय हुंति नामस्स ॥ २८ ॥

अर्थ—(वीसिगवीसा के०) प्रथम वीश प्रकृतिनुं उदयस्थानक, बीजुं एकवीशनुं उदयस्थानक, तेवार पछी (चउवीसगाउएगाहियायइगतीसा के०) चोवीश प्रकृतिनां उदयस्थानकथकी मांमीने एकेक प्रकृतियें अधिक करतां निरंतरपणे एकत्रीश प्रकृति लगें आठ, (उदयठाणाणिनवे के०) उदयनां स्थानक होय, एटले चोवीशनुं, पच्चीशनुं, बव्वीशनुं, सत्तावीशनुं, अठावीशनुं, उगणत्रीशनुं, त्रीशनुं अने एकत्रीशनुं ए आठ थयां अने बे पूर्वेला मली दश उदयस्थानक थयां तथा अगीआरमुं (नव के०) नव प्रकृतिनुं उदयस्थानक अने बारमुं (अठय के०) आ

ठ प्रकृतिनुं उदयस्थानक, ए बार उदय स्थानक, (हुंतिनामस्स के०) नामकर्मनां होय ॥ इत्यक्षरार्थः ॥ २८ ॥ हवे एनुं विवरण लखियें ठैयें.

अहींआं एकेंद्रियादिकनी अपेक्षायें अनेक नांगा उपजे, ते देखाडे ठे. तिहां एकेंद्रियने एकवीश, चोवीश, पच्चीश, ठवीश अने सत्तावीश, ए पांच उदयस्थानक होय. तिहां १ तैजस, २ कार्मण, ३ अगुरुलघु, ४ स्थिर, ५ अस्थिर, ६ शुन, ७ अशुन, ८ वर्ण, ९ गंध, १० रस, ११ स्पर्श, १२ निर्माण; ए बार प्रकृतिनो उदय ध्रुव ठे. तेमाटें ए नामकर्मनी ध्रुवोदयिका बार प्रकृति तेरमा गुणगणा लगें उदय आश्रीने सर्व जीवने होय, माटें सर्वत्र लेवी अने तिर्यंचद्विक, ३ स्थावर, ४ एकेंद्रियजाति, ५ बादर अथवा सूक्ष्म, पर्याप्त अथवा अपर्याप्त, ७ दौर्नाग्य, ८ अनादेय, ९ यशःकीर्त्ति, अथवा अयशःकीर्त्ति, ए नव प्रकृति, पूर्वोक्त बार प्रकृतिमांहे नेलीयें, तेवारें एकवीश प्रकृतिनुं उदयस्थानक, एकेंद्रिय जीवने पूर्वला नवनुं शरीर मूक्या पठी जिहां लगें आगलें जइ अवतर्यो नथी तेने वचालें जाणवो· एटले नवने अपांतरालें वर्त्तता एकेंद्रियने होय. अहीं नांगा पांच उपजे, ते कहे ठे. एक सूक्ष्म पर्याप्त साथें एकवीशने उदयें बीजो बादर पर्याप्त साथें एकवीशने उदयें, ए बे नांगा पर्याप्तना थया. तेमज वली अपर्याप्त साथें पण बे नांगा थाय. ए चार नांगा थया. तेमांहेला सूक्ष्म पर्याप्त अने सूक्ष्मअपर्याप्त तथा बादर अपर्याप्त, ए त्रण नांगा तो अयशःकीर्त्ति साथें होय, पण तिहां यशःकीर्त्तिनो उदय न होय "णोसुहुमतिगेणजसं" ए वचनथी जाणवुं. अने बादर पर्याप्त साथें यशःकीर्त्ति सहित एकवीशने उदयें एक नांगो तथा अयशःकीर्त्ति सहित एकवीशने उदयें बीजो नांगो, ए बे नांगा पूर्वला त्रण नांगा साथें मेलवतां पांच नांगा थाय. अहींआं जे जीव, आगलें पोताने योग्य सर्वे पर्याप्ति पूर्ण करशे, तेने योग्यपणें करी लब्धि आश्रयीने नवांतरालें पण पर्याप्तो कहीयें. अहींआं लब्धि पर्याप्तानीज विवक्षा जाणवी.

तेवार पठी ते शरीरस्थने ते एकवीश प्रकृतिना उदयमांहे एक औदारिक शरीर, बीजुं हुंमसंस्थान, त्रीजुं उपघात, चोथो प्रत्येक अथवा साधारण, ए चार प्रकृति क्षेपीयें अने एक तिर्यंचनी आनुपूर्वी काढीयें, तेवारें चोवीश प्रकृतिनुं उदयस्थानक होय. अहींआं पूर्वोक्त पांच नांगाने प्रत्येक तथा साधारण साथें बे गुणा करीयें, तेवारें दश नांगा थाय. तेमांहे एक नांगो वैक्रियनो नेलीयें जे नणी बादर वायुकाय वैक्रिय शरीर करे ठे तिहां पण चोवीशनो उदय होय, पण

एटलुं विशेष जे औदारिक शरीरने स्थानकें वैक्रिय शरीर कहेवुं. तिहां बादर, प्रत्येक, पर्याप्त अने अयशःकीर्त्ति साथें एकज नांगो होय, जे नणी तेउकाय तथा वायुकायने साधारण तथा यशःकीर्त्तिनो उदय न होय,तेथी तेना नांगा न उपजे. एम सर्व मलीने चोवीशने उदयें अगीआर नांगा थाय.

तेवार पछी ते शरीर पर्याप्ताने चोवीशना उदयमांहे पराघातनो उदय नेलीयें, तेवारें पच्चीश प्रकृतिनो उदय थाय. ए उदय शरीर पर्याप्ति पूरी कस्या पछी होय. तिहां बादर पर्याप्त साथें प्रत्येक तथा साधारण गुणतां बे नांगा थाय, ते यशःकीर्त्ति तथा अयशःकीर्त्ति साथें गुणतां चार नांगा थाय. तेमज बादरने स्थानकें सूक्ष्म साथें प्रत्येक अने साधारणना विकल्पें बे नांगा थाय. ए बे नांगे एकली अयशःकीर्त्तिज लाने. पण यशःकीर्त्ति न लाने माटें तेना नांगा न लेवा. एवं छ नांगा थया तथा बादर वायुकायने वैक्रिय करतां शरीर पर्याप्तियें पर्याप्ता थया पछी पराघातनो उदय नेलतां पण पच्चीश प्रकृतिनुं उदय स्थानक लाने, तिहां पण पूर्वली पेरें एकज नांगो होय, एम सर्व मली पच्चीशने उदयें सात नांगा थाय.

तथा श्वासोच्छ्वासपर्याप्तियें करी पर्याप्ता थया पछी ते पच्चीशना उदय मांहे वली श्वासोच्छ्वासनो उदय नेलीयें, तेवारें छव्वीश प्रकृतिनुं उदयस्थानक थाय. अहींआं पण पूर्वली पेरें नांगा छ थाय अथवा शरीरपर्याप्तें पर्याप्ताने उच्छ्वासने अनुदयें एटले ज्यां सुधी श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति पूर्ण न थाय, त्यां सुधी उच्छ्वासना उदय विना उद्योतनो उदय होय, तेवारें पण छव्वीशनुं उदयस्थानक थाय. तिहां बादरने उद्योत सहित छव्वीशने उदयें प्रत्येक साथें एक नांगो, तेमज साधारण साथें बीजो नांगो, ते बे नांगा यशःकीर्त्ति साथें लेवा तथा तेहिज बे नांगा अयशःकीर्त्ति साथें लेवा. एम चार नांगा थाय. तथा उद्योतने स्थानकें आतपनो उदय नेलतां पण छव्वीशनुं उदयस्थानक थाय. तिहां प्रत्येकने यश तथा अयशें करी बे नांगा थाय, केमके आतप ते पृथ्वीकायमांहेज होय माटें एक प्रत्येकज लीधो अने उद्योत तो वनस्पतिमांहे पण होय माटें तिहां प्रत्येक अने साधारण बेहु लीधा तथा आतप अने उद्योतनो उदय ते बादरनेज होय पण सूक्ष्मनें न होय माटें अहींआं सूक्ष्मनो उदय न लीधो तथा बादर वायुकायने वैक्रिय करतां श्वासोच्छ्वास पर्याप्तियें करी पर्याप्ता वायुकायने ते पच्चीश प्रकृति मध्यें उच्छ्वासनो उदय नेलतां छव्वीशनो उदयें होय. तिहां नांगो एक जाणवो केमके वायुकाय

ने आतप उद्योत तथा यशःकीर्त्तिनो उदय पण नथी तेमाटें. अहीं बीजा नांगा न पामीयें. एम ढवीश प्रकृतिने उदयें सर्वे मली तेर नांगा थाय.

तथा ते श्वासोछ्वास पर्याप्तियें करी पर्याप्ताने श्वासोछ्वास सहित ढवीशना उदयमांहे आतप तथा उद्योत, ए बे मांहेला एकेकनो उदय नेलतां सत्तावीशनो उदय थाय. तिहां पूर्वलीपेरें ढवीशना उदयमांहे उद्योत नेलतां चार अने आतप नेलतां बे, एवं ढ नांगा जे पूर्वें कह्या,तेज अहीं पण जाणवा. जे नणी कह्युं ढे के, "एगेंदिय उदयेसु, पंचयएक्कार सत्ततेरसय ॥ ढक्कं कमसो नंगा, बायाल हुंति सव्वेवि ॥" एम एकेंड्रियना उदयस्थानकने विषे एकवीशना उदयें पांच, चोवीशना उदयें अगीआर, पच्चीशना उदयें सात, ढवीशना उदयें तेर अने सत्तावीशना उदयें ढ, ए रीतें पांच उदयस्थानकें थइ सर्वे मली बेंतालीश नांगा होय.

हवे बेंड्रियना एकवीश, ढवीश, अठावीश, ओगणत्रीश, त्रीश अने एकत्रीश, ए ढ उदयस्थानक होय. तिहां नांगा कहे ढे.

तिहां २ तिर्यंचद्विक, ३ बेंड्रियजाति, ४ त्रस, ५ बादर, ६ पर्याप्त, ७ दौर्नाग्य, ८ अनादेय, ए यशःकीर्त्ति अथवा अयशःकीर्त्ति, ए नव प्रकृति थइ. एनी सार्थें बार ध्रुवोदयी प्रकृति मेलवतां एकवीश प्रकृतिनुं उदयस्थानक विचालें विग्रहगतियें वर्त्तता नवने अपांतरालगतियें बेंड्रिय जीवने होय. अहींआं अपर्याप्ता सार्थें अयशःकीर्त्ति लेतां नांगो एक थाय तथा पर्याप्ता सार्थें यशःकीर्त्ति अने अयशःकीर्त्ति लेतां बे नांगा पर्याप्ताना थाय. एवं सर्वे मली त्रण नांगा थाय.

हवे ते बेंड्रियने स्वस्थाने अवतस्था पढी ते पूर्वोक्त एकवीश प्रकृतिना उदयस्थानक मांहेथी तिर्यगानुपूर्वी काढीयें अने औदारिकद्विक, हुंमसंस्थान, ढेवठुं संघयण, उपघात अने प्रत्येक ए ढ प्रकृति नेलीयें, तेवारें ढवीश प्रकृतिनुं उदयस्थानक होय. अहींआं पण पूर्वली पेरें नांगा त्रण थाय.

तेवार पढी शरीर पर्याप्तियें पर्याप्ताने पराघात तथा अशुनखगति, ए बे प्रकृतिनो उदय वधे, तेवारें अठावीश प्रकृतिनुं उदयस्थानक थाय. अहींआं यशःकीर्त्ति तथा अयशःकीर्त्तियें करीने नांगा बे थाय, केमके अशुनखगतियें अपर्याप्तनामनो उदय न होय ते माटें तेनो एक नांगो पूर्वोक्त त्रण मांहेथी टले शेष बे नांगा होय.

ते वली श्वासोछ्वास पर्याप्तियें पर्याप्ता थया पढी श्वासोछ्वासनो उदय वधे तेवारें उगणत्रीशने उदयें पण तेमज पूर्वोक्तरीतें बे नांगा होय अथवा शरीर पर्याप्तियें पर्याप्ताने ते अठावीशना उदयमांहे उछ्वासना उदय विना उद्योतनो उदय

जेलतां पण उंगणत्रीशनो उदय थाय. तिहां पण नांगा बे होय, एम उंगणत्रीश ने उदयें सर्व मली चार नांगा थाय.

ते उच्छ्वास सहित उंगणत्रीश प्रकृतिमांहे सुस्वर, डुःस्वर मांहेला एकनो उदय जेलतां त्रीशनो उदय थाय. अहींआं यशःकीर्त्ति तथा अयशःकीर्त्ति साथें नांगा बे, ते बे नांगा सुस्वरना अने बे डुःस्वरना एवं चार नांगा थाय. अथवा श्वासोच्छ्वास पर्याप्तियें करी पर्याप्ताने जिहां लगें नाषा पर्याप्ति पूर्ण करी न होय. तिहां लगें बेहु स्वरना उदय विना उद्योतनो उदय जेलतां पण त्रीशनुं उदयस्था नक होय. अहिंआं यशःकीर्त्ति अने अयशःकीर्त्तिना विकल्पें बे नांगा थाय. एम सर्व मली त्रीशने उदयें ब नांगा थाय.

तथा स्वर सहित त्रीशना उदय मांहे उद्योतनो उदय जेलतां एकत्रीशनो उद य नापापर्याप्तियें करी पर्याप्ता जीवने होय. अहींआं यश, अयशें तथा स्वर अने डुःस्वरना विकल्पें चार नांगा थाय. एम सर्व मलीने एकवीशने उदयें त्रण, बवीश ने उदयें त्रण, अघावीशने उदयें बे, उंगणत्रीशने उदयें चार, त्रीशने उदयें ब, अने एकत्रीशने उदयें चार, एम ब उदयस्थानकें थइने बावीश नांगा बेंडियने तथा तेज बावीश नांगा तेंडियने तेमज चौरिंडियने पण तेटलाज उदय स्थानकें थइ बावीश नांगा होय. एम विकलेंडिय मध्यें सर्व मलीने नांगा बाशठ होय.

हवे सामान्यें पंचेंडिय तिर्यंच मध्यें ब उदयस्थानक होय, ते कहे बे. एक वीश, बवीश, अघावीश, उंगणत्रीश, त्रीश अने एकत्रीश, ए ब उदय स्थानक होय. तिहां १ तिर्यंचद्विक, ३ पंचेंडियजाति, ४ त्रस, ५ बादर, ६ पर्याप्त, अप र्याप्तमांहेली एक, ७ सौनाग्य, दौर्नाग्य मांहेली एक, ८ आदेय, अनादेयमांहे ली एक, ए यशःकीर्त्ति अयशःकीर्त्ति मांहेली एक, ए नव तथा बार ध्रुवोदयी ए वं एकवीश प्रकृतिनुं उदयस्थानक, पंचेंडिय तिर्यंचने पूर्वनवनुं शरीर ग्रंफ्या पठी मार्गे विचालें विग्रहगतियें होय. अहींआं पर्याप्त नामने उदयें वर्त्तताने सुन ग डुर्नगने विकल्पें नांगा बे, ते वली आदेय अनादेयने विकल्पें नांगा चार, ते चार यशःकीर्त्ति साथें अने चार अयशःकीर्त्ति साथें एवं आठ नांगा थाय अने अप र्याप्त नामने उदयें वर्त्तताने सौनाग्य, आदेय अने यशःकीर्त्तिनो उदय न होय. तेमाटें विकल्पने अनावें बीजो नांगो पण न उपजे, माटें तिहां एकज नांगो जाणवो, एवं नव नांगा थया. अहींआं कोइएक आचार्य कहेबे के सुनग अने आदेयनो साथेंज समकालें उदय होय, तेम डुर्नग अने अनादेयनो पण उद

य साथेंज होय, तेथी ए बे साथें बे नांगा ते यशःकीर्त्ति अने अयशःकीर्त्ति साथें गुणतां चार नांगा पर्याप्त साथें थाय. अने एक अपर्याप्तनो नांगो, एवं पांच नांगा थाय. एम ए सुनग, डुर्नग तथा आदेय, अनादेयने विषे आगलें पण सर्वत्र मतांतरना नांगानो नेद जाणवो. ते पोतानी मतियें विचारी लेवो.

तथा तेहिज पंचेंद्रिय जीव शरीरस्थने अवतर्या पढी ते एकवीशना उदय मांहेथी तिर्यंचानुपूर्वीनो उदय टालीयें अने औदारिकद्विक, ढ संघयण मांहेलुं एक संघयण, ढ संस्थानमांहेलुं एक संस्थान, उपघात अने प्रत्येक, ए ढनो उदय नेलीयें, तेवारें ढवीशनुं उदयस्थानक थाय. तिहां पर्याप्त साथें ढ संघयण गुणतां ढ नांगा थाय. तेने ढ संस्थानें गुणतां ढत्रीश थाय. ते सौनाग्य अने दौर्नाग्य साथें गुणतां बहोंत्तेर थाय. ते आदेय अनादेय, साथें गुणतां एकशोने चुम्मालीश थाय. ते यश, अयश साथें गुणतां बशे ने अठ्याशी नांगा थाय, अने अपर्याप्ताने हुंमसंस्थान, ढेवठुं संघयण, दौर्नाग्य, अनादेय अने अयशःकीर्त्तिने उदयें एकज नांगो होय. केमके अपर्याप्ताने परावर्त्तमान अशुन प्रकृतिनोज उदय होय, पण शुंन प्रकृतिनो उदय न होय, तेमाटें एकज नांगो थाय. एम बशें नेव्याशी नांगा थया तथा मतांतरें ढवीशने उदयें एकशो पीस्तालीश नांगा पण होय.

ते शरीर पर्याप्तिं पर्याप्ता थया पढी एक पराघात, बीजी शुन, अशुनखगति मांहेली एक, ए बेनो उदय नेलतां अठ्ठावीशनो उदय थाय. तिहां पर्याप्ताना पूर्वोक्त बशें अठ्याशी नांगाने बे विहायोगतियें गुणतां पांचशें ने ढहोंत्तेर नांगा थाय. अहींआं अपर्याप्तो न होय माटें तेनो एक नांगो न लेवो.

ते अठ्ठावीशमध्यें श्वासोश्वास पर्याप्तियें पर्याप्ताने एक उश्वासनो उदय वधारतां उंगणत्रीशनो उदय थाय. अहींआं पण पूर्वली पेरें नांगा (५७६) जाणवा, अथवा शरीर पर्याप्तियें पर्याप्ताने श्वासोश्वास विना एक उद्योतनो उदय अठ्ठावीशमांहे नेलतां उंगणत्रीश प्रकृतिनुं उदयस्थानक थाय, तिहां पण (५७६) नांगा थाय, एम उंगणत्रीशने उदयें सर्व थइने (११५२) नांगा थाय.

तेवार पढी नाषापर्याप्तियें पर्याप्ताने ते उंगणत्रीशमांहे सुस्वर अथवा डुःस्वर मांहेली एक नेलतां त्रीशनो उदय थाय. अहींआं जे पूर्वें श्वासोश्वासने उदयें (५७६) नांगा कह्या तेने सुस्वर डुःस्वरने विकल्पें बमणा करतां (११५२) नांगा थाय, अथवा श्वासोश्वास पर्याप्तियें पर्याप्ताने स्वरना उदय विना उद्योतनो उद

य पूर्वोक्त उंगणत्रीशमांहे नेळीयें, तेवारें त्रीशनो उदय थाय. तिहां पण पूर्ववत् (५७६) नांगा थाय. एम सर्व मळी त्रीशने उदयें (१७२८) नांगा थाय.

तथा स्वर सहित त्रीशना उदयमांहे उद्योतनो उदय नेळतां एकत्रीशनुं उदय स्थानक थाय. अहींआं जे पूर्वें स्वर सहित त्रीशने उदयें नांगा (११५२) कह्या छे. तेटलाज नांगा जाणवा, एम सहज पंचेंद्रिय तिर्यंचने ए छ उदय स्थानकें थइने नांगा (४९०६) थाय.

हवे पंचेंद्रियतिर्यंचने वैक्रिय करतां पच्चीश, सत्तावीश, अठ्ठावीश, उंगणत्रीश, अने त्रीश, ए पांच उदय स्थानक होय. तिहां २ वैक्रियद्विक, ३ समचतुरस्रसंस्थान, ४ उपघात, ५ तिर्यंचगति, ए त्रसचतुष्क, १० पंचेंद्रियजाति, ११ सौनाग्य अथवा दौर्नाग्य, १२ आदेय अथवा अनादेय, १३ यशःकीर्त्ति अथवा अयशःकीर्त्ति, ए तेर प्रकृति साथें बार ध्रुवोदयी मेळवतां पच्चीशनो उदय थाय. अहींआं सौनाग्य दौर्नाग्यना विकल्पें नांगा बे थाय तेने आदेय अनादेय साथें गुणतां चार ते वळी यश अयशें गुणतां आठ नांगा थाय. अहींआं वैक्रिय शरीर करतां संघयण न होय अने संस्थान तो एकज समचतुरस्र होय माटें तेना नांगा न थाय.

हवे ते वैक्रिय शरीरनी पर्याप्ति पूरी थया पछी, एक पराघात बीजी शुन विहायोगति, ए बे नेळतां सत्तावीशनो उदय थाय. तिहां पण तेज आठ नांगा पूर्ववत् जाणवा.

ते पछी वैक्रिय शरीरें श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति पूरी थया पछी उच्छ्वासनो उदय नेळीयें, तेवारें अठ्ठावीशनो उदय थाय. अहींआं पण तेहिज आठ नांगा जाणवा. अथवा शरीर पर्याप्तियें पर्याप्ताने उच्छ्वासने अनुदयें उद्योतनो उदय नेळीयें, तेवारें पण अठ्ठावीशनो उदय थाय. तिहां पण एज आठ नांगा जाणवा. एम सर्व मळी अठ्ठावीशने उदयें शोळ नांगा थाय.

ते वैक्रिय नाषा पर्याप्तियें पर्याप्ताने सुस्वरनो उदय, ते पूर्वोक्त उच्छ्वास सहित अठ्ठावीशमांहे नेळतां उंगणत्रीशनो उदय थाय. तिहां पण नांगा आठ अथवा श्वासोच्छ्वास पर्याप्ताने स्वरने अनुदयने अने उद्योतने उदयें उंगणत्रीशनो उदय थाय. तिहां पण नांगा आठ जाणवा. एम उंगणत्रीशने उदयें सर्व मळी नांगा शोळ थाय.

तथा सुस्वर सहित उंगणत्रीश मांहे उद्योतनो उदय नेळतां त्रीशनो उदय थाय. तिहां पण नांगा आठ जाणवा. एम सर्व मळी वैक्रिय शरीर करतां तिर्यंच पंचेंद्रियने उपन्न नांगा थाय. एटले सर्व मळी पंचेंद्रिय तिर्यंचने (४९६२) नांगा थाय अने एकेंद्रियादिक सर्व तिर्यंचगति मांहे (५०७०) नांगा उपजे.

हवे मनुष्यने सामान्यें एकवीश, ढवीस, अठावीश, ऊंगणत्रीश अने त्रीश, ए पांच उदयस्थानक होय. ए पांचे स्थानकें सहज भांगा पंचेंड्रिय तिर्यंचनी पेरें जाणवा. पण एटलुं विशेष जे तिर्यंचगति अने तिर्यंचानुपूर्वीने स्थानकें मनुष्यगति अने मनुष्यानुपूर्वी कहेवी, तथा ऊंगणत्रीश प्रकृतिनो उदय, उद्योत रहित कहेवो तेथी ऊंगणत्रीशने उदयें (५७६) भांगा थाय. केम के तिहां उद्योतना भांगा टले तथा त्रीशने उदयें पण (११५२) भांगाज थाय पण अधिक न थाय जे भणी वैक्रिय तथा आहारक शरीर करतां मात्र साधुने उद्योतनो उदय होय, पण बीजा मनुष्यने न होय. एम शरवाले सामान्यें मनुष्यने (२६०२) भांगा होय.

तथा मनुष्यने वैक्रिय शरीर करतां पच्चीश, सत्तावीश, अठावीश, ऊंगणत्रीश अने त्रीश, ए पांच उदयस्थानक होय. तिहां प्रथम १ मनुष्यगति, २ उपघात, ३ पंचेंड्रियजाति, ५ वैक्रियद्विक,६ समचतुरस्त्रसंस्थान, १० त्रसचतुष्क, ११ सौजाग्य अथवा दौर्जाग्य, १२ आदेय अथवा अनादेय, १३ यशःकीर्त्ति अथवा अयशःकीर्त्ति अने बार ध्रुवोदयी, एवं पच्चीशनो उदय होय. तिहां पूर्वें जे वैक्रिय तिर्यंचना भांगा कह्या, तेनी पेरें आठ भांगा जाणवा.

पढी ते वैक्रिय शरीर पर्याप्तियें पर्याप्ताने पराघात अने प्रशस्तगतिने उदयें सत्तावीशनो उदय होय, तिहां पण एज आठ भांगा जाणवा.

तेवार पढी तेने श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति पूरी थये थके सत्तावीशना उदयमांहे उच्छ्वासनो उदय भेलतां अठावीशने उदयें पण आठ भांगा जाणवा अथवा साधुने वैक्रिय करतां शरीर पर्याप्ति पूरी कख्या पढी श्वासोच्छ्वासना उदय विना उद्योतनो उदय भेले थके अठावीशनो उदय होय. अहींआं एकज भांगो थाय. जे भणी साधुने दौर्जाग्य, अनादेय अने अयशःकीर्त्तिनो उदय न होय, एम अठावीशने उदयें सर्व मली नव भांगा थाय.

ते पढी श्वासोच्छ्वास सहित अठावीशमध्यें भाषा पर्याप्तियें पर्याप्ता थया पढी सुस्वरनो उदय भेलतां ऊंगणत्रीशनो उदय थाय. अहींआं पण पूर्वली पेरें भांगा आठ जाणवा अथवा साधुने स्वरनो उदय थया विना उद्योतनो उदय भेलतां ऊंगणत्रीशने उदयें भांगो एक थाय. सर्व मली ऊंगणत्रीशने उदयें नव भांगा थाय.

तथा सुस्वर सहित ऊंगणत्रीशना उदयमांहे उद्योतनो उदय भेलतां त्रीशनुं उदयस्थानक थाय. अहींआं पण पूर्ववत् एकज भांगो साधुने जाणवो. एम सर्व संख्यायें वैक्रिय मनुष्यना पांच उदयस्थानकें पइने पांत्रीश भांगा थाय.

तथा संयतने आहारकशरीर करतां पण वैक्रिय मनुष्यने कह्यां तेहीज पांच उदयस्थानक जाणवां. पण एटलुं विशेष जे वैक्रियद्विकने ठामें आहारकद्विक कहेवुं तथा अहिंआं केवल प्रशस्त पदज होय, एटले संयतने डुर्नग, अनादेय अने अयशनो उदय न होय, तेमाटें पच्चीशने उदयें एकज नांगो जाणवो. तेवार पछी शरीर पर्याप्ताने पराघात अने प्रशस्तविहायोगति नेले थके सत्तावीशनो उदय थाय. तिहां पण पूर्वली पेरें एकज नांगो जाणवो ते पछी प्राणपान पर्याप्ताने उच्छ्वासनो उदय नेले थके अठावीशने उदयें पण एकज नांगो होय अथवा शरीर पर्याप्तियें पर्याप्ताने उच्छ्वासने अनुदयें अने उद्योतने उदयें पण अठावीशनो उदय थाय. अहिं पण एक नांगो होय. एम अठावीशने उदयें शरवाले वे नांगा थाय. ते पछी नाषा पर्याप्तियें पर्याप्ताने उच्छ्वास सहित अठावीशना उदय मांहे सुस्वरनो उदय नेले, उंगणत्रीशनुं उदयस्थानक थाय. तिहां पण नांगो एक जाणवो अथवा श्वासोच्छ्वास पर्याप्तियें पर्याप्ताने सुस्वरने अनुदयें अने उद्योतने उदयें पण उंगणत्रीशनुं उदयस्थानक थाय. अहींआं पण एकज नांगो जाणवो. एम उंगणत्रीशने उदयें सर्व मली वे नांगा थाय.

ते पछी नापा पर्याप्तियें पर्याप्ताने सुस्वर सहित उंगणत्रीशना उदयमांहे उद्योतनो उदय नेले, त्रीशनो उदय थाय. तिहां पण एकज नांगो जाणवो. एम सर्व मलीने आहारक शरीर करतां संयतने पांच उदयस्थानकें थइने सात नांगा उपजे.

हवे केवली मनुष्यने वीश, एकवीश, छवीश, सत्तावीश, अठावीश, उंगणत्रीश, त्रीश, एकत्रीश, नव अने आठ,ए दश उदयस्थानक होय. तिहां १ मनुष्यगति, २ पंचेंद्रियजाति, ३ त्रस, ४ वादर, ५ पर्याप्त, ६ सुनग, ७ आदेय, ८ यशःकीर्त्ति, तथा वार ध्रुवोदयी, एवं वीश प्रकृतिनो उदय सामान्य केवलीने केवल समुद्घात करतां वचला त्रण समय पर्यंत कार्मण काययोगें वर्त्तताने होय. तिहां नांगो एक जाणवो.

तथा तीर्थंकर केवलीने तीर्थंकरनाम सहित एकवीशनो उदय, तीर्थंकरने केवल समुद्घात करतां वचला त्रण समय लगें होय. तिहां पण नांगो एक जाणवो.

तथा पूर्वोक्त वीशमांहे औदारिकद्विक छ संस्थान मांहेलुं एक संस्थान, प्रथम संघयण, उपघात अने प्रत्येक, ए छ प्रकृति नेलतां छवीशनो उदय सामान्य केवलीने समुद्घात करतां वीजे, छहे अने सातमे, ए त्रण समय सुधी औदारिक मिश्रयोगें वर्त्तता होय. अहींआं छ संस्थानें छ नांगा थाय, परंतु ते सामान्य मनुष्य

ना उदयस्थानकमध्यें गणाणा छे, तेमाटें अहींआं गण्या नथी तथा ते छवीश मांहे तीर्थंकरनामकर्म नेलतां सत्तावीशनुं उदयस्थानक तीर्थंकरनो समुद्घात करतां बीजे, छठे अने सातमे समयें होय. तिहां नांगो एकज जाणवो. अहींआं संस्थान एकज समचतुरस्त्र होय, तेथी नांगाना विकल्प न थाय.

तथा ते छवीश मध्यें १ पराघात, २ उच्छ्वास, ३ शुन अथवा अशुनखगति, ४ सुस्वर अथवा दुःस्वर मांहेली एक, ए चार नेले त्रीशनो उदय, ए सामान्य केवलीने औदारिक काययोगें वर्त्तताने होय. अहिंआं छ संस्थानने बे विहायोगतियें गणतां बार तेने सुस्वरें, दुःस्वरें गणतां चोवीश नांगा थाय परंतु ते सामान्य मनुष्यना उदयस्थानकमांहे गणाणा छे माटें अहींआं पृथक् गण्या नथी.

ए त्रीशने जिननाम सहित करतां एकत्रीशनुं उदयस्थानक थाय, ते तीर्थंकर सयोगी केवलीने औदारिककाययोगें वर्त्तताने जाणवो. अहींआं समचतुरस्त्रसंस्थान, प्रशस्तविहायोगति अने सुस्वरनोज उदय होय तेमाटें एकज नांगो होय. ते एकत्रीशमांहेथी औदारिक काययोग रुंधाय तेवारें वचनयोगनो पण रोध थाय माटें वचन योग रुंधे स्वरना उदय विना त्रीशनो उदय थाय. अहींआं पण एक नांगो तीर्थंकरने जाणवो. ते मांहेथी वली उच्छ्वास रुंधे थके उंगणत्रीशनो उदय थाय. तिहां पण नांगो एक, तीर्थंकरनेज जाणवो.

हवे सामान्य केवलीने पूर्वोक्त त्रीशमांथी वचनयोग रुंधे थके, उंगणत्रीशनो उदय, तिहां छ संस्थान अने बे विहायोगतिना नांगा बार थाय. ते सामान्य मनुष्यमां गणाणा छे माटें अहिं पृथक् न गणवा. तेमध्येंथी वली उच्छ्वास रुंधे अठावीशनो उदय थाय. अहींआं पण छ संस्थान अने बे विहायोगतिना नांगा बार थाय तेपण सामान्य मनुष्यमां गण्या छे माटें पृथक् न गणवा.

तथा १ मनुष्यगति, २ पंचेंद्रियजाति, ३ त्रस, ४ बादर, ५ पर्याप्त, ६ सुनग, ७ आदेय, ८ यशःकीर्त्ति, अने नवमुं तीर्थंकरनामकर्म, ए नवनो उदय तीर्थंकर अयोगी केवलीने चरमसमयें वर्त्तताने होय. तिहां नांगो एक जाणवो तथा ते नवमांहेथी एक तीर्थंकरनामकर्म विना शेष आठ प्रकृतिनो उदय, सामान्य अयोगी केवलीने चरम समयवर्त्तताने होय. तिहां पण नांगो एकज जाणवो. एम केवलीना दश उदयस्थानकना मली नांगा बाशठ थाय. तेमध्यें २०-२१-२७-२९-३०-३१-९-८ ए आठ स्थानकनो प्रत्येकें एकेक नांगो लेवो. तेमां बे सामान्य केवलीना उदयस्थानकना बे नांगा अने छ तीर्थंकरना उदय स्थानकना

छ नांगा लेवा. एम आठ नांगा, अहीं गणत्रीमां लेवा अने शेष चोपन नांगा तो सामान्य मनुष्यना नांगामांहेज अंतर्भूत गणाणा छे तेमाटे ते पृथक् ग्रहण न करवा. एम सर्व संख्यायें सर्व मनुष्यना नांगा (२६१५) थाय.

हवे देवताने एकवीश, पच्चीश, सत्तावीश, अठावीश, उंगणत्रीश, अने त्रीश, ए छ उदयस्थानक होय. तिहां १ देवद्विक, ३ पंचेंद्रियजाति, ४ त्रस, ५ बादर, ६ पर्याप्त, ७ सुनग, दुर्भगमांहेली एक, ८ आदेय, अनादेय मांहेली एक, ए यश, अयशमांहेली एक अने बार ध्रुवोदयी, ए एकवीशनुं उदयस्थानक नवनी अपांतरालगतियें वर्त्तताने होय. तिहां सुनग, दुर्भग आदेय, अनादेय अने यश, अयश साथें नांगा आठ होय, अहिं दौर्नाग्य अनादेय अने अयशनो उदय, ते पिशाचादिकने जाणवो.

पछी तेहीज शरीरस्थ थया पछी ते एकवीश प्रकृतिमांहे वैक्रियद्विक, उपघात, प्रत्येक, समचतुरस्रसंस्थान, ए पांच प्रकृति नेलीयें अने वैक्रियानुपूर्वी काढीयें, तेवारें पच्चीशनुं उदयस्थानक थाय. तिहां पण तेमज आठ नांगा जाणवा. ते पछी शरीर पर्याप्तियें पर्याप्ताने पराघात तथा प्रशस्तविहायोगति, ए बे प्रकृति नेले थके सत्तावीश प्रकृतिनुं उदयस्थानक थाय. तिहां पण आठ नांगा उपजे. अहिं देवताने अशुनविहायोगतिनो उदय न होय, तेथी नांगा वधे नहिं.

ते पछी प्राणपान पर्याप्ताने उच्छ्वासनो उदय नेले थके अठावीशनुं उदय स्थानक थाय. तिहां पण नांगा आठ पूर्ववत् जाणवा. अथवा शरीर पर्याप्ताने उच्छ्वासने अनुदयें अने उद्योतने उदयें पण अठावीशनो उदय थाय. तिहां पण नांगा आठ जाणवा. एम अठावीशना उदयें सर्व मली शोल नांगा होय.

ते पछी नाषापर्याप्तियें पर्याप्ताने सुस्वरनो उदय नेले थके उंगणत्रीशनो उदय थाय, तिहां पण नांगा आठ थाय, देवताने दुःस्वरनो उदय न होय. अथवा श्वासोच्छ्वास पर्याप्तियें पर्याप्ताने सुस्वरने अनुदयें अने उद्योतने उदयें पण उंगणत्रीशनो उदय होय. तिहां पण नांगा आठ जाणवा. जे नणी उत्तरवैक्रिय करतां देवताने पण उद्योतनो उदय पामीयें सर्व मली उंगणत्रीश उदयें शोल नांगा उपजे.

ते पछी नाषा पर्याप्तियें पर्याप्ताने सुस्वर सहित उंगणत्रीशमांहे उद्योतनो उदय नेले थके त्रीशनुं उदयस्थानक होय. अहीं पण नांगा आठ पूर्ववत् जाणवा. एम देवताने छ उदय स्थानकें थइने सर्व मली नांगा चोशठ उपजे.

हवे नारकीने एकवीश, पच्चीश, सत्तावीश, अठावीश अने उंगणत्रीश, ए पांच उदयस्थानक होय. तिहां १ नरकद्विक, ३ पंचेंद्रियजाति, ४ त्रस, ५ बादर, ६ पर्याप्त,

७ दुर्नग, ८ अनादेय, ९ अयशःकीर्त्ति, तथा बार ध्रुवोदयी मलीने एकवीशनोज उदय, विग्रहगतियें वर्त्तता होय. अहींआं नांगो एक होय, जे नणी नारकीने परावर्त्तमान प्रकृति मांहेली अशुन प्रकृतिनोज उदय होय. तेथी विकल्प न होय.

पढी ते एकवीशमांहे १ वैक्रियद्विक,२ हुंमसंस्थान,४ उपघात,५ प्रत्येक, ए पांचनो उदय नेलीयें अने नरकानुपूर्वीनो उदय टालीयें,तेवारें पच्चीश प्रकृतिनो उदय, नरकमांहे अवतस्या पढी शरीरस्थने जाणवो. तिहां पण नांगो एक थाय. ते पढी शरीर पर्याप्तियें पर्याप्ताने पराघात तथा अशुनखगति, ए बेनो उदय नेलीयें, तेवारें सत्तावीशना उदयें पण नांगो एक जाणवो. ते पढी प्राणपान पर्याप्तियें पर्याप्ताने श्वासोच्छ्वासनो उदय नेले अठावीशना उदयें पण नांगो एकज थाय.ते पढी नाषापर्याप्तियें पर्याप्ताने डुःस्वरनो उदय नेले थके,उंगणत्रीशना उदयें पण नांगो एक होय. एम पांचे उदय स्थानकें थइने नारकीने नांगा पांच उपजे. एम ए चारे गतिना उदयस्थानकना शरवाले नांगा (७७९१) थाय॥ इति उदय नांगा संपूर्ण॥२८

हवे कया उदयस्थानकें केटला नांगा शरवाले होय, ते कहे ढे.

इक्क बयालि क्कारस, तित्तीसा बस्सयाणि तित्तीसा ॥
बारस सत्तरससया, णहिगाणि बि पंच सीईहिं ॥२९॥

अर्थ—वीश प्रकृतिने उदय स्थानकें (इक्क के०) एक नांगो केवलीने होय. तथा एकवीशने उदयस्थानकें एकेंद्रियना पांच, विकलेंद्रियना नव, पंचेंद्रिय तिर्यंचना नव, मनुष्यना नव, केवलीनो एक, देवताना आठ,तथा नारकीनो एक, एवं (बयाल के०) बेंतालीश नांगा होय. तथा चोवीशने उदयस्थानकें (इक्कारस के०) अगीआर नांगा एकेंद्रियना होय. तथा पच्चीशने उदयें एकेंद्रियना सात, वैक्रियतिर्यंचना आठ, वैक्रियमनुष्यना आठ, आहारकनो एक, देवताना आठ, अने नारकीनो एक, एवं (तित्तीसा के०) तेत्रीश नांगा होय, तथा बवीशना उदयें एकेंद्रियना तेर, विकलेंद्रियना नव, पंचेंद्रिय तिर्यंचना बशें ने नेव्याशी, अने सहेज मनुष्यना बशेंने नेव्याशी, एवं (बस्सयाणि के०) बशें नांगा होय. तथा सत्तावीशने उदयें एकेंद्रियना ब,वैक्रियतिर्यंचना आठ,वैक्रियमनुष्यना आठ, आहारकनो एक, केवलीनो एक, देवताना आठ अने नारकीनो एक, एवं (तित्तीसा के०) तेत्रीश नांगा होय. तेवार पढी (बारससत्तरससया के०) बारस एटले बारशें अने सत्तरस एटले सत्तरशें ते (बि के०) बे अने (पंचसी

ईहिं के०) पच्चाशीयें करी (अहिगाणि के०) अधिकानि एटले अधिक, जाण वा एटले अनुक्रमें बारशें उपर बे अधिक अने सत्तरशें उपर पच्चाशी अधिक, एम अनुक्रमें अठ्ठावीशने उदयें बारशें ने बें तथा ओगणत्रीशने उदयें सत्तरशें ने पच्या शी नांगा जाणवा, तेज कही देखाडे छे. तिहां अठ्ठावीशने उदयें विकलेंड्रियना छ, पंचेंड्रिय तिर्यंचना पांचशें ने बहोंत्तेर, मनुष्यना पांचशेंने बहोंत्तेर, वैक्रियति र्यंचना शोल, वैक्रिय मनुष्यना नव, आहारकना बे, देवताना शोल, अने नार कीनो एक, एवं बारशें ने बे नांगा थाय. तथा ओगणत्रीशने उदयें विकलेंड्रियना बार, पंचेंड्रियतिर्यंचना अगीआरशें ने बावन, मनुष्यना पांचशें बहोंत्तेर, वैक्रिय तिर्यंचना शोल, वैक्रिय मनुष्यना नव, आहारकना बे, केवलीनो एक, देवताना शोल अने नारकीनो एक, एवं सत्तरशें ने पच्चाशी नांगा होय ॥ इति ॥ २९ ॥

अउणत्ती सिक्कारस, सयाणि हिय सतर पंच सठ्ठीहिं ॥
इक्किक्क गंच वीसा, दठ्ठुदयंतेसु उदयविही ॥ ३० ॥

अर्थ—तथा (अउणत्तीसिक्कारससयाणि के०) उगणत्रीशशें अने अगीआरशें ए बे उपर अनुक्रमें (सतर के०) सत्तर अने (पंचसठ्ठीहिं के०) पांशठ, (अहिय के०) अधिक करीयें, तेवारें त्रीशने उदयें बे हजार, नवशें ने सत्तर नांगा थाय अने ए कत्रीशने उदयें अगीआरशें ने पांशठ नांगा थाय, ते कही देखाडे छे. एटले त्रीशने उदयें विकलेंड्रियना अढार, तिर्यंच पंचेंड्रियना सत्तरशेंने अठ्ठावीश, मनुष्यना अगी आरशें बावन, वैक्रियतिर्यंचना आठ, वैक्रिय मनुष्यनो एक, आहारकनो एक, के वलीनो एक अने देवताना आठ, एवं सर्व मली (२९१४) नांगा थाय. तथा एक त्रीशने उदयें विकलेंड्रियना बार, पंचेंड्रिय तिर्यंचना अगीआरशें ने बावन्न अने केव लीनो एक, एवं (११६४) नांगा थाय. तथा (इक्किकगंच के०) ...
अने आठना उदयने विषे केवलीने होय एटले नवने उदयें एक... उदयें पण उगणत्रीश
उदयें एक नांगो होय. (वीसाठ्ठुदयंतेसु के०) ए वीशना उदय... वैक्रिय करतां देवता
आठना उदयस्थानक पर्यंत बार उदयस्थानक तेने विषे (उदय... न नांगा उपजे.
यना प्रकार जाणवा. सर्व उदयना नांगानी संख्या (७७९१) जा... उद्योतनो उदय
॥ अथ सत्तास्थानान्याह ॥ हवे नामकर्मनां सत्तानां स्थानक ... त जाणवा.

ति डुनउई गुण नउई, अडसी छलसी असीइ गुणसीई ॥ ...त्रीश, ए पांच
अठ्ठय छप्पन्नत्तरि, नव अठ्ठय नाम संताणि ॥ ३१ ॥ ...र, छ पर्याप्त,

अर्थ-(तिडुनवई के०) एक त्र्याणु प्रकृतिनुं सत्तास्थानक, बीजुं बाणु प्रकृतिनुं सत्तास्थानक, (गुणनवई के०) त्रीजुं नेव्याशी प्रकृतिनुं सत्तास्थानक, (अडसी के०) चोथुं अठ्याशी प्रकृतिनुं सत्तास्थानक, (बलसी के०) पांचमुं ब्याशी प्रकृतिनुं सत्तास्थानक. (असीइ के०) बहुं एंशी प्रकृतिनुं सत्तास्थानक, (गुणसीई के०) सातमुं ओगण्याएंशी प्रकृतिनुं सत्तास्थानक, (अठ्यबप्पन्नत्तरि के०) आठमुं अठोत्तेर प्रकृतिनुं सत्तास्थानक, नवमुं बहोंत्तेर प्रकृतिनुं सत्तास्थानक, दशमुं पच्चोत्तेर प्रकृतिनुं सत्तास्थानक, (नव के०) अगीआरमुं नव प्रकृतिनुं सत्तास्थानक, अने (अठ्य के०) बारमुं आठ प्रकृतिनुं सत्ता स्थानक, एवं बार, (नामसंताणि के०) नामकर्मनां सत्तास्थानक होय ॥ इत्यक्षरार्थः ॥ ३१ ॥

हवे ए बार सत्ता स्थानकनुं विवरण लखीयें बैयें. तिहां नामकर्मनी सर्व प्रकृतिना समुदायनी सत्ता होय, तेवारें त्र्याणुनुं सत्तास्थानक, तेमांहे जिननामनी सत्ता जेवारें न होय तो बाणुंनुं सत्तास्थानक तथा त्र्याणुमांहेथी १ आहारकशरीर, २ आहारक अंगोपांग, ३ आहारकबंधन, ४ आहारकसंघातन, ए चारनी सत्ता न होय, तेवारें नेव्याशीनुं सत्तास्थानक, तेमध्यें वली जिननामनी सत्ता न होय तेवारें अठ्याशीनुं सत्तास्थानक तेमांहेथी देवद्विक अथवा नरकद्विक उवेल्ये थके ब्याशीनुं सत्तास्थानक तथा अठ्याशीमांहेथी तेउ अने वायु मांहे वैक्रियाष्टक उवेली एंशीनी सत्तावंत थको पंचेंद्रियपणुं पामीने देवगतियोग्य बांधे तो देवद्विक अने वैक्रियचतुष्कने वंधें ब्याशीनुं सत्तास्थानक होय तथा ते पंचेंद्रियमांहे नरकगति प्रायोग्य बांधतो नरकद्विक अने वैक्रिय चतुष्कने बंधें पण ब्याशीनुं सत्तास्थानक होय. ते पढी नरकद्विक तथा वैक्रियचतुष्कने उवेले ... सत्ता होय अथवा देवद्विक अने वैक्रियचतुष्कने उवेले पण एंशीनी सात. वैक्रियतिर्यंचमनुष्यद्विक उवेले थके अठोत्तेरनुं सत्तास्थानक होय, ए आठ, अने नारकीनक क्षपक टालीने अनेरा जीवने होय तेमां अनव्यने तथा शना उदयें एकेंद्रिने ७७-७०-७६-७७-ए चारज सत्तास्थानक होय.

शी, अने सहेज ब सत्तानां स्थानक होय, ते कहे बे. त्र्याणु मध्येंथी नरकद्विक, होय. तथा एकेंद्रिय, बेंद्रिय, तेंद्रिय, चौरिंद्रिय, ए चार जाति तथा स्थावर, आ आठ, आद सूक्ष्म अने साधारण ए तेर प्रकृतिने क्षयें एंशीनी सत्ता तथा बाणुं (तित्तीसा के०ने क्षयें ओगणाएंशीनी सत्ता तथा नेव्याशी मांहेथी तेरने क्षयें बहोंत्ते बारस एटले आ अठ्याशी मांहेथी तेरने क्षयें पच्चोतेरनी सत्ता होय. तथा १ मनुष्य

गति, २ पंचेंद्रियजाति, ३ त्रस, ४ बादर, ५ पर्याप्त, ६ सुजग, ७ आदेय, ८ यशः कीर्त्ति, ए तीर्थंकरनामकर्म,ए नव प्रकृतिनुं सत्तास्थानक तथा तेमध्येंथी तीर्थंकर नामकर्म टालीयें, तेवारें बीजुं आठ प्रकृतिनुं सत्तास्थानक,ए बे सत्तानां स्थानक अयोगी केवलीने बेहले समयें होय· ए नामकर्मनां सत्तानां स्थानक कह्यां इत्यर्थः३१

हवे संवेधनो अर्थ कहे ले.

अठय बारस बारस, बंधोदय संत पयडिठाणाणि ॥
उहेणाऽएसेणय, जब जहा संजवं विजजे ॥ ३२ ॥

अर्थ-नामकर्मना (बंध के०) बंधस्थानक, (अठय के०) आठ अने (उद य के०) उदयस्थानक, (बारस के०) बार तथा (संत के०) सत्तानां स्थानक, (बारस के०) बार ले. (पयडिठाणाणि के०) ए प्रकृतिनां स्थानक ते (उहेणाऽएसेणय के०) उघादेशेन एटले सामान्यादेशें जाणवा. (जबजहासंजवं के०) जिहां जेटला संजवे, तिहां तेटला (विजजे के०) विजजेत् एटले वहेंचियें, अमुक बंधस्थानकें एटलां उदयस्थानक तथा एटलां सत्तानां स्थानक, एवो संवेध, ते सामान्यादेश कहीयें तथा अमुक गुणठाणे अथवा अमुकजीवस्थानकें एटलां बंधस्थानक वली ते अमुक बंधस्थानकें एटलां उदय स्थानक, एटलां सत्तानां स्थानक एम परस्परें संवेधनुं विचारवुं तेने विशेषादेश कहीयें ॥ इति ॥ ३२ ॥

॥ आदौ सामान्येन संवेधमाह ॥तिहां प्रथम सामान्यपणे बंध, उदय अने सत्तानो संवेध कहे ले.

नव पण गोदयसंता, तेवीसे पणवीस बवीसें ॥
अठ चउरबवीसे, नव सत्ति गुण तीस तीसम्मि ॥ ३३ ॥

अर्थ-(तेवीसेपणवीसबवीसे के०) त्रेवीशने, तथा पच्चीशने अने बवीशने ए त्रण बंधस्थानकें प्रत्येकें प्रत्येकें (नवपणगोदयसंता के०) नव नव उदयनां स्थानक होय· अने पांच पांच सत्तानां स्थानक होय. ते केम? जे जणी त्रेवीश नो बंध अपर्याप्त एकेंद्रिय प्रायोग्यज होय, तेना बांधनारा एकेंद्रिय तथा विकलेंद्रिय अने पंचेंद्रिय तिर्यंच तथा मनुष्य होय. एउने २१-२४-२५-२६-२७-२८-२९-३०-३१ ए नव उदयनां स्थानक होय. तेमांहेला जावे ते उदय स्थानकें वर्त्तता अपर्याप्ता एकेंद्रियप्रायोग्य त्रेवीश प्रकृतिनो बंध करे,तिहां एकवीशनो

उदय तो विग्रहगतियें वर्त्तता एकेंड्रिय, विकलेंड्रिय अने पंचेंड्रिय तिर्यंच तथा मनुष्य ने होय तिहां सत्तानां स्थानक बाणु, अठ्याशी, ठ्याशी, एंशी, अने अठोत्तेर, ए पांच सर्व जीवने होय पण मनुष्यने अठोत्तेरनी सत्ता न होय. जे नणी अठोत्तेरनी सत्ता मनुष्यद्विक उवेल्ये थाय ते उवेल्युं नथी माटें मनुष्यने चार सत्तानां स्थानक होय.

अने चोवीशनो उदय एकेंड्रिय पर्याप्तापर्याप्ताने होय. तिहां पण पूर्वें कह्यां तेज पांच सत्तानां स्थानक होय पण एटलुं विशेष जे वायुकायने वैक्रिय करतां चोवीशने उदयें वर्त्तताने एंशीनुं तथा अठोत्तेरनुं ए बे सत्तास्थानक न होय. जे माटे तेने वैक्रियषट्क अने मनुष्यद्विक निश्चयें बेज केमके वैक्रियतो साक्षात् अनुजवे बे,तेमाटें ते उवेलतो नथी अने ते उवेल्या विना नरकद्विक तथा देवद्विक पण न उवेखे समकालेंज वैक्रियषट्क उवेले, एवा निश्चय माटे. अने वैक्रिय षट्क उवेल्या पठी ज मनुष्य द्विक उवेले. परंतु तेथी पूर्वें न उवेले, तेमाटें एंशीनुं तथा अठोत्तेरनुं ए बे सत्तानां स्थानक वर्जीने बाकी बाणु अठ्याशी, तथा ठ्याशी, ए त्रण सत्तास्थानक होय.

तथा पच्चीशनो उदय पर्याप्ता एकेंड्रिय, अने वैक्रियतिर्यंच तथा वैक्रिय मनुष्यने होय. तिहां तेउ अने अवैक्रिय वायुने तो जे पांच सत्तास्थानक कह्यां, तेज पांच सत्तास्थानक कहेवां जे जणी अठोत्तेरनी सत्ता तेनेज बे, बीजाने नथी बीजा सर्व पर्याप्ता जीव अवश्य मनुष्यद्विक बांधे, तथा बीजा एकेंड्रिय, विकलेंड्रिय अने पंचेंड्रिय, तिर्यंच, जे तेउ अने वायु मांहेथी आवी अवतस्या होय, ते ज्यां लगें मनुष्यद्विक बांधे नहीं, त्यां लगें अपर्याप्तावस्थायें तेने अठोत्तेरनी सत्ता होय तेथी तेने पांच सत्तास्थानक होय अने बीजा पर्याप्ताने अठोत्तेरनी सत्ता विना बाकी चार सत्तास्थानक वैक्रिय तिर्यंच मनुष्यने त्रेवीशने बंधें अने पच्चीशने उदयें होय.

तथा ठवीशनो उदय, पर्याप्ता एकेंड्रिय तथा पर्याप्तापर्याप्ता विकलेंड्रिय अने तिर्यंच तथा मनुष्यने होय. तिहां पण पूर्वलां पांच सत्तास्थानक होय. तेमध्यें अठोत्तेरनुं सत्तास्थानक तेउ तथा अवैक्रिय वायुनी अपेक्षायें लेवुं अने बाकीनां चार सत्तास्थानक बीजा जीवो आश्री त्रेवीशने बंधें अने ठवीशने उदयें होय.

सत्तावीशनो उदय तेउ वायु वर्जीने पर्याप्ता बादर एकेंड्रिय तथा वैक्रिय तिर्यंच मनुष्यने होय. तिहां अठोत्तेर विना बाकीनां चार सत्तास्थानक जाणवां जे नणी तेउ तथा वायुने आतप अने उद्योतनो उदय नथी तेथी तेने सत्तावीशनुं उदय स्थान

क पण न होय अने तेउ तथा वायु विना तो अठोतेरनी सत्ता वीजे क्यांही न पामीयें तेथी त्रेवीशने वंधें अने सत्तावीशने उदयें चार सत्तानां स्थानक जाणवां.

अठावीश, उगणत्रीश, अने त्रीश ए त्रण उदयस्थानक पर्याप्ता विकलेंड्रिय तथा पंचेंड्रिय तिर्यंच मनुष्यने होय. तथा एकत्रीशनो उदय पर्याप्ता विकलेंड्रिय तथा तिर्यंच पंचेंड्रिय मिथ्यादृष्टिने होय. अहींआं मनुष्यद्विकनी सत्ता होय माटें एक अठोतेरनुं सत्तास्थानक टाली शेष चार सत्तास्थानक होय. एम त्रेवीशना बंधकने यथायोग्य नव उदयस्थानकें थइने चालीश सत्तास्थानक होय.

पच्चीश तथा छवीशना बंधकने पण एमज नव नव उदय स्थानकें सत्तानो संवेध जाणवो. एटले चालीश नांगा सामान्यादेशें होय. अने विशेषादेशें पण पर्याप्त एकेंड्य प्रायोग्य पच्चीशना बंधक देवताने २१–२५–२७–२७–२९–३० ए ठ उदय स्थानकने विषे बाणु तथा अठ्याशी, ए बे सत्तानां स्थानक प्रत्येकें होय अने अपर्याप्ता विकलेंड्रिय तथा अपर्याप्ता पंचेंड्रिय तिर्यंच अने मनुष्य प्रायोग्य पच्चीश प्रकतिनो तो देवताने बंध नथी केमके अपर्याप्तामांहे देवताने उपजवुं नथी तेमाटें. एटले ए त्रेवीश, पच्चीश तथा छवीशना बंधकना सर्व नव उदयें थइने एकशोने वीश नांगा थया. ए सर्व मिथ्यात्वीना जाणवा.

तथा (अठचउरठवीसे के०) अठावीशना बंधकने एकवीश, पच्चीश, छवीश, सत्तावीश, अठावीश, उगणत्रीश, त्रीश अने एकत्रीश, ए आठ उदय स्थानक होय अने बाणुं, अठ्याशी, छयाशी, तथा एंशी, ए चार सत्तास्थानक एकेका उदयें होय, ए अठावीशनो बंध, बे नेदें ठे. एक देवगतिप्रायोग्य अने वीजो नरकगति प्रायोग्य, तिहां देवगति प्रायोग्य अठावीशने बंधें आठ उदयस्थानक अनेक जीवनी अपेक्षायें पामीयें अने नरकगति प्रायोग्य अठावीशने बंधें त्रीश अने एकत्रीश, ए बे उदयस्थानक पामीयें. तिहां देवगति प्रायोग्य अठावीशने बंधें एकवीशनो उदय तो क्षायिक सम्यक्दृष्टिने अथवा क्षायोपशमिक सम्यक्दृष्टिने पण पंचेंड्रिय तिर्यंच तथा मनुष्यने नवापांतरालगतियें एटले बे गतिनी वचालें वर्त्तताने होय. पण मिथ्यादृष्टिने न होय,केमके तिहां मिथ्यादृष्टि देवगति प्रायोग्य अठावीश न बांधे. केमके मिथ्यादृष्टि तो सर्व पर्याप्तियें पर्याप्तोज देवगति प्रायोग्य अठावीश बांधे. अहींआं कोइ कहेशे के जो एम कहो ठो, तो वैक्रिय करतां तिर्यंच अने मनुष्य २५–२७–२७–२९–ने उदयें वर्त्तता मिथ्यादृष्टि देवगति प्रायोग्य अठावीश बांधे छे ते केम घटे? तत्रोत्तरं. तेणे नवने आदें पर्याप्ति पूरी करी ठे. पठी वैक्रिय शरीर क

रतां औदारिक शरीरनी निवृत्ति पर्याप्तपणे उदयथी निवर्त्ते तथापि तेने पर्याप्त ज कहीयें तेमाटें पर्याप्तावस्थायें तो तिहां मिथ्यात्वीने पण अठावीशनो बंधविरोध नथी. ए देवगति प्रायोग्य अठावीशना बंधक एकवीशने उदयें वर्त्तताने बाणुं अने अठ्याशी, ए बे सत्तास्थानक होय. पण अहींआं जिननामनी सत्ता न होय; जो कदापि जिननामनी सत्ता होय, तो तेनो बंध पण होवो जोइयें. तेवारें तो उंगणत्रीशनो बंधक थाय, तेमाटे जिननामनी सत्ता अहीं न होय.

तथा पच्चीशनो उदय, आहारक साधु तथा वैक्रिय तिर्यंच अने मनुष्य सम्यक्दृष्टिने होय तथा मिथ्यादृष्टिने पण होय. तिहां पण सामान्यें एज बे सत्ता स्थानक होय पण एटलुं विशेष जे आहारकना धणीने आहारक चतुष्क अवश्य होय, तेथी तेने एकज बाणुनुं सत्तास्थानक होय. शेष बीजा जीवोने बे सत्तास्थानक होय. ए अठावीशने बंधें पच्चीशने उदयें बे सत्तास्थानक जाणवां.

तथा छवीशनो उदय क्षायिक अने क्षायोपशमिक सम्यक्दृष्टि शरीरस्थ पंचेंद्रिय तिर्यंच मनुष्यने अठावीश, देवगति प्रायोग्य बांधतां बाणु, अने अठ्याशी ए बे सत्तानां स्थानक होय. तथा सत्तावीशना उदयें आहारक साधु तथा वैक्रिय तिर्यंच मनुष्य सम्यक्दृष्टिने तथा मिथ्यादृष्टिने तेहीज बे सत्तानां स्थानक जाणवां. तेमज अठावीश ओगणत्रीशनो उदय पण अनुक्रमें शरीर पर्याप्तियें करी पर्याप्ताने अठावीशनो उदय होय, अने श्वासोश्वास पर्याप्तियें करी पर्याप्ताने ओगणत्रीशनो उदय होय, ते क्षायिक अथवा वेदक सम्यक्दृष्टिने तथा आहारक साधु अने वैक्रिय तिर्यङ् मनुष्यने देवगति प्रायोग्य अठावीशने बंधें होय. तिहां बाणुं अने अठ्याशी, ए बे सत्तास्थानक होय.

तथा त्रीशनो उदय पंचेंद्रिय तिर्यंच मनुष्य सम्यक्दृष्टि तथा मिथ्यादृष्टि तथा आहारक करतां साधुने तथा वैक्रिय करतां साधुने होय. तिहां सामान्यें बाणुं नेव्याशी, अठ्याशी, छयाशी, ए चार सत्तास्थानक होय. अने विशेषादेशें पंचेंद्रिय तिर्यंच मनुष्य मिथ्यादृष्टिने नरकगति प्रायोग्य अठावीश बांधतां त्रीशने उदयें बाणुं नेव्याशी, अठ्याशी अने छयाशी, ए चार सत्ता स्थानक होय. तिहां बाणु अने अठ्याशी, ए बे पूर्वली पेरें जाणवां अने नेव्याशीनी सत्तानो विधि कहे छे. कोइएक जीव, नरकायु बांध्या पछी सम्यक्त्व लहीने तीर्थंकर नाम कर्म बांध्युं, ते जीव, नरकें जावाने सन्मुख थको सम्यक्त्व वमे. तिहां मिथ्यात्वें गया पछी तीर्थंकरनो बंध मटे, अने तीर्थंकरनी सत्ता होय ते तीर्थंकरनी सत्ता

छतां आहारकनी सत्ता मिथ्यात्वें न होय "नोजयसंतोमिछो" ए वचनथी तिहां नेव्याशीनी सत्ता होय. हवे छयाशीनी सत्ता केम होय? ते कहे छे. कोइ एक सर्व पर्याप्तियें पर्याप्तो एवो पंचेंद्रिय तिर्यंच अथवा मनुष्य ते तीर्थंकरनामकर्म, आहारकचतुष्क, वैक्रियचतुष्क. देवद्विक, नरकद्विक, ए तेर प्रकृति विना एंशीनी सत्तायें वर्त्ततो जीव, संक्लिष्टपरिणामे नरक गति प्रायोग्य अठावीश बांधतो वैक्रिय चतुष्क अने नरकद्विक, ए छ प्रकृतिनो अवश्य बंध करे; तेवारें तेने छयाशीनुं सत्तास्थानक थाय, तथा तेहीज विशुद्ध परिणामें वर्त्ततो देवगति प्रायोग्य अठावीश बांधतो वैक्रियचतुष्क अने देवद्विकनो अवश्य बंध करे, तेवारें पण छयाशीनुं सत्तास्थानक थाय. एम अठावीशने बंधें त्रीशने उदयें चार सत्तास्थानक होय.

तथा एकत्रीशने उदयें ए२–८८–८६–ए त्रण सत्तानां स्थानक होय. अहींआं नेव्याशीनी सत्ता न होय जे भणी एकत्रीशनो उदय, तिर्यंचने होय अने ते तिर्यंचमां तो तीर्थंकर नामकर्मनी सत्ता न होय. अने नेव्याशीनी सत्ता तो तीर्थंकर नामकर्म सहित होय, तेमाटें नेव्याशी वर्जीने शेष त्रण सत्तास्थानक होय. एम अठावीशने बंधें आठ उदय स्थानकें थइने चार सत्ताने संवेधें भांगा ओगणीश होय.

हवे (नवसत्तिगुणतीसतीसम्मि के०) ओगणत्रीशने बंधें अने त्रीशने बंधें प्रत्येकें एकवीश, चोवीश, पच्चीश, छवीश, सत्तावीश, अठावीश, ओगणत्रीश, त्रीश, अने एकत्रीश, ए नव उदय स्थानक अने त्र्याणु, बाणु, नेव्याशी, अठ्याशी, छयाशी, एंशी अने अठोत्तेर. ए सात सत्तास्थानक होय.

तिहां पंचेंद्रिय तिर्यंच अने मनुष्य प्रायोग्य ओगणत्रीश बांधतां पर्याप्ता अपर्याप्ता एवा एकेंद्रिय, विकलेंद्रिय, पंचेंद्रिय तिर्यंच मनुष्य तथा देवता नारकीने विग्रहगतियें एकवीशनो उदय होय. तिहां बाणुं, अठ्याशी, छयाशी, एंशी अने अठोत्तेर, ए पांच सत्तास्थानक होय पण एटलुं विशेष जे वाउकाय विना बीजा पर्याप्ता एकेंद्रिय विकलेंद्रिय तिर्यंच, मनुष्य, देवता तथा नारकीने एक अठोतेर विना बाकीनां चार सत्तास्थानक होय. एनुं कारण पूर्वें कह्युं छे, तेम जाणवुं.

एम चोवीश, पच्चीश अने छवीश, ए त्रण उदयें पण एज पांच पांच सत्तानां स्थानक जाणवां. तिहां जे त्रेवीशने बंधें, उदय, सत्ता, संवेध भांगा विचारतां कह्युं, तेम अहींआं पण जाणवुं. पण एटलुं विशेष जे अहीं पच्चीशने उदयें मिथ्यात्वी देव-नारकीने पण ओगणत्रीशनो बंध कहेवो.

तथा सत्तावीशनो उदय पर्याप्ता एकेंद्रिय, देवता, नारकी, वैक्रिय तिर्यंच, मनु

ष्य मिथ्यात्वीने विकलेंद्रिय अने तिर्यंच मनुष्य प्रायोग्य ओगणत्रीशनो बंध बांधतां बाणु, अठ्याशी, छ्याशी अने एंशी, ए चार सत्तास्थानक होय.

तथा अठ्ठावीश, ओगणत्रीश, ए बे उदय विकलेंद्रिय पंचेंद्रिय तिर्यंच अने मनुष्य तथा वैक्रिय पंचेंद्रिय तिर्यंच मनुष्य देव अने नारकी ओगणत्रीश बांधतां होय. तिहां पण तेहीज पूर्वोक्त चार सत्तास्थानक जाणवां.

तथा त्रीशनो उदय विकलेंद्रिय तथा पंचेंद्रिय तिर्यंच अने मनुष्यने तथा उद्योतने उदयें देवताने होय तथा एकत्रीशनो उदय विकलेंद्रिय अने पंचेंद्रिय तिर्यंचने उद्योतने उदयें होय. तिहां मनुष्यगति प्रायोग्य ओगणत्रीश बांधतां चार सत्तास्थानक, एकेंद्रिय, विकलेंद्रिय अने पंचेंद्रिय तिर्यंचने होय. तथा तिर्यग्गति अने मनुष्यगति प्रायोग्य ओगणत्रीश बांधतां मनुष्यने पोतपोतानां उदय स्थानकने विषे यथायोग्यपणे वर्त्तताने पण अठ्ठोत्तेरनुं सत्तास्थानक न होय, जे भणी मनुष्यद्विक छतां अठ्ठोतेरनी सत्ता न होय, तेमाटें तेहीज चार सत्तानां स्थानक जाणवां. तथा देव नारकीने पंचेंद्रिय तिर्यंच तथा मनुष्य प्रायोग्य ओगणत्रीश बांधतां स्वस्वोदयें वर्त्तताने बाणुं अने अठ्याशी, ए बे सत्तास्थानक होय; तिहां मिथ्यात्वी नारकीने तीर्थंकरनामकर्म छतां मनुष्यगति प्रायोग्य ओगणत्रीश बांधतां स्वस्वोदयें यथायोग्यपणे वर्त्तताने एक नेव्याशीनुं सत्तास्थानक होय जे भणी मिथ्यात्वीने आहारकचतुष्क तो जिननाम छतां न होय. तेमाटें त्र्याणुमांहेथी आहारकचतुष्क काढतां नेव्याशीनुं सत्तास्थानक होय. एम विकलेंद्रिय, पंचेंद्रिय तिर्यंचने ए बेहुने अहींआं चार सत्ताना स्थानकनी भावना जेम त्रेवीशने बंधें कही तेमज सर्वत्र जाणवी पण एटलुं विशेष जे मनुष्यगति प्रायोग्य ओगणत्रीशने बंधें अठ्ठोतेर विना बीजां चार सत्तानां स्थानक होय. तिर्यग्गति प्रायोग्य ओगणत्रीशने बंधें पांच सत्ता स्थानक होय तथा देवगति प्रायोग्य उगणत्रीश बांधतां अविरति सम्यक्दृष्टिने एकवीश, छवीश, अठ्ठावीश, ओगणत्रीश अने त्रीश, ए पांच तथा आहारक अने वैक्रिय करतां साधुने पच्चीश, सत्तावीश, अठ्ठावीश, ओगणत्रीश अने त्रीश, ए पांच उदयस्थानक होय, तथा देशविरति मनुष्यने वैक्रिय करतां उद्योतनो उदय न होय, तेमाटें त्रीशना उदय विना बीजां चार उदयस्थानक होय. तिहां देवगति प्रायोग्य तीर्थंकर नामकर्म सहित ओगणत्रीश बांधतां त्र्याणुं तथा नेव्याशी, ए बे सत्तानां स्थानक पांचे उदय स्थानकें होय. तथा आहारक साधुने देवगति प्रायोग्य ओगण

त्रीश प्रकृति बांधतां एकज त्र्याणुनुं सत्तास्थानक होय. एम सामान्यपणे ओगण त्रीशने बंधें नव उदयें करी नांगा चोपन शरवाले थाय.

तथा त्रीशना बंधस्थानकें जेम तिर्यग्गति प्रायोग्य उंगणत्रीशनो बंध बांधतां एकेंद्रिय, विकलेंद्रिय, तिर्यंच, पंचेंद्रिय मनुष्य, देव अने नारकीने जेम उदय स्थानक कह्यां, तेम उद्योत सहित तिर्यग्गति प्रायोग्य त्रीशने बंधें एकेंद्रियादिकने पण उदय सत्तास्थानकनो संवेध जाणवो.

तथा मनुष्यगति प्रायोग्य तीर्थंकरनाम कर्म सहित त्रीशनो बंध करतां देवता अने नारकीने जे विशेष ढे, ते कहीयें ढैयें. देवताने एकवीशने उदयें वर्त्ततां त्र्याणु अने नेव्याशी, ए बे सत्तास्थानक होय, तथा नारकीने एकवीशने उदयें वर्त्ततां मनुष्यगति प्रायोग्य त्रीश प्रकृति बांधतां एकज नेव्याशी प्रकृतिनुं सत्तास्थानक होय, परंतु नारकीने त्र्याणुनी सत्ता न होय, जे जणी तीर्थंकरनाम तथा आहारक चतुष्क ए बेहुनी सत्ता, नारकीने नेली न होय, चूर्णिकारें कह्युं ढे के "जस्स तिथ्थगराहा,रगाणि जुगवंसंति,सोनिरइएसु न उववद्यइ" तथा एमज पच्चीश, सत्तावीश, अठ्ठावीश अने उंगणत्रीश, ए चार उदयस्थानकें पण देवताने ए बे बे सत्तास्थानक होय, अने नारकीने त्रीशनुं उदयस्थानक न होय, जे जणी उद्योत नेलतां त्रीशनुं उदयस्थानक थाय. ते उद्योतनो उदय तो नारकीने नथी एम सामान्यपणे त्रीशने बंधें एकवीशने उदयें सात, चोवीशने उदयें पांच, पच्चीशने उदयें सात, ढवीशने उदयें पांच, सत्तावीशने उदयें ढ, अठ्ठावीशने उदयें ढ, उंगत्रीशने उदयें ढ, त्रीशने उदयें ढ अने एकत्रीशने उदयें चार.एम सर्वमली त्रीशने बंधें नव उदयस्थानकें थइने नांगा बावन थाय ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ३३ ॥

एगेग मेगतीसे, एगे एगुदय अठ संतंमि ॥
उवरय बंधो दस दस, वेयग संतंमि ठाणाणि॥३४॥

अर्थः—तथा (एगेगमेगतीसे के०) एकत्रीशने बंधें एगेग एटले एकज उदय स्थानक तथा एकज सत्तास्थानक पण होय. ते आवी रीतें के देवगति प्रायोग्य जिननाम तथा आहारकद्विक सहित एकत्रीशनुं बंधस्थानक अप्रमत्त तथा अपूर्वकरण गुणठाणे होय ढे. तिहांतो वैक्रिय तथा आहारकशरीरनुं करवा पणुं नथी तो ते विना बीजा पच्चीश, ढवीश, इत्यादिक अल्प प्रकृतिना उदय न होय अने औदारिक शरीरनी तो सर्व पर्याप्तियें करी पर्याप्तो ढे माटे तेने तो त्रीशनोज उदय

होय. तिहां तो एकज त्र्याणुनुं सत्ता स्थानक होय परंतु बीजां न होय. केमके ए कत्रीश प्रकृतिनो बंध तो आहारकचतुष्क तथा जिननाम सहितज होय.

तथा (एगेएगुदयअठसंतंमि के०) एक यशःकीर्त्तिरूप एकने बंधें पण एकज त्रीश प्रकृतिनुं उदयस्थानक होय, तथा तिहां आठ सत्तानां स्थानक होय, जे नणी नामकर्मनी एकज यशःकीर्त्तिरूप प्रकृतिनो बंध अपूर्वकरणना सातमा नागथी मांहीने दशमा गुणठाणा पर्यंत होय, ते अतिविशुद्ध माटें वैक्रिय तथा आहारक करे नहीं. तेथी तेने बीजा पच्चीशादिकनां उदय स्थानक वैक्रियादिकनी पर्याप्ति योग्यनां न होय, मात्र एकज त्रीश प्रकृतिनुं उदयस्थानक होय. तिहां त्र्याणु, बाणुं, नेव्याशी, अठ्याशी, एंशी, ओगणाएंशी, ब्होंत्तेर अने पच्चोत्तेर, ए आठ सत्ता स्थानक होय, तेमांहेलां ए३–ए२–८ए–८८– ए चार प्रथमनां सत्तास्थानक उपशमश्रेणिनी अपेक्षायें होय, अथवा क्षपकश्रेणीयें पण ज्यां लगें अनिवृत्तिबादरना प्रथमनागें जइने २ स्थावर, ४ सूक्ष्म, ४ तिर्यंचद्विक, ६ नरकद्विक, १० जातिचतुष्क, ११ साधारण, १२ आतप, १३ उद्योत, ए तेर प्रकृति न खपावे तिहां लगें होय अने ए तेर प्रकृति क्षय कस्या पढी अनेक जीवनी अपेक्षायें उपरलां ८०–७ए–७६–७५–ए चार सत्तास्थानक क्षपकश्रेणीयें होय.

(उवरयबंधो के०) तथा उपरांत बंधे बंधने अनावें (वेयग के०) वेदकने उदयनां स्थानक, (दस के०) दश होय अने (संतमिगाणाणि के०) सत्तानां स्थानक पण, (दस के०) दश होय, तिहां वीश, एकवीश, ब्वीश, सत्तावीश, अठ्ठावीश, ओगणत्रीश, त्रीश, एकत्रीश, नव अने आठ, ए दश उदयनां स्थानक अने ए३–ए२–८ए–८८–८०–७ए–७६–७५–ए–८–ए दश सत्ता स्थानक होय.

तेमध्यें केवलीने आठ समयनो केवल समुद्घात करतां, वचालें त्रीजे, चोथे अने पांचमे ए त्रण समय पर्यंत कार्मण योगें वर्त्ततां १ पंचेंद्रियजाति, ४ त्रसत्रिक, ५ सुनग, ६ आदेय, ७ यशःकीर्त्ति, ८ मनुष्यगति, अने बार ध्रुवोदयी, एवं वीश प्रकृतिनो उदय होय. तिहां सत्ता स्थानक ओगणाएंशीनुं तथा आहारक चतुष्क विना पच्चोत्तेरनुं ए बे सत्तास्थानक होय.

तथा तीर्थंकरने केवली समुद्घात करतां एज वचला त्रण समय पर्यंत तीर्थंकर नामकर्म सहित एकवीशनुं उदय स्थानक होय. तिहां जिननाम सहित बे माटें एंशी अने ब्होत्तेर, ए बे सत्तास्थानक होय.

तथा केवलीने समुद्घात करतां औदारिक मिश्रयोगें वर्त्ततां औदारिकद्विक,

वज्रऋषननाराचसंघयण, ब संस्थान मांहेलुं एक संस्थान, उपघात अने प्रत्येक, ए ब प्रकृति पूर्वोक्त वीशमांहे नेले थके बवीशनो उदय होय. तिहां बीजे, बठे अने सातमे ए त्रण समय पर्यंत ओगणाएंशी अने पञ्चोत्तेर, ए बे सत्तास्थानक होय.

तथा तीर्थंकरने तेज स्थानकें तीर्थंकरनाम सहित सत्तावीशनो उदय होय. तिहां एंशी अने बहोंत्तेर, ए बे सत्तास्थानक होय.

तथा ते बवीशमध्यें पराघात, उञ्चास, शुज तथा अशुंनखगति माहेली एक अने बे स्वर माहेली एक ए चार नेलतां त्रीशनो उदय, औदारिक योगें वर्त्तता केवलीने अथवा अगीआरमे गुणगणे पण होय. तिहां त्र्याणुं, बाणुं, नेव्याशी, अव्याशी, एंशी, ओगणाएंशी, बहोंत्तेर, अने पंचोत्तेर, ए आठ सत्तास्थानक ते मांहेला पहेलां चार, उपशमश्रेणीनी अपेक्षायें अने बेहेलां चार क्षीण कषायने तथा सयोगी केवलीने अने तीर्थंकरने होय. तिहां आहारकचतुष्कनी सत्ता स हित तीर्थंकरने एंशी अने अतीर्थंकरने ओगणाएंशी आहारक वर्जीने तीर्थंकरने बहोंत्तेर, अतीर्थंकरने पञ्चोत्तेर, ए बे बे सत्ता स्थानक होय.

तथा एकत्रीशने उदयें एंशी अने बहोंत्तेर, ए बे सत्तास्थानक तीर्थंकर केवली नेज जाणवां जे नणी सामान्य केवलीने तो एकत्रीशनो उदय नज होय. ते एक त्रीश मध्येंथी तीर्थंकरने वचनयोग रुंधे त्रीशनो उदय होय तिहां एंशी अने ब होंत्तेर, ए बे सत्तास्थानक होय तथा सामान्य केवलीने औदारिक योगें वर्त्तता त्रीशने उदयें ओगणाएंशीने पञ्चोत्तेर, ए बे सत्तास्थानक होय.

ते त्रीशमध्येंथी वचनयोग रुंधे सामान्य केवलीने ओगणत्रीशनो उदय होय. तिहां ओगणएंशी अने पचोत्तेर, ए बे सत्ता स्थानक होय तथा तीर्थंकरने वचनयोग रुंधे त्रीश तेमांथी श्वासोञ्चास रुंधे ओगणत्रीशनो उदय होय. तिहां एंशी ने बहों त्तेर, ए बे सत्तास्थानक होय. एवं ओगणत्रीशने उदयें चार सत्तास्थानक होय.

तथा सामान्यकेवलीने वचनयोग रुंधे ओगणत्रीशनो उदय हतो ते मध्येंथी श्वासो ञ्चास रुंधे अठावीशना उदयें ओगणाएंशी अने पञ्चोत्तेर, ए बे सत्तास्थानक होय.

तथा नवना उदयें तीर्थंकरने अयोगी गुणगणे एंशी अने बहोंत्तेर तथा बेल्ले समयें नवनुं ए त्रण सत्तास्थानक होय. तथा सामान्यकेवलीने आठना उदयें अयोगीना द्विचरमसमय लगें ओगणाएंशी अने पञ्चोत्तेर अने बेहले समयें आठनुं, एवं त्रण सत्तास्थानक होय. एम संवेधें नांगा त्रीश होय. ए रीतें ए नामकर्मनो बंधोदयसत्ता संवेध सामान्यदेशें कह्यो ॥ इत्यर्थः ॥ ३४ ॥

॥ अथैतेषां जीवस्थानानि गुणस्थानानि वाश्रित्य, स्वामी दर्श्यते ॥
हवे अनुक्रमें ए आठ कर्मनी प्रकृतिनां स्थानक अने तेना नांगा चौद जीवस्थानक अने चौद गुणस्थानक आश्रयीने स्वामी प्रत्यें निर्णय करीने विशेषादेशें देखाडे ठे.

तिविगप्प पगइ ठाणे,हिं जीव गुणसन्निएसु ठाणेसु ॥
नंगा पउंजियवा, जब जहा संनवो नवइ ॥ ३५ ॥

अर्थ—बंध, उदय अने सत्ता, ए (तिविगप्प के०) त्रण विकल्प, तेना (पगइठाणेहिं के०) आठ कर्मनी प्रकृतिनां स्थानक एक, बे, इत्यादिक तेने संवेधें जे नांगा उपजे, ते नांगा (जीव के०) चौद जीव स्थानकने विषे अने (गुणसन्निएसुठाणेसु के०) चौद गुणस्थानक विषे पूर्वें जे कह्या, ते रीतें तेना अनुसारें (नंगापउंजियवा के०) नांगा प्रयुंजवा. (जबजहासंनवोनवइ के०) जिहां जे नांगो संनवे, तिहां ते नांगो लगाडवो ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ३५ ॥

॥ अथ प्रथमजीवस्थानान्यधिकृत्याह ॥ हवे प्रथम चौद जीवस्थानक आश्रयीने ज्ञानावरणीय तथा अंतरायकर्मना नांगा कहे ठे.

तेरससु जीव संखे, वएसु नाणंतराय तिविगप्पो ॥
इक्कंमि ति ङ विगप्पो, करणं पइ इब अविगप्पो ॥ ३६ ॥

अर्थ—(तेरससुजीव के०) एक संज्ञी पर्याप्तो टालीने पहेला तेर जीवस्थानकने विषे (संखेवएसु के०) संक्षेपें एटले थोडामांहे घणा जीव नाम कहीयें. ते नणी संक्षेप जीव नेद पाठ कह्यो. तिहां (नाणंतराय के०) एक ज्ञानावरणीय अने बीजुं अंतराय, ए बे कर्मना बंध, उदय अने सत्ता, ए (तिविगप्पो के०) त्रण विकल्पनो एक नांगो होय. एटले पांचनो बंध, पांचनो उदय अने पांचनी सत्ता होय. एना बंध, उदय अने सत्ता ध्रुव ठे. ते नणी सर्वने होय, तथा (इक्कंमि के०) एक संज्ञी पंचेंड्रिय पर्याप्ता जीवनेदने विषे (तिडविगप्पो के०) त्रण विकल्प तथा बे विकल्पनो एकेक नांगो होय. एटले पांचनो बंध, पांचनो उदय अने पांचनी सत्ता, ए त्रणनो विकल्प, दशमा गुणठाणा लगें होय, अने ते वार पठी ज्ञानावरणीय तथा अंतरायनो बंध नथी माटें पांचनो उदय अने पांचनी सत्ता, ए बेनो विकल्प अगीआरमा अने बारमा गुणठाणा लगें होय, तथा (करणंपइइबअविगप्पो के०) करण एटले इव्यमननी अपेक्षायें सं

जीठे जे सयोगी केवली तथा अयोगी जवस्थ केवली, तेने विषे ज्ञानावरणीय अने अंतरायनो बंध, उदय अने सत्तानो एक पण विकल्प नथी माटें अविकल्प ठे. अहींआं द्रव्यमननी अपेक्षायें केवलीने संज्ञी कह्यो. चूर्णिकारें असंज्ञी कह्यो ठे. "मणकरणं केवलिणो,विज्जति तेणसन्निणोवुच्चंति ॥ मणोविनाणपडुच्च, तेणस न्निणोन हवंति" ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ३६ ॥

अथ दर्शनावरणजीवस्थानेष्वाह ॥ हवे दर्शनावरणीयना बंधोदय सत्तास्थानक ना जांगा चौद जिवस्थानकने विषे विचारे ठे.

तेरे नव चउ पणगं, नव सत्ते गम्मि जंगमिक्कारा ॥
वेअणिअ आउ गोए, विजक्क मोहं परं वुहं ॥३७॥

अर्थ- (तेरेनवचउ के०) संज्ञी पंचेंद्रिय पर्याप्ता विना तेर जीवस्थानकने विषे दर्शनावरणीयकर्मनो नवनो बंध, चारनो उदय अने (नवसत्ते के०) नवनी सत्ता, तथा नवनो बंध, (पणगं के०) पांचनो उदय अने नवनी सत्ता, ए बे जांगा होय. अने (एगम्मिजंगमिक्कारा के०) एक संज्ञी पंचेंद्रिय पर्याप्ता जीवस्थानकने विषे पूर्वें जे दर्शनावरणीयना संवेधें सामान्यें अगीआर जांगा कह्या,ते अगीआर अहींआं लेवा. हवे (वेअणीअआउगोए के०) वेदनीय, आयु अने गोत्र, ए त्रण कर्मने विषे बंध, उदय अने सत्तायें प्रकृतिनां स्थानक अने जांगा ते आगमोक्त प्रकारें जीवस्थानकने विषे कहीने (विजक्कमोहंपरंवुहं के०) पठी मोहनी य कर्मना जांगा वहेंचीने कहेशे ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ३७ ॥

अथ वेदनीयगोत्रयोर्जंगज्ञानार्थमियमंतर्जाष्यगाथा. हवे वेदनीय अने गोत्रकर्मना जांगा चौद जीवजेदें वहेंचवाने जाष्यनी गाथा कहे ठे.

पज्जत्तग सन्निअरे, अठ चउक्कं च वेयणिय जंगा ॥
सत्तय तिगं च गोए, पत्तेअं जीवठाणेसु ॥ ३७ ॥

अर्थ- (पज्जत्तगसन्नि के०) संज्ञी पंचेंद्रिय पर्याप्ताने विषे वेदनीयकर्मना (अठ के०) आठ जांगा जे पूर्वें सामान्यपणे कह्या, ते अहींआं विशेषपणे लेवा तथा (इअरे के०) ए संज्ञीपंचेंद्रिय पर्याप्ता विना बीजा तेर जीवस्थानकें १ अशातानो बंध,अशातानो उदय अने बेहुनी सत्ता, २ अशातानो बंध, शातानो उदय अने बेहुनी सत्ता, ३ शातानो बंध, अशातानो उदय अने बेहुनी सत्ता, ४

शातानो बंध, शातानो उदय अने बेहुनी सत्ता, ए (चउक्कंचवेयणियभंगा के०) ए चार भांगा वेदनीयना तेर जीवभेदें होय. अहींआं सयोगी केवलीने अ योगी केवलीनी पेरें द्रव्यमनना संबंध भणी संज्ञी लेखवतां विरोध नहीं. अन्यथा आगला आठ मांहेला चार भांगा तो केवलीनेज होय, ते कारणमाटें पर्याप्त संज्ञीने विषे वेदनीयना आठ भांगा कह्या छतां विरोध नथी.

तथा (सत्तयतिगंचगोए के०) गोत्रकर्मना जे पूर्वें बंध, उदय अने सत्तानो संवेध करतां सामान्यादेशें सात भांगा कह्या, तेज अहींआं पर्याप्ता सन्निपंचेंद्रियने सात भांगा लेवा. तेमांहे नीचैर्गोत्रनो बंध, नीचैर्गोत्रनो उदय, नीचैर्गोत्रनी सत्ता, ए प्रथम भांगो तेउ, वाउमांहे घणो काल रहेतां जे जीवें उच्चैर्गोत्र उवेल्युं होय, ते जीव, तेउ वाउ मांहेथी आवी पर्याप्ता संज्ञी पंचेंद्रियपणे अवतरे, तेने केटला एक काल पर्यंत, ए भांगो पामीयें, परंतु बीजा जीवने विषे ए भांगो न पामीयें तथा बीजा भांगा जेम पूर्वें कह्या, तेम अहींआं पण लेवा. तथा बीजा तेर जीवभेदें १ नीचैर्गोत्रनो बंध, नीचनो उदय अने नीचनी सत्ता, २ नीचनो बंध, नीचनो उदय अने बेहुनी सत्ता, ३ उंचनो बंध, नीचनो उदय अने बेहुनी सत्ता, ए त्रण भांगा होय. तेमांहे पहेलो भांगो तो तेउ, वाउमांहेथी उच्चैर्गोत्र उवेलीने बीजे जीवभेदें अवतरे, तेनी अपेक्षायें लेवो. परंतु बीजानें न होय, तथा उच्चैर्गोत्रनो उदय तो तिर्यंचगतिमांहे तथा अपर्याप्तानेविषे न होय तेमाटें बीजा चार भांगानो तेर जीव भेदें निषेध जाणवो. परंतु जे भांगाने विषे नीचनो उदय होय, ते अहीआं लेवा. (पत्तेअंजीवगणेसु के०) ए तेर जीवस्थानकने विषे प्रत्येकें त्रण भांगा होय ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ३८ ॥

अथ आयुर्भंगप्ररूपणार्थमियमंतर्भाष्यगाथा ॥ हवे ए चौद जीवभेदें आयुःकर्मना भांगा प्ररूपवाने अर्थें भाष्यनी गाथा लखीयें छैयें.

पज्जत्ता पज्जत्तग, समणा पज्जत्त अमण सेसेसु ॥
अघावीसं दसगं, नवगं पणगं च आउस्स ॥ ३९ ॥

अर्थ-(पज्जत्तापज्जत्तगसमणा के०) पर्याप्ता अने अपर्याप्ता समणा एटले मन सहित तेने संज्ञी कहीयें, एटले संज्ञी पंचेंद्रिय पर्याप्ता अने बीजा संज्ञी पंचेंद्रिय अपर्याप्ता जाणवा. तिहां संज्ञी पंचेंद्रिय पर्याप्तामांहे आयुःकर्मना भांगा, (अघावीसं के०) अघावीश होय. तेमध्यें नारकीना पांच तिर्यंचना नव, मनुष्य

ना नव, अने देवताना पांच. एम अठ्ठावीश नांगा पूर्वें कह्या बे तेम जाणवा. तथा संज्ञी पंचेंद्रिय अपर्याप्तामांहे आयुःकर्मना नांगा (दसगं के०) दश होय. केम के ए अपर्याप्ता लब्धिथी जाणवा. ते लब्धि अपर्याप्ता तो मनुष्य अने तिर्यंचज होय. तथा देव अने नारकी, ए बेहु लब्धि अपर्याप्ता नज होय, माटें देवताना पांच अने नाकीना पांच, एवं दश नांगा पूर्वोक्त अठ्ठावीशमांहेथी टले, तेवारें अढार नांगा रहे. तेमध्येंथी वली सन्निआ अपर्याप्ताने देव नारकीनो बंध न होय तेमाटें.

देव नारकीना बंधप्रायोग्य जे मनुष्य तिर्यंचने विषे जे आयुःकर्मना नव नव नांगा कह्या बे तेमध्येंथी पण एक देवायुनो बंध तिर्यंचायुनो उदय अने बेहु आयुनी सत्ता, बीजो नरकायुनो बंध, तिर्यगायुनो उदय अने बेहु आयुनी सत्ता, ए बे नांगा, आयुर्बंधकालावस्थाना जाणवा. तथा उत्तरावस्थायें बंधव्यवच्छेद कालें तिर्यगायुनो उदय अने देवायु तथा तिर्यगायुनी सत्ता, चोथो तिर्यगायुनो उदय अने नरकायु तथा तिर्यगायुनी सत्ता, ए चार नांगा तिर्यंचना, तेवाज चार नांगा मनुष्य मांहेला, एवं आठ नांगा टले, तेवारें शेष दश नांगा रहे, तिहां तिर्यंचगतिमध्यें एक आयुर्बंधथी पूर्वावस्थानो तथा बे बंध कालावस्थाना अने एक तिर्यगायुनो उदय, तथा बे तिर्यगायुनी सत्ता, बीजो तिर्यगायुनो उदय, अने तिर्यग् तथा मनुष्यायुनी सत्ता, ए बे उत्तरावस्थायें बंधशून्य कालें होय. एवं पांच तिर्यंचगतिना तेमज पांच मनुष्यगतिमांहेला, एवं दश नांगा आयुना संज्ञी अपर्याप्तामांहे लाने.

तथा (पज्जत्तअमण के०) मनरहित एटले पर्याप्ता असंज्ञी पंचेंद्रियने विषे (नवगं के०) आयुःकर्मना नव नांगा जे पूर्वें तिर्यंचगतिमध्यें सामान्यें कह्या, ते अहींआं पण लेवा, केमके देव अने नारकी तो असन्नीआ होयज नहीं अने मनुष्य पण असन्नित पर्याप्तो न होय, मात्र तिर्यंचज असन्नित पर्याप्तो होय, तेने चारे गतिना आयुनो बंध होय, माटें एने तिर्यंचगति मांहेला नवे नांगा होय.

ए रीतें एक संज्ञी पंचेंद्रिय पर्याप्तो, बीजो संज्ञी पंचेंद्रिय अपर्याप्तो, त्रीजो असंज्ञी पंचेंद्रिय पर्याप्तो, ए त्रण जीव नेद टाली, (सेसेसु के०) शेष रह्या जे अगीआर जीवनेद, तेने विषे प्रत्येकें प्रत्येकें (पणगंचआउस्स के०) आयुःकर्मना पांच पांच नांगा होय. ए अगीआरे जीवस्थानकें तिर्यंच होय, अने ते देव तथा नारकीनुं आयु न बांधे, तेमाटें आयुर्बंध कालथी पूर्वें एक नांगो तथा आयुर्बंध कालें बे गतिना बे नांगा अने आयुर्बंधकाल पढी बे नांगा, एवं पांच नांगा होय. एमां असंज्ञी पंचेंद्रिय संमूर्छिम अपर्याप्ता मनुष्य पण होय, तेवारें पांच तिर्यंचना

अने पांच तेना पण भांगा उपजे. एवं दश भांगा उपजे पण ते अहींआं सूत्रकारें कह्या नथी,ते शुं जाणीयें शा हेतुयें विवक्षा करी नहीं? ते विचारवुं॥ इति ॥३ए॥

॥ अथ जीवस्थानेषु मोहनीयकर्माह ॥ हवे चौद जीवस्थानकने विषे मोहनीय कर्मना बंध, उदय अने सत्तानां स्थानकनो संवेध विवरीने कहे छे.

अठसु पंचसु एगे, एग डुगं दसय मोह बंध गए ॥ ति
ग चउ नव उदय गए, तिग तिग पन्नरस संतंमि ॥४०॥

अर्थ-(अठसुपंचसुएगे के०) आठ जीवस्थानकने विषे तथा पांच जीवस्थानकने विषे अने एक जीवस्थानकने विषे अनुक्रमें (एगडुगंदसय के०) एक, बे अने दश, (मोहबंधगए के०) मोहनीयप्रकृतिनां बंधस्थानक होय तथा अनुक्रमें ते एकेका बंधस्थानकें (तिगचउनवउदयगए के०) त्रण, चार अने नव, उदयनां स्थानक होय. अने अनुक्रमें (तिगतिगपन्नरससंतंमि के०) त्रण, त्रण अने पंदर सत्तानां स्थानक होय ॥ इत्यक्षरार्थः ॥ ४० ॥

१ सूक्ष्म एकेंड्रिय पर्याप्ता अने अपर्याप्ता, ३ बादर एकेंड्रिय अपर्याप्ता, ४ बेंड्रिय अपर्याप्ता,५ तेंड्रिय अपर्याप्ता, ६ चौरिंड्रिय अपर्याप्ता, ७ असंज्ञी पंचेंड्रिय अपर्याप्ता, अने ८ संज्ञी पंचेंड्रिय अपर्याप्ता, ए आठ जीवनेदें एकज बावीश प्रकृतिनुं बंधस्थानक होय. जे नणी ए लब्धिनी अपेक्षायें अपर्याप्ता कह्या छे, माटें तेने तो मिथ्यात्वज होय. ते मिथ्यात्वें तो बावीशनोज बंध होय, तिहां त्रण वेदें बे युगल साथें भांगा छ पूर्वली पेरें लेवा तथा आठ, नव अने दश, ए त्रण उदय स्थानक होय. अहींआं सातनुं उदयस्थानक न होय, केमके सातनो उदय अनंतानुबंधीआ विना होय छे तेतो उपशमश्रेणीथी पडतां मिथ्यात्वें आवे, तिहां आवलिकामात्र लगें होय, ए आठ जीवनेदें श्रेणी नथी माटें सातनो उदय न होय तथा एकेका उदयें अठावीश, सत्तावीश अने छवीश, ए त्रण सत्तास्थानक होय.

बादर एकेंड्रिय तथा त्रण विकलेंड्रिय अने असन्नीआ पंचेंड्रिय, ए पांच पर्याप्ता जीवनेदने विषे बावीश अने एकवीश, ए बंधस्थानक होय. तिहां लब्धि पर्याप्ता केटला एकने करण अपर्याप्तावस्थायें सास्वादनभावें मिथ्यात्वनो बंध न होय, तेवारें एकवीशनो बंध पामीयें. अहींआं बावीशना बंधें सात, आठ, नव अने दश, ए चार उदय स्थानक होय. अने एकेका उदयें अठावीश सत्तावीश, अने छवीश, ए त्रण सत्तास्थानक होय तथा एकवीशने बंधें सात, आठ अने नव, ए त्रण उदय

स्थानक होय अने ते एकेके उदयस्थानके एकेकुं अठावीशनुं सत्तास्थानक होय. केमके एकवीशनो बंध, ते सास्वादनेंज होय. तिहां सास्वादने तो निश्चें अठावीशनुंज सत्तास्थानक होय.

तथा एक संज्ञीपंचेंद्रिय पर्याप्ताना जीवभेदने विषे दशे बंध स्थानक होय. अने नवे उदय स्थानक होय. तथा पंदरे सत्तास्थानक होय. तेनुं स्वरूप अने भांगा पूर्वली पेरें जाणी लेवा ॥ इत्यर्थः ॥ ४० ॥

अथ नामकर्म्म जीवस्थानेष्वाह ॥ हवे चौद जीवस्थानकने विषे नामकर्मना बंध, उदय अने सत्तानां स्थानक बे गाथायें करी कहे छे.

पण छग पणगं पण चउ, पणगं पणगा हवंति तिन्नेव ॥
पण छप्पणगं छछ, प्पणगं अठ ठ दसगंति ॥ ४१ ॥ सत्ते
व अपज्जता, सामी सुहुमाय बायराचेव ॥ विगलिंदि
आउ तिन्निउ, तहय असन्नी अ सन्नीअ ॥ ४२ ॥

अर्थ–अहीआं प्रथम गाथायें बंध, उदय अने सत्तानां स्थानक कहे छे. अने बीजी गाथायें तेना स्वामी कहे छे माटें बे गाथानो अर्थ भेलो जोडीयें, एटले (पणछग के०) पांच बंधस्थानक, अने बे उदय स्थानक, (पणगं के०) पांच सत्ता स्थानक एना (सत्तेवअपज्जतासामी के०) सात अपर्याप्ता जीव भेद. ते एना स्वामी जाणवा तथा (पणचउपणगं के०) पांच बंधस्थानक, चार उदयस्थानक, अने पांच सत्तास्थानक, तेना स्वामी (सुहुमाय के०) सूक्ष्म एकेंद्रिय पर्याप्ता जाणवा तथा (पणगाहवंतितिन्नेव के०) त्रणे पांच पांच स्थानक जाणवां एटले पांच बंधस्थानक, पांच उदयस्थानक अने पांच सत्तास्थानकना स्वामी होय, ते कोण होय? तोके (बायराचेव के०) बादर एकेंद्रिय पर्याप्ता एना स्वामी होय तथा (पणछप्पणगं के०) पांच बंधस्थानक, छ उदयस्थानक अने पांच सत्तास्थानक एना स्वामी (विगिलिंदिआउतिन्निउ के०) बेंद्रिय,तेंद्रिय अने चौरिंद्रिय, ए त्रणे विकलेंद्रिय पर्याप्ता जाणवा. तथा (छछप्पणगं के०) छ बंधस्थानक, छ उदयस्थानक अने पांच सत्तास्थानक, एना स्वामी (असन्नीअ के०) असंज्ञी पंचेंद्रिय पर्याप्ता जीव जाणवा. (तहय के०) तेमज (अठठदसगंति के०) आठ बंधस्थानक, आठ उदयस्थानक अने दश सत्तास्थानक, एना स्वामी (सन्नीअ के०) संज्ञी पंचेंद्रिय पर्याप्ता जाणवा ॥ इति गाथा द्वयाक्षरार्थः ॥ ४१ ॥ ४२ ॥

हवे विस्तारें अर्थ लखीयें बैयें. अपर्याप्ता सूक्ष्मादिक सात जीव नेद, तेने देव, नरकगति प्रायोग्य बंध न होय, तेमाटें अठावीश, एकत्रीश अने एक, ए त्रण बंधस्थानक विना त्रेवीश, पच्चीश, बवीश, उंगणत्रीश अने त्रीश, ए पांच बंधस्थानक तिर्यंच अने मनुष्य प्रायोग्यज होय. तिहां एकेका अपर्याप्ताने विषे (१३९१७) बंध नांगा उपजे तथा ए सात जीव नेदमांहेला अपर्याप्ता सूक्ष्म अने बादर एकेंडिय, ए बे जीव नेदने विषे एकवीश अने चोवीश, ए बे उदयस्थानक होय, तिहां एकवीशने उदयें सर्व अशुन पद नणी एकज नांगो होय तथा चोवीशने उदयें प्रत्येक अने साधारणना विकल्पें बे नांगा होय. एम बेहुना मली एकेका जीवनेदें त्रण त्रण नांगा होय. अने शेष पांच अपर्याप्ताना जीवनेदें एकवीश अने बवीश, ए बे बे उदयस्थानक प्रत्येकें होय. अहींआं बवीशना उदय मांहे साधारणनो उदय नथी माटें एकेका उदयें एकेक नांगोज उपजे तेथी बन्ने उदयना बे बे नांगा एकेका जीव नेदें होय तथा सन्नीआ अपर्याप्तामां बे तिर्यंच पंचेंडियना अने बे मनुष्यना, एम चार नांगा प्रत्येकें होय. ए सात अपर्याप्ता जीव नेदें प्रत्येकें बाणु, अठ्याशी, व्याशी, एंशी अने अठोत्तेर, ए पांच पांच सत्तास्थानक होय. अहींआं तिर्यंचगतिमांहे जिननामनी सत्ता न होय, माटे त्र्याणुं अने नेव्याशी, ए बे सत्तास्थानक न होय. जे आहारकचतुष्क संयम प्रत्ययिक बांधीने वली मिथ्यात्वें गयो होय तेने जिहां सुधी आहारक चतुष्क उवेले नहीं तिहां सुधी बाणुनी सत्ता होय अने चोक उवेल्या पढी अठ्याशीनी सत्ता होय तथा तेउ, वाउ मांहे मनुष्यद्विक उवेलीने ए स्थानकें अवतर्यो होय तेनी अपेक्षायें अठोत्तेरनुं सत्तास्थानक लेवुं. एमज एंशी तथा व्याशी, ए सर्व सत्तास्थानकनुं स्वरूप अने नांगा उपजाववा ते पूर्वली पेरें जाणवा.

तथा सूक्ष्म एकेंडिय पर्याप्ताने २३–२५–२६–२९–३० ए पांच बंधस्थानक होय. एने तिर्यंच मनुष्य मांहेज जावुं बे माटे तत्प्रायोग्य एज बंधस्थानक बे. अहीं बंधना नांगा (१३९१७) होय. एने २१–२४–२५–२६, ए चार उदयस्थानक होय. तिहां एकवीशने उदयें एक नांगो, चोवीशने उदयें बे, पच्चीशने उदयें बे अने बवीशने उदयें बे, एम चार उदयस्थानकें नांगा सात होय. तथा प्रत्येकें एकेका उदयस्थानके ९२–८८–८६–८०–७८ ए पांच सत्तास्थानक होय. तेम ध्यें तेउ वाउ विना बीजा सर्व जीव शरीर पर्याप्तियें पर्याप्ता थका निश्चें मनुष्यद्विक बांधे, माटे ते द्विक बतां अठोत्तेरनुं सत्तास्थानक न होय. प्रत्येक पर्याप्ता

जीवमांहे पण तेउ वायु विना बीजा सर्वे जीवने पच्चीश अने छवीश, ए बे उद य साधारण पद सहित छे माटे ए स्थानकें अठ्योतेर विना बीजां चार सत्ता स्था नक होय. ए पच्चीश तथा छवीशनो उदयतो शरीर पर्याप्तियें पर्याप्तानेज होय, तेमाटे साधारण सूक्ष्मपर्याप्ताने पच्चीश, छवीशने उदयें अठ्योतेरनी सत्ता न पा मीयें अने प्रत्येक पदमांहे तेउ तथा वायु भेला आव्या, ते माटें ते अपेक्षायें प्रत्येकमांहे अठ्योतेरनी सत्ता पामीयें. ए बे भांगे चार सत्तास्थानक अने पांच भांगे पांच सत्तास्थानक होय. तिहां बाणुनुं सत्तास्थानक तो आहारक बांधी मिथ्यात्वें गयो, तिहां आहारकचतुष्कनी सत्ता छतां मिथ्यात्वने वशें सूक्ष्ममांहे अवतरे, तेनी अपेक्षायें लेवो.

तथा बादर एकेंद्रियपर्याप्ताने विषे पण २३–२५–२६–२९–३० ए पांच बंधस्थानक तिर्यंच मनुष्य प्रायोग्य जाणवा. केमके एने मनुष्य अने तिर्यंच ए बे गति मध्यें जावुं छे माटें तत्प्रायोग्य बांधे. तिहां भांगा १३९१७ होय. अ हीआं उदयस्थानक २१–२४–२५–२६–२७ ए पांच होय. तिहां एकवीशने उ दयें बे, चोवीशने उदयें पांच, पच्चीशने उदयें पांच, छवीशने उदयें अगीआर अने सत्तावीशने उदयें छ. एम सर्वे मली पांच उदयस्थानकें भांगा उगणत्रीश होय. अने ९२–८८–८६–८०–७८ ए पांच पांच सत्तास्थानक होय. अहींआं पच्ची श अने छवीशने उदयें प्रत्येक अने अयशःकीर्त्ति सार्थे एकेको भांगो छे, ते बे स्था नकना बे भांगा तथा एकवीशना उदयना वैक्रिय वायु विनाना भांगा तथा चोवी शना उदयना बे भांगा, एम आठ भांगाने विषे पांच सत्तास्थानक होय. अने शेष एकवीश भांगाने विषे अठ्योत्तेर विना बाकीनां चार सत्तास्थानक होय.

तथा त्रण विकलेंद्रिय पर्याप्ताने प्रत्येकें त्रेवीश, पच्चीश, छवीश, उगणत्रीश, अने त्रीश, ए पांच बंधस्थानक मनुष्य तिर्यंच प्रायोग्य होय. एने देव तथा ना रक, ए बे गतिमध्यें जावुं नथी तेथी बीजां बंधस्थानक न होय. अहीं भांगा १३९१७ तथा २१–२६–२८–२९–३०–३१–ए छ उदयस्थानक होय. तिहां भांगा वीश पूर्वे कह्या छे, ते रीतें जाणवा तथा ९२–८८–८६–८०–७८–ए पां च सत्तास्थानक होय. तेमध्यें एकवीशना उदयना भांगा बे तथा छवीशना उदय ना भांगा बे. एवं चार भांगे तो प्रत्येकें पांच पांच सत्तास्थानकज होय केमके तेउ अने वायु मांहेथी आवेला विकलेंद्रिय पर्याप्ताने पण करण अपर्याप्ता पणे कियत्काल लगें अठ्योतेरनुं सत्तास्थानक पामीयें, पछी चार सत्तास्थानक होय. अ

ने शेष शोल नांगे एक अठोत्तेर वर्जीने चार चार सत्तास्थानक प्रत्येकें होय. जे जणी शोल नांगा शरीरपर्याप्तियें पर्याप्तानेज होय. तिहां तो अवश्य मनुष्यद्वि कनो बंध होय तेवारें तेने अठोत्तेरनी सत्ता न होय बाकी चार सत्तास्थानक होय. ए रीतें बेंड्रिय, तेंड्रिय अने चौरिंड्रिय पर्याप्ताने एकेकाने प्रत्येकें ब उदयस्थानकें वीश नांगा होय ते मांहे चार चार नांगा, पांच पांच सत्तास्थानक वाला अने बीजा शोल शोल नांगा, चार चार सत्तास्थानकवाला जाणवा.

तथा असन्नीआ पंचेंड्रिय पर्याप्ताने २३-२५-२६-२८-२९-३०-ए ब बंधस्थानक होय. जे जणी देव अने नरकगति प्रायोग्य अठावीशनो बंध पण एने होय. केमके ए मरीने चारे गतिमध्यें जाय बे तेमाटें तत्प्रायोग्य बंध होय. अहीं नांगा १३९२६ एने २१-२६-२८-२९-३०-३१-ए ब उदयस्थानक होय. ते ब उदयना नांगा ४९०४ होय. ए वैक्रिय न करे माटें वैक्रियनो नांगो न होय. तेमध्यें एकवीशना उदयना नांगा आठ अने बवीशना उदयना नांगा (२८८) एवं (२९६) नांगे बाणु, अठयाशी, बयाशी, एंशी अने अठोत्तेर, ए पांच सत्तास्थानक होय अने शेष (४६०८) नांगा शरीर पर्याप्ति पूरी कस्या पढी होय ते जणी एक अठोत्तेर विना बाकीनां चार सत्तास्थानक होय.

तथा सन्नीआ पंचेंड्रिय पर्याप्ताने २३-२५-२६-२८-२९-३०-३१-१-ए आठे बंधस्थानक होय. केम के एमां मनुष्य पण आव्या माटे तेने सर्वे बंधस्थानक होय, तिहां नांगा १३९४५ अने २१-२५-२६-२७-२८-२९-३०-३१ ए आठ उदयस्थानक होय. २०-२४-८-९ ए चार न होय केमके अहींआं केवलीने नाव मनशून्य जणी सन्नीआ मांहे गण्या नहीं तेथी २०-८-९ ए त्रण केवलीनां न गण्यां अन्यथा अगीआर उदयस्थानक कहेत. अने बारमो चोवीशनो उदय तो एकेंड्रियनेज होय बीजाने न होय तेथी तेना अगीआर नांगा टले तथा एकवीशने उदयें सात अपर्याप्ताना सात नांगा अने संज्ञीआ असंज्ञीआ ने ला गुणतां पंचेंड्रियतिर्यंचनो एक नांगो तथा मनुष्यअपर्याप्तानो एक तथा बवीशने उदयें, त्रण विकलेंड्रियना त्रण, अने असन्नी पंचेंड्रियतिर्यंच तथा मनुष्यना बे, एम पांचना पांच नांगा अपर्याप्ताना टले, तथा वीश, आठ अने नव, ए त्रण उदयना त्रण नांगा. एवं सर्व मली अठावीश नांगा पूर्वोक्त उदय नांगा (७७९१) मांथी काढतां शेष (७७६३) नांगा उदयस्थानकना सन्नीआ पंचेंड्रिय पर्याप्ता जीवमांहे पामीयें, तेमध्यें एकवीशना उदयना (४०) बवीशना उदयना (५९५)

एवं (६३५) नांगे प्रत्येकें पांच सत्तास्थानक कहेवां. अने बीजां चार सत्तास्थानक ते सामान्यादेशें नव अने आठना उदय विना दश, सत्तास्थानकना जीवनी अपेक्षायें लेवा. हवे संवेध लखीयें बैयें.

सूक्ष्म अपर्याप्ता एकेंड्रियने त्रेवीशने बंधें एकवीशने उदयें पांच सत्ता स्थानक, तेम चोवीशने उदयें पण पांच सत्तास्थानक. एवं बे उदयना मली दश सत्ता स्थानक थयां. तथा पच्चीशने बंधें पण एज बे उदय होय, तिहां पण सत्तास्थानक दश होय. तेम बवीश, उंगणत्रीश अने त्रीश, ए त्रण बंधें पण दश दश नांगा करतां पांच स्थानकें थइ, पच्चाश सत्तास्थानक होय. तथा ए सूक्ष्म अपर्याप्ता एकेंड्रिय विना शेष ब अपर्याप्ताना जीवस्थानकें पण एज रीतें पच्चाश पच्चाश बंध, उदय अने सत्ता संवेधें नांगा होय, पण एटलुं विशेष जे बेंड्रियादिक पांच अपर्याप्ताने चोवीशना उदयने स्थानकें बवीशनो उदय लेवो.

तथा सूक्ष्म एकेंड्रिय पर्याप्ताने पण एहीज पांच बंधस्थानक बे. तिहां एकेक बंधस्थानकें २१–२४–२५–२६ ए चार उदयस्थानक गणतां वीश थयां. ते एकेका उदयस्थानकें पांच पांच सत्तास्थानक गणतां एकशो नांगा थाय.

तथा बादर एकेंड्रिय पर्याप्ताना एहीज पांच बंधस्थानक तिहां एकेके बंधस्थानकें २१–२४–२५–२६–२७ ए पांच उदयस्थानक गणतां पच्चीश उदयस्थानक थाय, तेमांहे पांच उदय स्थानकें अठोत्तेर विना चार चार सत्ता स्थानक होय. तेना वीश नांगा अने वीश उदयस्थानकें पांच पांच सत्तास्थानक लेतां शो नांगा थाय. एम शरवाले एकशोने वीश बंध उदयसत्ता संवेधें नांगा होय.

तथा बेंड्रियपर्याप्तामांहे चोवीशने बंधें ब उदयस्थानक होय, ते मांहेला एकवीश अने बवीश, ए बे उदयें पांच पांच सत्तास्थानक होय. अने २७-२९-३०-३१ ए चार उदयस्थानकें चार चार सत्तास्थानक होय. शरवाले बवीश नांगा एक बंधस्थानकें होय. एम पांच बंधस्थानकना एकशो ने त्रीश नांगा बेंड्रिय पर्याप्ताना थाय. तेम तेंड्रिय पर्याप्ताना तथा चौरिंड्रियपर्याप्ताना पण एटलाज नांगा जाणवा.

तथा असन्नी पंचेंड्रिय पर्याप्ताने पण त्रेवीश, पच्चीश, बवीश, उंगणत्रीश अने त्रीश, ए पांच बंधस्थानकें तो प्रत्येकें विकलेंड्रियनी परें बवीश बवीश नांगा गणतां (१३०) सत्तानां स्थानक थाय अने अठावीशने बंधें त्रीश अने एकत्रीश, ए बे उदयस्थानक होय. तिहां एकेका उदयें बाणु, अठ्याशी, अने बयाशी, ए त्रण सत्तास्थानक होय. तेना नांगा ब थाय. जे नणी अठावीशनो बंध, देव

तथा नरकगति प्रायोग्यज होय. तिहां तो एंशी अने अठोतेरनी सत्ता न होय केमके देव नरकगति प्रायोग्यनो बंध तो पूर्ण पर्याप्तानेंज होय. एम शरवाळे असंज्ञी पंचेंद्रियने ब बंधस्थानकें थइ उदय सत्ताना नांगा (१३६) थाय.

तथा पर्याप्ता संज्ञी पंचेंद्रियने त्रेवीशने बंधें तो जेम पूर्वें ब्वीश सत्तानां स्थानक असंज्ञीने कह्यां, तेम अहींआं पण जाणवां तथा पच्चीशने बंधें एकवीश तथा ब्वीशने उदयें पांच पांच सत्तास्थानक होय तथा पच्चीशने उदयें अने देव नारकीने सत्तावीशने उदयें, ए बे उदयें बाणु अने अठ्याशी, ए बे बे सत्तास्थानक होय, एवं चौद थयां. तथा शेष चार उदयस्थानकें चार चार सत्तास्थानक होय. एम सर्व मळी पच्चीशने बंधें त्रीश सत्तास्थानक होय, तेवीज रीतें ब्वीशने बंधें पण त्रीश सत्तास्थानक होय. तथा अठावीशने बंधें आठ उदय स्थानक होय, तेमध्यें एकवीश, पच्चीश, ब्वीश, सत्तावीश, अठावीश अने ओगणत्रीश ए ब उदयें बाणु अने अठ्याशी, ए बे बे सत्तास्थानक होय. तथा त्रीशने उदयें बाणु, अठ्याशी, ब्याशी अने एंशी, ए चार सत्तास्थानक होय. अने एकत्रीशने उदयें बाणु, अठ्याशी, अने ब्याशी, ए त्रण सत्तास्थानक होय. एम सर्व अठावीशने बंधें ओगणीश सत्तास्थानक होय. तथा ओगणत्रीशने बंधें पण पच्चीशना बंधकनी पेरें सत्तास्थानक त्रीश लेवां. वळी विशेषें बीजां पण बे, ते कहीयें बैयें. अविरति सम्यक्दृष्टिने देवगति प्रायोग्य ओगणत्रीश बांधतां २१-२६-२८-२९-३० ए पांच उदयें ९३-८९ ए बे बे सत्तास्थानक होय तथा एज बे बे सत्तास्थानक पच्चीश तथा सत्तावीशने उदयें वैक्रिय देशविरतिने पण होय, अथवा आहारक साधुने पण तेहीज बे उदयें त्र्याणुनी सत्ता होय. एवं चौद सत्तास्थानक पूर्वला त्रीशमांहे मेळवतां ओगणत्रीशने बंधें चुम्मालीश सत्तास्थानक होय. एम त्रीशने बंधें पण पच्चीशना बंधनी पेरें त्रीश सत्तास्थानक लेवां, ते उपर जे विशेष बे, ते कहे बे. मनुष्यगति प्रायोग्य, जिननाम सहित त्रीश बांधतां एकवीश, पच्चीश, सत्तावीश, अठावीश, ओगणत्रीश अने त्रीश, ए ब उदयें ९३-८९ ए बे बे सत्तास्थानक लेतां बार नांगा थाय. ते भेळतां बेंताळीश सत्तास्थानक त्रीशने बंधें थाय. तथा एकत्रीश बांधनारो जिननाम तथा आहारकद्विक सहित बांधे, तेवारें तेने एकज त्र्याणुनी सत्ता होय तथा एकने बंधें आठ सत्ता स्थानक होय. तिहां ९३-९२-८९-८८ ए चार उपशमश्रेणीनी अपेक्षायें तथा ८०-७९-७६-७५- ए चार क्षपकश्रेणीनी अपेक्षायें होय.

तथा बंधने अनावें पण एज आठ सत्तास्थानक होय, परंतु एटलुं विशेष जे प्रथमनां चार सत्तास्थानक अगीआरमे गुणगाणे आगली तेर प्रकृतिना क्षय कस्या पछी क्षीणमोहने लेवा. एम सर्व मली पर्याप्ता संज्ञी पंचेंद्रियने (१०८) सत्तास्थानक होय अने जो इव्य मनने संबंधें केवलीने पण सन्नीउ कहीयें, तो तेना वली छवीश सत्तास्थानक मेलवतां (१३४) सत्तास्थानक, संज्ञीपंचेंद्रिय पर्याप्तानां थाय ॥४२॥

अथ गुणस्थानान्यधिकृत्याह ॥ हवे आठ कर्मना बंधोदय सत्तास्थानकना नांगा, चौदगुणगाणा आश्रयीने कहे छे.

नाणं तराय ति विहम, वि दससु दो हुंति दोसु ठाणेसु ॥
मिछासाणे बीए, नव चउ पण नव य संतंसा ॥ ४३ ॥

अर्थ– मिथ्यात्वथी मांमीने दशमा सूक्ष्मसंपराय गुणगाणासुधीना (दससु के०) दशे गुणगाणाने विषे (नाणंतराय के०) ज्ञानावरणीय अने अंतराय ए बेहु कर्मनो (तिविहमवि के०) त्रिविध एटले पंचविध बंध, पंचविधउदय, अने पंचविध सत्ता, ए नांगो होय. तेवार पछी (दोसुगणेसु के०) उपशांतमोह अने क्षीणमोह, ए बे गुणगाणे बंधने अनावें (दोहुंति के०) डुविध एटले पांचनो उदय अने पांचनी सत्ता होय अने तेवार पछी तो उदय अने सत्ता पण न होय. हवे (बीए के०) बीजुं दर्शनावरणीय कर्म तेनो (मिछासाणे के०) मिथ्यात्व अने सास्वादन गुणगाणे (नव के०) नवविधबंध, (चउपण के०) चतुर्विध अथवा पंचविध उदय अने (नवयसंतंसा के०) नवविध सत्ता होय. ए बे गुणगाणे थीणद्धीत्रिकनुं नियमाबंध होय माटें नवविधबंध कह्यो. अहीं बे नांगा थाय. एक नवविध बंध, चतुर्विध उदय अने नवविधसत्ता. बीजो नवविध बंध, पंचविध उदय अने नवविधसत्ता. ए बे नांगा होय ॥इति समुच्चयार्थः॥४३॥

मिस्साइ नियट्टीउ, छ च्चउपण नवय संत कम्मंसा ॥
चउ बंधतिगे चउ पण, नवंस डुसु जुअल छस्संता ॥ ४४ ॥

अर्थ–(मिस्साइनियट्टीउ के०) मिश्रगुणगाणाथी मांमीने निवृत्तिकरण नामे आठमुं गुणगाणुं छे, तेना पहेला नाग लगें, थीणद्धीत्रिकनो बंध टल्यो माटें (छच्चउपणनवयसंतकम्मंसा के०) छनो बंध, चार तथा पांचनो उदय अने नवविध सत्ता होय. एटले छनो बंध, चारनो उदय अने नवनी सत्ता, ए

प्रथम नांगो तथा ठनो बंध, पांचनो उदय अने नवनी सत्ता, ए बीजो नांगो. ए बे नांगा निश्चें होय. तेवार पछी अपूर्वकरणना शेष ठ नाग अने अनिवृत्तिकरण तथा सूक्ष्मसंपराय, ए त्रण गुणगाणे निद्रा अने प्रचला, ए बे पण बंधथकी ट ली मार्टे (चउबंध के०) चतुर्विधबंध, चतुर्विध उदय अने नवविधसत्ता, ए (ति गे के०) बंध, उदय अने सत्ता, त्रणेनो एक नांगो तथा (चउपणनवंस के०) चतुर्विधबंध, पंचविध उदय अने नवविध सत्ता. अहीं अंशशब्दें सत्ता जाणवी. ए बीजो नांगो. ए बे नांगा त्रण गुणगाणे होय. ए बे नांगा उपशम श्रेणीनी अपे क्षायें जाणवा. हवे क्षपकश्रेणीनी अपेक्षायें कहे ठे. (ङ्गु के०) नवमे अने द शमे ए बे गुणगाणे (जुअल के०) बंध अने उदयनुं जोडलुं एटले चतुर्विधबंध अने चतुर्विध उदय होय. अहींआं चारनी संख्या पाठलथी लेवी अने (ठस्संता के०) षड्विधसत्ता एटले चारनो बंध,चारनो उदय अने ठनी सत्ता, ए एक नांगो क्षपकने होय. नवमा गुणगाणाना बीजा नागें थीणद्धीत्रिकनो क्षय थया पछी नवमे अने दशमे गुणगाणे एज नांगो होय. जे नणी कम्मपयडीनी चूर्णिमध्यें कह्युं ठे के, क्षपकने अतिविशुद्धि नणी निद्रा अने प्रचलानो उदय न होय ते मार्टे पंचविध उदयनो नांगो पण न होय ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ४४ ॥

उवसंते चउ पण नव, खीणे चउ रुदय ठच्च चउसत्ता ॥
वेअणिअ आउगोए, विनज्ज मोहं परं वुछं ॥ ४५ ॥

अर्थ–(उवसंते के०) उपशांतमोह नामा अगीआरमे गुणगाणे बंधने अना वें (चउपण के०) चतुर्विध उदय, तथा पंचविध उदय अने (नव के०) नव विध सत्ता, एटले चारनो उदय अने नवनी सत्ता तथा पांचनो उदय अने नवनी सत्ता, ए बे नांगा होय. उपशांतमोहने तथाविध विशुद्धिने अनावें निद्रा प्रचला नो पण उदय संनवे, ते मार्टे पंचविध उदय कह्यो तथा (खीणे के०) क्षीण मोहगुणगाणे (चउरुदय के०) चतुर्विध उदय अने (ठच्च के०) षड्विधसत्ता, ए नांगो ठेहला समय विना बाकीना सघला समयें होय, एटले द्विचरम समय लगें होय अने चरमसमयें तो बें निद्रानी सत्ता पण टले मार्टे, चतुर्विध उदय अने (चउसत्ता के०) चतुर्विधसत्ता ए नांगो होय. एम बे नांगा क्षपकने होय. ते पछी उदय तथा सत्ता सर्व टले. हवे (वेअणिअआउगोए के०) वेदनीय, आ

युं अने गोत्र, ए त्रण कर्मना नांगा गुणठाणे (विनज्ज के०) कहीने (मोहंपरंवु छं के०) पछी मोहनीय कर्मना नांगा कहीशुं ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ४५ ॥

अथ वेदनीय गोत्रयोर्नंगज्ञानार्थमियं नाष्यगाथा ॥ तिहां वेदनीयकर्म अने गोत्रकर्मना नांगा जाणवाने माटें नाष्यनी गाथा कहे छे.

चउ ब्रस्सु डन्नि सत्तसु, एगे चउ गुणिसु वेअणि अ नंगा ॥
गोए पण चउ दो तिसु, एगऽठसु डन्नि इक्कंमि ॥ ४६ ॥

अर्थ—(ब्रस्सु के०) मिथ्यात्वथी मांमीने प्रमत्तांत लगें ब गुणठाणे अशाताना बंध, अशातानो उदय अने बेहुनी सत्ता, बीजो अशातानो बंध, शातानो उदय अने बेहुनी सत्ता, त्रीजो शातानो बंध, अशातानो उदय अने बेहुनी सत्ता, चोथो शातानो बंध, शातानो उदय अने बेहुनी सत्ता; ए (चउ के०) चार नांगा, बठा गुणठाणा लगें सघलें होय. अने अप्रमत्तथी मांमीने तेरमा गुणठाणा सुधीना (सत्तसु के०) सात गुणठाणे एक शाताज बांधे माटे. वेदनीयना आठ नांगा मांहेलो त्रीजो अने चोथो, ए (डन्नि के०) बे नांगा होय. तथा (एगेचउगुणिसु के०) एक अयोगी गुणठाणे चार नांगा होय. एक शातानो उदय, बेहुनी सत्ता, बीजो अशातानो उदय अने बेहुनी सत्ता, ए बे नांगा द्विचरम समय लगें होय अने चरम समयें एक शातानो उदय अने शातानी सत्ता, बीजो अशातानो उदय अने अशातानी सत्ता, ए बे नांगा होय एवं चार नांगा होय. ए (वेअणिअनंगा के०) वेदनीयकर्मना आठ नांगा चौद गुणठाणे कह्या.

हवे गोत्रकर्मना नांगा गुणठाणे कहे छे. (गोए के०) गोत्रकर्मना (पण के०) पांच नांगा पहेले गुणठाणे होय, ते कहे छे. एक नीचगोत्रनो बंध, नीचनो उदय अने नीचनी सत्ता, बीजो नीचनो बंध, नीचनो उदय अने बेहुनी सत्ता, त्रीजो नीचनो बंध, उंचनो उदय अने बेहुनी सत्ता, चोथो उंचनो बंध, नीचनो उदय अने बेहुनी सत्ता, पांचमो उंचनो बंध, उंचनो उदय अने बेहुनी सत्ता, ए पांच नांगा, मिथ्यात्व गुणठाणे होय अने सास्वादन गुणठाणे तो पूर्वोक्त मिथ्यात्वना पांच नांगा मांहेलो पहेलो नांगो न होय. बाकी (चउ के०) चार नांगा होय, केमके पहेलो नांगो तो तेउ वाउ मांहे होय अथवा तेउ वाउ मांहेथी चवीने बीजे स्थानकें अवतरतां केटलो एक काल पर्यंत होय. तिहांतो सम्यक्त्व नथी माटे क्यांथी पडीने सास्वादने आवे? तेमाटे प्रथम नंग निषेध्यो तथा मिश्र अने अविरति सम्यक्दृष्टि तथा देश

विरति ए (तिसु के०) त्रण गुणठाणे चोथो अने पांचमो ए (दो के०) बे नांगा होय, केमके नीचगोत्रनो तिहां बंध नथी, ते नणी प्रथमना त्रण नांगा न होय. तथा कोइ एक आचार्य कहे ठे के देशविरतिने एकज पांचमो नांगो होय, परंतु बीजो नांगो न होय जे नणी "गइजाइ पडुच्च उच्चगोञ्ज उच्चउ होइ" ए वचने उच्चैर्गोत्र नोज तिहां उदय होय, तथा (अठसु के०) प्रमत्त गुणठाणाथी मांमीने आठ गुणठाणे प्रत्येकें (एग के०) एकेक नांगो होय. तिहां प्रमत्तथी सूक्ष्म संपराय लगें पांच गुणठाणे तो उंच गोत्रनोज बंध, उदय होय माटें एक पांचमो नांगोज होय. अने उपशांतमोह, क्षीणमोह अने सयोगी ए त्रण गुणठाणे गोत्रनो बंध न थी माटे उच्चैर्गोत्रनो उदय अने बेहुनी सत्ता, ए ठठो नांगो होय, तथा (इक्कं मि के०) एक अयोगी गुणठाणे (डुन्नि के०) बे नांगा होय. तिहां उंचनो उद य अने बेनी सत्ता, ए ठठो नांगो, द्विचरम समयलगें होय अने उंचनो उदय त था उंचनी सत्ता, ए सातमो नांगो चरम समयें लगें होय ॥ इति समु० ॥ ४६ ॥

॥ अथ आयुर्नंगज्ञानार्थमियमंतर्नाष्यगाथा ॥ हवे आयुःकर्मना
नांगा जाणवाने अर्थें नाष्यनी गाथा कहे ठे.

अठ्ठाहिगवीसा, सोलस वीसं च बारस ठ दोसु ॥
दो चउसु तीसु इक्कं, मिठ्ठाइसु आउए नंगा ॥४७ ॥

अर्थ- (अठ्ठाहिगवीसा के०) प्रथम गुणठाणे अठावीश नांगा अने बीजे गुणठाणे ठवीश नांगा, त्रीजे गुणठाणे (सोलस के०) शोल नांगा, चोथे गुणठा णे (वीसंच के०) वीश नांगा, पांचमे गुणठाणे (बारस के०) बार नांगा, (दोसु के०) ठट्ठे अने सातमे गुणठाणे (ठ के०) ठ ठ नांगा, (चउसु के०) आठमे, नवमे, दशमे अने अगीआरमे ए चार गुणठाणे (दो के०) बे बे नां गा. (तीसु के०) बारमे, तेरमे अने चौदमे, ए त्रण गुणठाणे (इक्कं के०) एक नांगो. ए रीतें (मिठ्ठाइसुआउएनंगा के०) मिथ्यात्वादिक चौद गुणठाणे आयुः कर्मना नांगा जाणवा ॥ इत्यक्षरार्थः ॥ ४७ ॥

मिथ्यात्व गुणठाणे तो पूर्वें कहेला अठावीशे नांगा आयुना होय, जे नणी चा रे गतिना जीव मिथ्यादृष्टि होय. तथा मिथ्यात्वें चारे आयुनो पण बंध ठे, तेथी देवना पांच, नारकीना पांच, तिर्यंचना नव अने मनुष्यना नव, ए सर्व होय.

तथा सास्वादने नरकायुनो बंध नथी माटें तिर्यंच तथा मनुष्यने आयुर्बंध कालावस्थाना नरकायु बंधना बे नांगा टले, तेवारें शेष छवीश नांगा होय.

तथा मिश्रगुणगणे आयुनो बंधज नथी माटें बंधकालावस्थाना देव नारकीना बे बे तथा तिर्यंचना मनुष्यना चार, चार, एवं बार नांगा टले तेवारें शोल नांगा रहे.

तथा अविरति सम्यक्दृष्टिमांतो तिर्यंच अने मनुष्यने एक देवगति विना शेष त्रण गतिनां आयु न बांधवा संबंधिना त्रण त्रण नांगा टले अने देव तथा नारकी मध्यें तिर्यंचायु बंधनो एकेको नांगो टले. एवं आठ नांगा टले, तेवारें शेष वीश नांगा रहे.

तथा देशविरतिगुणगणुं तो मनुष्य अने तिर्यंचने होय, ते तो देशविरति छ तां देवायुज बांधे तेमाटें मनुष्य, तिर्यंचने प्रत्येकें बंधकालावस्थायें एकज नांगो तथा परजवायुर्बंधकाल थकी पूर्वें एकेको नांगो अने आयुर्बंधकाल पछी चारे नांगा होय. जेनणी कोइ एक तिर्यंच अथवा मनुष्य चारे आयु मांहेलुं एक आयु बांधीने पछी देशविरतिपणु पामे तेनी अपेक्षायें उत्तरावस्थाना चार नांगा कह्या. ए रीतें छ छ नांगा तिर्यंच अने मनुष्यना लेतां बार नांगा पांचमे गुणगणे पामीयें.

तथा प्रमत्त अने अप्रमत्त, ए बे गुणगणां मनुष्यनेज होय माटें मनुष्यना छ नांगा देशविरतिनी पेरें जाणवा, ए गुणगणे तिर्यंच नथी तेथी तेना नांगा टल्या.

तथा आठमे, नवमे, दशमे अने अगीआरमे, ए चार गुणगणे उपशमश्रेणी नी अपेक्षायें बे बे नांगा होय, एक मनुष्यायुनो उदय अने मनुष्यायुनी सत्ता, ए नांगो, आयुर्बंधकालथी पूर्वलो होय, अने मनुष्यायुनो उदय तथा मनुष्यायु अने देवायुनी सत्ता ए बीजो नांगो आयुर्बंध काल पछी उत्तरावस्थानो होय, ए बे नांगा होय. एने बंधकालावस्थानो नांगो न होय जे नणी ए अत्यंतविशुद्ध छे माटें आयु न बांधे अने आयु बांध्या पछी उपशमश्रेणी पडिवजे, तोपण देवायु बांध्या पछी पडिवजे. परंतु बीजां त्रण गतिनां आयु बांध्या पछी उपशमश्रेणी पडिवजे नहीं जे नणी कम्मपयडीमध्यें शिवशर्मसूरियें कह्युं छे "तिसु आउगेसु ब धेसु,जेण सेढि न आरोहइति" अने पूर्वें आयुर्बंध कस्या पछी क्षपकश्रेणी करे नहीं माटें क्षपकने मनुष्यायुनो उदय अने मनुष्यायुनी सत्ता, क्षपकश्रेणीयें ए चार गुणगणे आयुःकर्मनो एकज नांगो होय तथा क्षीणमोह सयोगी अने अयोगी ए त्रण गुणगणाने विषे मनुष्यायुनो उदय अने मनुष्यायुनी सत्ता, ए एकज नांगो होय. ए मिथ्यात्वादिक चौद गुणगणे आयुःकर्मना बंधोदय सत्ता संवेधें नांगा कह्या. ते सर्वे मलीने (१२५) थाय ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ४७ ॥

अथ गुणस्थानेषु मोहनीयस्य बंधस्थानान्याह ॥ हवे चौद गुणठाणा ने विषे मोहनीयकर्मनां बंधस्थानक विवरीने कहे छे.

गुणठाणगेसु अठसु, इक्किक्कं मोह बंधठाणं तु ॥
पंचानिअट्टि ठाणा, बंधोवरमो परं तत्तो ॥ ४८ ॥

अर्थ– (गुणठाणगेसुअठसु के०) मिथ्यात्वादिक आठ गुणठाणे (इक्किक्कंमोहबंधठाणंतु के०) मोहनीयकर्मनुं एकेकुं बंधस्थानक होय, एटले मिथ्यात्वें बावीशनो बंध,सास्वादने एकवीशनो बंध,मिश्र अने अविरतियें सत्तर सत्तरनो बंध, देशविरतियें तेरनो बंध तथा प्रमत्त, अप्रमत्त अने अपूर्वकरण, ए त्रण गुणठाणे नव नव प्रकृतिनुं एकेकुं बंधस्थानक होय, तिहां जांगा मिथ्यात्वें छ, सास्वादनें चार, मिश्रें बे, अविरतियें बे, देशविरतियें बे, प्रमत्तें बे अने अप्रमत्तें तथा अपूर्वकरणें अरतिशोक, ए जुगलना अजावें एकविध बंधने लीधे एकेको जांगो होय. तथा (पंचानिअट्टिठाणा के०) अनिवृत्ति बादरें पांच, चार, त्रण, बे अने, एक, एं पांच बंधस्थानक, पांच जागें होय. तिहां जांगो एकेको होय. (बंधोवरमोपरंतत्तो के०) तेवार पछी सूक्ष्मसंपरायादिक गुणठाणे मोहनीय कर्मनो बंध नथी, माटें बंधने अजावें मात्र उदयस्थानकज होय, ते कहे छे ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ४८ ॥

अथ उदयस्थानान्याह ॥ हवे चौद गुणठाणे मोहनीयकर्मनां उदयस्थानक कहे छे.

सत्ताइ दसउ मिछे, सासायण मीसए नवुक्कोसो ॥
छाई नवउ अविरई, देसे पंचाइ अठेव ॥ ४९ ॥

अर्थ– (मिछे के०) मिथ्यादृष्टिने (सत्ताइदसउ के०) सातथी दश पर्यंत ७–८–९–१० ए चार उदयस्थानक होय. तिहां जांगानी चोवीशी पूर्वे कही, ते रीतें अहीं पण आठ चोवीशी जाणवी. तथा (सासायणमीसएनवुक्कोसो के०) सास्वादन अने मिश्र, ए बे गुणठाणे सातथी मांमीने नव पर्यंत सात, आठ अने नव, ए त्रण उदयस्थानक होय. तिहां सास्वादने चार चोवीशी अने मिश्रें पण चार चोवीशी जांगानी उपजे तथा (छाईनवउअविरई के०) अविरति गुणठाणे छथी मांमीने नव पर्यंत एटले छ, सात, आठ अने नव, ए चार उदयस्थानक होय. तिहां जांगानी चोवीशी आठ उपजे तथा (देसेपंचाइअठेव के०) देशविरति गु

णगाणे पांचथी मांमीने आठ पर्यंत एटले पांच, ठ, सात अने आठ, ए चार ७दय स्थानक होय. तिहां पण नांगानी आठ चोवीशी उपजे ॥ इति स० ॥ ४ए ॥

विरए खउवसमिए, चउराई सत्त ठच्च पुव्वंमि ॥
अनियट्टि बायरे पुण, इक्कोव डुवेव उदयंसा ॥ ५० ॥

अर्थ—(विरएखउवसमिए के०) श्रेणीथी हेठे वर्त्ततो तेने क्षायोपशमिक विरतो कहीयें. ते क्षायोपशमिक विरति प्रमत्त तथा अप्रमत्त गुणठाणावालो जाणवो. तिहां प्रमत्ते अने अप्रमत्ते प्रत्येकें प्रत्येकें, (चउराईसत्त के०) चारथी मांमीने सात पर्यंत चार, पांच, ठ अने सात, ए चार उदयस्थानक होय, तिहां नांगानी आठ चोवीशी प्रमत्ते अने आठ चोवीशी अप्रमत्ते उपजे तथा (ठच्चपुव्वंमि के०) अपूर्वकरणगुणठाणे चारथी मांमीने ठ पर्यंत एटले चार, पांच अने ठ, ए त्रण उदयस्थानक होय. तिहां चार चोवीशी नांगानी थाय. तथा (अनियट्टि बायरेपुण के०) वली अनिवृत्तिबादर गुणठाणाने विषे (इक्कोवडुवेवउदयंसा के०) एक अथवा बे उदयस्थानक होय. तिहां संज्वलना चार कषाय मांहेलो एक कषाय अने त्रण वेदमांहेलो एक वेद, ए बे प्रकृतिनुं स्थानक होय. तिहां चार कषायने त्रण वेदना विकल्पें गुणतां बार नांगा थाय. तेवार पठी वेदनो उदय टले थके एकना उदयनुं स्थानक रहे, ते चतुर्विध, त्रिविध, द्विविध अने एकविध बंधने विषे पामीयें. तिहां यद्यपि पूर्वे चतुर्विधबंधे चार, त्रिविधबंधे त्रण, द्विविधबंधे बे अने एकविधबंधे एक, एवं दश उदय नांगा कह्या ठे. तो पण अहींआं सामान्य विवक्षायें चार, त्रण, बे अने एक, ए चार बंधस्थानकनी अपेक्षायें एकेक नांगो लेखवतां चार नांगा विवक्षीयें, एटले नवमे गुणठाणे शोल नांगा होय.

एगं सुहुम सरागो, वेएइ अवेअगा नवे सेसा ॥
नंगाणं च पमाणं, पुव्वुद्दिठेण नायव्वं ॥ ५१ ॥

अर्थ—(एगंसुहुमसरागो के०) सूक्ष्म संपराय गुणठाणे एक कीटिकृत संज्वलनो लोन (वेएइ के०) वेदे, ते माटें एकनुं उदयस्थानक होय. तेनो एक नांगो होय एटले दशमे गुणठाणे बंध विना एक संज्वलना लोननो उदय होय. अने (अवेअगानवेसेसा के०) शेष उपरला उपशांतमोहादिक चार गुणठाणे मोहोदय नथी माटें अवेदक होय केमके तिहां मोहनीयनो उदय न होय. अहींआं

थ्यात्वादिक गुणठाणे उदयस्थानकना (भंगाणंचपमाणं के०) भांगानुं प्रमाण अने भांगानुं उपजाववुं ते, (पुव्वुद्दिठेणनायवं के०) पूर्वें मोहनीयना उदयस्थान क विचारवाने अवसरें देखाड्यां छे तेमज पूर्वोक्त प्रकारें जाणवां ॥ इति ॥ ५१ ॥

हवे ए दशादिक उदयस्थानकें गुणठाणा आश्रयी भांगानी संख्या कहे छे.

इक्कग छडिक्कियारि, क्कारस इक्कार सेव नव तिन्नि ॥
एए चउवीस गया, बारडुगं पंच इक्कंमि ॥ ५२ ॥

अर्थ– दशनें उदयें (इक्कग के०) एक चोवीशी भांगानी मिथ्यात्व गुणठाणे जाणवी, केमके ए दशनो उदय, मिथ्यात्वेंज छे माटे. तथा नवने उदयें (छ के०) छ चोवीशी भांगानी, तेमध्यें मिथ्यात्वें त्रण, सास्वादनें एक, मिश्रें एक अने अविरतियें एक. तथा आठने उदयें (इक्कियार के०) अगीआर चोवीशी. ते मध्यें मिथ्यात्वें त्रण, सास्वादने बे, मिश्रें बे, अविरतियें त्रण अने देशविरतियें एक. तथा सातने उदयें पण (इक्कारस के०) अगीआर चोवीशी, तेमध्यें पहले, बीजे अने त्रीजे, गुणठाणे एकेकी, चोथे अने पांचमे त्रण त्रण, तथा छठे अने सातमे एकेक, तथा छने उदयें पण (इक्कारसेव के०) अगीआर चोवीशी, तिहां चोथे अने आठमे एकेकी तथा पांचमे, छठे अने सातमे त्रण त्रण, तथा पांचने उदयें (नव के०) नव चोवीशी. तिहां एक देशविरतियें तथा प्रमत्त अने अप्रमत्तें त्रण त्रण अने अपूर्व करणे बे. तथा चारने उदयें (तिन्नि के०) त्रण चोवीशी. तिहां प्रमत्त, अप्रमत्त अने अपूर्व करणें एकेकी जाणवी. (एएचउवीसगया के०) ए सर्व मलीने बावन चोवीशी थइ. तथा (डुगं के०) बेने उदयें (बार के०) बार भांगा अने (इक्कंमि के०) एकने उदयें (पंच के०) पांच भांगा, एम सर्व मली बावन चोवीशी अने उपर सत्तर भांगा थया ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ५२ ॥

हवे सर्व भांगानी शरवाले संख्या कहे छे.

बारस पणसठिसया, उदय विगप्पेहि मोहिआ जीवा ॥
चुलसीई सत्तुत्तरि, पयविंद सएहि विन्नेआ ॥ ५३ ॥

अर्थ– बावन चोवीशीने चोवीश गुणा करी द्विकोदयना बार अने एकोदयना पांच, एवं सत्तर भांगा भेलीयें, तेवारें (बारसपणसठिसया के०) बारशें ने पांशठ भांगा थाय. (उदयविगप्पेहिमोहिआजीवा के०) एटला उदयने भांगे करीने सर्व

संसारी जीव मोहनीयकर्मे मोह्या मुंफाणा पड्या छे. हवे तेनी पदसंख्या कहे छे. अहींआं मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी क्रोध इत्यादिक मोहप्रकृतिने (पय के०) पद एवी संज्ञा कही छे. तेना (विंदसएहिं के०) वृंद जे दश, नव, इत्यादिक उदय जांगाना पद एटले प्रकृति तेना शतक एटले शेंकडा केटला थाय? ते कहे छे. (चुलसी ई के०) चोराशी शो अने उपर (सचुत्तरी के०) सचोतेर थाय एटला मोहनीय कर्मना पदवृंदें करी सर्व जीव मुंफाणा थका (विन्नेआ के०) जाणवा. अहीं एकेका जांगामांहे मोहनीयनी जेटली प्रकृति बोलाय ते जांगामांहे तेटलां पद कहीयें. जेम दशने उदयें एक चोवीशी माटे दशने दश गुणा करीयें तेवारें दश चोवीशी थाय. नवने उदयें छ चोवीशी माटें छ गुणा करतां चोपन चोवीशी थाय, एम आठने उदयें अगीआर चोवीशीयें गुणतां अठयाशी, सातने अगीआरें गुणतां सत्त्योतेर, छने अगीआरें गुणतां छाशठ, पांचने नवें गुणतां पीस्तालीश, चारने त्रणे गुणता बार, ए सर्व मली त्रणशेंने बावन चोवीशी थाय. ते एकेकमध्यें चोवीश छे माटे चोवीश गुणा करतां (८४४८) थाय. तेमध्यें द्विकोदयना बारने डगुणा करतां चोवीश थाय तथा एकोदयना पांच, एवं उगणत्रीश जेलीयें तेवारें ८४७७ एटला मोहनीयनां पदवृंद गुणगणानी अपेक्षायें थाय॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ५३ ॥

अथ मिथ्यादृष्ट्यादिषु उदयजंगसूचिकाजाष्यगाथामाह ॥ हवे मिथ्यात्वादिक गुणगणे प्रत्येकें मोहनीयना उदय जांगा प्ररूपवाने अर्थे जाष्यगाथा कहे छे.

अठग चउ चउ चउर, ठगाय चउरो अ हुंति चउवीसा ॥
मिछाइ अपुव्वंता, बारस पणगं च अनिअट्टी ॥ ५४ ॥

अर्थ-(मिछाइअपुव्वंता के०) मिथ्यात्वथी मांमीने अपूर्वकरणनामा आठमा गुणगणा पर्यंत अनुक्रमें जांगा कहे छे. एटले मिथ्यात्वें (अठग के०) आठ चोवीशी, सास्वादने (चउ के०) चार चोवीशी, मिश्रें (चउ के०) चार चोवीशी, तेवार पछी चोथे, पांचमे, छठे अने सातमे, ए (चउरठगाय के०) चार गुणगणे आठ आठ चोवीशी अने आठमे गुणगणे (चउरोअहुंतिचउवीसा के०) चार चोवीशी जांगानी उपजे. एम मिथ्यात्वथी मांमीने अपूर्वकरण लगें बावन चोवीशी जांगानी थाय. पछी (बारसपणगंचअनिअट्टी के०) अनिवृत्ति गुणगणे वेने उदयें बार जांगा अने एकने उदयें चार जांगा तथा एक जांगो एकोदयें

सूक्ष्मसंपरायनो, एवं सत्तर नांगा उपर थाय. तेनी साथें बावन्न चोवीशीना १२४८ मेलवतां (१२६५) नांगा थाय ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ५४ ॥.

अथैषां नंगानां पदानां योगादिनिर्गुणानाह ॥ हवे ए मोहनीयना उदय नांगा तथा उदय पदवृंद ते योग, उपयोग अने लेश्या साथें गुणवा, ते उपदेश कहे छे.

जोगोवउग लेसा, इएहिं गुणिआ हवंति कायवा ॥
जे जब गुणठाणे, हवंति ते तब गुणकारा ॥ ५५ ॥

अर्थ–(जोगोवउगलेसाइएहिं के०) योग, उपयोग, अने लेश्यादिकें करीने उदय नांगा तथा पदवृंद ते (गुणिआहवंतिकायवा के०) गुणा करवा ते (जेजब गुणठाणे के०) मिथ्यात्वादिक गुणगणें जे जिहां योग, उपयोग, लेश्या, जेटलां (हवंति के०) होय. (तेतबगुणकारा के०)ते तिहां तेटला गुणा करवा ॥५५॥

तिहां प्रथमयोगना गुणाकारनी नावना लखीयें छैयें. चार मनोयोग, चार वचन योग अने औदारिक काययोग, ए नव योग तो मिथ्यात्वथी मांमीने दशमा गुणगणा पर्यंत दशे गुणगणे होय. ते दश गुणगणाना सर्वसंख्यायें उदयनांगा (१२६५) छे. तेने नव योग साथें गुणतां (११३८५) उदयना नांगा थाय.

तथा वली मिथ्यादृष्टिने वैक्रिय काययोगें वर्त्ततां आठ चोवीशी नांगानी होय. तथा वैक्रियमिश्र, औदारिकमिश्र अने कार्मण, ए त्रण योगें वर्त्ततां मिथ्यात्वीने प्रत्येकें आठना उदयनी एक, नवना उदयनी बे अने दशना उदयनी एक, एवं चार चार चोवीशी नांगानी अनंतानुबंधीआ सहितवाली पामीयें, परंतु बीजी चार चोवीशी अनंतानुबंधीआना उदय विनानी न पामीयें, जे नणी जेणे पूर्वें सम्यक्त्वें करी अनंतानुबंधीआ विसंयोज्या होय, तेवली कर्मवशें परिणामनी परावर्त्तियें मिथ्यात्व पामे, तेवारें फरी अनंतानुबंधीआ बांधवा मांमतां मात्र बंधावलिका लगेंज अनंतानुबंधीआनो उदय न पामीयें अने एवी रीतें जे अनंतानुबंधीआ विसंयोजीने मिथ्यात्वें आवे, तेनुं जघन्यथी पण अंतरमुहूर्त्तायुतो अवश्य होय. केमके अनंतानुबंधीआना उदय विना मिथ्यात्वीने काल करवो निषेध्यो छे. ते जीव, तिहां रह्यो मिथ्यात्व प्रत्ययें वली अनंतानुबंधीया बांधे ते उदय आव्या पछी मरण पामीने जेवारें बीजे स्थानकें जाय, तेने वचालें अपांतरालगतियें वर्त्ततां तथा उपजती वेलायें ए त्रण योग अनंतानुबंधीना उदय विनाना मिथ्यात्वीने होय. तिहां कार्मणयोग वाटें वर्त्ततां जीवने होय तथा औदारिकमिश्र योग ति

र्यंच मनुष्यने उपजती वेलायें होय अने वैक्रियमिश्र देव तथा नारकीने उपजती वेलायें होय. ए प्रायिक बोलछे. अन्यथा मिथ्यात्वी तिर्यंच मनुष्यने वैक्रियशरीर करतां तथा मूकतां पण वैक्रियमिश्र योग होय पण ते चूर्णिकारें अहींयां विवक्ष्युं नथी, एम आगल पण चूर्णिकारनो मत जाणवो. ते माटें ए त्रण योगने विषे अनंतानुबंधीआना उदय रहितनी चार चार चोवीशी जांगानी छे. ते न पामीयें बाकी चार चार चोवीशीज पामीयें शरवाले वीश चोवीशी मिथ्यात्वें होय. तथा सास्वादने कार्मणयोगें चार, वैक्रियकाय योगें चार, अने औदारिक मिश्रकाययोगें चार, एवं बार चोवीशी होय तथा मिश्रदृष्टिने वैक्रिय काययोगें चार चोवीशी होय. तथा अविरति सम्यक्दृष्टिने मात्र वैक्रिय काययोगेंज आठ चोवीशी होय.

तथा देशविरतियें वैक्रिययोगें आठ अने वैक्रियमिश्र योगें आठ, एवं शोल चोवीशी थाय तथा प्रमत्त साधुने पण वैक्रियें तथा वैक्रियमिश्रयोगें प्रत्येकें आठ आठ चोवीशी गणतां, शोल चोवीशी थाय तथा अप्रमत्त साधुने वैक्रिय योगें आठ चोवीशी अने वैक्रिय मिश्रतो अप्रमत्तने न होय केमके चोथा गुणठाणाथी उपरांत वैक्रिय तथा वैक्रियमिश्रकाय योग लब्धि प्रत्ययिक होय. तेमांहे वैक्रिय मिश्रकाययोग तो वैक्रियशरीर आरंजतां तथा मूकतां वखतज होय अने अप्रमत्त साधुने तो विशुद्धपणाथी लब्धि प्रयुंजवाने अजावें वैक्रियनुं आरंजवुं नथी तथा मूकवुं पण नथी अने प्रमत्त साधुने वैक्रिय आरंजी पछी विशुद्धिने वशें वैक्रिय शरीर छतां अप्रमत्त थाय, ते अपेक्षायें अप्रमत्तने वैक्रियकाययोग होय, ते माटें अप्रमत्तें वैक्रियनी आठ चोवीशी कही एटले शरवाले वैक्रिययोगें मिथ्यात्वें आठ, सास्वादने चार; मिश्रें चार, अविरतियें आठ, देशविरतियें आठ, प्रमत्तें आठ, तथा अप्रमत्तें आठ, एवं अडतालीश चोवीशी थइ. तथा वैक्रियमिश्रकाययोगें मिथ्यात्वें चार देशविरतियें आठ अने प्रमत्तें आठ, एवं वीश चोवीशी थइ तथा औदारिक मिश्रयोगें मिथ्यात्वें चार अने सास्वादने चार, एवं आठ चोवीशी थाय. तथा कार्मण योगें पण मिथ्यात्वें चार अने सास्वादने चार, एवं आठ चोवीशी थाय. एम सर्व मली चोराशी चोवीशी जांगानी थाय. तेने चोवीशें गुणतां (२०१६) जांगा थाय. ते पूर्वोक्त नव योग साथें गुणोला (११३८५) जांगा साथें मेलवतां (१३४०१) जांगा थया.

हवे वैक्रियमिश्रने सास्वादने तथा चोथे गुणठाणे कार्मणयोगें वर्त्तताने विशेष छे. ते जणी तेना जांगा जूदा कही देखाडे छे. वैक्रिय मिश्रयोगें सास्वादने वर्त्तताने नपुंसकवेदनो उदय न होय, जे जणी वैक्रिय मिश्रयोगी नपुंसकवेदीने

नारकी प्रमुखमांहे सास्वादने वर्त्तता उपजवुं नथी ते जणी वैक्रियमिश्रयोगें जे चार चोवीशी उदय नांगानी ले, ते मध्येंथी नपुंसकवेदथी उत्पन्न थयेला आठ, आठ नांगा टले. बाकी शोल शोल नांगा रहे माटें चार चोवीशीने गमे चार षोडशक नांगा सास्वादने वैक्रियमिश्र योगीने होय.

तथा अविरति सम्यक्दृष्टि वैक्रियमिश्र तथा कार्मणयोगी, ए बेहुने स्त्रीवेदनो उदय न होय जे नणी वैक्रिय काययोगी अविरति सम्यक्दृष्टि जीव, स्त्रीवेदमांहे न उपजे, ते माटें चोथे गुणठाणे ए बेहु योगें वर्त्तताने आठ, आठ चोवीशीने गमे आठ आठ षोडशक नांगा होय. अहींआं केवल स्त्रीवेदना विकल्पथी उपजेला आठ आठ नांगा, चोवीशी चोवीशीमांहेथी काढीयें. ए टीकाकारनुं मत अवलंबीने कह्युं ले अन्यथा चूर्णिमांहे तो कदाचित् स्त्रीवेदी मांहे पण अवतरे. एम पण कह्युं ले. तेनो पाठ " कयावि हुज्ज बिवेअगेसुवि वेउव्वि मीसगस्स "

तथा प्रमत्तसाधुने आहारक तथा आहारक मिश्र ए बे योगें वर्त्तता स्त्रीवेदनो उदय न होय जे नणी आहारक मिश्रयोग चौद पूर्वधर पुरुषनेज होय स्त्रीने तो चौद पूर्वनुं नणवुं निषेध्युंले जे नणी सूत्रें कह्युंले के "तुच्छागारवबहुला, चलिंदिआ दुब्बलाअधीइए॥ इअ अइवसेस ज्जयणा,नूअवाओ अ नो छीणं॥१॥(नूतवाद के०) दृष्टिवाद जे बारमुं अंग, ते स्त्रीने न नणाववुं, जे नणी स्त्री जाति स्वनावें तोछडी होय ले तेमाटें गर्व घणो करे, विद्या जीरवी न शके. इंद्रिय चंचल होय, बुद्धि ओछी होय ते माटे ए अतिशय पाठ नणी स्त्रीने निषेध्युं ले ते दृष्टिवादमांहे चोथे अधिकारें पूर्व ले माटे पूर्व नण्या विना स्त्री आहारक शरीर न करे, ते माटे प्रमत्त अप्रमत्त गुणठाणे प्रत्येक एकेकायोगें उदय नांगानी आठ आठ चोवीशी मांहेथी स्त्री वेदना त्रीजा नागना आठ नांगा कहाडतां शेष शोल षोडशक नांगा होय.

तथा अप्रमत्त साधु एक आहारकयोगीज होय परंतु आहारकमिश्रयोगी न होय केमके ए योगतो आहारक शरीर आरंनतां तथा मूकतां होय ते तो अप्रमत्त साधुने लब्धिनुं प्रयुंजवुं नथी तेनणी अंहीं नांगानां आठ षोडशक होय. ए सर्व चुम्मालीश षोडशक थयां. ते चुम्मालीशने शोलें गुणतां (७०४) नांगा थाय, ते पूर्वोक्त (१३४०१) मध्यें मेलवतां (१४१०५) उदय नांगा थया.

तथा औदारिक मिश्रकाययोगीने चोथे गुणठाणे स्त्रीवेद अने नपुंसकवेदनो उदय न होय, तेमांहे औदारिक मिश्रयोगी सम्यक्दृष्टिने उपजवुं नथी ते नणी ए चोथे गुणठाणे आठ चोवीशीने स्थानकें केवल पुरुषवेद विकल्पना औ

दारिकमिश्रयोगें आठ अष्टक नांगा होय. अहींआं बे वेदना शोल नांगा प्रत्येक चोवीशी मध्येंथी टालवा. ए प्रायिक बोल जाणवो अन्यथा ब्राह्मी, सुंदरी, मल्लीना थ, राजीमती प्रमुख सम्यक्दृष्टि थकां अहींआं स्त्रीवेदें उपन्यां, तिहां उपजतां औदारिकमिश्र योग केम न होय, माटे ए केम घटे? ए आठ अष्टकना चोशठ नांगा पूर्वला (१४१०५) मांहे मेलवतां (१४१६९) उदय नांगा थया ॥ ५५ ॥

अथ पदवृंदानि योगगुणितानि नाव्यंते. तत्रोदयप्ररूपिका नाष्यगाथामाह ॥ हवे उदयपदवृंद योग साथें गणवां, ते नावे छे. तिहां चौद गुणठाणे उदय पदवृंद प्ररूपवाने अंतर नाष्यगाथा कहे छे.

अठ्ठी बत्तीसं, बत्तीसं सठि मेव बावन्ना ॥
चोआल दोसु वीसा, मिछा माईसु सामन्नं ॥५६॥

अर्थ— मिथ्यात्व गुणठाणे (अठ्ठी के०) अडशठ पद, सास्वादनें (बत्तीसं के०) बत्रीश पद, मिश्रें (बत्तीसं के०) बत्रीश पद, अविरतियें (सठि के०) शाठ पद, (मेव के०) एमज देशविरतियें (बावन्ना के०) बावन पद, तेवार पछी प्रमत्त अने अप्रमत्तें ए (दोसु के०) बे गुणठाणे प्रत्येकें (चोआल के०) चुम्मालीश चुम्मालीश पद होय. तथा अपूर्वकरणें (वीसा के०) वीश पद होय. ए सर्व मली (३५२) पद होय. एटली चोवीशी थाय. माटें एने चोवीश गुणा करतां (८४४८) थाय अने अनिवृत्तिबादरें द्विकोदयना बार नांगा तेमाटें तेने बमणा करीयें, तेवारें चोवीश थाय. तेनी साथें एकोदयना पांच नांगा मेलवतां ओगणत्रीश थाय. ते पूर्वला (८४४८) मध्यें नेलतां (८४७७) एटलां मोहनीयना उदय पदवृंद (मिछामाईसुसामन्नं के०) मिथ्यात्व आदें देइने सर्व गुणठाणे थइने सामान्यपणे थाय. हवे उदय पदवृंद योग साथें गणवां. ते नावीयें छैयें. तिहां पूर्वोक्त (८४७७) पदवृंद थयां छे तेने चार मनोयोग, चार वचन योग, तथा औदारिककाययोग, ए नव योग तो दशमा गुणठाणा लगें ध्रुव होय माटें नवे योग साथें गुणतां (७६२९३) पदवृंद नव योगसाथें गुणतां थाय. मिथ्यात्व गुणठाणे सातना उदयनी एक चोवीशी नांगानी छे ते माटें सात एकुं सात तथा आठना उदयनी त्रण चोवीशी छे माटें आठ त्रिक चोवीश, एम नव त्रिक सत्तावीश, दश एकुं दश, एम मिथ्यात्वें अडशठ पद थाय तथा तेवार पछी सर्व गुणठाणे जेटलां जेटलां उदयस्थानक होय. ते एकेका उदयें जेटली जेटली नांगानी चोवीशी छे. तेटली उदयना आंक साथें गुणीयें, तेवारें पद थाय.

हवे वैक्रिययोगें मिथ्यात्वें अडशठ पद, आठ चोवीशी छे तेमाटें. अने वैक्रियमिश्रें अनंतानुबंधी सहित चार चोवीशी पामीयें, तेमाटें आठनो उदय एक ने दे, माटें आठ एकुं आठ अने नवनो उदय बे नेदे, माटे नवे डु अढार अने दशनो उदय एक नेदे, माटे दश एकुं दश, एवं छत्रीश पद थयां. तेमज औदारिकमिश्रें पण छत्रीश अने कार्मणें पण छत्रीश, शरवाले (१३६) मिथ्यात्व गुणठाणे चार योगनां उदय पद थाय. तथा सास्वादने वैक्रिययोगें बत्रीश, औदारिक मिश्रें बत्रीश, कार्मणें बत्रीश, मली छन्नुं थाय. तथा मिश्र गुणठाणे वैक्रिययोगें बत्रीश थाय. एम त्रण गुणठाणे मली (२०४) उदय पद थाय. तथा वैक्रिययोगें चोथे गुणठाणे शाठ, पांचमे बावन्न, छठे चुम्मालीश अने सातमे चुम्मालीश, शरवाले बशो उदयपद थाय. तेनी साथें आगल त्रण गुणठाणाना (२०४) नेलतां (४०४) थाय.

तथा वैक्रियमिश्रयोगें देशविरतियें बावन्न, प्रमत्तें चुम्मालीश, शरवाले छन्नु थया. ते पूर्वोक्त पांचशो चार साथें नेलतां छशो उदयपदनी चोवीशी थाय, ए सर्वनो विधि पूर्वें उदय नांगामां कह्यो छे तेने चोवीशगुणा करतां (१४४००) पद थाय.

तथा वैक्रियमिश्रयोगें सास्वादने नपुंसकवेद न होय, ते नणी बत्रीश षोडशक थाय तथा चोथे गुणठाणे वैक्रियमिश्र तथा कार्मणयोगें स्त्रीवेद न होय माटें शाठ शाठ षोडशक होय. एवं (१५२) षोडशक थयां. तथा प्रमत्तें अने अप्रमत्तें, ए बे गुणठाणे आहारक योगीने स्त्रीवेद न होय माटे बे वेद आश्री प्रत्येक गुणठाणे चुम्मालीश चुम्मालीश षोडशक थाय अने प्रमत्तें आहारक मिश्रयोगीना चुम्मालीश षोडशक लेवां. एवं सर्व मली (२८४) षोडशकने शोल गुणां करतां (४५४४) थाय तेनी साथें पूर्वला (७६२०२) तथा (१४४००) मेलवतां (९५१४६) थया. तथा औदारिकमिश्रयोगीने चोथे गुणठाणे स्त्रीवेद तथा नपुंसकवेद न होय ते नणी तिहां मात्र पुरुषवेदनाज शाठ अष्टक नांगा लेवा तेना (४८०) थाय. ते पूर्वला राशिमांहे नेलतां (९५७१७) एटला पदवृंद योगसाथें गुणतां थाय. यडुक्तं "सत्तरस सत्तसया, पण नउई सहस्स पयसंखा" इति वचनात्.

हवे उपयोग साथें गुणतां जे उदय नांगा होय ते कहीयें छैयें. तिहां मिथ्यात्व अने सास्वादन ए बे गुणठाणे प्रत्येकें एक मतिअज्ञान, बीजुं श्रुतअज्ञान, त्रीजुं विनंगअज्ञान, चोथुं चक्षुदर्शन, पांचमुं अचक्षुदर्शन. ए पांच उपयोग होय तथा त्रीजे, चोथे अने पांचमे ए त्रण गुणठाणे त्रण ज्ञान अने अवधिदर्शन सहित त्रण दर्शन, एवं छ उपयोग प्रत्येकें होय तथा छठाथी दशमा गुणठाणा लगें

तेहीज छ उपयोग सार्थे सातमुं मनःपर्यवज्ञान पण होय माटें सात उपयोग होय.

तिहां मिथ्यात्वें आठ अने सास्वादने चार, एवं बार चोवीशी जांगानी बे गुण ठाणे मलीने छे. तेने पांच उपयोग सार्थे गुणतां शाठ चोवीशी थाय. तथा मिश्रे चार, अविरतियें आठ अने देशविरतियें आठ, एवं त्रण गुणठाणे वीश चोवीशी जांगानी छे. तेने छ उपयोग सार्थे गुणतां (१२०) उदय जांगानी चो वीशी थाय. तथा प्रमत्तनी आठ, अप्रमत्तनी आठ, अपूर्वकरणनी चार, एवं त्रण गुणठाणानी वीश चोवीशीने सात उपयोग सार्थे गुणतां (१४०) चोवीशी उदय जांगानी थाय. अहीं सुधी सर्व मली (३२०) चोवीशी उदय जांगा नी थइ. तथा जे आचार्य, मिश्र गुणठाणे पण पांच उपयोग माने छे. तेना मतें (३१६) चोवीशी थाय. तिहां पहेला मतें (३२०) ने चोवीश गुणा करतां (७६८०) जांगा थाय. अने बीजा आचार्यना मतें चार चोवीशी काहाडी नाख तां (३१६) ने चोवीश गुणा करतां (७५८४) जांगा थाय. तेवार पछी द्विकोदय ना बार जांगा अने एकोदयना पांच, एवं सत्तर जांगाने सात उपयोग सार्थे गुण तां (११९) जांगा थाय ते पूर्वली राशिमांहे जेलतां (७७९९) उदय जांगा थाय, तथा मिश्र गुणठाणे पांच उपयोग माने, तेना मतें (७७०३) उदयस्थान जांगा थाय.

हवे एनां पदवृंद विचारे छे. तिहां मिथ्यात्वें सामान्य पद अडशठ अने सास्वा दने बत्रीश, एवं एकशो थयां तेने पांच उपयोग सार्थे गुणतां पांचशें पद थाय. ए चोवीशीना आदि पद ते जणी चोवीश गुणा करतां बार हजार पदवृंद थाय.

तथा मिश्रे बत्रीश, अविरतियें शाठ अने देशविरतियें बावन्न, ए त्रण गुणठा णाना (१४४) सामान्यपद छे तेने छ उपयोग साथे गुणतां (८६४) चोवीशी उद यपदनी थाय, तेने चोवीश गुणा करतां (२०७३६) पदवृंद थाय.

तथा प्रमत्तें चुम्मालीश, अप्रमत्तें चुम्मालीश, अने अपूर्वकरणे वीश, एम त्रण गुणठाणे थइ (१०८) सामान्यपद थाय. तेने सात उपयोग सार्थे गुणतां (७५६) पद थाय. तेने चोवीश गुणा करतां (१८१४४) पदवृंद थाय. ए सर्व मली (५०८८०) एटला दश उपयोग सार्थे आठ गुणठाणे पदवृंद थाय. तेमध्यें द्वि कोदयना चोवीश अने एकोदयना पांच, ए उंगणत्रीशने सात उपयोग सार्थे गुणतां (२०३) थाय. ते पूर्वला पदवृंद राशिमध्यें जेलीयें, तेवारें (५१०८३) एटला दश उपयोगना दश गुणठाणे थइ पदवृंद थाय तथा पूर्वला मतांतरें स र्व सामान्य पद (२०८८) होय तेने चोवीश गुणा करतां (५०११२) थाय ते

मांहे (२०३) द्विकोदयवालां पद भेलतां (५०३१५) पदवृंद उपयोग साथें थाय.

हवे लेश्यासाथें मोहनीयना उदय भांगा विचारे छे, तिहां मिथ्यात्वथी मांमीने चोथा गुणठाणा लगें छए लेश्या होय माटे चार गुणठाणानी चोवीश चोवीशी ने छ लेश्या साथें गुणतां (१४४) चोवीशी थाय. तथा पांचमे, छठे अने सातमे ए त्रण गुणठाणे कृष्णादिक त्रण लेश्या मांहे देशविरति तथा सर्वविरतिनुं प डिवजवुं न होय तेथी प्रथमनी त्रण लेश्या अहींआं निषेधी माटे बाकी तेजो, पद्म अने शुक्ल, ए त्रण लेश्या होय अन्यथा देशविरति तथा सर्व विरति लह्या पछी तो छ लेश्या पण होय. ए वचन विरोध न विचारवो, माटे ए त्रण गुणठा णानी चोवीश चोवीशीने त्रण लेश्यायें त्रिगुणा करतां बहोत्तेर चोवीशी थाय. त था अपूर्वकरण गुणठाणे एक शुक्ललेश्याज होय माटे चार चोवीशी होय. ए स र्व मली बशें ने वीश थाय तेने चोवीश गुणा करतां (५२८०) भांगा थया. तेम ध्यें द्विकोदयना बार अने एकोदयना पांच, ए सत्तरमध्येंतो एकज शुक्ल लेश्या होय, माटे ते सत्तर भांगा भेलतां (५२९७) उदय भांगा लेश्या साथें थाय.

हवे लेश्यायें पदवृंद कहे छे. तिहां मिथ्यात्वें अडशठ, सास्वादने बत्रीश, मिश्रें ब त्रीश अने अविरतियें शाठ, शरवाले (१९२) सामान्य पद होय. तेनें छ लेश्या यें गुणतां (११५२) थाय. तथा देशविरतियें बावन्न, प्रमत्तें चुम्मालीश अने अप्रमत्तें चुम्मालीश. एवं (१४०) तेने त्रण लेश्यायें त्रिगुणा करतां (४२०) थाय. त था अपूर्व करणे वीश तिहां एक शुक्ल लेश्यायें गुणतां वीश थाय एम शरवाले (१५९२) लेश्यायें सामन्यपद थाय. तेने चोवीश गुणा करतां (३८२०८) थाय. तेमध्यें द्विकोदयना चोवीश अने एकोदयना पांच, भेलतां (३८२३७) एटला पदवृंद लेश्या साथें गुणतां थाय. एनी गाथा कहे छे " तिगहीणा तेवन्ना, सयाउ उदयाण हुंति सेसाउ ॥ अडतीस सहस्साइं, पयाण सयदोय सगतीसा ॥ १ ॥ " एम योग उपयोग लेश्या साथें मोहनीयना उदयस्थानकना भांगा विचा र्या वली सुबुद्धियें विशेषें विचारवा ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ५६ ॥

अथ सत्तास्थानान्याह ॥ हवे गुणठाणे मोहनीयकर्मनां सत्तास्थानक कहे छे.

तिन्नेगे एगेगं, तिगमीसे पंच चउसु तिग पुव्वे ॥
इक्कारबायरंमिउ, सुहुमो चउतिनि उवसंते ॥ ५७ ॥

अर्थ-(तिन्नेगे के०) एक मिथ्यात्वगुणठाणे त्रण सत्ता स्थानक होय, ति

हां जे त्रण पुंज करी मिथ्यात्वें जाय, तेने अठावीशनी सत्ता, तेमध्येंथी सम्यक्त्व पुंज उवेल्या पछी सत्तावीशनी सत्ता, मिश्रपुंज उवेल्या पछी अथवा अनादि मिथ्यात्वीने छवीशनी सत्ता जाणवी. एनी भावना सर्व पूर्वें मोहनीयनां सत्तास्थानक सामान्यें विचारवाने प्रस्तावें विस्तारें भावी छे. तेमाटें अहींआं नथी भावता तथा (एगेगं के०) एक सास्वादने एकज अठावीशनुं सत्तास्थानक होय, जे भणी ए गुणठाणुं त्रण पुंज छतां सम्यक्त्व वमतांज होय, तेमाटें. तथा (तिगमीसे के०) मिश्रगुणठाणे त्रण सत्तास्थानक होय. तिहां त्रिपुंजीने अठावीशनुं, सम्यक्त्व उवेलें सत्तावीशनुं तथा अनंतानुबंधीआ विसंयोज्या पछी जे पडतो मिश्रें आवे, तेने चोवीशनुं सत्तास्थानक जाणवुं तथा चोथे, पांचमे, छठे अने सातमे ए (चउसु के०) चार गुणठाणे प्रत्येकें (पंच के०) पांच पांच सत्तास्थानक होय, तिहां त्रण पुंज छतां अठावीशनुं, अनंतानुबंधीआ विसंयोज्ये चोवीशनुं, तेमध्येथी मिथ्यात्व क्षय गयें त्रेवीशनुं; तेमांथी मिश्रक्षयें बावीशनुं, तेमांथी सम्यक्त्व क्षयें एकवीशनुं ए सत्तास्थानक क्षायिक सम्यक्दृष्टिने होय. तथा (तिगपुवे के०) अपूर्वकरण गुणठाणे त्रण सत्तास्थानक होय, तिहां क्षायिक सम्यक्दृष्टिने क्षपकश्रेणीयें अथवा उपशमश्रेणीयें एकवीशनुं सत्तास्थानक तथा औपशमिक सम्यक्त्वें उपशमश्रेणीयें अठावीश अने चोवीशनुं सत्तास्थानक होय तथा (इक्कारबायरंमि उ के०) बादर संपरायें अगीआर सत्तानां स्थानक होय. तिहां अठावीश अने चोवीश उपशमश्रेणीनी अपेक्षायें अने एकवीशनी सत्ता, उपशमश्रेणीयें क्षायिक सम्यक्दृष्टिने होय अथवा क्षपकश्रेणीयें पण ज्यां सुधी आठ कषायनो क्षय नथी कर्यो, तिहां लगें एकवीशनी सत्ता होय, तेवार पछी आठ कषायना क्षयें तेरनी सत्ता तेमांथी नपुंसकवेदक्षयें बारनी सत्ता, स्त्रीवेद क्षयें अगीआरनी सत्ता, हास्यषट्कने क्षयें पांचनी सत्ता, पुरुष वेद क्षयें चारनी सत्ता, संज्वलनक्रोध क्षयें त्रणनी सत्ता, संज्वलनमान क्षयें बेनी सत्ता, संज्वलन मायाक्षयें एकनी सत्ता होय. तथा (सुहुमोचउ के०) सूक्ष्म संपराय गुणठाणे चार सत्तास्थानक होय. तिहां अठावीश, चोवीश, उपशमश्रेणीनी अपेक्षायें तथा एकवीशनुं क्षायिक सम्यक्दृष्टिने उपशमश्रेणिनी अपेक्षायें अने एक प्रकृतिनुं सत्तास्थानक क्षपकश्रेणीनी अपेक्षायें जाणवुं तथा (तिन्निउवसंते के०) उपशांतमोह गुणठाणे अठावीश, चोवीश अने एकवीश, ए त्रण सत्तास्थानक होय. ए पूर्वली पेरें भाववां.

हवे एनो संवेध कहे छे. मिथ्यात्वें बावीशनुं एकज बंधस्थानक छे. तिहां सा

त, आठ, नव अने दश, ए चार उदयस्थानक छे. तेमध्यें सातने उदयें एकज अठावीशनी सत्ता होय अने बीजा त्रण उदयें अठावीश, सत्तावीश अने छवीश, ए त्रण त्रण सत्ता प्रत्येकें होय. एवं मिथ्यात्वें सर्व थइ दश सत्तास्थानक होय.

तथा सास्वादने एकवीशना बंधस्थानकें सात, आठ अने नव, ए त्रण उदय स्थानकने विषे प्रत्येकें अठावीशनी सत्ता होय. एम त्रण सत्तास्थानक होय.

तथा मिश्रें सत्तरनो बंध छे, तिहां सात, आठ, नव, ए त्रण उदय स्थानकें प्रत्येकें अठावीश, सत्तावीश अने चोवीश, ए त्रण सत्ता गणतां नव सत्तास्थानक होय.

अविरतियें सत्तरनो बंध छे, तिहां छ, सात, आठ अने नव, ए चार उदय स्थानक होय. तिहां छने उदयें अठावीश, चोवीश अने एकवीश, ए त्रण सत्तास्थानक होय तथा सात अने आठ, ए बे उदयें प्रत्येकें अठावीश, चोवीश, त्रेवीश, बावीश अने एकवीश, ए पांच पांच सत्तास्थानक होय तथा नवने उदयें एकवीश विना बाकीनां चार सत्तास्थानक होय. एवं शरवाळे सत्तर सत्तास्थानक होय.

देशविरतियें तेरनो बंध छे तिहां पांच, छ सात अने आठ, ए चार उदय स्थानक होय. तिहां पांचने उदयें अठावीश, चोवीश अने एकवीश, ए त्रण सत्ता होय. तथा छने उदयें अठावीश, चोवीश, त्रेवीश, बावीश अने एकवीश, ए पांच सत्ता. तेमज सातने उदयें पण एज पांच सत्तानां स्थानक होय तथा आठने उदयें एकवीश विना शेष चार सत्ता होय. एम सर्व थइ सत्तर सत्तानां स्थानक होय.

प्रमत्तें नवनो बंध, तिहां चार, पांच, छ अने सात, ए चार उदयस्थानक होय, तिहां चारने उदयें अठावीश, चोवीश अने एकवीश, ए त्रण सत्ता होय. पांच अने छने उदयें अठावीश, चोवीश, त्रेवीश, बावीश अने एकवीश, ए पांच सत्ता प्रत्येकें होय अने सातने उदयें एकवीश विना चार सत्ता होय. एम सर्व थइ सत्तर सत्तास्थानक होय. तेवीज रीतें अप्रमत्तें पण एज सत्तर सत्तास्थानक जाणवां.

तथा अपूर्वकरणे नवनो बंधछे, तिहां चार, पांच अने छ, ए त्रणे उदयस्थानकें प्रत्येकें अठावीश, चोवीश अने एकवीश, ए त्रण सत्ता गणतां नव सत्ता होय.

अनिवृत्तियें पांच, चार, त्रण, बे अने एक, ए पांच बंधस्थानक होय. तिहां पांचने बंधें बेने उदयें अठावीश, चोवीश, एकवीश, तेर, बार अने अगीआर, ए छ सत्तास्थानक होय. तथा चारने बंधें एकने उदयें अठावीश, चोवीश, एकवीश, अगीआर, पांच अने चार, ए छ सत्ता होय तथा त्रणने बंधें एकने उदयें अठावीश, चोवीश, एकवीश, चार अने त्रण, ए पांच सत्ता होय. तथा बेने बंधें एकने उदयें

अठावीश, चोवीश, एकवीश, त्रण अने बे, ए पांच सत्ता होय. तथा एकने बंधें एकने उदयें अठावीश, चोवीश, एकवीश, बे अने एक ए पांच सत्ता होय. एवं स र्वे मली पांच बंध स्थानकें थइने शरवाले सत्तावीश सत्तास्थानक होय.

सूक्ष्मसंपरायें बंध विना एकने उदयें अठावीश, चोवीश, एकवीश अने एक. ए चार सत्तास्थानक होय तथा उपशांतमोहें बंधोदय विना अठावीश, चोवीश अने एकवीश, ए त्रण सत्तास्थानक होय. एम सर्वे गुणठाणे सर्व मली (१३३) मो हनीयनां सत्तास्थानक होय. एनुं स्वरूप सर्व पूर्वे जाव्युं छे. इति समु०॥ ५७ ॥

अथ नामकर्मणि बंधस्थानादीन्याह ॥ हवे चौद गुणठाणे नामकर्मना बंधो दय सत्तास्थानक अने नांगा कहे छे.

छन्नव छक्क तिग सत, डुगं डुगं तिगडुगं तिअठ चउ ॥
डुग छचउ डुगपण चउ, डुगचउ चक्र पणग एगचउ ॥ ५८ ॥

अर्थ- मिथ्यात्व गुणठाणे (छन्नवछक्क के०) छ बंधस्थानक, नव उदय स्था नक अने छ सत्ता स्थानक होय. बीजे गुणठाणे (तिगसतडुगं के०) त्रण बंध स्थानक, सात उदय स्थानक, अने बे सत्तास्थानक होय. त्रीजे गुणठाणे (डुगं तिगडुगं के०) बे बंधस्थानक, त्रण उदयस्थानक अने बे सत्तास्थानक होय. चो थे गुणठाणे (तिअठचउ के०) त्रण बंधस्थानक, आठ उदयस्थानक अने चार सत्तास्थानक होय. पांचमे गुणठाणे (डुगछचउ के०) बे बंधस्थानक, छ उदय स्थानक अने चार सत्तास्थानक होय. छठे गुणठाणे (डुगपणचउ के०) बे बंध स्थानक, पांच उदयस्थानक अने चार सत्तास्थानक होय. सातमे गुणठाणे (डुग चउचक के०) बे बंधस्थानक, चार उदयस्थानक अने चार सत्तास्थानक होय, आठमे गुणठाणे (पणगएगचउ के०) पांच बंधस्थानक, एक उदय स्थानक अ ने चार सत्तास्थानक होय. इत्यक्षरार्थः ॥ ५८ ॥

हवे संवेध कहेछे. तिहां मिथ्यात्व गुणठाणे २३-२५-२६-२८-२९-३० ए छ बंधस्थानक छे. तिहां अपर्याप्ता एकेंड्रिय प्रायोग्य त्रेवीश बांधतां बादर सू क्ष्म अने प्रत्येक साधारण पदें चार नांगा थाय तथा पर्याप्ता एकेंड्रिय प्रायोग्य पच्चीश बांधतां वीश नांगा अने अपर्याप्ता त्रण विकलेंड्रिय तथा पंचेंड्रिय तिर्यंच मनुष्य प्रायोग्य पच्चीश बांधतां, एकेको नांगो सर्व संख्यायें पच्चीशने बंधें पच्चीश नांगा होय. तथा पर्याप्त एकेंड्रिय प्रायोग्य छवीश बांधतां शोल नांगा, तथा देव

गति प्रायोग्य अठावीश बांधतां आठ नांगा, नरकगति प्रायोग्य अठावीश बांधतां एक नांगो. एवं नव नांगा अठावीशने बंधें होय. तथा पर्याप्त बेंड्रिय, तेंड्रिय अने चौरिंड्रिय, प्रायोग्य उगणत्रीश बांधतां प्रत्येकें आठ आठ नांगा होय. तथा पर्याप्ता पंचेंड्रिय तिर्यंच प्रायोग्य उगणत्रीश बांधतां (४६०८) नांगा तथा पर्याप्ता पंचेंड्रिय मनुष्य गति प्रायोग्य उगणत्रीश बांधतां (४६०८) नांगा सर्व मली उगणत्रीशने बंधें (९२४०) नांगा थाय. अहीं तीर्थंकरसहित देवगति प्रायोग्य उगणत्रीश प्रकृतिना बंधना नांगा आठ न पामीयें, केमके सम्यक्त्व विना तीर्थंकर नाम कर्मनो बंध न होय. तथा पर्याप्त बेंड्रिय, तेंड्रिय, अने चौरिंड्रिय प्रायोग्य त्रीश बांधतां प्रत्येकें आठ, आठ नांगा होय तथा पंचेंड्रियतिर्यंच प्रायोग्य त्रीश बांधतां (४६०८) शरवाले त्रीशने बंधें (४६३२) नांगा थाय. एवं ठ बंधस्थानकें थइने मिथ्यात्व गुणठाणे सर्व मली (१३९२६) नांगा होय. अहींआ आहारकद्विक सहित देवगति प्रायोग्य त्रीशना बंधनो नांगो एक तथा जिननाम सहित मनुष्यगति प्रायोग्य त्रीशना बंधना नांगा आठ, एवं नव नांगा न होय. बाकीना नांगा होय.

मिथ्यात्वें २१–२४–२५–२६–२७–२८–२९–३०–३१– ए नव उदय स्थानक होय. तिहां आहारक संयत वैक्रियसंयत अने केवली, एटला मिथ्यात्वें न होय. माटें ते संबंधी नांगा अहीं न कहेवा. शेष सर्व ४१–११–३२–६००–३१–११९९–१७८१–२९१४–११६४– शरवाले (७७७३) नांगा होय, एटले नव उदय स्थानकना नांगा (७७९१) पूर्वें सामान्यादेशें नाव्या ठे. तेमध्येंथी केवलीना आठ, आहारकसाधुना सात, अने उद्योत सहित वैक्रिय मनुष्यना त्रण नांगा, उगणत्रीश, त्रीश, अने एकत्रीश ए त्रण उदयनो एकेको नांगो उद्योत सहित वैक्रिय साधुने तथा देवताने होय. तेमां देवताने उत्तरवैक्रियना नांगा जूदा नथी लेखव्या अने साधुतो ठठे, सातमे गुणठाणे होय, पण मिथ्यात्वें न होय. माटें ए अढार उदय नांगा टाली बाकी (७७७३) उदय स्थानकना नांगा सर्वजीवनी अपेक्षायें होय, ते सर्व पूर्वें कह्या ठे. तिहांथी जोइ लेवा.

हवे मिथ्यात्वें ठ सत्तास्थानक होय, ते कहे ठे. तिहां बाणुनी सत्ता चारे गतिना मिथ्यात्वी जीवने होय तथा जेवारें कोइएक वेदक सम्यक्दृष्टिजीवें पूर्वें नरकायु बांध्युं ठे तेमाटें ते अंत समय सम्यक्त्व वमीने नरकें जाय तेने अंतरमुहूर्त्त पर्यंत नेव्याशीनी सत्ता होय तथा अंतरमुहूर्त्त पढी ते वली सम्यक्त्व पामे. अहीं आहारकचतुष्क, तथा जिननाम ए बेहुनी समकालें नरकमांहे सत्ता न

होय, तेनणी ज्याणुनुं सत्तास्थानक नरकमांहे न होय, तथा अछ्याशीनी सत्ता पण चारे गतिना मिथ्यात्वी जीवने होय, तथा छयाशीनुं सत्तास्थानक, एकेंडियने विषे देवगति प्रायोग्य अथवा नरकगति प्रायोग्य उवेल्ये थके पामीयें तथा एंशीनुं सत्तास्थानक तो ज्याणु मध्येंथी तीर्थंकरनाम, आहारकचतुष्क, वैक्रियषट्क, नरकद्विक, ए तेर प्रकृति उवेले थके एकेंडियमध्यें पामीयें, तेवार पछी ते एकेंडिय मध्येंथी नीकलीने विकलेंडिय तथा पंचेंडियतिर्यंच मनुष्य मांहे अवतरी पर्याप्तो थया पछी पण अंतरमुहूर्त्त लगें तेमांहे ऐंशीनुं सत्तास्थानक पामीयें अने ते अंतरमुहूर्त्त वीत्या पछी अवश्य वैक्रियादिकनो बंध होय, तेमाटें. तथा ते एंशीमांहेथी वली मनुष्यगति अने मनुष्यानुपूर्वी उवेले थके तेउ, वाउ मध्यें अठोतेरनी सत्ता पामीयें अथवा तेउ वाउ मध्येंथी आवेला विकलेंडिय तथा पंचेंडियतिर्यंच तेमध्ये पण अठोतेरनुं सत्तास्थानक अंतरमुहूर्त्त लगें पामीयें अने पर्याप्ता थया पछी अवश्य मनुष्यद्विक बांधे, माटे तिहां अठोतेरनी सत्ता न होय. एम सामान्यें बंध, उदय अने सत्तानां स्थानक मिथ्यात्व गुणगणे कह्यां.

हवे सत्ता संवेधें नांगा कहे छे. तिहां मिथ्यात्वीने अपर्याप्ता एकेंडिय प्रायोग्य त्रेवीशं बांधतां सर्वे नवे उदयस्थानक संजवे पण तेमध्यें पच्चीशने उदयें देवताना नांगा आठ अने नारकीनो नांगो एक, एवं नव तथा सत्तावीशने उदयें देवताना आठ तथा नारकीनो एक तथा अठावीशने उदयें देवताना शोल अने नारकीनो एक, तेटलाज वली उंगणत्रीशना उदयना पण लेवा. तथा त्रीशने उदयें देवताना आठ, एवं शाठ नांगा त्रेवीशना बंधें न होय, जे नणी नारकी तो एकेंडियमांहे जाय नहीं अने देवता पण अपर्याप्ता एकेंडियमध्यें न जाय तेमाटें तेना शाठ नांगा टाली बाकी बधा उदयना (७७१३) उदय नांगा त्रेवीशने बंधें होय तिहां बाणु, अठ्याशी, छयाशी, एंशी अने अठोत्तेर, ए पांच सत्तास्थानक तो एकवीश, चोवीश, पच्चीश अने छवीश, ए चार उदयस्थानकें प्रत्येकें होय. तिहां पच्चीशने उदयें तेउ वाउना जे उदयें सात नांगा छे, तिहां अठोत्तेरनी सत्ता परंतु बीजे नांगे न होय. अने छवीशना उदयें मनुष्यना नांगा विना बाकी (३११) नांगे तेउ वाउमांहेथी आव्या होय, तेनी अपेक्षायें अठोत्तेरनी सत्ता होय. बीजे नांगे न होय तथा बीजा सत्तावीश, अठावीश, उंगणत्रीश, त्रीश अने एकत्रीश. ए पांच उदयें अठोत्तेर विना बाकीना चार चार सत्तास्थानक होय. एम शरवाले त्रेवीशने बंधें चालीश सत्तास्थानक होय. एमज पच्चीशने बंधें पण

चालीश अने ढवीशने बंधें पण चालीश सत्तास्थानक होय पण एटलुं विशेष जे पर्याप्त एकेंद्रिय प्रायोग्य पच्चीशने बंधें आपणे उदयें देवताना पण उदय नांगा होय, तेथी ७७६८ उदय नांगे ए बे बंधस्थानक होय. अने नारकीना पांच उदय नांगा अहींआं न होय पण देवता जे एकेंद्रिय प्रायोग्य पच्चीश प्रकृतिनो बंध करे तिहां बादर प्रत्येक पर्याप्त प्रायोग्य आठ नांगा बांधे. बाकी बार नांगा न बांधे केमके सूक्ष्म साधारण अपर्याप्ता मध्यें देवताने उपजवुं नथी ते माटे.

अठावीशने बंधें मिथ्यात्वीने त्रीश अने एकत्रीश, ए बे उदयस्थानक होय. तिहां त्रीशनुं पंचेंद्रिय तिर्यंच तथा मनुष्यने होय अने एकत्रीशनुं पंचेंद्रिय तिर्यंचने होय. त्रीशने उदयें पंचेंद्रिय तिर्यंच अने मनुष्यने देवगति प्रायोग्य तथा नरकगति प्रायोग्य अठावीशनो बंध होय. बाकी विकलेंद्रियना त्रीश नांगा उदयना न होय. ए बे उदयें ५६ (४०४८) नांगे अठावीशनो बंध होय. तिहां त्रीशने उदयें बाणु, नेव्याशी, अठयाशी अने ढयाशी, ए चार सत्ता होय अने एकत्रीशने उदयें नेव्याशीनी सत्ता न होय, तीर्थंकर सहित नेव्याशीनी सत्ता, तिर्यंचने विषे न पामीयें, तेथी त्रण सत्ता होय, तथा त्रीशने उदयें पण जे वेदक सम्यक्त्व वमी, जिननाम सहित मिथ्यात्वें गयो, तेने नरक प्रायोग्य अठावीश बांधतां पण नेव्याशीनी सत्ता होय. एम अठावीशने बंधें सात सत्तानां स्थानक जाणवां.

देवगति प्रायोग्य विना बीजी मनुष्य, तिर्यंचगति प्रायोग्य ठगण त्रीशने बंधें वीश, नव अने आठ, ए त्रण विना बीजां सर्व उदय स्थानक होय. तथा बाणु, नेव्याशी, अठयाशी, ढयाशी, एंशी अने अठोत्तेर, ए ढ सत्तास्थानक होय, तिहां एकवीशने उदयें ढ सत्ता होय. ते कहे ढे. जिननाम बांधी सम्यक्त्व वमीने नरकें जाय तेनी वच्चें एकवीशनो उदय होय. तिहां नेव्याशीनी सत्ता होय तथा बाणु अने अठयाशी, ए बे सत्तास्थान चतुर्गतिना जीवने विग्रहगतियें एकवीशने उदयें होय, तथा ढयाशी अने एंशी ए बे सत्ता, देव नारकी विना बीजा जीवोने होय. अने अठोत्तेरनी सत्ता देव नारकी तथा मनुष्य विना बीजा जीवोने होय. एम एकवीशने उदयें ढ सत्ता स्थानक होय तथा चोवीशने उदयें एक नेव्याशी विना बाकीनां पांच सत्तास्थानक, एकेंद्रियने होय. बीजा जीवोने ए उदय न होय तथा पच्चीशने उदयें ढ सत्तास्थानक होय तथा ढवीशने उदयें नेव्याशीनी सत्ता विना बाकी पांच सत्ता होय, जे नणी नेव्याशीनी सत्ता नारकीने होय तेने तो ढवीशनुं उदयस्थानकज नथी तथा सत्तावीशने उदयें अठोत्तेर विना पांच सत्ता होय, ते

एकवीशना उदयनी पेरें जाववां. जे जणी तेज, वाउने सत्तावीशनो उदय नथी बाकी एकेंद्रियादिकने पण पर्याप्तावस्थायें ए उदय होय, तेणे ते मनुष्यद्विक अ वश्य बांधे, माटें अठ्योत्तेरनी सत्ता अहीं ए उदयमां नथी तथा अठ्ठावीशने उदयें पांच सत्ता होय तेमध्यें ठ्याशीनी सत्ता विकलेंद्रिय, तथा पंचेंद्रिय तिर्यंच मनुष्यनी अपे क्षायें लेवी अने बीजां सत्तास्थान पूर्वली पेरें जाववां तथा उंगणत्रीशने उदयें पण एज पांच सत्ता पूर्वली पेरें जाववी तथा त्रीशने उदयें नेव्याशी विना, बाकी तेही ज चार सत्ता, विकलेंद्रिय अने तिर्यंच मनुष्यनी अपेक्षायें होय अने नेव्याशीनी सत्ता तो जिननाम बांधी सम्यक्त्व वमी नरकें जाता एवा मिथ्यात्वी नारकीने होय. तिहांतो त्रीशनुं उदयस्थानक न होय, तथा तेहीज चार सत्तास्थानक एकत्रीश ने उदयें पण मनुष्य विना बीजा जीवोने होय जे जणी एकत्रीशनो उदय, सामान्य मनुष्यने नथी केवलीने ठे एम सर्व थइ उंगणत्रीशने बंधें (४५) सत्ता होय.

देवगति प्रायोग्य त्रीशना बंध विना विकलेंद्रिय तथा पंचेंद्रिय प्रायोग्य त्रीशने बंधें सामान्यें वीश, आठ अने नव ए त्रण उदय स्थानक विना बाकीनां नव उदय स्थानक होय, तिहां नेव्याशी विना पांच सत्ता होय जे जणी तिर्यंचगति मध्यें जि ननामनी सत्ता न होय. तिहां एकवीश, चोवीश, पच्चीश, अने ठ्वीश ए चार उद यें पांच पांच सत्ता स्थानक होय अने बीजा पांच उदयें अठ्योत्तेर विना चार चार सत्ता स्थानक होय. एवं नव उदयें थइ चालीश सत्ता होय. अहींआ नेव्याशीनुं स त्तास्थानतो देवगति प्रायोग्य आहारकद्विक सहित त्रीशने बंधें अने जिननाम सहित मनुष्य प्रायोग्य त्रीशने बंधें होय ए बेहु मिथ्यात्वी न बांधे. एटले ए मि थ्यात्व गुणठाणे ठ बंधस्थानकें नव उदयें थइ बशेंने बार सत्ता स्थानक होय.

हवे सास्वादने बंध स्थानक कहे ठे. सास्वादनें वर्त्ततां अठ्ठावीश, उंगणत्रीश अने त्रीश, ए त्रण बंधस्थानक होय. देवगति प्रायोग्य अठ्ठावीशना आठ जांगा सास्वादने बंधाय, तेना बांधनार पंचेंद्रिय तिर्यंच तथा मनुष्य होय अने नरक प्रा योग्य अठ्ठावीशनो बंध तो मिथ्यात्व प्रत्ययिउ ठे ते जणी सास्वादने न बंधाय तथा पंचेंद्रियतिर्यंच प्रायोग्य अने मनुष्य प्रायोग्य उंगणत्रीश प्रकृति बंधना जांगा (६४००) नो बंध, एकेंद्रिय,विकलेंद्रिय तथा तिर्यंच, मनुष्य, देवता, नारकीने सा स्वादने होय. तिहां हुंम संस्थान अने ठेवठुं संघयण,न बंधाय तेथी पांच संघयण अने पांच संस्थान तथा सप्त युगलना विकल्पें करी बत्रीशशें जांगा प्रत्येकें मनुष्य तिर्यंचगति प्रायोग्य उंगणत्रीशना बंधें होय. ए बेहुना मली (६४००) जांगा होय.

तथा पूर्वें कह्यो जे एकेंड्रियादिकने सास्वादने उद्योत सहित त्रीशनो बंध पंचेंड्रिय तिर्यंच प्रायोग्यज करें, तिहां नांगा (३२००) होय. ते पूर्वें विस्तारें कह्या छे तिहांथी समजी लेवा. शरवाळे त्रणे बंधस्थानकें थइने नांगा (८६०८) होय.

सास्वादनें एकवीश, चोवीश, पच्चीश, छवीश, उंगणत्रीश, त्रीश अने एकत्रीश, ए सात उदयस्थानक होय. तिहां नारकी विना त्रणे गतिना जीवनी अपेक्षायें एकवीशनो उदय, बे गतिने विचालें वाटें वहेतां जीवने होय. तिहां उदय नांगा बत्रीश होय. ते केवी रीतें? तोके एकवीशने उदयें सर्व मळी बेंताळीश नांगा कह्या छे तेमध्येंथी सात अपर्याप्ताना, एक सूक्ष्म पर्याप्तानो, एक नारकीनो अने एक केवळीनो. एवं दश नांगा सास्वादने न होय शेष बत्रीश नांगा होय. तथा चोवीशनो उदय तो एकेंड्रियने उत्पन्नमात्रने होय. अहींआं पण, बादर पर्याप्ताने यश अयशना विकल्पें बे नांगा सास्वादने लाने बाकी सूक्ष्म साधारण वाळा नांगा न होय अने वैक्रियवाळो नांगो तेउ वाउने होय ते पण तिहां सास्वादने न होयः ते नणी ते पण न लेवो. तथा पच्चीशनो उदय तो देवतामांहे उत्पन्न मात्रनेज होय अने कोइएकनें न पण होय. तिहां देवताना आठ नांगा सुनग, डुर्नग, आदेय, अनादेय, अयश, यशों उपजे तथा छवीशनो उदय तो विकलेंड्रिय पंचेंड्रिय तिर्यंच मनुष्यमांहे उत्पन्न मात्रनेज होय. तिहां अपर्याप्तानो एकेको नांगो टाळीने विकलेंड्रिय पर्याप्ताना छ, पंचेंड्रिय तिर्यंचना (२८८) मनुष्यना (२८८) एवं (५८२) नांगा, छवीशने उदयें होय. तथा सत्तावीश अने अघावीशनो उदय तो सास्वादने होयज नहीं केमके ए बे उदयस्थानकतो उपना पछी अंतर मुहूर्त्त गया पछी होय छे अने सास्वादनतो छ आवळी मात्रेरी लगेंज होय, ते माटें ते न होय. तथा उंगणत्रीशनो उदय तो देव नारकीने पर्याप्तावस्थायें प्रथम प्राप्त सम्यक्त्व थकी पडताने पामीयें, तिहां देवताना आठ अने नारकीनो एक, एवं नव नांगा होय. तथा त्रीशनो उदय तो पंचेंड्रिय तिर्यंच मनुष्यने सर्व पर्याप्ति पूरी कस्या पछी औपशमिक सम्यक्त्वथी पडतां होय. तथा उत्तर वैक्रियें वर्त्ततां देवताने उद्योतना उदयें होय. तिहां मनुष्य अने तिर्यंचना प्रत्येकें प्रत्येकें (११५२) नांगा लेवा तथा देवताना आठ नांगा लेवा एम सर्व मळी (२३१२) उदय नांगा होय. तथा एकत्रीशनो उदय पंचेंड्रिय तिर्यंच पर्याप्ताने प्रथम सम्यक्त्व वमतानें होय. तिहां नांगा (११५२) होय. एम शरवाळे सात उदयना थइ सास्वादनें उदय नांगा (४०८७) होय.

सास्वादने सत्तास्थानक बाणु अने अठ्याशी, ए बे होय. तिहां आहारक च

तुष्क बांधी उपशमश्रेणीथी पडतां सास्वादन गुणठाणु पामे, तेने बाणुनुं सत्तास्था नक होय अने अठ्याशीनी सत्ता तो चारे गतिना सास्वादनीने होय.

हवे संवेध कहे छे. अठावीशने बंधें सास्वादने त्रीश अने एकत्रीश, ए बे उदय स्थानक होय. जे नणी देवगति प्रायोग्य अठावीश प्रकृति, करण अपर्याप्तो न बांधे तेमाटें बीजां उदय स्थानक एने न होय. तिहां मनुष्य बंधकनी अपेक्षायें त्रीशने उदयें बाणु अने अठ्याशी, ए बे सत्तास्थानक होय. अने तिर्यंचने उप शमश्रेणी न होय माटे उपशमश्रेणीथी पडवाने अनावें बाणुनी सत्ता न होय. एक अठ्याशीनीज होय तथा तिर्यंच मनुष्य प्रायोग्य उंगणत्रीश बांधतां, सास्वा दनीने साते उदयस्थानक होय. तिहां पोत पोताने उदय स्थानकें एकेकुं अ ठ्याशीनुं सत्तास्थानक होय तथा मनुष्यने त्रीशने उदयें वर्त्तताने बाणु अने अ ठ्याशी, ए वे सत्तास्थानक होय, शेष सर्वने एकज अठ्याशीनुं होय. तथा एम त्रो शना वंधकने पण संवेध कहेवो, सर्व मली सास्वादनें अढार सत्ता स्थानक होय.

हवे मिश्रगुणठाणे नामकर्मना अठावीश अने उंगणत्रीश, ए बे बंधस्थानक होय. तिहां मिश्रदृष्टि तिर्यंच मनुष्यने देवगति प्रायोग्य अठावीशनो बंध होय, तिहां नांगा आठ होय अने मनुष्य प्रायोग्य उंगणत्रीशनो बंध मिश्रदृष्टि देव नारकीने होय. तिहां स्थिर, अस्थिर, शुन, अशुन, यश, अयशने विकल्पें नांगा आठ पामीयें बीजा जे छ संस्थानादिकना विकल्पें नांगा उपजे, ते अहींआं न होय, एम आगले गुणठाणे पण जाणवुं. शरवाले बंध नांगा शोल होय.

मिश्रे उंगणत्रीश, त्रीश अने एकत्रीश ए त्रण उदय स्थानक होय तिहां उंगण त्रीशने उदयें देवना नांगा आठ अने नारकीनो एक, एवं नव नांगा होय. तथा त्रीशने उदयें पंचेंद्रिय तिर्यंचना उदय नांगा (१७२८) मनुष्यना (११५२) एवं (२८८०) त्रीशने उदयें उदय नांगा होय. तथा एकत्रीशनुं उदयस्थानक, पंचेंद्रिय तिर्यंचने होय तिहां नांगा (११५२) सर्व थइ मिश्रगुणठाणे उदय नां गा (४०४१) होय. अहींआं सत्तास्थानक बाणु अने अठ्याशी, ए बे होय.

हवे संवेध लखे छे. अठावीशने बंधें मिश्रदृष्टिने त्रीश अने एकत्रीश, ए बे उ दय स्थानक होय. तेने विषे प्रत्येकें बाणु अने अठ्याशी.ए बे सत्तास्थानक होय तथा उंगणत्रीशना वंधकने एकज उंगणत्रीशनुं उदयस्थानक होय तिहां पण तेहीज बे सत्तास्थानक जाणवां. सर्व मली मिश्रगुणठाणे छ सत्तास्थानक होय.

अविरति गुणठाणे अठावीश, उंगणत्रीश अने त्रीश, ए त्रण बंधस्थानक होय.

तिहां तिर्यंच मनुष्यने चोथे गुणठाणे देवप्रायोग्य बांधतां अठावीशनो बंध होय. तिहां भांगा आठ, तथा मनुष्यने देवगति प्रायोग्य जिननाम सहित बांधतां उंगणत्रीशनो बंध होय. अहींआं पण आठ भांगा तथा देवता अने नारकीने चोथे गुणठाणे मनुष्यगति प्रायोग्य उंगणत्रीश बांधतां भांगा आठ तथा देव नारकीने सम्यक्त्व प्रत्ययें जिननाम सहित मनुष्य प्रायोग्य त्रीश बांधतां पण भांगा आठ होय, एवं बंधभांगा बत्रीश थया. अहींआं अविरति सम्यक्दृष्टि जीव अपर्याप्ता मध्यें न उपजे माटे अपर्याप्तानो एक भांगो टालीयें, बाकी आठ भांगा लेवा.

अविरति गुणठाणे एकवीश, पच्चीश, छव्वीश, सत्तावीश, अठावीश, उंगणत्रीश, त्रीश अने एकत्रीश, ए आठ उदयस्थानक होय. तिहां एकवीशने उदयें देवताना उदय भांगा आठ, मनुष्यना आठ, पंचेंद्रियतिर्यंचना आठ लेवा. केम के अविरति सम्यक्दृष्टि अपर्याप्तामध्यें न उपजे, माटें अपर्याप्तानो भांगो टाली शेष आठ आठ भांगा लेवा तथा नारकीनो एक, एवं पच्चीश उदय भांगा होय. ए क्षायिक सम्यक्दृष्टि पूर्वबद्धायुवालो चारे गतिने विषे उपजे पण ते अपर्याप्ता मध्यें न उपजे, तेनी अपेक्षायें एकवीशनो उदय लेवो. पच्चीश तथा सत्तावीशनो उदय देव अने नारकीने तथा वैक्रिय तिर्यंच मनुष्यने होय. तिहां नारकी क्षायिक तथा वेदक सम्यक्दृष्टि जाणवा अने देवता त्रिविध सम्यक्त्वी होय. एम चूर्णिमध्यें कह्युं छे तथा छवीशनो उदय, पंचेंद्रियतिर्यंच मनुष्य क्षायिक तथा वेदकसम्यक्दृष्टिने होय जे भणी उपशम सम्यक्दृष्टि तो तिर्यंच मनुष्य मध्यें न उपजे तेमां हे पण वेदक सम्यक्दृष्टि तो मोहनीयनी बावीश प्रकृतिनी सत्तावालोज होय तथा अठावीश अने उंगणत्रीश, ए बे उदय नारकी तिर्यंच मनुष्य अने देवताने होय तथा त्रीशनो उदय, एक नारकी विना बीजी त्रणे गतिमध्यें होय. तथा एकत्रीशनो उदय, पंचेंद्रिय तिर्यंचने होय. अहींआं सर्वना पोत पोताना उदयभांगा लेवा.

अविरतियें सत्तास्थानक चार होय. तिहां जे अप्रमत्त, तथा अपूर्वकरण गुणठाणे आहारकद्विक तथा जिननाम सहित देवप्रायोग्य एकत्रीश बांधीने वली तो मरण पामी देव थाय. तेनी अपेक्षायें त्र्याणुनी सत्ता जाणवी. तथा आहारक चतुष्क बांधी वली परिणाम परावर्त्तियें मिथ्यात्व पामी चारगतिमांहेली नारके ते गति मांहे उपजीने वली तिहां सम्यक्त्व पामे, तेने बाणुनी सत्ता जाणवी. ए सत्ता देव मनुष्य मांहे मिथ्यात्वें गया विना पण होय माटे आंहीं लीधी तथा नेव्याशीनी सत्ता तो देव मनुष्य अने नारकी अविरति सम्यक्दृष्टिने जिननामनो

बंध छे, ते माटें होय, तथा अठ्यासीनी सत्ता चारे गतिना सम्यक्दृष्टिनें होय.

हवे सत्ता संवेध कहे छे. अविरति सम्यक्दृष्टि पंचेंद्रिय तिर्यंच मनुष्यने देव प्रायोग्य अहावीशने बंधें आठ उदय स्थानक होय. तिहां पच्चीश अने सत्तावीश नो उदय, वैक्रिय तिर्यंच मनुष्यने होय. बीजा छ सामान्यें होय. ते एकेका उदयें बाणुं अने अठ्यासी, ए बे बे सत्तास्थानक होय. एम आठ उदयनां शोल स त्ता स्थानक होय, तथा उंगणत्रीशनो बंध एक देवगति प्रायोग्य, बीजो मनुष्यग ति प्रायोग्य होय. तिहां देवगति प्रायोग्य जिननाम सहित उंगणत्रीशना बंधक मनुष्यज होय परंतु तिर्यंच न होय तेने एकत्रीशना उदय विना साते उदय स्था नक होय, केमके मनुष्यने एकत्रीशनो उदय नथी, ते एकेका उदयें त्र्याणु अने नेव्याशी, ए बे बे सत्तास्थानक होय. तथा मनुष्यगति प्रायोग्य उंगणत्रीशनो बं ध, देव नारकीने होय. तिहां २१–२५–२७–२८–२९– ए पांच उदयस्थानक हो य. एकेका उदयें बाणु अने अठ्यासी, ए बे बे सत्ता होय तथा मनुष्यगति प्रायो ग्य जिननाम सहित त्रीशनो बंध पण देव नारकीने होय. तिहां २१–२५–२७– २८–२९–३०–ए छ उदय स्थानक होय. तिहां प्रत्येकें त्र्याणु अने नेव्याशी ए बे बे सत्ता, देवताने होय अने नारकीने पांच उदय स्थानक होय. तिहां प्रत्येकें एकज नेव्याशीनी सत्ता होय केमके, जिननामनी सत्ता छतां आहारकनी सत्ता नरकमध्यें न होय ते माटें त्र्याणुनी सत्ता नारकी मध्यें न पामीयें, अने एकत्री शने उदयें बे सत्ता होय, सर्व थइ चोपन्न सत्ता थइ.

देशविरति गुणठाणे अहावीश अने उंगणत्रीश ए बे बंधस्थानक होय. ति हां मनुष्य अने तिर्यंच देशविरति, देवगति, प्रायोग्य अहावीश बांधे, तिहां भांगा आठ. तथा तेहीज जिननाम सहित उंगणत्रीश प्रकृति एकला मनुष्य देशविरति ज बांधे पण तिर्यंच न बांधे तिहां भांगा आठ सर्व मली भांगा शोल होय.

देशविरतियें सामान्यें २५–२७–२८–२९–३०–३१–ए छ उदय स्थानक होय. तिहां अहावीशने बंधें प्रथमना चार उदय तो वैक्रिय तिर्यंच मनुष्यने होय तिहां एकेको भांगो करतां चार भांगा थया तथा अहावीश, उंगणत्रीश, ए बे उदय सामान्य तिर्यंच मनुष्यने तथा वैक्रियने पण होय. तिहां उदय भांगा छ तथा त्री शनो उदय तिर्यंच मनुष्यने तिहां छ संघयण, छ संस्थानना विकल्पें भांगा छत्री श ते सुस्वर दुःस्वरें बहोत्तेर ते शुभाशुभ खगतियें (१४४) प्रत्येकें एकेका उदयें होय. अहींआं दौर्भाग्य अनादेय अने अयशःकीर्त्तिनो उदय गुण प्रत्यय भणी

न होय तेथी तेना विकल्पना जांगा न होय तथा वैक्रिय तिर्यंचनो उदय जांगो एक, मली (१७९) जांगा थाय. तथा एकत्रीशनो उदय तिर्यंचने होय. तिहां जांगा (१४४) एम शरवाले (४४३) अठावीशने बंधें उदय जांगा होय. तथा उंगणत्रीशने बंधें मनुष्यने २५–२७–२८–२९–३० ए पांच उदयस्थानक होय. तिहां प्रथमनां चार उदयस्थानक वैक्रियनां ले तेनो जांगो एकेक तथा त्रीशना उदयजांगा (१४४) मली (१४८) जांगा थाय शरवाले (५९१) जांगा थाय.

देशविरतियें ९३–९२–८९–८८ ए चार सत्तास्थानक होय. तिहां जे अप्रमत्त, अपूर्वकरणवालो तीर्थंकर तथा आहारक बांधीने पडे, ते परिणामे देशविरति थाय तेने त्र्याणुनी सत्ता होय. शेषनी जावना अविरतिनी पेरें जाणवी.

हवे संवेध कहे ले. देशविरति मनुष्यने अठावीशने बंधें पच्चीश, सत्तावीश, अठावीश, उंगणत्रीश अने त्रीश, ए पांच उदयस्थानक होय. तिहां प्रत्येकें बाणुं अने अठ्याशी, ए बे बे सत्ता होय. तेम तिर्यंचने पण एकत्रीश सहित ल उदयें बे बे सत्ता होय. तथा उंगणत्रीशनो बंध देशविरति मनुष्यनेज होय, तिहां पच्चीशथी त्रीश वाला तेहीज पूर्वलां पांच उदयस्थान लेवां. तिहां त्र्याणु अने नेव्याशी ए बे बे सत्तास्थानक होय. सर्व थइ देशविरतियें बावीश सत्ता होय.

हवे प्रमत्तें बंधादिक संवेध कहे ले. प्रमत्त साधुने अठावीश, उंगणत्रीश, ए बे बंधस्थानक देशविरति मनुष्यनी पेरें जाववां. तिहां प्रत्येक बंधें मनुष्यना जांगा आठ आठ लेतां शोल जांगा थाय तथा २५–२७–२८–२९–३० ए पांच पांच उदयस्थानक होय. तिहां प्रथमना चार उदय तो आहारक अने वैक्रिय शरीर करनारा साधुनी अपेक्षायें लेवा. तिहां पच्चीश अने सत्तावीशना उदयें बे बे जांगा तथा अठावीश अने उंगणत्रीशना उदयें चार चार जांगा अने त्रीशनो उदय, सहज मनुष्यने होय. तिहां जांगा बे आहारक वैक्रियना अने (१४४) सहजना मलीने (१४६) एम सर्व मली एकेका बंधस्थानकें (१५८) जांगा करतां (३१६) उदय जांगा थाय, तिहां त्र्याणु, बाणु, नेव्याशी अने अठ्याशी ए चार सत्तास्थानक होय. हवे संवेध देखाडे ले. अठावीशने बंधें पांचे उदये बाणुं अने अठ्याशी ए बे सत्ता होय. तिहां आहारकें बाणुनीज सत्ता होय अने जिननाम सत्तायें ल तां अठावीशनो बंध न होय तेमाटे त्र्याणु अने नेव्याशी ए बे सत्ता उंगणत्रीशने बंधें पांचे उदयस्थानकें प्रत्येकें होय जेनणी उंगणत्रीशनो बंध जिननाम बांधतां ज होय. एम सर्व थइ वीश सत्तास्थानक प्रमत्तें होय.

हवे अप्रमत्तें बंधादिक सत्ता संवेध कहे बे. अप्रमत्त साधुने अघावीश, उगण त्रीश, त्रीश, एकत्रीश, ए चार बंधस्थानक होय तिहां प्रथमना बे तो प्रमत्तनी पेरें जाववां तथा आहारकद्विक सहित बांधतां अनुक्रमे त्रीश एकत्रीशनो बंध होय. ए चार बंधस्थानकें प्रत्येकें एकेको जांगो करतां चार बंध जांगा थाय केमके अहीं अस्थिर, अशुज, अयशनो बंध अप्रमत्तें नथी माटे. तथा प्रत्येक बंधस्थानकें उगणत्रीश अने त्रीश ए बे बे उदयस्थानक होय. तिहां जे प्रमत्त थको वैक्रिय तथा आहारक आरंजी अप्रमत्तें आवे तेने उद्योतने उदयें उगणत्रीशनो उदय होय, तथा त्रीशनो उदय सहज होय, तिहां प्रत्येक उदयें एक जांगो वैक्रियनो तथा आहारकनो एवं बे उदयें बे जांगा तथा सहज शरीरें अप्रमत्तने त्रीशने उदयें पूर्वें देशविरतिस्थाने (१४६) जांगा कह्या, ते होय सर्व मली एकेका बंधें उदय जांगा (१४७) होय. शरवाले चार बंधना मलीने (५ए१) उदय जांगा होय तिहां अघावीशने बंधें बेहु उदयें प्रत्येकें अठ्याशीनी सत्ता होय अने उगणत्रीशने बंधें बेहु उदयें प्रत्येकें नेव्याशीनी सत्ता होय तथा त्रीशने बंधें बेहु उदयें प्रत्येकें बाणुनी सत्ता होय तथा एकत्रीशना बंधें बेहु उदयें प्रत्येकें त्र्याणुनी सत्ता होय. अहींआं जे तीर्थंकर तथा आहारक निश्चें बांधे, तेने एकेकी सत्ता होय. एवं आठ सत्ता थाय.

हवे अपूर्वकरणे बंधोदय सत्ता संवेध कहे बे. अपूर्व करणें अघावीश, उगणत्रीश, त्रीश, एकत्रीश अने एक, ए पांच बंध स्थानक होय. तिहां प्रथमनां चार, अप्रमत्तनी पेरें लेवां, तथा एक यशःकीर्त्तिनो बंध, ते सातमे जागें देवगतिप्रायोग्य बंधना विछेदें होय तिहां जांगो प्रत्येकें एकेक होय. सर्व अ६ बंध जांगा पांच होय. तिहां प्रत्येक बंधस्थानकें एकत्रीशनुंज उदयस्थानक होय. तिहां प्रथम संघयणनें ठ संस्थानना विकल्पें ठ जांगा ते शुजाशुज खगतियें बार अने सुस्वर दुस्वरें चोवीश जांगा थाय. अने कोइएक आचार्य, पहेला त्रण संघयणे उपशमश्रेणीनो आरंज माने बे. तेना मतें बहोत्तेर उदय जांगा होय. शरवाले पांच उदयना (३६०) जांगा थाय तथा तिहां प्रथम चार बंधस्थानकें त्रीशने उदयें अनुक्रमें अठ्याशी, नेव्याशी, बाणु अने त्र्याणुं, ए एकेक सत्तास्थानक होय, अने एकने बंधें त्रीशने उदयें ए चारे सत्ता होय, शरवाले आठ सत्ता स्थानक होय ॥५Მ॥

एगेग मठ इगेग, मठठ बउमठ केवल जिणाणं ॥
एगं चउ एगं चउ, अठ चउ दु बक्कमुदयंसा ॥५ए॥

अर्थ– नवमे गुणठाणे (एगेगमठ के०) एक बंधस्थानक, एक उदयस्थानक अने आठ सत्तास्थानक होय. दशमे गुणठाणे (इगेगमठ के०) एक बंधस्थानक, एक उदयस्थानक अने आठ सत्तास्थानक होय. तथा (छउमत्थ के०) छद्मस्थ य तिने उपशांतमोह, क्षीणमोह अने (केवलजिणाणं के०) केवली जिन ते सयोगी केवली तथा अयोगी केवली, ए चार गुणठाणा वालाने नामकर्मनो बंध न होय. तिहां उपशांतमोहने (एगंचउ के०) एक उदयस्थानक अने चार सत्तास्थानक होय. तथा क्षीणमोहने (एगंचउ के०) एक उदयस्थानक, अने चार सत्तास्थानक होय. सयोगी केवलीने (अठचउ के०) आठ उदयस्थानक अने चार सत्तास्थानक होय अने अयोगी केवलीने (डुछक्क के०) बे उदयस्थानक अने छ सत्तास्थानक होय, ए रीतें (सुदयंसा के०) उदय अने अंश एटले सत्ता तेनां स्थानक चार गुणठाणे जाणवां.

हवे अनिवृत्तिबादर तथा सूक्ष्मसंपरायें बंधादिक कहे छे. ए बे गुणठाणे एक यशःकीर्त्तिनो बंध अने त्रीशनो उदय होय. तिहां क्षपकने नांगा चोवीश अने औपशमिकने त्रण संघयणना विकल्पें नांगा बहोंत्तेर उदयना जाणवा तथा त्र्याणु, बाणु, नेव्याशी, अठ्याशी, एंशी, उंगणाएंशी, छहोंत्तेर अने पच्चोत्तेर, ए आठ सत्तास्थानक होय. तिहां पहेलां चार सत्तास्थानक तो उपशमश्रेणीनी अपेक्षायें होय तथा क्षपकश्रेणीयें पण ज्यां सुधी नामकर्मनी तेर प्रकृति क्षय न थाय. त्यां लगें जाणवां अने तेर प्रकृतिना क्षय पछी ८०–७९–७६–७५ ए चार सत्तास्थानक होय. अहींआं बंधोदयनो भेद नथी ते माटें संवेध नथी देखाड्यो.

उपशांतमोहें बंधने अनावें एकज त्रीश प्रकृतिनुं उदयस्थानक छे. तिहां नांगा बहोंत्तेर होय अने त्र्याणु, बाणु, नेव्याशी अने अठ्याशी, ए चार सत्ता होय.

तथा क्षीणमोहें एकज त्रीशनुं उदयस्थानक छे. तिहां नांगा चोवीश तिहां पण तीर्थंकर नाम सहितने सर्व संस्थानादिक प्रशस्तज होय तेमाटें. तिहां ८०–७६ ए बे सत्ता तीर्थंकरने तथा ७९–७५ ए बे सत्ता, अतीर्थंकरने, एवं चार सत्ता होय.

सयोगीकेवलीने वीश, एकवीश, छव्वीश, सत्तावीश, अठावीश, उंगणत्रीश, त्रीश अने एकत्रीश, ए आठ उदयस्थानकना नांगा छशें पूर्वें सामान्यादेशें विचार्या छे. तिहांथी जाणवा. अहीं सत्तास्थानक चार क्षीणमोहनी पेरेंज लेवां तथा संवेध चौद जीव स्थानक विचारें संज्ञी पर्याप्ता द्वारें कह्यो छे, तिहांथी लेवो.

अयोगी गुणठाणे नव अने आठ, ए बे उदय होय तेना नांगा बे अने ८०–

७९–७६–७५–९–८–ए ढ सत्ता होय. तिहां तीर्थंकरने नवने उदयें ८०–७६–९– ए त्रण सत्ता होय तथा सामान्य केवलीने आठने उदयें–७९–७५–८ ए त्रण सत्ता होय. एम चौद गुणगणे आठ कर्मनो बंध उदय सत्ता संवेध देखाड्यो॥५९॥

अथ मिथ्यात्वस्य त्रयोविंशत्यादि बंधस्थानषट्के क्रमेण नंगप्ररूपिकां नाष्य गाथामाह ॥ हवे मिथ्यात्वगुणगणानां जे त्रेवीशादिक ढ बंधस्थानक ढे, तेने विषे अनुक्रमें केटला बंधना नांगा उपजे, ते प्ररूपवाने नाष्यगाथा कहे ढे.

चउ पणवीसा सोलस, नव चत्तालासयाय बाणउइ ॥
बत्तीसुत्तर ढाया, लसया मिढस्स बंध विही ॥ ६० ॥

अर्थ– त्रेवीशने बंधस्थानकें (चउ के०) चार नांगा, पच्चीशने बंधें (पणवीसा के०) पच्चीश नांगा, ढवीशने बंधें (सोलस के०) शोल नांगा, अठावीशने बंधें (नव के०) नव नांगा, उंगणत्रीशने बंधें (चत्तालासयायबाणउइ के०) बाणुशें ने चालीश नांगा, त्रीशने बंधें (बत्तीसुत्तरढायालसया के०) ढेंतालीशें ने बत्रीश नांगा उपजे,ए (मिढस्सबंधविही के०) मिथ्यात्वगुणगणे ढ बधस्थानकें थइने (१३९२६) नांगा होय. एनी नावना पूर्वें कही ढे त्यांथी जाणवी॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ६० ॥

॥ अथ सास्वादनेऽष्टाविंशत्यादि बंधस्थानत्रयनंगप्ररूपकानाष्यगाथामाह ॥

हवे सास्वादन गुणगणानां जे अठावीशादिक त्रण बंधस्थानक ढे, तेने विषे बंधना केटला नांगा उपजे, ते प्ररूपवाने नाष्य गाथा कहे ढे.

अठ सया चउसठी,बत्तीस सयाइं सासणे नेआ ॥
अठावीसाईसु, सव्वाणठाहिअ ढन्नउइ ॥ ६१ ॥

अर्थ– अठावीशने बंधें (अठ के०) आठ नांगा अने उंगणत्रीशने बंधें (सयाचउसठी के०) चोशठशें नांगा, त्रीशने बंधें (बत्तीससयाइं के०) बत्रीशशें नांगा, ए रीतें (सासणेनेआ के०) सास्वादन गुणगणे नांगा उपजे. (अठावीसाईसु के०) अठावीशादिक त्रण बधस्थानकें थइने (सव्वाणठाहिअढन्नउइ के०) सर्व मली ढन्नुशें ने आठ नांगा उपजे, तेनी नावना पूर्वें कही ढे अने मिश्रादिक गुणगणे तो बंधस्थानकना नांगा थोडा ढे तेमाटें ते पूर्वें कह्या ढे, तेम जाणवा.

॥ अथ मिथ्यात्वसत्कैकविंशत्याद्युदयस्थानके नंगप्ररूपिका गाथा ॥ हवे मिथ्यात्व गुणगणे एकवीश आदे देइने नव उदय स्थानकें नांगा प्ररूपवा गाथा कहे ढे.

एगचत्तिगार बत्ती, स ठसय इगतिसिगार नव नउइ ॥
सत्तरिगंसिगुत्तिस, चउद इगार चउसट्ठि मिच्छुदया ॥ ६२ ॥

अर्थ— एकवीशने उदयें (एगचत्त के०) एकतालीश नांगा, चोवीशने उदय स्थानकें (इगार के०) अगीआर नांगा, पच्चीशने उदयें (बत्तीस के०) बत्रीश नांगा, ठवीशने उदयें (ठसय के०) ठशें नांगा, सत्तावीशने उदयें (इगतिस के०) एकत्रीश नांगा, अठावीशने उदयें (इगारनवनउइ के०) अगीआरशें ने नवाणु नांगा, उंगणत्रीशने उदयें (सत्तरिगंसि के०) सत्तरशें ने एक्याशी नांगा उपजे. त्रीशने उदयें (इगुत्तिसचउद के०) उंगणत्रीशें ने चौद नांगा, एकत्रीशने उदयस्थानकें (इगारचउसट्ठि के०) अगीआरशें ने चोशठ नांगा उपजे, (मिच्छुदया के०) मिथ्यात्वगुणगणे ए नव उदयस्थानकें थइने (७७७३) नांगा होय ॥ ६०॥६२॥

॥ अथ सास्वादनैकविंशत्याद्युदयस्थानसप्तकनंगप्ररूपिकानाष्यगाथामाह ॥
हवे सास्वादने एकवीशादि सात उदयस्थानकें नांगा प्ररूपवा नाष्यगाथा कहे ठे.

बत्तीस छन्नि अठय, बासीइ सयाय पंच नव उदया ॥
बारहिआ तेवीसं, बावन्निक्कार ससयाय ॥ ६३ ॥

अर्थ— एकवीशने उदयें (बत्तीस के०) बत्रीश नांगा, तिहां आठ मनुष्यना, ठ विकलेंद्रियना, आठ देवताना, आठ तिर्यंचना, बे एकेंद्रियना. चोवीशने उदयें (छन्नि के०) बे नांगा तिर्यंचना जाणवा. तथा पच्चीशने उदयें (अठय के०) आठ नांगा देवताना होय, ठवीशने उदयें (बासीइसयायपंच के०) पांचशें ने ब्याशी नांगा होय. तिहां (२८८) मनुष्यना, (२८८) तिर्यंचना, ठ विकलेंद्रिना. उंगणत्रीशनें उदयें (नवउदया के०) नव उदय नांगा होय, तेमध्यें आठ देवताना, एक नारकीनो जाणवो. त्रीशने उदयें (बारहिआतेवीसं के०) त्रेवीशशें ने बार नांगा, तेमध्यें (११५२) मनुष्यना (११५२) तिर्यंचना, आठ देवताना जाणवा. एकत्रीशने उदयें (बावन्निक्कारससयाय के०) अगीआरशेंने बावन नांगा तिर्यंचना होय. सर्व मली साते उदय स्थानकें थइने (४०९७) उदय नांगा थाय. एनी नावना पूर्ववत्. अने मिश्रादिक गुणगणे उदयनांगा पोतानी मेलेंज विचारीने कहेवा.॥६३॥

॥ अथ गतिचतुष्कक्रमेण बंधोदयसत्तास्थानान्याह ॥
हवे गत्यादिक बाशठ मार्गणा द्वारें नामकर्मनां बंधोदय सत्ता स्थानक कहे ठे.

तिहां प्रथम नरकादिक चारगति मार्गणाने विषे अनुक्रमें बंधोदय सत्तास्थानक कहेछे.

दो छक्क ठ चउक्कं, पण नव इक्कार छक्कगं उदया ॥
नेरइ आइ सु सत्ता, ति पंच इक्कारस चउक्कं ॥ ६४ ॥

अर्थ- नरकादि चार गति अनुक्रमें लेवी. तिहां नरकगतिने विषे उंगणत्रीशने त्रीश, ए (दो के०) बे बंधस्थानक, तिहां उंगणत्रीशनुं मनुष्यगति प्रायोग्य, तथा तिर्यंचप्रायोग्य होय, अने त्रीशनुं तिर्यंच प्रायोग्यज होय. एना जांगा पूर्वें कह्या छे, तेम लेवा तथा तिर्यंचने २३-२५-२६-२८-२९-३० ए (छक्क के०) छ बंधस्थानक होय, तथा मनुष्यने २३-२५-२६-२८-२९-३०-३१-१ ए (अठ के०) आठ बंधस्थानक होय, तथा देवताने २५-२६-२९-३० ए (चउक्कं के०) चार बंधस्थानक होय. ए चार गतिने विषे बंध स्थानक कह्यां. हवे चार गतिने विषे अनुक्रमें उदय स्थानक कहे छे. नारकीने २१-२५-२७-२८-२९ ए (पण के०) पांच उदयस्थानक होय. तिर्यंचने २१-२४-२५-२६-२७-२८-२९-३०-३१ ए (नव के०) नव उदयस्थानक होय. मनुष्यने २०-२१-२५-२६-२७-२८-२९-३०-३१-९-८ (इक्कार के०) अगीआर उदय स्थानक होय. देवताने २१-२५-२७-२८-२९-३० ए (छक्कगंउदया के०) छ उदयस्थानक होय. हवे (नेरइआइसुसत्ता के०) नरकादिकगतिने विषे अनुक्रमें सत्तास्थानक कहे छे. नारकीने बाणु, नेव्याशी अने अठ्याशी, ए (ति के०) त्रण सत्तास्थानक होय. तिर्यंचने बाणु, अठ्याशी, छयाशी, एंशी अने अठोत्तेर, ए (पंच के०) पांच सत्तास्थानक होय, मनुष्यने एक अठोत्तेर विना बाकीनां (इक्कारस के०) अगीआरे सत्तास्थानक होय. अने देवताने त्र्याणु, बाणु, नेव्याशी अने अठयाशी, ए (चउक्कं के०) चार सत्तास्थानक होय.

हवे संवेध कहे छे. नारकीने पंचेंड्रियतिर्यंच प्रायोग्य उंगणत्रीश बांधतां पोताना पांच उदयस्थानकें प्रत्येकें बाणु अने अठयाशी, ए बे सत्तास्थानक होय. तीर्थंकरनामनी सत्तायें तिर्यंचगति प्रायोग्य बंध न होय ते जणी नेव्याशीनी सत्ता न होय तथा मनुष्यगति प्रायोग्य उंगणत्रीशने बंधें पांच उदय स्थानकें नेव्याशी सहित त्रण त्रण सत्ता होय तथा उद्योत सहित तिर्यंचगति प्रायोग्य त्रीशने बंधें उंगणत्रीशना बंधनी पेरें पांचे उदयें बे बे सत्ता होय. तथा जिननाम सहित

मनुष्यगति प्रायोग्य त्रीशने बंधें पांचे उदयें एक नेव्याशीनी सत्ता, प्रत्येकें होय. सर्वे थइ नरकगतिने विषे चालीश सत्तास्थानक होय.

तिर्यंचगतिने विषे बंधोदय सत्ता संवेध कहे छे. त्रेवीशने बंधें एकवीश, चोवीश, पच्चीश, छवीश, ए चार उदयें ९२–८८–८६–८०–७८ ए पांच पांच सत्ता अने बाकीनां २४–२८–२९–३०–३१ ए पांच उदयें अठोत्तेर विना चार चार सत्ता होय. सर्वे त्रेवीशने बंधें चालीश सत्ता थइ. तेम पच्चीश तथा छवीशने बंधें पण चालीश, चालीश सत्ता जाणवी तथा उगणत्रीश अने त्रीशने बंधें पण एमज चालीश सत्ता कहेवी. पण एटलुं विशेष जे मनुष्यगति प्रायोग्य उगणत्रीशने बंधें सर्वे उदयस्थानकें अठोत्तेरनी सत्ता न होय, बाकी चार सत्ता सर्वे उदयें होय. तथा अठावीशने बंधें चोवीशनो उदय न होय केमके चोवीशनो उदय एकेंद्रियने होय. तेने अठावीशनो बंध नथी जेमाटे देव, नारकी, ए बे गतिमध्यें एकेंद्रियने जावुं नथी अने अठावीशनो बंध तो देव नरक प्रायोग्य छे. माटें बाकी आठ उदय होय, तिहां एकवीश, छवीश,अठावीश,उगणत्रीश अने त्रीश, ए पांच उदयस्थानक क्षायिक सम्यक्दृष्टि तथा वेदक सम्यक्दृष्टि तो जेने मोहनीयनी बावीशनी सत्ता होय, एवाने पूर्वें आयु बांध्या उदय होय. तेनी अपेक्षायें जाणवा. तिहां एकेका उदयें बाणु अने अठ्याशी, ए बे सत्तास्थानक प्रत्येकें होय, तथा पच्चीश अने सत्तावीश, ए बे उदयस्थानक वैक्रिय करतां पंचेंद्रिय तिर्यंचने होय. तिहां पण ते हीज बे सत्तास्थानक होय तथा त्रीश, एकत्रीश, ए बे उदय सर्वे पर्याप्तियें पर्याप्ता एवा सम्यक्दृष्टि तथा मिथ्यादृष्टिने जाणवा, तिहां बाणु, अठ्याशी अने छयाशी, ए त्रण सत्ता होय. तिहां छयाशीनी सत्ता, मिथ्यादृष्टिनेज होय अने सम्यक्दृष्टिने अवश्य देवद्विकनो बंध होय, तेथी तेने ए सत्ता न होय सर्वे अठावीशने बंधें अढार सत्ता होय. एम तिर्यंचगति मध्यें सर्वे बंधस्थानकें (२१८) सत्ता होय.

मनुष्यगतिने विषे संवेध कहे छे. तिहां मनुष्यने त्रेवीशने बंधें २१–२५–२६–२७–२८–२९–३०– ए सात उदयस्थानक होय, तेमध्यें पच्चीश अने सत्तावीश ए बे उदय, वैक्रिय करतां लेवा. पण आहारकें त्रेवीशनो बंध नथी तेनणीते आहारक न लेवो. ए बे उदयें बाणु अने अठ्याशी, ए बे सत्ता होय अने बीजा पांच उदयें छयाशी, एंशी, ए बे अधिक होय तेमाटें तिहां चार सत्तास्थान लेवां. सर्वे थइ त्रेवीशने बंधें चोवीश सत्ता होय, एम पच्चीशने बंधें तथा छवीशने बंधें पण चोवीश चोवीश सत्ता लेवी तथा मनुष्यगति अने तिर्यंचगति प्रायोग्य उगण

त्रीश अने त्रीशने बंधें पण एमज चोवीश सत्ता कहेवी. तथा अठ्ठावीशने बंधें पण सात उदय छे. तेमध्यें एकवीश, छवीश, ए बे उदय, सम्यक्दृष्टिने करण अ पर्याप्तावेलायें होय. तथा पच्चीश, सत्तावीश, अठ्ठावीश अने उगणत्रीश, ए मांहे ला बे बे उदय, अनुक्रमें वैक्रिय, आहारक करतां सम्यक्दृष्टिने होय. त्रीशनो उ दय, मिथ्यात्वीने पण होय. ए उदयें बाणु, अठ्यासी, ए बे बे सत्तास्थानक होय. तथा त्रीशने उदयें नरक प्रायोग्य अठ्ठावीशने बंधें नेव्याशी तथा छयाशी, ए बे सत्ता अधिक भेलतां चार सत्ता होय. एम अठ्ठावीशने बंधें सर्व थइ शोल सत्ता थाय. तथा जिननाम सहित देवप्रायोग्य उगणत्रीशने बंधें सात उदय अठ्ठावी शना बंधनी पेरें लेवां. पण एटलुं विशेष जे त्रीशनो उदय सम्यक्त्वीने लेवो तेथी साते उदयें त्र्याणु अने नेव्याशी, ए बे सत्तास्थानक होय. तिहां आहारकने तो त्र्याणुनीज सत्ता होय सर्व संख्यायें जिननामसहित उगणत्रीशने बंधें चौद सत्ता स्थानक होय तथा आहारकद्विक सहित त्रीशने बंधें उगणत्रीश अने त्रीश, ए बे उदय स्थानक होय. तिहां जेणे आहारक शरीर प्रमत्त गुणठाणे करीने अंतकालें अप्रमत्तें आवे, तेनी अपेक्षायें उगणत्रीशनो उदय लेवो. बीजे स्थानकें त्रीशनो उ दय होय तिहां प्रत्येक उदयें बाणुनी सत्ता होय. तथा एकत्रीशने बंधें एकज त्री शनो उदय होय अने तिहां एकज त्र्याणुनी सत्ता होय, तथा एकने बंधें त्रीशनो उदय होय तिहां ए३–ए२–ए९–ए८–ए०–७ए–७६–७५ ए आठ सत्ता स्थान क होय, शरवाले त्रेवीश, पच्चीश, छवीशना बंधने विषे चोवीश चोवीश सत्ता अने अठ्ठावीशना बंधने विषे शोल सत्ता तथा मनुष्य अने तिर्यंचगति प्रायोग्य उगण त्रीश तथा त्रीशना बंधने विषे चोवीश चोवीश सत्ता तथा देवगति प्रायोग्य तीर्थं कर सहित उगणत्रीशना बंधें चौद सत्ता तथा एकत्रीशना बंधने विषे एक सत्ता अने एक प्रकृतिना बंधें आठ सत्ता सत्तास्थानक मए (१५ए) सत्ता मनुष्य मध्यें होय.

हवे देवताने विषे संवेध कहे छे. देवताने पच्चीशने बंधें छ उदयें प्रत्येकें बाणु अने अठ्यासी, ए बे सत्ता होय. एम छवीश तथा उगणत्रीशने बंधें पण जाणवुं तथा उद्योत सहित पंचेंद्रियतिर्यंच प्रायोग्य त्रीशने बंधें पण एमज जाणवुं. तथा जिननाम सहित मनुष्यगति प्रायोग्य त्रीशने बंधें छ उदयस्थानकें प्रत्येकें त्र्याणु, नेव्याशी, ए बे सत्तास्थानक जाणवां. एम चार बंधमध्यें त्रीशनो बंध, मनुष्य तथा तिर्यंच प्रायोग्य होय माटे ते बे स्थानक गणतां पांचे स्थानकें बारबार सत्ता होय, स र्व थइ देवगतिमध्यें शाठ सत्ता स्थानक होय. एम गति आश्री संवेध देखाड्यो ॥६४॥

॥ अथेंद्रियमाश्रित्याह ॥ हवे इंद्रिय आश्रयी नामकर्मनां बधोदय सत्ता कहे छे.

इग विगलिंदिअ सगले, पण पंचय अठ बंध ठाणाणं ॥
पण छक्किक्कारुदया, पण पण बारसय संताणि ॥ ६५ ॥

अर्थ-(इगविगलिंदिअसगले के०) एकेंड्रिय, विकलेंड्रिय अने सकल ते पंचेंड्रियने अनुक्रमें बंधस्थानक कहे छे. तिहां एकेंड्रियने २३-२५-२६-२९-३० ए (पण के०) पांच बंधस्थानक होय, तथा त्रणे विकलेंड्रियने एहीज (पंचय के०) पांच बंध स्थानक होय, तथा पंचेंड्रियनें २३--२५-२६-२८-२९-३०-३१-१ एवं (अठबंधठाणाणं के०) आठ बंधनां स्थानक होय. तथा एकेंड्रियने २१-२४-२५-२६-२७-ए (पण के०) पांच उदयस्थानक होय. तथा त्रणे विकलेंड्रियने २१-२६-२८-२९-३०-३१ ए (छक्क के०) छ उदय स्थानक होय, तथा पंचेंड्रियने २०-२१-२५-२६-२७-२८-२९-३०-३१-९-८-ए (इक्कारुदया के०) अगीआर उदयस्थानक होय. तथा एकेंड्रियने ९२-८८-८६-८०-७८-ए (पण के०) पांच सत्तास्थानक होय. तथा त्रणे विकलेंड्रियने ९२-८८-८६-८०-७८ एज (पण के०) पांच सत्तास्थानक होय. तथा पंचेंड्रियने ९३-९२-८९-८८-८६-८०-७९-७८-७६-७५-९-८- ए (बारसयसंताणि के०) बार सत्तानां स्थानक होय ॥ एनो संवेध पूर्वें चौद जीव नेदें नामकर्मनो संवेध विचार्यो छे, तिहांथी जोइ लेवो तथा निपुण बुद्धियें विचारी करवो ॥ ६५ ॥

इय कम्म पगइठाणा, णि सुठु बंधुदय संत कम्माणं ॥
गइआएहिं अठसु, चउप्पयारेण नेआणि ॥ ६६ ॥
गइइंदिए अकाए, जोए वेए कसाय नाणेअ ॥
संयम दंसण लेसा, नवसंमे सन्निआहारे ॥ ६७ ॥
संत पयपरूवणया, दवपमाणं च खित्त फुसणाय ॥
कालं तरंच नावो, अप्पा बहुयं च दाराइ ॥ ६८ ॥

अर्थ-(इय के०) ए उक्तप्रकारें (सुठु के०) सुष्ठु एटले नले प्रकारें अत्यंत उपयोग राखीनें (कम्मपगइठाणाणि के०) आठे कर्म प्रकृतिनां स्थानक, (बंधुदयसंतकम्माणं के०) बंध, उदय, सत्ता, कर्मनी तेना संवेधें (गइआएहिं के०) गत्यादिक एटले गति, इंद्रिय, काय, योग, वेद, कषाय, ज्ञान, संयम, दर्शन, लेश्या,

भव्य, सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारी, ए चौद जीव स्थानकें तथा ए चौदना उत्तर बा शठ मार्गणा भेदने स्थानकें करीने सत्पद प्ररूपणादिक (अठसु के०) आठ अ नुयोग द्वारने विषे (चउप्पयारेण के०) प्रकृतिबंध, स्थितिबंध, रसबंध अने प्रदे शबंध, ए चार प्रकारें कहेवाने (नेआणि के०) जाणवा ॥ ६६ ॥ ६७ ॥

हवे ए आठ अनुयोग द्वार, लखीयें बैयें. (संतपयपरूवणाए) एटले ठता प दनी प्ररूपणा, ए एक पद भणी घट पदनी पेरें अठतुं न होय, जे ठता पदार्थनुं वाचक पद न होय, ते एक पद पण न होय. जेम वंध्यापुत्र ए शब्द बे पदनो माटे ते पद अठतुं ठे. तेनी पेरें ए पद नथी ते भणी ए पद साचां ठे एटले अर्थ प्ररूप णाना भेद ते अनु कहेतां वस्तु प्रतिपादन कथा पढी योग कहेतां सर्व प्रकारें वस्तु आठ अनुयोग द्वार अणु कहेतां सूत्र तेनी साथें योग कहेतां अर्थनुं जोडवुं, तेनां द्वार, कहेतां बारणां एटले वस्तुनो निर्णय करवो, तेनां द्वार आठ जाणवां. ति हां प्रथम ठता पदनी प्ररूपणा, ते जेम बंध, उदय, सत्ता तथा प्रकृति, स्थिति, र स, प्रदेश, ए सर्व पद साचां ठे आप आपणा पदार्थनां वाचक ठे एकेक पद भ णी घटपदनी पेरें ठतां ठे, पण वंध्या पुत्रनी पेरें अठतां नथी तेनां स्थानक, जेनो जिहां सद्भाव, ते तिहां कहेवां. ते प्रथम ठता पदनी प्ररूपणा नाम द्वार जाणवुं.

तथा बीजुं द्रव्यप्रमाण द्वार, ते एम के ए प्रकृति स्थानकना द्रव्य केटलां होय ? एम प्रमाणनुं कहेवुं, ते बीजुं द्वार. तथा एकेक प्रकृतिस्थान द्रव्य, केट लां आकाश प्रदेश क्षेत्र रुंधे, ए अर्थ कहे ते क्षेत्रप्रशंसानामा त्रीजुं द्वार. तथा एकेकस्थानकें जीव केटला काल पर्यंत रहे, एम कहेवुं ते चोथुं काल द्वार. तथा ए बंधस्थानक तथा उदयस्थानक ठांम्युं ते वली केटले कालें जघन्य तथा उत्कृष्टें आंतरे लहे, ए पांचमुं अंतर द्वार. तथा लोकने केटले भागें एकेक स्थानक होय, एम कहेवुं, ते ठठ्ठं भाग द्वारनो विचार जाणवो. तथा कयुं स्थानक उदयिकादिक ठ भावमध्यें कया भावें होय ? ते सातमुं भाव द्वार. तथा कया स्थानकथी कयुं स्थानक द्रव्य, क्षेत्र, काल अने भावनी अपेक्षायें घणुं होय तथा थोडुं होय अ थवा बराबर होय ? एम विचारवुं ते आठमुं अल्पबहुत्व द्वार. ए आठ अनुयोग द्वारें करी विचारतां पदार्थनुं सम्यक्ज्ञान होय, तिहां सत्पदप्ररूपणायें करीने गुणगणाने विषे गति तथा इंद्रियमार्गणायें बंधोदय सत्तानो संवेध कह्यो. एने अनुसारें काययोगादिक मार्गणायें पण कहेवो, अने शेष जे द्रव्यप्रमाण क्षेत्र, स्पर्शनादिक सात अनुयोग द्वार, ते कर्मप्रकृति कर्मप्राभृत प्रमुख ग्रंथोने सम्यक् प्र

कारें जोइने कहेवां. पण आज ते ग्रंथना अनावथकी लेशमात्र पण कही न शकी यें तेमाटें प्रकृति, स्थिति, रस अने अनुनाग, ए चार प्रकारें कहेवां. तिहां प्रकृति आश्रयी बंध उदय सत्ता स्थानक पूर्वें कह्यां, तेना अनुसारें स्थितिना बंधादि स्थान, रसस्थान तथा प्रदेशस्थान पण मार्गणाद्वारें एवाज अनुक्रमें कहेवां ॥ ६८॥

अहींआं बंधोदय सत्तानो संवेध कह्यो. तिहां उदय कह्यो, पण उदीरणा न कही, ते शामाटें न कही? ते कहे छे.

उदयस्सुदीरणाए, सामित्ताउ न विज्जइ विसेसो ॥
मुत्तूणय इगयालं, सेसाणं सव्व पयडीणं ॥ ६९ ॥

अर्थ-(उदयस्सुदीरणाए के०) अहींआं बंधोदय सत्ता संवेध विचारतां उदीरणा, उदयमध्यें कहेवाणी पण उदीरणा उदयथकी जूदी न कही तेनुं कारण कहे छे. अहींआं काल प्राप्त कर्मनुं अनुनववुं ते उदय कहीयें. अने काल अप्राप्त उदयावलियकी बाहेर रह्यां एवां जे कर्मदल तथा रस, जेनो उदय काल आव्यो नथी ते कर्मदलने जीव, कषाय सहित योग, एवे नामें जे वीर्यविशेष, तेणे करी आकर्षीने उदय आव्या दलमांहे नेलीने उदय प्राप्त कर्मपरमाणु सार्थे अनुनवे, ते करणनुं नाम उदीरणा कहीयें. तेमाटें उदय अने उदीरणानुं (सामित्ताउ नविज्जइविसेसो के०) स्वामित्वपणा आश्रयीने कांइ विशेष नथी एटले ज्ञानावरणादिक जे कर्म तेना उदयनो स्वामी तेहीज जीव ज्ञानावरणादि कर्मनी उदीरणानो पण स्वामी जाणवो. " जब उदय तब उदीरणा, जब उदीरणा तब उदय " ए वचन प्रमाण थकी एमज जाणवुं. परंतु एटलुं विशेष जे (मुत्तूणयइगयालं के०) एकतालीश प्रकृति आगली गाथायें कहेशे, ते मूकीने (सेसाणंसव्वपयडीणं के०) शेष सर्व प्रकृतिनो उदय अने उदीरणा सार्थेज समकालें प्रवर्त्ते, तेमाटें जे उदयनो स्वामी तेहीज उदीरणानो पण स्वामी जाणवो ॥ ६९ ॥

॥ एकचत्वारिंशत्प्रकृतीराह ॥ हवे एकतालीश प्रकृतिने उदय उदीरणायें फेर छे एटले उदय उदीरणानुं अंतर होय, ते विशेषें बे गाथायें करी कहे छे.

नाणंतराय दसगं, दंसण नव वेयणिज्ज मिच्छत्तं ॥
संमत्तलोज वेआ, उआणि नव नाम उच्चं च ॥ ७० ॥

मणुय गइ जाइ तस बा,यरं च पज्जत्त सुन्नग आइज्जं ॥
जस कित्ती तिष्ठयरं, नामस्स हवंति नव एया ॥ ७१ ॥

अर्थ-(नाणंतरायदसगं के०) पांच ज्ञानावरणीय अने पांच अंतराय, एवं द श प्रकृति तथा (दंसणनव के०) दर्शनावरणीय नव, (वेयणिज्ज के०) वेदनी यनी बे प्रकृति, (मिछत्तं के०) मिथ्यात्वमोहनीय, (संमत्त के०) सम्यक्त्वमो हनीय, (लोन्न के०) संज्वलनलोन, (वेआउआणि के०) त्रण वेद अने चार आयु, (नवनाम के०) नामकर्मनी नव प्रकृति जे चौदमे गुणगाणे रहे ले ते तथा (उच्चंच के०) उच्चैर्गोत्र, एवं एकतालीश प्रकृति जाणवी ॥ इत्यक्षरार्थः ॥७०॥

तिहां ज्ञानावरणीय पांच, अंतराय पांच, तथा चार दर्शनावरणीय, एवं चौ द प्रकृतिनो उदय अने उदीरणा, बारमा गुणगाणानी एक आवली थाकती हो य, तिहां सुधी सर्व जीवने साथेंज प्रवर्त्ते अने उदय, उदीरणा विछेद थया पछी केवल उदयावलिका थाकती होय तेमध्यें सर्व कर्मदल पेसे पण बाहीर बीजुं कोइ कर्मदल रहे नहीं तो पछी शानी उदीरणा करे? माटें ए चौद प्रकृतिनी बा रमा गुणगाणानी छेहली आवलिकायें उदीरणा न होय. तथा पांच निद्रानीज उदीरणा, शरीरपर्याप्ति पूरी थया पछी ज्यां लगें इंद्रियपर्याप्ति पूरी न करे, तिहां लगें उदीरणा न होय. केवल उदयज होय अने शेष कालेंतो उदय उदीरणा साथेंज प्रवर्त्ते, तथा साथेंज निवर्त्ते. तथा वेदनीयनी बे प्रकृतिनां उदय तथा उदीरणा छठा गुणगाणा सुधी साथेंज प्रवर्त्ते अने ते उपरांत तो उदयज होय पण उदीरणा न होय. तथा प्रथम सम्यक्त्व उपार्जतां अंतर करण कस्या पछी मिथ्यात्वनी प्रथमस्थितिनी एक आवलि रहे त्यांसुधी मिथ्यात्व मोहनीयना उदय तथा उदीरणा साथेंज प्रव र्त्ते, अने छेहली आवलियें मिथ्यात्वनो उदय होय पण उदीरणा न होय.

तथा वेदकसम्यक्दृष्टिने क्षायिक सम्यक्त्व उपजावतां मिथ्यात्व मोहनीय अ ने मिश्रमोहनीय, ए बेहु खपाव्या पछी सम्यक्त्वमोहनीय सर्व अपवर्त्तनायें अप वर्त्तिने अंतरमुहूर्त्त स्थितिमात्रनुं करे, तेने उदय तथा उदीरणायें नोगवतां जेवारें शेष एक आवलीमात्र रहे तेवारें उदीरणा टले केवल उदयावली लगें उदयज होय.

अथवा उपशमश्रेणी पडिवजतां सम्यक्त्वमोहनीयनुं अंतर करण कस्या पछी प्रथमस्थिति आवलिका मात्र रहे, तिहां लगें सम्यक्त्व मोहनीयनां उदय तथा उ दीरणा साथेंज होय अने पछी छेहली आवलीयें उदीरणा न होय मात्र उदयज होय.

संज्वलना लोजनां उदय तथा उदीरणा ज्यां लगें सूक्ष्मसंपरायनी एक आवलिका थाकती होय, त्यां लगें सार्थेज होय अने ठेहली आवलीयें तो मात्र उदयज होय पण उदीरणा न होय.

तथा त्रण वेद मांहेली जे वेदें श्रेणी पडिवज्जे तिहां अंतर करण कीधे थके ते वेदनी प्रथमस्थिति आवलिका थाकतां लगें उदय तथा उदीरणा सार्थेज होय अने ठेहली आवलीयें तो उदीरणा न होय, मात्र उदयज होय.

तथा चारे आयुनो पोत पोताना नवनी ठेहली आवलिकायें उदय होय,पण उदीरणा न होय अने मनुष्यायुनो प्रमत्त गुणठाणा लगेंज उदय तथा उदीरणा होय, आगले गुणठाणे केवल उदयज होय पण उदीरणा न होय ॥ इत्यर्थः ॥ ७० ॥

तथा मनुष्यगति, पंचेंद्रियजाति, त्रस, बादर, पर्याप्त, सुजग, आदेय, यशःकीर्त्ति अने तीर्थंकरनाम, ए नव नामकर्मनी प्रकृति तथा उच्चैर्गोत्र ए दश प्रकृतिनां सयोगी केवली गुणठाणा लगें उदय तथा उदीरणा सार्थेज समकालें प्रवर्त्ते तेवार पढी अयोगी गुणठाणे ए दश प्रकृतिनो उदय होय पण उदीरणा न होय. एम ए एकतालीश प्रकृतिनां उदय अने उदीरणानुं विशेष देखाड्युं अने शेष पच्चाशी प्रकृतिनां उदय तथा उदीरणा समकालें प्रवर्त्ते अने समकालें निवर्त्ते ॥ इति समु० ॥ ७१ ॥

॥ अथ कस्मिन् गुणस्थानके काः प्रकृतीर्बध्नंतीत्याह ॥

हवे कया गुणठाणे कइ प्रकृति बांधे ठे. ? एवो बंधविशेष सर्व गुणठाणे कहे ठे.

तित्थयरा हारग विर, हिआउ अबेइ सव पयडीउ ॥
मिठत्तवेअगो सा, साणोगुणवीस सेसाउ ॥ ७२ ॥

अर्थ– बंध योग्य एकशो वीश प्रकृति मध्येंथी (तित्थयराहारग के०) तीर्थंकरनाम अने आहारकद्विक, ए त्रण प्रकृति (विरहिआउ के०) रहित करीने (अबेइसव्वपयडीउ के०) बाकी एकशो सत्तर प्रकृति सर्व उपार्जे, एटले बांधे ते कोण जीव क्यां बांधे ? तोके (मिठत्तवेअगो के०) मिथ्यात्वनो वेदक एवो मिथ्यादृष्टि जीव मिथ्यात्व गुणठाणे रह्यो थको बांधे अने जिननाम सम्यक्त्व प्रत्ययिउ ठे तथा आहारकद्विक संयम प्रत्ययिउ ठे तेथी मिथ्यात्वें सम्यक्त्व तथा संयम बेहुने अनावें ए त्रण प्रकृति न बांधे तथा (सासाणोगुणवीससेसाउ के०) सास्वादन गुणठाणे वर्त्तते जीव १ जिननाम, ३ आहारकद्विक, ४ नपुंसकवेद, ५ नरकगति, ६ नरकानुपूर्वी, ७ नरकायु, ८ हुंडसंस्थान, ९ ठेवठुं संघयण, १० आतप, ११ स्थावर,

१२ सूक्ष्म, १३ साधारण, १४ अपर्याप्त, १५ एकेंद्रिय, १६ बेंद्रिय, १७ तेंद्रिय, १८ चौरिंद्रियजाति, १९ मिथ्यात्वमोहनीय, ए उंगणीश प्रकृति विना शेष एक शोने एक प्रकृति बांधे जे नथी नपुंसकादिक शोल प्रकृतिनो बंध, मिथ्यात्व प्रत्ययिक छे, ते अहींआं सास्वादने न बंधाय ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ७२ ॥

बायाल सेस मीसो, अविरय सम्मो तिआल परिसेसा ॥
तेवन्न देस विरउ, विरउ सगवन्न सेसाउ ॥ ७३ ॥

अर्थ–उंगणीश प्रकृति पूर्वे कही ते तथा तिर्यंचत्रिक, थीणद्धीत्रिक, दौर्भाग्यत्रिक, अनंतानुबंधिचतुष्क, मध्यसंस्थान चार, मध्यसंघयण चार, नीचैर्गोत्र, उद्योत, अशुभविहायोगति, स्त्रीवेद, मनुष्यायु अने देवायु, ए (बायाल के०) बेंतालीश प्रकृति वर्जीने (सेसमीसो के०) शेष चमोत्तेर प्रकृति मिश्रगुणठाणे वर्त्ततो जीव बांधे अने (अविरयसम्मो के०) अविरति सम्यक्दृष्टि गुणठाणे पूर्वोक्त बेंतालीश मध्येंथी तीर्थंकरनाम, मनुष्यायु अने देवायु, ए त्रण बांधे माटे (तिआल परिसेसा के०) बेंतालीश प्रकृति वर्जीने शेष सत्त्योतेर प्रकृति बांधे तथा (देस विरउ के०) देशविरति गुणठाणे वर्त्ततो जीव, वज्रऋषभनाराच संघयण, मनुष्यत्रिक, अप्रत्याख्यानीआ चार कषाय, औदारिकद्विक, एवं दशप्रकृति पूर्वोक्त त्रेंतालीशमां भेळीयें, तेवारें (तेवन्न के०) त्रेपन प्रकृति न बांधे, ते वर्जीने शेष शडशठ प्रकृति बांधे. तथा (विरउ के०) सर्वविरति प्रमत्त साधु, छठे गुणठाणे पूर्वोक्त त्रेपननी साथें प्रत्याख्यानावरण कषाय चार भेळतां (सगवन्न के०) सत्तावन्न प्रकृति न बांधे, ते वर्जीने (सेसाउ के०) शेष त्रेशठ प्रकृति बांधे ॥७३॥

इगुसठि मप्पमत्तो, बंधइ देवाउअस्स इअरोवि ॥
अठावन्न मपुवो, छप्पन्नं वावि छवीसं ॥ ७४ ॥

अर्थ– तथा ते पूर्वोक्त त्रेशठ प्रकृतिमध्येंथी शोक, अरति, अथिर, अशुभ, अयश अने आशाता, ए छ प्रकृति काढीयें अने आहारकद्विक भेळीयें, तेवारें (इगुसठि के०) उंगणशाठ प्रकृति, (अपमत्तो के०) अप्रमत्त गुणठाणे (बंधइ के०) बांधे. अथवा (देवाउअस्सइअरोवि के०) देवायु पण प्रमत्तें बांधवा मांडे, ते बांधतो थकोज प्रमत्त थकी इतर अप्रमत्तें आवे, तिहां ते बंध पूरो करे, पण अप्रमत्त थको देवायु बांधवा न मांडे तेमाटे देवायु विना (अठावन्न के०) अठावन्न प्रकृति

बांधे तथा (मपुव्वो के०) अपूर्वकरण गुणगणाना सात जाग कल्पीयें. तिहां पहेले जागें तो तेहीज पूर्वोक्त अठावन्न बांधे, अने बीजे, त्रीजे, चोथे, पांचमे,अने छठे,ए पांच जागें निद्राद्विक न बांधे. शेष (छप्पन्नं के०) छपन्न प्रकृति बांधे, (वावि के०) अथवा छेह्ले जागें देवद्विक,पंचेंद्रियजाति,शुजखगति,त्रसादि नव, औदारिक विना चार शरीर, बे उपांग,समचतुरस्र,निर्माण,तीर्थंकर,वर्णादि चार तथा अगुरुलघु चतुष्क, ए त्रीश प्रकृति पण न बांधे,तेवारें (छवीसं के०) छवीश प्रकृतिनो बंध पण होय ७४

बावीसा एगूणं, बंधइ अगारसंत अनिअट्टी ॥
सत्तर सुहुम सरागो, साय ममोहो सजोगित्ती ॥ ७५ ॥

अर्थ—हवे (अनिअट्टी के०) अनिवृत्तिगुणगणाना पांच जाग कल्पीयें, तिहां पहेले जागें हास्य, रति, जय, कुछा, ए चार पण न बांधे तेवारें (बावीसा के०) बावीशनो बंध होय. तेवार पछी द्वितीयादिक जागें (एगूणं के०) एकेक प्रकृति कणी करता जइयें एटले बीजे जागें पुरुषवेद न बांधे तेवारें एकवीशनो बंध, त्रीजे जागें संज्वलनक्रोध टले वीशनो बंध, चोथे जागें संज्वलन मान टले उंगणीशनो बंध, पांचमे जागें संज्वलनी माया टले, तेवारें (अगारसंत के०) अढार प्रकृति पर्यंतज (बंधइ के०) बांधे तथा (सत्तरसुहूमसरागो के०) सूक्ष्मसंपरायगुणठाणे संज्वलनो लोज पण न बांधे, तेमाटें सत्तर प्रकृति बांधे, तेवार पछी ज्ञानावरणीय पांच, दर्शनावरणीय चार, अंतराय पांच, उच्चैर्गोत्र अने यशःकीर्त्ति, एवं शोल प्रकृति पण न बांधे तेवारें एकज (साय के०) शातावेदनीयनो बंध, (अमोहोसजोगित्ती के०) अमोही गुणगणाना धणीने होय. एटले अगीआरमा, बारमा अने सयोगी तेरमा गुणगणावालाने एकज शातानो बंध होय ॥ इति ॥ ७५ ॥

एसो उ बंधसामि, त्त उहो गइआइएसुवि तहेव ॥
उहाउ साहिज्जइ, जब जहा पयडि सप्जावो ॥ ७६ ॥

अर्थ– (एसोउबंधसामित्त के०) ए उंघ पणे चौद गुणगणे बंधस्वामित्व कह्युं. जेम बीजा कर्मग्रंथमध्यें कह्युं छे, तेम अहींआं पण जाणवुं. (तहेव के०) तेमज (गइआइएसुवि के०) गत्यादिक मार्गणाने विषे पण (उहु के०) उंघथकी कहेवो. जे रीतें त्रीजे कर्मग्रंथें बासठ मार्गणायें बंध कह्यो छे, तेम अहींआं पण कहेवो. (उहाउसाहिज्जइ के०) प्रथम सामान्य प्रकारें कह्युं छे तेमज कहेवुं. (ज

वजद्वापयडिसप्नावो के०) जिहां जे गुणठाणे जेटली प्रकृति बांधवानो सद्भाव होय, एटले जेने जेटली प्रकृति बांधवी घटे तेने तेटली विचारीने कहेवी॥ ७६ ॥

हवे जे गतिने विषे जेटली प्रकृति सत्तायें पामीयें ते कहे ले.

तिबयर देव निरिच्छा, उछंच तिसु तिसु गईसु बोधवं ॥
अवसेसा पयडीउ, हवंति सवासु विगईसु ॥ ७७ ॥

अर्थ- (तिबयरदेवनिरिच्छाउछंच के०) तीर्थंकर नामकर्म देवायु अने नरकायु, ए त्रण प्रकृति (तिसुतिसुगईसुबोधवं के०) त्रण त्रण गतिने विषे होय एम जाणवुं. तिहां तीर्थंकरनामकर्मनी सत्ता नारकी, देवता तथा मनुष्यगतिने विषे होय, पण तिर्यंचगतिमध्यें न होय. केमके, तीर्थंकर सत्कर्मा तिर्यंचमध्यें जाय नहिं तेमाटे. तथा देवायुनी सत्ता मनुष्य तिर्यंच अने देवगति मध्यें होय, पण नारकी मध्यें न होय, तथा नरकायुनी सत्ता मनुष्य, तिर्यंच अने नरकगति मध्यें होय, पण देवगतिमध्यें न होय, अने (अवसेसापयडीउ के०) अवशेष सर्व प्रकृतिनी सत्ता, (हवंतिसवासुविगईसु के०) सर्व चारेगतिने विषे पण होय. एटले तिर्यंच मध्ये तीर्थंकरनाम विना सर्व प्रकृति सत्तायें होय,देवगतिमध्यें नरकायु विना सर्व प्रकृतिसत्तायें होय. नरकगतिमध्यें देवायु विना सर्वप्रकृति सत्तायें होय ॥७७॥

हवे गुणठाणाने विषे पूर्वें जे बंधोदय सत्तास्थानकनो संवेध कह्यो, ते गुणठाणां तो प्रायें उपशमश्रेणीयें तथा क्षपकश्रेणीयें होय, तेमाटे ते श्रेणी कहे ले.

तिहां प्रथम उपशमश्रेणि कहे ले.

पढम कसाय चउक्कं, दंसण तिग सत्तगावि उवसंता ॥
अविरय सम्मत्ताउ, जाव नियट्टित्ति नायवा ॥ ७८ ॥

अर्थ-(पढमकसायचउक्कं के०) पहेला अनंतानुबंधीआ चार कषाय तथा (दंसणतिग के०) दर्शनत्रिक, ते मिथ्यात्वमोहनीय, मिश्रमोहनीय अने सम्यक्त्वमोहनीय, ए (सत्तगाविउवसंता के०) सात प्रकृति उपशांत होय. ते (अविरयसम्मत्ताउ के०) अविरतिसम्यक्दृष्टि गुणठाणाथकी मांमीने (जावनियट्टित्तिनायवा के०) यावत् निवृत्तिनामे आठमा गुणठाणा लगें जाणवी. तिहां सातमा लगें यथायोग्यपणे उपशांत होय अने अपूर्वकरणे तो निश्चयथकीज उपशांत होय॥७८॥

प्रथम अनंतानुबंधीआ चार कषाय तथा दर्शन त्रिक एटले मिथ्यात्वमोहनी

य, मिश्रमोहनीय अने सम्यक्त्वमोहनीय, ए सात मोहनीयनी प्रकृतिना रसोदयनी अपेक्षायें अविरतिसम्यक्दृष्टि गुणठाणाथी मांमीने अपूर्वकरणनामा आठमे गुणठाणे चडतां पर्यंत उपशांत पामीयें अने कोइएकने प्रदेशोदयनी अपेक्षायें पण अविरति सम्यक्दृष्टिने एज चोथे गुणठाणे उपशांत पामी कहीयें. तथा अपूर्वकरणे तो ए साते प्रकृति रसोदय आश्री तथा प्रदेशोदय आश्री पण उपशांत पामी कहीयें. तिहां प्रथम अनंतानुबंधीआनी उपशमनानो प्रकार कहे छे.

अविरतिसम्यक्दृष्टि, देशविरति, प्रमत्त तथा अप्रमत्त, ए चार गुणठाणे वर्त्तता जीवमांहेलो कोइ पण जीव, जघन्य परिणामे तेजो, मध्यम परिणामें पद्म अने उत्कृष्टपरिणामें शुक्ल, ए त्रण विशुद्धलेश्यामांहेली कोइ पण लेश्यायें वर्त्ततो ज्ञानोपयोगें उपयुक्त एक आयुःकर्म विना बीजा साते कर्मनी स्थिति जोगवीने बाकी कांइ एक ऊणी एक कोडाकोडी सागरोपम मात्र जोगववी रहे, तेवारें अंतरमुहूर्त्त पर्यंत अवदायमान परिणामें एटले विशुद्ध चित्तवृत्तिवंतथको रहे. एवी रीतें रह्यो थको परावर्त्तमान प्रकृतिमांहेली सर्वे शुन प्रकृतिनेज बांधे, पण अशातादिक अशुन प्रकृति न बांधे अने जे अपरावर्त्तमान ध्रुवबंधिनी ज्ञानावरणीयादिक अशुन प्रकृति बांधे, तेनो पण चोठाणीउ रसबंध टालीने, बेठाणीउ रस बंध करे, अने शुन प्रकृतिनो बेठाणीउ रसबंध टालीने चोठाणीउ रसबंध करे अने एकस्थितिबंध पूर्ण करी बीजो स्थितिबंध बांधवा मांमे, ते पूर्व पूर्व स्थितिबंधनी अपेक्षायें पल्योपमसंख्येय जागहीन स्थिति करीने बांधे. ए रीतें जे जे आगलो आगलो स्थितिबंध करे, ते ते पूर्व पूर्व स्थितिबंधथी पल्योपमसंख्येय जागहीन स्थितिनो बंध करे.

एम करण कालथकी पूर्वें अंतरमुहूर्त्त काल पर्यंत रहीने तेवार पछी अनुक्रमें प्रत्येकें अंतरमुहूर्त्त प्रमाणना एवां त्रण करण करे, तिहां प्रथम यथाप्रवृत्तिकरण, बीजुं अपूर्वकरण अने त्रीजुं अनिवृत्तिकरण, चोथी उपशांत अद्धा, तेनी पण स्थिति अंतरमुहूर्त्तनीज जाणवी. तिहां प्रथम यथाप्रवृत्तिकरणें प्रवेश करतो प्रतिसमय अनंतगुण वृद्धि विशुद्धियें करी प्रवेश करे, तिहां पूर्वोक्त शुनप्रकृतिना बंधादिकने बेठाणीआ रसने चोठाणीउ करतो बांधे अने अशुन प्रकृतिना चोठाणीआ रसने बेठाणिउ रस करतो बांधे, परंतु तिहां तथाविध तत्प्रायोग्य विशुद्धिने अनावें स्थितिघात, रसघात, गुणश्रेणी अने गुणसंक्रम, ए चार वानां मांहेलुं एक वानुं पण नहीं करे. ए करणमां प्रवर्त्तमान जीवने समय समय प्रत्यें नाना जीवनी अपेक्षायें असंख्यात लोकाकाश प्रदेश प्रमाण अध्यवसायस्थान प्रथम समयें होय.

ते पण षट्स्थानपतित होय. ते वली पहेला समयनां अध्यवसायस्थानथकी बीजा समयनां अध्यवसायस्थान विशेषाधिक होय. एम बीजा समयना अध्यवसायस्थानथकी त्रीजा समयनां अध्यवसायस्थान विशेषाधिक होय, एम आगला आगला समयनां अध्यवसायस्थानक ते पूर्व पूर्व समयनां अध्यवसायस्थानकथकी विशेषाधिक विशेषाधिक होय. एम करतां तेनी स्थापना विषमचतुरस्र क्षेत्र रुंधे छे. ए रीतें यथाप्रवृत्तिकरणनो छेह्लो समय आवे. त्यां सुधी कहेवुं. अहींआं अध्यवसायस्थानक विशुद्धिनी अपेक्षायें एक एकथी छठाण वडीआं होय, ते आवी रीतें जेम असत्कल्पनायें बे पुरुष, युगपत् यथाप्रवृत्तिकरणप्रतिपन्न छे ते मांहे एक तो सर्व जघन्य विशुद्धि श्रेणीयें प्रतिपन्न छे अने बीजो सर्वोत्कृष्ट विशुद्धिनां अध्यवसाय स्थानक श्रेणीयें प्रतिपन्न छे. ते बेहुनी विशुद्धिनुं तारतम्यपणुं देखाडे छे. त्यां प्रथम जीवने प्रथम समयने विषे सर्व जघन्य मंद विशुद्धि सर्वस्तोक छे. तेथकी ते पुरुषनेज वली बीजे समयें जघन्यविशुद्धि अनंतगुणी छे. तेथी वली त्रीजे समयें जघन्यविशुद्धि अनंतगुणी छे. एम त्यां लगें कहेवुं. ज्यां लगें यथाप्रवृत्तिकरण कालनो संख्यातमो भाग जाय त्यां लगें कहेवुं. ते वार पछी ते जघन्य पद विशुद्धिवाला पुरुषनी जे छेह्ला समयनी जघन्यविशुद्धि थइ ते थकी बीजा पुरुषनी पहेला समयनी उत्कृष्ट विशुद्धि अनंतगुणी होय. ते थकी पण जे जघन्यविशुद्धि स्थानथकी निवर्त्त्यो हतो ते पुरुषने उपरितन जघन्यविशुद्धि अनंतगुणी होय छे ते थकी बीजा समयनी उत्कृष्ट विशुद्धि अनंतगुणी, तेथी त्रीजा समयनी जघन्यविशुद्धि अनंतगुणी, तेथी वली आगला समयनी उत्कृष्ट विशुद्धि अनंतगुणी. एम उपर अने हेठे एकांतरें एकेकुं विशुद्धिस्थानक, अनंतगुणी करतां बेहु जीवने त्यांसुधी कहेवुं ज्यांसुधी यथाप्रवृत्तिकरणना छेह्ला समयने विषे जघन्यस्थानक होय त्यांसुधि कहेवुं. तेपछी उत्कृष्टविशुद्धि स्थानक ते नथी कहेलां तेने निरंतर पणे छेह्ला समयलगें अनंतगुणी वृद्धिवालां कहेवां ते यावत् चरम समयनुं उत्कृष्टुं विशुद्धिस्थानक आवे, त्यां लगें कहेवा. एम यथाप्रवृत्तिकरण कह्युं.

हवे अपूर्वकरण कहीयें छैयें. तिहां अपूर्वकरणें प्रतिसमय असंख्यात लोकाकाश प्रदेश प्रमाण अध्यवसायस्थानक होय, ते प्रतिसमयें छठाणवलिया होय, एटले छ वृद्धि अने छ हाणि होय. तिहां एक उत्कृष्ट विशुद्धिस्थानकथकी बीजुं विशुद्धिस्थानक विशुद्धिनी अपेक्षायें जो हीन होय, तो अनंतभाग हीन

होय, तथा असंख्यातनागहीन होय, तथा संख्यातनाग हीन होय, तथा संख्यातगुणहीन होय, तथा असंख्यात गुणहीन होय तथा अनंतगुण हीन होय. ए रीतें ठ हानिनां स्थानक कह्यां तथा एक अध्यवसायस्थानकविशुद्धिनी अपेक्षायें बीजुं अध्यवसायस्थानक वधतुं होय, तो पण ठ नेदें होय, ते कहे ठे. एक अनंतनागाधिक, बीजुं असंख्यातनागाधिक, त्रीजुं संख्यातनागाधिक, चोथुं संख्यातगुणाधिक, पांचमुं असंख्यातगुणाधिक, ठठुं अनंतगुणाधिक, एम परस्परें ठ वृद्धिनां तथा ठ हानिनां घटतां वधतां अध्यवसायस्थानक होय. तिहां अपूर्वकरणना प्रथम समयें जघन्यविशुद्धि सर्वथकी थोडी होय, ते पण यथाप्रवृत्तिकरणना चरम समयनी उत्कृष्टी विशुद्धिस्थानथकी अनंतगुणी अधिकी जाणवी. तेथकी वली प्रथम समयनीज उत्कृष्ट विशुद्धि अनंतगुणी होय, तेथकी वली बीजे समय जघन्यविशुद्धिअनंतगुणी, तेथकी वली तेहीज बीजे समयें उत्कृष्टविशुद्धि अनंतगुणी, तेथकी त्रीजा समयनी जघन्यविशुद्धि अनंतगुणी होय, तेथकी वली तेहीज त्रीजा समयनी उत्कृष्टविशुद्धि अनंतगुणी होय, एम अपूर्वकरणना चरम समय लगें कहेवुं. ए अपूर्वकरणने विषे प्रवेश करतो जीव, प्रथम समयथीज १ स्थितिघात, २ रसघात, ३ गुणश्रेणि, ४ गुणसंक्रम, ५ अन्यस्थितिबंध, ए पांच वानां समकालें एकठां करवाने प्रवर्त्ते.

तिहां प्रथम स्थितिघात एटले शुं? तोके जे क्रोधादिकनी स्थिति नोगववी रही होय, ते सत्तामध्येंथी अग्रनागनी स्थिति उकेरे, एटले ते स्थितिसत्तानो अग्रनाग उत्कृष्टो तो घणा सागरोपम प्रमाण होय अने जघन्यथी तो पल्योपमना असंख्यातमा नाग प्रमाण होय. ते स्थितिखंमने खमें ठे एटले उकेरे ठे. ते उकेरीने तेनुं दलिक जे हेठली आद्यस्थिति खंमन करवाने रही ठे. ते दलमध्यें तेना दलने प्रक्षेपे. ए रीतें अंतरमुहूर्त्तकालें ते स्थितिखंमने उकेरे. एमज वली जे शेष स्थिति रहे, तेना अग्रनागथकी पल्योपमना असंख्यातमा नाग प्रमाण स्थिति करी तेनुं दल अंतरमुहूर्त्तें पूर्वोक्त प्रकारेंज बाकी रहेला, हेठला स्थितिदलमध्यें नेले, एम अंतरमुहूर्त्तें अंतरमुहूर्त्तें स्थितिमांहे तेनुं दल नेलतां अपूर्वकरणना काल मांहे घणा हजार स्थितिना खंम खपी जाय, तेवारें जे अपूर्वकरणने प्रथम समयें जेटली कर्मनी स्थितिनी सत्ता हती, तेथकी संख्यातगुणहीन स्थितिनी सत्ता थइ. ए स्थितिघातनुं स्वरूप कह्युं.

हवे रसघात कहे ठे. रसघात ते जे अशुन कर्मनो रस नोगव्या विनानो रह्यो ठे, ते

रसनो अनंतमो नाग मूकीने शेष अनुनागना नाग सर्व अंतरमुहूर्त्तेंज खपावे, विनाशे, तेवार पढी वली पण जे अनंतमो नाग रह्यो ढे तेनो वली अनंतमो नाग मूकीने शेप अनुनागना नाग सर्व अंतरमुहूर्त्तें खपावे, तेवार पढी वली ते पूर्वें मूक्यो एवो जे अनंतमो नाग रह्यो ढे, तेनो वली अनंतमो नाग मूकीने शेष अनु नाग नाग अंतरमुहूर्त्तें विनाशे. एम अनुनाग खंमनां अनेक सहस्र, एकस्थितिखं मने विषे व्यतिक्रमे अने ते स्थितिखंमना अनेक सहस्रें अपूर्वकरण समाप्त थाय, रसखंमना कालथकी स्थितिखंमनो काल संख्यातगुणो अधिक जाणवो. तेथकी अपूर्वकरण काल संख्यातगुणो अधिक ढे.

हवे गुणश्रेणि कहे ढे. गुणश्रेणि ते अंतरमुहूर्त्त प्रमाण कर्मस्थितिथकी उपरली कर्मस्थिति जे वर्त्ते ढे, ते मध्येंथी दलिक लेइने पोतानी उदयावलिकानी उपरली स्थि तिमांहे समय समय प्रत्यें असंख्यातगुण असंख्यातगुण चढतुं दल संक्रमावे, नेले, ते आवी रीतें जे प्रथम समयें स्तोक, तेथकी बीजे समयें असंख्यातगुणुं चढतुं नेले, ते थकी वली त्रीजे समय असंख्यातगुणुं वधतुं नेले, एम यावत् अंतरमुहूर्त्तना चरम समय पर्यंत कहेवुं. ते अंतरमुहूर्त्त तो अपूर्वकरण अने अनिवृत्तिकरणना कालथकी लगारेक अधिक जाणवुं. ए प्रथम समयें ग्रह्युं जे दल, तेनो निक्षेपविधि कह्यो. एम द्वितीयादिक समयथी मांमीने यावत् ढेहला समय पर्यंत समयें समयें ग्रहीत दलि यानो पण निक्षेपविधि जाणवो. एटले जे समय समय प्रत्यें दलिक लीयें, ते सर्व प्रत्ये कें अंतरमुहूर्त्तना सघलां प्रति समयना दल मध्यें एमज असंख्यातगुणु चढतुं नेले. एम करतां जे समय नोगवतो जाय, ते सामयथी आगला शेष समयना दलमांहे नेले एटले अपूर्वकरणना समयें अनिवृत्तिकरणना समयें अनुक्रमे घटते थके शेष शेषने विपे गुणश्रेणी दलिकनो निक्षेप शेष शेपने विषे होय ते उपरांत वधे नहिं.

हवे गुणसंक्रम कहे ढे. गुण संक्रम ते जे अपूर्वकरणना प्रथम समयने विषे अणबंधाती एवी जे अनंतानुबंधीआदिक अशुनप्रकृति तेनुं दल बंधाती एवी जे संज्वलनादिक परप्रकृति, तेमध्यें समय समय दीठ असंख्यातगुणुं चढतुं संक्रमावे, संक्रमावीने पर प्रकृतिरूपपणे परिणमावे, तेने गुणसंक्रम कहीयें. ते पहेले सम यें सर्वस्तोक संक्रमावे, तेथकी बीजे समयें असंख्यातगुणुं संक्रमावे, एम समय समय दीठ असंख्यातगुणुं चढतुं दल संक्रमावे.

हवे अन्यस्थितिबंध कहे ढे. अन्यस्थितिबंध ते अपूर्वकरणथी पूर्वला समयें जे कर्मनो स्थितिबंध कह्यो, तेनी अपेक्षायें अपूर्वकरणना प्रथम समयें जे बीजो

स्थितिबंध आरंभे, ते स्तोक जाणवो. माटें अपूर्वस्थिति बंध कह्यो. अहींआं स्थितिबंध अने स्थितिघातनो काल, सरखोज जाणवो. ए बेने समकालें प्रारंभें ठे, अने समकालें सरखाज नीठे पूरा पाडे. एम ए पांच पदार्थ अपूर्वकरणें प्रवर्त्ते ठे.

हवे अनिवृत्तिकरण कहीयें ठैयें. अनिवृत्तिकरण आरंजतां तुल्य कालना एटले एकज कालें अनिवृत्तिकरणें प्रवेश करनारा सर्व जीवोने प्रथम समयें एकज सरखुं अध्यवसायस्थानक होय, एटले अनिवृत्ति करणना प्रथम समयने विषे जे वर्त्त ठे अने जे पूर्वें वर्त्त्या अने आगमिककालें जे वर्त्तशे, ते सर्वनुं पण सरखुंज अध्यवसायस्थान ठे तेमज बीजा समयने विषे जे वर्त्ते ठे, वर्त्त्या ठे अने वर्त्तशे, ते सर्वनुं पण एकरूपज अध्यवसाय स्थान ठे. हवे पहेला समयनां अध्यवसाय स्थानकथकी बीजा समयनां अध्यवसायस्थानक अनंत गुणविशुद्धियें होय. एम जेटला समय अनिवृत्तिकरणना ठे, तेटला समयनां अध्यवसायस्थानक ते पाठला पाठला अध्यवसायस्थानकथकी आगलुं आगलुं अध्यवसाय स्थानक अनंतगुण विशुद्धिवालुं होय. अहींआं एने अनिवृत्ति एवुं नाम ते माटें कहीयें ठैयें. जे माटें जे एने विषे प्रवेश करे, ते सर्वने अध्यवसायस्थानकनी परस्पर निवृत्ति अने व्यावृत्ति न होय, तेनी अपेक्षायें अनिवृत्ति एटले भेद न होय. सर्व जीव सरखे अध्यवसायस्थानें होय माटें अनिवृत्ति कहीयें. अहींआं समय समय दीठ एकेक अध्यसाय स्थानक, तेनी स्थापना मुक्तावलीनी पेरें स्थापवी ०।०।०।०।०। अहींआं पण पहेला समयथीज स्थितिघातादिक पांच पदार्थ, समकालें अपूर्वकरणनी पेरें साथेंज प्रवर्त्ते. ए रीतें अनिवृत्तिकरण कालना संख्याता भाग गये थके शेष एक भाग रहे थके अनंतानुबंधीआनी हेठली उदयावलिका मात्र स्थिति मूकीने बाकी अंतरमुहूर्त्त प्रमाण संक्रमावी भोगवे. जेम मनुष्यगतिमध्यें शेष त्रणे गति संक्रमावीने अयोगी द्विचरम समयें भोगवे, ते स्तिबुकसंक्रम कहीयें. अंतरकरणने अभिनवस्थिति बंधना काल प्रमाण अंतरमुहूर्त्तनो करे ठे एटले ते अंतरमुहूर्त्त नवी स्थितिबंधाद्धा समान जाणवो. ते अंतरकरणनुं दलीउं उकेरी, उकेरी बंधाती पर प्रकृतिने विषे संक्रमावे, अने प्रथम स्थितिनुं दलीउं आवलिकामात्र ते वेद्यमान उदयवती पर प्रकृतिने विषे स्तिबुकसंक्रमें करीने संक्रमावे, स्तिबुक संक्रम एटले जे अनुदय प्रकृतिनुं दल ते उदयवती प्रकृति मध्यें संक्रमाववुं तेने स्तिबुक संक्रम कहियें.

हवे अंतरकरण कर्या पठी बीजे समयें अनंतानुबंधीयानी उपरली स्थितिनुं दलीउं उपशमाववा मांमे, ते आवी रीतें, प्रथम समयें स्तोक उपशमावे, बीजे सम

यें तेथी असंख्यातगुणुं उपशमावे, ते संक्रमावी जोगवे. जेम मनुष्यगति मांहे शेष त्रण गति संक्रमावी अयोगी केवली द्विचरम समयें जोगवे, तेम जाणवुं. एम समय समय असंख्यातगुणुं चढतुं उपशमावतां अंतरमुहूर्त्तने चरमसमयें अनंतानुबंधीआनुं सर्व दल उपशमित थाय. (उपशमाव्या के०) जेम धूलना पुंजने पाणीना बिंदुथी सींची सींचीने घणादिकें, पञ्चरादिकें कूट्यो थको निस्पंद एटले हीन बारीक सूक्ष्म थाय, ते कोइने ग्राह्य पण न होय, एवो थाय. तेम कर्मरूपरेणुना समूहने पण विशुद्धिरूप पाणीना प्रवाहथी सींची सींचीने अनिवृत्तिकरणरूप पञ्चरथी कूटी लासोडीने एवी सूक्ष्म करे, के जे थकी ते बंधन, संक्रमण, उदय, उदीरणा, निद्धत्त अने निकाचनादिक करणने पण अयोग्य थाय. तेने उपशमना कहीयें. ए कोइएक आचार्यना मत आश्री अनंतानुबंधीआनी उपशमना कही.

हवे कोइएक आचार्य कहे ठे के अनंतानुबंधीआनी उपशमना न होय, पण विसंयोजनाज होय. विसंयोजना एटले क्षपणाविशेष, तेनो प्रकार कहीयें ठैयें. अहींआं श्रेणी अणपडिवजतां पण चारे गतिना संज्ञी पंचेंद्रिय पर्याप्ता अविरति सम्यक्दृष्टि जीव तथा तिर्यंच अने मनुष्य, ए बेहु गतिना देशविरति जीव, तथा प्रमत्त अने अप्रमत्त मनुष्य, ते अनंतानुबंधीआ चार कषाय खपाववाने अर्थें जे रीतें पूर्वें कह्या, तेमज यथाप्रवृत्त्यादिक त्रण करण करे. पण एटलुं विशेष जे अनिवृत्तिकरणे पेठो थको अंतरकरण न करे, तो शुं करे ? ते कहे ठे. उद्दलना संक्रमें करीने हेठली एक आवलिकामात्र मूकीने उपरला निर्विशेषपणे समस्त अनंतानुबंधीयानां दल खेरू करे,

तिहां उद्दलमान संक्रमनुं स्वरूप, कर्मप्रकृतिथी लखीयें ठैयें. जे अनंतानुबंधी आदिक प्रकृतिनुं दल, प्रथमसमयें पल्योपमना असंख्यातमा जाग प्रमाण स्थितिखंम ठे तेने अंतरमुहूर्त्तें उकेरीने परप्रकृतिमध्यें संक्रमावे. एम बीजे समयें बीजो स्थितिखंम करी, तेनो केटलो एक जाग परप्रकृतिमध्यें संक्रमावे तथा केटलोएक पोतानी हेठली स्थितिमध्यें संक्रमावे पण पर प्रकृतिमध्यें जेटलुं संक्रमावे, तेथकी आपणी हेठली स्थितिमध्यें जे संक्रमावे, ते असंख्यातगुणुं जाणवुं. एम समय समय जे स्थितिखंम करे, ते पाठला पाठला स्थितिखंमनी अपेक्षायें विशेष हीन दलनी अपेक्षायें असंख्यातगुणुं होय. अने संक्रमाववाने समयें पण आपणी हेठली स्थितिमध्यें असंख्यातगुणुं संक्रमावे, तथा पर प्रकृतिमध्यें विशेष हीन हीन घटतुं घटतुं संक्रमावे, एम द्विचरमसमय लगें संक्रमावे. अने ठेहले समयें

तो आपणी स्थितिशेषने अजावें सर्व दल परप्रकृति मध्यें संक्रमावे, तेनुं नाम सर्वसंक्रम कहीयें बैयें. एम उद्वलना संक्रमें करी आवलिकामात्र मूकी बाकी सर्वे अनंतानुबंधीआ खपावे अने जे आवलीमात्र रहे, तेने स्तिबुकसंक्रमे करी वेद्यमान प्रकृतिमध्यें संक्रमावी खपावे. ते अनंतानुबंधीआ विसंयोज्या कहेवाय ते अंतरमुहूर्त्त पढी अनिवृत्तिकरणने बेहडे शेष कर्मनां स्थितिघात, रसघात अने गुणश्रेणी न होय. केमके ते जीव स्वजावस्थज रहे, सहज अवस्थायें रहे, ए रीतें अनंतानुबंधीआनी विसंयोजनानी रीत कही.

हवे दर्शन मोहनीयत्रिकनी उपशमनानो प्रकार लखीयें बैयें. तिहां मिथ्यात्वनी उपशमना मिथ्यात्वीने तथा क्षायोपशमिक सम्यक्दृष्टि ए बेहुने होय. अने सम्यक्त्व तथा मिश्र, ए बेनी उपशमना तो क्षायोपशम सम्यक्दृष्टिनेज होय. तिहां मिथ्यात्वीने तो ग्रंथिजेद करतां प्रथम उपशम सम्यक्त्व उपजाववा वालाने मिथ्यात्वनी उपशमना होय, ते प्रकार कहीयें बैयें. कोइ संज्ञी पंचेंद्रिय जीव, सर्व पर्याप्तियें करी पर्याप्तो करणकालथकी पूर्वें अंतर मुहूर्त्त काल लगें समय समय प्रत्यें अनंतगुणवधती विशुद्धियें प्रवर्त्ततो एवो अजव्यसैद्धिक जीवनी विशुद्धिनी अपेक्षायें अनंतगुणविशुद्धिमंत एवो मतिअज्ञान श्रुतअज्ञान, अने विजंगज्ञान, ए मांहेला अनेरे साकारोपयोगें उपयुक्तथको मनादिक त्रणयोग मांहेला कोइ पण अनेरे योगें वर्त्ततो जघन्य परिणामें तेजोलेश्यायें अने मध्यमपरिणामें पद्मलेश्यायें तथा उत्कृष्टपरिणामें शुक्कलेश्यायें वर्त्ततो मिथ्यादृष्टि चारे गतिमां हेलो कोइ पण गतिनो जीव कांइ एक ऊणी एक कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति, साते कर्मनी थाकती रही होय. इत्यादिक सर्व पूर्वोक्त प्रकारें ज्यां सुधी यथाप्रवृत्तिकरण अने अपूर्वकरण ए बेहु मिथ्यात्व उपशमाववाने परिपूर्ण करे, तिहां लगें कहेवुं. पण एटलुं विशेष जे अहींआं अपूर्वकरणे गुणसंक्रम न करे. किंतु? अहीं स्थितिघात, रसघात, गुणश्रेणी अने अन्यस्थितिबंध, ए चार वानांज प्रथम समयथी आरंजे. गुणश्रेणीदलिक रचना पण उदय समयथी मांमीने जाणवी. ते वार पढी अनिवृत्तिकरणाद्धाना संख्यातजाग गये थके अने एक संख्यातमो जाग थाकतो रहे, तेवारें मिथ्यात्वनी हेवली प्रथम स्थिति अनंतानुबंधीनी परें अंतरमुहूर्त्तमात्र जेटली नीचें मूकी मांमीने उपरें अंतरमुहूर्त्त मात्र अजिनवस्थिति बंधना अंतर मुहूर्त्त जेवडी पहेली स्थितिना अंतर मुहूर्त्तथी कांइ एक जाजेरी अजिनवस्थितिबंधना काल सरखी

एवी मिथ्यात्वनी अंतरकरणक्रिया करे, ते अंतरकरण वालुं कर्मदल कांइ एक उकेरीने प्रथम स्थितिमध्यें नेले अने कांइएक बीजी उपरली स्थितिमध्यें नेले. तिहां प्रथमस्थितिने विषे वर्त्ततो जीव, उदीरणा प्रयोगें करीने प्रथम स्थितिनुं दल उदयावलिका उपरलुं छे तेने आकर्षीने उदयावलिकामध्यें घाले, तेने उदीरणा कहीयें. अने जे वली बीजी स्थितिना समीपथकी उदीरणा प्रयोगें करीनेज ते मांहेलुं दल आकर्षीने उदयावली मध्यें नाखी, जोगवे, ते आगालने पण पूर्वाचार्यें उदीरणानुंज विशेषनाम विशेष प्रतीपत्तिने अर्थे बीजुं नाम कह्युं छे. हवे उदय उदीरणायें करीने प्रथम स्थितिनुं दल जोगवतो जोगवतो जेवारें ते प्रथमस्थिति शेष बे आवलिका रहे, तेवारें आगालनो छेद आवे, तेवारें एक आवलिका लगें उदय उदीरणा प्रवर्त्ते अने छेहली आवलियें तो उदीरणा पण विरमे, तेवारें छेहली आवलियें केवल उदयज जोगवे, पछी ते आवलिकाने छेहले समयें बीजी स्थितिनां दलिकनो रस जेद करी त्रण पुंज करे, एटले तेने त्रण जागें वहेंची नाखे, ते आवी रीतें के तेमध्यें जे देशघाती एकठाणीआ रसस्पर्द्धक तथा उत्कृष्ट रसोदीरणापेक्षायें बेठाणीआ रस सहित जे दल, ते प्रथम सम्यक्त्वपुंज तथा केटला एक एकठाणीआ रस स्पर्द्धक सर्वघाती सहित छे तथा केटला एक बेठाणीआ रसनां स्पर्द्धक सर्वघाती सहित छे. ते बीजो मिश्रपुंज तथा सर्वघातीआ चोठाणीआ तथा त्रिठाणीआ रसस्पर्द्धक सहित जे दल छे, ते त्रीजो मिथ्यात्वपुंज जाणवो. उक्तंच कर्मप्रकृतिचूर्णौ "चरम समय मिछदिठि. सेकाले उवसमसम्मदिठि होइ तंहे बिइ अंतंपि तं अणुजाग करेइ तं जहा सम्मत्तं सम्मा मिछत्तं मिछत्तंचेति ततोणंतर समये मिछादिठी" तेवार पछी आगल तेथी अनंतर समयें मिथ्यात्व दलिकना उदयना अजावथकी औपशमिक सम्यक्त्व पामे, जे जणी ग्रंथें कह्युं छे के " मिछतुदए खीणे लहइ सम्मत्तमोवसमियं सोलंजेण जस्स लंनइ आयहिय मलद्धपुवंजं " ए रीतें मिथ्यात्वनी सर्व प्रकारें उपशमनाथकी प्रथम सम्यक्त्वनो लाज होय छे. ए सम्यक्त्व पामतो कोइ एक देशविरति सहित अने कोइ एक सर्व विरति सहित पण पडिवजे, जे जणी कह्युंछे के " सम्मत्तेणं सम्मग, सवं देसं च कोइ पडिवज्जे " ते माटें देशविरति तथा प्रमत्त अने अप्रमत्त संयतने विषे पण मिथ्यात्वनी उपशमना पामीयें छैयें.

हवे वेदकसम्यक्दृष्टिने प्रदेशोदयनी अपेक्षायें मिथ्यात्वनी उपशमनानो प्रकार कहे छे. कोइएक वेदकसम्यक्दृष्टि जीव, संयमने विषे प्रवर्त्तमान थको अंतर

मुहूर्त्त मात्र कालें दर्शनत्रिकने उपशमावे छे. तिहां दर्शनत्रिक उपशमावतां त्रण करण करवां पडे, तेनो विधि पूर्वें कह्यो. ते रीतें त्यां लगें जाणवो, ज्यांलगें अनिवृत्तिकरणाद्धाना संख्याता नाग गये थके अंतर करण करे छे. ते अंतरकरणी अंतरकरण करतो थको सम्यक्त्वनी प्रथमस्थिति अंतरमुहूर्त्त प्रमाण स्थापे अने मिथ्यात्व, मिश्र मोहनीयनी प्रथमस्थिति आवलिकामात्र स्थापे. पढी तेनां दलिक उकेरी उकेरीने सम्यक्त्वनी प्रथम स्थितिमध्यें प्रक्षेपे. तिहां मिथ्यात्व अने मिश्र, ए बेहुनी प्रथम स्थितिनुं जे दलिक छे तेने सम्यक्त्वनी प्रथम स्थितिमध्यें स्तिबुक संक्रमें करी संक्रमावे अने सम्यक्त्वनी प्रथमस्थितिना दलना रसोदय विपाकना अनुनववाथकी नोगवतां ते अनुक्रमें क्षीण थाय. तेवारें औपशमिकसम्यक्दृष्टि थाय अने ए त्रणे मोहनीयनी उपरली स्थितिनुं दल उपशमाववानो तो पूर्वें जेम अनंतानुबंधीआनी उपरली स्थितिनी उपशमनानो प्रकार कह्यो छे. तेनी पेरें जाणवो. ए रीतें दर्शन मोहनीयने उपशमावीने पढी चारित्र मोहनीय, उपशमाववाने प्रवर्त्ततो पुरुष वली पण तेहीज यथाप्रवृत्यादिक त्रण करण करे. तिहां अप्रमत्तने अप्रमत्तगुणठाणे यथाप्रवृत्तिकरण, तथा अपूर्वकरण गुणठाणे अपूर्वकरण अने अनिवृत्तिकरण गुणठाणे अनिवृत्तिकरण, ए त्रण गुणठाणे त्रण करण करे, तेनुं स्वरूप, पूर्वली पेरें जाणवुं, पण अहींआं एटलुं विशेष जे अपूर्वकरणें गुणसंक्रम तो न बंधाती एवी सघली अशुन प्रकृतिनोज प्रवर्त्ते. तथा अपूर्वकरणाद्धाना संख्याता नाग गये थके निद्रा प्रचलानो बंधविछेद थते हुंते तेवार पढी घणा स्थितिखंमना सहस्र अतिक्रमते थके अपूर्वकरणाद्धाना संख्याता नाग गये थके शेष एक नाग थाकते थके देवद्विक, पंचेंद्रियजाति. वैक्रियद्विक, आहारकद्विक, तेजस, कार्मण, समचतुरस्रसंस्थान, वर्णचतुष्क, अगुरुलघुचतुष्क, त्रसनवक, आदेय, निर्माण अने जिननाम, ए त्रीश प्रकृतिनो बंधविछेद थाय, तेवार पढी स्थितिखंम पृथक्त्व गये थके अपूर्वकरणने छेहले समयें हास्य, रति, नय अने जुगुप्सा, ए चार प्रकृतिनो बंधविछेद हुंते हास्य, रति, अरति, शोक, नय अने जुगुप्सा, ए छनो उदय तिहां होय. अहींआं सर्व मोहनीयकर्मना छेहले समयें देशोपशमना, निधत्ति, निकाचनाना करणने विछेदे. तेवार पढी आगले समयें अनिवृत्तिकरणें प्रवेश करे, तिहां पण स्थितिघातादिक पांच पदार्थ तेमज पूर्वली पेरेंज प्रवर्त्ते ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ४८ ॥

हवे अनिवृत्तिबादर गुणठाणे उपशमश्रेणिवालाने मोहनीयकर्मनी पूर्वनी

सातथकी आरंजीने पच्चीश पर्यंत प्रकृति उपशम पामे, तेनुं स्वरूप देखाडे ले.

सत्तघ नवय पनरस, सोलस अघार सेव इगुवीसा ॥
एगाहि डु चउवीसा, पणवीसा बायरे जाए ॥ ७९ ॥

अर्थ- (सत्तघनवयपनरस के०) अंतरकरण कीधे थके सात प्रकृति उपशांत होय, ते पढी नपुंसकवेद उपशमे थके आठनो उपशांत थाय, ते पढी स्त्रीवेद उपशमे थके नवनो उपशांत थाय. ते पढी हास्यादिषट्क उपशमे थके पंदरनो उपशांत थाय. ते पढी (सोलसअघारसेवइगुवीसा के०) पुरुषवेदनो बंधोदय उपशमे थके शोलनो उपशांत थाय, ते पढी अप्रत्याख्यानी अने प्रत्याख्यानी, ए बे क्रोध समकालें उपशमे थके अढारनो उपशांत थाय. तेपढी संज्वलनक्रोधने उपशमे उंगणीशनो उपशांत थाय. (एगाहिडुचउवीसा के०) ते पढी अप्रत्याख्यान अने प्रत्याख्यान, ए बे मानने समकालें उपशमावे थके एकवीशनो उपशांत थाय. ते पढी संज्वलन मानने उपशमाववे बावीशनो उपशांत थाय. तेपढी अप्रत्याख्यान तथा प्रत्याख्यान, ए बेहु मायाने समकालें उपशमाववे करी चोवीश प्रकृतिनो उपशांत थाय. ते पढी संज्वलनी मायाने उपशमाववे करी (पणवीसा के०) पच्चीश प्रकृतिनो उपशांत (बायरेजाए के०) अनिवृत्तिबादरगुणगणे उपशमित प्रकृति जाणवी ॥ ७९ ॥

हवे ते अनिवृत्तिकरण अद्धाना संख्याता नाग गये थके चारित्रमोहनीयनी एकवीश प्रकृतिनुं अंतरकरण करे. तिहां चार संज्वलन कषायमांहेलो जे कषाय उदय प्राप्त होय,ते कषाय अने त्रण वेदमध्यें पण जे वेद उदय प्राप्त होय,ते वेद ए बेहु प्रकृतिनी प्रथमस्थिति आपणा उदय काल प्रमाणनी होय. ते बेहु टाली ने तथा बाकी उंगणीश प्रकृति जेनो उदय नथी, तेनी प्रथम स्थिति आवली मात्र होय. तिहां पोताना उदयकालना प्रमाणनुं अल्पबहुत्व कहीयें बैयें. त्रण वेद मध्यें स्त्रीवेद अने नपुंसकवेदनो उदय काल थोडो होय; अने स्वस्थानमां परस्पर तुल्य होय, तेथी पुरुषवेदनो उदयकाल संख्यातगुणो जाणवो. तेथी संज्वलना क्रोधनो उदयकाल विशेषाधिक जाणवो. तेथी संज्वलना माननो उदयकाल विशेषाधिक, तेथी संज्वली मायानो उदयकाल विशेषाधिक, तेथी संज्वलना लोननो उदयकाल, विशेषाधिक. तिहां संज्वलनक्रोधोदयें करी उपशमश्रेणी आरंने, तेने ज्यां लगें अप्रत्याख्यानीयो अने प्रत्याख्यानीयो, ए बे क्रोध उपशमे नहीं, त्यां लगें संज्वलना क्रोधनो उदय होय. एमज संज्वलनमानोदयें जे श्रेणी आरंने तेने ज्यां लगें अप्र

त्याख्यानी अने प्रत्याख्यानी मान, उपशमे नहीं, त्यां लगें संज्वलनमाननो उदय होय. एमज संज्वलन मायाना उदयें उपशमश्रेणी पडिवजनारने ज्यां सुधी अप्रत्याख्यानी अने प्रत्याख्यानी माया उपशमे नहीं, त्यां सुधी संज्वलन मायानो उदय होय. एमज संज्वलनलोनोदयें उपशमश्रेणी पडिवजनारने अप्रत्याख्यानी तथा प्रत्याख्यानी ए बेहु लोन, ज्यां सुधी उपशमे नहीं त्यां सुधी बादर संज्वलना लोननो उदय होय. एम पोत पोताना उदय कालनी अपेक्षायें तेना उदयें प्रवर्त्ततो श्रेणी आरंने, ते जे कषाय तथा जे वेदना उदयें प्रवर्त्ततो श्रेणी आरंने, ते कषाय तथा ते वेदनो उदयकाल थाकतो हुंतो तेनी तेटला कालनी तेवडी प्रथमस्थिति होय. बीजा सर्वनी आवलिमात्र प्रथमस्थिति होय. अहींआं जेटले कालें स्थिति खंमनो घात करे, तथा बीजो जेटला कालनो अन्यस्थितिबंध करे, तेटला कालें अंतरकरण पण करे, ए त्रणे साथें एककालें मांमे अने ए साथेंज पूर्ण करे, पण तेनो काल प्रथम स्थितिथकी असंख्यातगुणो अधिक जाणवो.

हवे अंतरकरणना दलनो प्रक्षेपविधि लखीयें बैयें. जे प्रकृतिनो तिहां बंध अने उदय, ए बेहु ठे, ते प्रकृतिनां अंतर करणसत्कदल कांइएक प्रथमस्थिति मध्यें नेलीयें अने कांइएक बीजी स्थितिमध्यें नेलीयें, जेम पुरुषवेदने उदयें श्रेणी आरंने, तेने पुरुषवेदनो बंध होय. तथा उदय तो ठेज तेथी पुरुषवेदना अंतरकरणदल बेहु स्थितिमध्यें नेलीयें तथा जे प्रकृतिनो उदय ठे, पण बंध नथी तेना अंतरकरणनुंदल प्रथम स्थितिमध्येंज नेलीयें, जेम स्त्रीवेदनो तिहां उदय ठे. पण बंध नथी तेणे स्त्रीवेदोदयें जे श्रेणी पडिवजे ते अंतरकरणसत्कदल आपणी प्रथमस्थितिमध्येंज नेले, तथा जे प्रकृतिनो तिहां उदय नथी अने बंध ठे, तेनां अंतरकरणदल, बीजी स्थितिमध्यें नेले, पण प्रथमस्थितिमध्यें न नेले. जेम संज्वलनक्रोधने उदयें श्रेणी पडिवजे, ते शेष त्रण संज्वलनना कषायज बांधे ठे ते तेनां अंतरकरण दल बीजी स्थितिमध्यें नेले तथा जे प्रकृतिनो बंध तथा उदय, ए बेहु नथी तेनां अंतकरण दल, पर प्रकृतिमध्यें नेले, जेम बीजा अप्रत्याख्यानीआ अने त्रीजा प्रत्याख्यानीआ कषायनां. अंतरकरण दल संज्वलन परप्रकृति ठे तेमध्यें नेले. अहींआं घणी वात लखवानी ठे परंतु ग्रंथ वधवाना नयथी नथी लख्युं पण जेने विशेष जाणवानी इच्छा होय, तेने कर्मप्रकृतिनी वृत्ति जोवी. एम अंतरकरण करी पठी पहेलो नपुंसक वेद उपशमावे, ते पहेले समयें थोडुं दल उपशमावे, बीजे समयें तेथी असंख्यातगुणुं, एम समय

समयने विषे असंख्यातगुणुं चढतुं चढतुं उपशमावतां बेहले समयें सर्व उपशांत होय. तिहां प्रथम समयथी मांडीने द्विचरम समय लगें उपशमाव्यां जे दल, ते थकी असंख्यातगुणुं दल, परप्रकृतिमध्यें क्षेपवे, अने बेहले समयें जे परप्रकृति मध्यें क्षेपवे, तेथकी असंख्यातगुणुं उपशमावे, एम नपुंसकवेद उपशमावे थके पूर्वेली अनंतानुबंधी चार तथा दर्शनत्रिक मली सात सहित आठ मोहनीयनी प्रकृति उपशांत होय, तेवार पछी उक्तप्रकारें अंतर मुहूर्त्त पर्यंत स्त्रीवेद उपश मावे, ते वार पछी हास्यादिक छ प्रकृति अंतर मुहूर्त्तें उपशमावे, तेवारें शरवाले मोहनीयनी पंदर प्रकृति उपशांत होय. ते समयें पुरुषवेदना बंध, उदय अने उ दीरणानो विछेद थाय अने तेनी प्रथमस्थितिनो पण विछेद थाय. तिहां पुरुष वे दनी प्रथमस्थिति बे आवली शेष छते, पूर्वोक्त आगाल न थाय, तेवारें मार्गदल विशे षदल यथा जणी तिहां हास्यादिक छ प्रकृतिनां दल पुरुष वेदमां प्रक्षेप थाय नहीं. तेवारें ते हास्यादिक छनुं दल, संज्वलनाक्रोधादिकमध्यें नेलीयें, जे जणी कम्मपय डीमध्यें कह्युं छे के, बे आवलि प्रथमस्थितिनी शेष होय, तेवारें वेदपतद्गृह न थाय. एम हास्यादिक छ प्रकृति उपशमाव्या पछी एक समय ऊणी बे आवलीयें सर्व पुरुषवेद उपशमे, ते पण प्रथम समय सर्वस्तोक तेथी बीजे समयें असंख्या तगुणुं उपशमावे, तेथकी त्रीजे समयें असंख्यातगुणुं उपशमावे. एम समय सम य दीठ असंख्यातगुणुं चढतुं दल उपशमावे. एम यावत् समयें ऊणी बे आवलि का होय, तिहां सुधी कहेवुं अने केटलुं एक दल परप्रकृतिमध्यें यथाप्रवृत्त संक्र में करी संक्रमावे, पण प्रथम समयथी बीजे समयें विशेष हीन संक्रमावे. एम स मय समय विशेष हीन हीन संक्रमावतो आवलिकाना चरमसमय लगें जाय. ए रीतें पुरुषवेद उपशांत थये थके मोहनीयनी शोल प्रकृतिनुं उपशांतत्व थाय. तेवार पछी जे समयें हास्यादिक छ प्रकृति उपशमे, ते समयथी पुरुषवेदनी प्रथम स्थिति क्षीण थइ. तदनंतर अप्रत्याख्यानीउ क्रोध अने प्रत्याख्यानीउ क्रोध तथा संज्वलनक्रोध, ए त्रणे क्रोधने सार्थेज उपशमाववा मांफे, तेने पूर्वेली पेरें उपश मावतां जेवारें संज्वलनक्रोधनी प्रथमस्थिति एक समय ऊणी त्रण आवली शेष रहे, तेवारें अप्रत्याख्यानीआ अने प्रत्याख्यानीआ, ए बेहु क्रोधनुं दल संज्वलना क्रोधने विषे न प्रक्षेपे पण संज्वलना मानादिकमध्यें नेले, जे जणी त्रण आव लि शेप, संज्वलनो क्रोध रह्यो थको तेमध्यें कोइ प्रकृतिनां दल पतद्गृह न थाय, एटले तेमध्यें कोइ एक पण प्रकृतिनुं दल संक्रमाव्युं न जाय अने तेनी बे आव

लि शेष रहे, तेवारें तिहां आगाल विछेद थाय अने एक आवलीशेष रहे तेवा रें संज्वलनाक्रोधनो बंध, उदय, उदीरणा विछेद थाय अने अप्रत्याख्यानी तथा प्रत्याख्यानी क्रोध उपशांत होय एटले अढार प्रकृति उपशांत थाय. तेवारें संज्व लन क्रोधनी प्रथमस्थितिनी एक आवलिकानुं दल अने बे आवली एक समय ऊणी अहींआं बांध्युं जे उपरली स्थितिनुं दल, तेविना बाकी सर्व उपशांत थयुं छे. ते पछी जे संज्वलन क्रोधनुं प्रथम स्थितिनुं एकावलिका दल ते संज्वलन मा नमध्यें स्तिबुकसंक्रमें करी संक्रमावे अने समय ऊणी बे आवलिकाना बंधनुं उ परली स्थितिनुं दल, ते पुरुषवेद उपशमनाधिकारना प्रस्तावें जे रीतें उपाय कह्यो छे, ते रीतें उपशमावे तथा पर प्रकृतिमध्यें संक्रमावे. एम समय ऊणी बे आव लीयें संज्वलन क्रोध उपरली स्थितिनुं तेने उपशमावे, एटले मोहनीयनी ठगणीश प्रकृति उपशांत थइ. हवे जेवारें संज्वलनाक्रोधनो बंध, उदय, उदीरणा विछेद थयो, ते समयथी मांमीने संज्वलना माननी बीजी स्थितिमध्येंथी दल आकर्षीने तेने प्रथमस्थितियें करी वेदे, तिहां उदय समयने विषे स्तोंक प्रक्षेपे छे अने ते थकी बीजा समयने विषे असंख्यातगुणो प्रक्षेपे. एम समय, समय असंख्यातगु णो चढतो चढतो प्रक्षेपतां यावत् प्रथम स्थितिना चरम समय पर्यंत लीजीयें. प्रथम स्थितिकरणना पहेला समयथी मांमीने अप्रत्याख्यानावरण तथा प्रत्याख्या नावरण अने संज्वलनमान, ए त्रणे मानने साथेंज उपशमाववा मांमे, ते तेमज जेवारें संज्वलना माननी प्रथमस्थिति समयोन त्रण आवली शेष रहे, तेवारें पूर्वें कह्यो ते प्रकारें संज्वलन मानने विषे परप्रकृतिनुं पतद्ग्रह न थाय, तेवारें प्रत्याख्यानीयादिक माननुं दल संज्वलननी मायामध्यें संक्रमावे. एम क्रोधनी पेरें माननी उपशमनानो विधि जाणवो. ए अप्रत्याख्यानी, प्रत्याख्यानी मान उप शमावे, तेवारें मोहनीयनी एकवीश प्रकृतिनो उपशम थयो. ते समय संज्वलनमान नो बंध, उदय, उदीरणा विछेद थाय. तेवार पछी एक आवलिकायें संज्वलन क्रोधनी पेरें संज्वलन मानने उक्तप्रकारें उपशमावे. तेवारें बावीश प्रकृति उपशमी. तथा जे समयें संज्वलन माननो बंध, उदय, उदीरणा विछेद होय, तेथी आगले समयथी मांमीने संज्वलन मायानी बीजी स्थितिमध्येंथी दल आकर्षीने पूर्वें कह्यो, ते प्रका रें प्रथमस्थितिगत करे करीने वेदे, ते समयथीज मांमीने त्रणे मायाने उपशमाववा मांमे ते पण माननी पेरें एक आवली हुंते संज्वलनी मायानां बंधोदय, उदीरणा विछेद थाय, ते समयें अप्रत्याख्यानी प्रत्याख्यानी माया उपशांत थाय, तेवारें

मोहनीयनी चोवीश प्रकृतिनो उपशांत थाय. ते समयें संज्वलन मायानी प्रथम स्थितिगत एकावलिकाने तथा समयोन आवलिकाद्विकें बांधेलुं जे उपरली स्थितिगत दलिक तेने मूकिने शेष अन्य सर्व उपशांत थाय छे. ते पछी ते प्रथम स्थितिगत एकावलिकाने स्तिबुक संक्रमें करीने संज्वलन लोनने विषे संक्रमावे छे अने समयोन आवलिकाद्विकें बांधेला दलिकने पुरुषवेदमां कहेला उक्तप्रकारें करी उपशमावे छे तथा संक्रमावे छे. ते पछी समयोन बे आवलिकायें संज्वलन माया उपशांत थाय. तेवारें मोहनीयनी पच्चीश प्रकृति उपशांत थइ. जेवारें संज्वलनी मायानो बंधादिक विच्छेद होय, तेथी आगले समयें संज्वलन लोननी बीजी स्थितिमांहेथी दल आकर्षीने प्रथम स्थिति रचे, ते प्रथम स्थिति लोनवेदनाद्धाना त्रण विनाग द्वय प्रमाण करे करीने वेदे. तिहां प्रथम त्रिनागनुं नाम, अश्वकर्णकरणाद्धा, बीजा त्रिनागनुं नाम, किट्टिकरणाद्धा तिहां प्रथम अश्वकरणाद्धा. त्रिनागें वर्त्ततो पूर्वस्पर्द्धकमध्येंथी दल लेइने अपूर्वस्पर्द्धक करे. अहींआं स्पर्द्धक एटले शुं? तोके जीव अनंतानंत कर्म परमाणुयें निष्पन्न स्कंध तेने कर्मपणे ग्रहे छे. तिहां एकेक कर्मस्कंधमध्यें जे सर्व जघन्य रस छे ते पण केवलीना ज्ञानरूप शस्त्रें छेदातो, छेदातो पण सर्व जीवथकी अनंतगुण रसविनाग प्रत्यें आपे छे. तथा एवां जे सरखां सरखां जघन्य रसनां कर्मस्कंधदल तेनो समुदाय, ते वर्गणा कहीयें. तेथी एक रस विनागें चढता कर्मस्कंधनी बीजी वर्गणा, तेथी बे रस अविनागें चढता कर्मस्कंधनी त्रीजी वर्गणा, एम एकेका रसविनागें चढती चढती वर्गणा करतां अनव्यथी अनंतगुणी अने सिद्धने अनंतमे नाग प्रमाण वर्गणानो समुदाय, तेनुं नाम स्पर्द्धक कहीयें. ते स्पर्द्धकनी उपरली वर्गणाना रस विनागथी एक रसविनागें अधिक, तथा बेहु रसविनागें अधिक रसविनाग सहित एम यावत् सर्वजीवथी अनंतगुण पर्यंतथी एक रसविनागें हीन रसोपेत कर्मस्कंध दल न पामीयें, एटले सर्व जीवथी अनंतगुण रसविनागें अधिक रस सहित जे कर्मस्कंधदल होय, एवा स्कंधनो समुदाय, ते बीजा स्पर्द्धकनी प्रथमवर्गणा जाणवी. तेथी एक रसविनागें अधिक कर्मस्कंधनो समुदाय,ते बीजी वर्गणा. एम एकेक रसविनागें चढती चढती अनव्यथी अनंतगुणी वर्गणा होय. तेना समुदायने बीजो स्पर्द्धक कहीयें, एमज वली सर्व जीवथी अनंतगुण रसविनागें अधिक नेलतां कर्मस्कंधना समुदायनी त्रीजा स्पर्द्धकनी प्रथमवर्गणा, एम ते पण पूर्वोक्त अनव्यानंतगुण अनंत वर्गणायें स्पर्द्धक होय. एवा अनंता स्पर्द्धक जीवें पूर्वे बांध्या छे ते नणी एने

पूर्वस्पर्द्धक कहीयें. ते मध्येंथी दल लेइने ते दलने प्रकर्ष विशुद्धिना वशथकी अत्यंत रस हीन करीने अपूर्वस्पर्द्धक करे, केमके, आ संसार मध्यें परिभ्रमण करता जीवें कोइवारें बंध आश्री एवा रसस्पर्द्धक नथी कस्या पण हमणाज विशुद्धिने वशें करे ले. ते नणी एने अपूर्वरसस्पर्द्धक कहीयें, ते अश्वकर्णकरणाद्धा वील्या पढी बीजो किट्टिकरणाद्धायें प्रवेश करे. तिहां पूर्वस्पर्द्धकथी बीजा अपूर्वस्पर्द्धकथी दल लेइने तेना रसनी प्रतिसमयें अनंती किट्टि करे, किट्टि कहेतां जे पूर्व स्पर्द्धकथी तथा अपूर्व स्पर्द्धकथकी वर्गणा लेइ लेइने तेने अनंतगुण रस हीनताने पमाडीने घणे आंतरे आंतरे थापवुं. जेम असत्कल्पनायें जेना एकशो रसविनाग ले, अथवा एकोत्तरशो, बीडोत्तरशो, हता तेना पांच, पंदर, पच्चीश, रसविनाग राखवा. तेने किट्टि कहीयें. ते किट्टिकरणाद्धाने लेहले समयें समकालें अप्रत्याख्यानीउ अने प्रत्याख्यानीउ, ए बे लोन उपशमे अने ते समयेंज संज्वलना लोननो पण बंधविछेद थाय. अने बादर संज्वलन लोनना उदय उदीरणानो व्यवछेद थाय. अने अनिवृत्तिबादर गुणठाणानो पण व्यवछेद थाय. एम नवमे गुणठाणे सातथी मांमीने पच्चीश पर्यंत मोहनीयनी प्रकृति उपशांत पामे ॥इति॥ ७ए॥

हवे दशमे गुणठाणे जे प्रकृति उपशांत पामीयें, ते कहे ले.

सत्तावीसं सुहुमे, अठावीसं च मोह पयडीउ ॥
उवसंत वीअरागे, उवसंता हुंति नायवा ॥ ८० ॥

अर्थ- (सत्तावीसंसुहुमे के०) ते पढी अप्रत्याख्यान अने प्रत्याख्यान, ए बेहु लोननो समकालें उपशम थये थके सूक्ष्मसंपरायगुणठाणे सत्तावीश प्रकृति उपशांत थाय. (अठावीसंचमोहपयडीउ के०) तेवार पढी संज्वलनो लोन उपशमे थके अठावीश मोहनीयनी प्रकृति, (उवसंतवीअरागे के०) उपशांतवीतरागनामे अगीआरमे गुणठाणे (उवसंताहुंतिनायवा के०) उपशांत होय. ए रीतें ज्ञातव्या इति एवुं जाणवुं ॥ इत्यक्षरार्थः ॥ ८० ॥

एम नवमाने लेहले समयें अप्रत्याख्यानी अने प्रत्याख्यानी लोननी बे प्रकृति उपशमे थके सूक्ष्मसंपराय गुणठाणे सत्तावीश मोहनीयनी प्रकृति उपशांत पामीयें,ते सूक्ष्मसंपराय गुणठाणानो काल, अंतर मुहूर्त्त प्रमाण ले. तेने विषे पेगे थको जीव, संज्वलनलोननी उपरली स्थितिमध्येंथी केटली एक किट्टि आकर्षीने तेनी प्रथमस्थिति सूक्ष्मसंपराय अद्धा जेटली करीने वेदे. सूक्ष्मकिट्टि कस्युं जे दलिक अने

समय ऊणी बे आवलि बांध्युं जे दल, ते उपशमावे, चरमसमयें संज्वलनो लोन्न उपशांत होय. तेहीज समयें ज्ञानावरण पांच, अंतराय पांच, दर्शनावरणीय चार, उच्चैर्गोत्र अने यशःकीर्त्ति, ए शोल प्रकृतिनो बंध, व्यवच्छेद करे, तेवार पढी बीजे समयें उपशांत कषाय थाय. तिहां मोहनीयनी अठ्ठावीश प्रकृति उपशांत थाय. ते उपशांत कषायवंतथको जीव, जघन्यथी तो एक समय रहे अने उत्कृष्टो अंतरमुहूर्त्त पर्यंत रहे, उपरांत अवश्य पडे, ते तिहांथी पडवाना बे प्रकार बे. एक नवक्षयें पडे अने बीजो कालक्षयें पडे, तिहां जेनुं आयु पूर्ण थाय. तेवारें ते मनुष्यनवने क्षयें मरण पामीने अनुत्तरविमानें देवता थाय. तिहां प्रथमसमयेंज बंध संक्रमणादिक आठे करण तथा उदय प्रवर्त्तावे, ते पाधरो अगीआरमा गुणठाणाथी चोथे गुणठाणे आवे. वचला गुणठाणानो तेने स्पर्श थाय नहीं. तथा औपशमिक सम्यक्त्वथी पडीने ते समय वेदकसम्यक्दृष्टि थाय. तथा जे जीव, कालक्षयें अगीआरमा गुणठाणानो अंतरमुहूर्त्त काल पूर्ण नोगवीने आगल चढवाने अनावें तिहांथी पाठो पडे, ते तो जिहां जिहां बंध, उदय, उदीरणादिक प्रकृति व्यवच्छिन्न थइ होय, तेने तेने फरी तिहां आरंनतो जे रीतें चड्यो हतो, तेमज पडे. ते पडतो प्रमत्त थाय तथा कोइएक अविरतिपणाने पण पामे, कोइएक सास्वादन पामी मिथ्यात्वें पण जाय, ए श्रेणी उत्कृष्ट तो एक नवमध्यें बे वार करे, पण जे बे वार उपशमश्रेणी करे, ते नियमा तेहीज नवें क्षपकश्रेणी न करे अने एकवार उपशमश्रेणी करीने बीजी वार क्षपकश्रेणी करे तेनी ना नथी, ए रीतें उपशमश्रेणीनुं स्वरूप कह्युं ॥ इत्यर्थः॥ ए० ॥

॥ अथ क्षपकश्रेणीमाह ॥ हवे क्षपकश्रेणीनुं स्वरूप कहीयें बैयें.

पढम कसाय चउक्कं, इत्तो मिछत्त मीस सम्मत्तं ॥
अविरय सम्मे देसे, पमत्ति अपमत्ति खीयंति ॥ ए१ ॥

अर्थ- (पढमकसायचउक्कं के०) प्रथम तो अनंतानुबंधीआ चार कषाय हणे, विसंयोजना करे, (इत्तो के०) तेवार पढी (मिछत्तमीससम्मत्तं के०) मिथ्यात्वमोहनीय, मिश्रमोहनीय अने सम्यक्त्वमोहनीय, ए त्रणेनो समकालें क्षय करे ते (अविरयसम्मेदेसेपमत्तिअपमत्ति के०) अविरतिसम्यक्दृष्टि, देशविरति, प्रमत्त तथा अप्रमत्तगुणठाणे (खीयंति के०) क्षय करे, एटले सत्ताथी टाले.

क्षपकश्रेणीनो पडिवजनार पुरुष, आठ वर्षथी उपरनी उमरनो बतां वज्रऋषन्न

नाराचसंघयणी, शुद्धध्यानवंत, अविरति, देशविरति, प्रमत्त, अप्रमत्त, संयतिमांहे लो कोइ पण होय. पण एटलुं विशेष जे, केवल अप्रमत्त संयत होय. तो पूर्व नो जाण होय अने शुक्लध्यानोपगत होय अने बीजा सर्व धर्मध्यानोपगत होय. एवो जीव शुनयोगें वर्त्ततो क्षपकश्रेणी आरंने ते प्रथम चार अनंतानुबंधीआ विसंयोजीने खपावे, तेनी विसंयोजनानो प्रकार, पूर्वें कह्यो बे, तेमज जाणवो. तेवार पढी त्रण दर्शनमोहनीय खपाववाने प्रवर्त्ते. तिहां यथाप्रवर्त्त्यादिक त्रण कर ण पूर्वें कह्यां, ते रीतेंज करे पण एटलुं विशेष जे अपूर्वकरणना प्रथम समयथीज अनुदित मिथ्यात्व तथा मिश्रनां दल ते उदयवंत सम्यक्त्व मोहनीयमध्यें गुण सं क्रमें करी संक्रमावे अने ते बेहुनो उच्छेद एटले संक्रम पण करवा मांमे. तिहां पहेलो तो महोटो स्थितिखंम उवेले, तेथी बीजो स्थितिखंम विशेषहीन उवेले, तेथी वली त्रीजो स्थितिखंम विशेषहीन उवेले, एम करतां करतां अपूर्वकरणना बेहला समय पर्यंत कहेवुं. तिहां अपूर्वकरणना प्रथम समय जे स्थितिनो सत्तावं त होय तेथकी असंख्यात गुणहीन स्थितिनो सत्तावंत थाय.

तेवार पढी आगले समयें अनिवृत्तिकरणमध्यें प्रवेश करे, तिहां पण स्थिति घातादिक सर्वने तेहीज प्रकारें करे बे. अनिवृत्ति करणना प्रथम समयें दर्शनत्रि कनी पण देशोपशमना, निद्धत्ति, निकाचनानो व्यवछेद करे. तिहां प्रथम सम यथी दर्शनमोहनीयत्रिकनी स्थितिसत्तानो घात करतो, करतो सहस्रगमे स्थि तिखंमें गये थके बाकी जेवारें असंज्ञी पंचेंद्रियनी स्थितिसत्ता समान स्थिति रहे. तेवार पढी वली पण तेटलांज स्थितिखंमनां सहस्र गये थके चौरिंद्रि यनी स्थितिसमानसत्ता रहे. वली पण तेटलांज स्थितिखंमनां सहस्र गये थके तेंद्रियनी स्थिति समानसत्ता रहे. वली तेटलांज स्थितिखंमनां सहस्र गये थके बेंद्रियनी स्थिति समानसत्ता रहे, वली पण तेटलां स्थितिखंम नां सहस्र गये थके पल्योपमना असंख्यातमा नाग प्रमाण दर्शन त्रिकनी स्थितिनी सत्ता रहे, तेवार पढी ते त्रणे दर्शनमोहनीयनो पण प्रत्येकें एकेक संख्यातमो नाग मूकीने बाकीनी स्थिति सर्व खपावे, तेवार पढी वली पण बाकी मूकेला संख्यातमा नागनो एक संख्यातमो नाग मूकीने बाकी सर्व स्थितिनो घात करे. ए रीतें बाकी रहेला नागनो संख्यातमो नाग मूकी, मूकी, शेष सर्व स्थिति नो घात करतो, करतो स्थितिघातनां घणां सहस्र अतिक्रमे, तेवार पढी मिथ्यात्वना असंख्यात नागने खंमे अने मिश्र तथा सम्यक्त्वना तो संख्यात नागने खंमे, ते

पछी एम घणा स्थितिखंम गये थके जेवारें मिथ्यात्वनुं दल आवलिकामात्र रह्युं अने मिश्र तथा सम्यक्त्व ए बेहुनुं दल तो पल्योपमना असंख्यातमा जाग प्रमाण रहे. हवे ए स्थितिखंमना दलने खंमवानो प्रत्येक विधि कहीयें छयें. तिहां खंमन करेलां एवां मिथ्यात्वनां दल तेने मिश्र, तथा सम्यक्त्व, ए बेहुमध्यें प्रेक्षेप करे अने मिश्रनां दलमात्र सम्यक्त्व मध्येंज प्रेक्षेपे अने सम्यक्त्वनां दल सम्यक्त्वनी पोतानी हेठली स्थितिमध्यें प्रक्षेपे, ते पछी जे मिथ्यात्व दलिक आवलिका मात्र रह्युं, तेपण स्तिबुकसंक्रमें करी सम्यक्त्वमध्यें संक्रमावे, एटले मिथ्यात्व क्षीण थाय, तेवार पछी मिश्रना तथा सम्यक्त्वना असंख्याता जाग करी तेने खंमें शेष एक जाग राखे. वली तेना पण असंख्याता जाग करे, तेमध्येंथी एक जाग राखी बाकी सर्वने खंमे, एम करतां करतां केटला एक स्थितिखंम गये थके, मिश्रमोहनीय एक आवलिकामात्र रहे, तेवारें सम्यक्त्वमोहनीयनी स्थितिसत्ता, आठ वर्ष प्रमाणनी रहे, ते वेलायें निश्चयनयने मतें सर्व विघ्न टल्यां माटे एने दर्शनमोहनीयनो क्षपक कहीयें. तेवार पछी वली सम्यक्त्वना स्थितिखंमने अंतरमुहूर्त्त प्रमाण उकेरे, तेनुं दल, उदयसमयथी आरंजीने सघली स्थिति सत्ता, समय समय संक्रमावे छे. तेमध्यें पण उदय समय सर्वस्तोक संक्रमावे. तेथकी बीजे समय असंख्यातगुणो, तेथकी त्रीजे समय असंख्यातगुणो, एम आगले आगले समयें असंख्यातगुणो संक्रमावतां, संक्रमावतां ते गुणश्रेणीना माथा लगें जाणवुं. ते पछी उपर तो विशेषहीन विशेषहीन ज्यां लगें स्थितिनो छेहलो समय होय. त्यां लगें संक्रमावे. एम अंतर मुहूर्त्त, अंतर मुहूर्त्त प्रमाण अनेक स्थितिखंमोने उकेरे छे.अने निक्षेपण करे छे. ते स्थितिदलमांहे संक्रमावतो द्विचरम स्थितिखंम लगें जाय, ते द्विचरम स्थितिखंमथकी छेहलो खंम असंख्यातगुणो करे. ते छेहलो स्थितिखंम, जेवारें उकेरे, एवाने क्षपककृतकरण एवुं नाम कहीयें. ए कृतकरणाद्धायें वर्त्ततो एवो जीव, कोइ एकें पूर्वें आयु बांध्युं होय तो ते आयुक्षयें मरण पामीने चारे गतिमांहेली जावे ते गतिमध्यें अवतरे, अने लेश्याने विषे पण पूर्वें तो शुक्ल लेश्यामां हतो अने सांप्रत तो अन्यतम लेश्या मध्यें जाय छे. ते माटें सप्तक क्षयनो मांमनार प्रस्थापक थइने मनुष्य, निष्ठापक छतो चारगतिमांहेलो जीव कह्यो छे, तथा जे पूर्वे बद्धायु थको क्षपकश्रेणी मांमे, अने अनंतानुबंधीआ चार खपावीने पछी मरण पामवाना संजव थकी जो श्रेणी थकी विरमे तो पण अनंतानुबंधीआनुं बीजजूत मिथ्यात्व छे, तेनो विनाश थयो नथी तेजणी वली

पण कदाचित् अनंतानुबंधीआ सजीवन करतां जहे. पण जेणे मिथ्यात्व क्षय कर्युं, ते मिथ्यात्वना विनाशथी वली अनंतानुबंधीआ न बांधे, जे जणी बीज नथी तो अंकूर केम होय? अने ए सात प्रकृति क्षय करीने जो चडते परिणामें वर्त्ततो मरण पामे. तो अवश्य देवगतिमध्येंज उपजे अने जो पतितपरिणामें थाय, तो नानाप्रकारना परिणामना संजवथकी जेवा परिणामनी विशुद्धियें प्रवर्त्ततो मरण पामे, तेवी गतिमध्यें अवतरे अने जेणे पूर्वें आयु बाध्युं ले, एवो जीव, जो ते वखत तिहां काल न करे तो पण सात प्रकृतिने क्षयें निश्चयें ते तेवाज परिणामें रहे, परंतु आगल बीजी चारित्रमोहनीयनी प्रकृति खपाववानो उद्यम न करे. तथा क्षीणसप्तक पूर्वबद्धायु जणी ते जवें मुक्ति न पामे, तो पण त्रीजे जवें अथवा चोथे जवें अवश्य मुक्ति पामे, केमके जेणे देवायु अथवा नरकायु बांध्युं होय, तो ते देव तथा नारकीनो जव करी तिहांथी मनुष्य थइने त्रीजे जवें मोक्ष जाय. अने जे मनुष्य तथा तिर्यंचायु बांध्या पठी सप्तकक्षय करे, ते नियमा असंख्य वर्षायु बांधे पण संख्यातवर्षायु बांध्या पठी सप्तक क्षीण न करे, तेवारें ते युगली या मध्यें जाय. तिहां तो जवप्रत्ययेंज नियमा देवायुनोज बंध होय, तेथी ते देव गति मध्यें जाय अने देवगतिमध्यें तो जवप्रत्ययें सम्यक्त्व उतां मनुष्यायुनोज बंध होय. तेथी ते देवता चवी मनुष्य थाय. तिहां वलतुं आयु न बांधे, केवल चारित्र लइ शेष एकवीश मोहनीयनी प्रकृति खपावी मुक्ति पामे, ते अपेक्षायें चोथे जवें मोक्ष जाय, तिहां पंचसंग्रहनी साख लखीयें ठैयें "तइय चउत्थे तम्मिव, जवम्मि सिज्झंति दंसणे खीणे ॥ जं देव निरअसंखा, उचरम देहेसुते हुंति ॥" ए सातनो क्षय अविरति गुणगणे होय. ए सूत्रनो अर्थ ले. अन्यथा तो अविरतिसम्यक्दृष्टि, देशविरति, प्रमत्त, अप्रमत्त साधु, ए चार मांहेलुं जावे ते सप्तक क्षीण करे ले, तथा जो अबद्धायु थको क्षपकश्रेणी आरंजे तेवारें ए सप्तकनो क्षय करे, तो ते नियमथी अनुपरत परिणामवंत थको चढते परिणामें आगले चारित्र मोहनीयनी प्रकृति खपाववाने अर्थें उद्यम करे. एम जाष्यमध्यें कह्युं ले. "इयरो अणुवर उच्चिय, सयलं सेढिं समाणेइ" हवे चारित्र मोहनीयनी शेष एकवीश प्रकृति खपाववाने अर्थें उद्यम करतो एवो पुरुष, यथाप्रवृत्त्यादिक त्रण करण करे. तिहां करणनुं स्वरूप पूर्वली पेरेंज जाणवुं. अहीं अप्रमत्त गुणगणे यथाप्रवृत्तिकरण, तथा अपूर्वकरणगुणगणे अपूर्वकरण अने अनिवृत्तिबादर गुणगणे अनिवृत्तिकरण करे. तिहां अपूर्वकरणे स्थितिघातादिक करी अप्रत्याख्यानीआ

चार अने प्रत्याख्यानीआ चार, एवं आठ कषाय एवी रीतें खपावे, के जेवी रीतें अनिवृत्तिकरणाद्धाने प्रथम समयेंज ते कषायाष्टकनी पल्योपमना असंख्यातमा नाग प्रमाण मात्रस्थिति शेष थाय ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ८१ ॥

तेवार पछी अनिवृत्ति बादर गुणठाणे शुं हणे? ते कहे छे.

अनिअट्टि बायरेथी, ण गिद्धि तिग निरय तिरि अ
नामाउ ॥ संखिज्ज इमे सेसे, तप्पाउगाउ खीयंति ॥ ८२ ॥

अर्थ-(अनिअट्टिबायरे के०) अनिवृत्तिबादर गुणठाणाना प्रथम समयें आठ कषाय पल्योपमना असंख्यात नाग प्रमाण स्थितिना थाय. पछी (थीणगिद्धितिग के०) थीणद्धित्रिक, नरकद्विक, तिर्यंचद्विक, एकेंद्रियजाति, बेंद्रियजाति, तेंद्रियजाति, चौरिंद्रियजाति, स्थावर, आतप, उद्योत, सूक्ष्म, साधारण, ए (निरयतिरिअनामाउतप्पाउगाउ के०) नरक अने तिर्यंच ए बे गति तत्प्रायोग्य नामकर्मनी तेर प्रकृति तथा पूर्वोक्त थीणद्धित्रिक ते दर्शनावरणीयनी प्रकृति एवं शोल प्रकृतिने उद्वलनासंक्रमें करीने प्रतिसमय उवेली उवेली जेवारें पल्योपमना असंख्यातमा नाग प्रमाणमात्र स्थिति शेष रहे, तेवारें ते शोल प्रकृतिने प्रतिसमय बंधाती प्रकृतिमध्यें गुणसंक्रमें करी संक्रमावी संक्रमावीने क्षीण करतो करतो अनिवृत्तिबादर गुणठाणाना (संखिज्जइमेसेसे के०) संख्याता नाग गये थके अने शेष एक नाग थाकते थके ते सघली प्रकृति, (खीयंति के०) क्षीण करे. अहींआं अप्रत्याख्यानीया तथा प्रत्याख्यानीया आठ कषाय पूर्वें खपाववा मांड्या हता पण हजी क्षीण थया नथी तेना वचमां पहेला वेलाज ए शोल प्रकृतिनो क्षय कस्यो अने कोइएक आचार्य वली एवुं कहे छे के, ए शोल प्रकृति खपावतां वचालें आठ कषाय खपावीने पछी ए शोल प्रकृति खपावे ॥इत्यर्थः॥ ८२॥

इत्तो हणइ कसाय, छगंपि पछा नपुंसगं इछी ॥
तो नोकसायछक्कं, बुहइ संजलण कोहम्मि ॥८३॥
पुरिसं कोहे कोहं, माणे माणं च बुहइ मायाए ॥
मायंच बुहइ लोहे, लोहं सुहुमंपि तो हणइ ॥८४॥

अर्थ-(इत्तोहणइकसायअछगंपि के०) तेवार पछी वली प्रत्याख्यानीआ चार अने अप्रत्याख्यानीआ चार, ए आठ कषायने निःशेष पणे अंतरमुहूर्त्त मात्रकालें

करी तेहणे (पन्नानपुंसगंइत्थी के०) पडी नपुंसकवेद खपावे, पडी स्त्रीवेद खपावे. (तो नोकसायछक्कं के०) तेवार पडी हास्यादिक छ नोकषायनुं दल क्षेपवतां रह्युं, ते (संजलणकोहम्मि के०) संज्वलन क्रोधने विषे (बुहइ के०) क्षेपवे, संक्रमावे ॥इति समु० ॥७१॥ (पुरिसं के०) पुरुषवेदना बंधादिक विच्छेद थया पडी आवलिकाशेष प्रत्यें करणविशेषें करी संज्वलन (कोहे के०) क्रोधमध्यें गुण संक्रमें करीने संक्रमावे, अने (कोहं के०) संज्वलनक्रोधना बंधादिक विच्छेद थये थके आवलिकाशेषप्रत्यें करण विशेषें करी संज्वलन (माणे के०) मानमध्यें गुणसंक्रमें करी संक्रमावे तथा (माणंच के०) संज्वलन मानना बंधादिक विच्छेद थये थके, आवलिकाशेष प्रत्यें करणविशेषें करी (मायाए के०) संज्वलन मायामध्यें (बुहइ के०) संक्रमावे, नाखे, एटले गुणसंक्रमें करी संक्रमावे तथा (मायंच के०) संज्वलन मायाना बंधादिक विच्छेद थया पडी आवलिका शेषप्रत्यें करण विशेषें करी (लोहे के ०) संज्वलनलोभमध्यें (बुहइ के०) गुणसंक्रमें करी संक्रमावे. तेवार पडी (लोहं के०) संज्वलन लोभना बंधादिक विच्छेद थया पडी आवलिका शेषप्रत्यें करण विशेषें करी हणे, (तो के०) तेवार पडी (सुहुमंपि के०) अत्यंत सूक्ष्म थाकतो एवो सत्ता रूप जे लोभ तेने पण (हणइ के०) हणे विनाशे सत्ताथी टाले, एम सूक्ष्म संपरायने अंतें मोहनीयकर्मने मूलथी टाली नाखे ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ७२ ॥

एटले आठ कषाय खपावीने अथवा मतांतरें शोल प्रकृति खपावीने पडी अंतर मुहूर्त्तें नव नोकषाय तथा चार संज्वलनानुं अंतरकरण करे, ते करीने प्रथम नपुंसकवेदनां उपरली स्थितिवाला दलिक उवेलवानो विधि करी खपाववा मांमे ते अंतर मुहूर्त्त मध्यें उवेलतां उवेलतां पल्योपमना असंख्यातमा भाग प्रमाण स्थिति शेष रहे, तेवारें बंधाती प्रकृतिमध्यें तेनुं दल गुणसंक्रमें करी संक्रमावे एम करतां अंतर मुहूर्त्त कालें ते सघलुं क्षीण थाय.

हवे ते नपुंसकवेदनी हेठली स्थितिनुं दल, ते जो नपुंसकवेदने उदयें श्रेणि मांमी होय,तो वेदतां वेदतां खपावे अन्यथा तो आवलिकामात्र ते दल रह्युं होय, तेने उदयवती वेद्यमान प्रकृतिने विषे स्तिबुकसंक्रमें करी संक्रमावे. एम नपुंसकवेद क्षय कस्या पडी अंतर मुहूर्त्तें स्त्रीवेद पण एज रीतें खपावे, तेवार पडी हास्यादिक छए प्रकृतिने साथेंज समकालें खपाववा मांमे. पडी ते नोकषायनां उपरली स्थितिनां दल पुरुष वेदने विषे पतद्ग्रह न थाय, माटें तेने पुरुषवेदमध्यें न संक्रमावे किंतु ? संज्वलनक्रोधमध्यें पूर्वें कह्युं ते रीतें तेने संक्रमावे. एम संक्रमावतां अंतर

मुहूर्त्त मात्रमां ते नोकषायछक्क सर्व क्षीण थाय. ते समयेंज पुरुष वेदनो बंध, उदय अने उदीरणानो विछेद थाय अने एक समय उणी बे आवलियें बाध्युं जे पुरुष वेदनुं दल, ते मूकीने बाकी सघलो क्षीण थयो, ते समयें अवेदक थयो. ए प्रकारें जे पुरुषवेदोदयें श्रेणी आरंभे, तेनो ए विधि कह्यो.

अने जो नपुंसकवेदोदयें श्रेणी आरंभे, तो ते पहेलोज स्त्रीवेद अने नपुंसक वेद ए बेहुनो समकालें क्षय करे, ते क्षयने समयेंज पुरुषवेदनो बंधादिक, विछेद थाय. तेवार पछी अवेदक थको पुरुषवेद अने हास्यादिकषट्क समकालें क्षय करे.

अने जो स्त्रीवेदोदयें श्रेणि पडिवजे, तो प्रथम नपुंसकवेद खपावे. पछी स्त्री वेद खपावे, ते क्षयने समयेंज पुरुषवेदनो बंध, उदय अने उदीरणानो विछेद थाय. तेवार पछी पुरुषवेद अने हास्यादि षट्कने समकालें क्षय करे.

हवे जे पुरुषवेदें श्रेणी आरंभे, ते आश्रयीनेंज कहे छे. क्रोध वेदतो पुरुषवेदी क्रोधना त्रण नाग करे. एक घोडाना काननी पेरें जे न्हाना न्हाना कर्मना पुद्गल तेना न्हाना न्हाना खंम करे, जे थकी काल विशेषें तेने अश्वकर्णकरणाद्धा कहीयें. ते रस सहित कर्मनां दलिकने कूटी कूटीने किट्टिनी पेरें अत्यंत सूक्ष्म करे, तेने बीजो किट्टिकरणाद्धा कीहयें. ते किट्टिकरणाद्धा कस्या पछी ते किट्टि करी तेने वेदे, ते त्रीजो किट्टिवेदनाद्धा कहीयें. तिहां अश्वकर्णकरणाद्धायें वर्त्ततो थको समय समय प्रत्यें अनंता अपूर्व स्पर्द्धक संज्वलना चतुष्कना अंतरकरण थकी उपरली स्थितिने विषे करे, एटले संज्वलन चतुष्कना अंतरकरणनी उपरली स्थितिना प्रतिसमयें अनंता अपूर्व स्पर्द्धक करे, ते स्पर्द्धकनुं स्वरूप, पूर्वें कह्युं छे, तिहांथी जाणवुं. अने ए अश्वकर्णकरणाद्धायें वर्त्ततो पुरुषवेदने पण समय उणी बे आवलिकारूप कालें करी क्रोधनेविषे गुणसंक्रमें करी संक्रमावतो थको छेहले समयें सर्व संक्रमें करी संक्रमावे. ए प्रकारें अहींआं पुरुषवेद क्षीण थयो अने अश्वकर्णकरणाद्धा पण पूर्ण थई.

तदनंतर किट्टिकरणाद्धायें पेठो थको संज्वलन चतुष्कनी उपरली स्थितिगत दलिकनी किट्टि करे, ते किट्टि परमार्थें तो अनंती छे तथापि बाल समजाववाने अर्थें स्थूलनेदनी अपेक्षायें, असत्कल्पनायें एकेका कषायनी त्रण त्रण कल्पनायें कल्पीयें; तेवारें बार किट्टि होय. ए क्रोधें क्षपक श्रेणी पडिवजतांने जाणवुं.

अने जो मानोदयें श्रेणी पडिवजे, तो तेने उद्वलनाना विधियें करी, क्रोध खपावे थके शेष त्रण कषायनी पूर्वक्रमें करी नव किट्टि करे, जो मायाने उदयें श्रेणी

आरंभी होय तो क्रोध अने मान, ए बे उद्वलनाविधियें खपावे थके शेष बे कषायनी
ब किट्टि करे तथा जे लोजोदयें श्रेणी मांमे, ते क्रोध, मान, माया, ए त्रण उद्वल
नाविधियें उवेली खपावे शेष एक लोजनीज त्रण किट्टि करे. ए किट्टि करवानो
विधि कह्यो. ए किट्टिकरणाद्धा पूर्ण थये थके पछी किट्टिवेदनाद्धाने विषे पेठो थको
जे जीवें क्रोधें श्रेणी आरंभी छे. ते क्रोधनी बीजी स्थिति मध्यें रहेलुं प्रथमकि
ट्टिनुं दलिउं बीजी स्थितिमध्येंथी आकर्षीने प्रथम स्थितिगत करे अने वेदे, ते ज्यां
लगें समयाधिक एक आवलि शेष रहे त्यां लगें वेदे, तेवार पछी तेना अंतरसम
यमां उपरली बीजी स्थितिमध्यें रहेलुं बीजी किट्टिनुं दल, तेने आकर्षी प्रथमस्थि
तिगत करी वेदे, ते पण त्यां लगें वेदे, ज्यां लगें समयाधिक आवलिमात्र शेष रहे.
तेवार पछी वली उपरली स्थितिनी त्रीजी किट्टिनां दल आकर्षीने प्रथम स्थिति
गत करी वेदे. एम ए त्रणे किट्टिवेदनाद्धाने विषे उपरली स्थितिनुं दलिक तेने
गुणसंक्रमें करी प्रतिसमय असंख्येय गुणवृद्धि लक्षण संज्वलनमानने विषे प्रक्षे
पे छे. एम त्रीजी किट्टिवेदनाद्धाना चरमसमयने विषे संज्वलनक्रोधनो बंध, उदय
अने उदीरणानो साथेंज व्यवछेद थाय अने सत्तायें पण छेहली समयोन बे आ
वलियें बांध्युं दल रह्युं छे पण ते विना बीजुं नथी. सर्वने मानने विषे प्रक्षेप्युंछे.

तेनें आगले समयें माननी बीजी स्थिति मध्येंथी प्रथम किट्टिनुं दल, आकर्षी
प्रथम स्थितिगत करी अंतरमुहूर्त्त लगें वेदे, तिहां जे क्रोधनुं दल शेष रह्युं छे.
तेने समयोन बे आवलिकायें गुणसंक्रमें करी संक्रमावे अने चरमसमयें तो सर्व
संक्रमें करी संक्रमावे, एटले क्रोध क्षय थयो. एम माननी पहेली किट्टिनुं दल
प्रथम स्थितियें कर्युं छे तेने वेदतां वेदतां समयाधिक आवली शेष रहे, तेवार
पछी बीजा समयमां माननी उपरली स्थितिनी बीजी किट्टिनुं दल आकर्षी प्रथम
स्थितिगत करी एज रीतें वेदतां वेदतां समयाधिक आवलि शेष रहे, ते पछी अ
नंतरसमयमां माननी उपरली स्थितिनी त्रीजी किट्टिनुं दल आकर्षी तेने प्रथम
स्थितिगत करीने वेदे, ते त्यां लगें वेदे, ज्यां लगें समयाधिक आवलिमात्र शेष
रहे, तेवारें तेना चरमसमये माननो बंध, उदय अने उदीरणानो समकालें विछेद
थाय. अने सत्तायें पण समयोन बे आवलिनुं बांध्युं दल रहे, ते विना बीजो
सर्व मायाने विषे प्रक्षेप करी खपाव्यो छे माटे.

पछी मायानुं बीजी स्थितिगतनी प्रथम किट्टिनुं दल, तेने प्रथम स्थितिगत
करी अंतरमुहूर्त्त पर्यंत वेदे, तेमध्यें शेष माननुं दल जे रह्युं हतुं, तेने समयोन बे

आवलिकायें गुणसंक्रमें करी अंतरमुहूर्त्त लगें मायाने विषे संक्रमावे, बेहले स मयें तो सर्व संक्रमें करी संक्रमावे, एटले माननो क्षय थाय अने मायानो पण प्रथम किट्टिदल वेदतां वेदतां समयाधिक आवलिमात्र रहे, ते पढी अनंतर स मयें आगली बीजी किट्टिनां दलने प्रथमस्थितिगत करी वेदे, ते ज्यां सुधी सम याधिक आवलिकामात्र शेष रहे त्यां सुधी वेदे. ते पढी अनंतर समयने विषे बी जी स्थितिगत रहेलुं एवुं त्रीजी किट्टिनुं दलिक तेने आकर्षीने प्रथम स्थितिगत करीने वेदे एम पूर्वली पेरें सर्व मायानी किट्टिनां दल वेदतो वेदतो, बेहली किट्टिनां दल प्रथमस्थितिगत करी वेदतां जेवारें समयाधिक आवलिकामात्र शेष रहे, तेवारें मायानो बंध, उदय अने उदीरणा ए त्रणे साथेंज विच्छेद थाय, मात्र समयोन बे आवलिनुं बांध्युं दल सत्तायें रह्युं बे. बाकी सर्व संज्वलनलोभमध्यें क्षेपव्युं बे.

तेवार पढी सञ्ज्वलन लोभनी उपरली स्थितिनी प्रथम किट्टिनुं दल, आकर्षी प्रथम स्थितिगत करी, तेने अंतरमुहूर्त्तें वेदे. तिहां शेष रह्युं समयोन बे आवलि मात्र संज्वलन मायानुं दल, तेने अंतर मुहूर्त्त लगें गुणसंक्रमें करी लोभने विषे संक्रमावतो अंतर मुहूर्त्तने बेहले समयें सर्व संक्रमें करी संक्रमावे, तेवारें संज्व लन लोभनी प्रथम किट्टिनुं दल पण समयाधिक आवलिमात्र रहे तेवार पढी अनंतर समयें संज्वलन लोभनी उपरली बीजी स्थितिनी बीजी किट्टिनुं दल खें चीने प्रथम स्थितिगत करी वेदे, ते वेदतो, वेदतो आगली त्रीजी किट्टिनां दलने ग्रहण करीने तेनी सूक्ष्म सूक्ष्म किट्टि करे, ते पण त्यां लगें करे, ज्यां लगे बीजी संज्वलन लोभनी किट्टिनुं दल जे प्रथम स्थितिगत कर्युं बे तेनी समयाधिक आ वलिमात्र शेष रहे, त्यां लगें करे, ते समयेंज संज्वलन लोभनो बंध विच्छेद था य, तथा बादर कषायनो उदय अने उदीरणा पण विच्छेद थाय, अने अनिवृत्ति गुण स्थानकनो काल पण विच्छेद थाय. ए त्रणेनो साथेंज विच्छेद थाय.

तेने आगले समयें लोभनी सूक्ष्म किट्टिनुं दल उपरली बीजी स्थिति मध्येंथी आकर्षीने तेने प्रथम स्थितिगत करी वेदे, तेने सूक्ष्मसंपराय कहीयें. पूर्वें जे त्रीजी त्रीजी किट्टिनी शेष आवलिकानी बेहली किट्टि रही बे, ते सर्व वेदाती पर प्रकृतिमध्यें स्तिबुकसंक्रमें करी संक्रमावे, एटले लोभनी प्रथम किट्टिनी शेष आवलिका, ते बीजी किट्टिना दलमध्यें संक्रमावे, अने बीजी किट्टिनी शेष आ वलिका, त्रीजी किट्टिना दलमध्यें संक्रमावी वेदे.

हवे लोभनी सूक्ष्म किट्टिनुं दल अने पूर्वें समयोन बे आवलिनुं बांध्युं दल, तेने

प्रतिसमयें स्थितिघातादिकें करी वेदतो वेदतो त्यां लगें खपावे, ज्यां लगे सूक्ष्मसं
पराय अद्धाना संख्याता नाग जाय. अने एक नाग शेष रहे, त्यां लगें खपावे.
हवे शेष एक नाग रहे, तेवारें संज्वलन लोजने सर्वे अपवर्त्तनाकरणें अपव
र्त्तिने एटले अपवर्त्तना तेने कहीयें के जे कर्मनी स्थिति रसनुं घटाडवुं एटले सं
ज्वलन लोजनी स्थिति रस घटाडीने शेष सूक्ष्मसंपराय अद्धा जेटलो राखे, हजी
पण सूक्ष्मसंपराय अद्धा अंतर मुहूर्त्त प्रमाण रही ले, तेवारें मोहनीयना स्थिति
घातादिक पांच पदार्थ विरम्या, परंतु हजी बीजा कर्मोनां स्थितिघातादिक प्रवर्त्ते
ले. अहींआं जे कर्मनी स्थिति तथा रसनुं घटाडवुं तेने अपवर्त्तना कहीयें. एटले
संज्वलना लोजनी स्थिति तथा रसने घटाडीने शेष सूक्ष्मसंपराय अद्धा जेटलो
राखे. हवे ते लोजनी अपवर्तेली स्थितिने वेदतो, वेदतो त्यां लगें गयो ज्यां लगें
संज्वलन लोज समयाधिक आवलि मात्र रह्यो, तिहां एनी उदीरणा विराम
पामी, केवल उदयें करीज वेदे ले, ते लेहला समय लगें जाणवुं. अने लेहले
समयें ज्ञानावरणपंचक, अंतरायपंचक, दर्शनावरण चार, उच्चैर्गोत्र, यशःकीर्त्ति,
ए शोल प्रकृतिनो बंधविछेद थाय तथा मोहनीयनो उदय अने सत्ता पण वि
छेद थाय ॥ इतिसमुच्चयार्थः ॥ ७४ ॥

खीण कसाय डु चरिमे, निदं पयलं च हिणइ उउ मबो ॥
आवरण मंतराए, उउ मबो चरम समयम्मि ॥ ७५ ॥

अर्थ—संज्वलन लोज सर्वे क्षय कस्या पछी क्षीण कषाय थयो तेने पण मोहनी
य विना बीजां शेष कर्मोनी स्थितिघात, रसघात, गुणश्रेणी, गुणसंक्रम तेमज पू
र्वेली रीतें प्रवर्त्ते. ते क्षीण कषायाद्धाना संख्याता नाग जाय, त्यां लगें प्रवर्त्ते अने
शेष एक नाग रहे, तेवारें पांच ज्ञानावरण, पांच अंतराय, चार दर्शनावरण अने
बे निद्रा एवं शोल प्रकृतिनी सत्तानी स्थिति सर्वे अपवर्त्तनायें अपवर्त्तिने एटले घटा
डीने क्षीण कषायनी अद्धा सरखी करे, पण निद्राद्विकनी स्थिति स्वरूपनी अपेक्षा
यें एक समय हीन करे अने कर्म रूपें बराबर होय ते क्षीण कषाय अद्धा हजी
अंतर मुहूर्त्त प्रमाण रही ले, तेवारें ते शोल प्रकृतिनां स्थितिघातादिक विराम पा
मे, बीजी शेष प्रकृतिनां स्थितिघातादिक हजी विराम पाम्यां नथी ए शोल प्रकृतिने
उदय उदीरणायें करीने वेदतां वेदतां समयाधिक आवलि मात्र शेष रहे, त्यां लगें
वेदे, पछी उदीरणा विरमे, तेवारें एक आवलिकामात्र केवल उदयें करीने वेदे. ते

यावत् (खीणकसायडुचरिमे के०) क्षीणकषायना द्विचरम समयें एटले बेहेला स मयथकी पूर्वलो समय तेने द्विचरम समय कहीयें त्यांथुधी वेदे पढी ते द्विचरम स मयें (निहंपयलंचहणिछउमहो के०) निद्रा अने प्रचलाने बद्मस्थ थको हणे एट ले निद्राद्विक स्वरूप सत्तापेक्षायें क्षय थाय. पढी (आवरणं के०) ज्ञानावरण पांच, दर्शनावरण चार अने (अंतराएछउमहो के०) अंतराय पांच, एवं चौद प्रकृतिने पण बद्मस्थ थको (चरमसमयम्मि के०) बेहला समयने विषे हणे ॥ इति ॥ ७५ ॥

ते चौद प्रकृति क्षय कस्या पढी आगले समयेंज व्यवहारनयमतें संयोगी केवली थाय अने निश्चयनयमतें तो तेहीज समय केवली कहीयें, ते केवलज्ञानें करी सर्व लोकालोक सर्वांशें द्रव्य गुण पर्यायस्वरूपें देखे, जाणे. सर्वज्ञ सर्वदर्शी थाय. एवुं कांइ थयुं नथी, थशे पण नहीं अने थतुं पण नथी, के जे केवली न देखे. एम जघन्य तो अंतर मुहूर्त्त पर्यंत अने उत्कृष्टो तो आठ वर्षें ऊणी पूर्वकोटी वर्ष पर्यंत पृथ्वीतलने विषे विचरीने पढी जेने वेदनीयादिक कर्म आयुःकर्मथकी अधिका जोगववां रह्यां होय, तेवा शेष कर्मोंने आयुःकर्मने बराबर करवाने अर्थें ते आठ समयनो समुद्घात करे, पण बीजा न करे तिहां पहेले समयें पोताना शरीर प्रमाण जाडो तथा उंचो. नीचो, लांबो, चौद राजप्रमाण पोताना आत्मप्रदेशनो विस्तार, दंमाकार करे. तथा बीजे समयें ते दंमप्रमध्येंथी बेहु पासें प्रदेश श्रेणि विस्तरे, ते लोकांत लगें उत्तर दक्षिणें पसरे, तेवारें कमाडने आकारें आकार देखाय. तेने कपाट कहीयें. त्रीजे समयें पूर्व अने पश्चिमें वली बे प्रदेशनी श्रेणि करे, ते पण लोकांत लगें पसरे, तेवारें मंथाणनी पेरें चार फडसुआं निकले. एवा आकारें आत्मप्रदेशनी श्रेणी पसरे तथा चोथे समयें ते मंथाण आकारना चारे आंतराना आकाश प्रदेश समस्त रह्या बे तेनें आत्मप्रदेशें करी पूरीने समग्रलोक व्यापी थाय. पांचमे समयें वली मंथाणना आंतरानें संहरे, बठे समयें मंथाण संहरे,सातमे समयें कपाट सहरे, आठमे समयें दंम पण सहरीने शरीरस्थ स्वजावस्थ थाय.

तिहां पहेले समयें अने आठमे समयें औदारिक काययोगी होय, तथा बीजे बठे अने सातमे, ए त्रण समयें औदारिक मिश्रकाययोगी होय. अने वचला त्रण समयें कार्मणकाय योगी होय. ए त्रणे समयें अणाहारी होय. इत्यादिक अहींआं घणो विचार बे परंतु विस्तारना जयथी नथी लख्यो.

हवे कोइ एक केवली समुद्घात कस्या विना पण मुक्तियें जाय. जे जणी श्री पन्नवणामध्यें कह्युं बे सव्वेविणंजंते केवली समुग्घायं गच्छति गोयमा नोइणमठे स

मछे जस्सा उएए तुलाइं बंधणेहिं ठिइहेय नवो पक्काइ कम्माइं ॥ नं समुग्घायं समगछई अगंतुण समुग्घाय मणंतकेवली जिणा जरामरण विप्पमुक्का सिद्धिवर गयं गया ॥ जेने आयुःकर्मनी स्थितिना कर्मपरमाणु सरखाज नवोपग्राही वेदनी यादिक कर्म होय, ते समुद्घात न करे अने जे करे, ते पण अंतरमुहूर्त्त वर्त्ती यु थाकतेज केवली समुद्घात करे. हवे ते बेहु सयोगी केवली पण नवोपग्राही कर्मक्षय करवाने अर्थे लेश्यातीत अत्यंत अप्रकंप परम निर्जरानुं कारण, एवा शुक्लध्याननो त्रीजो पायो ध्याववाने वांछता योगनिरोध करवा मांडे, तिहां अंतर मुहूर्त्तमां योग रुंधे, तेमध्यें प्रथम बादर वचनयोग निरोधने अर्थें प्रवर्त्तमान था य. तिहां बादरकाययोगें करीने बादर मनोयोगने अंतर मुहूर्त्तें रुंधे. तेवार पछी सूक्ष्ममनोयोगें करी बादरवचनयोग रुंधे, तेवार पछी सूक्ष्मकाययोगें करी ने बादरकाययोग रुंधे, वली तेणे करीज सूक्ष्म मनोयोग रुंधे. ते पछी सूक्ष्मवचन योग रुंधे, ते पछी सूक्ष्मकाययोग रुंधतो थको सूक्ष्म क्रिया अप्रतिपाति त्रीजे शुक्लध्यानें चढे, तेना सामर्थ्यथकी वदनोदरादिक विवर पूरवे करीने देहनो त्रीजो नाग संकोचीने शेष बे नागनो प्रदेशघन करे.

ते ध्यानें वर्त्ततां स्थितिघातादिकें करी सयोगी गुणगणाने चरम समयें एक आयु विना बीजां त्रण कर्मने अयोगी गुणगणानी अवस्थाना सरखा स्थिति वंत कस्या पण एटलुं विशेष के, जे कर्मनो अयोगी गुणगणे उदय नथी ते कर्म नी स्थिति, स्वरूपापेक्षायें समय ऊणी करे, कर्मस्वरूपनी अपेक्षायें अयोगी अव स्थासमान स्थिति करे.

ते सयोगी गुणगणाने चरमसमयें २ औदारिकद्विक, ३ तेजस, ४ कार्मण, १० ठ संस्थान, ११ प्रथम संघयण, १५ वर्णचतुष्क, १६ अगुरुलघु, १७ उप घात, १८ पराघात, २० शुनाशुन विहायोगति, २१ प्रत्येक, २२ स्थिर, २३ अ स्थिर, २४ शुन, २५ अशुन, २६ निर्माण, २७ सुस्वर, २८ डुःस्वर, २९ उश्वा स अने ३० बें वेदनीय मांहेली एक वेदनीय, ए त्रीश प्रकृतिनां उदय अने उ दीरणा विछेद थाय, तेने आगले समयें अयोगी केवली थाय. तेहुं कालमान पांच ह्रस्व अक्षर उच्चार प्रमाण अंतर मुहूर्त्ततुं होय. तिहां सूक्ष्मक्रियाध्यान पूर्ण करीने व्युपरत क्रिया अप्रतिपातिनामें शुक्लध्यानने चोथे पाये चढे. ए गु णगणे स्थितिघातादिक रहित थको जेटली उदयवती प्रकृति छे. तेने वेदतो थको खपावे अने जे प्रकृतिनो उदय नथी, मात्र सत्तायेंज छे, तेनां दलिक स्तिबु

कसंक्रमें करी उदयवती प्रकृतिमध्यें संक्रमावी वेदी वेदीने खपावे. एम अयोगीना द्विचरम समय लगें करे ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ७४ ॥

हवे तिहां जे प्रकृति खपावे, ते कहे छे.

देवगइ सहगयाउ, डु चरिम समयं नविअंमि खीअंति ॥
सविवागे अर नामा, नीआ गोअंपि तछेव ॥ ७५ ॥

अर्थ-(देवगइसहगयाउ के०) देवगति सहचारिणी एटले देवगतिना बंधन साथें एकांतेज बंध छे जेनो, एवी देवगति सहगति प्रकृति दश छे, तेनां नाम कहे छे. २ वैक्रिय अने आहारक शरीर अने ४ वैक्रियआहारक बंधन, ६ वैक्रियआहारकसंघातन, ७ वैक्रिय आहारकांगोपांग, ए देवगति, १० देवानुपूर्वी, ए दश प्रकृति देवगति सहगत कहीयें. ए दश प्रकृति, (डुचरिमसमयंनविअंमिखीअंति के०) नव्यमोक्षगामी जीवने द्विचरमसमयें क्षय जाय. तथा (सविवागेअरनामा के०) तथा तेहीज द्विचरमसमयें जे प्रकृति विपाकें वर्त्ते छे. एटले जे नामकर्मनी नव प्रकृतिनो तिहां विपाक एटले उदय छे,तेथकी इतर एटले बीजी प्रकृतिउ जे प्रकृतिउनो तिहां उदय नथी, तेवी प्रकृतिनां नाम कहे छे. ३ औदारिक, तैजस अने कार्मण, ए त्रण शरीर, ६ तथा ए त्रणनां बंधन, ए ए त्रणनां संघातन, १५ छ संस्थान, २१ छ संघयण, २२ औदारिकांगोपांग, २६ वर्णचतुष्क, २७ मनुष्यानुपूर्वी, २८ पराघात, २९ उपघात,३० अगुरुलघु,३१ शुनाशुनखगति,३३ प्रत्येक, ३४ अपर्याप्त, ३५ उच्छास, ३६ थिर, ३७ अथिर, ३८ शुन, ३९ अशुन, ४० सुस्वर, ४१ डुःस्वर,४२ डुर्नग, ४३ अनादेय, ४४ अयशःकीर्त्ति, ४५ निर्माण, ए पिस्तालीश प्रकृति पण,द्विचरम समयें क्षय पामे तथा (नीआगोअंपितछेव के०) नीचगोत्र अने अपिशब्दथकी बे वेदनीयमांहेलुं एक वेदनीय, ए सर्व मली प्रथमनी दश नेलतां सत्तावन प्रकृति द्विचरमसमयें क्षय जाय, सत्ताथी टले ॥ ७५ ॥

अन्नयर वेअणिअं, मणुआउअ मुच्चगोअ नवनामे ॥
वेएइ अजोगि जिणो, उक्कोस जहन्न मिक्कारे ॥ ७६ ॥

अर्थ- हवे द्विचरम समय क्षय गयुं जे वेदनीय, तेथकी (अन्नयरवेअणिअं के०) अनेरुं शाता अशाता मांहेलुं एक वेदनीय अने (मणुआउअं के०) मनुष्यायु, (उच्चगोअ के०) उच्चैर्गोत्र, (नवनामे के०) नामकर्मनी नव प्रकृति, एवं बार प्रकृ

तिने, (वेएइअजोगिजिणो के०) अयोगी केवली वेदे ठे. ते (उक्कोस के०) उत्कृष्ट पणे तीर्थंकर वेदे ठे अने (जहन्नमिक्कारे के०) जघन्यथकी तो सामान्य केवली होय. ते तीर्थंकरनामकर्म विना अगिआर प्रकृति वेदे ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ७६ ॥

हवे नामकर्मनी नव प्रकृतिनां नाम कहे ठे.

मणुअगइ जाइ तस बा, यरं च पज्जत्त सुनग आइज्जं ॥
जसकित्ती तिबयरं, नामस्स हवंति नव एआ ॥ ७७ ॥

अर्थ-(मणुअगइ के०) मनुष्यगति, (जाइ के०) पंचेंद्रियजाति, (तस के०) त्रसनाम, (बायरंच के०) बादरनाम, (पज्जत्त के०) पर्याप्तनाम, (सुनग के०) सुनगनाम, (आइज्ज के०) आदेयनाम, (जसकित्ती के०) यशःकीर्त्तिनाम, (तिबयरं के०) तीर्थंकरनाम, (नामस्सनवंतिनवएआ के०) ए नामकर्मनी नव प्रकृति होय, तेनां नाम कह्यां ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ७७ ॥

हवे अहींआं वली ए गुणगणे मतांतरपणुं देखाडे ठे.

तच्चाणु पुवि सहिआ, तेरस नवसिद्धिअस्स चरमंमि ॥
संतं सग मुक्कोसं, जहन्नयं बारस हवंति ॥ ७८ ॥

अर्थ-पूर्वोक्त मनुष्यायु अने उच्चैर्गोत्र, ए बे प्रकृतिमध्यें (तच्चाणुपुविसहिआ के०) त्रीजी आनुपूर्वी एटले मनुष्यानुपूर्वी, ते मनुष्यानुपूर्वीयें सहित पूर्वोक्त बार प्रकृति करीयें, तेवारें (तेरसनवसिद्धिअस्सचरमंमि के०) तेर प्रकृति नव सिद्धिआ एटले तद्नवें मोक्षगामी जीव एवा अयोगीने चरम समयें (संतंसगमुक्कोसं के०) उत्कृष्टपणे सत्तायें कर्मप्रकृति होय अने (जहन्नयंबारसहवंति के०) जघन्यथकी तो तीर्थंकर नामकर्म विना बार प्रकृतिनी सत्ता होय ॥इति समु०॥७८॥

ए शा सारु होय ? माटें हवें एनो हेतु कहे ठे.

मणुअ गइ सहगयाउ, नवखित्त विवाग जिअ विवागाउ ॥
वेअणिअ अन्नरुच्चं, चरम समयंमि खीयंति ॥ ७ए ॥

अर्थ-(मणुअगइसहगयाउ के०) मनुष्यगति सार्थेज जेनो उदय ठे, तेने मनुष्यगति सहगत अगीआर प्रकृति कहीयें, पण ते केवी ठे ? तोके (नव के०)

नवविपाकी तो मनुष्यायु बे, तथा (खित्तविवाग के०) क्षेत्रविपाकी तो मनुष्यानु पूर्वी बे, तथा बाकीनी नामकर्मनी नव प्रकृति जे पूर्वे कही. ते (जिअविवागाउ के०) जीवविपाकीनी जाणवी. तथा (वेअणिअअन्नरुच्चं के०) बे वेदनीय मां हेलुं अनेरुं एक वेदनीय अने उच्चैर्गोत्र, उत्कृष्टपदें ए तेर प्रकृति अने जघन्यपदें तीर्थंकरनाम विना बार प्रकृति बे ते नव्यसिद्धिक एवा जीवने अयोगी गुणगणा ना (चरमसमयंमिखीयंति के०) चरमसमयने विषे क्षयें जाय बे, अहींआं मनु ष्यानुपूर्वी ते मनुष्यगति सहगति बे, माटें तेर प्रकृति सार्थेज क्षय जाय. एम म तांतरें कह्युं, अनेरा आचार्य वली एम कहे बे के मनुष्यानुपूर्वीनी द्विचरम समयें ज सत्ता व्युच्छेद थाय बे, उदयना अजावथकी उदयवती प्रकृतिने स्तिबुकसंक्रम न होय तेमाटें स्वस्वरूपें करीने चरम समयने विषे तेनां दलिक देखाय बे. एम युक्त बे तेमनो चरम समयमां सत्ता व्युच्छेद होय बे, आनुपूर्वी चार तो क्षेत्रविपाकी बे माटें नवापांतरालगतियेंज एनो उदय होय, ते कारण माटें नवस्थ जीवने आनु पूर्वीनो उदय न होय अने उदय विना तो अयोगी अवस्थाने द्विचरम समयेंज मनुष्यानुपूर्वीनी सत्ता व्युच्छेद थाय, एवा मतने अनुसरीने पूर्वे द्विचरम समयने विषे खुडतालीश प्रकृतिनी सत्तानो व्यवच्छेद देखाड्यो अने चरमसमयें तो उत्कृष्टथी बार प्रकृति अने जघन्यथी अगीआर प्रकृतिनो व्यवच्छेद बे केमके अयोगी अ वस्थायें तो जे प्रकृतिनो उदय होय, तेनोज चरम समयें सत्ताथी विच्छेद थाय बे. अने जेनो उदय न होय ते द्विचरम समयेंज क्षय थाय बे.

तेथी आगल हवे जीवने कर्म संबंध मूकाणो, ते माटे मूकाणा फलथी जेम ए रंमफलनी पेरें एटले मोक्षे जातां केवी गति करे? तोके जेम मोफामांहेथी मूका णुं एरंमफल ते स्वनावविशेषें करी आकाशें उडे अथवा जेम धूमनी गति सहे जें उंचीज होय अथवा जेम बाण, धनुष्यमांथी बुट्यो पाधरोज जाय अथवा जेम तुंबडुं पाणीमध्यें नाखेलुं उंचुं चडी आवे, तेम दंडें फेरव्या चक्रच्रमनी पेरें पूर्व सं योगें करी जीव, कर्मबंधनथकी मूकाणो तेथी जीवनी सहचारी गति उंची बे माटें ते जीव, एक समयमां उंचो लोकांतें जाय, पण बीजो समय स्पर्शे नहीं. ते जीव उंचो जातो जे आकाशप्रदेशें अहीं अवगाही रह्यो होय, तेहीज आकाशप्रदेश नी समश्रेणीयें एक समयमां अन्य प्रदेशने अस्पर्शतो अंकुश समानगति करी जाय. उक्तं च आवश्यकचूर्णौ "जत्तीए जीवोवगाढो, तावश्याएउ गाहणाए उड्ढंउ जुगं गच्छइ नवं कवीयं च समयं न फुसइत्ति ॥ जे नणी वचला प्रदेशने स्पर्शतो थका

समय थइ जाय केम के जीव तथा परमाणु एक आकाशप्रदेशथकी बीजे आकाश प्रदेशें जाय, ए उपाधें उपलक्षित काल तेने समयकाल कहीयें तो तेम करतां घणा समय लागे, तेथी अस्पर्शगतियेंज एक समयमां उंचो जाय तिहां शाश्वतां सुख अनुनवे, ते कहे ढे ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ८ए ॥

अह सुइअ सयल जगसिह्, र मरुव निरुवम सहाव सिद्धिसुहं॥
अनियण मव्वावाहं, ति रयण सारं अणु हवंति ॥ ए० ॥

अर्थ-(अह के०) अथ हवे कर्मक्षय कस्या पढी अनंतर समयेंज (सुइअ के०) शुचि एकांत शुद्ध एटले राग द्वेषादिक रूप मल तेणें रहित (सयलजग सिहरं के०) सकल सपूर्ण जगत् जे सांसारिक सुख, तेनुं शेखरजूत सर्वोत्तम सर्वेथी अधिक जे नणी सिद्धनां सुख तो (अरूव के०) अरुज ढे एटले रोगादिक तथा मनपीडादिककष्टें करी रहित होय केमके रोगतो शरीरने होय ते शरीर तो तिहां नथी अने संसारमध्यें तो ते बेहु कष्ट संजवे ढे. माटें ते सरखुं संसारमध्यें कोइ सुख नथी के जेनी उपमा आपीयें? माटें (निरुवम के०) निरुपम ढे. एटले एवुं कोइ पण सुख संसारने विषे नथी के जेनी उपमा आपीने तुल्यता करीयें ? माटे सिद्धनां सुख निरुपम ढे. वली ते सुख कहेवुं ढे, तो के (सहाव के०) स्वनावथी उपजेलुं ढे पण सांसारिक सुखनी पेरें कारमुं परकात्रिम नथी, एवुं (सिद्धिसुहं के०) सिद्धपदनुं सुख अनिर्वचनीय (अनियण के०) अनिधन एटले जेनो केवारें नाश नथी अर्थात् जेनो केवारें ढेहडो नथी अंत न आवे, जेनो क्षय नथी तथा राग द्वेषादिक जे सुखनां बाधक ढे, तेने सर्वथा क्षय करवाथी (मवाबाहं के०) अव्याबाध एटले बाधाकारी पीडाकारी एवा जे रोगादिक तेने मूलथी उन्मूल्या ढे ते नणी ते फरी प्रगट न थाय. ते विना पीडा न उपजे तेमाटें अव्याबाध सुख ढे. वली (तिरयणसारं के०) त्रण रत्न जे ज्ञान, दर्शन अने चारित्र, तेनो सार एटले फलजूत ढे एटले रत्नत्रयिनो यत्न करवाथी कर्मक्षय थाय ढे अने कर्मक्षय थयाथी मोक्षसुख लइयें ढैयें. माटे सिद्धिसुखनो अनिलाष करनारायें अवश्य रत्नत्रयिनो आश्रय करवो केमके सिद्धना सुखनुं कारणजूत ते रत्नत्रयज ढे एवा मोक्षसुख प्रत्यें ते परमात्मा सिद्ध जीव (अणु हवंति के०) अनुनवे ढे ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ए० ॥

हवे विशेष जाणवानी अभिलाषावंतने उपदेश कहे छे.

डुरहिगम निउण परम, ठ रुइर बहु जंग दिठिवायाउ ॥
अठा अणुसरिअवा, बंधोदय संत कम्माणं ॥ ए१ ॥

अर्थ-(डुरहिगम के०) डुरधिगम ते गंजीराथी एटले प्रमाण, नय, निक्षेपादिकें करी घणो डुर्लज लहीयें, एवो अर्थ छे जेने विषे, वली (निउण के०) निपुण एटले सूक्ष्मबुद्धिने गम्य एवो (परमठ के०) परमउत्कृष्ट अथवा परमार्थ एटले यथावस्थित अर्थनो विचार, तेणे करी (रुइर के०) रुचिर एटले सुहामणुं सूक्ष्ममतिना धणीना मनने आल्हादनुं करनार, एवुं तथा (बहुजंग के०) बंधोदय सत्ताना घणा जांगा एटले विकल्प छे जेने विषे एवुं जे (दिठिवायाउ के०) दृष्टिवादनामा बारमुं अंग ते थकी (बंधोदयसंतकम्माणं के०) बंधोदय सत्तावंत कर्मप्रकृतिना (अठाअणुसरिअवा के०) अहींआं जे अर्थ नथी कह्या, ते अर्थ, सर्व तिहांथी जाणवा, जे जणी अहींआं तो संक्षेपरुचि जीवना अनुग्रहने अर्थें लेशमात्र अर्थ देखाड्यो छे. पण विशेषार्थी तिहांथी समजवो ॥ इति समुच्च० ॥ ए१ ॥

हवे ग्रंथकर्त्ता आचार्य, पोतानुं मानरहितपणुं अने अनुध्धतपणुं देखाडे छे.

जो जठ अपडिपुन्नो, अठो अप्पागमेण बंधोति ॥
तं खमिऊण बहुसुआ, पूरे ऊणं परिकहंतु ॥ ए२ ॥

अर्थ-(जोजठअपडिपुन्नोअठो के०) ए सप्ततिकानामा ग्रंथने विषे जिहां बंधोदय सत्ताने विषे जे जे अर्थ अपरिपूर्ण एटले अधुरो कहेवाणो होय केमके (अप्पागमेणबंधोति के०) में अल्पागमपणे बांध्यो छे. एटले में अल्प शास्त्रने जाणवे करी बांध्यो छे तेथी पूर्ण अर्थ बांध्यो न होय, इति एटले एवा हेतु माटें ते ते अर्थ बंधादिकने विषें जिहां जेटलो ठंगो कहेवाणो होय (तंखमिऊण के०) ते रूप महारो अपराध जे अजाणपणुं तेने खमीने (बहुसुआ के०) बहुश्रुत बहुसिध्धांतना जाण जे गीतार्थ होय तेमणे (पूरेऊणं के०) ते ठंगा अर्थनी प्रतिपादक एवी गाथादिकें करी पूरीने ते तत्प्रतिपादक गाथाउ ग्रंथमध्यें प्रक्षेपीने शिष्य आगलें तथा श्रोता जनो आगलें (परिकहंतु के०) परिसमाप्त एटले संपूर्ण अर्थ कहेवो. जे जणी बहुश्रुत सज्जन ते सहेजें परिपूर्ण ज्ञान सार संपत्तिनी युक्तायें करी परोपकार करवाने रसिकज होय छे. माटे महारी उपर तथा शिष्य उपर उत्कृष्ट उप

कारने कर्त्ता एवा ते बहुश्रुत सज्जन ते अवश्य महारो अपरिपूर्ण अर्थनिधानतरू ए रूप अपराध, तेने सहन करी परिपूर्ण अर्थ पूरीने शिष्यने कहो. ते जणी बहु श्रुतने ए प्रार्थना युक्तज ले ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ए२ ॥

हवे गाथामान कहे ले.

गाहग्गं सयरीए, चंद महत्तर मयाणु सारीए ॥
टीगाइ नियमि आणं, एगूणा होइ नउईउ ॥ ए३ ॥

॥ इति श्री सप्ततिकानामा षष्ठः कर्मग्रंथः समाप्तः ॥ ६ ॥

अर्थ-(गाहग्गंसयरीए के०) ए सप्ततिका ग्रंथना कर्त्ता चंद्रमहत्तराचार्यें पूर्वे तो सीत्तेर गाथाउ करी हती जेमाटें ए ग्रंथनुं सप्ततिका एवुं नाम थयुं. (चंद्रम हत्तरमयाणुसारीएटीगाइनियमिआणं के०) तेवार पठी ए ग्रंथनी टीकाकर्त्तायें ए डुर्बोध ग्रंथ जाणीने ग्रंथकर्त्ता चंद्रमहत्तराचार्यनी मतिने अनुसारें जिहां जोइ यें, तिहां नाष्यनी गाथाउ नेलीने सुबोध कीधो, तेवारें ते चंद्रमहत्तरनी यंत्री शांकली गाथाउ ते मूकीने टीकाकारें ए सप्ततिकानी गाथाउ (एगूणाहोइनवईउ के०) एकूणी नेवुं एटले सर्व मलीने नेव्याशी गाथा संपूर्ण करी. ए रीतें ए सप्त तिकानामें ठछो कर्मग्रंथ समाप्त थयो ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ए३ ॥ इति सप्ततिका नामा षष्ठः कर्मग्रंथः समाप्तः ॥

॥ अथ प्रशस्तिः ॥

॥ श्रीचंद्रगछांबरपूर्णचंद्रो, मेधाविधिम्योपगतो वितंद्रः ॥ प्राप्तप्रतिष्ठोयवनेश्वसत्सु, सूरीश्वरोऽनूद्विजयादिसेनः ॥१॥ तत्पट्टपूर्वाचलचित्रनानुः, कुपक्षकक्षोल्वणचित्रना नुः ॥ महातपाख्यातधरो धराया, जीयात्स सूरिर्विजयादिदेवः ॥२॥ तत्पट्टनाटयप्रि यमौलिपट्टोऽनूत्सूरिराजोविजयादिसिंहः ॥ यज्ञोचरस्त्वयकप्रशमोमृतोमात्, ङकुबुत श्चित्रत्रिपूपलोमे ॥३॥ तदीयगछांबुजराजहंसः, सद्दिग्नसंविग्नजनावतंसः ॥ विध्वस्त दोषकृतशेषशेषो, नवेद्यशस्सोमगुरुर्यशस्वी ॥४॥ किं वर्ण्यतेऽन्यद्गुणगौरवंगिरा, मो घौतु मोघाचरणस्य तस्य ॥ यदीयविद्याधनतार्किकोत्तरा, किं सेवते देवगुरुर्न नाकम् ॥५॥ यज्ज्ञेयतस्तद्गुरुहस्तसिद्धि, योगाज्जडोपीदृशशास्त्रवेत्ता ॥ किं गियोपार्णीरितचू र्णयोगा, ल्लोहं न लोहोत्तमतां दधाति ॥ ६ ॥ आ प्रशस्तिमां प्रतियो घणी न मलवाथी. केटलेक ठेकाणे अशुद्धता दीगमां आवे ले ते सज्जनो ए सुधारी वांचवुं.

॥ इति सप्ततिकानामा षष्ठः कर्मग्रंथः संपूर्णः
तत्संपूर्त्तौ च प्रकरणरत्नाकराभिध पुस्त
कस्य चतुर्थोभागः समाप्तः ॥